सूर्यकुमारी-पुस्तकमाला—१७

सोवियत्-भूमि

लेखक

श्री राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशक

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा

प्रथम संस्करण २००० | संवत् १९९५ | मूल्य ५)

परिचय

जयपुर राज्य के शेखावटी प्रांत में खेतड़ी राज्य है। वहाँ के राजा श्री अजीतसिंहजी बहादुर बड़े यशस्वी और विद्याप्रेमी हुए। गणितशास्त्र में उनकी अद्भुत गति थी। विज्ञान उन्हें बहुत प्रिय था। राजनीति में वह दक्ष और गुणग्राहिता में अद्वितीय थे। दर्शन और अध्यात्म की रुचि उन्हें इतनी थी कि विलायत जाने के पहले और पीछे स्वामी विवेकानंद उनके यहाँ महीनों रहे। स्वामीजी से घंटों शास्त्र-चर्चा हुआ करती। राजपूताने में प्रसिद्ध है कि जयपुर के पुण्यश्लोक महाराज श्री रामसिंहजी को छोड़ कर ऐसी सर्वतोमुख प्रतिभा राजा श्री अजीतसिंहजी ही में दिखाई दी।

राजा श्री अजीतसिंहजी की रानी आउआ (मारवाड़) की चंपावतजी के गर्भ से तीन संतति हुईं—दो कन्याएं, एक पुत्र। ज्येष्ठ कन्या श्रीमती सूरजकुंवर थीं जिनका विवाह शाहपुरा के राजाधिराज सर श्री नाहर-सिंहजी के ज्येष्ठ चिरंजीव और युवराज राजकुमार श्री उमेदसिंहजी से हुआ। छोटी कन्या श्रीमती चाँदकुंवर का विवाह प्रतापगढ़ के महारावल साहब के युवराज महाराजकुमार श्री मानसिंहजी से हुआ। तीसरी संतान जयसिंहजी थे जो राजा श्री अजीतसिंहजी और रानी चंपावतजी के स्वर्ग-वास के पीछे खेतड़ी के राजा हुए।

इन तीनों के शुभचिंतकों के लिये तीनों की स्मृति संचित कर्मों के परिणाम से दुःखमय हुई। जयसिंहजी का स्वर्गवास सत्रह वर्ष की अवस्था में हुआ और सारी प्रजा, सब शुभचिंतकों, संबंधियों, मित्रों और गुरुजनों का हृदय आज भी उस आँच से जल ही रहा है। अश्वत्थामा के व्रण की

तरह यह घाव कभी भरने का नहीं। ऐसे आशामय जीवन का ऐसा निराशात्मक परिणाम कदाचित ही हुआ हो। श्री सूर्यकुमारीजी को एक मात्र भाई के वियोग की ऐसी ठेस लगी कि दो ही तीन वर्ष में उनका शरीरांत हो गया। श्री चाँदकुंवर बाई जी को वैधव्य की विषम यातना भोगनी पड़ी और भ्रातृ-वियोग और पति-वियोग दोनों का असह्य दुःख वे झेल रही हैं। उनके एकमात्र चिरंजीव प्रतापगढ़ के कुंवर श्रीरामसिंहजी से मातामह राजा श्री अजीतसिंहजी का कुल प्रजावान है।

श्रीमती सूर्यकुमारीजी के कोई संतति जीवित न रही। उनके बहुत आग्रह करने पर भी राजकुमार श्री उमेदसिंहजी ने उनके जीवन-काल में दूसरा विवाह नहीं किया। किंतु उनके वियोग के पीछे, उनके आज्ञानुसार, कृष्णगढ़ में विवाह किया जिससे उनके चिरंजीव वंशांकुर विद्यमान हैं।

श्रीमती सूर्यकुमारीजी बहुत शिक्षिता थीं। उनका अध्ययन बहुत विस्तृत था। उनका हिन्दी का पुस्तकालय परिपूर्ण था। हिंदी इतनी अच्छी लिखती थीं और अक्षर इतने सुंदर होते थे कि देखनेवाला चमत्कृत रह जाता। स्वर्गवास के कुछ समय के पूर्व श्रीमती ने कहा था कि स्वामी विवेकानन्दजी के सव ग्रंथों, व्याख्यानों और लेखों का प्रामाणिक हिंदी अनुवाद मैं छपवाऊंगी। वाल्यकाल से ही स्वामीजी के लेखों और अध्यात्म, विशेषतः अद्वैत वेदान्त की ओर श्रीमती की रुचि थी। श्रीमती के निर्देशानुसार इसका कार्यक्रम बाँधा गया। साथ ही श्रीमती ने यह इच्छा प्रगट की कि इस संवंध में हिंदी में उत्तमोत्तम ग्रंथों के प्रकाशन के लिये एक अक्षय निधि की व्यवस्था का भी सूत्रपात हो जाय। इसका व्यवस्थापत्र वनते न वनते श्रीमती का स्वर्गवास हो गया।

महाराजकुमार उमेदसिंहजी ने श्रीमती की अंतिम कामना के अनुसार—

२००००) वीस हज़ार रुपये देकर काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के

द्वारा इस 'सूर्यकुमारी-ग्रंथमाला' के प्रकाशन की व्यवस्था की।

३००००) तीस हज़ार रुपये के सूद से गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृ
में 'सूर्यकुमारी-आर्य-भाषा-गद्दी या चेयर' की स्थापना की।

५०००) पाँच हज़ार रुपये से उपर्युक्त गुरुकुल में चेयर के साथ ही सूर्यकुमारी निधि की स्थापना कर सूर्यकुमारी-ग्रंथावली के प्रकाशन की व्यवस्था की।

५०००) पाँच हज़ार रुपये दरबार हाई स्कूल, शाहपुरा में सूर्यकुमारी विज्ञान-भवन के लिये प्रदान किये।

इस सूर्यकुमारी-ग्रंथमाला में स्वामी विवेकानन्दजी के यावत् निबंधों के अतिरिक्त और भी उत्तमोत्तम ग्रंथ छापे जायँगे और लागत से कुछ अधिक मूल्य पर सर्वसाधारण के लिये सुलभ होंगे। ग्रंथमाला की बिक्री से होनेवाली आय इसी में लगायी जायगी। यों श्रीमती सूर्यकुमारीजी तथा श्रीमान् महाराजकुमार उमेदसिंहजी के पुण्य तथा यश की निरंतर वृद्धि होगी और हिंदी भाषा का अभ्युदय तथा उसके पाठकों को ज्ञान-लाभ होगा।

प्राक्कथन

मेरा पहले विचार था, सोवियत् की यात्रा पर ही लिखना। उसी तरह शुरू में कलम भी चली, लेकिन उसके बाद ख़्याल आया—"रूस के बारे में बहुत भ्रम फैला हुआ है और उस भ्रम को फैलाने में बहुत से लोग और संस्थाएँ जान बूझ कर सहायक हैं। संक्षेप और अधूरे चित्र के होने के कारण मेरी यात्रा के बहुत से भागों को पढ़ कर लोगों की शंकाएँ घटेंगी नहीं"—यह सोच कर मुझे 'सोवियत्-यात्रा' की जगह 'सोवियत्-भूमि' लिखनी पड़ी।

इस पुस्तक के अधिकांश भाग को लिखने में मुझे सोवियत् के कितने ही लेखकों और समाचार-पत्रों से मदद मिली है। बहुत से भागों का तो मैंने भावानुवाद भर कर दिया है। दो-चार गुन्थर और लुदविग् जैसे विदेशी लेखकों से भी मदद ली; लेकिन पहली श्रेणी के लेखकों के लेखों पर ही मैं इस पुस्तक को लिख सका हूँ। कई कारणों से मैं उनके नाम की लम्बी सूची यहाँ देने में असमर्थ हूँ, लेकिन मैं उनका और सोवियत्-भूमि का इसके लिए बहुत कृतज्ञ हूँ।

जल्दी करना मेरे कामों में स्वाभाविक दोष-सा बन गया है; और उसी दोष का भागी मैं इस पुस्तक को २८ दिन में लिख कर भी हुआ हूँ। इसके कारण बहुत सी त्रुटियाँ होनी स्वाभाविक हैं। उनके लिए क्षमा मैं इसी बात पर माँगने का हक रखता हूँ कि मैं फिर तिब्बत की ओर प्रस्थान करने वाला हूँ। लौटना सात-आठ महीने में होगा और तब तक के लिए यदि प्रतीक्षा करता तो निश्चय ही बहुत सी सामग्री तितर-बितर हो जाती।

इस कार्य के इतना शीघ्र समाप्त होने में बहुत भारी हाथ है "साहित्य-रत्न" पंडित गुरुराम विश्वकर्मा का। वे प्रतिदिन ६-६ घंटा कलम चलाते रहे। यदि मुझे अपनी क़लम का भरोसा रखना होता तो निश्चय

मज़दूर २५ रूबल और खान के मज़दूर १२ से २५ रूबल मासिक पाते थे। क्रान्ति के बाद मज़दूरों की तनख्वाह बढ़ती गई। १९२८ में जो तनख्वाह थी १९३२ में उससे तिगुनी हो गई और १९३२ से १९३७ में दुगुनी और बढ़ी। १९३७ के अन्तिम महीने में आरम्भिक मास के वेतन पर १० सैकड़ा वृद्धि हुई। मज़दूरों और वेतन का हिसाब १९२३ से १९२८ तक इस प्रकार है—

		१९२३	१९२८
मज़दूर	..	११५ लाख	२५८ लाख
वेतन	..	८२० करोड़	७१६० करोड़

रबर फ़ैक्टरी में १९३४ और १९३६ के दो सालों में कमकरों के वेतन में ७०·५ सैकड़ा वृद्धि हुई और उसी समय में खानों में ५९ से ८० सैकड़ा तक। १९३१ की अपेक्षा दोनेत्स्क की खानों में मज़दूरों की वेतन-वृद्धि निम्न प्रकार हुई—

१९३१	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६	१९३७
१००	१३७	१५७	२२०	२६३	३१०

स्मरण रहे कि १९२९ के बाद जो भयंकर मंदी संसार के बाजारों में हुई, उसके कारण पूँजीवादी देशों में तनख्वाह बहुत कम कर दी गई जब कि इन्हीं वर्षों में सोवियत् श्रम-जीवियों की तनख्वाह तिगुनी से भी अधिक हो गई।

शिशुरक्षा

सोवियत् सरकार का ध्येय तो है बच्चों की परवरिश की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेना जिसमें माता-पिता पर उनका बोझ न पड़े। उनके सिद्धान्त के अनुसार सन्तान या भविष्य के नर-नारी के रक्षण और पोषण की ज़िम्मेवारी व्यक्ति के ऊपर न होकर राष्ट्र के ऊपर होनी चाहिए। चीज़ों की

उपज से बढ़कर मनुष्य की उपज की देखभाल करना ज़रूरी है। कारख़ाने का कोई ख़राव हो गया माल एक ही बार नुकसान पहुँचा सकता है; लेकिन सन्तान की ख़राबी से तो पीढ़ियाँ ख़राब होती जायँगी।

बच्चा-खाना
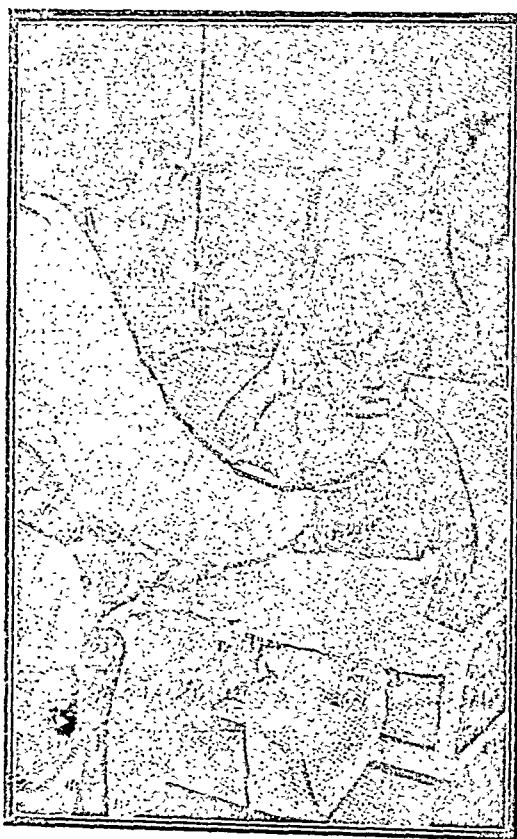
सन्तान की परवरिश की सारी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर मानते हुए भी अभी वह उतना नहीं कर सकी है; तो भी इस क्षेत्र में उसके काम से दुनिया के और देशों का मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। जन्म पर माँ-बाप को हर बच्चे के लिए ४५ रूबल मिलता था, पीछे ९० रूबल हो गया और इस वक़्त का आँकड़ा हमारे पास नहीं है। लेकिन वह और भी ज़्यादा है। इसके अतिरिक्त प्रसव के वक़्त और उसके बाद भी डाक्टर, नर्स और दवा-दारू का ख़र्च सरकार देती है। माँ को बच्चा जनने से पहले दो मास और बाद में दो मास (कोल्ख़ोज़ों में मीयाद आधे मास की है) पूरे वेतन के साथ छुट्टी मिल जाती है। पाँचवें लड़के से माँ-बाप को सरकार विशेष रूप से सहायता देती है। सातवें लड़के से ५ वर्ष तक के

लिए दो हज़ार रूबल वार्षिक सरकार से मिलता है। और दसवें लड़के से ५००० रूबल वार्षिक। बालकों की मदद में निम्न ३ वर्षो में जिस तरह

बाल-क्रीड़ा

सरकार ने रूबल खर्च किया है, उससे उसकी इस विषय की नीति स्पष्ट हो जाती है—

१९२९	१९३२	१९३६
३२ लाख	१४३२ लाख	७०९० लाख

बच्चों के लिए जो सरकार इतना ध्यान रखती है, उसका सुपरिणाम भी वैसे ही दिखलाई पड़ता है। जर्मनी से मुक़ाबला करने पर मालूम होगा, कि बच्चों की मृत्यु प्रति १० हज़ार किस परिमाण में है—

			१९३५
जर्मनी	..	..	१९·७

सोवियत्	.. ..	७·७
उक्रइन्	.. ..	६·२

मरे पैदा हुए वच्चों की ओर देखने से यह फ़र्क़ और भी ज़्यादा मालूम होता है।

बच्चों में स्तालिन्

		१९३५
जर्मनी	..	४·९ प्रति १० हज़ार
सोवियत्	..	०·७ प्रति १० "

सोवियत्-भूमि में स्वस्थ आदमी को बेकार होने की नौबत नहीं आ सकती। हर एक आदमी के लिए वहाँ काम मौजूद है। वृद्धावस्था, वीमारी या अंगभंग होने के कारण यदि कोई आदमी काम करने के अयोग्य

माता और बच्चा

कसरत के शौकीन

हो जाय, तो उसकी और उसके आश्रितों की परवरिश सरकार के ज़िम्मे होती है। इस मंद में सरकार कितने रूबल खर्च कर रही है, इसे भी देखिए—

१९२४	१९२९	१९३६
१३० करोड़	४४० करोड़	८८० करोड़

१९१७ से १९३६ तक चिकित्सा के लिए जो आयोजन सरकार ने किया है, वह भी ध्यान देने की चीज़ है।

		१९१७	१९३६
डाक्टर	..	१९,८००	१,००,०००
अस्पताल में चारपाइयाँ		१,७३,६३४	६,१९,८००

शिक्षा

शिक्षा के बारे में सोवियत् सरकार का सबसे अधिक ध्यान है; यह तो इसी से मालूम हो जायगा कि सोवियत् सरकार के बजट का २० सैकड़ा शिक्षा पर खर्च किया जाता है। आज़ुर्बाइजान में १९१४-१५ में सिर्फ़ ३ सैकड़ा शिक्षा पर ख़र्च होता था, लेकिन १९३५-३६ में सोवियत् सरकार ने १७·७ सैकड़ा ख़र्च किया। १९२९-३० में जो भिन्न भिन्न देशों ने शिक्षा पर ख़र्च किया है, उसे भी देखिए—

भारत (ब्रिटिश)	..	३·३ सैकड़ा
फ़्रांस	..	११·२
आस्ट्रिया	..	११·५
जर्मनी	..	१३·३
इंगलैंड	..	१५·१

शिक्षा की ओर सरकार का जो इतना ध्यान गया है, उससे स्कूलों में छात्रों की संख्या बहुत बढ़ गई है। उसके आँकड़े इस प्रकार हैं—

१९१४	१९३६	१९३७
७८ लाख	२ करोड़ ७४ लाख	३ करोड़ १० लाख
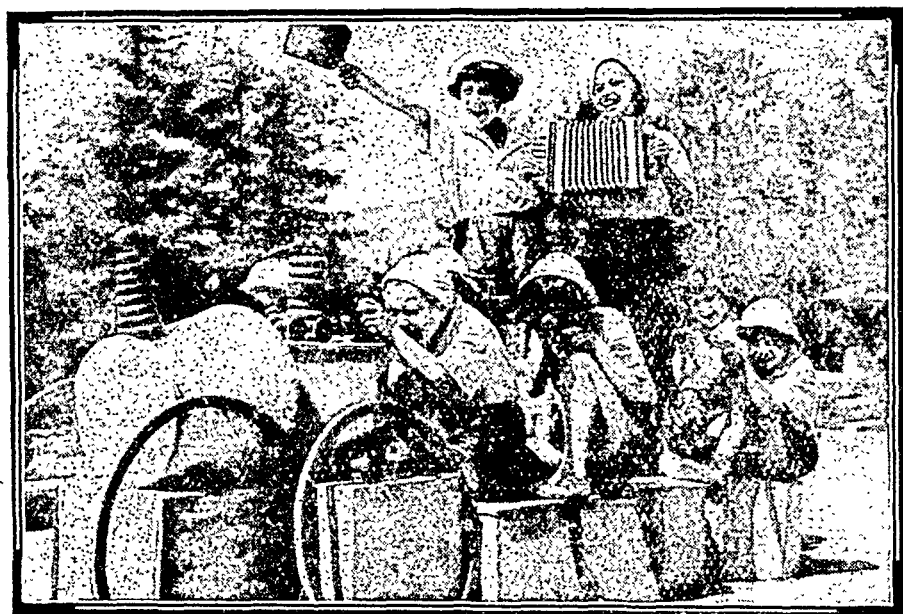
बच्चों की क्रीड़ा

३ करोड़ १० लाख में ८८ लाख नगरों के विद्यार्थी हैं, २१२ लाख गाँवों के और १० लाख रेल-कर्मचारियों के।

सिर्फ़ एक साल १९३६ में शिक्षकों की वेतन-वृद्धि के लिए सरकार ने १ अरब रूबल मंजूर किया।

स० स० स० र०-विज्ञान एकेडेमी (अकदमी-नावुक) सोवियत् की सबसे बड़ी वैज्ञानिक संस्था है। ज़ारशाही एकेडेमी की १८ शाखाएँ थीं। आज भिन्न भिन्न विषयों की उसकी ८० शाखाएँ हैं। जिनमें एक ओरियंटल-इंस्टीट्यूट भी है। एकेडेमी में काम करनेवाले वैज्ञानिकों की संख्या ५० हज़ार है।

मनुष्य (शरीर और मन) पर विशेष अन्वेषण के लिए गोर्की

इंस्टीट्यूट के नाम से एक बड़ी संस्था मास्को से कुछ मील पर करीब करीब बन चुकी है। इसमें ६५०० कमरे और हज़ारों विद्वानों को अपने अपने विषय के अन्वेषण का काम दिया जायगा।

स्नान के बाद

पुस्तक-प्रकाशन

क्रान्ति के २० सालों (१६१७ से १६३७ ई०) में पुस्तकों के प्रकाशन में बड़े जोर से वृद्धि हुई है। सोवियत् ने इन २० सालों में देशी विदेशी ग्रन्थकारों के ग्रन्थों की कितनी कितनी प्रतियाँ छापी हैं, उसके देखने से यही नहीं मालूम होगा कि कौन ग्रन्थकार वहाँ अधिक सर्वप्रिय है; बल्कि यदि बाहर के देशों से मुक़ाबला किया जाय, तो ग्रन्थों के परिमाण की प्रचुरता भी मालूम होगी।

गोर्की	..	३१६ लाख
पुश्किन्	..	१६१ ,,

ल्यू ताल्स्त्वा (टाल्स्टाय)	..	१४० लाख
चेख़ोफ़	..	११४ ,,
विक्टर ह्यूगो	..	१७ ,,
रोम्याँ रोलाँ	..	१४ ,,
अनातोल् फ़्रांस	..	१२ ,,
वल्ज़क्	..	१२ ,,
डिकेंस	..	११ ,,
डार्विन	..	१८० हज़ार
आइन्स्टाइन्	..	४८ ,,
हेगेल्	..	४० ,,

*** ***

ऊपर हम कह चुके हैं कि अभी तक सिर्फ़ ३५।। सैकड़ा भूमि की ही पैमाइश होने पर भी सोवियत् सरकार संसार में कितनी ही खनिज सम्पत्तियों में अव्वल है। १९३७ की जुलाई में अन्तर्राष्ट्रीय-भूगर्भशास्त्री-कांग्रेस मास्को में हुई थी। उस वक्त संसार के सभी देशों के भूगर्भ-शास्त्रवेत्ता मास्को में एकत्रित हुए थे। सोवियत् विज्ञानवेत्ता एकेडेमीशियन् गुब्किन् ने हिसाव लगाकर बतलाया था कि स०स०स०र० का मिट्टी के तेल का ज़ख़ीरा ६ अरब ३७ करोड़ ६३ लाख टन है, जिसमें ३ अरब ८७ करोड़ ७२ लाख तो काम लगे हुए क्षेत्रों में है। इस आँकड़े को सुनकर बहुत से वैज्ञानिकों को सन्देह होगा; यद्यपि इस बात को सभी पूँजीवादी अख़बार भी मानते हैं कि तेल में स०स०स०र० का स्थान संसार में सर्व प्रथम है।

कांग्रेस को हुए ५ महीने नहीं बीते थे कि आज़ुर्बाइजान् और दूसरे स्थानों के तेल के ज़ख़ीरे पहले के आँकड़े से भी बहुत अधिक साबित हुए। वैज्ञानिक गुब्किन एक जगह लिखता है—

आइए, हम बाकू के इलाक़े को देखें। कितनी ही बार लोगों ने प्रश्न

उठाया कि अब्शेरोन् प्रायद्वीपाली खानें—साबुन्ची, रामानी और दूसरे तैल-क्षेत्र—करीब करीब ख़तम हो चुके हैं। लेकिन अब भी इन जगहों में निकलनेवाले तेल का परिमाण कम नहीं हो रहा है। १९३५ में कुछ भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार १९३८ के तेल का ज़खीरा थोड़े से गहरे स्तरों को छोड़ कर खतम हो जानेवाला था। लेकिन पिछले दो वर्षों के आँकड़े साबित कर रहे हैं कि अब्शेरोन् के तैल-क्षेत्र की सीमा के भीतर ऐसे दूसरे ज़बर्दस्त ज़खीरे मौजूद हैं जिनका पहले हमें पता नहीं था—जिरव् तैल-क्षेत्र और पेश्चानी द्वीप में हाल में जो वर्मा चलाया गया है और वहाँ पर नये ज़खीरे मिले हैं, उनसे साफ़ पता लगता है कि वहाँ तैल का ख़ज़ाना घटने की जगह बढ़ा दिखाई पड़ता है।

बीबी-ऐबत् तैल-क्षेत्र को ख़तम हुआ सा समझा जाता था, लेकिन हाल के वर्मा चलाने से मालूम हुआ कि तेल की कमी ख़ज़ाने के ख़तम होने के कारण नहीं थी, बल्कि मशीन की कमजोरी के कारण।

अर्तेम्द्वीप के तेल के बारे में भी हमें विचार बदलने पड़े हैं। वहाँ खुश्की के अलावा समुद्र की तह में तेल निकला है, और उसके निकालने के लिए समुद्र की पेंदी में बर्मा चला कर ट्यूब वेल खड़ा किया गया।

इस प्रकार अब्शेरोन् प्रायद्वीप के तेल का खज़ाना अब भी कम हुआ नहीं दिखाई पड़ता।

वाकू के दक्षिण-पश्चिम पूतिन्स्क की उपत्यका की बग़ल में तेल की खोज हुई है। मियाजिक् में नये तेल के पता लगाने में बड़ी सफलता मिली है।

वाकू से ६० किलोमीतर (४० मील) दक्षिण-पश्चिम पीर-सागत् में एक नया क्षेत्र मिला है। पहले नम्बर के कुएँ में पहले तेल आया लेकिन पीछे पानी भर आया। जान पड़ने लगा कि पहले की परीक्षा ग़लत थी। लेकिन उसके पास ही २७ नंबर का कुआँ खोदा जाने लगा, तो १००० टन फेंकने वाला चश्मा (गशर) निकल आया; जिसने साबित कर दिया कि तेल वहाँ वहुत परिमाण में है।

ही काम अधूरा छोड़ना पड़ता। इसलिए उनकी सहायता का मैं वहुत आभारी हूँ।

आशा है, द्वितीय संस्करण के समय मुझे अधिक वक़्त मिलेगा, और उस वक़्त ग्रंथ पर कुछ विशेष समय और श्रम लगा कर मैं सुधारने की कोशिश करूँगा।

सारनाथ
८–४–१९३८

विनम्र
राहुल सांकृत्यायन

आज़ुर्बाइजान् का तैल-क्षेत्र बहुत पुराना है। उत्तरी काकेशस् में कई नये तैल-क्षेत्र मालूम हुए हैं; जिनमें ग्रोज़्नी, माईकोप् और कूबन् के ज़िले तथा दागिस्तान ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। ग्रोज़्नी क्षेत्र के कुएँ काफ़ी तेल दे रहे हैं। दागिस्तान के तैल-क्षेत्र, काइकेन्त, आर्चासु और इज़्बरिवश् के बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ के तैल-कूप बड़ी सफलता से काम कर रहे हैं। दागिस्तान के मखच्कला प्रदेश में भी ऐसे प्रमाण मिले हैं; जिनसे मालूम होता है कि वह भी अचिर भविष्य में एक अच्छा तैल-क्षेत्र होगा।

इन खोजों से २० मील लम्बा (माईकोप् से उत्तर-पच्छिम की तरफ़ फैला) एक नया तैल-क्षेत्र मिला है। १९३६ में माईकोप् इलाक़ा प्रतिदिन ३००० टन तेल देता था। १९३७ के अन्तिम महीनों में वह प्रतिदिन ५,००० टन दे रहा था।

क्रान्ति के पहले सिर्फ़ काकेशस् तैल का क्षेत्र समझा जाता था। पहली पंचवार्षिक योजना में सोवियत्-संघ के पूर्वी भाग (सखालिन्) में एक दूसरा तैल-क्षेत्र मिला। यह क्षेत्र साल-बसाल बढ़ रहा है। दस साल पहले उराल में तैल की कल्पना भी कोई नहीं करता था; लेकिन अब हालत बदल गई है। १९२९ में चूसोवोल्ग्राद् में तेल निकला; और १९३२ में स्तेर्लीतमक के पास ईशिम्बएफ़् में एक नया तैल-क्षेत्र मिल गया। यह तैल-क्षेत्र आजकल प्रति वर्ष १० लाख टन दे रहा है। ऊफ़ा के पश्चिम में तुहमाज़िन्स्की क्षेत्र मिला है, जिसके कुएँ प्रतिदिन १०० टन से १५० टन तक तेल दे रहे हैं।

इससे भी महत्त्वपूर्ण खोज है, ओरेन्बुर्ग प्रान्त के बुगुरुस्लन् के पास एक तैल-क्षेत्र का पाना। क्राल्-नोकम्स्क, सीज्रन् और स्ताव्रोपोल् वोल्गा के किनारे के इन तीन स्थानों में फैला यह एक नया तैल-क्षेत्र है।

कामा नदी की उपत्यका में भी नये तैल-क्षेत्र का पता लग रहा है। सिडकेयेवो केस्मा के दक्षिणी तट पर क़ज़ान नगर से १०० किलोमीतर (६० मील) नीचे है। यहाँ भी तेल के लक्षण मिल रहे हैं। संभावना तो हो रही

है, कि तेल रूस के केन्द्रीय ज़िलों में भी है, और ताज़ी खोजें इसको पुष्ट कर रही हैं। उक्रइन् के रोम्नी नगर के पास स्पष्ट मिट्टी के तेल का पता लगा है। इस प्रकार उक्रइन् भी तेल से ख़ाली नहीं है। तुर्कमानिस्तान और मध्य-एशिया के दूसरे प्रजातंत्रों में भी तेल का पता लग चुका है।

उराल्-एम्वा ज़िले प्रतिसाल ४ लाख ६६ हज़ार टन तेल दे रहे हैं।

सोयित् के तैल का ज़ख़ीरा बहुत भारी है, इसमें शक नहीं। लेकिन उस का ख़र्च भी उतना ही अधिक है। ४ लाख ५० हज़ार ट्रैक्टर (८० लाख घोड़े की शक्ति से भी ज़्यादा) और १ लाख २० हज़ार कंबाइन् जो कि १९३७ के आख़िर में सोवियत् के खेतों में लगी थीं, उन्हींके लिए बहुत तेल की ज़रूरत है। और उनके अतिरिक्त सोवियत्-संघ के मोटर-कारख़ानों से प्रतिदिन ९०० मोटरकार और ७०० लारियाँ निकलती हैं। जिनके लिए भी तेल की ज़रूरत है। पिछले साल मास्को (स्तालिन् मोटर-कारख़ाना), गोर्की (मोलोतोफ़्-मोटर-फ़ैक्टरी) के कारख़ानों का पुनर्निर्माण हुआ है। जिसके कारण और भी मोटरें और लारियाँ बनने लगी हैं। और इसका मतलब है तेल का और ख़र्च।

मोटर और ट्रैक्टर तक ही काम ख़तम नहीं हो जाता। सवारी और लड़ाई के हज़ारों हवाई जहाज़ तथा टैंक और दूसरी सैनिक मशीनें भी तेल चाहती हैं।

वोल्गा-तैलक्षेत्र—१० दिसंबर १९३७ को एक ज़बर्दस्त तेल का फ़ौवारा (गशर) वोल्गा के दाहने किनारे स्तब्रोपोल नगर की दूसरी तरफ़ निकला। उसने सिद्ध कर दिया कि वोल्गा का तैल-क्षेत्र भी बहुत भारी है। यह तैल फ़ौवारा ९९० मीटर नीचे से आया है। इसने एक दिन में २५० टन बहुत अच्छे किस्म का पेट्रोल दिया। पहले सिर्फ़ इतना ही कहा जा सकता था कि वोल्गा उपत्यका के किसी भाग में तेल मौजूद है, इस आविष्कार से पता लग गया कि वोल्गा का दक्षिणी किनारा तैल का एक बहुत भारी ज़ख़ीरा अपने भीतर छिपाये हुए है। यह तैल-क्षेत्र बहुत दूर तक ओरेन्

वुर्ग के वुगुरुस्लन् से ले कर स्तव्रोपोल् तक फैला हुआ है।

१९३८ में ७ या ८ नये ८५०० मीतर (२५ हज़ार फ़ीट से अधिक) गहरे कुएँ खोदे जायँगे। इसके लिए वर्मा और भारी मशीनें वहाँ पहुँच गई हैं। अगले साल वोल्गा के दो दूसरे तैल-क्षेत्र—प्रोस्कुरोवो और ओत्वाज़्नी-वोव्रग् में भी इसी तरह के गहरे कुओं के खोदने की योजना तैयार है। इस प्रदेश में जहाँ रेलवे और नदी के स्टीमर के कारण बोझा ढोने का सुभीता है वहाँ केन्द्रीय जगह में होने से और भी अधिक फ़ायदा है।

भूगर्भशास्त्र-संबंधी नई खोजें

१९३७ की खोजों से कई नई खानों का पता लगा है। इस साल सोवियत्-संघ के भिन्न भिन्न भागों में सैकड़ों अन्वेषक दल भेजे गये थे। इस साल अत्युमिन्स्क प्रान्त के नवो-रोसिस्क इलाक़े में कोमाइट्स (एक रासायनिक द्रव्य) के २३ वड़े वड़े ज़खीरों का पता लगा है।

दक्षिणी उराल के उफालेइ इलाक़े में भी इसका ज़खीरा है।

पिछले साल (१९३७) की खोजों से सोवियत् का कोयले का ज़खीरा, जितना कि पहले समझा जाता था, उससे दूना हो गया। कोमी स्वायत्त-प्रजातंत्र का इन्तोव (स्वायत्त-रिपब्लिक) वहुत भारी कोयला-क्षेत्र है। पेचोरा की घाटी में चोर्नया नदी के किनारे एक और वड़ा कोयले का इलाक़ा मिला है। कज़ाकस्तान के मंग्युस्तउ में नई कोयले की खान निकली है। मध्य-एशिया में एग्नोव का कोयला-क्षेत्र सिद्ध हो गया। किर्गिज़िस्तान में कोक्यन्गका में भी पिछले साल कोयला मिला है; और वह अच्छी जाति का है। सुदूरपूर्व-प्रदेश में खुंगारि-इस्क कोयला उक्त प्रदेश के उद्योग-धन्धों के वढ़ाने में वड़ा सहायक सिद्ध होगा।

कज़ाकस्तान के करातऊ इलाके में वड़े ऊँचे दर्जे का फोस्फेट मिला है। उसका परिमाण २० करोड़ टन आँका गया है।

अर्मनी (अर्मेनिया) के चिवुख़लिन्स्क स्थान में ताँवे की वड़ी खान

निकली है। कज़ाकस्तान के युगाजोर पर्वत में भी ताँबे की खान निकली है। इसके ताँबे के पत्थर में सोना भी मौजूद है।

*** ***

चुकोत्स्क (कम्चत्स्का) सोवियत्-संघ के सब से पूर्वी भाग में जनशून्य अतिशीतल प्रदेश है। वहाँ एक खास अन्वेषक-मंडली वोदिनेत्स्क के नायकत्व में भेजी गई थी। मंडली ने दिसम्बर के जाड़ों में खोज करने के लिए हवाई जहाज़ों से मदद ली। पिछले १० साल में ३६ बार अन्वेषकों की मुहिम वहाँ जा चुकी है। पहले उतनी सफलता नहीं हुई थी। गत जाड़ों में हवाई जहाज़ों की मदद से चुकोत्स्क का अन्वेषण बड़े विस्तार के साथ हुआ; और वहाँ सोना और दूसरी बहुमूल्य धातुओं के ३ ज़ख़ीरे मिले हैं। उनको खोदने का प्रारंभिक प्रबन्ध हो चुका है। जाड़ों में चुकोत्स्क (६५° अक्षांश से भी उत्तर ध्रुव-कक्षा) में सर्दी ही अधिक नहीं होती है, बल्कि उत्तर और दक्षिण समुद्र के नज़दीक होने से आसमान में अधिकतर बादल और कुहरा छाये रहते हैं। बादल और कुहरे में उड़ने का साहस सिर्फ़ ध्रुव-कक्षीय सोवियत् वैज्ञानिक ही कर सकते हैं। श्मित् अन्तरीप से क्रास खाड़ी तक पहुँचने में महीनों लगते थे; लेकिन आज विमान से चुकोत्स्क के किसी भाग में पहुँचने में दो-तीन घंटे से अधिक नहीं लगते।

अंगारा की बिजली—अंगारा सिबेरिया की एक प्रचंड नदी है, जो बइकाल झील से निकल कर येनीसेइ नदी में गिरती है। इसकी धार इतनी तेज़ और पानी इतना अधिक है कि 'सफ़ेद-ईंधन' (बिजली) पैदा करने का अपरिमित स्रोत है। बिजली पैदा करने वाले कम से कम ६ भारी स्टेशनों के लायक़ है। अंगारा हर साल ६१० करोड़ किलोवाट् घंटा बिजली दे सकती है; जो कि १९३७ के अंत में पैदा होने वाली सारे सोवियत् की बिजली से दूनी है। स्मरण रखना चाहिए कि आज भी बिजली पैदा करने में सारे संसार में सोवियत् का नंबर दूसरा है। योजना के मुताबिक

८९ लाख किलोवाट् ताक़त के स्टेशन बनाये जाने वाले हैं। उत्तरी अमेरिका में सेंट लारेंस नदी से बिजली पैदा करने की जो योजना है, वह ३६ लाख किलोवाट् ताक़त की ही है।

अंगारा के सभी बिजली के स्टेशनों के बनाने में कुछ वर्ष लगेंगे; लेकिन पहले स्टेशन बइकाल—जो कि इर्कुत्स्क के पास है—में हाथ लग गया है। इस स्टेशन में ६ लाख किलोवाट् की क्षमता है; और यह हर साल ४ अरब किलोवाट् घंटा बिजली देगा। इस प्रदेश की खनिज और प्राकृतिक सम्पत्ति के साथ इतनी बिजली के मिल जाने पर यह प्रदेश उद्योग का बड़ा केन्द्र बन जायगा।

बइकाल-हाइड्रो-इलेक्ट्रिक-स्टेशन इर्कुत्स्क से प्रायः ५ मील ऊपर अवस्थित है। इस स्टेशन से प्रायः ९० मील पर चेरेम्खोवो में कोयले का बहुत बड़ा ज़खीरा तथा सेंधा नमक है। कोयला और नमक खोदने के काम में आनेवाली मशीनें इस बिजली से अच्छी तरह चलाई जायँगी और वहाँ पर प्राणिज रसायन की तैयारी के लिए भी कारखाने खोले जा सकेंगे। बनावटी रबर बनाने के कारखानों की योजना तैयार हो चुकी है। लोहे की मिश्रित धातुओं को बनाने में बिजली की बड़ी आवश्यकता होती है; और बइकाल का स्टेशन इसके लिए बड़ा काम करेगा। अंगारा की सस्ती बिजली के सहारे हर साल २५ से ५० हजार टन अलमोनियम तैयार करनेवाला कारखाना क़ायम किया जायगा। अलमोनियम का कच्चा माल उराल से रेल द्वारा भेजा जायगा। अंगारा के निचले हिस्से में भी बौक्साइट—जो आलमोनियम बनाने में काम आता है—का काफ़ी ज़खीरा मिला है। मंगानीज़ के कारखाने भी यहाँ संगठित होने वाले हैं। चेरेम्खोवो के इलाक़े तथा अंगारा के निचले भाग में बड़े ऊँचे दर्जे की मंगानीज़ मिली है।

बइकाल की बिजली द्वारा चेरेम्खोवो के कोयले से पेट्रोल और तेज़ाब निकाला जायगा। इस प्रकार इस प्रदेश को दूर से पेट्रोल लाने की ज़रूरत न होगी।

बइकाल-विद्युत्-स्टेशन का बन्द सिबेरियन रेलवे के क़रीब बन रहा है। यह इतना ऊँचा बनाया जा रहा है, कि इस से नदी का धरातल १०० फ़ीट ऊँचा हो जायगा। इसका असर बइकाल झील के धरातल पर भी पड़ेगा।

झील से नीचे की ओर जाने के लिए जहाज़ों के वास्ते लॉक (अत्यन्त तीक्ष्ण धार को कृत्रिम रूप से शान्त बना कर जहाज़ों के रास्ते) बनाये जायेंगे। उनके कारण इर्कुत्स्क बइकाल झील का बन्दरगाह बन जायगा।

बइकाल-विद्युत्-स्टेशन के बनाने में उतना ही ख़र्च आयेगा, जितना कि वोल्गा नदी के रिबिन्स्क स्टेशन—जो कि बड़ी तेज़ी से आजकल बन रहा है—पर आयेगा। लेकिन विद्युत्-शक्ति वहाँ से यहाँ चौगुनी पैदा होगी। सोवियत् का सब से बड़ा विद्युत्-स्टेशन द्नीयेपेर् जितनी बिजली देता है, बइकाल उससे ड्योढ़ी देगा। स०स०स०र० में अंगारा की बिजली सब से सस्ती पड़ेगी। यह प्रदेश मंगोलिया, याकूतिया और सुदूरपूर्व के मध्य में होने से बहुत महत्त्व रखता है। जितने ही यहाँ उद्योग-धन्धे और आबादी बढ़ेगी, उतनी ही सोवियत् की शक्ति सुदूरपूर्व—जिसपर जापान की बड़ी आँख है—में बढ़ेगी। इस प्रकार अंगारा के एक करोड़ बीस लाख अश्व-शक्तियों को बिजली के रूप में पकड़ने से सिबेरिया की काया-पलट हो जायगी।

वोल्गा की बिजली—लेना (४४२८ किलोमीतर) नदी के बाद वोल्गा (३६९४ किलोमीतर) सोवियत् की सब से बड़ी नदी है। तीसरी पंच-वार्षिक-योजना में वोल्गा नदी पर बिजली के स्टेशनों के बनाने की योजना को काम में लाया जाने लगा है। इस विशाल नदी पर १३ स्टेशन बनने जा रहे हैं। इनकी ताक़त १ अरब किलोवाट् होगी। प्रति वर्ष वह १४ अरब किलोवाट् घंटा बिजली देंगे जो कि फ़्रांस या इटली की सारी बिजली के बराबर है। जो स्टेशन इस वक्त बन रहा है, वह २५ लाख किलोवाट्

ताक़त का है। सारी योजना समाप्त होने पर इससे २५ लाख वर्ग-किलो-मीतर या ७ करोड़ आदमियों के निवास की भूमि को दूसरी जगह से प्रकाश और शक्ति लेने की ज़रूरत न होगी, अर्थात् युक्त प्रान्त और विहार—दोनों
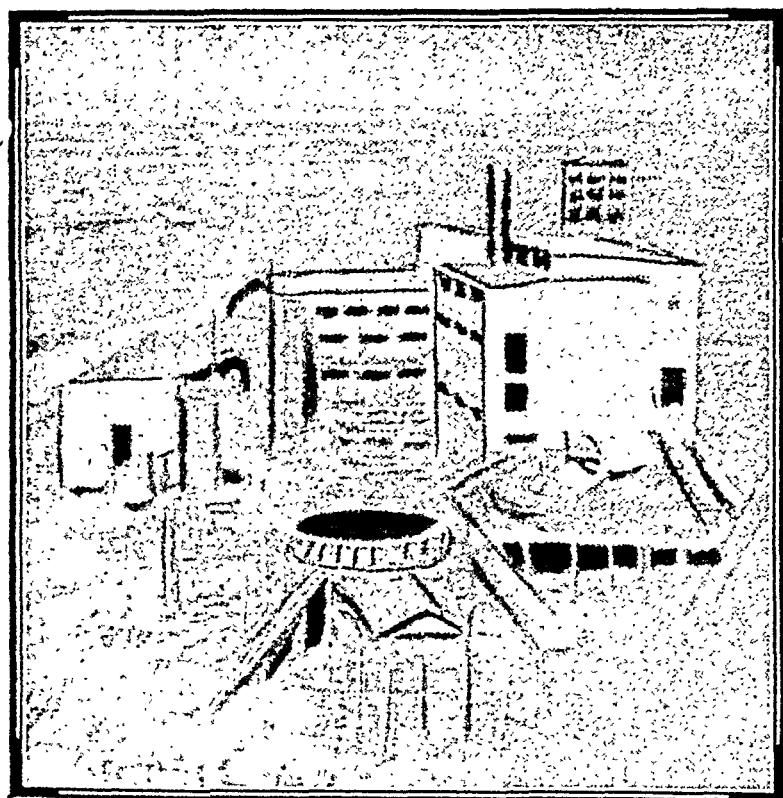
लेना नदी पर पावर-हाउस (पृ० ६५)

को मिलाकर बने प्रदेश के घरों में चिराग़ जलाने, फैक्टरियों के चलाने, ट्रामवे और ट्रैक्टरों तक को काम करने के लिए तेल या कोयला छोड़ सिर्फ़ बिजली से काम लिया जायगा। इतना ही नहीं, वोल्गा में बिजली पैदा करने के लिए जगह जगह लॉक बना कर जो पानी की तह को ऊँचा किया जायगा, उनसे नहरें निकाल कर ३ करोड़ एकड़ खेत की सिंचाई भी होगी।

द्नियेप्रोपेत्रोव्स्को

प्रथम पंच-वार्षिक-योजना (१९२७–३२ ई०) में यूरोप का यह सब से बड़ा विद्युत् स्टेशन बना था। जिस वक़्त द्नीयेपेर् नदी पर इसके लिए सीमेंट के बाँध बाँधे जाते थे, उस वक़्त यूरोप और अमेरिका के अख़बार मज़ाक उड़ा रहे थे। कह रहे थे—नौसिखिए रूसियों के बूते से यह बाहर की बात है। देखिए, जैसे ही रास्ता रुका, कि पहले ही मर्तबे महानदी काई की तरह इस सारी सीमेंट की दीवारों को बहा ले जायगी। विद्युत् स्टेशन को काम करते ६ साल हो गये; और इन भविष्यत्-वक्ताओं की वाणी सच नहीं निकली। अब वे उतना मज़ाक भी नहीं करते। सोवियत् की बनी हुई मशीनों—हवाई जहाज़, मोटर आदि—ने दुनिया में मज़बूती और उपयोगिता में बहुत ऊँचा स्थान पाया है। द्नीयेपेर् पर बने इस विद्युत्-स्टेशन से जहाँ इतनी अधिक बिजली पैदा होती है, वहाँ लॉक बनाकर स्टीमर को ऊपर-नीचे जाने का रास्ता बना दिया है। पहले जल-प्रपात के कारण काला-सागर के स्टीमर यहीं आकर रुक जाते थे।

*** ***

जन्मभूमि-गीत

भूमि सोवियत् सब श्रमिकों की अतिशय प्यारी।
शान्ति समुन्नति की आशा, है अमित दुलारी॥
नहीं देखता देश मही पर कोई उत्तम।
चलते मानी मनुज जहाँ पर मुक्त यहाँ सम॥ टेक॥

मास्को से अतिशय सुदूर पैस्फ़िक् सीमा तक।
मेरु-उदधि से समरकन्द की वर वसुधा तक॥
मनुज विचरता साभिमान निस्सीम अवनि का।
बन कर स्वामी, गिरा दासता कठिन यवनिका॥

सभी ठौर स्वच्छन्द शस्य जीवन-नद कलकल।
बहता ज्यों गम्भीर प्रखर वोल्गा-जल निर्मल॥
मुक्त क्षेत्र हैं सब तरुणों के सभी हमारे।
सभी जगह सम्मानित होते बूढ़े प्यारे॥

फल-सुपूर्ण हैं क्षेत्र जहाँ था ऊसर बंजर।
बसे नगर हैं वहाँ जहाँ थी भूमि बिना नर॥
कहे जीभ अभिमान पूर्ण 'साथी' यह अक्षर।
इससे देते तोड़ सभी अन्तः सीमान्तर॥

इससे है सब ठौर प्रबल यह संघ हमारा।
लुप्त हुआ संघर्ष बढ़ा निज जन-गण प्यारा॥
साथ साथ तातार यहूदी रूसी सारे।
निर्मित करते शान्ति-सहित सुख-जीवन प्यारे॥

दिन प्रतिदिन सुख-साज हमारा बढ़ता जाता।
है भविष्य जाज्वल्यमान ध्वज सा फहराता॥
हम सा चिन्ता मुक्त नहीं है जगती तल पर।
ऐसा है न विमुक्त प्रेम सुख-हास-प्रभाकर॥

खींचेगा यदि शत्रु हमारे ऊपर प्रहरण।
चाहेगा इस प्रियतम भू पर नाश-प्रसारण॥
दामिनि दमक समान मेघ गर्जन के सम हम।
देंगे उत्तर तीव्र और सुस्पष्ट अनुत्तम॥[1]

---

[1] साहित्यरत्न पंडित श्यामनारायण पांडे शास्त्री कृत पद्यानुवाद।

५—सोवियत्-संघ की जातियाँ[1]

सोवियत् विधान में हर एक जाति को अपनी अपनी उन्नति का रास्ता खुला हुआ है। उसने हर जाति की संस्कृति और भाषा के स्वतंत्र विकास के लिए पूरा पूरा अवसर दिया है। उससे लाभ उठा कर भिन्न भिन्न जातियाँ कितनी दूर तक आगे बढ़ी हैं, इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जायेंगे।

स०स०स०र० का क्षेत्रफल और जनसंख्या

नाम	राजधानी	क्षेत्रफल (हज़ार वर्ग किलो मीतर)	जनसंख्या (१ जन० १९३३) (हज़ार)
स०स०स०र०[1] ..	मास्को ..	२१,१५३·६	१६५७४८·४
१. र०स०फ०स०र०[2]	,, ..	१९,६३८·६	११३,६५०·९
कोमी ज़िरियन स्वा-यत्त-जिला ..	सिक्तिव्कर	३७४·९	२७६·३
करेली स्वा० प्रजातंत्र	पत्रोज़वोद्स्क	१४६·८	३७२·१
चुवाश् स्वा० प्र०	चेवोक्सरी ..	१७·९	९५८·५
मरि स्वा० जि०	लोश्कर्-ओला	२३·३	५५०·९
उद्मुर्द स्वा० प्र०	इज़ेव्स्क	३२·१	८७१·४
वश्किर स्वा० प्र०	ऊफ़ा	१४०·५	२८८९·९

---

[1] संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक्।

[2] रूसी-सोवियत्-फ़ेडरेटेड् (संयुक्त) समाजवादी-रिपब्लिक्।

भूमिका

दो कारणों से संसार में 'सोवियत्-भूमि' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ए
तो दुनिया के सभी श्रमिकों और दलित जातियों की वह आशा है। उस
अस्तित्व ही उन्हें आशा दिलाता है कि कभी वे भी स्वतंत्र हवा में साँस
सकेंगे। दूसरी बात है, संसार की राजनीति में—विशेष कर यूरोप अ
एशिया की राजनीति में—उसका ख़ास स्थान।

इन कारणों से दुनिया के लोग सोवियत् के बारे में बहुत जानना चा
हैं। हर साल हज़ारों पुस्तकें सोवियत् पर दुनिया की भिन्न-भिन्न भाषा
में निकल रही हैं; लेकिन तो भी पढ़नेवाली जनता की भूख शान्त न
होती। दूसरे मुल्कों के बारे में लिखी गई पुस्तक १०–२० वर्ष तक ता
रह सकती है, क्योंकि वहाँ के सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन बहुत आहि
आहिस्ता होते हैं। सोवियत्-भूमि के ऊपर लिखी गई किसी पुस्तक
पढ़ने से पहले आदमी का ध्यान छपने के सन् की ओर जाता है, क्यों
सोवियत्-भूमि में बरस-छः महीने का भी भारी मतलब है। आदमी बरस-
महीने पहले के रूप से सन्तुष्ट होना नहीं चाहता। हिन्दी में भी कुछ पुस्
निकली हैं, किन्तु नवीनता की दृष्टि से ही वह बहुत पिछड़ी हुई नहीं
बल्कि उनकी संख्या और जानकारी भी अधिक नहीं है।

सोवियत् का एशिया और यूरोप की राजनीति में क्या स्थान है, इ
जानने के लिए आपको पहले सोवियत् के नक़शे की ओर नज़र डाल
चाहिए। पूर्व में वह उत्तरी अमेरिका, प्रशान्त महासागर और जाप
से मिलता है। उसके दक्षिण में साम्राज्यवादियों के शिकार भारत अ
चीन हैं। पश्चिम में जर्मनी, इटली और पोलैंड जैसे फ़ासिस्ट देशों की ल
जीभ लपलपा रही है।

तातार स्वा० प्र०	कज़ान्	६७·१	२७८४·६
कोमी-पेर्य जातीय० जि०	कदिम्कर्	२३·१	१६८·०
मोर्दवी स्वा० प्र०	सरन्स्क	२५·५	१४१४·६
वोल्गा जर्मन स्वा० प्र०	एङ्गेल्स	२८·२	५७५·७
कल्मुक् स्वा० जि०	एलिस्ता	७४·२	१८५·४
अदिगेत् स्वा० जि०	मइकोप्	३·०	१७३·४
दागस्तान स्वा० प्र०	मखच्कला	५७·३	६४६·२
कर्वादिनो-वल्कर स्वा० प्र०	नल्चिक्	१२·३	२७८·८
कराचे स्वा० जि०	मिकोयान्-शहर	६·६	१०४·४
उत्तरी ओसेत्स स्वा० जि०	ओर्द्जोनिकिद्जे	६·२	२८६·२
चेर्केस् स्वा० जि०	सुलीमोफ़	३·३	८०·७
चेचेन्-इङ्गुश् स्वा० जि०	ग्रोज़्नी	१७·७	६५०·५
क्रिमिया स्वा० प्र०	सिमिएरो-पोल्	२६·०	७६१·०
२. कज़ाकस्तान स०स०र०	अल्मा-अता	२७४४·५	६७६६·६
कराकल्पक् स्वा० प्र०	तुर्त्कुल्	१६८·०	३७३·५
३. किर्गिजस्तान स०स०र०	फ्रुंज़	१६६·७	१३०२·१
ओस्तिअक्-वोगुल् जा० जि०	ओस्तिअक्-ओगुल्स्क	७५४·६	१०२·२
नेनेत्ज़ (यमल) जा० जि०	सालेइर्द	४६६·०	२६·५
ओइरोत् स्वा० जि०	ओइरोत्-तुरा	६३·१	१२१·७
तइमुर (दोलेन्नेवत्ज़) जा० जि०	दुदिन्का	७४२·६	८·०
एवेन्किस् जा० जि०	तुरिन्स्क	५४१·६	४·६
खकस् स्वा० जि०	अवकन्	४६·६	१७३·३

बुर्यत्-मंगोल स्वा० प्र०	उलन्-उदे	३७६·४	६२०·६
वितिम्-ओले क. मिन् (एवैन्किस्) जा० जि०	कलकन्	२१६·८	१०·१
याकूत स्वा० प्र०	याकुत्स्क	३०३०·६	३२७·५
कोरियक् जा० जि०	पेन्ज़ित्स्क	३१०·८	१२·५
चुकोत्स्क जा० जि०	अनादिर	६६०·६	१६·१
यहूदी स्वा० जि०	विरो-विद्जान्	३६·८	५०·०
४. उक्रइन् स०स०र०	कियेफ़्	४४३·१	३१६०१·४
मोल्दावी स्वा० प्र०	तिरस्पोल्	८·४	६१५·५
५. बेलो-रूसी स०स०र०	मिन्स्क	१२६·८	५४६६·४
६. आजुर्बाइजान् स०स०र०	वाकू	८६·०	२८६१·०
नखिचेवन् स्वा० प्र०	नखिचेवन्	५·४	११७·०
नगोर्नोकरावख् स्वा० जि०	स्तेप्नाकेर्त	४·२	१५३·६
७. अर्मनी स०स०र०	एरेवान्	३०·०	११०६·२
८. गुर्जी स०स०र०	त्विलिसि	६६·६	३११०·६
अव्खासी स्वा० प्र०	सुखुमी	८·७	२५६·१
अद्जारिस्तान स्वा० प्र०	वातुमी	२·८	१५३·८
दक्षिणी ओसेती स्वा० जि०	स्तालिनिर्	३·७	६५·३
६. उज्वेक् स०स०र०	ताशकन्द	१७२·०	५०४४·३
१०. तुर्कमानस्तान स०स०र०	अश्कावाद	४४३·६	१२६८·६

११. ताजिकस्तान

स०स०र०	स्तालिनाबाद	१४३·९	१३३२·७
गोर्नो-बदख्शाँ स्वा० जि०	होरोवाग्	६१·१	३५·७

१. रूसी-सोवियत्-फ़ेडेरल-साम्यवादो-रिपब्लिक्—(र०स०फ०स०र०)

क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों के ख़याल से र०स०फ०स०र० सोवियत्-संघ का सब से बड़ा प्रजातंत्र है। सोवियत्-संघ के क्षेत्रफल का $\frac{4}{5}$ और जनसंख्या का $\frac{2}{3}$ इसी में है। र०स०फ०स०र० पश्चिम में बाल्तिक सागर से, पूर्व में प्रशान्त महासागर तथा अलास्का (उत्तरी अमेरिका) तक फैला हुआ है। थोड़े से दक्षिणी-पश्चिमी भाग को छोड़ कर सारा सोवियत्-यूरोप तथा सिबेरिया और काम्चत्स्का इसी के अन्तर्गत है।

प्राय: सारी तुन्द्रा और सम्पूर्ण जंगल प्रदेश इसी संघ-प्रजातंत्र में है। दक्षिण में र०स०फ०स०र० काले सागर और उत्तरी काकेशस् से उत्तरी महासागर तक फैला हुआ है।

इसकी भूमि के भीतर अपार खनिज संपत्ति पड़ी हुई है। उराल, क्रिमिया (केर्च) और सिबेरिया (सिवेर) की लोहे की खानें; कज़्नेत्स्क, पूर्व सिबेरिया, उराल और मास्को प्रान्त की कोयले की खानें हैं। अज़ोफ़-कालासागर प्रदेश, उराल, और बशकिरिया के पेट्रोल और मिट्टी के तेल तथा अन्य जगहों पर सोना, प्लेटिनम्, ताम्बा, सीसा और राँगे की खानें मौजूद हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी र०स०फ०स०र० सोवियत्-संघ का बहुत महत्त्व-पूर्ण भाग है। इससे ही कृषि और उद्योग की उपज का ७० सैकड़ा आता है।

सोवियत्-संघ की जनसंख्या का आधे से कुछ अधिक रूसी है लेकिन र०स०फ०स०र० की जनसंख्या का $\frac{4}{5}$ रूसी जाति है। र०स०फ०स०र०

में बहुत सी जातियाँ बसती हैं; जिनकी भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए १७ स्वायत्त-प्रजातंत्र और ६ स्वायत्त जिले स्थापित किये गये हैं। उनमें शिक्षा और संस्कृति का माध्यम स्थानीय भाषा है। १७ स्वायत्त प्रजातंत्रों और ६ स्वायत्त जिलों का फ़ेडरेशन (समुदाय) होने से इसे र०स० फ़ेडरेटेड् साम्यवादी रिपब्लिक कहते हैं। र०स०फ०स०र० के भिन्न भिन्न भाग अपनी खास खास विशेषता रखते हैं। इसलिए उनका वर्णन पृथक् पृथक् किया जाता है—

१—बिना काली-मिट्टीवाला-प्रदेश—(मास्को, यीजेंन्, तुला, इवानोवो, और यरुस्लावी ज़िले) ये ही रूसी राज्य के मूल स्थान हैं और आज भी सारे सोवियत्-संघ का प्रधान उद्योग-केन्द्र यहाँ है। इसी प्रदेश में सोवियत्-संघ के उद्योग का ३० सैकड़ा और र०स०फ०स०र० का ४० सैकड़ा केन्द्रित है। खास उद्योग हैं, मशीन बनाना, धातु तैयार करना, कपड़ा और रसायन के कारखाने।

मास्को **र०स०फ०स०र०** और **स०स०स०र०** दोनों की सिर्फ़ राजनीतिक और सांस्कृतिक राजधानी ही नहीं है, बल्कि यहीं वे बड़ी बड़ी शिक्षण संस्थाएँ हैं जिनमें सारी सोवियत्-भूमि के विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं। इन सब से भी बढ़कर मास्को का महत्त्व है सोवियत्-संघ के आर्थिक केन्द्र होने में। नक़शा में देखने से भी मालूम होगा कि यहीं से सोवियत् यूनियन के चारों कोनों में १० रेलों का जंकशन है।

यहाँ के दूसरे उद्योग-केन्द्र हैं—इवानोवो (कपड़े के कारख़ाने), यारोस्लाव, ओरेख़ोवो-जुयेवो और तुला।

इस प्रदेश को कच्चा माल और खाद्य पदार्थ सोवियत्-संघ के दूसरे भागों से मिलता है; और उसके बदले में यहाँ से कलें, रासायनिक पदार्थ, कपड़े और किताबें भेजी जाती हैं।

२—काली-मिट्टीवाला-प्रदेश—जिसमें कुर्स्क, ओरेल्, तम्बोफ़् और व्रोरोनेज ज़िले शामिल हैं। यह बड़ी उपजाऊ भूमि है। और आबहवा भी

यहाँ उतनी सर्द नहीं है। ज़ारशाही के ज़माने में अपनी अद्वितीय दरिद्रता के लिए यह प्रदेश बहुत मशहूर था। ज़मींदारों और ताल्लुकेदारों का यहाँ बहुत बोल-बाला था। उनका अत्याचार उतना ही ज़्यादा था, जितनी ज़्यादा कि यहाँ के किसानों की ग़रीबी। लेकिन अब यह प्रदेश खेती में बहुत उन्नत है। चुकन्दर, सूर्यमुखी, सन और आलू के बड़े बड़े खेत हैं। गेहूँ की खेती ख़ास तौर से होती है। इनके अतिरिक्त यहाँ बहुत से कल-कारख़ाने भी हैं, जो वोरोनेज़्-लिपेत्स्क, कुर्स्क और ब्रयान्स्क नगरों में अवस्थित हैं।

यह प्रदेश अन्य भागों को गेहूँ, चीनी, सन, आलू, वनस्पति तैल और सुअर के मांस के साथ साथ धातु तथा धातु की वस्तुएँ और नक़ली रबर की चीज़ें भेजता है।

३—उत्तर-प्रदेश—इसमें लेनिन्ग्राद्, आर्चेङ्गल और वोलोग्दा के ज़िले तथा करेलिया और कोमी के स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। दक्षिण-पश्चिमी भाग को छोड़कर यह उत्तर-प्रदेश जंगलों से भरा है। यहाँ से लकड़ी बड़े भारी परिमाण में विदेशों में भेजी जाती है। दक्षिण-पश्चिमी भाग (लेनिन्ग्राद्—वोलोग्दा रेल के दक्षिण) को बहुत पुराने समय से जंगल काट-कर खेती के लिए तैयार किया गया था; और प्रागैतिहासिक काल से ही यहाँ मनुष्यों की घनी बस्ती बसी थी। यहाँ सन और दूध देनेवाले पशुओं का पालन खास तौर से किया जाता है।

लेनिन्ग्राद् यहाँ का बड़ा उद्योग-केन्द्र है। साथ ही समुद्र का एक भारी बन्दर है। शताब्दियों तक ज़ार की राजधानी रहा और अब भी शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र है।

दूसरे उद्योग-केन्द्र हैं—अर्ख़ङ्गेल्स्क (आर्चेङ्गल), उत्तरी देउना नदी के तट पर अवस्थित है। यहाँ लकड़ी के बहुत से कारख़ाने हैं, और यहाँ से उसे विदेशों में भेजा जाता है। किरोव्स्क एक बिलकुल नया साम्य-वादी शहर है; और एपेटाइट (रासायनिक वस्तु जो खाद के काम में आती है) का संसार में सब से बड़ा उद्गम स्थान है।

उत्तर-प्रदेश सोवियत् के और भागों को कलें, किताबें, एपेटाइट्, अलोमीनियम्, लकड़ी, सन, मछली और डेरी की चीज़ें (गो-शूकर-मांस, दूध, पनीर, मक्खन आदि) भेजता है।

४——पश्चिम-प्रदेश——जिसमें स्मोलेन्स्क और कलिनिन् ज़िले शामिल हैं।

यहाँ की आबोहवा नम और नर्म है। बहुत कीमती जंगल और नर्म कोयला (पीट) का यहाँ बहुत बड़ा ज़ख़ीरा है। खेती यहाँ का प्रधान व्यवसाय है, लेकिन उसमें भी अधिक मूल्य वाली फ़सल (सन, आलू, तरकारी, आदि) और डेरी की चीज़ें ख़ास तौर से पैदा की जाती हैं। कलिनिन् और स्मोलेन्स्क नगरों में बहुत से कारख़ाने बनाये गये हैं।

सोवियत् के और भागों में यहाँ से सन, मांस, मक्खन, पनीर, लकड़ी, दियासलाई, काग़ज़ और कपड़े भेजे जाते हैं।

५——वोल्गा-क्षेत्र——वोल्गा रूस की सब से बड़ी नदी है। ईसाई धर्म स्वीकार करने से पहले रूसी लोग इसे गंगा की तरह पवित्र मानते थे और 'वोल्गा माई' कहा करते थे। उसी पवित्रता के कारण तब से आज तक लाखों लड़कियों का नाम वोल्गा रखा जाता है। गोर्की से अस्त्राख़ान् (कास्पियन सागर) तक फैले हुए इस प्रदेश में गेहूँ, तेल, नमक, मछली की खास तौर से अधिक उपज होती है। वोल्गा की धारा से मकान बनाने की लकड़ियों के हज़ारों बेड़े नीचे की ओर बहाये जाते हैं। जिन जिन जगहों पर रेलें नदी को पार करती हैं, वहाँ बहुत से शहर बस गये हैं।

वोल्गा-क्षेत्र को उत्तर से दक्षिण तीन हिस्सों में विभक्त किया जा सकता है। जंगली-वोल्गा, जंगली-पथरीली वोल्गा, पथरीली वोल्गा।

(क) जंगली-वोल्गा——इसमें गोर्की और किरोफ़् के ज़िले तथा उद्मुर्द और मरि के स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। मास्को से उराल और सिबेरिया की तरफ़ जानेवाले रास्ते इधर ही से गुजरते हैं।

गोर्की जंगली-वोल्गा का सब से बड़ा औद्योगिक केन्द्र है। लेनिन्ग्राद्

से कास्पियन सागर को जानेवाला जल-मार्ग (नेवा और वोल्गा द्वारा) तथा मास्को से उराल को जानेवाला जल-मार्ग (ओका और क़ामा नदियों द्वारा) इसी जगह से जाता है। पंच-वार्षिक-योजनाओं में गोर्की का महत्त्व और भी बढ़ गया है। लाल सेर्मोवो कारख़ाने में स्टीमर और रेलवे इंजन बनाये जाते हैं। यहीं पर मोलोतोफ़्-मोटरकार-फ़ैक्टरी है, जो कि यूरोप की सब से बड़ी मोटर फ़ैक्टरी है। लकड़ी और रसायन के भी कई बड़े कारख़ाने हैं। यह प्रदेश अपने यहाँ से मशीनें, रासायनिक खाद, लकड़ी, सन और मांस तथा दूध की चीज़ें भेजता है।

(ख) जंगली-पथरीली वोल्गा—जिसमें कुइबिशेफ़् का ज़िला तथा तातार, चुवाश् और मोल्दावी स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। इसके उत्तरी हिस्से में जंगल ज़्यादा हैं और दक्षिण में वह कम होते गये हैं। गेहूँ की खेती यहाँ बहुत ज़्यादा होती है। उसके अतिरिक्त सन, आलू, सूर्यमुखी भी बोये जाते हैं। नर्म कोयला, मकान बनाने के पत्थर, मिट्टी का तेल (हाल में सीज़्रान् में प्राप्त) आदि चीज़ें यहाँ की खानों से निकलती हैं।

इस इलाक़े का प्रधान उद्योग-केन्द्र कज़ान् है, जहाँ के तातार ख़ान शताब्दियों तक अपने आस-पास के प्रदेशों पर शासन किया करते थे। कामा नदी इससे थोड़े ही ऊपर वोल्गा से मिलती है। कुइबीशेफ़् दूसरा उद्योग-केन्द्र है जो कि वोल्गा (समर्स्कायालूका) के घुमाव के पूर्वी कोने पर बसा हुआ है।

इस इलाक़े की ख़ास उपज हैं—अनाज, लकड़ी की चीज़ें, मकान बनाने के पत्थर, मोटर, रेल आदि की मशीनें। यहाँ से दूसरे भागों को अनाज, पशु, सन, लकड़ी, मकान के पत्थर और मशीनें भेजी जाती हैं।

(ग) पथरीली वोल्गा—इसमें सरातोफ़् और स्तालिन्ग्राद् के ज़िले तथा वोल्गा-जर्मन और कल्मुख-स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। यहाँ की ज़मीन पथरीली और आबोहवा ख़ुश्क है। दक्खिन-पूरब कास्पियन के किनारे का भाग रेगिस्तान सा मालूम होता है। अधिकतर इस इलाक़े

का भाग चरागाहों के काम आता है। सरातोफ़ और स्तालिन्ग्राद् के इलाक़े में गेहूँ, सूर्यमुखी और तरबूज़े बोये जाते हैं। वोल्गा के मुहाने और पास के कास्पियन तट में मछलियाँ कसरत से मिलती हैं। वोल्गा के पूर्व में वहुत सी नमकीन झीलें हैं जहाँ पर नमक की अपरिमित राशि पड़ी हुई है।

पथरीली वोल्गा का सब से बड़ा उद्योग-केन्द्र स्तालिन्ग्राद् है। यहाँ ट्रैक्टर वनाने का वहुत भारी कारख़ाना है।

दूसरा उद्योग-केन्द्र अस्त्राख़ान है जो कि वोल्गा के मुहाने पर कास्पियन तट पर वसा हुआ है। यहाँ मछुआही, मछली सुखाकर टीन में बन्द करने और जहाज़ वनाने के बड़े वड़े कारख़ाने हैं।

पथरीली वोल्गा इलाक़े से दूसरे भागों को ट्रैक्टर, सीमेंट, मछली, नमक, पशु, अनाज और तरबूज़े भेजे जाते हैं।

६—दक्षिण प्रदेश—इसमें दोन्-ऊपर-रोस्तोव का ज़िला, क्रास्नोदर और ओर्द्जोनीकिद्ज़े के इलाक़े तथा क्रिमिया, कवर्दिनो-वल्कारिया, उत्तर-ओसेतिन्, चेचेन्-इंगुश और दागेस्तान के स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। यह पूर्व में कास्पियन से पश्चिम में अजोफ़् और काला-सागर तक फैला हुआ है। दक्षिण में काकेशस के प्रजातंत्र हैं। समुद्र की समीपता के कारण आवोहवा शीतोष्ण है।

यह प्रदेश शीतोष्ण आवोहवा के कारण खेती वहुत विकसित है। और यात्रियों के लिए यहाँ बहुत से स्वास्थ्यकेन्द्र बने हुए हैं। लेकिन सब से वड़ी चीज़ यहाँ की खनिज सम्पत्ति है। दोन्वास की कोयले की खानें, केर्च का लोहा, ग्रोज़्नी तथा कूवा-कालासागर क्षेत्र का मिट्टी का तेल और ोवोरोसिस्क की सीमेंट खास महत्त्व रखते हैं।

यहाँ के मुख्य उद्योग-केन्द्र हैं, रोस्तोव् (दोन नदी के ऊपर) में कृषि-ंधी मशीनों का वहुत भारी कारख़ाना है। सख्ती में कोयले की खानें ग्रोज़्नी, नेफ़्तेगोर्स्क और तुअप्से में मिट्टी का तेल निकलता है। तगन्रोग्

और केर्च में लोहे और फ़ौलाद के कारख़ाने हैं। नोवोरोसिस्क में सीमेंट तैयार होता है। क्रस्नोदर खाद्य के कारखानों के लिए मशहूर है।

कृषि के लिए खास जगहें हैं—कूबन् में मक्का, सूर्यमुखी, गेहूँ, साथ ही गो-शूकर-पालन भी होता है। क्रिमिया के दक्षिणी तट तथा काला-सागर की तटवर्ती भूमि में सेब, अंगूर आदि के बग़ीचे और तंबाकू की खेती बहुत होती है। दोन के तट और साल्स्क की पथरीली भूमि में गेहूँ, गोश्त और ऊन पैदा होता है।

स्वास्थ्यदायक स्थान काला-सागर का किनारा और क्रिमिया का दक्षिण तट है। यहाँ बहुत से गर्म पानी तथा लोहा गन्धक मिले जल के चश्मे हैं।

दक्षिण-प्रदेश अपने यहाँ से कृषि की मशीनरी, मिट्टी का तेल, वनस्पति तेल, ऊन, अनाज, तंबाकू और मेवे बाहर भेजता है।

७—उराल-प्रदेश—इसमें स्वेर्द्लोव्स्क, चेल्याबिन्स्क और ओरेन्बुर्ग के ज़िले तथा बश्किर-स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। नाना प्रकार की खनिज सम्पत्ति के कारण यह प्रदेश सोवियत्-संघ में बड़ा महत्त्व रखता है। मास्को से सिबेरिया जाने का रास्ता इधर ही से गुजरता है। उराल् और कुज़्नेत्स्क की खनिज सम्पत्तियों को मिलाकर सारे पूर्वी सोवियत्-संघ को उद्योग-मय बनाने के लिए यहाँ बहुत भारी केन्द्र संगठित हुआ है। पंच-वार्षिक-योजनाओं ने इस अपरिचित बियाबान का नाम सारे संसार में मशहूर कर दिया है। कुज़्नेत्स्क में कोयले की खानें हैं; और उराल् में लोहा। दोनों को मिला कर ये सारे देश के उद्योग की शक्ति का स्रोत् बन गया है। प्रथम पंच-वार्षिक-योजना ने मग्नितोगोर्स्क का संसार-विख्यात लोह-फ़ौलाद-कारख़ाना बनाया। चेल्याबिन्स्क ट्रैक्टर कारख़ाना भी इसी प्रदेश में बनाया गया है। स्वेर्द्लोव्स्क में मशीनों के बनाने का बड़ा कारख़ाना है। नोवोतगिल् में मोटरें बनाई जाती हैं। ये बड़े बड़े कारख़ाने सिर्फ़ पिछले ९ वर्षों में बने हैं।

धातु और मशीन के कारख़ानों के अतिरिक्त उराल् में लकड़ी, काग़ज़ और रासायनिक पदार्थों की बहुत सी बड़ी बड़ी फ़ैक्टरियाँ हैं।

उराल् के मुख्य उद्योग-केन्द्र हैं, स्वेर्द्लोव्स्क, चेल्याविन्स्क, मग्नीतो-गोर्स्क, पेर्म, निज़्नीतगिल्, ऊफ़ा और ज़ल्तोउस्त।

यहाँ से बाहर जानेवाली चीज़ें हैं—धातु और धातु से बनी चीज़ें, ट्रैक्टर, खान की मशीनें, रेल के डब्बे, लकड़ी, काग़ज और रासायनिक खाद्य।

८—पश्चिमी सिबेरिया—इसमें ओम्स्क और नोवोसिबिर्स्क के ज़िले तथा अल्ताई इलाक़ा है। यह बहुत लंबा चौड़ा प्रदेश है। सोवियत्-संघ का सब से बड़ा कोयला-क्षेत्र कुज़्नेत्स्क यहीं है। पथरीली अलताई में गेहूँ बहुत पैदा होता है। दक्षिण में बाराबिन्स्क और ईशिम् जंगलों के इलाक़े हैं। तइगा और तुन्द्रा उत्तर में लकड़ी, बारहसिंगा-पालन और मछली के लिए बहुत अच्छे इलाक़े हैं। हज़ारों वर्षों से इस प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति अछूती पड़ी थी और उनमें सोवियत्-शासन के बाद ही से हाथ लगाया गया है।

इस प्रदेश का दक्षिणी भाग सिबेरिया की रेलवे से उत्तर-दक्षिण दो हिस्सों में बँटा है। उत्तर तरफ़ ओब्-इर्तुश् नदी उत्तरी महासागर में मिलती है; और उत्तरी महासागर के स्टीमर इस नदी से बहुत भीतर तक चले आते हैं।

कुज़्नेत्स्क—जो सोवियत् का सब से भारी कोयला-क्षेत्र है—का कोयला पहले सिर्फ़ सिबेरिया की रेलवे के काम भर ही निकाला जाता था; लेकिन अब वह दूसरा दोन्बास् हो गया है। कुज़्नेत्स्क की खानें अब कई गुना ज़्यादा कोयला निकालती हैं। यही कोयला उराल के कारख़ानों तक जाता है।

कुज़्नेत्स्क में भी एक भारी लोह-फ़ौलाद कारख़ाना खोला गया है जिसमें अभी ही १० लाख टन लोहा प्रति वर्ष तैयार होने लगा है; आगे उसे और बढ़ाया जा रहा है। सारे सिबेरिया और सुदूर-पूर्व की माँग को यह पूरा करने जा रहा है।

जिस शक्ति-संचय के लिए वर्षों का प्रयत्न और शान्त वातावरण चाहिए, वह अब महीनों में थोड़े हो सकता है। चीनी साम्यवादी और सोवियत्-प्रजातंत्र दोनों ही चाङ के लिए कुनैन की गोली थे। हर तरह से निराश हो कर चाङ ने उनकी ओर सहायता माँगने के लिए हाथ बढ़ाया। चीनी साम्यवादियों को अपनी शक्ति मजबूत करने के लिए चाङ ने अवसर ही कब दिया था? आजकल के युद्ध में बन्दूक का स्थान भी लाठी से ज़्यादा नहीं है। उसके बल पर जापान से कैसे लड़ाई लड़ी जा सकती है?

समुद्र के रास्ते जापान के जंगी जहाज़ों के डर के मारे रूस सहायता पहुँचा नहीं सकता। स्थल मार्ग से युद्ध-क्षेत्र से सब से नज़दीक का सोवियत् रेलवे स्टेशन १५०० मील से भी अधिक है। और फिर बीच में रेगिस्तानी और पहाड़ी ज़मीन है। इस प्रकार रूस से अधिक सहायता मिलना प्राकृतिक कारणों से बहुत कठिन काम है। और जो मदद सोवियत् प्रजातंत्र कर भी सकता है, वह अपने नज़दीक वाले चीनी साम्यवादियों की ही कर सकता है। चाङ को पूरी मदद देना उसके लिए मुश्किल है। एक तो पिछली करनी के कारण चाङ पर वह विश्वास नहीं कर सकता, कि न जाने किस वक़्त वह फिर पैंतरा बदल दे। दूसरे चाङ का प्रभाव-स्थान रूसी सीमा से २००० मील से भी अधिक दूर है। चाहने पर भी वह युद्ध का सामान वहाँ आसानी से नहीं पहुँचा सकता। चीन के देखने से यही लक्षण मालूम देता है कि कुछ ही समय में उत्तर-पश्चिम के सिङ-क्याङ और कन्-सू जैसे दो चार प्रान्तों को छोड़ कर बाकी सारा चीन जापान के हाथों में चला जायगा। चीनी साम्यवादियों का प्रभाव कन्-सू और उसके आस पास के प्रान्तों में काफ़ी देर तक रहेगा; क्योंकि वह प्रान्त सोवियत् सीमा के पास है। और जितना समय बीतता जायगा, उतना ही अधिक साम्यवादी अपने को मज़-बूत करते जायँगे। आज कल चीन के युद्ध-क्षेत्र की जो ख़बरें आती हैं, उनसे पता लगता है कि चीन में सब से अधिक डट कर जापान का मुक़ा-बिला करनेवाली यही साम्यवादी फौजें हैं। लेकिन इन फौजों की ताक़त

पश्चिमी सिबेरिया अपने यहाँ से लोहा-कोयला, अनाज, मांस, मक्खन और लकड़ी बाहर भेजता है।

६—पूर्वी-सिबेरिया—इसमें क्रास्नोयास्र्क का इलाका, इर्कुत्स्क और चीता के ज़िले तथा बुर्यत्-मंगोल और याकूत-स्वायत्त-प्रजातंत्र हैं। यह बहुत लंबा चौड़ा प्रदेश है; और येनीसेइ की उपत्यका से सुदूर पूर्व प्रदेश तक फैला हुआ है।

पूर्वी सिबेरिया पहाड़ी प्रदेश है। यहाँ पश्चिमी सिबेरिया से भी अधिक सर्दी पड़ती है। इसके ही कारण खेती के लिए यह उतना योग्य स्थान नहीं था; जिसके परिणाम स्वरूप इसमें आबादी बहुत कम है। लेकिन प्रकृति ने इसे उद्योग-संबंधी हर एक सामग्री के लिए बहुत धनी बनाया है।

येनीसेइ, अंगारा और लेना जैसी बड़ी नदियाँ इस प्रदेश में दक्षिण से उत्तर को बहती हैं; और इनसे बिजली की शक्ति इतनी पैदा की जा सकती है कि जिनका मुक़ाबला और जगह नहीं हो सकता। चेरेम्ख़ोफ़, कान्स्क, येनीसेइ और तुंगुस्का में भी कोयले के बड़े बड़े ज़ख़ीरे हैं। जंगल काम की लकड़ियों से भरा है। क़ीमती पत्थर, सोना तथा दूसरे कीमती धातु और टिन यहाँ बहुत निकलता है।

इस प्रदेश में काम अभी अभी शुरू हुआ है; लेकिन सिबेरियन रेलवे के करीब का देश दक्षिण में, उत्तर में उत्तरी जहाजी माल और कुज़्बास् का धातु का उद्योग—इन तीन जगहों में उद्योगीकरण बहुत आगे पहुँच चुका है। पूर्वी सिबेरिया सोना, समूरी चर्म और लकड़ी बहुत अधिक परिमाण में बाहर भेजता है।

याकूतिया

तब

उत्तरी सिबेरिया के सब से ठंडे प्रदेशों में याकूतिया एक है। यह बइकाल झील के पास से उत्तरी महासागर तक फैला हुआ है।

सोवियत् की अन्य जातियों (३,२७,५०० जने०) की तरह याकूतिया

भी शताब्दियों तक ज़ारशाही के निरंकुश शासन से पीड़ित रही। ज़ार की सरकार की नीति थी, याकूतिया और उसके निवासियों को हर तरह से चूसना। रूसी व्यापारी और कारख़ाने-वाले याकूत सामन्तों (तोइवोन्) की मदद से देश के क़ीमती समूरी चर्म तथा दूसरी चीज़ों को लूट रहे थे। उनके तरीक़ों में एक तरीक़ा था, याकूत तथा दूसरी जातियों (एवेन्की, चुक्चा) में शराब और वोद्का के व्यसन को ज़ोर शोर से फैलाना।

जिस तरह की आर्थिक लूट वहाँ हो रही थी, उससे प्रदेश में रहनेवाली जातियाँ—याकूत, एवेन्की—दरिद्रता की पराकाष्ठा तक पहुँच गई थीं; और उनका सर्वनाश बहुत नज़दीक था। उनमें क्षय रोग का बड़ा ज़ोर था; और पाँच वर्ष के भीतर पैदा हुए बच्चों में १०० में ७० मर जाते थे। पैदाइश से मौत की संख्या अधिक होने के कारण देश का बहुत सा भाग उजाड़ हो गया था।

याकूत लोगों की सांस्कृतिक उन्नति के लिए कुछ भी नहीं किया जाता था। अगर लोगों में कभी इस तरह का ख़याल भी आने लगता; तो उसे तुरन्त ही बड़ी ज़बर्दस्ती के साथ दबा दिया जाता था। स्कूल वहाँ थे नहीं और जो थे भी, उनमें प्रायः रूसी अफ़सर, व्यापारी और पुरोहितों के लड़के ही पढ़ते थे। याकूत् विद्यार्थियों की संख्या १५ सैकड़ा थी; और वह भी साधारण याकूत् जनता की सन्तान न हो कर ज़ारशाही के ग़ुलाम धनियों और कुलकों के लड़के थे। स्कूल की पढ़ाई सिर्फ़ रूसी भाषा में होती थी। दो सैकड़ा से ज़्यादा याकूत पढ़ लिख नहीं सकते थे। याकूत भाषा में समाचारपत्र निकालने की सख़्त मनाही थी।

क्रान्ति से पहले याकूतिया कृषिप्रधान देश था। कृषि के साथ पशु-पालन और शिकार का काम भी होता था। कल-कारख़ानों का नाम भी न था। ३० लाख वर्ग-किलोमीतर भूमि में फैली अनन्त प्राकृतिक सम्पत्ति के उपयोग का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था। १९१७ में सभी छोटे बड़े उद्योग-धन्धों की उपज सिर्फ़ १;५७;००० रूबल थी।

अब

२० वर्ष में जो साम्यवादी निर्माण हुआ है, उसमें पिछड़ी तथा परतंत्र याकूतिया बदल कर एक औद्योगिक साम्यवादी देश बन गई है। चूसने वाली श्रेणियाँ लुप्त हो गईं और वहाँ मनुष्य के श्रम को मनुष्य लूट नहीं सकता। बहुत से नये कल-कारख़ाने स्थापित हुए हैं। जहाँ पहले देश की आमदनी का ज़रिया अधिकतर खेती थी, वहाँ अब राष्ट्रीय आय का ६६ सैकड़ा कल-कारख़ानों से है। उद्योग-धंधे से सारी आमदनी पिछले साल ३ करोड़ ९६ लाख रूबल हुई थी (तुलना कीजिए १९१७ के १,५७,००० रूबल से)। नये नये कल-कारख़ानों की स्थापना के कारण कारख़ानों में काम करनेवाले कमकरों की संख्या अब २० हज़ार है।

याकूतिया में सोने की बड़ी बड़ी खानें हैं। सोना पैदा करने में संसार में सोवियत् भूमि का नम्बर दूसरा है; और सोवियत् के सारे सोने का १५ सैकड़ा याकूतिया से आता है। कई कोयले की खानों में काम हो रहा है और अब उत्तरी महासागर तथा सिबेरिया की बड़ी बड़ी नदियों में चलने वाले जहाज़ों को कोयला और जगह से लाने की ज़रूरत नहीं। याकूतिया की भूमि में राँगा संसार भर में सब से ज़्यादा है। उसमें भी उसकी खान और कारख़ाने का काम ज़ोर से चल रहा है। पेट्रोल और मिट्टी के तेल के कुएँ नोर्दविक, अम्गा और तुल्वा में खोदे जा रहे हैं; और तृतीय पंच-वार्षिक योजना में बाहर से तेल मँगाने की ज़रूरत न पड़ेगी।

याकूतिया में देवदार तथा दूसरी तरह की लकड़ियों का बहुत भारी जंगल है। लकड़ी का उद्योग भी बहुत आगे बढ़ रहा है; और याकूतिया अपने काम से भी अधिक लकड़ी दे रही है। मकानों, आफ़िसों और दूसरी इमारतों में लकड़ी के इस्तेमाल में कंजूसी की आवश्यकता नहीं। नदियों में चलने के लिए पेलेदुये और ओसेत्रोवो में जहाज़ बनाने के बड़े बड़े कारख़ाने स्थापित हुए हैं।

शिक्षा के प्रचार के साथ साथ याकूतिया में प्रेस का काम बहुत बढ़ गया

है। १९१७ में छपाई पर ३२,३०० रूबल ख़र्च हुए थे और १९३६ में वह खर्च था ४७,३६,५०० रूबल।

तीसरी पंचवार्षिक योजना में पेट्रोल, सोना, राँगा, कोयला और लकड़ी की उपज को और भी कई गुना बढ़ाने के साथ साथ भोजन-संबंधी उद्योग में वहुत अधिक उन्नति करने की योजना रखी गई है।

कृषि में याकूतिया नें विशेष उन्नति की है। क्रान्ति के बाद सभी खेत किसानों के हाथ में चले गये। फिर पंचायती खेती ने लोगों को काम के लिए और भी उत्साहित कर दिया और बहुत से नये खेत आबाद किये गये। १९१७ में जितना खेत था, वह अब उससे तिगुना हो गया है। याकूत लोग अधिकतर बारहसिंगा आदि पशुओं को पाल कर जीविका कमाते थे। अब उनका सारा ध्यान पंचायती खेती की ओर है। पिछले साल (१९३७) याकूतिया में कोल्ख़ोज़् ६७ सैकड़ा और सोव्ख़ोज़् (सरकारी खेती) १८ सैकड़ा थी। अब १५ सैकड़ा खेती ही छोटे छोटे किसानों के हाथ में है।

कमकर युवती (याकूतिया)

सोव्ख़ोज़् और कोल्ख़ोज़् स्थापना के साथ साथ खेती के काम को मशीन से करना आरंभ हुआ है। १९३२ में खेती के यंत्र (जिन में ट्रैक्टर, कंबाइन आदि शामिल हैं) सिर्फ २,००० थे। १९३६ में उनकी संख्या २८,४४३ हो गई। उन

जगहों में जहाँ अनाज की खेती असंभव समझी जाती है, वहाँ लिसेंको के आविष्कार किये बीज-संस्कार (वेर्नलाइज़ेशन्) के तरीक़े से फसल पैदा होने लगी है। उदाहरणार्थ ६२° अक्षांश से उत्तर २६४० एकड़ खेती बोई गई। यह बात सिर्फ याकूतिया के लिए ही आर्थिक महत्त्व नहीं रखती, बल्कि इसका महत्व सारे वैज्ञानिक संसार के लिये है।

पशुपालन में भी बहुत उन्नति हुई है। कोल्ख़ोजों ने नई तरह की पशु-शालाएँ बनाई हैं; और साँड़ के चुनाव तथा संकर-क्रिया से पशुओं की जाति में विकास किया जा रहा है।

याकूतिया अब समुद्र के रास्ते उत्तरी रूस से सम्बद्ध है। १९३६ में मास्को आदि कारख़ानों का बना १५,००० टन माल इस रास्ते याकूतिया आया। **याकुत्स्क** याकूतिया प्रजातंत्र की राजधानी है। इर्कुत्स्क से याकुत्स्क तक नियमपूर्वक हवाई-यात्रा होती है। याकुत्स्क से याकूतिया का हर इलाक़ा हवाई जहाज़ों द्वारा सम्बद्ध है। सिबेरिया के रेलवे-स्टेशनों से देश के भीतर तक कितनी ही मोटर-सड़कें बनाई गई हैं।

क्रान्ति के बाद नदी द्वारा माल का यातायात बहुत तेज़ी से बढ़ा है। याकूत नदी में, जहाँ १९११ में छोटे छोटे बजरे ३२ थे, वहाँ १९३६ में ११३ स्टीमर चल रहे थे। लेना नदी द्वारा १९११ की अपेक्षा १९३६ में सात-गुना ज़्यादा माल आया। कोलीमा, इन्दिगिर्का, याना और बोलेनेक् नामक उत्तरी नदियों में भी कई बेड़े माल ढोने के लिए तैयार किये गये हैं।

क्रान्ति से पहले याकूत भाषा एक असभ्य भाषा समझी जाती थी। उसका न कोई साहित्य था न लिपि। अब वह रोमन अक्षरों में लिखी जाती है; और स्कूलों की सात वर्ष की पढ़ाई उसी भाषा द्वारा होती है। आरंभिक और हाई स्कूलों के विद्यार्थियों में १५ गुना वृद्धि हुई है। याकूतिया में सात वर्ष की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य है। अब शिक्षितों की संख्या प्रतिशत ८० है (जन-संख्या ३२७॥ हजार); बाकी २० सैकड़ा वे ही बूढ़े लोग हैं जो कुछ ही वर्षों के मेहमान हैं।

पिछले २० सालों में याकूत लोगों ने अपने लिए अध्यापक, डाक्टर, इंजीनियर आदि बहुत अधिक तादाद में पैदा किये हैं। वहाँ १२ टेकनिकल स्कूल, तीन फ़ैक्टरी-उम्मेदवार-स्कूल, दो कमकर-तैयारी-स्कूल हैं; जिन में २४३० विद्यार्थी पढ़ते हैं। इनके अतिरिक्त दो ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट हैं। ४०० याकूत विद्यार्थी मास्को, लेनिन्ग्राद् आदि के विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं।

आर्थिक उन्नति और शिक्षा के प्रचार के साथ साथ अख़बारों, किताबों रेडियो और सिनेमा वगैरह की माँग बहुत बढ़ गई है। स्कूली किताबों के अतिरिक्त सैकड़ों दूसरे ग्रन्थ याकूत भाषा में छपे हैं। अब उसमें १८ समाचारपत्र और कितनी ही मासिक पत्रिकाएँ निकलती हैं। कई सौ अध्ययन परिषद्, ग्राम-वाचनालय, कोलख़ोज्-क्लब, सांस्कृतिक-भवन, प्रजातंत्र के कोने कोने में फैले हुए हैं। एक नाटक-थियेटर, एक कोल्ख़ोज्-थियेटर, और एक जन-कला-भवन स्थापित हुआ है। याकूतिया में बस्तियाँ बहुत दूर दूर पर बसी हैं। गाँवों के लिए चलते फिरते सिनेमा का प्रबन्ध है। याकुत्स्क नगर के रेडियो-स्टेशन से हर रोज़ अपनी भाषा में ब्राड-कास्टिंग होती है। रेडियो-यंत्र से कोई गाँव खाली नहीं है। याकूत भाषा और संस्कृति की खोज के लिए एक अन्वेषण-पीठ है। कृषि-संबंधी अन्वेषण के लिए एक अलग संस्था है। जल-आकाश-संबंधी अन्वेषण के लिए एक विज्ञानशाला है। जंगल, समूर और खनिज पदार्थों की खोज के लिए एक विद्वत्-परिषद् है। संक्षेप में याकूत जाति और उसकी प्राकृतिक सम्पत्ति का वैज्ञानिक अन्वेपण सुव्यवस्थित रूप से हो रहा है।

स्वास्थ्य-रक्षा पर सोवियत् सरकार का बहुत ध्यान है। १९११ में कुछ थोड़े से चिकित्सालय थे; जिन में १९ डाक्टर काम करते थे। १९३६ में जहाँ अस्पतालों की संख्या १४३ हो गई, डाक्टर अब १६३ हैं।

१९२५—२६ में राष्ट्रीय आय ४३ लाख रूबल थी; लेकिन १९३७ में वह १० करोड़ ७० लाख हो गई। ४ करोड़ ९० लाख रूबल शिक्षा और सांस्कृतिक काम में ख़र्च किया गया, अर्थात् आदमी पीछे १३६ रूबल (या

६० रुपया)। याकूत जनता ने अपने २० वर्ष की समृद्धि के लिए कृतज्ञता प्रकट करते हुए स्तालिन् को लिखा—

"याकूत जब जंगल में जाता है, तो अपने रास्ते को घास में आग लगा कर प्रकाशित करता है; जिसमें कि उसे लौटने में दिक्कत न हो।

"लेनिन् और स्तालिन् ये दोनों हमारे बड़े प्रकाशित मार्ग हैं, जिन्होंने हमारे हृदयों को आलोकित किया है। इन्हीं प्रकाशित मार्गों द्वारा हम दासता के जंगल, अकाल और दरिद्रता के जंगल से निकल कर सुखमय जीवन के प्रकाशपूर्ण मार्ग पर पहुँचे।"

* * *   * * *

१०—सुदूरपूर्व-प्रदेश—यह व्लादिवोस्तोक् से वेरिंग तक प्रशान्त-महासागर के तट पर फैला प्रदेश है। मास्को से सब से अधिक दूर यही देश पड़ता है। इसके पड़ोस में साम्राज्यवादी जापान है।

उद्योग और आदमी वसाने का काम यहाँ अभी अभी शुरू हुआ है। प्राकृतिक सम्पत्ति इसकी अपरिमित है। सखालिन में कोयला और मिट्टी का तेल निकलता है। दूसरी जगह ताँबा, लोहा, सोना के अतिरिक्त सुन्दर जंगल और वकसरत मछलियाँ हैं। जहाँ सोवियत्-समुद्र में हद से ज़्यादा मछलियाँ हैं, वहाँ जापान के पास वाले समुद्र में मछलियाँ अपेक्षाकृत वहुत कम हैं। मछुआही के लिए अक्सर दोनों शक्तियों में झगड़ा रहता है। जापानी लोग सोवियत् समुद्र में वदबूदार तेल के पीपे छोड़ देते हैं, जिसमें मछलियाँ गन्ध से भाग कर उन के समुद्र की ओर चली जाँय।

ज़ारशाही इस प्रदेश को आगे के देशों को विजय करने के ख़याल से इस्तेमाल करती थीं। यहाँ की प्राकृतिक सम्पत्ति को काम में लाने की ओर उसका खयाल नहीं जाता था। सखालिन् द्वीप को उसने कैदियों के भेजने के लिए काला-पानी वनाया था।

आजकल यहाँ पर वड़े ज़ोरों से नई फ़ैक्टरियाँ और कारख़ाने वन रहे हैं। जापान की लालच भरी निगाहें इसी प्रदेश की ओर हैं। सोवियत्

सरकार ने यहाँ के सामुद्रिक तटों और स्थल-सीमाओं पर बड़ी ज़बर्दस्त किलाबन्दी कर रखी है। पनडुब्बी और युद्ध-पोतों की भारी तादाद के अतिरिक्त जंगी विमानों का बहुत बड़ा अड्डा—जिनसे जापान सब से अधिक डरता है और जो उसकी राजधानी से तीन घंटे की ही उड़ान पर हैं—क़ायम किये गये हैं। सुदूर-पूर्व की महासेना का नायक है, सोवियत् का यशस्वी सेनापति मार्शल ब्लूख़ेर। तायगा के जंगल को साफ किया जा रहा है। रेल और सड़कें बनाई जा रही हैं। नये नये नगर आबाद किये जा रहे हैं। मालूम होता है कि यह जनशून्य प्रदेश कुछ ही वर्षों में ख़ूब आबाद हो जायगा।

इस प्रदेश से सोना, कोयला, मिट्टी का तेल, समूरी चर्म, मछली और लकड़ी बाहर जाती है।

*** ***

२—कज़ाकस्तान स०स०र०

सोवियत्-संघ के ग्यारह संघ-प्रजातंत्रों में कज़ाकस्तान-सोवियत्-संघ रिपब्लिक भी एक है। रूसी-संघ-सोवियत्-रिपब्लिक के बाद क्षेत्रफल में दूसरा नंबर इसी का है। यह पश्चिम में कास्पियन से ले कर अल्ताई तक और दक्खिन में ताशकन्द के नज़दीक से ले कर उत्तर में सिबेरिया के तुन्द्रा तक फैला हुआ है। लंबाई इसकी ३००० किलोमीतर और चौड़ाई उत्तर दक्षिण १५०० किलोमीतर है। क्षेत्रफल २८,६०,००० वर्ग किलोमीतर है जो इटली, फ़्रांस, जर्मनी तीनों के बराबर है, तथा हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल से भी बड़ा है। कज़ाकस्तान बहुत सूखा देश है, यहाँ पानी की बहुत कमी है। मध्य और पश्चिमी कज़ाकस्तान में वर्षा बहुत कम होती है। सिर-दर्या, उराल, इली और इर्तिश नदियों ने इस प्यासी भूमि की तृषा को कुछ शान्त किया है। भूमि समतल है; जिस में वृक्षों का कहीं नाम नहीं। कहीं कहीं नंगी छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं जिनके पास छोटी छोटी घासें

उगती हैं। वह ऊँटों और भेड़ों को चराने के लिए अच्छी जगहें हैं। यद्यपि कज़ाकस्तान में पानी की कमी है; लेकिन उसी के साथ साथ खनिज सम्पत्ति से वह मालामाल भी है। यहाँ करागन्दा की कोयले की खानें, पच्छिम में एम्बा नदी के तैलक्षेत्र, जेज्कज़्गन और कोउनरद् की ताँबे की खानें; तथा कितनी ही जगहों पर निकलने वाले राँगे और सीसे इसको बहुत सम्पत्ति शाली बनाते हैं। जन-संख्या सत्तर लाख है। जिसमें ६० सैकड़ा कज़ाक हैं, बाकी में ३५ सैकड़ा उक्रइनी और रूसी हैं; और वह अधिकतर उत्तरी सीमा—जहाँ कि वर्षा अधिक होती है—तथा दूसरी कृषि-प्रधान जगहों में रहते थे। अब उनमें से कितने ही खानों और कल-कारख़ानों की जगहों में पहुँच गये हैं। दक्षिणी भाग की बहुत सी जगहों में उजबक भी रहते हैं। इनके अतिरिक्त वुइगुर, युङ्गन, तातार और जर्मन भी कितनी ही संख्या में बसते हैं।

कज़ाक़ ख़ानावदोश जाति थी; जिसे कि ज़ार के साम्राज्य ने जीत कर अपने हाथ में किया। क्रान्ति के समय तक कज़ाकों का मुख्य पेशा था भेड़, ऊँट चराना। उस वक़्त तक यहाँ की खानों में काम नहीं लगा था। भेड़ ऊँट तो अपने पैरों पर चल कर बाजारों तक पहुँच सकते थे; लेकिन खनिज पदार्थों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने का कोई साधन नहीं था। क्रान्ति के पहले रेल का एक तरह से बिलकुल अभाव था। ट्रान्स-साइबेरियन रेलवे और ओरेन्बुर्ग-ताशकन्द रेलवे कज़ाकस्तान के सिर्फ किनारों भर को छूती थीं। पहली पंचवार्षिक योजना में सोवियत् सरकार ने तुर्क-सिविर की १,००० मील से लंबी रेलवे बना कर ताशकंद को सिबेरिया से मिला दिया। इसके अलावा और भी कई लाइनें बनाकर करगन्दा और दूसरे उद्योग-केन्द्रों को मिला दिया। क्रान्ति के पहले जितनी मील रेलवे यहाँ थी, उससे अब ३½ गुना बढ़ गई है। शिक्षा में कायापलट हुई है। जहाँ पहले मुश्किल से कोई लिख-पढ़ सकनेवाला कज़ाक मिलता था, वहाँ अब सिर्फ कुछ बूढ़े बूढ़ियों को छोड़ कर सभी लिख पढ़ सकते हैं।

सोवियत् की और कितनी ही भाषाओं की तरह क्रान्ति से पहले कज़ाक़-भाषा की न कोई लिपि थी न कोई साहित्य। आज कज़ाक-भाषा साहित्यिक भाषा है और रोमन-लिपि में लिखी जाती है। साधारण स्कूलों में १० लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय, तथा खनिज कालेज डाक्टरी और ट्रेनिंग-कालेज १२ से ऊपर हैं। ८५ टेकनिकल हाई स्कूल हैं। कज़ाक-भाषा में आज कल १५७ पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। लेखकसंघ के ७० सभासद हैं। २४ थियेटर (जिनमें छः नाटक के) हैं। दो संगीत-शालाएँ, एक ओपेरा, एक मूक-नाटक है। कज़ाक-भाषा में अपने फिल्म हैं; और सैकड़ों सिनेमा-घर जगह जगह फैले हुए हैं।

क्रान्ति से पहले आधे वच्चे पाँच वर्ष से पूर्व ही मर जाते थे। ग़रीबी हाथ धोकर लोगों के पीछे पड़ी थी। आज खान, कल-कारख़ाना सभी जगह रौनक दीख पड़ती हैं। सारे प्रजातंत्र में खान और कारख़ानों में काम करने वाले श्रमिकों की संख्या आठ लाख है, जिनमें आधे कज़ाक जाति के हैं। पहले जो लोग अपने अपने पशु अलग पाला करते थे, अब उनकी जगह पंचायती पशुपालनक्षेत्र संगठित हुए हैं। सब से बड़े पशुपालनक्षेत्र में एक करोड़ भेड़ें हैं। १९१३ में ५० हज़ार एकड़ में कपास बोई गई थी; पिछले साल कपास की खेती तीन लाख एकड़ भूमि में हुई। यहाँ के खेतों में ३० हज़ार ट्रैक्टर, और वहुत सी कम्बाइन काम कर रही हैं। अल्माअता पहले ३० हज़ार आवादी का एक गुमनाम क़स्बा था; अब वह कज़ाकस्तान की राजधानी और दो लाख ३० हज़ार आबादी का एक वड़ा शहर तुर्क-सिविर रेलवे पर है।

१९२३–२४ में कज़ाकस्तान का राष्ट्रीय आय-व्यय १२ करोड़ ५० लाख रूवल था। १९३२ में वह ७८ करोड़ ५० लाख; और १९३७ में वह दो अरव हो गया।

कज़ाक कोल्ख़ोज़ी किसान वड़ी समृद्ध अवस्था में हैं। १० से १५ सेर अनाज उनको प्रति दिन के काम की आमदनी हुई है। पियानो, मोटर-

इतनी अधिक बढ़ जायगी कि वह पे-किङ, नान्-किङ को फिर लौटा सकेगी इसमें सन्देह है। सामुद्रिक शक्ति जिसके पास अधिक होगी वही पूर्वी और दक्षिणी चीन को अपने हाथ में रख सकेगा। और सामुद्रिक शक्ति में चीनी साम्यवादी जापान का मुक़ाबिला कैसे कर सकते हैं? हांङ्काङ् के साथ कान्तन् (क्वान्-तुङ) और उसके नज़दीक का समुद्री तट जिस दिन जापान के हाथ में चला गया उसी दिन चाङ-कै-शक् की शक्ति का ख़ातमा है। शंघाई की तरह हांङ्काङ को भी चाहे जापान विदेशियों के हाथ मे छोड़ दे, लेकिन जापानी फ़ौजी घेरे के कारण उनका संबंध भीतरी चीन से टूट जायगा और चाङ-कै-शक् को बाहर से गोला-बारूद नहीं मिलेगी। अंगरेज़ बनिये पहले चाङ-कै-शक् की गवर्नमेंट को कर्ज़ देने के लिए होड़ लगाये रहते थे, लेकिन अब पासा पलटते देख और रुपया चीन की दलदल में खपाने को वे पसन्द नहीं करते। कान्तन् के जापानियों के हाथ में जाने की देर है। और फिर दो-तीन साम्यवादी प्रान्तों को छोड़ सारा चीन जापान के पैरों में होगा।

सोवियत् सरकार क्यों नहीं चीन की वैसे ही मदद करती, जैसे इटली और जर्मनी स्पेन में फ़्रैंको की कर रहे हैं, यह प्रश्न हो सकता है। फ़ासिस्ट और साम्यवादी देशों में सैनिकों के मूल्य के विचार में बहुत अंतर है। फ़ासिस्ट देशों में सिपाही "तोप के ईंधन" से बढ़ कर महत्त्व नहीं रखता। इसी लिए हिटलर और मुसोलिनी अपने यहाँ के लाखों नौजवानों को फ़्रैंको के भाड़ में झोंक सकते हैं। वह इसके लिए चूं-चिरा और कारण पूछने की हिम्मत नहीं कर सकते। सोवियत् सेना के सिपाही देश के आग की समिधा हो सकते हैं, सोवियत् भूमि पर ख़तरा आने के समय वे बिना हिचकिचाये अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए तैयार हो सकते हैं, लेकिन दूसरे मुल्कों के युद्ध की आग में वे क्यों अपने को जलाना पसन्द करेंगे? जब कि वह यह भी समझते हैं कि जिस देश की वह मदद करने जा रहे हैं, उसके प्रभावशाली दल ने उन्हें कई बार धोखा दिया। इसके साथ सोवियत्

साइकिल, वाइसिकिल और रेडियो गाँवों तक में फैल रहे हैं।

पिछले १० सालों में कई बड़े बड़े शहर बस गये हैं, जिनमें सेमी-प्लातिन्स्क डेढ़ लाख, करागन्दा १२०,००० और रिद्दर ५०,००० आबादी के शहर हैं।

पहले की अपेक्षा खेती और पशुपालन में बहुत तरक्की हुई है; लेकिन उससे भी अधिक तरक्की हुई है उद्योग में। जहाँ पहले खेती और पशुपालन से ९३·७ सैकड़ा आमदनी थी, और उद्योग से सिर्फ ६·३; वहाँ अब उद्योग से ५३·२ सैकड़ा आमदनी है।

*** ***

३—किर्गिज़स्तान स०स०र०

चीनी तुर्किस्तान से लगा हुआ सोवियत्-संघ का यह संघ-प्रजातंत्र है। यह ऊँची पहाड़ी जगह है; और उत्तर में छू और तलस् नदियों तथा पश्चिम में फ़र्ग़ाना के उत्तरी पूर्वी हिस्से (जो कि किर्गिज़स्तान में है) में ही ज़मीन अपेक्षाकृत कुछ नीची है।

फर्गाना, छू, तलस् की उपत्यकाएँ खेती के लिये उपयोगी हैं। इन्हीं उपत्यकाओं में किर्गिजस्तान के सभी कल-कारख़ाने, सभी नगर और अधिकांश जन-संख्या आबाद है। नहरों से सिंचाई का वहाँ अच्छा प्रबन्ध हुआ है। प्रजातंत्र के इन्हीं भागों में रेलें आ पाई हैं।

किर्गिज़स्तान की जनसंख्या (१३,२०,१००) में $\frac{2}{3}$ किर्गिज़ हैं और बाकी में रूसी, उक्रइनी तथा फर्गना में कितने ही उजबक भी रहते हैं। उजबक लोगों की तरह किर्गिज़ भी तुर्की वंश से संबंध रखते हैं; और उन्हीं की तरह इनकी भाषा और साहित्य भी क्रान्ति के बाद ही शिक्षा का माध्यम बन सका है। लिपि रोमन है।

पहले किर्गिज़ लोग ख़ानाबदोश चरवाहे थे; और एक जगह रहने तथा खेती करने को नीची निगाह से देखते थे। अब उनमें से सब से अधिक

संख्या गाँवों और शहरों में बस गई है। खेती की भूमि पहले से दूनी हो गई है। कारख़ाने और फ़ैक्टरियाँ स्थापित हुई हैं। मोटर चलने लायक बहुत सी सड़कें बनी हैं। किर्गिज़स्तान अपने यहाँ से कपास दूर के प्रजातंत्रों में भेजता है; और कोयला, पशु, अनाज और चीनी पास के पड़ोसी प्रजातंत्रों में। आवश्यकता से अधिक कोयला और अनाज पैदा करने में मध्य-एशिया के प्रजातंत्रों में इसका नंबर प्रथम है।

प्रधान फसल गेहूँ की है। पहाड़ी ज़िले अपने लिए पर्याप्त अनाज पैदा करते हैं। तियान्-शान् पहाड़ की उपत्यकाएँ धीरे धीरे ढलुआ हुई हैं; और वहाँ काफ़ी पानी है। समुद्र तल से ३,००० मीटर (९७५० फीट) ऊँचे तक खेती आसानी से होती है।

गेहूँ के अतिरिक्त चुकन्दर, कपास और लूसर्न भी पैदा होती है। अनाज के काफ़ी होने पर भी अभी किर्गिज़ लोगों का प्रधान व्यवसाय पशु-पालन है। अच्छे अच्छे चरागाहों के होने के कारण उसके लिए बहुत सुभीता भी है। कल-कारख़ाने ज़्यादातर अपने यहाँ के कच्चे माल को पक्का करने के लिए स्थापित हैं। इनमें आटे के कारख़ाने, चीनी की फ़ैक्टरी, ऊन धोने और कपास साफ़ करने की गिर्नियाँ अधिक हैं। फर्गाना की उपत्यका की कोयले की खानें दिन पर दिन उन्नत होती जा रही हैं।

* * *   * * *

४—उक्रइन् स०स०र०

उक्रइन्-संघ-प्रजातंत्र, सोवियत्-संघ की दक्षिण-पश्चिम सीमा और काला-सागर के बीच में अवस्थित है। उक्रइन् का अधिक भाग अत्यन्त उपजाऊ काली मिट्टी का है। यहाँ की आबहवा नम और शीतोष्ण है; जिसके कारण कृषि का विकास बहुत हुआ है। अनाज, चुकन्दर, सूर्यमुखी, तथा पशुपालन बहुत सफलता के साथ होता है। इनके अतिरिक्त उक्रइन् में दोन्-वास् की महत्त्वपूर्ण कोयले की खानें तथा क्रीवोइरोग् की लोहे की खानें

हैं। सोवियत्-संघ में इसको छोड़ कोई ऐसा प्रदेश नहीं है; जहाँ बहुत ऊँचे दर्जे का लोह-पत्थर और कोयला पास पास हो। इन दो धातुओं के अतिरिक्त उक्रइन् में मंगानीज़, पारा, नमक तथा दूसरे खनिज पदार्थ मौजूद हैं।

उक्रइन् की नदी द्नियेपेर् यूरोप की सब से बड़ी नदियों में तीसरा नम्बर—वोल्गा और डेन्यूब दूसरी बड़ी नदियाँ—रखती हैं। इसके ऊपरी भाग में जंगल अधिक है। बीच में जंगली पथरीली ज़मीन, फिर पथरीली ज़मीन।

उक्रइन् की जनसंख्या (३,१९,०१,४००) में ८० सैकड़ा उक्रइनी हैं। इसके बाद १० सैकड़ा रूसी। यहूदी, पोल, जर्मन, और मोल्दावी दूसरी अल्प-संख्यक जातियाँ हैं। दक्षिण-पश्चिम में मोल्दावी-स्वायत्त-प्रजातंत्र उक्रइन् के अन्तर्गत है। जनसंख्या और आर्थिक दृष्टि से देखने पर उक्रइन् सोवियत् के संघ-प्रजातंत्रों में दूसरे नम्बर पर—अव्वल र०स०फ़०स०र०—है।

आर्थिक दृष्टि से उक्रइन् का महत्त्व सोवियत् के लिए और भी अधिक है। सोवियत्-संघ में लोहे और कोयले के उद्योग का यह सबसे बड़ा केन्द्र है। मशीनों के कारख़ाने, मूल रसायन के कारख़ाने, बिजली के पावर-हाउस, बहुत बड़े पैमाने पर यहाँ संगठित किए गये हैं। अनाज के लिए तो यह सोवियत्-संघ का "ठेक" समझा जाता है। चीनी-आटे आदि के कारख़ाने भी बहुत हैं। यही उक्रइन् की प्राकृतिक सम्पत्ति और खेती की समृद्धि है; जिसे देखकर हिटलर के मुँह में पानी भर आता है। उसकी निगाह हमेशा उक्रइन् के लोहे, कोयले और अनाज की तरफ़ वैसे ही रहती है; जैसे जापान की आस्ट्रेलिया पर।

उक्रइन् का क्षेत्रफल और जनसंख्या सारे सोवियत् के क्षेत्रफल और जनसंख्या का $\frac{१}{५}$ है; लेकिन उपज में वह सोवियत्-संघ का $\frac{१}{४}$ अनाज, $\frac{२}{३}$ चीनी, आधे से ज़्यादा कोयला, लोहा और नमक पैदा करता है। मशीन बनाने तथा रसायन के उद्योग में $\frac{१}{५}$ रेलवे में $\frac{१}{६}$ यहीं हैं। यहाँ की रेलें सारे सोवियत् की रेलों के माल का $\frac{१}{३}$ ढोती हैं।

उक्रइन् के भारी उद्योगों में हैं—कोयला, लोहा, नमक और दूसरी

धातुओं की खानें; लोहा, फौलाद, रसायन, मशीनरी और बिजली की ताक़त का पैदा करना। १९१३ से मुक़ाबिला करने पर उक्रइन् में लोहे, कोयले की उपज तिगुनी हो गई है। मज़दूर चौगुने बढ़ गये हैं। उपज चौगुने से भी ज़्यादा; और बिजली दस गुना बढ़ी है।

उक्रइन् के उद्योग-केन्द्र हैं, दोन्बास् (दोन् उपत्यका) क्षेत्र में स्तालीनो, वोरोशिलोफ़्ग्राद्, माकेयेष्का, क्रमातोस्क; द्नीयेपेर् उपत्यका में लोहे आदि के ज़खीरों के पास क्रीवोइरोग् और नीकोपोल् हैं। क्रीवोइरोग् और दोन्बास् के बीच में द्नीयेपेर् नदी के किनारे हैं, द्नीयेप्रोपेत्रोव्स्क, द्नीयेप्रोजेर्जिन्स्क और ज़ाबोरोज़्ये। दोन्वास् और केर्च के लोहे के कारखानों के बीच मारियुपोल् है। उक्रइन् के सब से बड़े शहर हैं—ख़र्कोफ़्, कियेफ़् और ओदेसा। कियेफ़् राजधानी और पुराना नगर है। उक्रइन् अपने यहाँ से कोयला, धातु, नमक, अनाज, चीनी, भारी मशीनरी (खान, यातायात और कृषि-संबंधी) बाहर भेजता है; और बदले में मास्को और इवानोवो के कपड़े; मास्को और लेनिन्ग्राद् की बारीक मशीनें, उत्तर से लकड़ी, काकेशस् से मिट्टी का तेल और निचली वोल्गा से मछली लेता है।

*** ***

५—बेलो-रूसिया स०स०र०

यह सोवियत्-संघ के पश्चिमी सीमान्त का प्रदेश पोलैंड के पास अवस्थित है। द्नीना और द्नीयेपेर् नदियाँ इसकी भूमि को सींचती हैं। बाहरी देशों से युद्ध के समय इस प्रजातंत्र का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए जर्मनी और पोलैंड के आक्रमणों का ख़याल कर उक्रइन् की तरह इसकी सीमा पर भी बहुत जबर्दस्त किलेबन्दी की गई है।

बेलो-रूसिया का धरातल दक्षिण की ओर धीरे धीरे ढालुआँ होता गया है। अटलांटिक से आनेवाली हवा का यहाँ की आवहवा पर असर है। सोवियत्-संघ के यूरोपीय भाग के मध्य के प्रदेशों की अपेक्षा यहाँ वर्षा ज़्याद

होती है। गर्मी भी अपेक्षाकृत कम है, और जाड़ा भी बहुत नहीं है। ख़ास कर उत्तर-पश्चिम के कोने पर, जहाँ कि नदियाँ बहुत जल्द जम जाती हैं। बेलोरूसिया में शाहबलूत्, देवदार, माप्ल आदि के वृक्ष जंगलों में बहुत पाये जाते हैं। वर्षा की अधिकता के कारण पानी के निकास की कमीवाले स्थानों में दलदलें ज़्यादा हैं, जैसा कि दक्षिण-पश्चिम में प्रिप्यात् नदी के किनारे पिन्स्क की विशाल दलदलों के रूप में देखा जाता है। प्रधान खनिज पदार्थ नर्म कोयला है; जो कि ईंधन और खाद दोनों के काम में इस्तेमाल होता है। इनके अतिरिक्त दूसरी चीज़ मकान बनाने के पत्थर हैं।

प्रजातंत्र की जनसंख्या (५४,६६,४००) में ८० सैकड़ा बेलोरूसी (सफ़ेद रूसी) हैं। रंग में अपेक्षाकृत अधिक गोरा होने के कारण इनको यह नाम मिला है। १० सैकड़ा यहूदी हैं, जो अधिकतर शहरों में रहते हैं। बाक़ी आबादी रूसी उक्रइनी और पोल् लोगों की है। ज़ारशाही के वक्त में बेलो-रूसिया बहुत पिछड़ा और ग़रीब देश था; जैसा कि आज भी सरहद पार पोलैंड के अधीन का पश्चिमी बेलो-रूसिया है।

पंचवार्षिक योजनाओं ने आर्थिक, सांस्कृतिक सभी तौर से इसे बहुत आगे बढ़ाया है। पहले $\frac{2}{3}$ जनता अनपढ़ थी; लेकिन अब कोई निरक्षर नहीं रह गया। ज़ार की आज्ञा से बेलो-रूसी भाषा का इस्तेमाल मना किया गया था। आज बेलो-रूसी भाषा शिक्षा का माध्यम है। इसी भाषा में २०० समाचार पत्र और हज़ारों किताबें छपती हैं। बेलो-रूसिया में बीसों ऊँची शिक्षा-संस्थाएँ और कालेज, वैज्ञानिक-अन्वेषणशालाएँ, बेलोरूसी-विज्ञान-एकेडेमी की मार्फ़त चल रहे हैं।

पंचायती हो जाने के कारण कृषि में जबर्दस्त उन्नति हुई है। १७ लाख एकड़ ज़मीन को दलदलों को सुखा कर खेत और चरागाह के रूप में परिणत किया गया है। खेती की भूमि दो लाख एकड़ से एक करोड़ एकड़ हो गई है। यहाँ की खेती में जानवरों के लिए घास, और आलू, सन, तथा

अनाज खास चीजें हैं। डेरी में गायों और सुअरों का पालना ज़्यादा है, बल्कि सुअर पालने में तो बेलोरूसिया सारे सोवियत्-संघ में अव्वल है।

यहाँ का उद्योग १९१३ की अपेक्षा १० गुना बढ़ा है; तथा कृषि, काष्ठ और धातु की चीज़ों की तैयारी इसके कारख़ानों में की जाती है। यहाँ से सुअर का माँस सुअर का बाल, लकड़ी, कागज़, दियासलाई, सीमेंट, काँच और मशीनें बाहर जाती हैं।

*** ***

६—आज़ुर्बाइजान् स०स०र०

काकेशस् के तीन संघ-प्रजातंत्रों [दूसरे दो हैं गुर्जी (जार्जिया) तथा अर्मनी] में एक है। यह कास्पियन समुद्र के पश्चिमी तट से काकेशस् पर्वत माला के भीतर तक चला गया है। कुश और अरख़् की नदियाँ इस से वहती हैं। दक्षिण में छोटी काकेशस्-पर्वत-माला इसी के अन्दर है। छोटी काकेशस्-पर्वत-माला के पूर्वी छोर पर नागोर्नी-करावख़ नामक स्वायत्त-ज़िला है। उसकी आवादी अधिकतर अर्मनी लोगों की है; और आज़ु-र्बाइजान् के अन्तर्गत है।

नख़िचेवाम्-स्वायत्त-प्रजातंत्र आज़ुर्बाइजानी तुर्क क़ौम का है।

सारे संघ-प्रजातंत्र की आवादी का $\frac{3}{5}$ आज़ुर्बाइजानी तुर्क हैं। इन के अतिरिक्त अर्मनी, गुर्जी, कुर्द, रूसी, तात्, तालिश् भी वसते हैं। तात् और तालिश् ईरानी जाति से संवंध रखते हैं।

काला-सागर की नम हवा काकेशस् पहाड़ों के कारण आने नहीं पाती इसीलिए आज़ुर्बाइजान् की आवोहवा शुष्क है। निचली भूमि में गर्मी काफ़ी होती है, अतएव मिस्र की तरह यहाँ भी मिस्री कपास वड़ी सफलता के साथ पैदा की जाती है। सिंचाई का अच्छा प्रवन्ध है। इन जगहों पर चावल और लूसर्न भी पैदा होती है। पहाड़ी उपत्यकाओं में अंगूर, सेव, आदि मेवों के वग़ीचे तथा रेशम वहुतायत से होता है। दक्षिणी छोर पर

लिन्कोरन् के करीव—जहाँ कि पहाड़ समुद्र के तट तक पहुँच गये हैं—चाय, नींबू, नारंगी आदि गर्म मुल्कों की चीज़ें पैदा होती हैं। आज़ुर्बाइजान् में पशुपालन भी काफ़ी होता है।

यह सव होते हुए भी आज़ुर्बाइजान् का सव से वड़ा धन धरातल की उपज से नहीं, वल्कि उसके हज़ारों फीट नीचे से आता है। वाकू के करीव अप्शेरोन् प्रायद्वीप है, जो कि संसार का सव से बड़ा तैल-क्षेत्र है। यहीं से स०स०र० के लिए आवश्यक तेल और पेट्रोल का अधिक भाग आता है। १९१३ में ७० लाख टन निकलता था; लेकिन १९३६ में दो करोड़ दस लाख टन अर्थात् तिगुनी उपज हुई। वाकू से तेल ले जाने के लिए दो रास्ते वने हुए हैं। एक कास्पियन (कस्पिस्की) समुद्र द्वारा अस्त्राख़ान् और वहाँ से वोल्गा नदी, फिर वोल्गा-मास्को नहर आदि से स्टीमर द्वारा रूस और दूसरे देशों में जाता है। दूसरा वाकू से पाइपों द्वारा वातूमी वन्दर को, जहाँ से जहाज़ द्वारा दुनिया के और देशों में (भारत में भी) जाता है।

आज़ुर्बाइजान् अपने यहाँ से पेट्रोल तथा उससे वनी दूसरी चीज़ें, कपास, चावल, फल, शराव, रेशम, और मछली सोवियत् के दूसरे भागों में भेजता है।

*** ***

७—अर्मनी स०स०र०

काकेशस् पर्वतमाला के पश्चिम तरफ़ यह प्रजातंत्र अवस्थित है। गुर्जी की तरह इसके भी दक्षिण तुर्की प्रजातंत्र है; और दक्षिण तरफ़ यह ईरान की सीमा से मिला हुआ है। गुर्जी इससे उत्तर-पश्चिम और आज़ुर्बाइजान् उत्तर-पूर्व है। अर्मनी तिव्वत की तरह एक ऊँचे पहाड़ी मैदान पर अवस्थित है। चारों तरफ़ ऊँची पर्वत-मालाएँ इसे घेरे हुए हैं, जिनके कारण वादल भीतर नहीं पहुँचने पाते; और वर्षा वहुत कम होती है। यहाँ की आवोहवा खुश्क है और अपने अक्षांश की अपेक्षा अधिक सर्द है। वर्षा

की कमी के कारण जंगल नाममात्र हैं। पहाड़ नंगे हैं। भूमि ज्वालामुखी के लावा और राख से बनी होने के कारण बहुत उपजाऊ है। अर्मनी के दक्षिणी किनारे पर बहने वाली अरख नदी की उपत्यका खेती के लिए बहुत अनुकूल है।

जनसंख्या (११,०६,२००) का ८५ सैकड़ा अर्मनी लोग हैं। संस्कृति और इतिहास में यह बहुत पुरानी जाति है। एक लाख के करीब अर्मनी सोवियत्-संघ के भिन्न भिन्न प्रजातंत्रों—विशेषकर काकेशस् में रहते हैं। अर्मनी प्रजातंत्र में तुर्क, कुर्द, गुर्जी और रूसी भी रहते हैं।

अर्मनी प्रजातंत्र में कृषि अधिकतर अरख् नदी की उपत्यका और येरेवान् के खलार में होती है। यहाँ नहर की सिंचाई से कपास की खेती और मेवों के बग़ीचे चारों तरफ़ लगे हुए हैं। दूसरी जगहों में अधिकतर पशु-पालन का काम होता है; जिनके लिए पहाड़ों पर जगह जगह चरागाहें हैं। खेती लोगों की आवश्यकता के लिए काफ़ी नहीं।

अर्मेनिया के उद्योग-धंधे में खाद्य, (टिन-बन्द फल, शराब आदि) कपड़े के कारखाने, और ताँबे तथा इमारत के लिए प्रयुक्त होने वाले पत्थरों की खानें हैं।

हाल में बिजली पैदा करने के लिए कितने ही पावर-हाउस (शक्ति गृह) तैयार किये गये हैं। सेवान् झील अरख् की उपत्यका से १००० मीतर (प्रायः ३३०० फीट) ऊँची है। जंगा नदी इस झील का पानी अरख् में ले जाती है। ज़ंगा पर कई पावर-स्टेशन बन चुके हैं; जिनमें कानाकेर एक है। सेवान् झील से जो सस्ती बिजली तैयार होने वाली है, वह अर्मनी के सारे आर्थिक स्वरूप को बदल देगी।

अर्मनी प्रजातंत्र, सोवियत् के अन्य भागों में ताँबा, इमारत के पत्थर, मेवे, ब्रांडी, ऊन और चमड़े भेजता है।

*** ***

८—गुर्जी (जार्जिया) स०स०र०

गुर्जी प्रजातंत्र काकेशस् पर्वत-माला के पश्चिमी भाग में अवस्थित है। उत्तर की तरफ की ठंडी हवा काकेशस् के पहाड़ों के कारण यहाँ नहीं आती; और पश्चिम तरफ़ से काला-सागर की नम और गर्म हवा के आने का रास्ता खुला हुआ है। इसी लिए यहाँ की प्राकृतिक शोभा, वृक्षों और बनस्पतियों से पहाड़ों की हरियाली बड़ी मनोहारिणी है। देश सारा पहाड़ी है। यद्यपि सोवियत्-संघ के क्षेत्रफल का $\frac{1}{300}$ हिस्सा ही यह प्रजातंत्र है, लेकिन इसकी भूमि बहुत उपजाऊ है। जहाँ आबादी नहीं है, वहाँ भी हरे भरे बड़े बड़े चरागाह तथा जंगल हैं। ऊपर निरन्तर बर्फ़ से ढके पर्वत-शिखर हैं। खेत और चाय, नारंगी नीबू के बग़ीचे हर तरफ़ दिखाई देते हैं। यहाँ के जंगलों में बहुत काम की क़ीमती लकड़ियाँ हैं। इसकी तेज चलनेवाली पहाड़ी नदियाँ बिजली पैदा करने के लिए बहुत उपयुक्त हैं, और उनपर कितने ही जल-विद्युत्-पावर-स्टेशन भी बन चुके हैं। त्क्वर्चेली और त्क्वीगुली में कोयला और शीरक में तेल निकाला जाता है। मंगानिज़ के लिए संसार का सब से बड़ा ढेर चियातुरा यहीं पर है। गर्म और गन्धक के पानी के चश्मे तथा उबलते पंक के सोते यहाँ पर कितने ही हैं; जहाँ बीमार तथा अस्वस्थ लोग चिकित्सा के लिए आया करते हैं।

जन-संख्या (३१,१०,६००) का $\frac{2}{3}$ गुर्जी लोग हैं; जिनकी सभ्यता बहुत पुरानी और उन्नत है। उनके बाद $\frac{1}{10}$ अर्मनी हैं। अल्प-संख्यक जातियों में अब्खाज़ी, ओसेतिन्, रूसी, उक्रइनी, यूनानी और यहूदी हैं।

इस संघ-प्रजातंत्र के अन्तर्गत दो स्वायत्त-प्रजातंत्र हैं—एक अब्खाज़ी जिसकी राजधानी सुखुमी है; और दूसरी अद्जार जिसकी राजधानी बातूमी है। इनके अतिरिक्त ओसेतिन् स्वायत्त-ज़िला है, जिसका केन्द्र स्तालिनिर् है।

गुर्जी के मुख्य कृषिप्रधान प्रदेश हैं—

१—नम और गर्मीला काला-सागर का तट, जिस की उपज है—चाय, नीबू, नारंगी, युक्लिप्टस्, कपूर, और अब्ख़ाज़िया का अच्छी जाति का तंबाकू (सोवियत् में सिर्फ यहीं तुर्की तंबाकू पैदा होती है)।

२—इमेरेतिया—(केन्द्र में कुतइसी आदि अंगूर और रेशम के लिए मशहूर हैं।)

३—काख़ेतिया (कुरा नदी की शाखा अल्ज़ानी की उपत्यका) सेब, अंगूर पैदा करती है। अंगूर यहाँ का ख़ास तौर से मशहूर है।

इस प्रजातंत्र के औद्योगिक केन्द्र निम्न शहर हैं—

त्बिलिसी (तिफ़्लिस्)—यहाँ कितने ही तरह के कल-कारख़ाने हैं; जिनमें एक काकेशस् के तीनों संघ-प्रजातंत्रों की आवश्यकता के लिए तेल शराब, रेशम और चाय के काम की मशीनें तैयार करता है।

कुतइसी—यहाँ भोजन, रेशम और रसायन की बहुत सी फ़ैक्टरियाँ हैं। चियातुरा और जेस्तफ़ोनी में मंगानीज़ के निकालने और तैयार करने के कितने ही कारख़ाने हैं।

वातूमी—मिट्टी के तेल के साफ़ करने तथा भोजन के कारख़ाने।

सुखुमी—तंबाकू और भोजन के कारख़ाने।

त्क्विगुली और त्क्वर्चेली में कोयले की बड़ी बड़ी खानें हैं।

सोवियत्-शासन की स्थापना के बाद यहाँ २०० बड़े बड़े कारख़ाने और फ़ैक्टरियाँ तैयार हुई हैं; और पानी से बिजली पैदा करने के अनेक स्टेशन कायम किये गये हैं। उद्योग-धंधों से गुर्जी को जो आमदनी होती है; वह युद्ध के पहले की आमदनी से नौ गुनी अधिक है।

गुर्जी प्रजातंत्र सोवियत् के दूसरे भागों में मंगानिज़, लकड़ी, तंबाकू, चाय, मेवे, रेशम भेजता है।

* * * * * *

गुर्जी के यहूदी—यहूदियों के ऊपर यूरोप में ज़ुल्म के पहाड़ ढाये जा रहे

नेताओं को यह भी ख़याल करना होता है कि फ़ांस, इंगलैंड और अमेरिका की राज्य-शक्तियाँ—जिनके कि स्वार्थ को चीन में सब से ज़्यादा धक्का पहुँच रहा है—यदि जापान के लात-मुक्के को वर्दाश्त करती हैं और जापान का मुक़ाविला करने की हिम्मत नहीं रखतीं, तो सोवियत् अकेला क्यों आगे वढ़ कर दूसरों के मुल्क में जा फ़ासिस्ट शक्तियों का मुक़ावला करे?

चीन और स्पेन में सोवियत् ने क्यों उतना भाग फ़ासिस्ट शक्तियों के मुक़ाविले में नहीं लिया, इसके ये ही कारण हैं जिन्हें कि हमने ऊपर कहा है। लेकिन फ़ासिस्टों के अपनी सीमा के पास आने की वह उपेक्षा नहीं कर सकता। अभी ३० मार्च (१९३८) के तोकियो के रूटर के तार से पता लगता है—

"वाहरी मंगोलिया के निकट सोवियत् सरकार अपनी सरहद पर जंगी तैयारी कर रही है, जिसका उद्देश्य संभवत: उक्त संरक्षित राज्य की रक्षा करना है। जिस स्थान पर तैयारी हो रही है, उसके ठीक सामने मंचुकुओ और भीतरी मंगोलिया पड़ते हैं। (मंचुकुओ सारा और भीतरी मंगोलिया का पूर्वी भाग जापान के हाथ में है।) रिपोर्टों में यह भी कहा गया है कि सोवियत् सरकार वाहरी मंगोलिया की सरकार की सहायक है। और उसकी मदद से उसने ५० हज़ार पैंदल सेना इकट्ठी कर ली है। उसके साथ घुड़सवार फौज, तोपख़ाने और हवाई जहाज़ भी हैं।—यह भी कहा जाता है कि सोवियत् सरकार ने उर्गा (वाहरी मंगोलिया की राजधानी उलन्-वाथर), सेन-विस् और वाहरी मंगोलिया के सामरिक महत्त्व के दूसरे स्थानों में वहुत सी फ़ौज जमा कर रक्खी है।"

फ़ासिस्ट राज्यों को भली प्रकार पता है कि अपनी सीमा को संकट में देख कर सोवियत् सरकार "ज़बर्दस्त विरोध" के शाब्दिक गोले से सन्तुष्ट न होगी। आज तक उसके युद्ध से अलग रहने का कारण दूसरे के—ख़ास कर जब कि वे लोग दुश्मन के ठोकर लगानेवाले जूते को चाटना अपना धर्म समझते हैं—स्वार्थों के लिए ख़ुद को जोखिम में न डालना रहा है।

हैं; इसे हम आये दिन देख सुन रहे हैं। जर्मनी में शताब्दियों से बसे हुए यहूदियों पर हिटलर ने क्या क्या अत्याचार किया, यह सभी को मालूम है। आइन्स्टाइन् जैसे संसार के महान् वैज्ञानिक को देश छोड़ कर भागना पड़ा। आस्ट्रिया में हिटलर का क़दम पहुँचते ही दुनिया का सर्व्वोच्च मनोवैज्ञानिक फ़ाउड् भागने पर मजबूर हुआ। क्रान्ति के पहले रूस में भी यहूदियों के साथ बड़ा बुरा बर्ताव होता था; लेकिन अब हालत बिलकुल दूसरी है।

यहाँ हम गुर्जी (जार्जिया) में पहले से बसे हुए अल्प-संख्यक यहूदियों के बारे में एक प्रत्यक्ष-दर्शी के वाक्य उद्धृत कर रहे हैं---

सोवियत्-शासन की स्थापना के पहले जार्जिया के यहूदी शताब्दियों से भयंकर अत्याचार से पीड़ित थे। १८ वीं शताब्दी के आरंभ से---जब कि रूसी ज़ार ने जार्जिया की स्वतंत्रता का अपहरण किया---यहूदियों की हालत और भी ख़राब हो गई। यहूदी खेती नहीं कर सकते थे। कारख़ानों में काम नहीं पा सकते थे। हाई स्कूलों और उच्च शिक्षण-संस्थाओं में उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं था। यहाँ के अधिकांश यहूदी अनपढ़ थे। सब तरफ़ से उनका रास्ता बन्द था। वह फेरी कर के या छोटी छोटी दुकानें रख कर जीविका कमाते थे। १९१७ से २१ तक मेन्शेविकों के हाथ में जार्जिया था; उस वक्त यहूदियों पर कोई भी ज़ुल्म करने से वे बाज़ नहीं आये। १९२१ में सोवियत्-शासन की स्थापना के बाद यहूदियों का नया जीवन आरंभ हुआ। अब उन्हें हर क्षेत्र में बढ़ने की स्वतंत्रता थी। आज गुर्जी के ३५ हज़ार यहूदी अपने अन्य देश-भाइयों की भाँति ही साम्यवादी नव-निर्माण में लगे हुए हैं।

उन में २० हज़ार यहूदी कल-कारख़ानों में काम करते हैं। वोज़ूयेत् (यहूदी श्रमिकों को खेत पर बसाने वाली सभा) ने ५३ प्रकार की भिन्न-भिन्न दस्तकारियों में यहूदियों को प्रवेश कराने के लिए स्थानीय संस्थाएँ बनाई ह। इन दस्तकारियों से १९२४ में २ लाख रूबल की आमदनी हुई थी; और

इस साल ९० लाख की। कुनैसी नगर में यहूदियों की बड़ी तादाद बसती है। उनमें से ९३ सैकड़े आज कारख़ानों में काम करते हैं, जब कि १९२७ में नौ सैकड़ा ही थे। इन कमकरों में बहुत से प्रसिद्ध तूफ़ानी कमकर और स्तख़ानोवी श्रमिक हैं। इनमें से कितनों के नाम प्रजातंत्र के सन्मान-फ़लक (प्रजातंत्र-भवन में टँगा एक तख़्ता जिसपर प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुषों का नाम सन्मान के लिए लिखा रहता है) पर लिखे हुए हैं।

१२ यहूदी-कोल्ख़ोज़् संगठित किये गये हैं; जिन में ४००० आदमी काम करते हैं। अपने खेतों में वे चाय, तंबाकू, गेहूँ, अंगूर तथा दूसरे फल पैदा करते हैं। जिन लोगों को खेती में काम करने का कभी मौक़ा नहीं दिया गया, वह अपने कोल्ख़ोज़ों में दूसरों से बाज़ी मार रहे हैं। उदाहरणार्थ वनोस्तुसवा कोल्ख़ोज़् को ले लीजिए। इसकी स्थापना १९२७ में हुई थी। आज इसमें ८५ परिवार हैं। पिछले वर्ष यहाँ हर कार्य-दिन पर (कुलख़ोज़् में ख़ास परिमाण में काम करने का एक एक दिन जिसके अनुसार कि कमकरों को मज़दूरी मिलती है) ८ सेर गेहूँ, २ सेर सूर्यमुखी का बीज, (खाने के लिए) १॥ सेर सूर्यमुखी तेल तथा ५॥ रूबल नक़द मिला था। आकोन्खोरीखोली परिवार में ३ बालिग़ व्यक्ति हैं। इन सब ने साल में १०५० दिन काम किये। दूसरा किसान मोशेमामिस्त्वालोफ़् और उसकी स्त्री ने ९२० दिन काम किये। क्रीविलीमेरी नामक एक दूसरे यहूदी कोल्ख़ोज़ी किसान ने एक साल में इतना कमाया था; कि उससे अपने लिए एक घर बनाया, एक गाय और कुछ भेड़ें ख़रीदीं। अपने घर के बाग़ में २०० मेवों के दरख़्त लगाये; और उसीमें छोटी सी अंगूर की बग़ीची बनाई।

अख़ल्त्सिख् कोल्ख़ोज़् में सिर्फ़ फलों और तरकारी का काम होता है। १९३७ में उसने एक लाख रूबल सिर्फ़ सेव के बेचने से पैदा किये।

गुर्जी प्रजातंत्र-सरकार ने कोल्ख़िदा की नीची भूमि—जिसे १९३६ में पानी का निकास बना कर सुखाया था—में से २००० एकड़ विदेश

से आये हुए यहूदियों के लिए देना निश्चित किया है। जार्जिया की भिन्न-भिन्न जगहों से आये हुए १०८ परिवार अभी ही वहाँ बस गये हैं। यहूदियों को खेती पर लगाने के लिए एक समिति है, जो वोज़्येत् की सहायता से यहूदियों को बड़ी मदद दे रही है। समिति बाहर से आए हुए हर एक परिवार को निम्नलिखित चीज़ें देती है—

आवश्यक चीज़ों के साथ एक मकान, और ¼ एकड़ घरू वग़ीचों के लिए। उन्होंने एक कोल्ख़ोज़् जार्जिया की कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री ल० प० वेरिया के नाम से संगठित किया है। इस कोल्ख़ोज़् में एक स्कूल, एक क्लब, कुछ बच्चेख़ाने और एक अस्पताल स्थापित किया गया है।

कोल्ख़िदा की नई भूमि पर ५०० परिवार बस चुके हैं। ये लोग सिर्फ़ मेवों की खेती कर रहे हैं।

स०स०स०र० की सरकार भी गुर्जी के यहूदियों की मदद कर रही है। पिछले दो सालों में खेती और उद्योग-धन्धे में उनकी सहायता के लिए उसने ७० लाख रूबल (३२ लाख रुपये) दिये हैं। १९३८ में ८० लाख और दिये जायँगे। गुर्जी के यहूदी शिक्षा और संस्कृति में बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं। उनमें अब एक भी अनपढ़ नहीं रहा। पढ़ने की अवस्था वाले सभी बच्चे स्कूल जाते हैं। शिक्षा का माध्यम गुर्जी भाषा है; जो कि यहाँ के यहूदियों की मातृभाषा है। जार्जिया के १,००० यहूदी युवक और युवतियाँ मास्को लेनिन्ग्राद् आदि के विश्वविद्यालयों में पढ़ती हैं। गुर्जी के यहूदियों में अब कितने ही कृषि-विशेषज्ञ, डाक्टर, अध्यापक, अर्थशास्त्री, इंजीनियर और लेखक हैं।

*** ***

९—उज़्बकस्तान स०स०र०

मध्य-एशिया में ताशकन्द से लेकर अफ़ग़ानिस्तान की सरहद वक्षु (आमू-दर्या) नदी तक उज़्बक प्रजातंत्र फैला हुआ है। यह भी सोवियत्

संघ के ११ प्रजातंत्रों में है। इसके उत्तर में कज़ाकस्तान और किर्गिज़स्तान, पूर्व में ताजिकस्तान और पश्चिम में तुर्कमानस्तान है। उज़्बेकस्तान का अधिक हिस्सा पहाड़ों की जड़ या नीची उपत्यका है; जहाँ नहर की सिंचाई की बड़ी गुंजायश है। तुर्कमानस्तान, ताजिकस्तान, किर्गिज़स्तान तीनों को मिला कर नहर की सिंचाई की जितनी ज़मीन है, उतनी अकेले उज़्बकस्तान में है। फ़र्गाना की उपत्यका मध्य-एशिया की सब से बड़ी उपत्यकाओं में है। बाबर का ख़ान्दान पहले यहीं शासन करता था। ताशकन्द की उपत्यका भी बहुत ज़रख़ेज़ और आबाद है। उज़्बेकस्तान के दक्षिणी हिस्से में समरकन्द, बुख़ारा और ख्वार्ज़म् के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर हैं।

ताशकन्द राजधानी है, जिसकी आबादी आठ लाख के करीब है; और दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। यहाँ रेशमी, ऊनी और सूती कपड़ों के बड़े बड़े कारख़ाने हैं। एक कारख़ाना ट्रैक्टर और मशीन के पुर्जों के लिए भी बनाया गया है। कपड़े के मिलों की मशीनरी बनाने का कारख़ाना बन चुका है। एक नाइट्रेट खाद का कारख़ाना बन रहा ह। चिर्चिक का महान् हाइड्रो-एलेक्ट्रिक-पावर-स्टेशन भी काम करने लगा है।

उज़्बक तुर्कजाति से संबंध रखनवाली एक कौम है। इसमें ईरानी ख़ून का बहुत सम्मिश्रण हुआ है। सोवियत् मध्य-एशिया में जनसंख्या और शिक्षा के लिहाज़ से यह सब से बड़ी क़ौम ह। पहले ही से उज़्बक लोगों की प्रधान जीविका थी, खेती और बाग़बानी। समरकन्द और बुख़ारा के अंगूर तथा सेब अपने स्वाद के लिए संसार में प्रसिद्ध थे। आजकल उज़्बकस्तान की प्रधान खेती है बारीक मिस्री कपास। कितने गाँवों और इलाक़ों में तो कपास छोड़ कर दूसरी खेती होती ही नहीं। उज़्बक लोग कृषिकला में बहुत आगे बढ़े हुए हैं। वे मध्य-एशिया के अन्य प्रजातंत्रों का भी इस विषय में पथप्रदर्शन कर रहे हैं। उज़्बकस्तान में कराकल्पक (वक्षु नदी के निचले भाग में) एक अल्प-संख्यक जाति है; जिसको संस्कृति

और भाषा के ख़याल से एक सोवियत्-स्वायत्त-साम्यवादी-प्रजातंत्र के तौर पर संगठित किया गया है।

उज़्बकस्तान मध्य-एशिया के चारों प्रजातंत्रों (दूसरे तीन किर्गिज़-स्तान, ताजिकस्तान और तुर्कमानस्तान हैं) में सब से धनी है। सोवियत् मध्य-एशिया की आधी जनसंख्या आधी खेत की भूमि, ४/५ कलकार-ख़ाने, २/३ रेलवे और सब से बड़े शहर उज़्बकस्तान ही में हैं। अकेला उज़बकस्तान, मध्य-एशिया के अन्य तीनों प्रजातंत्रों की सम्मिलित उपज से सात-आठ गुनी अधिक कपास पैदा करता है। ऊन और रेशम पैदा करने में भी यह मध्य-एशिया का सब से बड़ा प्रजातंत्र है।

उज़्बकस्तान में मेवों की पैदाइश बहुत होती है; लेकिन गेहूँ अपने लिए काफ़ी नहीं पैदा कर सकता। इसे वह कज़ाकस्तान किर्गिज़स्तान और पश्चिमी सिबेरिया (तुर्क-सिविर रेलवे द्वारा) से पाता है।

लड़ाई के पहले से तुलना करने पर उज़्बकस्तान की औद्योगिक उपज छ गुना और कपास की उपज तीन गुना बढ़ गई है।

*** ***

१०—तुर्कमानस्तान स०स०र०

तुर्कमानस्तान में मिस्र की तरह काफ़ी धूप और कम वर्षा होती है। सिंचाई से ही खेती का होना संभव है; और पानी सिर्फ़ दक्षिणी हिस्सों में ही सुलभ है; जहाँ कि पास के पहाड़ों से नदियाँ आती हैं। पूर्व में वक्षु नदी की उपत्यका भी इसके लिए उपयुक्त है। इन्हीं दक्षिण और पूरब के हिस्सों में प्राय: सारी आवादी है। वाक़ी प्रजातंत्र में क़राकुम् नामक स०स०र० की सब से बड़ी मरुभूमि है, जिसके कुछ हिस्सों से चरागाह का काम लिया जा सकता है। तुर्कमानस्तान का क्षेत्रफल उक्रइन के बराबर है। लेकिन जनसंख्या (१२,६८,९००) में यह उसका १/१३ ही है।

प्रधान आवादी तुर्कमान लोगों की है; -जो सारी जनसंख्या की ३/४

है। वह अभी थोड़े दिनों तक खानाबदोश चरवाहे थे। शहरों में रूसी और अर्मनी भी बसते हैं और गाँवों में कितनी जगह उज़्बक, ताजिक़ और क़राकल्पक दिखाई पड़ते हैं।

तुर्कमानस्तान कपास की खेती करता है। अच्छी जाति के रिसाले के घोड़ों को पैदा करता है; और कराकुला की प्रसिद्ध भेड़ें पोसता है।

औरतें क़ालीन बुनती हैं। खेती के अतिरिक्त पिछले चन्द वर्षों में भोजन-सम्बन्धी वस्तुओं के कारख़ाने तथा दूसरे हलके उद्योग ज़्यादा बढ़े हैं। कास्पियन समुद्र के चेलेकन द्वीप और नेवित्दाद के पहाड़ों में पेट्रोल निकलने लगा है। कराकुम् से गन्धक निकाली जाती है; और कराबोगज़्-गुल की खाड़ी (कास्पियन सागर) से मिराविलाइट (रासायनिक कार-ख़ानों के काम का एक कच्चा माल) प्राप्त होता है।

तुर्कमानस्तान अपने यहाँ से कपास, रेशम, कालीन, मिट्टी का तेल और फल दूसरे प्रजातंत्रों को भेजता है।

*** ***

१५ दिसंबर को निर्वाचन के परिणाम की प्रसन्नता में अश्कावाद शहर के कार्लमार्क्स-चौक में २० हज़ार जनता एकत्र हुई थी। सभा ने अपने प्रति-निधि डिपुटी आन्द्रेयेविच् (जो कि अब संघ-सोवियत् के स्पीकर हैं) के पास एक पत्र भेजा था—

"प्रिय अन्द्रेयेविच्,

"तुर्कमानियाँ की जनता हमारी पार्टी के विश्वासपात्र पुत्र साथी स्तालिन् के सहचर-सैनिक तुम्हें, पार्लियामेंट-सदस्य चुने जाने पर बधाई देती है। एकमत से तुम्हें अपना वोट दे कर तुर्कमान जनता हमारे यशस्वी बोल्शेविक पार्टी और जनता के प्रिय नेता साथी स्तालिन् के प्रति अपना विश्वास प्रकट किया।

"अश्कावाद नगर के ५०-हज़ार निर्वाचकों की सभा में तुमने यह महत्त्वपूर्ण वाक्य कहे थे—

'साथियो, मैं अपने निर्वाचकों से सिर्फ़ एक ही बात कहना चाहता हूँ; कि मैं आप के अपने ऊपर विश्वास को महान् सोवियत्-संघ की भलाई और सोवियत् तुर्कमानस्तान की समृद्धि के लिए काम कर के अपने को योग्य साबित करूँगा। और साथी निर्वाचकों, तुमसे यह भी कहता हूँ; कि मैं ज़रा भी बिना इधर उधर हुए महान् लेनिन् के बताये हुए रास्ते पर साथी स्तालिन् का अनुगमन करते हुए चलूँगा।'

"तुर्कमानियाँ जनता तुम्हारे इन शब्दों को अपने डिपुटी की महाप्रतिज्ञा के तौर पर याद रखेगी।. . . . .

"आगे बढ़े हुए रूसी श्रमिक-श्रेणी की मदद, बोल्शेविक् पार्टी के नेतृत्व, जनता के महान् नेता, साथी स्तालिन् और उनके सहकारियों की सहायता से तुर्कमानिया—जो पहले रूसी ज़ार का एक परतंत्र उपनिवेश और बहुत पिछड़ा हुआ देश था—अब एक समृद्ध साम्यवादी देश बन गया है। सोवियत्-संघ के लोगों की अटूट मित्रता और भ्रातृभाव दिन पर दिन बढ़ता और मज़बूत होता जा रहा है। ज़ारशाही की विनाशपूर्ण नीति—एक जाति को दूसरी जाति से लड़ाना—हमेशा के लिए नष्ट की जा चुकी है। जातियों में ऊँच-नीच के भाव और पारस्परिक वैमनस्य भूतकाल की बात हो गई है। तुर्कमान जनता ने अपने कल-कारख़ानों और कोल्ख़ोज़् की खेती में स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन को बड़े ज़ोर से आगे बढ़ाया है। उसका अपनी बोल्शेविक पार्टी और महान् साम्यवादी मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम है।

"प्रिय अन्द्रेयेविच्, हम प्रतिज्ञा करते हैं; कि हम हर तरह से अपनी राजनैतिक जागरूकता को और आगे बढ़ायेंगे। लेनिन्-स्तालिन् की महान् पार्टी के हम सच्चे अनुयायी होंगे। स०स०स०र० की जनता के लोगों के पारस्परिक भ्रातृभाव को सुदृढ़ करेंगे; और तुर्कमानिया के कल-कारख़ानों और कोल्ख़ोज़ी खेती में स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन को और भी आगे बढ़ायेंगे।

"हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम हाथ बन्द कर बैठेंगे नहीं, बल्कि अपनी साम्यवादी जन्मभूमि के हित के लिए काम करेंगे; और अपनी महान्

सोवियत्-भूमि की शक्ति को समुन्नत और सुदृढ़ करेंगे।"

*** ***

११—ताजिकस्तान

११ संघ-प्रजातंत्रों में एक है, और पामीर की ऊँची पर्वतमालाओं में स्थित है; इसी लिए सारी ज़मीन ऊँची और पहाड़ी है। यहाँ की कोई भी उपत्यका साढ़े तीन हजार मीतर (११,३५० फीट) से कम ऊँची नहीं है। पामीर हिमालय पर्वतमाला ही का पश्चिमी छोर है; इस लिए ताजिकस्तान अपने प्राकृतिक दृश्यों में वहुत कुछ ऊपरी हिमालय से मिलता है। भारत से सब से नज़दीक का सोवियत् भू-भाग ताजिकस्तान ही है। भारत और ताजिकस्तान की सीमा थोड़ी दूर तक उत्तर की ओर मिलती हैं, बाक़ी के बीच में अफ़ग़ानिस्तान की एक पतली चिट् डाल दी गई है जो कहीं कहीं चालीस ही मील चौड़ी है। ताजिकस्तान में सोवियत् की तैयारियों को ही देख कर अंग्रेज़ी सरकार ने तीन साल पहले गिल्गित् का इलाक़ा कश्मीर-राज्य से ले कर अपने हाथ में कर लिया; और वहाँ हवाई अड्डा और फ़ौजी क़िलाबन्दी का इन्तज़ाम किया गया। ताजिकस्तान की पूर्वी सीमा चीनी-तुर्किस्तान (सिङ्-क्याङ्) से मिलती है।

स०स०स०र० का सर्व्वोच्च पर्वतशिखर—स्तालिन्गिरि (७४९५ मीतर[1]=३४,३५९ फीट) और लेनिन्गिरि (७१२७ मीतर=२३,१६३ फीट) यहीं हैं।

वक्षुगंगा (आमू-दरिया) और उसकी बहुत सी शाखाएँ हिसार और वक्षु आदि ताजिकस्तान के हिमाच्छादित पर्वतों से ही निकलती हैं।

ताजिकस्तान का पश्चिम वाला निचला भाग खेती के लिए वहुत उपयोगी है; और यहाँ अच्छी जाति की मिस्री कपास होती है।

---

[1] १मीतर=तीन फ़ीट तीन इंच के क़रीब।

फ़र्गाना की उपत्यका का ऊपरी भाग (लेनिनाबाद के करीब) ताजिकस्तान में है। ताजिकस्तान का दक्षिणी हिस्सा कुछ गर्म और सूखा है; और वहाँ नहर की सिंचाई की ज़रूरत पड़ती है। पच्छिमी और उत्तरी ढलानों में पानी ज़्यादा बरसता है और बिना सिंचाई के ही बहुत सी ज़मीन में खेती की जाती है।

ताजिकस्तान की आबादी (१३,७२,७००) का ¾ ताजिक् लोगों का है। इनकी भाषा फारसी की एक बोली है; जिसे कि क्रान्ति से पहले लिखने पढ़ने में नहीं उपयुक्त किया जाता था। अब वह साहित्य और शिक्षा के माध्यम की भाषा है; और रोमन लिपि में लिखी जाती है। "ताजिकस्तान-सुर्ख़" राजधानी स्तालिनाबाद से निकलने वाला दैनिक पत्र है। ताज़िक बड़ी बहादुर कौम है। सातवीं आठवीं शताब्दी में इन्होंने अरबों को नाकों चने चबवाये। मध्य-एशिया में जिनको काबू में करने में अरबों को सब से ज़्यादा दिक्कत हुई, वह यही ताजिक थे। ताजिकस्तान के अलावा १५ लाख के करीब ताज़िक अफ़ग़ानिस्तान में बसते हैं; जिनमें से बहुत अधिक तो ताजिकस्तान की सरहद के करीब के अफ़गानी इलाक़ों में रहते हैं। ताजिक् इन्दो-यूरोपीय वंश के होने से शकल सूरत में रूसियों से ज़्यादा मिलते हैं; इसी लिए रूसियों के संग शादी-विवाह करने और पश्चिमी रीति-रिवाज अपनाने में यह बहुत आगे बढ़े हुए हैं। ताजिकस्तान की नदियाँ तेज़ और पहाड़ी होने के कारण सस्ती बिजली पैदा करने के लिए वहुत उपयुक्त हैं; और सोवियत् सरकार उनसे खूब फ़ायदा उठा रही है।

ताजिक् के बाद इस प्रजातंत्र में बसने वाली दूसरी संख्या में बड़ी जाति उज़बक है। इनकी वस्ती अधिकतर पच्छिम और उत्तर-पच्छिम में है। पच्छिमी पामीर में एक और ईरानी कौम बसती है, जो भाषा और आकार में ताजिकों से बहुत मिलती जुलती है। ऊपर के ऊँचे पहाड़ी भागों पर किर्गिज़ लोग बसते हैं, जोकि कुछ समय पहले तक खानाबदोश चरवाहे

थे। पामीर ख़ास में गोर्नो-बदख़्शाँ नामक एक स्वायत्त-ज़िला है, जिसकी जनसंख्या ४० हज़ार है। क्रान्ति के बाद ताजिकस्तान ने बहुत तरक्की की है। कुछ साल हुए तिर्मिज से एक रेलवे-लाइन राजधानी स्तालिनाबाद (भूतपूर्व दुशाम्बे) तक ले जाई गई है। दुर्गम पहाड़ों पर बहुत सी मोटर की सड़कें बनाई गई हैं। स्तालिनाबाद-ताशकन्द, ओश्-खोरोग् (गोर्नी बदख़्शाँ की राजधानी) की सड़कें उन्हीं में से हैं। ताजिकस्तान में कपास के अलावा ऊन, और रेशम भी बहुत पैदा होता है। पेट्रोल और राँगे आदि की खानें निकली हैं; जिनमें काम हो रहा है।

जापान का प्रभुत्व चीन में स्थापित होना निश्चित है। इसी प्रकार भूमध्य-सागर में अंगरेज़ों के प्रभुत्व का कम होना भी निश्चित है और इन दोनों वातों का हिन्दुस्तान की राजनीति से घना संबंध है। चीन पर जापान के प्रभुत्व का मतलव है, गिल्गित् से—या कम से कम मानसरोवर से, यदि सिङ-क्याङ (चीनी तुर्किस्तान) साम्यवादियों के प्रभाव में रह गया—लेकर नैपाल, भूटान, आसाम, वर्मा और सिंगापुर तक की सीमा पर जापानी वन्दूकों का पहुँचना। स्याम में अभी ही जापान का वहुत प्रभाव है। और वह वहाँ 'किरा' डमरुमध्य की नहर निकाल कर सिंगापुर की फ़ौजी तैयारी को धूल में मिलाना चाहता है। जेनरल इयान् हैमिल्टन् अभी से चीन के वाद आसाम और वंगाल में जापानी फ़ौजों के आने का दुःस्वप्न देख रहे हैं। लेकिन इसमें वह कुछ जल्दी कर रहे हैं। जापान पहले चीन को और ख़ास कर उसके उस भाग को अपने हाथ में लाने के लिए सारी ताक़त लगा रहा है, जहाँ कि इंगलैंड और अमेरिका का स्वार्थ है। सोवियत् को अभी वह ख़ास तौर से छेड़ना नहीं चाहता। जव अमेरिका-इंगलैंड के स्वार्थवाला चीन का भाग उसके हाथ में आ जायगा, तो उन देशों के वनिये यह कह कर सन्तोष कर लेंगे—'होना था, सो हो गया। अव उसके लिए और धन और ख़ून कौन वहाये'। फिर जापान क्या करेगा? तव भी कुछ प्रान्त चीनी साम्यवादियों के हाथ में रह जायँगे। यदि अदूरदर्शिता से काम लिया गया तो जापान उधर वढ़ेगा और वहाँ सोवियत् की सहायता-प्राप्त साम्यवादी सेनाओं से जवर्दस्त मुक़ावला करना पड़ेगा। जापान तव तक लड़ते लड़ते कुछ थका भी रहेगा। इससे शायद उन दो तीन प्रान्तों को वह कुछ दिनों के लिए छोड़ ही दे।

चीन की विजय के वाद जापान तुरन्त हिन्दुस्तान में दाख़िल नहीं होगा। वह पहले चीन में अपनी ताक़त को मज़वूत करेगा। वहाँ के कोयले-लोहे के कारखानों को अधिक संगठित और लाभदायक वनावेगा। कपास के लिए अपने को स्वावलंवी करना चाहेगा। फिर इसकी भी पूरी

६—लेनिन्

(क्रान्ति-विजेता)

वोलगा रूस की विशाल और पवित्र नदी है। इस की पवित्रता रूस के ईसाई-धर्म स्वीकार करने से पहले थी। विशालता तव भी थी और अव भी है। यह विशालता उसकी लंबाई चौड़ाई और पानी की गहराई के ही कारण नहीं है, वल्कि यह सदा वीरप्रसविनी रही है। और कैसे वीर? जिन्होंने दलितों के लिए युद्ध किया। पुगाचोफ़् यहीं हुआ था, राज़िन् यहीं पैदा हुआ था। उन्होंने पीड़ित किसानों के पक्ष में तलवार उठाई थी।

१८७० की २२ अप्रैल को उसी वोलगा के मध्यवर्ती प्रदेश के सिम्बिर्स्क (वर्तमान उल्यानोफ़्) नगर में ब्लादिमिर् इलिच् उल्यानोफ़् पैदा हुआ।

ब्लादिमिर् का वाप इल्या निकोलायेविच् उल्यानोफ़् सिम्बिर्स्क प्रान्त के प्राइमरी स्कूलों का इंस्पेक्टर था। उसकी पत्नी मरिया अलेखन्द्रोव्ना एक छोटे से संभ्रान्त ज़मींदार की लड़की थी। उसके वाप की ज़मींदारी कज़ान् प्रान्त में थी। गर्मी के दिन अकसर परिवार के लोग वहाँ विताया करते थे।

इल्या उल्यानोफ़् के छः वच्चे थे। सव से वड़ा अलेखन्द्र था, फिर ब्लादिमिर्, फिर द्मित्रि। अन्ना, वोलगा, मारी, तीनों छोटे वच्चे थे। हमें काम है ब्लादिमिर् से। ब्लादिमिर् के छोटे भाई-वहनों ने भी क्रान्ति के लिए काम किया, लेकिन ब्लादिमिर् की चमक में उनको पहचानना मुश्किल है। हाँ, अलेखन्द्र का ब्लादिमिर के जीवन के निर्माण में खास स्थान है। इसलिए उसे छोड़ा नहीं जा सकता।

शताब्दियों से ज़ार का निरंकुश शासन रूस की भूमि पर चलता रहा। जिनको आत्मसम्मान का कोई ख़याल न था, जो संसार के सुखदुख,

पीड़ा-अत्याचार को अदृश्य शक्ति के हाथ का खेल समझ कर सन्तोष कर सकते थे, उन्हें ज़ार के अत्याचार के ख़िलाफ़ क्यों शिकायत होती ! ज़ार के नीचे बहुत से सामन्त, या ज़मींदार-राजा थे। कितनी ही बार ज़ार के वर्ताव से इनके आत्मसम्मान को ठेस लगी। कभी इन्होंने विद्रोह भी किया, लेकिन विद्रोह का कारण अधिकतर भावुकता पर निर्भर था। वह किसी ठोस आर्थिक भित्ति पर अवस्थित न था। ज़ार को भी इन थोड़े से आदमियों—जिनका स्वार्थ ज़ार के स्वार्थ से बद्ध था, और समाज में भी जिनका स्थान ज़ार के बाद सब से ऊँचा था—को ख़ामख़ाह चिढ़ाने की आवश्यकता न थी। यदि किसी ज़ार ने चिढ़ाया, तो यह उसकी अदूरदर्शिता थी। और यदि कोई चिढ़ा, तो यह भी वैसी ही बात थी।

महान् पीतर् चाहता था कि रूस भी पश्चिमी यूरोप का समकक्ष बने, वह भी उसके ज्ञान-विज्ञान से लाभ उठाये। पीतर से पहले रूस भी एशिया का ही यूरोप के भीतर घुस गया भाग सा मालूम होता था। आज भी रूसियों के वर्ताव में बहुत सी बातें एशिया से मिलती हैं। पीतर् यह भी चाहता था कि उसके यहाँ भी बनियों और व्यापारियों की सत्ता बढ़े और देश अधिक समृद्ध हो। उस वक़्त बनियों का पक्ष लेने का ख़याल लेकर ज़मींदार-राजाओं ने पीतर् का कुछ हल्का सा विरोध किया। पीछे रूस में भी कल-कारख़ाने बढ़े। सम्पत्ति के साथ साथ बनियों की मान-मर्यादा भी कुछ ऊपर चढ़ी; लेकिन ज़मींदारों का प्रभुत्व १९१७ की क्रान्ति तक बना रहा। ज़ार के बाद उन्हीं का स्थान था। बीच में इतना ही हो सका था, कि किसानों के बहुत से विद्रोहों से डर कर उन्हें खरीदे दास की अवस्था से कुछ साँस लेने लायक बना दिया गया था।

ज़ार और उसके पिट्ठू ज़मींदार अधिकारियों के ख़िलाफ़ मध्यम श्रेणी के शिक्षकों में कुछ स्वतंत्रता का भाव पैदा होने लगा; जब कि उन्होंने १८ वीं शताब्दी के कितने ही फ़्रेंच और अंग्रेज़ लेखकों के स्वतन्त्रता-संबंधी ग्रन्थ पढ़े। मध्यम श्रेणी में शिक्षा के साथ साथ ज़ार के निरंकुश शासन के

प्रति दुर्भाव भी बढ़ता गया। यह दुर्भाव हम रूस के पुश्किन और लेर्मन्तोफ़् जैसे उच्च कोटि के कवियों में भी पाते हैं। क्रोपत्किन् और ल्यु ताल्स्त्वा (टाल्स्टाय) भी उसी भाव को आगे बढ़ाते हैं। क्रान्ति वे चाहते थे, और किसके ख़िलाफ़? ज़ार की निरंकुशता के ख़िलाफ़। इसमें शक नहीं कि इस निरंकुशता के भीषण रूप को दिखलाने के लिए मज़दूरों की सड़ी गली झोपड़ियाँ, उनके कृश-मलिन गात्र, उनकी दिन-रात की असह्य वेदनाओं को वे चित्रित करते थे। लेकिन वह इनके लिए क्रान्ति नहीं करना चाहते थे। उनकी क्रान्ति का ध्यय था, मध्यम वर्ग को अधिक स्वतंत्र करना—आर्थिक सामजिक दोनों दृष्टि से। मध्यम वर्ग की स्वतंत्रता से हो सकता है, जाँगर चलाने वालों की हालत में भी कुछ फ़र्क हो, लेकिन निश्चय ही वह १९१७ की क्रान्ति और उसके परिणाम को न पसन्द करते।

हाँ, यह मानना होगा कि १९१७ की क्रान्ति की बुनियाद रखने में राष्ट्रीय विचार के इन क्रान्तिकारियों का भी हाथ था।

ज़मींदार-सामन्तों के ख़िलाफ़ पश्चिमी यूरोप के बनियों ने आवाज़ उठाई और इसी आवाज़ ने राष्ट्रीयता को जन्म दिया। वे राष्ट्र के नाम पर राजाओं और सामन्तों की मनमानी का विरोध करते थे। उनके पास कारख़ानों और वाणिज्य की आमदनी से अपार सम्पत्ति आ गई थी। इतनी सम्पत्ति आ गई थी, जिनके सामने वे ज़मींदार-सामन्त कोई हैसियत नहीं रखते थे। राष्ट्र के नाम पर बनियों ने हल्ला मचाना शुरू किया। अपने इस काम में जाँगर चलाने वालों को भी सम्मिलित किया। हाँ, अपने ही स्वार्थ के लिए। इसका फल भी हुआ। राजाओं की निरंकुशता और सामन्तशाही डरी। पश्चिमी यूरोप में राज्यशक्ति अब बनियों के हाथ में जाने लगी। उसी समय जर्मनी में एक विचारक पैदा हुआ—आज हिटलर की जर्मनी उसे जर्मन मानने को तैयार नहीं। इस विचारक के कानों में भी बनियों की राष्ट्रीयता का हल्ला पहुँचा। उसने सोचा, क्या राष्ट्रीयता की पुकार बनिये जाँगर चलाने वालों के हित के लिए कर रहे हैं? उसने वर्षों इसके लिए लगाये।

विदेशों में वह मारा मारा फिरा, कितने ही मुल्कों की ख़ाक छानी। ढेर की ढेर पुस्तकों में रात की रात डूबा रहा। अन्त में उसने देखा, बनिये धोखेबाज़ हैं। राष्ट्रीयता की पुकार निस्सार है; जहाँ तक जाँगर चलानेवालों का संबंध है। सामन्तशाही के दिनों में और उससे पहले आदमी गाय और घोड़े की तरह दाम पर बिकते थे। बनियों ने उनकी यह बिक्री छुड़ाई। लेकिन दासता अब भी नहीं छूटी। फ़र्क इतना ही था, कि ज़ारों और सामन्तों की चलती के वक्त गुलाम ख़रीदे जाते थे; लेकिन मालिक पूँजी के डूब जाने के डर से उनके खाने पीने की सुधि लेता था; वैसे ही जैसे कोई अपने घोड़े और बैल की सुधि लेता है। पश्चिमी बनियों ने अभिमान के साथ कहा—हम ने ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया। लेकिन वह आज़ादी कैसी थी? उन्होंने कपड़े के कारख़ाने खोले। लाखों जुलाहे बेकार हो गये। उन्होंने लोहे के कारखाने खोले। लाखों लोहार, हाथ पर हाथ धर कर बैठ गये। क्यों? क्योंकि इन कल-कारख़ानों से बनी चीजें अधिक सस्ती होती थीं। बाज़ार में महँगी चीज़ें लेने के लिए कोई तैयार नहीं था। बनियों ने बेकारों से कहा—आओ, हमारे कारख़ानों में काम करो। गाँव छोड़ छोड़ कर बेकारी के शिकार वे जाँगर चलानेवाले शहरों में फ़ैक्टरियों के दरवाज़ों पर दौड़ने लगे। कुछ को भीतर आने के लिए इजाज़त मिली और कुछ कल की आशा में बाहर मँडराने लगे। बढ़ई का बसूला छूटा, लोहार का हथौड़ा। जुलाहे का कर्घा छूटा, और धुनिए की धुनकी। बनिये ने उन्हें 'कल' दी। ऐसी कल जिसे सात जन्म की कमाई में भी वह ख़रीद नहीं सकते। उनके स्वतंत्र पाँख को काट दिया। अब कल के भरोसे उन्हें रहना था। सामन्तशाही के ज़माने का मालिक अपने ग़ुलाम के पेट की ओर ख़याल करने के लिए मजबूर था। यह ख़्याल कर कि, बीमार होने पर काम का हर्ज होगा। मरने पर उसमें लगी पूँजी डूब जायगी। बनिए के ऊपर कोई पाबन्दी न थी। बीमार हो, कारख़ाना छोड़ कर चले जाओ। मर गये, कोना सूना थोड़े ही होगा। एक की जगह १० जो दरवाज़े पर मँडरा रहे हैं।

सारांश—बनिया जिसे दासता से मुक्ति दिलाना बतलाता है, वह है, न नौकर के पेट का ख़याल करना, न मरने जीने का। इस दृष्टि से तो वह पुरानी दासता उतनी ख़राब न थी।

ऐसा सोचनेवाला वह विचारक कौन था? कार्ल मार्क्स! उसने बनियों की पोल खोली। उसने बतलाया, बनियों की दयालुता बिलकुल बनावटी है। राष्ट्रीयता अपना मतलब गाँठने के लिए है। बनिया जाँगर चलानेवालों को सब से अधिक लूटता है। वह उनके जाँगर की क़माई का पूरा बदला न दे कर जो हड़प लेता है, उसी को नफ़ा कहता है। व्यापार-दक्षता, प्रबन्ध-कुशलता—जिसके नाम पर बनिया लाखों का वारा न्यारा करता है, वह सब बेचारे जाँगर चलानेवालों के श्रम की लूट का सम्मानित नाम है।

मार्क्स ने विश्लेषण किया। ख़ाली किताबों ही के बल पर नहीं, बल्कि जाँगर चलानेवालों की रोज़-बरोज़ की ज़िन्दगी को नज़दीक से देख कर। यही नहीं, उसने बनियों के पहले सामन्तों की दुनिया को भी अपनी दिव्य दृष्टि (बुद्धि) से देखा। उससे भी पहले राजाओं की निरंकुशता को देखा। और भी पहले कबीलों के आपस में लड़ते वक्त प्रभुताशाली योद्धाओं को राजा बनते देखा। उससे भी पहले नग्न आदमियों को पत्थर के हथियारों को ले-कर जंगल के जानवरों पर विजय पाते देखा।

उसने इस मनुष्य के ऐतिहासिक विकास पर गौर किया। इतिहास के विकास की खास स्थिति में विशेष समुदायों की आवश्यकता है। यदि वह समुदाय उस अवस्था में न आवे, तो विकास की परंपरा टूट जायगी। सामन्त न होते तो राजाओं की निरंकुशता नर्म न पड़ती। बनिए न होते, तो सामन्तशाही और राजाओं की मनमानी को धक्का न लगता।

बनियों ने राजनीतिक शक्ति—जो सभी शक्तियों की जननी है—अपने हाथ में ली। जाँगर-चलानेवालों को हथियार से बेहथियार किया। पीढ़ियों के घर से बेघर किया। उन को हवा में उड़ता सूखा पत्ता बना दिया। उनकी विपदाएँ अधिक कर दीं। लेकिन उसी बनिये ने इन

अक्रीत दासों के हाथ में मुक्ति के लिए एक हथियार भी दे दिया। छिट-फुट रहनेवाले असंगठित ग्रामीण दरिद्रों को हज़ारों की तादाद में एक जगह जमा कर दिया। एक ही शहर में नहीं, एक छत के नीचे जमा कर दिया।

एक जगह जमा होने पर उन्हें अपनी ताक़त का ज़रा ज़रा भान होने लगा। अत्याचारों को मूक रह कर बर्दाश्त करने को वह अनुचित समझने लगे। मार्क्स ने कहा—"संसार के कमकरों, एक हो जाओ"।

"तुम्हारे पास हारने के लिए है ही क्या? सिवाय पैरों की जंजीर के।"

मार्क्स ने अँधेरे में एक चिराग़ जलाया। पहले कितने प्रश्न करते थे—यह चिराग़ है या भूत की आग?

जैसे जैसे समय बीतता गया, मार्क्स की आग ने जंगल की आग का रूप धारण किया। राष्ट्रीयता के नाम पर लोगों को आह्वान करनेवालों का गला क्षीण होने लगा। जाँगर-चलानेवालों के वास्तविक हित की ओर ध्यान आर्कषित होने लगा।

*** ***

व्लादिमिर् का बड़ा भाई अलेखन्द्र राष्ट्रीय क्रान्ति के युग के अन्त में हुआ था। ज़ार के निरंकुश शासन को उलटने के लिए राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सभी तरह का त्याग करने के लिए तैयार थे। क्रोपत्किन् जैसे कितनों ने इस प्रवाह को आगे बढ़ाया।

१ मार्च १८८१ को रूस का ज़ार अलेखन्द्र द्वितीय मार डाला गया। कितने ही लोग पकड़े गये और कितनों को प्राणदंड मिला। लेकिन वह निरंकुशता जिसके दूर करने के लिए ज़ार अलेखन्द्र मारा गया था, अब भी मौजूद थी। इसलिए क्रान्ति का मार्ग रुक नहीं सकता था। १८८७ में फिर तत्कालीन ज़ार अलेखन्द्र तृतीय की हत्या करने की साज़िश कुछ नौजवानों ने की। उनका अगुवा अलेखन्द्र उल्यानोफ़् था। साज़िश करने-वाले असफल रहे। पुलिस ने अलेखन्द्र उल्यानोफ़् और उसके साथियों

को पकड़ लिया। कितने दिनों तक जेल में रखा। आख़िर, उसी साल उसे फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

व्लादिमिर् अभी लड़का था। लेकिन इतना लड़का नहीं था, कि अपने आसपास की घटनाओं को न समझ सकता हो। उसी साल वह हाई स्कूल की पढ़ाई समाप्त करनेवाला था। अलेखन्द्र के फाँसी पर चढ़ाने का असर सारे उल्यानोफ़् परिवार पर पड़ा। वह पुलीस की निगाह में खटकने लगा। स्कूल के हेडमास्टर (इसे संयोग कहिए, क्रान्ति के वक्त रूस के प्रधान मंत्री तथा लेनिन् के प्रतिद्वन्द्वी करेन्स्की का वह पिता था) ने व्लादिमिर् की बड़ी मदद की; और वह हाई स्कूल की परीक्षा में बैठ सका। व्लादिमिर् असाधारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। परीक्षा में अव्वल नंबर का इनाम उसे मिलना ही चाहिए था। व्लादिमिर् कज़ान् के विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। विद्यार्थियों ने कुछ राजनैतिक गड़बड़ की। व्लादिमिर् भी जवाबदेह समझा गया और विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया।

कितनी ही बार पढ़ने के लिए दर्ख्वास्त दी, लेकिन पुलिस ने न रूसी विश्वविद्यालय में ही भर्ती होने दिया, न देश से बाहर जाने की अनुमति ही दी। दो तीन वर्ष इसी में चले गये। उस वक्त इन सारे अन्यायों के साथ साथ फाँसी पर लटके अपने भाई अलेखन्द्र की तसवीर उसके सामने रहती थी। हर घंटे, हर मिनट ज़ार और उसके शासन के प्रति अपार घृणा उसके दिल में उत्पन्न होती थी।

दो तीन वर्ष बर्बाद करवा अन्त में १८९० में व्लादिमिर् को बाहर के विद्यार्थी के तौर पर परीक्षा में बैठने की इजाज़त मिली। उसने पीतर्बुर्ग (वर्तमान लेनिन्ग्राद्) को परीक्षा के लिए चुना; और १८९१ में विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त की।

उसे बैरिस्ट्री करने की भी इजाज़त मिली। एक साल से अधिक उसने समारा में प्रैक्टिस की।

१८९३ में वह फिर पीतर्बुर्ग चला आया; और वहाँ की अदालत में प्रैक्टिस करने लगा।

ब्लादिमिर् जैसा प्रतिभाशाली तरुण परिस्थितियों पर गंभीरता-पूर्वक विचार किये बिना नहीं रह सकता था। विशेष कर, जब कि उन परिस्थितियों का फल उसको और उसके परिवार को बड़े कड़वे रूप में भोगना पड़ रहा था। अलेखन्द्र उसका सगा भाई था, उससे उसको बहुत प्रेम भी था। फिर वह आज़ादी के लिए शहीद हुआ था। इस तरह ब्लादिमिर् का ध्यान अलेखन्द्र के रास्ते की ओर अधिक आर्कषित होना ही चाहिए। लेकिन राष्ट्रीयता की क्रान्ति के दिन अब समाप्त हो रहे थे। मार्क्स को मरे अभी दस बारह ही साल हुए थे; लेकिन उसकी जलाई आग अब दूर तक फैल गई थी। अलेखन्द्र राष्ट्रीय क्रान्ति के लिए मरा था लेकिन ब्लादिमिर् सिर्फ भावुक नहीं था; वह गंभीर विचारक था। उसे मार्क्स का पथ पसन्द आया।

पीतर्बुर्ग में आने के बाद ब्लादिमिर् बहुत दिनों तक अपनी प्रैक्टिस नहीं चला सका। थोड़े ही दिनों बाद उसे सब छोड़ कर अपना सारा समय समाजवाद के प्रचार के लिए देना पड़ा।

ब्लादिमिर् को पहले पहल १८८८ में मार्क्स के ग्रंथों को पढ़ने का मौक़ा मिला।

१८९१ में जब वह समारा गया, तो वहाँ उसने तरुण शिक्षितों की एक मार्क्सवादी मंडली क़ायम की। पीतर्बुर्ग में दोबारा आने से पहले जो कुछ काम ब्लादिमिर् ने किया था, वह अधिकतर समाजवाद के अध्ययन के लिए,; लेकिन १८९३ से अब वह समाजवादी क्रान्ति के लिए कटिबद्ध हो गया। पीतर्बुर्ग के कमकरों में भी काम करना शुरू किया। क्रान्ति ब्लादिमिर् के लिए क्या थी, इसे एक उसके प्रतिद्वन्द्वी ने इस प्रकार कहा है—"उसके जैसा दूसरा आदमी नहीं मिलेगा, जो कि हर रोज़, २४ घंटा क्रान्ति में तल्लीन रहता हो। जिसे क्रान्ति छोड़ और कोई ख़याल नहीं

आता हो, और जो सोने पर भी क्रान्ति छोड़ दूसरा स्वप्न नहीं देखता हो।"

ब्लादिमिर् का क़द छोटा था, बाल थोड़े भूरे थे, और समय से पहले ही सिर चंदला हो गया था। उसकी ज़रा तिर्छी हो गई भौंहें मंगोल रक्त के असर को बतलाती थीं। आँखें चमकीली तथा हास्य से पूर्ण थीं। ब्लादिमिर् अपने स्वभाव में बहुत सीधा सादा था। किसी तरह का उसे शौक न था। वह शराब नहीं पीता था; और किसी समय मांस भी नहीं खा रहा था। लेकिन ऐसे परहेज़ को वह सिद्धान्त के तौर पर नहीं मानता था।

पीतर्बुर्ग में १८९३ की शरद् ऋतु आने पर ब्लादिमिर् ने अपना काम ख़ूब लगन से शुरू किया। यह नगर उस वक्त ज़ार की राजधानी होने से जहाँ राजनैतिक केंद्र था, वहाँ शिक्षा और संस्कृति का भी मुख्य स्थान था। समाजवादियों का भी यहीं अड्डा था। ब्लादिमिर् उल्यानोफ़् की विद्वत्ता का हल्ला पहले ही से था। समाजवादियों ने उसका दिल से स्वागत किया। एक तरफ़ ब्लादिमिर् के मार्क्सवाद के गंभीर ज्ञान का लोगों पर बहुत प्रभाव था, दूसरी ओर कमकरों में उसकी निस्संकोच भाव से मिलने की आदत ने उसे ज़्यादा जनप्रिय बना दिया था। १८९४–९५ में ब्लादिमिर् ने मार्क्सवाद प्रचार के लिए ख़ूब काम किया। तरुण क्रान्तिकारी इधर बहुत आकर्षित हुए।

१८८७ से, जबकि ब्लादिमिर् को कज़ान् विश्वविद्यालय से निकाला गया था, उसके ऊपर पुलीस की कड़ी निगाह रहती थी। वह विदेश जाना चाहता था, लेकिन पुलीस उसे इजाज़त नहीं देती थी। इसी समय एक ख़तरनाक बीमारी हुई और बाहर जाने के लिए उसे इजाज़त मिल गई। वह स्विट्ज़रलैंड गया। वहाँ पुराने मार्क्सवादी रूसी क्रान्तिकारी प्लेख़ानोफ़् से उसकी मुलाकात हुई। नौजवान ब्लादिमिर् का प्लेख़ानोफ़् पर बड़ा असर हुआ। उसने कहा—'यह भविष्य में रूस का रोबेपियेर (फ़्रांस की राज्यक्रान्ति का नेता) होगा।' रूसी क्रान्तिकारियों से मिल कर सलाह ठहरी कि एक गुप्त समाचारपत्र निकाला जाय। उल्यानोफ़् स्विट्ज़र्लैन्ड

से लौटते वक्त इसके लिए आवश्यक सामान लेता आया। पत्र का नाम रखा गया 'कमकरों का काम' ("रबोचेइ-देलो")। दिसंबर १८९५ के आरंभ में ग़ैरकानूनी इस गुप्त पत्र का पहला अंक तैयार हुआ, लेकिन पुलीस की आँखें पहले ही से थीं। उसने छपी कापियाँ और प्रेस के साथ सभी कार्यकर्ताओं को पकड़ लिया।

राजनैतिक अपराधियों को अदालत में सज़ा नहीं दी जाती थी, उनके मुक़दमे का फ़ैसला पुलीस के अध्यक्ष की सम्मति से ज़ार स्वयं करता था। लेनिन् और उसके साथियों को एक साल से अधिक तक हवालात में बन्द रहना पड़ा। हवालात की तकलीफ़ें इतनी भयंकर थीं, कि बहुत कम उनसे जीते बच कर निकलते थे। उल्यानोफ़् का स्वास्थ्य अच्छा और शरीर सुदृढ़ था। शरीर और मन पर वह बहुत संयम रखता था। इसी लिए काल कोठरी ने उसपर बहुत बुरा असर नहीं किया।

एकान्तवास के वक्त भी क्रान्तिकारियों ने ऐसा ढंग खोज निकाला था कि बाहर की बातें उन्हें मालूम होती रहें; और भीतर से वह अपने संदेश बाहर भेज सकें। मई १८९६ में जो बड़ी बड़ी हड़तालें हुई थीं, उनमें उल्यानोफ़् का भी हाथ था। हवालात के समय ही में उसने "रूस में पूँजीवाद का विकास" का बहुत सा हिस्सा लिखा था। और बाकी भाग सिबेरिया में समाप्त हुआ। १८९९ में यह ग्रंथ छपा।

जनवरी १८९७ में उल्यानोफ़् और उसके साथियों का फ़ैसला हुआ। उन्हें तीन वर्ष की सज़ा के रूप में पूर्वी सिबेरिया में निर्वासन का दंड मिला। ऊपरी येनीसेइ के मिनुसिन्स्क ज़िले के शूसेन्स्कोये गाँव में उसे रखा गया; और तीन साल तक (फरवरी १९००) वह वहीं रहा।

पीतर्बुर्ग में काम करते हुए उल्यानोफ़् के साथियों में एक नौजवान लड़की नादेज़्दा कोन्स्तन्तिनोव्ना क्रुप्स्काया भी थी। १८९८ में वह भी सज़ा पाकर वहाँ आ गई और उसी साल जुलाई में दोनों ने शादी कर ली। तब से सारे जीवन भर क्रुप्स्काया अपने पति के काम में सहायक रही। असल

छान-बीन करेगा कि लद्दाख से लेकर प्रशान्त महासागर तक के चीनी-भू-प्रदेश में कहीं मिट्टी का तेल और पेट्रोल है। ३–४ साल तक वह इसी काम में लगा रहेगा। लेकिन जापान इतने पर सन्तोष नहीं कर सकता। अव्वल तो कितने ही धातु और कच्चे माल की भूख अब भी उसकी शान्त नहीं हो पावेगी; दूसरे प्रति वर्ष १० लाख की अपनी बढ़ती जनसंख्या—जिसके बसने के लिए जापान में भूमि बिलकुल अपर्याप्त है—को कहाँ बसाया जाय?—का सवाल उसके सामने वैसा ही रहेगा। ३–४ साल बाद जापानी फ़ौजें एक बार फिर उदीयमान सूर्य की विजयी पताका लेकर प्रशान्त महासागर को पार करती दीख पड़ेंगी। लेकिन अभी हिन्दुस्तान के डरने की कोई बात नहीं। ब्रिटिश साम्राज्य पर भी वह हमला न करेंगी। उनका लक्ष्य होगा, निर्बल डचों (हालैंड वालों) के शासित द्वीप जावा-सुमात्रा आदि। ये हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के बीच म पड़ते हैं। डच जापान का मुक़ाबला नहीं कर सकते, यह निश्चित ही है। अमेरिका का चीन के बारे में अंगरेज़ों के साथ जैसा कड़वा तजर्बा हुआ है, उसके कारण वह फिर अंगरेज़ों को मदद देने नहीं आवेगा। सोवियत् को भी डच और अंगरेज साम्राज्य के बचाने की क्यों परवा होने लगी? जावा के ले लेने में सब से अधिक जिसको नुकसान होगा वह डच लोगों के बाद अंगरेज़ों को होगा। अब अंगरेज़ों के सामने सवाल आवेगा—लकवा मारे डचों के लिए जापान की युद्ध द्वारा सुशिक्षित तथा ४ वर्ष की सुस्ताई नौ-सेना से वह अकेले मुक़ाबला करें। उनको यह भी मालूम होगा कि जावा के बाद दूसरा नम्बर आवेगा आस्ट्रेलिया का। लेकिन युद्ध के बाद से अंगरेज़ राज-नीतिज्ञों की नज़र कुछ ही इंच से आगे की चीज़ें नहीं देखतीं। इसी लिए जब तक चेम्बरलेन् रहेंगे, तब तक जावा के लिए इंगलैंड जापान से लड़कर अपनी स्थिति ख़तरे में डालेगा इसकी संभावना नहीं। मज़दूर-दल यदि इंग-लैंड में अधिकारारूढ़ हुआ तो उसका भी दिल इंगलैंड के बनियों से अधिक मज़बूत नहीं। दल से निकाला मेक्डानोल मर गया, तो भी इंगलैंड के मज़-

में शादी के भीतर भी क्रान्ति का काम ही कारण था।

शुसेन्स्कोये में उल्यानोफ़् का दिमाग़ और कलम बराबर चलती रही। यहीं पहले पहल 'लेनिन्' के नाम से उसने लेख लिखे; और दुनिया ने उसी नाम को जाना और स्वीकार किया।

१९०० के आरंभ में लेनिन् की सज़ा ख़तम हुई और वह प्स्कोफ़् (पीतर् बुर्ग के नातिदूर रूस की पश्चिमी सीमा के पास) में जाकर रहने लगा। सिबेरिया से लौटे हुए क्रान्तिकारियों को उसने संगठित करना शुरू किया। अपने इस काम को साथियों के ज़िम्मे देकर वह फिर रूस से बाहर निकला। देश में किसी तरह के क्रान्तिकारी पत्र या ग्रंथ का छापना बड़ा मुश्किल था। इसीलिए लेनिन् अब की बाहर निकला। १९०० के अंत में उसने म्यूनिच् (जर्मनी) से 'इस्क्रा' (चिनगारी) नामक पत्र निकाला। पुलीस के तंग करने पर जून १९०२ में 'इस्क्रा' को वह लन्दन ले गया। पत्र और पुस्तिकाएँ छाप कर चोरी से रूस भेजी जाती थीं। अधिकतर यह काम जहाज़ के मल्लाहों द्वारा होता था। लन्दन और पीतर्बुर्ग के बीच आने जाने वाले जहाज़ों की संख्या कम न थी।

अगस्त १९०२ में 'इस्क्रा' के संपादकीय विभाग में एक नया रंगरूट भर्ती हुआ। यह २३ साल का नौजवान था ल्योन् त्रोत्स्की; जो सिबेरिया से भाग कर आया था। उस की क़लम ज़बर्दस्त थी और थोड़े ही दिनों में वह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक हो गया।

१९०३–४ में जनसत्ताक-समाजवादी क्रान्तिकारियों में दो दल हो गये। गर्म दल जिसका नेता लेनिन्, बहुमत में था। इसी लिए उस दल का दूसरा नाम बोल्शेविक (बहुमतीय) हुआ और नर्म दल वाले मेन्शेविक् (अल्पमतीय) कहे गये। १९०४–५ में लेनिन् को मेन्शेविकों के ख़िलाफ़ अपनी शक्ति अधिक लगानी पड़ी। मेन्शेविक ऐसे शिक्षित क्रांतिकारी थे, जो कमकरों के लिए काम तो करते थे, लेकिन क्रान्ति की सफलता के लिए कमकरों पर उनका उतना विश्वास नहीं था, जितना अपने ज्ञान पर। अपने

व्यक्तित्व को वह अधिक महत्त्व देते थे; और उसके खोने के डर से क्रान्ति के खूनी मैदान में आने से हिचकिचाते थे। असल बात यह होने पर भी वह दोष देते थे, कमकरों की असमर्थता या अज्ञान को।

१९०४ में रूस और जापान की लड़ाई हुई। जापान ने रूस को बुरी तरह से हराया। अपने शासकों की शक्ति रूसी कमकरों की नज़र में गिर गई। पिसते हुए श्रमिकों को सिर उठाने का साहस हुआ। पहले उन्होंने हड़ताल की, फिर ज़ार—जिसे कि वह छोटा ईश्वर मानते थे—के दया और न्याय पर विश्वास करके निवेदन-पत्र लेकर वे शरद्-प्रासाद (पीतर्बुर्ग) को जा रहे थे। २२ जनवरी १९०५ को एतवार का दिन था; जब कि श्रद्धा-भक्ति से लाये हुए विनतीपत्र को स्वीकार करने की जगह ज़ार ने गोलियाँ चलवाईं। सैकड़ों आदमी मरे। यही वह खूनी एतवार था, जिसने ज़ार के प्रति जनता के बचे खुचे विश्वास को नष्ट कर दिया।

उस वक्त लेनिन् जेनोवा में था। खूनी एतवार की गोलियों ने जनता के जोश को नष्ट नहीं कर पाया। क्रान्ति की लहर जोर से फैलती जा रही थी। नवबंर में लेनिन् को पितर्बुर्ग के क्रान्तिकारियों की सफलता का पता लगा।

विदेश में रहने वाले क्रान्तिकारियों में लेनिन् पहला था जो रूस लौट आया। उसने कई सार्वजनिक सभाओं में व्याख्यान दिया। लेकिन नाम और वेष बदले रहने के कारण पुलीस को पता नहीं लग सका। क्रान्तिकारियों को लेनिन् ने कुछ सहायता भी की, लेकिन इस बारे में वह खुल कर उतना काम नहीं कर सका, जितना कि १९१७ में उसे करने को मिला।

लेनिन् ने पिछले वर्ष युद्ध-विज्ञान का विशेष तौर से अध्ययन किया था। ज़ार के हाथ से तलवार के बल पर अधिकार छीनना था और यह निर्भर करता था अस्त्र-शस्त्र की पर्याप्त मात्रा, योद्धाओं के संगठन तथा ज़ार की सेना में सफलता-पूर्वक अविश्वास के प्रचार पर। यह पहला सशस्त्र विद्रोह था; जो पीतर्बुर्ग—मास्को—जैसे बहुत से शहरों और दूसरी जगहों

में फैला। इस विद्रोह को उतनी आसानी से ज़ारशाही दबा भी न सकी। लेकिन अंत में क्रान्ति असफल रही। ज़ारशाही ने हज़ारों को निर्दयता के साथ तलवार के घाट उतारा।

लेनिन् (पृ० १३३)

इस क्रान्ति में मेन्शेविकों की मदद नाम मात्र थी; और असफलता के बाद उन्होंने उस के लिए अफ़सोस किया। उनके नेता प्लेख़ानोफ़् ने कहा—"हथियार उठाना भूल थी।" लेनिन् का विचार इस असफलता के बारे में दूसरा ही था। दोषों और कमज़ोरियों को स्वीकार करते हुए भी उसने कहा—"यह असफलता सफलता से कम मूल्य नहीं रखती। इसने हमें बतला दिया कि क्रांतिकारी कमकरों में लड़ाई की शक्ति और साहस कितना है"। उसका जनता पर पूरा विश्वास था। वह जानता था कि जनता की शक्ति और साहस के स्रोत को ऐसी दर्जनों असफलताएँ सुखा नहीं सकतीं। दो वर्ष का पुराना कड़वा तजर्बा, तत्काल की भूख और जाड़े के सामने उनकी स्मृति से मिट जाता है।

क्रान्ति के वक्त लेनिन् छिप कर रूस में रह रहा था। उसकी असफलता पर पुलीस का ज़ोर बहुत बढ़ गया था। इसलिए लेनिन् का वहाँ रहना ख़तरे से ख़ाली नहीं था। पहले वह फ़िन्लैंड चला गया। फ़िन्लैंड रूस के आधीन रहते हुए भी कुछ स्वायत्त-शासन पा चुका था। लेकिन वहाँ भी

आख़िर पुलीस उसके पीछे पड़ी और १९०७ में वह फिर विदेश चला गया।

१९०३ में पार्टी में जो झगड़ा पैदा हुआ था, उसके कारण लेनिन् को वहुत मानसिक चिन्ता हुई थी; और १९०७ से १९१४ तक का समय भी ऐसा ही था। उसके कितने सहयोगी इस निराशा के समय अलग हो गये और इस प्रकार बोल्शेविक पार्टी में निर्बलता आ गई। लेनिन् को छोड़कर जानेवालों में त्रोत्स्की भी था। लेनिन् की कलम और दिमाग़ अब भी उसी तरह से चल रहे थे। वह बराबर लेख और पम्फ्लेट बाहर से भेजा करता था।

लेनिन् वोल्शेविक पार्टी की बिखरी शक्ति को एकत्र करने का बराबर प्रयत्न कर रहा था। चारों ओर निराशा की काली घटाएँ छाई हुई थीं। लेकिन वह लेनिन् को हताश नहीं कर सकती थीं। १९०५ की क्रान्ति के फलस्वरूप ज़ार ने निर्वाचित दूमा (पार्लियामेंट) स्थापित करने का वचन दिया था। १९१२ के चुनाव में कमकरों के प्रतिनिधि होकर आनेवाले दूमा के छहों सदस्य बोल्शेविक थे; और यह लेनिन् के लिए बड़ी विजय की बात थी। १९१२ से १९१४ तक का लेनिन् का काम रूसी क्रान्ति के इतिहास में बड़ा ही महत्त्व-पूर्ण है। विदेश में रहते हुए भी इसी वक्त उसने रूसी कमकरों में समाजवादी ख़याल का ज़बर्दस्त प्रचार और सशस्त्र मुक़ाबले की तैयारी का संगठन किया। यही समय था, जब कि लेनिन् रूसी कमकरों का सर्वमान्य नेता माना जाने लगा। रूस में समाचारपत्र 'प्राव्दा' (सत्य) और दूमा के अन्दर की बोल्शेविक पार्टी उस समय रूस में लेनिन् का मुख थी। बोल्शेविक पार्टी का गुप्त रूप से सब जगह ज़बर्दस्त संगठन था। डरने और हिचकने वाले पिछली निराशा के समय में ख़ुद छँट चुके थे। लेनिन् की हर एक बात को बोल्शेविक-केन्द्रीय-पार्टी पूरा करने के लिए तैयार थी।

इतना होने पर भी दूमा की बोल्शेविक पार्टी का नेता रोमन् मालीनोव्स्की जो लेनिन् और रूस की पार्टी के बीच संबंध रखने का ज़रिया था

खुद जार की ओर का खुफ़िया था। यह खबर १९१३ में ही फैली हुई थी लेकिन लेनिन् ने इस पर विश्वास नहीं किया। युद्ध के आरंभ होने के वाद सन्देह इतना वढ़ा कि मालीनोव्स्की इस्तीफ़ा देकर गुम हो गया। क्रान्ति के वाद पुलीस के दफ़्तर में जो कागज़ मिले, उनसे यह सिद्ध हो गया कि मालीनोव्स्की सचमुच पुलीस का आदमी था।

युद्ध के वारे में लेनिन् की राय स्पष्ट थी। सच्चे मार्क्सवादी की तरह उसका कहना था—"साम्राज्यवादियों की विजय से कमकरों को कोई फ़ायदा नहीं। इस युद्ध को अपने देश के साम्राज्यवादियों से लड़ने के रूप में परिणत कर देना चाहिए। रूसी समाजवादियों को खास तौर से समझना चाहिए कि जारशाही की हार से श्रमिक-श्रेणी का कोई नुकसान नहीं। कमकरों के लिए यही अच्छा मौक़ा है। वाहर के दवाव और उसके मुक़ावले के लिए की गई सैनिक तैयारी के कारण शासकों का वल भीतर वालों के लिए वहुत कमज़ोर हो गया है। इसलिए साम्यवादियों को इस युद्ध को गृह-युद्ध के रूप में परिणत कर देना चाहिए।"

लेनिन् अव रूस की सीमा के नज़दीक रहना चाहता था; इसीलिए वह गेलीसिया में आया। आस्ट्रिया के अधिकारियों ने उसे पकड़ कर जेल में डाल दिया। लेकिन वहाँ के समाजवादी नेता विक्टर एड्लर् ने यह कह-कर उसे छुड़वाने में सफलता पाई, कि लेनिन् ज़ारशाही की मदद नहीं कर सकता। युद्ध छिड़ने के वाद पुलीस ने फिर ज़ोर दिखलाना शुरू किया। दूमा की वोल्शेविक पार्टी के सभी सभासद् जेल भेज दिये गये। नेताओं में भी अधिकांश या तो सिवेरिया भेज दिये गये, या भाग कर उन्हें विदेश चला जाना पड़ा। १॥ साल के महायुद्ध के वाद जन-धन के क्षय तथा भीतरी असन्तोष और अव्यवस्था के कारण १९१६ के अन्त में जव परिस्थिति क्रान्ति के अनुकूल मालूम होने लगी; तो उस वक्त कमक़र क्रान्ति-कारियों का नेतृत्व करने के लिए कोई न रह गया था। लेनिन् का तअल्लुक रूस से उस वक्त टूट सा गया था।

दिसंबर १९१६ तक पहुँचते पहुँचते युद्ध में रूस की दशा बहुत ख़राब हो गई। हिंडेनबर्ग ने हार पर हार दी और लाखों सैनिक और बहुत सी रूस की भूमि जर्मनों के हाथ में चली गई। रूसी सैनिकों और सेनानायकों दोनों का साहस छूट गया। सिपाही मैदान छोड़ छोड़कर अपने घरों की ओर भाग रहे थे। चारों ओर असन्तोष ही असन्तोष दिखलाई पड़ता था। दूमा के नर्म दलीय लोगों को भी गर्म गर्म बात करने का साहस हो चला था। ज़ारीना ने २४ फ़रवरी को ज़ार के पास पत्र लिखते हुए लिखा—

"मैं चाहती हूँ कि दूमा-वाला करेन्स्की अपने भयंकर व्याख्यानों के लिए फाँसी पर चढ़ा दिया जाय। युद्ध के समय यह ज़रूरी है। इससे दूसरों को शिक्षा मिलेगी। तुम को सख़्ती से काम लेना चाहिए।"

राजधानी में हड़तालों पर हड़तालें हो रही थीं। ज़ार और ज़ारीना का गुरु साधु रस्पुतिन् मारा जा चुका था। ज़ार ज़ारीना के हाथ की कट-पुतली था, और ज़ारीना इतना अधिक मिथ्याविश्वास रखनेवाली थी कि वह रस्पुतिन् को ईश्वर की तरह मानती थी। एक बार उसने लिखा था—"अगर वह हमारे पास न होता, तो कभी का हमारा सर्वनाश हो गया होता।"

अन्त में हालत इतनी बिगड़ गई कि ज़ार निकोला को (२ मार्च १९१७) सिंहासन से इस्तीफ़ा देना पड़ा। अपनी डायरी में उस दिन निकोला ने यह लिखा—

"आज सवेरे रुस्की आया। उसने रद्ज़ियको के साथ तार पर हुई लम्बी बातचीत मुझे पढ़ कर सुनायी। उसके कहने से मालूम होता है कि पेत्रोग्राद् (लड़ाई में जर्मनों के प्रति जो क्रोध आया, और उसके लिए जर्मन शब्दों से भी द्वेष उत्पन्न हो गया, इसी लिए पीतर्बुर्ग का जर्मन नाम हटा-कर 'पेत्रोग्राद्' रखा गया) की अवस्था इतनी नाज़ुक है कि राजकीय दूमा के जनसत्ताक-समाजवादी सदस्यों का (कम्युनिस्ट पार्टी का पूर्व नाम) मंत्रिमंडल कुछ नहीं कर सकेगा। क्योंकि जनसत्ताक समाजवादी कमकर कमेटी के रूप में इसका विरोध कर रहे हैं। मेरा पदत्याग आवश्यक है।

रुस्की ने अलेक्सेयेफ़ (महासेनापति) तथा दूसरे प्रधान सेनापतियों को इसकी सूचना दी। १२॥ बजे (दिन) जवाब आया। रूस की रक्षा और मैदान में सेना को क़ायम रखने के ख़याल से मैंने ऐसा करना निश्चित किया। मैंने स्वीकार किया और उन्होंने हेडक्वार्टर्स (केन्द्र) से पद-त्याग का मसविदा भेजा। शाम को गुश्कोफ़् और शुल्गिन् पेत्रोग्राद् से आये। उनसे इस बारे में मैंने बात चीत की और संशोधन करके पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। १ बजे सवेरे मैंने भरे दिल से प्स्कोफ़् को छोड़ा। मेरे चारों तरफ़ कायरता, धोखाबाज़ी और विश्वासघात है।"

लेनिन् ने जैसे ही मार्च (पुराने रूसी पंचाग के अनुसार फ़रवरी) की क्रान्ति की ख़बर पाई, वैसे ही वह रूस पहुँचने के लिए बेकरार हो गया। लेकिन उसका नाम मित्र-शक्तियों के ख़ुफिया-विभाग की काली सूची में दर्ज था। अंगरेज़ अधिकारियों ने अपने देश से होकर जाने के लिए आज्ञा न दी। रूसी वैदेशिक-विभाग ने सोवियतों की माँग से मजबूर हो कर सभी रूसी निर्वासितों को रूस लौटने के लिए मित्र-शक्तियों को लिखा। लेकिन साथ ही यह भी कह दिया कि अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों को न आने दिया जाय। लेनिन् का रास्ता इस तरह बन्द था। वह लौटने का कोई उपाय सोच रहा था। एक बार उसको यह भी ख़याल आया कि स्वीडेन का पासपोर्ट ले जर्मनी के रास्ते जाय, लेकिन वह स्वीडिश् भाषा का एक शब्द भी नहीं जानता था। तब उसने गूँगा बनने की सोची। अन्त में उसे स्पष्ट हो गया, कि जर्मन अधिकारियों की सम्मति के अनुसार जर्मनी के रास्ते ही लौटा जा सकता है। जर्मनी ने निर्वासित राजनीतिकों—विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी सोशलिस्टों—के रूस लौटने में अपना नुक़सान नहीं समझा। इसीलिए स्विट्ज़रलैंड के समाजवादी प्लाटेन् के बहुत लिखा पढ़ी करने पर जर्मनी ने इस शर्त पर अपने भीतर से जाने के लिए आज्ञा दी कि वे सभी निर्वासित रूसी जिस ख़ास ट्रेन में भेजे जायेंगे, उससे उतरें नहीं और न रास्ते में क़िसी से बातचीत करें। लेनिन् को रूस पहुँचने से मतलब था। उसने स्वीकार कर लिया

और मुहरबंद ट्रेन से लौटा। जिस वक्त वह फ़िन्लैंड और रूस की सरहद पर पहुँचा, तो बोल्शेविक् नेताओं ने मिल कर उसे परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्राद् स्टेशन पर उसका शाहाना ठाट से स्वागत हुआ। हज़ारों फ़ौजी सिपाही पाँती से सलामी दागने के लिए खड़े थे। सैकड़ों लाल झंडे फहरा रहे थे। लेनिन् ने उस ज़बर्दस्त स्वागत को देखकर समझ लिया कि काम करने की कितनी स्वतंत्रता है और लोगों में कितना उत्साह है। लेनिन् के पेत्रोग्राद् पहुँचने से १ मास बाद त्रोत्स्की भी लौटा। इसके विचारों में भी परिवर्तन हुआ था, और अब वह लेनिन के विचारों के साथ था।

नई सरकार भी धनियों की सरकार थी। ज़ार की निरंकुशता चली गई थी, और उसके हटाने में जनता की शक्ति ने काम किया था। इसी लिए लेखन-भाषण की स्वतंत्रता देना ज़रूरी था। लेकिन अभी किसानों और कमकरों का राज्य कायम होना दूर की बात थी।

लेनिन् के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के विचार को अधिकांश बोल्शेविक भी मानने को तैयार नहीं थे। लेनिन् का कहना था—'लड़ाई से हमें अपना हाथ एक दम हटा लेना चाहिए।' सहयोगियों का कहना था—'तब तो जर्मन बेधड़क सारे रूस को दखल कर लेंगे और हम ज़ारशाही से बच कर जर्मनशाही के हाथ में चले जायेंगे।' नया मंत्रिमंडल मित्र-शक्तियों के साथ मिल कर जर्मनी से लड़ाई जारी रखना चाहता था। लेनिन् को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का खूब ज्ञान था। उसे मालूम था कि यदि जर्मनी की कुछ अरुचिकर शर्तों को भी हम मान लेंगे तो वह हमारा पीछा और ज़्यादा नहीं करेगा। क्योंकि उसे फ़्रांस और इंगलैंड से भी लड़ना है।

लेनिन् ने कहा—"अब जब कि रूस में भाषण और लेखन की पूर्ण स्वतंत्रता है, तो हमारा सब से पहला काम है, कि शासन को कमकरों और ग़रीब किसानों को हाथ में लेने दें। अस्थायी सरकार को कोई मदद नहीं देनी चाहिए। यह पूँजीवादियों की सरकार साम्राज्यवादी छोड़ और हो ही क्या सकती है?"

उस वक्त शहरों, ज़िलों के शासन का अधिकार निर्वाचित सोवियतों (पंचायतों) के हाथ में था; जिनमें निम्न मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों की प्रधानता थी। लेनिन् ने कहा—सोवियतों को कमकर और किसानों के हाथ में होना चाहिए। ज़मींदारों की ज़मींदारी को छीनकर किसानों को देना चाहिए। अलग अलग बैंकों को मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिए। समाजवाद की स्थापना तुरन्त नहीं हो सकती; लेकिन राष्ट्र की उपज और उसके वितरण को सोवियतों के हाथ में चला जाना चाहिए। जनसत्ताक-समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टी का नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) के रूप में बदल देना चाहिए कि जिससे मालूम हो कि हम पैरिस की कम्यून् (साम्यवादी समाज) के नमूने पर साम्यवादी राष्ट्र की स्थापना करना चाहते हैं।"

लेनिन् के ये विचार रूस के तत्कालीन राजनैतिकों के ऊपर बम की तरह पड़े। बोल्शेविक नेता तक घबड़ा गये। उन्होंने कहा—"यह शेख़-चिल्ली का महल है। वास्तविकता से इसका कोई ताल्लुक नहीं है। लेनिन् ने १० साल तक रूस देखने का मौक़ा नहीं पाया; इसी लिए वाही-तवाही बोल रहे हैं।" कितने लेनिन् को जर्मनों का एजेंट कहते थे; और तरह तरह से उनके ऊपर आक्षेप किये जाते थे। लेकिन लेनिन् को जितना ही अधिक जनता से मिलने का मौक़ा मिल रहा था, उतना ही वह उन्हें अच्छी तरह समझाने में सफल हो रहे थे। ३ महीने लगातार लेनिन् की क़लम और ज़बान ज़ोर से चलती रही। बोल्शेविक पार्टी का केन्द्र उस वक्त क्शेसिन्स्की भवन में था। सामने की सड़क पर वह रोज़ व्याख्यान देते थे। और वे व्याख्यान क्या थे, एक एक शब्द दहकते हुए अंगारे थे। हर एक बात के साथ दृढ़ दलील थी और वह इतने सीधे सादे शब्दों में कही जाती थी कि श्रोता के अन्तस्तल में सीधी चली जाती थी। कुछ ही समय में लेनिन् अपनी बातों को मनवाने में समर्थ हुए। कमकरों को तो पहले ही से उनपर विश्वास था, लेकिन अब बोल्शेविक पार्टी के नेता भी उनसे सहमत हुए। वे देख

रहे थे कि अस्थायी सरकार के ज़ोर देने पर भी मैदान छोड़कर सैनिक भागते ही जा रहे हैं। जर्मन फ़ौजें आगे बढ़ती ही जा रही हैं। इसलिए अच्छी शर्त पर जर्मनी से सुलह कर लेने में ही अच्छा है।

जुलाई में अस्थायी मंत्रिमंडल में परिवर्तन होकर करेन्स्की के नेतृत्व में नई सरकार बनी थी। पहले तो वह लेनिन् से विरोध उतना सख़्त नहीं कर रही थी, पर जब उसने देखा कि लेनिन् का पलड़ा भारी है, और उसे जर्मनों का दूत कहने से भी कुछ फ़ायदा नहीं चलता; तो करेन्स्की की सरकार ने खुले तौर से देश-द्रोह का दोषारोपण किया और लेनिन् का ज़ीवन ख़तरे में हो गया। अब फिर लेनिन् को छिपकर काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

क्रान्ति-युद्ध का एक चित्र

अभी तक अस्थायी मंत्रिमंडल का काम जहाँ तक भीतर से ताल्लुक था, शान्ति के साथ चल रहा था; लेकिन इसी समय प्रधान सेनापति कोर्निलोफ़ और करेन्स्की में झगड़ा हो गया। सितम्बर के आरंभ में कोर्निलोफ़ ने कई दूसरे सेनापतियों की सहायता से करेन्स्की को अल्टीमेटम् दे दिया; और सेना लेकर पेत्रोग्राद् पर कब्ज़ा करने के लिए चल भी पड़ा। करेन्स्की

दूर दल में अब भी मेक्डानोल की भरमार है। इस लिए मजदूर दल भी जापान का मुक़ाबला करने की हिम्मत नहीं करेगा। उस वक़्त तक संसार की राजनीति में विशेष कर इटली, जर्मनी तथा जापान के पारस्परिक संबंध जो रहेंगे, उन्हीं पर जावा सुमात्रा के भाग्य का फ़ैसला होगा।

आशा तो यही है कि जिस तरह ३–४ साल तक जापान सुस्ताते हुए अपनी शक्ति का संचयन करेगा, उसी तरह इटली और जर्मनी भी अपने को और मज़बूत करेंगे। और जिस वक़्त जापान दक्षिण-पश्चिम की ओर अपनी बाहिनियों को भेजेगा, उसी वक़्त इटली-जर्मनी की सेनाएँ भी भूमध्य-सागर और अफ़्रीका की तरफ़ दौड़ेंगी। उस वक़्त तक अंगरेज़ों की राजनीतिक उलझनें इतनी बढ़ जायँगी कि हालैंडवालों की वह मदद कर सकेंगे, यह संभव नहीं। इस घटना को हम आज से ५–६ वर्ष बाद की बात मान लेते हैं। उसके २ या ३ साल बाद जापान सीधा ब्रिटिश साम्राज्य पर हमला करेगा। उसका लक्ष्य होगा आस्ट्रेलिया—जिस एक के मिल जाने से उसे अपनी बढ़ती जन-संख्या के बसाने के लिए आवश्यक उपनिवेश का सवाल हल हो जायगा। उसका सारा दुःख दरिद्र ही मिट जायगा। लेकिन आस्ट्रेलिया पर हमला करते वक़्त जापान का ध्यान हिन्दुस्तान पर भी रहेगा।

इन परिस्थितियों का हिन्दुस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसके लिए भी कुछ कह देना ज़रूरी है। भूमध्य सागर में अपने प्रभाव को कम और हिन्दुस्तान की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर जापान को डटे देख कर इंगलैंड को अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ेगा। अभी तो सात-आठ सौ मील की पश्चिमोत्तर सीमा को मज़बूत करने के लिए ही हिन्दुस्तान की आमदनी का आधा निकल जाता है। फिर जब लदाख़ से ले कर सारे उत्तरी हिमालय और आसाम और बर्मा की सीमा की रक्षा का प्रश्न आवेगा, तो हिन्दुस्तान की सारी की सारी आमदनी भी उस ख़र्च के लिए पर्याप्त न होगी। जापान में आदमी, युद्ध का सामान, मशीन तथा दूसरी चीज़ें बहुत सस्ती हैं। वह

अब मजबूर था जनता से मदद लेने के लिए। इस समय कोर्निलोफ़् से मुक़ाबिला करने के लिए सब से आगे बढ़ने वाले थे बोल्शेविक। जनता जानती थी कि वे ही उनके शुभचिन्तक वास्तविक नेता हैं। करेन्स्की ने अब अपना नया मंत्रिमंडल बनाया। इसमें भी नरम दलीय ही अधिक थे। जिनमें जेनरल वेर्ख़ोव्स्की और एडमिरल वेर्देरेब्स्की भी थे। ये दोनों सैनिक समाजवादी नहीं थे, तो भी उन्होंने अपने मंत्रिमंडल के साथियों को कहा—सेना और नहीं लड़ सकती। लड़ाई बन्द करनी चाहिए। और सेना को मैदान से लौटाना चाहिए। लेकिन मित्र-शक्तियों के पिट्ठू करेन्स्की और उसके साथियों ने मंजूर नहीं किया। अब दूसरी क्रान्ति अनिवार्य हो गई।

लेनिन् अब भी छिपे हुए काम कर रहा था। पेत्रोग्राद् के किनारे पर एक कमकर के मकान में वह पहले रहा। फिर फ़िन्लैंड की सीमा के पास एक सुनसान झोपड़े में। और अन्त में हेल्सिङ्फोर्स (फ़िन्लैंड) की म्युनिसिपलिटी के प्रधान पुलीस-अफ़सर के घर में छिपा रहा। यद्यपि करेन्स्की के आदमी उसके पीछे पड़े हुए थे, तो भी लेनिन् ने केन्द्रीय पार्टी और पेत्रोग्राद् की कमेटी से संबंध कायम रखा था, और उनके संचालन में उसका पूरा हाथ था। तो भी इस वक्त एकान्त में इस प्रकार छिपे रहने के कारण लेनिन् के पास समय था। उसका दिमाग़ चुप बैठने वाला न था। इसी वक्त उसने "राज्य और क्रान्ति" नामक अपना श्रेष्ठ ग्रन्थ लिखा। किताब को वह समाप्त नहीं कर सका था कि उसी वक्त उसे फिर मैदान में आना पड़ा। अपूर्ण ग्रन्थ के प्रथम संस्करण में उसने टिप्पणी दी थी—"किताब लिखने की जगह पर यह कहीं सुखद और लाभप्रद है कि आदमी क्रान्ति के तजर्बे से फ़ायदा उठाये।"

***   ***

लेनिन् को जैसे ही मालूम हुआ कि कोर्निलोफ़् के षड्यंत्र ने शान्ति-

पूर्वक सोवियतों के हाथ में शासन शक्ति नहीं आने दी, और उसकी जगह एक बहुत सड़ा सा गंगा-जमुनी मंत्रिमंडल अधिकारी बना; तो उसने बोल्-शेविक् केन्द्रीय समिति को लिखा—"नई सरकार से किसी तरह का सहयोग न किया जाय।" अस्थायी सरकार एक अस्थायी परिषद् बनाना चाहती थी, और उसके ज़रिए करेन्स्की की सरकार को वैध साबित करने का प्रयत्न किया जा रहा था। बोल्शेविक केन्द्रीय समिति ने लेनिन् की बात न मान कर करेन्स्की द्वारा बुलाए जनसत्ताक सम्मेलन में भाग लिया। लेकिन उनको अपनी ग़लती मालूम होते देर न लगी। सरकार ज़मींदारों की ज़मीन को अब भी उन्हें नहीं दे रही थी, जिससे जगह जगह किसानों ने बलवा कर दिया। युद्ध के मैदान से कितने ही सेना के प्रतिनिधि—जिनमें से कुछ ग़ैर समाजवादी अफ़सर भी थे—पेत्रोग्राद् आये। उन्होंने सोवियतों को साफ़ कहा—सेना अब लड़ाई लड़ने के लिए बिलकुल तैयार नहीं है। वह तुरन्त खाइयों को छोड़कर लौटने वाली है। खेत और स्वतंत्रता पा लेने मात्र से वह सन्तुष्ट नहीं होगी यदि युद्ध को बन्द कर सेना को पीछे नहीं लौटाया जाता। शासन-यंत्र टूट रहा था। रेलों का काम बन्द हो रहा था। नगरों में अनाज के बिना अकाल पड़ने का डर था। साथ ही पूँजीपतियों ने अपने कारख़ानों को बन्द कर दिया, जिसके कारण भारी संख्या में कमकर बेकार हो गये। पेत्रोग्राद् के आगे का समुद्र जर्मनों के हाथ में था और पता लगा था, कि नौसेना के बड़े बड़े अफ़सर जर्मनों के हाथ में बिक चुके हैं। इन सब ख़तरों के कारण जनता का विश्वास अब बोल्शेविकों की तरफ़ बढ़ने लगा। सितंबर के अन्त तक चुनावों से पता लग गया कि पेत्रोग्राद्, मास्को तथा कितने ही और प्रान्तीय नगरों की सोवि-यतों में बोल्शेविकों का बहुमत है। पेत्रोग्राद् सोवियत् ने त्रोत्स्की को अपना सभापति चुना। किसानों की सोवियतों ने भी बोल्शेविक न होने पर भी उन्हींका पक्ष लिया। गवर्नमेंट पार्टी के भीतर भी कितने लोग लेनिन् के साथ सहानुभूति रखने लगे। इसी समय (सितंबर) जर्मन नौसेना में

विद्रोह हुआ और इससे लोगों का और भी विश्वास बढ़ा कि क्रान्ति और भी देशों में होने जा रही है।

लेनिन् ने लगातार कई पत्र केन्द्रीय समिति को लिखे और उसे शीघ्र सशस्त्र विद्रोह करने के लिए तैयार होने को कहा। वह यह भी देख रहा था, कि जितनी ही अशांति और अव्यवस्था बढ़ेगी, उतना ही जनता के ढिलमिल यकीन आदमी निराश होने लगेंगे। उसने कहा—यदि जाँगर चलानेवालों ने अपना अधिनायकत्व न स्थापित किया तो बनिये और सेना के अफ़सर अपना अधिनायकत्व स्थापित करेंगे। सेनानायकों ने जिस ज़ोर से धावा बोला था, उससे डर होता था कि किसी समय भी पेत्रोग्राद् उनके हाथ में चला जा सकता है। यदि बनिए अपने में क्षमता न देखेंगे, तो वह जर्मनों को भी बुलाने से बाज़ नहीं आयेंगे; क्योंकि चारों ओर से उनकी सम्पत्ति पर प्रहार हो रहा था। यह और भी हानिकारक होगा, इससे करेन्स्की की पूंजीवादी सरकार को मदद मिलेगी। डर था कहीं बाल्तिक् नौसेना तथा पेत्रोग्राद् के कमकरों की संगठित सशस्त्र शक्ति नष्ट न कर दी जाय।

लेनिन् के बराबर लिखते रहने पर भी पार्टी वाले अभी हिचकिचा ही रहे थे; और १८ अक्तूबर को जाकर उन्होंने लेनिन् की बात मानी। प्रजातंत्र परिषद् से अपने सदस्यों का निकाल लेना सरकार को युद्ध के लिए निमंत्रण देना था। २३ तारीख़ को अंत में निकल आना निश्चय किया गया; और २६ तारीख़ को पार्टी ने युद्ध के पक्ष में निर्णय दिया।

यदि लेनिन् के कहे अनुसार यह निर्णय कुछ सप्ताह पहले हुआ होता, तो बहुत संभव है, क्रान्ति उतनी भयंकर न हो पाती। लेकिन इस बीच में विपक्षी भी अपने को मज़बूत कर रहे थे। यह देर करने में मुख्य कारण था त्रोत्स्की तथा उसी तरह के कुछ और पार्टी के सुशिक्षित। स्वेर्द्लोफ़् और स्तालिन् शुरू ही से लेनिन् के पक्ष में थे। मज़दूर और नौसैनिक भी हर वक्त धावा बोलने के लिए तैयार थे। त्रोत्स्की इसी लिए देर करना चाहता था कि अब वह पेत्रोग्राद् सोवियत् का सभापति था, जो कि एक

कानूनी शासन-संस्था थी। वह चाहता था, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के उद्‌घाटन के दिन ७ नवंबर (२५ अक्तूबर) को युद्ध शुरू किया जाय। उसको दिखलाना यह था; कि जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि बोल्‌शेविकों के साथ हैं। लेनिन् एक दिन की देरी को भी नहीं पसंद करता था। लेकिन त्रोत्स्की के आग्रह और कामेनेफ़् तथा जिनोवियेफ़् के विरोध के कारण ७ नवंबर से पहले काम शुरू नहीं किया जा सका। पार्टी के शिक्षित लोग सरकार की सैनिक शक्ति से डर रहे थे। उनको यह भी डर था कि जल्दी करने से मदद देनेवाली पार्टियाँ कहीं विरुद्ध न हो जायँ।

जब अन्तिम निर्णय हो गया तो युद्ध के संचालन के लिए सैनिक-कार्य-कारिणी-समिति स्थापित हुई। उन्होंने सैनिकों की छावनियों में बड़े ज़ोर से अपने उद्देश्य का प्रचार किया। पेत्रोग्राद् के कमकर कितनी ही हड़-तालों और विद्रोहों को देख चुके थे; इसलिए वह सब से ज़्यादा मज़बूती से लड़ने को तैयार थे; लेकिन अभी तक उन्होंने बंदूक उठाकर बाक़ायदा लड़ाई लड़ने का कभी अवसर नहीं पाया था। बाल्तिक् के नौसैनिक बोल्‌शेविकों के पक्ष में थे; लेकिन पेत्रोग्राद् के कमकरों की तरह अपने राजनैतिक उद्देश्य का उन्हें उतना ज्ञान नहीं था। दूसरी छावनियों के बारे में बोल्‌शेविक् इतनी ही आशा रख सकते थे, कि वह उनके विरुद्ध गवर्नमेंट का साथ न देंगे।

असल सवाल था—क्या गवर्नमेंट कसाक् और सैनिक स्कूलियों की इतनी संख्या को विरोधियों के मुक़ाबिले खड़ा कर सकती है; जिसमें कि उनका विरोध बेकार हो।

इस युद्ध में लेनिन् ने सीधा नेतृत्व किया। लेकिन जिस आसानी से और सब से पहले नगर के शक्तिकेन्द्र तार-घर, बिजली-कारख़ाना, बैंक आदि पर कब्ज़ा किया गया, उससे मालूम होता है कि लेनिन् ने १९०५ के तजर्बे से फ़ायदा उठाया था। राजनैतिक और नौसेना-संबंधी दाँव-पेंच का सारा नेतृत्व लेनिन् ने किया। इसमें सन्देह नहीं कि लेनिन् के दिमाग़ के बिना अक्तूबर की क्रान्ति सफल न होती।

७ नवंबर को लड़ाई शुरू हुई। (पुराने रूसी पंचांग के अनुसार उस दिन २५ अक्तूबर था; इसीलिए "लाल क्रान्ति" को अक्तूबर-क्रान्ति

लेनिन् फ़िन्लैंड स्टेशन (पेत्रोग्राद्) पर (पृ० १४२)

भी कहते हैं। ३ महीने के बाद १ फ़रवरी १९१८ से पुराना पंचांग छोड़कर

यूरोप में सर्वत्र प्रचलित पंचांग स्वीकार किया गया)। पेत्रोग्राद् के चौरस्ते और सड़कें युद्ध-क्षेत्र बन गईं। बाल्तिक् के नौसैनिक कहीं लड़ रहे थे और कहीं कारख़ानों के मजदूर—जिनमें औरतें भी थीं—अपने रोज़-मर्रे के कपड़ों में राइफल लेकर दुश्मनों पर धावा बोल रहे थे। और उसी दिन शाम को सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के उद्घाटन के समय नई सरकार के शासनारूढ़ होने की घोषणा की गई। कांग्रेस में बोल्शेविकों का बहुत अधिक बहुमत था। घोषणा के समय तक शरद्-प्रासाद को छोड़कर सारी राजधानी सैनिक-क्रान्तिकारिणी-समिति के हाथ में आ गई थी। करेन्स्की संयुक्त-राष्ट्र-अमेरिका के दूतावास की मोटर में बैठ कर भाग गया था। बाकी अस्थायी सरकार के मंत्रिमंडल की उस समय शरद्-प्रासाद में बैठक हो रही थी। कुछ ही घंटों में शरद्-प्रासाद उनके हाथों में था और अस्थायी सरकार के सदस्य बन्दी थे। इस विजय की घोषणा लेनिन् ने खुद कांग्रेस में आकर की। पिछली जुलाई से अब तक यह पहली बार था, जब कि लेनिन् जनता के सामने आया। किस उत्साह और आनंद के साथ लोगों ने उसका स्वागत किया, इसके कहने की अवश्यकता नहीं।

दूसरे दिन नई सरकार स्थापित हुई। लेनिन् सभापति और त्रोत्स्की वैदेशिक सचिव बना। सरकार का नाम रखा गया सोवियत्-जनता-कमीसर (सोवेत् नरोद्निक कोमिसरोफ़् या सोव्-नर्-कोम्)। अस्थायी मंत्रिमंडल के सदस्यों को मंत्री कहा जाता था, इसीलिए उससे भेद करने के लिए कमी-सर नाम रखा गया। प्रथम सोव्-नर्-कोम् के सभी सदस्य बोल्शेविक थे। कामेनोफ़्, जिनोवियेफ़्, रिकोफ़्, लूनाचार्स्की, रियाज़नोफ़् जैसे सर्व्वोच्च शिक्षित बोल्शेविकों ने लेनिन् को धमकी दी कि यदि वह दूसरी समाजवादी पार्टियों को नहीं लेंगे तो वे सहयोग न देंगे। लेकिन लेनिन् जानता था कि जिस आग को वह सुलगा रहा है, उसमें गंगा-जमुनी मंत्रिमंडल हानिकारक सिद्ध होगा। उसने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया। और कहा—जो हमारी योजना को नहीं मानते, उन्हें हम नहीं ले सकते। उसका प्रोग्राम

था—सभी शक्ति सोवियतों के हाथ में देना, लड़ाई को तुरन्त बन्द करना, रूस के भीतर बसने वाली सभी जातियों को स्वभाग्य-निर्णय का अधिकार देना। भूमि और उद्योग-धंधों को व्यक्तियों के हाथ से छीन कर राष्ट्र के हाथ में देना।

लेनिन् ने अधिकार सँभालने के बाद जो पहला काम किया, वह थी भूमि-संबंधी घोषणा। कांग्रेस की दूसरे दिन की बैठक (८ नवंबर) में प्रस्ताव पास हुआ कि सभी ग़ैर किसान ज़मींदारियाँ तथा उनके साथ के पशु और कृषि-संबंधी यंत्र आदि ज़ब्त किये जाते हैं; और उनको सँभालने का भार किसानों द्वारा निर्वाचित स्थानीय भूमि-समितियों के हाथ में दिया जाता है।

क्रान्ति-युद्ध (पृ० १५४)

इस प्रस्ताव ने किसान-सोवियतों की कांग्रेस—जो कि कुछ दिन बाद बैठी—को लेनिन् के पक्षमें कर दिया और इस प्रकार उन समाज-वादियों को निराश होना पड़ा, जो किसान सोवियत से बोल्शेविकों के विरोध की आशा रखते थे।

सोव्-नर्-कोम् ने अपने बोल्शेविक-प्रोग्राम को बड़ी ईमानदारी से पूरा किया। एक सप्ताह के भीतर ही उसने बैंक और उद्योग-धंधों को राष्ट्रीय वना दिया। काफ़ी समय तक नई सरकार ने पूँजीवादियों के साथ नर्मी का वर्ताव किया। इस नर्मी का उन्होंने फ़ायदा उठाना चाहा। कलम-जीवी लोगों जैसे—बैंक-क्लर्क, और टेलीफ़ोन की लड़कियों आदि ने नई सरकार का बाईकाट किया, लेकिन यह कलम-जीवी श्रेणी बड़ी कायर थी। देर तक विरोध के लिए टिक न सकती थी। दिल में हर पूँजीवादी को सोवियत्-शासन से घृणा थी, लेकिन सामने आने की हिम्मत न थी। विरोध करनेवाले थे सेना के बड़े बड़े अफ़सर तथा शासन-विभाग के कुछ अफ़सर। उनके साथ सैनिक स्कूल के तरुण विद्यार्थी थे, जो कि प्रायः सभी धनिकों के लड़के थे।

पेत्रोग्राद् से बाहर भी सोवियत्-शासन के फैलने में उतनी दिक्कत नहीं हुई।

* * *   * * *

सोवियत्-प्रजातंत्र का विधान उस वक्त तक नहीं बना था, और कई महीनों बाद जुलाई १९१८ में पाँचवीं सोवियत्-कांग्रेस ने विधान को तैयार किया। उसके बाद सातवीं बोल्शेविक-पार्टी-कांग्रेस हुई जिसमें लेनिन् के प्रस्तावानुसार पार्टी का नाम जनसत्ताक-समाजवादी की जगह कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी-दल) रखा गया। 'कम्युनिस्ट' नाम रखने में ख़ास भाव काम कर रहा था। यही नाम उस पार्टी का भी था, जिसे कार्ल मार्क्स ने १८४८ में स्थापित किया था। और इसी नाम को दुनिया के श्रमजीवियों को मिल कर लड़ाई करने के लिए आह्वान करते समय अपनी पुस्तिका 'कम्यु निस्ट घोषणा' में भी इस्तेमाल किया। इसके साथ यह भी ख़याल था, कि कम्युनिज़्म या साम्यवाद समाजवाद (सोशलिज़्म) से ऊपर की अवस्था है; जब कि जीवन की सामग्री की उपज और उपभोग के बारे में नियम होगा—

हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार काम लेना और हर एक को उसकी अवश्यकता के मुताबिक भोग-सामग्री देना। चूंकि लेनिन् यह आदर्श भविष्य के लिए रखना चाहता था, इस लिए भी उसने यह नाम पसन्द किया। १७९२ में फ़्रांस में भी पैरिस के कमकरों ने धनिकों का राज्य उठा कर अपना शासन स्थापित किया था और इतिहास में उसे 'पेरिस् कम्यून्' कहते हैं। यह ख़याल भी नाम वदलते वक्त लेनिन् के सामने था।

*** ***

शासन सँभालने के समय ही सोवियत् सरकार ने युद्ध बन्द करने का प्रस्ताव स्वीकृत किया था। इसलिए लेनिन् को इसे भी कार्य रूप में परिणत करना था। नई सरकार ने एक शान्ति-घोषणा प्रकाशित की; जिसमें उसने स्वीकार किया कि बिना कब्ज़ा और बिना हरजाना के लिए सुलह करना न्यायानुमोदित सुलह है। लेकिन लड़ाई में जिस तरह घोर नर-संहार हो रहा है, उसको देख कर गवर्नमेंट और भी विचारपूर्ण शर्त पर सुलह करने के लिए तैयार है। वह घोषित करती है कि ज़ारशाही के सभी गुप्त सुलह-नामों को प्रकाशित कर दिया जायगा। ३ महीने के लिए सभी युद्ध-क्षेत्रों में लड़ाई बन्द की जाय और लड़नेवाली सभी शासक और अशासक जातियों का इसके लिए सम्मेलन किया जाय। घोषणा में इंगलैंड, फ़्रांस, जर्मनी के कमकरों से ख़ास तौर से अपील की गई थी।

मित्र-शक्तियों ने घोषणा का जवाब तक न दिया और सोवियत् सरकार को न स्वीकार करने का निश्चय कर लिया। गवर्नमेंट ने प्रधान सेनापति को लड़ाई बन्द कर के सुलह की वातचीत करने के लिए आज्ञा दी। उसके इनकार करने पर मंत्रिमंडल ने एक बोल्शेविक क्रिलेंको को प्रधान सेना-पति वनाया। २७ नवम्बर को सरकार ने अपने प्रतिनिधि जर्मनों के पास भेजे। उसी दिन मित्र-शक्तियों को फिर सुलह के लिए दावत दी गई। लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। ५ दिसंवर को सोवियत् सरकार और

जर्मनी में युद्ध बन्द करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और १२ दिसंबर को ब्रेस्त-लितोव्स्क में सुलह की बात शुरू हुई।

सुलह की बात में जर्मनों की शर्तें कुछ कड़ी थीं। लेनिन् ने उसे तुरन्त मानने के लिए कहा; क्योंकि वह जानता था, देर का मतलब और भी जगहों से हाथ धोना है। त्रोत्स्की इसे पसन्द न करता था, और एक मर्तबे लेनिन् की बात को बोल्शेविक-केन्द्रीय-समिति ने भी बहुसम्मति से अस्वीकृत कर दिया। उसके पक्ष में सम्मति देनेवालों में स्वेर्द्लोफ़् और स्तालिन् भी थे। लेकिन अन्त में कमेटी ने देखा कि लेनिन् की ही बात उस समय अनुकूल है। लेनिन् ने कहा था—यदि जर्मनों की शर्त हो कि बोल्शेविक सरकार हटा दी जाय, तभी हमें लड़ने के लिए तैयार होना चाहिए। २३ फ़रवरी को केन्द्रीय समिति ने जर्मन शर्तों को मंजूर किया।

*** ***

गृह-युद्ध—(मई १९१८ से नवंबर २० तक) गृह-युद्ध क्रान्ति के ९ महीने बाद आरंभ हुआ। क्रान्ति के वक्त रूस को सब से अधिक ख़तरा था जर्मनी से। जर्मनी ने यद्यपि रूस के दक्षिणी भाग पर दोन् तक अपना अधिकार किया था, और वहाँ पर वह स्थानीय जनता, धनिकों और ज़मींदारों को सोवियत् शासन के ख़िलाफ़ उभारता भी था। लेकिन उसकी पश्चिमी सीमा पर मित्र-शक्तियों की ओर से बड़ा प्रहार हो रहा था। इसी लिए लुडन्डर्फ चाहता था कि रूस से समझौता कर लिया जाये, जिसमें अपनी सेना को पश्चिमी युद्ध-क्षेत्र पर भेजा जा सके। इसलिए उस वक्त गृह-युद्ध का ज़ोर उतना अधिक बढ़ने नहीं पाया।

सब से कठिन समय सोवियत्-शासन के लिए तब आया, जब जर्मनी परास्त हो गया। उस वक्त मित्र-शक्तियों की सेनायें जहाँ तहाँ युद्ध-क्षेत्र के काम से छुट्टी पा रही थीं। इंगलैंड, फ़्रांस, अमेरिका और जापान कोई भी सोवियत्-शक्ति को फूटी आँख से भी देखने को तैयार नहीं था। वे

आसानी से हिमालय के उत्तर अपने कितने ही सैनिक और वैमानिक अड्डे क़ायम कर लेगा। और फिर अंगरेज़ों को टेहरी से ले कर सदिया तक अर्थात् युक्त प्रान्त, बिहार, उत्तर-बंगाल और आसाम के सभी उत्तरी जिलों में हवाई जहाज़ों और फ़ौजी छावनियों का इन्तज़ाम करना पड़ेगा। इस खर्च को निकालने के लिए अंगरेज़ हिन्दुस्तान में कोई तजवीज़ ज़रूर करेंगे। लेकिन वह हिन्दुस्तान के बूते से इतनी बाहर की चीज़ होगी कि वे हिन्दुस्तान की सूखी हड्डियों से अधिक दिनों तक ख़ून निकालने का प्रयत्न न करेंगे। फिर क्या करेंगे? हिन्दुस्तान की रक्षा और ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए वह फिर हिन्दुस्तान के पूँजी-वादियों—काँग्रेस के नरमदलियों—से समझौता करना चाहेंगे। चाहेंगे कि हिन्दुस्तान को अपनी प्राकृतिक सम्पत्ति को और अधिक विकसित करने का मौक़ा दिया जाय, जिसमें वह और अधिक धन-जन को सैनिक कामों पर ख़र्च कर सके। इसके लिए अंगरेज़ दूर तक जायँगे और इस प्रकार चीन और भूमध्यसागर की ओर से अंगरेज़ों पर संकट आने पर हिन्दुस्तान को फ़ायदा ही फ़ायदा है। चीनी युद्ध के समाप्त हो जाने पर जापान का ख़तरा अभी ५–७ साल की बात है। और तब तक अपने को और हमें भी बेबसी की हालत में नहीं छोड़ सकते। आस्ट्रेलिया के बचाने में हिन्दुस्तान अंगरेज़ों की क्या मदद दे सकेगा, यह तो हिन्दुस्तानी नौ-सेना के ऊपर निर्भर है, जिसके नाम पर अभी तो बड़ा शून्य रखा हुआ है।

इतना कहने से यह स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्र की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति हमारे अधिक अनुकूल होती जा रही है। नेविल् चेम्बरलेन जैसे नेताओं को पैदा करने की हिम्मत ज़रा माता ब्रिटानिया कुछ दिन और करे, और फिर सब ओर चिर शान्ति का आयोजन होने लगेगा। उन भारतीय सम्पादकों और पत्रकारों पर झुंझलाहट आती है जो इंगलैंड के पद-पद पर दबने, युद्ध से कावा काटने, पर बरस पड़ते हैं। क्या उनको इतनी भी बुद्धि नहीं है कि इंगलैंड का दबना और कावा काटना ही हिन्दुस्तान के

समझते थे, कि सोवियत्-शक्ति के रूप में सारे पूँजीवादी संसार का एक बड़ा दुश्मन पैदा हो गया। यदि रूस में इस शासन ने सफलता पाई, तो सारी दुनिया के जाँगर चलानेवालों की हिम्मत बढ़ जायगी।

सोवियत्-शक्ति ज़ारशाही के सभी हिस्सों में करीब करीब फैल गई थी। लियुआनिया, लत्विया, एस्थोनिया और फ़िन्लैंड—जो पहले ज़ार-शाही साम्राज्य के एक भाग थे—की स्वतंत्रता को सोवियत् सरकार ने स्वीकार कर लिया। पोलैंड का भी रूस के मातहत वाला हिस्सा अलग हो गया। काकेशस् और मध्य-एशिया में भी सोवियत्-शासन की बात शुरू हो चुकी थी। इसी समय २६ मई १९१८ को गृह-युद्ध शुरू हुआ। ज़ेको-स्लावक सिपाही—जो व्लादीवोस्तोक् से चलनेवाले थे, और सिबेरिया की रेलवे पर पेंज़ा से इर्कुत्स्क तक फैले थे—ने सोवियत् के खिलाफ़ विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह मित्र-शक्तियों की शह से हुआ था। ज़ेक सैनिकों ने सिबेरिया में रेल के किनारे की सभी जगहों से सोवियत्-शासन को उठा दिया। पुराने ज़मींदारों और धनिकों को पूँजीवादी मित्र-शक्तियों ने दिल खोल कर धन और गोला-बारूद से मदद देना शुरू किया। नवंबर १९१८—जब कि जर्मनी पर मित्र-शक्तियों ने विजय पाई—से सोवियत् शासन के ऊपर और काले बादल मँडराने लगे। अब सवाल था, एक तरफ़ श्रमजीवियों के अधिनायकत्व का और दूसरी तरफ़ पूँजीवादियों के अधि-नायकत्व का।

मई १९१८ को मालूम होने लगा कि शहर की जनता को भूखा मरना पड़ेगा। यातायात के रास्ते बंद हो गये थे। रूबल का दाम गिर गया था। किसान अपने अनाज को देना नहीं चाहते थे। इस पर लेनिन् ने बड़े मौक़े पर पथप्रदर्शन किया। उसने कहा—"अनाज से फ़ायदा उठानेवालों के खिलाफ़ जबर्दस्त जहाद बोलनी चाहिए। अनाज के व्यक्तिगत व्यापार को बिल्कुल मना कर देना चाहिए। ख़र्च से अधिक अनाज को निश्चित दर पर गवर्नमेंट को देना चाहिए। अतिरिक्त अनाज को छिपाना दंडनीय

समझना चाहिए। इस अतिरिक्त अनाज को रजिस्टर में दर्ज करना चाहिए और सभी नागरिकों को रोटी बाँटने में न्याय करना चाहिए।"

यह नीति गृह-युद्ध के अन्त तक कायम रही; और अगर इस नीति को न स्थापित किया गया होता तो भूख के मारे जो अव्यवस्था होती, उसके कारण लाल-सेना लड़ नहीं सकती थी। लेकिन साथ ही इस नीति ने वोल्गा और सिबेरिया के बहुत से किसानों को सोवियत् के ख़िलाफ़ भड़का भी दिया। राजी खुशी से वह अपने अनाज को सरकार के हाथ में नहीं देना चाहते थे।

मित्र-शक्तियों ने ज़ेकोस्लावक-सेना (महायुद्ध के पूर्व ज़ेकोस्लावकिया का अधिकांश भाग आस्ट्रिया के अधिकार में था। लेकिन स्लाव ज़ाति के होने से वह रूसियों के अधिक नज़दीक थे। रूस ने ज़ेकोस्लावकिया को आस्ट्रिया के चंगुल से छुड़ाने का आश्वासन दे अपने साथ कर लिया। इन्हीं राष्ट्रीय जेकों की सेना रूस के मित्र के तौर पर सिबेरिया में पहुँची थी) को सोवियत् के ख़िलाफ़ खड़ा किया। अंग्रेज़ों ने आर्खेङ्गल् (उत्तरी रूस) में अपनी सेनाएँ उतारीं। बाकू के तेलों पर नज़र रखते हुए उन्होंने काकेशस् में षड्यंत्र किया।

राजधानी के भीतर भी असन्तुष्ट होकर कुछ क्रान्ति-विरोधियों ने गड़वड़ मचानी शुरू की। बोल्शेविक नेताओं के मारने का षड्यंत्र रचा जाने लगा। पेत्रोग्राद् की खुफ़िया पुलीस (चेका) का प्रधान उरित्स्की ३० जून को मार डाला गया; और खुद लेनिन् पर एक स्त्री ने पिस्तौल से हमला किया। उसकी एक गोली लेनिन् के फेफड़े में लगी और दूसरी गर्दन से हड्डी को बचाते निकल गई। लेनिन् कमकरों की सभा में व्याख्यान दे कर अपनी मोटर पर चढ़ रहा था, उसी वक्त गोली चलाई गई। लेनिन् ने उस वक्त हद से ज़्यादा हिम्मत दिखलाई। घर की सीढ़ी पर उठा कर ले जाने को स्वीकार नहीं किया और खुद अपने पैरों से चल कर गया। लेकिन घाव साधारण न था। कई दिनों तक वह जीवन और मृत्यु के बीच लटकता रहा। लेकिन अन्त में वह खतरे से बाहर हुआ। तो भी उसका

स्वास्थ्य फिर पहले जैसा नहीं हो सका। जिस वक्त जनता को इसकी ख़बर लगी, तो उनके शोक और क्रोध का ठिकाना नहीं था। इस १३ अगस्त की घटना ने दिखला दिया कि रूस की जनता में लेनिन् के लिए क्या स्थान है।

अभी लेनिन् की अवस्था सुधरी नहीं थी कि मित्र-शक्तियों की मदद से सफ़ेद सेना (सोवियत् विरोधियों की सेना) ने ज़ोर पकड़ा। सोवियत् शक्ति के लिए उतना खतरनाक वक्त कभी नहीं आया था जैसा कि १९१९ के जुलाई-अगस्त में था। लेकिन इसके साथ साथ राजनैतिक दृष्टि से बोल्शेविकों का पक्ष भीतर की तरफ़ से मज़बूत भी हो गया। लोगों को साफ़ मालूम होने लगा, कि एक तरफ़ रूस की स्वतंत्रता का प्रश्न है और दूसरी तरफ़ विदेशी पूँजीवाद की अधीनता के साथ साथ रूस की स्वतंत्रता का अन्त। इस ख़्याल ने बहुतों को सोवियत् की तरफ़ खींच लिया। सिबेरिया से सफ़ेद सेनापतियों का निकालना एक तरह से वहाँ ही के स्वतंत्रता-प्रेमी निवासियों का काम था।

लेनिन् को एक तरफ़ भीतर के इस गृह-युद्ध में विजय पाने की चिन्ता थी और दूसरी तरफ़ वैदेशिक नीति की ज़िम्मेवारी भी थी। गृह-युद्ध दोनों तरफ़ से बढ़ता ही गया। एक वार तो देनिकिन् की सेना काकेशस् की तरफ़ से बढ़ती हुई, मास्को के १०० मील पास तक पहुँच गई थी। उधर सिबेरिया की तरफ़ से कोल्चक् को भी उसी तरह सफलता मिल रही थी। बोल्शेविकों के लिए यही असली परीक्षा का समय था। लेकिन जैसे जैसे समय बीतता जाता था, तजर्बा उन्हें और भी दृढ़ और सचेत बनाता जाता था। इंगलैंड, फ़्रांस के मज़दूरों को यह मालूम होते देर नहीं लगी कि उनकी गवर्नमेंट संसार के एक मात्र मज़दूर-राज्य का गला घोंटना चाहती है। इस पर मज़दूरों में उत्तेजना फैली। कर्जन जैसे साम्राज्यवादियों ने चाहा था कि जर्मनी के ख़िलाफ़ लगी शक्ति को सोवियत् के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया जाय; लेकिन उस वक्त इंगलैंड के मज़दूरों ने सोवियत् के साथ ऐसी सहानुभूति दिखलाई कि ब्रिटिश सरकार को और आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई।

लड़ाई चली ही जा रही थी। उस वक्त अमेरिका ने सोवियत् सरकार और सफ़ेद सेनापतियों के सामने प्रस्ताव रखा कि जो इलाक़ा जिसके पास है, वह उसके पास ही रहे। और वहीं की जनता के ऊपर छोड़ दिया जाय कि वह लाल शासन को पसन्द करती है या सफ़ेद। लेनिन् इसके लिए तैयार था, क्योंकि वह जानता था कि जनता को अधिक दिनों तक सफ़ेद ज़मींदार भ्रम में नहीं डाल सकते। लेकिन सफ़ेद सेनापतियों ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया। सुदूर-पूर्व-प्रजातंत्र में जापान के ज़ोर देने के कारण यह समझौता मान लिया गया था, लेकिन वही बात हुई जिसकी लेनिन् आशा रखता था। कुछ ही दिनों में जनता ने सफ़ेद सेनापतियों के राजसी ठाट और हकूमत से तंग आकर उन्हें निकाल बाहर किया।

मार्च १९१९ में लेनिन् के परामर्शानुसार साम्यवादियों का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसी वक्त तृतीय कम्युनिस्ट-इन्टर्नेश्नल् (सारे संसार के साम्यवादियों की सभा) की स्थापना हुई।

लेनिन् ने रूसी साम्राज्य की भीतरी जातियों को स्वभाग्य-निर्णय का अधिकार जो दिया, उससे उस वक्त त्रोत्स्की जैसे कितने ही असन्तुष्ट हुए थे। लेकिन तजर्बे ने बतलाया कि लेनिन् ठीक रास्ते पर था। इस से दो बातों का फ़ायदा हुआ—एक सोवियत् को केन्द्रीय शक्ति की शकल में रूसी साम्राज्यवाद को पुनर्जागृत होने का मौक़ा नहीं मिला और दूसरे उन जातियों के पूँजीवादियों को जातीयता के नाम पर सोवियत्-शक्ति के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काने का मौक़ा नहीं मिला। छिपे हुए रूसी साम्राज्य-वाद के लिए जो थोड़ी बहुत गुंजायश रह भी गई थी, वह दिसंबर १९२२ में ख़तम हो गई; जब कि रूसी सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक में से रूस का नाम ही हटा दिया गया और उसकी जगह संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक नाम रखा गया।

मार्च १९२० में मालूम हो रहा था कि अब गृह-युद्ध ख़तम होने को है। कोल्चक् और देनिकिन् हार चुके थे और इंगलैंड अपने हाथ को खींच रहा

था। लेकिन इसी समय फ़्रांस आगे बढ़ कर रेंगल् की मदद करने लगा। रेंगल् ने देनिकिन् की बची खुची सेना को क्रिमिया में फिर से संगठित किया। फ़्रांस की शह पाकर पोलैंड के नये राष्ट्र ने रूस पर हमला कर दिया। रेंगल् दक्षिण से उत्तर को बढ़ रहा था और मई के अन्त में पिल्सुइस्की (पोलैंड) ने उक्रइन् पर चढ़ाई शुरू करके कियेफ़् पर कब्ज़ा कर लिया। लेकिन सोवियत् की शक्ति अब बहुत मज़बूत हो चुकी थी। ३ वर्ष के युद्ध ने लाल सेना को ख़ूब संगठित और सुदृढ़ बना दिया था। उसने पोलिश् सेना को उक्रइन से ही नहीं भगाया, बल्कि पोलैंड के भीतर भी घुस गई। और चाहती थी, वर्सावा (पोलैंड की राजधानी वार्सा) पर अधिकार कर के सारे पोलैंड को सोवियत्-प्रजातंत्र का रूप दे दे। लेनिन् ने इसे पसन्द नहीं किया, लेकिन दूसरे क्रान्तिकारियों ने अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति के लिए इसमें अच्छा मौक़ा देखा। इसमें शक नहीं कि यदि लाल सेना ने वर्सावा दखल कर लिया होता और इस प्रकार वह पोलैंड में साम्यवादी सरकार स्थापित करने में सफल हुई होती तो इसका असर पड़ोसी जर्मनी—जहाँ पर युद्ध के बाद के कई वर्षों तक समाजवाद की शक्ति बढ़ी हुई थी—पर ही नहीं पड़ता बल्कि सारे संसार पर पड़ता। लेकिन पोलैंड वाले बहुत वर्षों से रूस की पराधीनता का मज़ा चख चुके थे। बहुत दिनों के बाद आस्ट्रिया, जर्मनी और रूस के बीच टुकड़े टुकड़े बँटा हुआ पोलैंड एक राज्य बन सका था। रूस के हमले से उसे फिर ख़तरा हो गया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के नाम पर सारी पोलिश् जनता—कमकर भी—एक हो गई और अगस्त १६२० में सोवियत् सेना को वर्सावा में हार खानी पड़ी।

लेनिन् ने यहाँ भी कुछ हद तक दब कर सुलह कर ली। अब लाल-सेना रैंगल् के मुक़ाबले के लिए छुट्टी पा गई थी और नवंबर १६२० में रैंगल् के पतन के साथ गृह-युद्ध का अन्त हुआ।

* * *   * * *

नवंबर १९१७ से नवंबर १९२० तक साम्यवादी सरकार को भयंकर युद्धों से गुज़रना पड़ा और इसके लिए युद्ध के समय के साम्यवाद की ख़ास नीति निर्द्धारित करनी पड़ी थी। गृह-युद्ध के समाप्त हो जाने पर अब नष्ट-प्राय उद्योग और त्यक्त-प्राय रेलों के पुनर्निर्माण का ही सवाल नहीं था। बल्कि प्रश्न था, कैसे किसी भी उपाय से लोगों को कुछ सुस्ताने का मौक़ा दिया जाय। मार्च १९२१ में दशम पार्टी कांग्रेस में लेनिन् ने नई-आर्थिक-नीति उसके सामने रखा। इसके ज़रिए वह चाहता था कि किसानों के विरोध को कम कर के सारी शक्ति औद्योगिक पुनर्निर्माण में लगाई जाय। इस नीति के अनुसार किसानों के लिए लगान निश्चित कर दी गई और उन्हें अतिरिक्त अनाज को जहाँ चाहे वहाँ बेच सकने का अधिकार मिला। इससे वैयक्तिक लाभ को उत्तेजना मिली। व्यापार व्यक्तियों के हाथ में जाने लगा और घर और छोटे छोटे कारख़ाने तक भी वैयक्तिक सम्पत्ति होने लगे।

नई आर्थिक नीति से लोगों को उतना लाभ नहीं हुआ, क्योंकि उसी साल फसल के ख़राब होने से अकाल पड़ गया।

मार्च १९२२ की अंतिम पार्टी कांग्रेस थी; जिसमें लेनिन् ने भाग लिया। २७ मार्च का उसका व्याख्यान ख़ास महत्त्व रखता है। साम्यवादियों को कार-बार चलाने का ढंग पूँजीवादियों से सीखना चाहिए; इसके बारे में उसने कहा—"हमारी तरफ़ से कहा जाता है,—पूँजीवादी काम में लगा है। उसका काम लुटेरे की तरह है। वह नफ़ा चाहता है। चाहे जो हो, वह अपने काम को जानता है। लेकिन तुम—तुम एक नये तरीके के लिए कोशिश कर रहे हो। तुम्हें नफ़ा नहीं करना है। साम्यवाद के सिद्धान्त, उच्च आदर्श, तुम्हारे सामने हैं। तुम पवित्र आदमी हो, तुम धर्मात्मा पुरुष हो, तुम स्वर्ग में जाकर रहने लायक़ आदमी हो। लेकिन क्या तुम्हें अपने काम का ढंग मालूम है? हमें झूठा अभिमान नहीं होना चाहिए।.....हमें यह सीधी सादी बात जाननी चाहिए कि एक नये और असाधारणतया

मुश्किल काम को नये तौर पर फिर से सीखना है। अगर एक आरंभ तुम्हें ग़लत रास्ते पर ले जाता है, तो फिर से आरंभ करो। उसी काम को दोबारा दस बार करो, लेकिन लक्ष्य पर तुम्हें पहुँचना चाहिए। आत्म-श्लाघी मत बनो। साम्यवादी होने का अभिमान मत करो।........."

साम्यवादी पार्टी के बारे में कहते हुए लेनिन् ने कहा—"महान् जन-समुदाय में समुद्र में बूँद की तरह हम हैं। हम तभी शासन कर सकते हैं जब कि जनता के मनोभाव को हम अपने काम में प्रकट करें।......आज तक जितने भी क्रान्तिकारी दलों ने हार खाई, उसका कारण था कि उन्हें बड़ा अभिमान हो गया। वह देख नहीं सकते थे कि कहाँ से उनकी शक्ति है; और वे अपनी कमज़ोरियों को कहने से डरते थे। हम लोगों का पतन नहीं होगा, क्योंकि हम अपनी कमजोरियों को कहने से डरते नहीं। अपनी कमज़ोरियों को कैसे हटाया जाय, इसे हम सीखेंगे।"

*** ***

१९२२ के आरंभ में लेनिन् का स्वास्थ्य फिर ख़राब हो गया। इतना ख़राब हुआ कि उसे काम छोड़ देना पड़ा। मई में लक़वा हो गया और दाहिना हाथ और पैर उठ नहीं सकता था। हालत बहुत ख़तरनाक समझी जाती थी। जुलाई में स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने लगा। इस वक्त डाक्टरों ने उसे काम करने से बिलकुल मना कर दिया था। तो भी वह कुछ कर ही लेता था। अक़्तूबर में स्वास्थ्य इतना अच्छा हो गया था कि फिर से काम पर आने की बात प्रकाशित हो गई थी। लेकिन दिसंबर में हालत फिर ख़राब हो गई। अब शासन का काम उसे अपने हाथ से छोड़ देना पड़ा। इस वक्त भी लेनिन् ने कुछ लेख लिखे। उसका सब से अन्तिम लेख था—"सहयोग के ऊपर"। इसमें लेनिन् ने किसान-समस्या पर प्रकाश डाला है, जिसमें आजकल के **कोल्ख़ोज़ों** का पूर्वाभास मिलता है।

मार्च १९२३ में दोबारा लक़वा मारा और अब उसे सब काम छोड़

देना पड़ा। मास्को के पास गोर्की के गाँव वाले घर में ले जाया गया, जहाँ वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ियों तक रहा। १६२३ के अन्तिम महीने और जनवरी के पहले सप्ताह कुछ आशा होने लगी थी लेकिन वह दिखलावा था। २१ जनवरी १६२४ को फिर एक-ब-एक बीमारी बढ़ गई। और उसी दिन शाम को ६ बज कर ५० मिनट पर लेनिन् का देहान्त हो गया।

* * * * * *

२८ जनवरी १६२४ को लेनिन् की मृत्यु के ६ दिन बाद **स्तालिन्** ने **क्रेम्लिन्** सैनिक विद्यार्थियों के सामने लेनिन् के ऊपर एक व्याख्यान दिया था—

शाहबाज—पहले पहल मेरा परिचय लेनिन् से १६०३ में हुआ। लेकिन यह प्रत्यक्ष परिचय नहीं था। यह परिचय पत्र-व्यवहार द्वारा स्थापित हुआ था। इसने मेरे दिल पर ऐसी अमिट छाप छोड़ी जो कि कभी मेरे दिल से नहीं हटी........। उस समय मैं साइबेरिया में निर्वासित था। १८६० के अन्त से ही मुझे लेनिन् के कामों का पता था। लेकिन १६०१ में **'इस्क्रा'** के प्रकाशन के बाद ख़ास तौर से मुझे विश्वास हो गया कि लेनिन् साधारण आदमी नहीं है। मैं उसे पार्टी का एक नेता मात्र नहीं समझता था, बल्कि उसका निर्माता समझता था.......। जब कभी भी मैं अपनी पार्टी के और नेताओं से लेनिन् की तुलना करता था, तो मुझे मालूम पड़ता था कि **प्लेख़ानोफ़्, मल्तोफ़्, अख़ेलरोद्** और दूसरे लेनिन् के कन्धे ही तक पहुँचते थे। वह नेताओं में से एक नहीं था, बल्कि बहुत उच्च श्रेणी का नेता था। वह पहाड़ी शाहबाज़ था, जो लड़ाई से ज़रा भी डरता नहीं था। उसने साहस के साथ पार्टी को रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलन के अज्ञात पथ पर चलाया। उस समय मेरे दिल पर लेनिन् का ऐसा प्रभाव पड़ा था कि मैंने अपना भाव अपने एक घनिष्ट मित्र—जो कि उस समय लेनिन्

की तरह विदेश में रह रहे थे——को लिखा; और उनसे अपनी राय देने के लिए पूछा। थोड़े समय बाद (१९०३ के अन्त में)——जब कि मैं निर्वासित कर के साइबेरिया भेज दिया गया था——मेरे पास लेनिन् का एक बहुत गंभीर पत्र आया। मालूम हुआ, मित्र ने मेरे पत्र को लेनिन् के पास भेज दिया..। मुझे बड़ा अफ़सोस आता है कि मैंने लेनिन् के पत्रों को जला दिया, लेकिन उस समय हमारे जैसे छिपे क्रान्तिकारियों के लिए ऐसा करना ज़रूरी था। उस समय से मेरा लेनिन् के साथ परिचय आरंभ हुआ।

सादगी——पहले पहल मुझे लेनिन् का दर्शन दिसंबर १९०५ में तमेफोर्स (फ़िनलैंड) में बोल्शेविकों के एक सम्मेलन में हुआ। मैं आशा करता था, वहाँ अपनी पार्टी के पहाड़ी शाहबाज को देखने के लिए। महान् पुरुष——राजनीति ही में महान् नहीं, बल्कि शरीर में भी। क्योंकि मैंने लेनिन् का एक अलग ही चित्र कल्पित कर रखा था। वह बड़ा कद्दावर होगा, मोटा-ताजा, और रोबदार होगा। लेकिन मुझे बड़ी निराशा हुई, जब कि उसे एक ऐसा साधारण आदमी देखा; जो औसत ऊँचाई से भी छोटा था और किसी प्रकार भी, हाँ सचमुच किसी प्रकार भी, साधारण आदमी से उससे भेद नहीं किया जा सकता।........ बड़े आदमियों के लिए यह मानी हुई बात है, कि बैठक में वे पीछे आयें, जिसमें कि पहले से जमा हुए लोग बड़ी उत्सुकता के साथ टक लगाये उनके आगमन की प्रतीक्षा करें और बड़े आदमी के आगमन के ज़रा ही पहले एकत्र जनता कह उठे——'चु..... चुप .... वह आ रहा है। मैं समझ रहा था, कि यह पद्धति बहुत आवश्यक है, क्योंकि इससे रोब पड़ता है और गौरव बढ़ता है। लेकिन मेरी निराशा का ठिकाना नहीं था जब मैंने सुना, कि लेनिन् प्रतिनिधियों के आने से भी पहले पहुँचा हुआ है। और एक कोने में बैठ कर मामूली बातचीत कर रहा है, और कान्फ़्रेंस के मामूली प्रतिनिधियों के साथ। मैं इसे तुमसे छिपाना नहीं चाहता कि उस समय एक आवश्यक नियम का इस प्रकार उल्लंघन मैं ठीक नहीं मानता था।

पीछे मेरे तजर्बे ने यह बतलाया कि लेनिन् की यह सादगी और विनम्रता, यह अपने को ज़ाहिर न करने का प्रयत्न या हर समय अपने को प्रधान करके न दिखलाना, अपने ऊँचे पद का प्रदर्शन न करना—यह गुण लेनिन् के सब से मज़बूत गुणों में है; जो कि नई जनता के नये लीडर, सीधी सादी और मामूली जनता के नायक के लिए .... बड़ी ताक़त की चीज़ है।

तर्क-शक्ति—उस सम्मेलन में तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं और किसानों की समस्या पर जो व्याख्यान लेनिन् ने दिये थे वे वहुत गंभीर थे। दुर्भाग्य से उनकी रिपोर्ट सुरक्षित नहीं रखी गई। वह इतने जोशीले और अन्तःप्रेरणादायक व्याख्यान थे, जिन्होंने सारे सम्मेलन में जोश और उत्साह भर दिया। साधारण पार्लियामेंटरी वक्ताओं से लेनिन् के व्याख्यानों में कितनी ही विशेषताएँ थीं। उनमें असाधारण आत्मविश्वास की मात्रा होती थी। युक्ति देने में सादगी, और स्पष्टता थी। छोटे छोटे वाक्य सभी के समझने लायक होते थे। अभिनय का अभाव था। गर्जन-तर्जन का नाम न था। ऊँचे ऊँचे वाक्यों और शब्दों के मायाजाल का भी पता न था।

लेकिन लेनिन् के व्याख्यानों की ये विशेषताएँ नहीं थीं, जिन्होंने कि उस समय मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। मैं आकर्षित हुआ था, लेनिन् के व्याख्यानों की अकाट्य युक्तियों के कारण। वे थोड़ी रूखी ज़रूर थीं लेक़िन श्रोतृ-मंडली पर पूर्णतया प्रभाव डालती थीं; और धीरे धीरे उसमें विद्युत्-संचार करके सारी जनता को अपने हाथ में कर लेती थीं।.........

मैं समझता हूँ कि लेनिन् के व्याख्यानों की यह विशेषता उसकी वक्तृत्वकला का सब से मजबूत अंश है।

चिड़चिड़ापन नहीं—दूसरी वार लेनिन् को मैंने पार्टी के स्टाक्होल्म कांग्रेस में १९०६ में देखा। सब लोग जानते हैं कि इस कांग्रेस में बोल्शेविक अल्पमत में थे और उनकी हार हुई थी। यह पहली वार था, जब कि मैंने लेनिन् को पराजित के रूप में देखा। लेनिन् उन नेताओं की तरह नहीं था,

लिए आशा का सन्देश लाता है ? शायद यह काले साहब लोग अपने कंधे पर इंगलैंड की राष्ट्रीय ज़िम्मेवारी को भी बहन करना अपना धर्म समझते हैं। नहीं तो अंगरेज़ों की बिपता से उन्हें क्या मतलब। हिन्दुस्तान की बिपता में जब वे हमारे काम नहीं आये, तो उनकी बिपता में हम आँसू बहाने क्यों जायँ ?

*** ***

सोवियत् के अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का वर्णन करते हुए हम प्रकरणान्तर में चले गये, तो भी हमारे विषय का उससे सम्बन्ध है। हमने इसके द्वारा सोवियत् के पूर्वी भाग की राजनीति पर कुछ प्रकाश डाला। सोवियत् की पश्चिमी सीमा पर भी पूर्व की अपेक्षा कम ख़तरा नहीं है। रूमानिया, पोलैंड, लिथुवानिया, लत्विया, इस्तोनिया और फिन्लैंड सोवियत् के बाहर सीमान्त राज्य हैं। पोलैंड इनमें सब से अधिक शक्तिशाली है और उसपर हिटलर का वरद हस्त भी है। रूमानिया में अभी कुछ दिनों तक गोगा की फ़ासिस्ट सरकार स्थापित हो गई थी। लेकिन सोवियत् की धमकी के कारण रूमानिया के राजा को अक़ल आ गई और गोगा को हटना पड़ा। लेकिन इटली और जर्मनी का षड्यंत्र रूमानिया में बराबर ज़ारी है। लिथुवानिया को युद्ध-घोषणा दे कर अभी हाल ही में पोलैंड ने घुटना टेकने के लिए मजबूर किया है। फ़िन्लैंड, इस्तोनिया, लत्विया, दूसरे बाल्तिक तटवर्ती राज्यों के पूँजीवादियों का भी ध्यान बर्लिन की ओर आकर्षित हुआ है और वहाँ बराबर जर्मन षड्यंत्र के जाल बिछाये जा रहे हैं।

इतना कहने से स्पष्ट मालूम होगा कि सोवियत् की पश्चिमी सीमा पर जितना उसे ख़तरा है, उतना पूर्वी सीमा पर भी नहीं है। जर्मनी अगर हमला नहीं कर रहा है, और कुछ दिन और रुका रहेगा तो सिर्फ़ इसीलिए कि वह समझता है कि सोवियत् के पास अस्त्र-शस्त्र की अपार राशि है। उसकी सेना सुदृढ़ और सुरक्षित है। किसी फ़ासिस्ट देश को सोवियत्

जो कि हार जाने पर चिड़चिड़ा जाते हैं और ज़िद पर उतर आते हैं। इस के विरुद्ध हार ने लेनिन् के भीतर और साहस भर दिया था। उसने उसके अनुयायियों को नई लड़ाइयों और भविष्य की विजय के लिए उत्साहित किया।.................

गर्व नहीं—उसके बाद मैंने लेनिन् को लंदन में १६०७ में देखा। बोल्शेविक यहाँ विजयी हुए थे। मैंने वहाँ लेनिन् को पहले पहल विजेता के रूप में देखा। आमतौर से 'जय' नेताओं के दिमाग़ को फेर देती है। उनमें गर्व और ग़रूर भर देती है। प्रायः ऐसे समय में वह अपने जय का प्रदर्शन करते हैं.........। लेकिन लेनिन् इस तरह के नेताओं में से नहीं था। इसके विरुद्ध बल्कि ऐसी ही विजय के बाद लेनिन् और भी जागरूक, और भी सजग हो जाता था। मुझे याद है, लेनिन् किस तरह दिल से प्रतिनिधियों को समझा रहा था—'पहली बात है कि विजय से फूल मत जाओ। गर्व मत करो। दूसरी बात है विजय को स्थायी बनाओ। तीसरी बात है, विरोधियों को पीस दो क्योंकि, वह सिर्फ़ पराजित हुए हैं, वह पूरी तरह पिसे नहीं हैं।'.........'जय का गर्व न करना लेनिन् के स्वभाव की यह ख़ास विशेषता थी; जो कि ध्यान-पूर्वक शत्रुओं की शक्तियों को तौलने और पार्टी पर अचानक प्रहार होने से बचाने में लेनिन् की सहायता करती थी।

सिद्धान्तवादी—पार्टी के नेता को अपनी पार्टी के बहुमत की राय को बहुमान्य समझना चाहिए। बहुमत एक ऐसी शक्ति है, जिसका ध्यान नेता को हमेशा सामने रखना चाहिए। लेनिन् इस बात को किसी भी दूसरे पार्टी-नेता से कम नहीं समझता था। लेकिन लेनिन् ने कभी भी अपने को बहुमत का दास बनाना पसन्द नहीं किया। विशेषकर जब कि बहुमत के लिए किसी सिद्धान्त का आधार नहीं। हमारी पार्टी के इतिहास में ऐसे समय आये हैं, जब कि बहुमत या पार्टी का तत्कालीन लाभ जाँगर चलाने वालों के मूलहित के विरुद्ध हुआ। ऐसे अवसरों पर लेनिन् बिना हिच-

किचाये दृढ़ता-पूर्वक पार्टी के बहुमत के खिलाफ़ सिद्धान्त की ओर रहा। ऐसी अवस्थाओं में अकेला होने का भी उसने डर नहीं किया। वह समझता था, जैसा कि वह कहा करता था—'सिद्धान्त पर अवलंबित नीति ही ठीक नीति है'। . . . .

जनता में विश्वास—पार्टियों के नेता और सिद्धान्तवादी, जो जातियों का इतिहास जानते हैं, जिन्होंने आदि से अंत तक क्रान्तियों का इतिहास पढ़ा है; वे कभी कभी एक बुरी बीमारी से पीड़ित होते हैं। यह बीमारी है, जनता से भय खाना। जनता की रचनात्मक योग्यता में विश्वास न करना। कभी कभी इसी कारण से लीडर लोग जनता—जो यद्यपि क्रान्तियों के इतिहास की जानकारी में उतनी दक्ष नहीं है, लेकिन पुराने को तोड़ना और नये का बनाना उसीके हाथ में है—के सामने बड़प्पन का ढोंग दिखलाते हैं। . . . . । जनता बहुत अधिक तोड़ न डाले। नर्स (दाई) की तरह वह चाहते हैं, कि जनता को किताबों से सिखलाये, लेकिन वे खुद जनता से सीखना नहीं चाहते। यह है इस प्रकार के बड़प्पन के भाव को दिखलाने का कारण।

लेनिन् ऐसे नेताओं से बिलकुल उलटी तबीयत का था। मैं किसी भी ऐसे दूसरे क्रान्तिकारी को नहीं जानता, जिसे जाँगर चलानेवालों की रचनात्मक शक्ति और अपनी श्रेणी की अन्तर्दृष्टि की क्रान्तिकारी क्षमता पर इतना विश्वास हो। . . . . मुझे याद है, लेनिन् की एक बात। एक साथी ने कहा—"क्रान्ति के बाद साधारण व्यवस्था स्थापित हो जानी चाहिए।" लेनिन् ने व्यंग्य के साथ कहा—"यह बड़े अफ़सोस की बात है, कि वे लोग जो क्रान्तिकारी बनना चाहते हैं, इस बात को भूल जाते हैं कि इतिहास में अत्यन्त साधारण प्रकार की व्यवस्था है, क्रान्तिकारी व्यवस्था।" इसीलिए लेनिन् उन लोगों को घृणा की दृष्टि से देखता था, जो कि हलके दिल से जनता को नीची निगाह से देखते हैं, और उन्हें किताबों से सिखलाना चाहते हैं। इसीलिए लेनिन् बराबर कहता था कि हमें जनता से

सीखना चाहिए उसकी क्रियाओं को समझना चाहिए और जनता की जद्दो-जहद की क्रियात्मकता का ध्यान से अध्ययन करना चाहिए.........

क्रान्ति का ऋषि—लेनिन् क्रान्ति के लिए पैदा हुआ था। सचमुच वह क्रान्तिकारी विप्लव का ऋषि था। क्रान्तिकला का महाकलाकार था। वह अपने को उतना स्वतंत्र और प्रसन्न कभी नहीं पाता था; जितना कि क्रान्तिकारी विभ्राट् के युग में। ऐसा कहने से यह न समझें कि लेनिन् हर प्रकार के क्रान्तिकारी विभ्राट् को पसन्द करता था, या वह हर समय और हर परिस्थिति में क्रान्तिकारी विप्लव का अनुमोदक था। बिलकुल नहीं। मेरे कहने का मतलब सिर्फ़ इतना ही है; कि लेनिन् की गंभीर अन्तर्दृष्टि उतनी पूर्णता और स्पष्टता के साथ कभी नहीं चलती थी, जितनी कि क्रान्तिकारी विप्लव के समय। क्रान्तिकारी द्वन्द्वों के दिनों में वह भविष्यद्वक्ता की तरह मालूम होता था। वह श्रेणियों की चाल को पहले से देखता था और यह भी कि क्रान्ति का टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता किधर से जायगा। वह उन्हें अपने हाथ की रेखा की तरह स्पष्ट देखता था। हमारी पार्टी में कहा जाता था कि '**इलिच्** क्रान्ति की लहरों में वैसे ही तैर सकता है, जैसे कि मछली पानी में'। यह कहना निरर्थक न था।.......... मुझे दो घटनाएँ ख़ास तौर से याद हैं, जो लेनिन् के इन विशेष गुणों को प्रकट करती हैं।

पहली घटना—अक्तूबर के विप्लव के पहले के समय में, जब कि लाखों कमकर, किसान और सिपाही युद्ध-क्षेत्र और घरों की आफ़तों के मारे शान्ति और स्वतंत्रता की माँग करते थे; जब कि सेनावादी और पूँजीवादी सैनिक आख़िरी दम तक युद्ध के उद्देश्य से अधिनायकत्व की तैयारी कर रहे थे; जब कि सभी तथाकथित 'सार्वजनिक सम्मति' और सभी तथाकथित 'समाजवादीदल' बोल्शेविकों के विरुद्ध थे; उन पर 'जर्मन भेदिया' होने का लांछन लगाते थे, जब कि बोल्शेविक पार्टी को **करेन्स्की** नेस्तनाबूद करना चाहता था और उसमें कुछ सफल भी हुआ; जब कि अब भी शक्ति-

शाली और संगठित आस्ट्रिया और जर्मनी की सेना हमारी थकी और विश्रृंखलित सेना के मुक़ाबले में खड़ी थी; और जब कि पश्चिमी यूरोप की समाजवादी 'अन्तिम विजय' तक युद्ध के उद्देश्य से अपनी अपनी सरकारों की मित्रता का आनन्द लूट रहे थे. . . . . . . ऐसे समय में विद्रोह उठाने का क्या मतलब था ? ऐसी परिस्थिति में विद्रोह उठाने का मतलव था, अपने सर्वस्व को दाँव पर रख देना। लेकिन लेनिन् सर्वस्व की बाज़ी लगाने से ड़रता नहीं था। क्योंकि वह जानता था, वह अपनी क्रान्तिदर्शी आँखों से देखता था, कि विद्रोह अनिवार्य है। विद्रोह विजयी होगा। रूस में विद्रोह साम्राज्यवादियों के युद्ध का अन्त नजदीक लावेगा। रूस में विद्रोह पश्चिम की उत्पीड़ित जनता को होश में लायेगा। रूस में विद्रोह साम्राज्यवादी युद्ध को गृह-युद्ध में परिणत करेगा। विद्रोह एक सोवियत्-प्रजातंत्र को उत्पन्न करेगा। वह सोवियत्-प्रजातंत्र सारे संसार के क्रान्तिकारी आन्दोलनों के लिए ढाल का काम देगा।

यह सब को मालूम है कि लेनिन् की क्रान्तिकारिणी दूरदर्शिता पीछे अभूतपूर्व निश्चयात्मकता के साथ ठीक उतरी।

दूसरी घटना—अक्तूबर क्रान्ति के आरंभिक दिनों में जब कि जन-कमीसर्-कौंसिल (सोवियत्-मंत्रिमंडल या सोव्नर्कोम्) ने विद्रोही जेनरल प्रधान-सेनापति दुखोनिन् पर ज़ोर देना चाहा कि वह युद्ध को बन्द करे और जर्मनों के साथ सुलह की बात-चीत चलाये। मुझे याद है, लेनिन् क्रिलेन्को (भविष्य का प्रधान सेनापति) और मैं पेत्रोग्राद् के प्रधान सैनिक केन्द्र में इसलिए पहुँचे कि सीधे तार द्वारा दुखोनिन् से बात करें। अवस्था बड़ी विकट थी। दुखोनिन् और जेनरल स्टाफ़् ने **सोव्नर्कोम्** की आज्ञा का पालन करने से साफ़ इनकार कर दिया। सेना के अफ़सर पूर्णतया जेनरल स्टाफ़् के हाथ में थे। जहाँ तक सिपाहियों का संवंध था, यह कहना मुश्किल था, कि एक करोड़ २० लाख की सेना—जो कि सोवियत् सरकार के विरोधी ऐसे सैनिक संगठन के आधीन थी—क्या करेगी ? खुद पेत्रोग्राद्

में सब को मालूम था, कि धनी ख़ानदान वाले सैनिक विद्रोह करने के लिए तैयार हो रहे हैं। इसके ऊपर करेन्स्की पेत्रोग्राद् पर धावा कर रहा है। मुझे याद है, तार पर ज़रा सा ठमक जाने के बाद लेनिन् के चेहरे पर एक असाधारण प्रकाश की किरणें दौड़ गईं। यह मालूम होने लगा कि वह किसी निश्चय पर पहुँचा है। उसने कहा—"आओ, रेडियो-स्टेशन पर चलें। वह हमें मदद देगा। हम जेनरल दुखोनिन् को पदच्युत करने तथा साथी क्रिलेंको को उसके स्थान पर प्रधान सेनापति नियुक्त करने के लिए एक ख़ास आज्ञा निकालते हैं। और अफ़सरों से बिना पूछे सीधे सिपाहियों से अपील करेंगे कि जेनरलों को पकड़ लें, युद्ध को बन्द करें, आस्ट्रिया-जर्मनी के सिपाहियों के साथ संबंध स्थापित करें, और सुलह का काम अपने हाथ में लें।"

यह अंधेरे में कूदना था। लेकिन लेनिन् कूदने से डरनेवाला नहीं था। बल्कि उल्टा वह उसका स्वागत करनेवाला था। क्योंकि वह जानता था, कि सेना शान्ति चाहती है। वह शान्ति के रास्ते की सभी रुकावटों को तोड़ फेंकेगी और शान्ति को लेकर रहेगी; वह जानता था कि इस तरह की शान्ति की स्थापना का तरीका, आस्ट्रिया, जर्मनी के सिपाहियों पर असर डालेगा।

. . . .

गज़ब की दूरदर्शिता, होनेवाली घटनाओं के आन्तरिक मर्म को योग्यता के साथ अति-शीघ्र पकड़ लेना और उससे फ़ायदा उठाना—यह लेनिन् का गुण था; जिसने कि लेनिन् को इस योग्य बनाया कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन के एक महत्त्वपूर्ण काल में एक साफ़ कार्यक्रम तथा ठीक दाँव की योजना करे।

७—स्तालिन्

जार्जिया (गुर्जी) काकेशस् में काला-सागर की तरफ़ अवस्थित एक छोटा सा पहाड़ी देश है। यह यूरोप में न हो कर एशिया का एक भाग है। गुर्जी के प्रधान शहर त्विलिसी (तिफ़्लिस्) से थोड़ी दूर पर गोरी नामक एक छोटा कस्बा है। यहाँ विसारियोन् **जूगश्विली** नाम का चमार था। विसारियोन् जूता भी बनाता था और किसान भी था। इसी के घर १८७९ में एक लड़का पैदा हुआ। माँ-बाप ने उसका नाम योसेफ़् (युसुफ़् या जोज़ेफ़्) रक्खा। बाइबिल में आये यूसुफ की तरह इस लड़के में भी कोई विशेष सुन्दरता थी, यह नहीं कहा जा सकता। तो भी किस माँ-बाप को अपना लड़का सुंदर नहीं जान पड़ता। विसारियोन् की आर्थिक अवस्था के बारे में इतना ही कहा जा सकता है; कि वह भूखा नहीं मरता था। उसकी स्त्री एकातेरिना एक ख़ास ख़याल की औरत थी। अगर विसारियोन् की चलती; तो वह योसेफ़् को भी हमेशा के लिए जूता ही बनाने लायक होने देता। लेकिन एकातेरिना (कैथ्रिन्) अपने लड़के के लिए एक दूसरा स्वप्न देख रही थी। यद्यपि वह स्वप्न उतना ऊँचा नहीं था, जहाँ कि उस का लड़का पहुँचा।

योसेफ़् ने कस्बे के स्कूल में कुछ पढ़ा। माँ की इच्छा हुई कि योसेफ़् धर्मोपदेशक (पादरी) बने। ९ वर्ष की उम्र में १ सितंबर १८८८ को वह कस्बे के पादरियों के स्कूल में दाख़िल किया गया। और तब से १ जुलाई १८९४ तक वहीं पढ़ता रहा। बाइबिल और ईसाई धर्म की बारीकियों का गंभीर अध्ययन ही पाठशाला का पाठ्य विषय था। इन्हीं दिनों में समाजवादी क्रान्तिकारियों का आन्दोलन ज़ोर-शोर से आरंभ हुआ था। तरुण लेनिन् ने अपनी बैरिस्ट्री छोड़ समारा और पीतर्बुर्ग में धूनी रमाई

थी। पीतर्बुर्ग कहाँ और कहाँ मास्को! और फिर कहाँ गोरी का गुम-नाम क़स्वा! लेकिन विचारों के पंख वड़ी तेजी से उड़ते हैं। गोरी के भविष्य के इन पादरी विद्यार्थियों की कोठरियों में भी वह ख़यालात पहुँचे विना नहीं रहे। योसेफ़् अपनी कक्षा में इसका नेता था। पुलीस की राज-नैतिक हलचलों पर ख़ास निगाह थी। योसेफ़् उसकी आँखों से बच नहीं सका और नतीजा यह हुआ कि पाठशाला के अधिकारी पादरियों ने उसे स्कूल से निकाल बाहर किया।

एकातेरिना को योसेफ़् के भविष्य के लिए कितनी चिन्ता हुई होगी, इसके कहने की आवश्यकता नहीं। एकातेरिना अब भी गोरी में रहती है। अब ४४ वर्ष वाद शायद उसे इसका अफ़्सोस न होता होगा।

योसेफ़् ने अब अपना सारा समय क्रान्ति के लिए देना शुरू किया। १८९८ से १९१७ तक—इन १९ वर्षों में १६ वार उसे सिवेरिया में निर्वा-सित किया गया; और एक छोड़ हर वार वह निकल भागने में सफल हुआ। उसने गोरी में तहख़ाने के भीतर छोटा सा प्रेस रखा था, और उसके द्वारा क्रान्तिकारी पुस्तिकाएँ छापता था। वाकू में रह कर उसने गुर्जी भाषा में "वाकू मज़दूर" (वाकू प्रोलेतरी) नामक पत्र निकाला। सव से पहले लेनिन् का सम्पर्क १९०३ में पत्र द्वारा हुआ; और तव से वह बरावर लेनिन् का भक्त और शिष्य रहा।

पार्टी को अपने काम के लिए पैसों की आवश्यकता थी। दूसरे मुल्कों की तरह रूस के क्रान्तिकारियों को भी यह आवश्यकता डकैती से पूरी करनी पड़ती थी। उस समय योसेफ़् तिफ़्लिस् की पार्टी का नेता था, जब कि १९०७ में ऐसी एक डकैती हुई थी। ख़ज़ाना वाहर भेजा जा रहा था। योसेफ़् के आदमियों ने वमों से हमला किया; और २० आदमी जान से मारे गये। एक लाख रुपया हाथ आया। इतनी वड़ी हत्या को ऊपर के नेताओं ने पसन्द नहीं किया, लेकिन परिस्थिति ने एक की जगह २० को मारने के लिए मजबूर किया।

योसेफ़् को अधिक तर अपना काम भेस बदल कर करना पड़ता था। कई बार पार्टी के काम से उसे स्टाक्होल्म और प्राग् (ज़ेकोस्लाविया) और लंदन भी जाना पड़ा। लेकिन यह सिर्फ़ कान्फ्रेंस के वक्त में ही। अधिक तर उसे रूस के भीतर ही रह कर काम करना पड़ता था। १९१२ में उसने 'समाजवाद और जातीय समस्या' पर एक पुस्तक लिखी। उसकी सब से महत्त्वपूर्ण पुस्तक है "लेनिनवाद" (लेनिनिज़्म) जिसे उसने लाल क्रान्ति के बहुत पीछे लिखा। उस समय वह 'दूमा' (रूसी पार्लियामेंट) के बोल्शेविक दल के सदस्यों का नेता था। और पार्टी के पत्र 'प्राव्दा' (सत्य) के सम्पादकों में से एक था। १९१३ में उसे फिर पकड़ा गया और आख़िरी बार सिबेरिया में निर्वासित कर दिया गया; जहाँ से ज़ार के पदच्युत होने के बाद ही उसे मुक्त होने का मौक़ा मिला।

स्तालिन

छिपकर काम करने के वक्त असली नाम छिपाने के लिए क्रान्तिकारियों को दूसरे नाम रखने पड़ते थे। **योसेफ़् विसारियोनोविच् जूगश्विली** का भी इसी तरह से 'स्तालिन्' नाम पड़ा। किन्हीं किन्हीं का कहना है कि लेनिन् ने उसे यह नाम दिया। और कुछ लोग कहते हैं कि अपने फौलादी मनसूबे के कारण उसका नाम स्तालिन् (फौलादी) पड़ा।

१९१७ से पहले का जीवन तैयारी का जीवन था।

असली जीवन स्तालिन् का लाल क्रान्ति के बाद शुरू होता है। स्तालिन् वक्ता नहीं है, इसका यह मतलब नहीं कि वह व्याख्यान नहीं दे सकता, और उसके व्याख्यान का असर नहीं होता। कहने का अभिप्राय यह है कि उसके व्याख्यान में वह वक्तृत्व-कला नहीं दिखलाई पड़ती, जो **त्रोत्स्की** और दूसरे प्रसिद्ध वक्ताओं में देखी जाती है। और रही प्रभाव की बात, सो वह सिर्फ़ वक्तृत्व-कला पर निर्भर नहीं रखता। गांधी जी के व्याख्यान में कौन सी वक्तृत्वकला है? ठीक उसी तरह स्तालिन् के व्याख्यान में भी न स्वरों का उतार-चढ़ाव है, न लच्छेदार शब्द हैं, न मेज़ पर हाथ पटकना है, न सारे शरीर को कँपाने का अभिनय है। स्तालिन् की वक्तृता होती है युक्तियों और उदाहरणों से भरी। वह रेखागणित के साध्यों की तरह अपने व्याख्यान में हर एक वात की प्रतिज्ञा और फल को उन्हीं शब्दों में दोहराता है।

स्तालिन् लाल-क्रान्ति के समय पार्टी के राजनैतिक व्यूरो (पोलित्-व्यूरो या राजनीति-संचालक-मंडल) का एक सदस्य था। दूसरे सदस्य लेनिन् के अतिरिक्त त्रोत्स्की, ज़िनोवियेफ़्, कामेन्येफ़्, सोकोल्‌निकोफ़्, और बुग्नोफ़् थे। इसके अतिरिक्त मंत्रिमंडल में दो विभागों—किसान-मज़दूर निरीक्षण और जातिक-कमीसर (मंत्री) भी था। स्तालिन् की विशेषता थी, सुन्दर संगठन और मन्तव्य को सुचारु रूप से कार्य रूप में परिणत करना। व्यवहार-ज्ञान को पुस्तक के ज्ञान से वह अधिक महत्त्व देता है। दृढ़ता से पूर्ण मनोयोग के साथ बराबर काम किये जाना यह स्तालिन् ही जानता है। स्तालिन् की क़लम में ताक़त नहीं है, सीधा सादा होने पर भी उसके भाषण में शक्ति नहीं है, वह सोचने की शक्ति नहीं रखता है—यह बात नहीं है। असल वात यह है कि हर एक ज्ञान को वह व्यवहार की उपयोगिता की कसौटी पर कसता है। लेनिन् अगर क्रान्ति की सफलता के लिए सोचने में कमाल रखता था, तो स्तालीन् उसे व्यवहार में लाने में कुशल है। लेनिन् को स्तालिन् की इस शक्ति का पता था। इसी लिए जब कभी संगठन

और व्यवहार के काम की ज़रूरत पड़ती थी तो वह स्तालिन् ही को वह काम सौंपता था।

स्तालिन् को बिना दिखावे के काम करने की आदत है। मार्च १९१७ में करेन्स्की की सरकार ने स्तालिन् को मुक्त किया। दूसरे राजनैतिक कैदी बड़े स्वागत और प्रदर्शन के साथ पेत्रोग्राद् आते थे, लेकिन स्तालिन् को कोई जानता नहीं कि कब पेत्रोग्राद् पहुँचा और तुरन्त 'प्राव्दा' के सम्पादकीय विभाग में दाखिल हो गया। ऐसा कभी मौक़ा नहीं आया जब कि स्तालिन् लेनिन् के विरुद्ध हुआ हो। लेनिन् के लिए उसकी कितनी श्रद्धा है, वह उसके इस वाक्य से मालूम होगी—"मैं लेनिन् का एक शिष्य हूँ। मेरी यही एक मात्र इच्छा है कि उसका योग्य अनुयायी रहूँ।" लेनिन् की महान् पीतर् से तुलना करते सुनकर उसने कहा—"मैं इतना ही कहूँगा कि मन्दिर बनाने के लिए पीतर् सिर्फ़ एक ईंट लाया था; लेकिन लेनिन् ने सारी इमारत खड़ी कर दी। मैं केवल उसका शिष्य भर हूँ।"

१९१८–२० में त्रोत्स्की सोवियत् सेना का सेनापति-सा था। कारण यह था कि बोल्शेविकों का ज़ारशाही अफ़्सरों पर विश्वास न था, इस लिए वह अपने ही में से किसी को दायित्वपूर्ण पदों पर रखते थे। **देनिकिन्** ने दक्षिण से हमला शुरू किया था। सफ़ेद सेना आगे बढ़ती आ रही थी। लेनिन् ने स्तालिन् को दक्षिणी युद्ध-क्षेत्र का काम दिया। वहाँ से भेजे हुए एक पत्र में उसने लिखा—"यह मानी हुई बात है, कि सभी महत्त्वपूर्ण युद्ध-संबंधी कार्रवाइयों की सारी जिम्मेवारी मैं अपने सिर पर लूँगा।" त्रोत्स्की ने उस समय अनेक आज्ञाएँ मास्को से भेजीं। स्तालिन् ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसे एक आज्ञापत्र की पीठ पर "इसकी ओर कोई ध्यान मत दो" लिख कर उसने अपने एक अफ़सर के हाथ में दे दिया। त्रोत्स्की जला भुना हुआ था। उसने इसकी शिकायत लेनिन् से की। लेनिन् ने त्रोत्स्की की आज्ञा मानने के लिए स्तालिन् को मजबूर किया। स्तालिन् मान गया। १९१९ की बात है। देनिकिन् को रोकने के लिए त्रोत्स्की

पर हमला करने के पहले १०० बार सोचना पड़ेगा कि उनको कैसे आदमियों से मुक़ाबला करना है। सोवियत् को सिर्फ़ अपना भरोसा है। उसकी लड़ाई में फ़्रांस, इंगलैंड या अमेरिका मदद करने आवेंगे, इसकी कोई संभावना नहीं है। लेकिन अकेले सोवियत् के पास भी १८ करोड़ का जन-दल है, जिसकी पीठ पर विशाल कारख़ाने और असंख्य प्राकृतिक सम्पत्ति मौजूद हैं। इस प्रकार वह अपने भरोसे पर सभी फ़ासिस्ट देशों से एक साथ लड़ सकता है।

***　　　　***

१९१७ से ही दुनिया भर के पूँजीवादी देश और उनके शक्तिशाली पत्र सोवियत् के ख़िलाफ़ प्रचार कर रहे हैं। ऐसे तो पश्चिमी पत्रकारों के यहाँ अपने मतलब के लिए झूठ बोलना धर्म समझा जाता है; लेकिन सोवियत् के बारे में तो इसे वह परम धर्म समझते हैं। हिन्दुस्तान में आनेवाली सभी ख़बरें रूटर जैसी पूँजीवादी कंपनियों द्वारा आती हैं। इन पत्रकार संस्थाओं ने अपने एजेंट रीगा और दूसरी जगहों में रख छोड़े हैं। रीगा में तो सोवियत् के ख़िलाफ़ झूठ गढ़ने की एक बड़ी फ़ैक्टरी है। दुनिया भर के पूँजीवादी देशों के संवाददाता यहीं पर रहते हैं। और यहीं से दुनिया भर के कोने कोने में एक ही तरह की गढ़ी हुई झूठी ख़बरें भेजी जाती हैं। लाल क्रान्ति के समय से ही और १९२० के बाद विशेष तौर से इस झूठ के प्रसार का बड़े पैमाने पर आयोजन किया गया है। उसी वक़्त से दिन प्रतिदिन, मास प्रतिमास, वर्ष प्रतिवर्ष, इस प्रकार की ख़बरें भेजी जाती थीं, जिससे मालूम हो कि सोवियत् सरकार आज टूटनेवाली है और कल टूटनेवाली है। २० साल के क़रीब हो गये, और उन्हीं बातों को वे नित्य नये नये रूप में देते जा रहे हैं। वे निराश होने की ज़रूरत नहीं समझते; क्योंकि उन्हें मालूम है कि हमारी ही भेजी ख़बरों को दुनिया झख मार कर पढ़ेगी।

भयंकर षड्यंत्र के लिए १० आदमी पकड़े जाते हैं। रीगा वाले संवाद-

और स्तालिन् दोनों गये हुए थे। त्रोत्स्की कलम का धनी था। लंवे लंवे खरीते वहाँ से भेजता था। त्रोत्स्की के इन खरीतों में से बहुत से उसने छाप दिये हैं। स्तालिन् के भी खरीते आते थे, लेकिन वे अभी तक छपे नहीं हैं। इन खरीतों में से एक में सत्तर पंक्ति की एक योजना थी। त्रोत्स्की और दूसरों ने लंवे लंवे पुलिन्दों में योजना वनाई थी। स्तालिन् की ये सत्तर पंक्तियाँ उनके विरुद्ध पड़ती थीं; लेकिन मास्को में सरकार ने स्तालिन् की इन सत्तर पंक्तियों को मंजूर किया। परिणाम यह हुआ कि देनिकिन् को भागना पड़ा। दोन् और उक्रइन् आज़ाद हो गये। इससे पता लगेगा कि स्तालिन् किस धातु का वना है।

लेनिन् का स्तालिन् पर अधिक विश्वास और स्नेह था। लेनिन् उस वक्त यूरोप में रहता था। स्तालिन् रूस के किसी कोने में। लेनिन् को कितने ही समय से कोलवा (स्तालिन् के गुप्त नामों में से एक) का पता न लगा था। उसने पूछा—"कहाँ है हमारा कोलवा? अद्भुत गुर्जी! मैं उसे भूल ही गया था! मेरी तरफ़ से उसे लिखो।"

त्रोत्स्की साहित्यिक आदमी था, शब्दों का धनी था। किताबी ज्ञान पर उसे वहुत अभिमान था। इसी लिए वह लेनिन् को भी संकोच ही के साथ अपने ऊपर मानता था, सो भी क्रान्ति के समय और अपनी जवानी के दिनों ही में। उसे अपने ज्ञान का वहुत अभिमान है। लेकिन वह यह नहीं समझता कि उसी किताबी ज्ञान का मूल्य है, जो ठोस धर्ती से निकला हो। और यही उसकी सब से वड़ी कमज़ोरी है। इसी के कारण वह दस साल तक लेनिन् के ख़िलाफ़ हो कर मेन्शेविक् दल में मिला रहा।

स्तालिन् काम को कितना पसन्द करता है। यह इसीसे मालूम होता है, कि १६०७ में जब रूस के राजनैतिक आकाश में निर्जीवता आ गई थी, तो त्रोत्स्की रूस छोड़ कर वाहर निकल गया; और १६१७ की क्रान्ति से पहले नहीं लौटा। स्तालिन् उस वक्त लेनिन् के सभी आदेशों के पालन करने और पार्टी के कार्यों के संचालन के लिए रूस में डटा रहा।

लाल क्रान्ति की सफलता का सब से बड़ा श्रेय लेनिन् के बाद बोल्-शेविक पार्टी को है। लेनिन् स्तालिन् की योग्यता और विश्वास-पात्रता को जानता था, इसी लिए उसने उसे पार्टी का मंत्री बनाया।

लेनिन् की मृत्यु के बाद त्रोत्स्की लेनिन् का स्थान ग्रहण करना चाहता था; लेकिन स्तालिन् और त्रोत्स्की के काम करने के ढंग में बहुत फ़र्क़ था। त्रोत्स्की के लिए जनता बेवकूफ़ों की भीड़ थी। वह समझता था, हमारे जैसे ऊँचे दिमाग़ से निकली हुई बात को पालन करना ही जनता का धर्म है। हाँ, वह यह देखने का हक़ रखती है कि जो काम हम करना चाहते हैं वह उसके हित के लिए है या नहीं। वह आदर्शवादी था। लेकिन उसका आदर्शवाद क्रियात्मकता की परवा नहीं करता था। स्तालिन् के लिए कोई सच्चाई, कोई सिद्धान्त चाहे वह शिक्षितों की दृष्टि में कितना ही ऊँचा समझा जाता हो, सच्चाई और सिद्धान्त नहीं; जब तक कि जनता के सामने व्यवहार की कसौटी पर वह ठीक न उतरे। त्रोत्स्की अपने ऐसे कुछ दिमाग़दारों पर प्रभाव डालकर सन्तुष्ट रहना चाहता था और उन दिमाग़दारों में भी अभिमानी त्रोत्स्की को माननेवाले कितने थे, यह इसीसे पता लगता है; कि लेनिन् की मृत्यु के समय सोवियत् के १८ प्रधान व्यक्तियों में सिर्फ़ ४ उसके दोस्त थे। जब दिमाग़दारों की यह हालत थी, तो साधारण जनता के बारे में—जिनके विषय में उसकी राय बहुत बुरी थी—कहना ही क्या है।

लेनिन् ने मृत्यु के समय युद्ध-कालीन समाजवाद को समाप्त कर नवीन आर्थिक नीति का प्रोग्राम चलाया था। इसके कारण ग्रामों में समाज़वाद को अपनी बहुत सी जीती हुई जगह छोड़ कर पीछे हटना पड़ा था। ऐसी अवस्था में स्तालिन् मैदान में आया।

त्रोत्स्की का कहना था—"हमने शहरों में क्रान्ति इसलिए नहीं की कि गाँवों में एक नई क़िस्म के पूँजीपति तैयार हों। क्रान्ति स्थायी है।" स्तालिन् का कहना था—क्रान्ति की पूर्ण सफलता एक दिन में नहीं हो

सकती। इसलिए हमें अवस्था को देख कर आगे बढ़ना चाहिए।।

त्रोत्स्की चाहता था, तुरन्त गाँवों में भी ज़ोर-शोर से समाजवाद का प्रोग्राम जारी किया जाय। स्तालिन् ने चाहा कि पहले हमें उद्योग-धंधे को—जो कि १९१३ से भी बहुत गिरी अवस्था में पहुँच गया था—ठीक करना चाहिए। फिर गाँवों की तरफ़ चलेंगे। लोग स्तालिन् के साथ थे। उसके प्रोग्राम को काम में लाया गया; और १९२७ तक सोवियत् उद्योग-धंधा १९१३ की अवस्था से आगे बढ़ने में सफल हुआ। त्रोत्स्की का विरोध बराबर जारी रहा। जिस वक्त सारा राष्ट्र एक मन से होकर किसी योजना को पूरा करने के लिए लगा हो, उस वक्त बराबर उसके विरोध में लोगों को उकसाते रहना जनता के उत्साह को कम करने का काम कर सकता है। स्तालिन् और सोवियत् की जनता ने ३ वर्ष तक त्रोत्स्की के हर तरह के विरोध को सहा। लेकिन अब वह पंच-वार्षिक योजनाओं की तरफ़ बढ़ने वाले थे। पाँच वर्ष में उन्हें पूँजीवादी देशों की सौ सौ वर्ष की औद्योगिक उन्नति को अपने मुल्क में लाना था। त्रोत्स्की की बकवाद किसी तरह बन्द न होती थी। वह कहता था—संसार-व्यापी क्रान्ति के लिए रूस में लाल क्रान्ति हुई थी। स्तालिन् सिर्फ़ सोवियत्-भूमि को देखता है। अन्तर्राष्ट्रीयता-वाद से हट कर वह राष्ट्रीयता की ओर लोगों को ले जा रहा है। क्रान्ति का खून हो रहा है। अन्त में लाचार हो कर सोवियत् सरकार त्रोत्स्की को देश से निकालने पर मजबूर हुई। और अब तो अपनी क्रान्ति-युग की पुरानी कमाई पर जीना और उससे लाभ उठा कर सोवियत् साम्यवादी सरकार और उसके नेताओं को बुरा भला कहना यही उसका काम हो गया है। जिस साम्यवादी सरकार को कायम करने के लिए, जिस अपने आदर्श को धरती पर साकार रूप से स्थापित करने के लिए, उसने अपने जीवन और शक्ति का इतना भाग दिया था; अब व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा और उसीके कारण उत्पन्न हुए वैमनस्य की वजह से वह क्रान्ति के फल सोवियत् की स्वतंत्रता को फ़ासिस्त पूँजीवादियों के हाथ में बेचने से भी आनाकानी

नहीं करता। आदमी का पतन कहाँ तक हो सकता है, त्रोत्स्की इसका एक जीवित उदाहरण है। और किताबी ज्ञानवाले कितनी कम सोचने की शक्ति रखते हैं, इसे आप त्रोत्स्की के ऐसे अनुयायियों को देख कर समझ सकते हैं, जिनके लिए इतना दूर चले जाने पर भी त्रोत्स्की अब भी उसी सम्मान का पात्र है।

त्रोत्स्की की पुरानी सेवाओं, और आज कल पूँजीवादियों के साम्य-वाद को बदनाम करने के अभिप्राय से त्रोत्स्की की प्रशंसा के पुल बाँधने को, पढ़ कर कितने ही लोग भ्रम में पड़ जाते हैं, और वह समझते हैं कि स्तालिन् धोखे और ज़बर्दस्ती से नेता बन गया। रदेक् स्वयं इसके बारे में कहता है—"लेनिन् की मृत्यु के बाद कार्यकारिणी समिति के हम १९ सदस्य एकत्रित हुए और बड़ी उत्सुकता के साथ अपने नेता की अन्तिम हिदायत की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेनिन् की विधवा हमारे पास यह पत्र लाई। स्तालिन् हमें ज़ोर से पढ़ कर सुनाने लगा। जब वह पढ़ रहा था, सब लोग चुप थे। फिर त्रोत्स्की के बारे में पत्र में लिखा था—'उसका अबोल्शेविक भूत एक आकस्मिक घटना न थी।' एक दम त्रोत्स्की ने रोक कर पूछा—'क्या है यह?' वाक्य फिर दोहराया गया। सिर्फ़ यही शब्द थे, जो उस वक्त बोले गये।"

लेनिन् के इन ६ शब्दों ने फैसला कर दिया कि नेतृत्व स्तालिन् को मिलना चाहिए या त्रोत्सकी को।

प्रथम पंचवार्षिक योजना—१९२७ के बाद स्तालिन् ने देश की कृषि और उद्योग को ज़ोर से आगे बढ़ाने के लिए पंचवार्षिक योजनाओं का आरंभ किया। पहली पंच-वार्षिक योजना १ अक्तूबर १९२८ को शुरू हुई थी और ३१ दिसंबर १९३२ अर्थात् ५ वर्ष का काम ४ वर्ष में करके खतम हुई। इस समय औद्योगिक उन्नति कितनी हुई, यह इसी से मालूम होगा कि जहाँ १९२८ में राष्ट्रीय आय १५६६ करोड़ थी वहाँ १९३२ में वह ४१९० करोड़ हो गई। उससे पहले सोवियत् भूमि में ट्रैक्टर और विमान बनते

न थे। दूसरी मशीनें भी अधिकतर पश्चिमी यूरोप और अमेरिका से मँगाई जाती थीं। लेकिन इस प्रथम पंचवार्षिक योजना ने सोवियत् को इन चीज़ों में स्वावलंबी बना दिया। पेट्रोल और कोयले की उपज में वह संसार में अव्वल हो गया। तुर्किस्तान और काकेशस् में, जहाँ पहले फ़ैक्टरियाँ नहीं थीं, वहाँ कितनी ही फ़ैक्टरियाँ खुलीं। कपास की उपज दूनी हो गई और कपड़े की बड़ी बड़ी १३ मिलें खुलीं। १९३२ में ३ अरब गज़ कपड़ा तैयार हुआ। पहले कारख़ानों में ४९० करोड़ रूबल लगा था। प्रथम पंचवार्षिक योजना के अन्त में वह २४०० करोड़ हो गया। १९२८ में कारख़ानों में काम करनेवाले ७,२३,००० आदमी थे। १९३२ में ३१,२५,००० हो गये। १५०० नई फ़ैक्टरियाँ बनीं। प्रथम पंचवार्षिक योजना ने मशीन बनाने वाली मशीनों के उद्योग-धंधे में सोवियत् को बहुत प्रबल बना दिया। खेती के $\frac{2}{3}$ को पंचायती कर दिया।

द्वितीय पंचवार्षिक योजना—(१९३३ से १९३७ तक) पहली जनवरी १९३३ को आरंभ हुई और ३१ दिसंबर १९३७ को समाप्त। यह योजना अपने समय से ९ मास पूर्व ही खतम हो गई थी। पहले पंचक (पंचवार्षिक योजना) के अन्तिम वर्ष में ३ अरब गज़ कपड़ा बना था। १९३७ में वह ५ अरब गज़ से अधिक हो गया। इसी तरह १९३५ में जहाँ १० करोड़ गज के करीब ऊनी कपड़ा तैयार हुआ था, वहाँ १९३७ में २२॥ करोड़ गज़ के ऊपर बना। द्वितीय पंचक के प्रथम ४ वर्षों में ४६ अरब रूबल नये कारख़ानों के बनाने में लगाये गये; जब कि प्रथम पंचक में ४४ अरब ही लगे थे। खेती में भी इस पंचक के अंत में ९९ फ़ी सदी खेत पंचायती हो गये। और १९३७ में ७००० करोड़ पूड या साढ़े एकतीस अरब मन (१ पूड=१८ सेर) अनाज हुआ जो कि १९१३ की उपज का दूना है।

तृतीय पंचवार्षिक योजना—१ जनवरी १९३८ में यह योजना शुरू हुई है और ३१ दिसंबर १९४२ को ख़तम होगी। ट्रैक्टर, सोना तथा और भी कितनी औद्योगिक चीज़ों की उपज में सोवियत संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका

से भी आगे बढ़ कर संसार में अव्वल स्थान ग्रहण करना चाहता है। कल-कारख़ानों की उपज में इस साल (१९३८) पिछले साल की अपेक्षा १० सैकड़ा बढ़ाना है। लकड़ी की उपज में ९ सैकड़ा और रेलवे में ५½ सैकड़ा से ऊपर।

पंचवार्षिक योजनाओं के कारण आर्थिक, सांस्कृतिक सैनिक सभी दृष्टि से सोवियत्-संघ बहुत आगे बढ़ा है। और आज सारी दुनिया में सोवियत् की इन पंचवार्षिक योजनाओं की नकल करने की कोशिश हो रही है।

पंचवार्षिक योजनाओं की कल्पना और सफलतापूर्वक पूरा करना स्तालिन् का सब से बड़ा काम है। स्तालिन् ने पिछड़े हुए रूस को संसार में वहुत आगे बढ़ाया। समाजवाद जो अभी शहरों तक परिमित था, उसे गाँवों में पहुँचा दिया।

पद और वेतन—१९३४ के आरंभ से स्तालिन् न कम्युनिस्ट पार्टी का मंत्री है, न गवर्नमेंट में मंत्री या कमीसर है। लेकिन उससे उसके प्रभाव में कोई कमी नहीं है। पंचवार्षिक योजनाओं की सफलता ने उसे उतना ही सर्वप्रिय वना दिया है, जितना कि लेनिन् था।

स्तालिन् का वेतन प्रति मास १००० रूबल (करीब ४५० रुपये के) है।

वैयक्तिक जीवन—स्तालिन् के वैयक्तिक जीवन के बारे में लिखते हुए एक अंगरेज़ लेखक लिखता है—

वह मास्को में रहते वक्त क्रेमलिन् में रहता है। क्रेमलिन् इमारत नहीं है, वल्कि दीवारों से घिरा एक किला है, जिसके भीतर ४०–५० इमारतें, कुछ पुराने गिर्जे, बग़ीचे और सिपाहियों के बैरक हैं। स्तालिन् के लिए इसमें ३ कमरे हैं। वह क्रेमलिन् में काम नहीं करता। स्तालिन् के बारे में लोगों ने ख़बर उड़ाई है कि वह क्रेमलिन् की दीवारों के भीतर हमेशा रहता है और एक तरह से क़ैदी है। यह विलकुल ग़लत है। उसे काम करने के लिए क्रेमलिन् से वाहर पार्टी की केन्द्रीय समिति की इमारत में स्तारया चौक में जाना होता है; और यह चौक मास्को का वहुत भीड़ वाला चौक

है। अपना बहुत सा समय वह मास्को से एक घंटे के रास्ते पर उसोवा अर्खान्गेल्स्काया जिले में मास्को नदी के तट पर बने एक कुटीर में बिताता है। एकान्त के कारण यह जगह उसे बहुत पसन्द है। इस कुटीर को पहले किसी करोड़पति बनिये ने बनवाया था। उसीने १० एकड़ ज़मीन को ऊँची दीवार से घेर दिया था। उन दीवारों को स्तालिन् ने ढहवाया नहीं तो भी स्तालिन् हिटलर और मुसोलिनी की तरह हर वक्त बहु-संख्यक शरीर-रक्षकों से घिरा नहीं रहता। उनकी अपेक्षा यह अधिक बाहर आता है। कितनी ही बार ओपेरा (नाटक) देख कर साथियों के साथ बात करते हुए भीड़ के भीतर से वह अकेला लौटता देखा गया है। हर साल दोनों महोत्सवों—१ मई और ७ नवंबर—के दिनों में स्तालिन् लेनिन् की समाधि पर खड़ा होता है; और कई लाख आदमी उससे ३० क़दम पर से गुज़रते हैं।

तड़क-भड़क से उसे बिलकुल प्रेम नहीं है। वह खास वर्दी नहीं पहनता। एक काला सा बन्द गले का कोट और एक घोड़सवारी का पाजामा (ब्रिचेस) और बूट—यही उसकी पोशाक है। जब वह बाहर जाता है, तो सिर पर एक छज्जेवाली टोपी रहती है।

स्तालिन् के काम करने का ढंग अधिकतर ऐसा है कि वह एक सप्ताह या अधिक खूब ज़ोर से काम करता है। इसके बाद २-३ दिन के लिए मास्को से बाहर अपने कुटीर में चला जाता है। मनोविनोद की चीज़ों में बहुत शौक नहीं है, लेकिन कितनी ही बार वह नाटक और सिनेमा देखने जाता है। चपायेफ़् (लाल क्रान्ति का एक बहादुर सेना-नायक) फ़िल्म को देखने के लिए वह ४ बार गया था। वह पढ़ता बहुत है और कभी कभी शतरंज खेलता है। पाइप में डाल कर तंबाकू पीने की बड़ी आदत है। खाने के वक्त भी मेज़ पर सुलगता पाइप रखा रहता है; और खाने के बीच बीच में फूंक लगा लेता है। फ़ुर्सत के वक्त मित्रों के साथ एकाध ग्लास शराब भी पी लेता है।

स्तालिन् की पहली औरत १९१७ में निमोनिया से मर गई। उस से उसको एक लड़का है जो अब २६–२७ वर्ष का है। पढ़ने-लिखने में वह ढीला ही ढाला था, अब वह तिफ़लिस् की एक फ़ैक्टरी में काम करता है। १९१९ में स्तालिन् ने अपने एक दोस्त की लड़की नाद्येद्जा (नाद्या) से शादी की। उसके २ बच्चे हैं—वासिली १६–१५ वर्ष का लड़का है और स्वेत्लाना १०–११ वर्ष की लड़की। स्वेत्लाना से स्तालिन् को बहुत प्रेम है। स्तालिन् की स्त्री नकली रेशम के संबंध में स्कूल में पढ़ने जाया करती थी; और वहाँ किसी तरह का उसके लिए दिखावा नहीं था। मामूली ट्राम या बस में जाया करती। उसकी इच्छा थी, किसी नकली रेशम के कारख़ाने की प्रबंधिका बनने की। ८ नवंबर १९३२ को नादेज़्दा स्तालिन् की अकस्मात् मृत्यु हो गई। कहा जाता था कि स्तालिन् के भोजन को वह चख लिया करती थी, और उसीमें ज़हर की शिकार हुई। लेकिन असल बात यह नहीं थी। उसकी अंतड़ी में भारी दर्द हो रहा था। लेकिन कई दिनों तक उसने उसकी परवा न की। मामूली दर्द समझ कर उसने उसे अपने पति से भी नहीं कहा। अपने बच्चों के साथ स्तालिन् का प्रेम है। लेकिन उसने इसका पूरा ध्यान रखा है, कि स्कूल में उसके बच्चों के साथ वैसा ही बर्ताव किया जाय, जैसा और बच्चों के साथ। मीमेनोव्स्की सड़क के ऊपर अवस्थित उनका २५ नंबर का स्कूल मास्को के अच्छे स्कूलों में है। स्तालिन् इस स्कूल को देखने कभी नहीं गया।

अपने साथियों के साथ स्तालिन् का तू-तू का संबंध है। उसके नाम योसेफ़् को छोटा करके कहने का कोई उपाय नहीं (रूस में प्यार के लिए **मिख़ाइल** को छोटा करके 'मिश्का' कर दिया जाता है)। इसलिए जैसे क्लिमेंती वोरोशिलोफ़ का 'क्लिम्' हो जाता है, वैसे योसेफ़् को प्यार से या बराबरी के ख़याल से नाम छोटा करके बोलने की गुंजायश नहीं।

एक अंगरेज़ी लेखक जान गुंथर् स्तालिन् के बारे में लिखते हुए लिखता है—लंबा क़द और दृढ़ शरीर। कलेजे की बीमारी, लेकिन और तरह से

शारीरिक शक्ति और सहनशक्ति बहुत ज़्यादा है। न वह हिटलर की तरह स्वप्नचारी है, न मुसोलिनी की तरह भावुकता के साथ शारीरिक बल पर अधिकार रखता है। स्तालिन् पत्थर की तरह भावुकता-शून्य है। अगर उसमें नसें हैं तो चट्टानों की। होशियार, चतुर। आख़िर है भी तो वह पूर्वीय ! वह इसे स्वीकार भी करता है। एक जापानी से मिलते वक्त उसने कहा था—'स्वागत, मैं भी तो एशियाई हूँ।'

स्तालिन् की प्रतिभा इसी से मालूम होगी कि एच्० जि० वेल्स जैसे (उच्च कोटि के लेखक) से बात करते हुए उसने प्रश्नकर्त्ता को अपने उत्तरों से दबा दिया था। १९२७ में अमेरिका के श्रमजीवियों का प्रतिनिधि मंडल स्तालिन् से मिला था। उस समय उनके पूछे हुए नाना विषय के कठिन प्रश्नों का उत्तर वह ४ घंटों तक देता रहा। सब बातें मुँह-ज़बानी थीं, लेकिन सभी संलाप परस्पर संबद्ध रहा। ११,८०० शब्दों में उसने जवाब दिया था। जब प्रतिनिधि-मंडल प्रश्न करते करते थक गया, तो स्तालिन् ने पूछा—क्या मैं भी कुछ प्रश्न अमेरिका के बारे में कर सकता हूँ ? और फिर उसने दो घंटे प्रश्न किये और उस प्रश्न से मालूम होता था कि उसको हर विषय का कितना ज्ञान है। स्तालिन् ने अकेले जितनी ख़ूबी के साथ ४ घंटे जवाब दिये थे, उतनी ख़ूबी से प्रतिनिधि-मंडल नहीं दे सका। इस पूरे छः घंटे की बातचीत में न कोई टेलीफ़ोन की घंटी बजी और न कोई सेक्रेटरी बीच में आया। इससे मालूम होता है कि स्तालिन् हाथ में आये काम के ऊपर कितनी एकाग्रता से लग जाता है।

*** ***

जर्मन लेखक एमिल् लुड्विग् स्तालिन् से मिला था। उसके व्यक्तित्व के बारे में अपनी सम्मति देते हुए लिखता है—

उसकी जैसी तसवीर मैंने देखी थी और कहानियाँ जो मैंने सुनी और पढ़ी थीं, (फ़ौलादी स्तालिन्) जैसा नाम है, वह उसके लिए उपयुक्त नहीं

है। मैंने ख़याल किया था, कि मुझे पुरानी ज़ारशाही का कोई रोबीला गंभीर कठोर ग्रांड-ड्यूक मिलेगा, लेकिन उसकी जगह मुझे ऐसा अधिनायक देखने को मिला; जिसके हाथों में मैं अपने बच्चों को खुशी से छोड़ सकता हूँ। मैंने पढ़ा था कि वह जनता में नहीं आता; क्योंकि चेचक ने उसके चेहरे को बड़ा कुरूप बना दिया है। लेकिन यहाँ उसका कोई चिन्ह या दाग़ मिलना मुश्किल है। मैंने यह भी पढ़ा था; कि जब वह शहर से अपने प्रासाद जैसे देहात के निवास स्थान गोर्की—जिसमें बीमारी के समय लेनिन् रहा और मरा—को प्रतिदिन जाता है, तो उसके आसपास ५ मोटर-कारें रहती हैं। गोर्की के बारे में कहा जाता था कि रातदिन हथियारबन्द **कसाक्** वहाँ पहरा देते हैं। यह भी कहा गया था कि स्तालिन् प्रतिदिन क्रेम्लिन् के एक दरवाज़े से भीतर जाता है और दूसरे से बाहर आता है। खाने के वक्त ज़ार के खाने के सोने के बर्तनों में भोजन परोसा जाता है। यहाँ तक कहा गया है कि वह अपनी तरुण स्त्री को तुर्की के सुल्तान की तरह घर में ताला बन्द कर के रखता है।

लेकिन सच्चाई इससे बिलकुल उलटी है। लेनिन् की मृत्यु के बाद वह कभी गोर्की के प्रासाद में नहीं गया। जब मैं मास्को में उससे मिला; उस वक्त वह अपनी स्त्री और बच्चों के साथ शहर के बाहर एक सीधे-सादे घर में रहता था। वह अपने आफ़िस में अपनी अकेली कार में जाता है और उसी द्वार से, प्रतिदिन जाता है। दरवाजे पर संतरी कोई विशेष सलाम नहीं देता। उसका खाना रहना सहना साधारण आदमी सा है। वह सुव्यवस्था को बहुत पसन्द करता है; और अपने पास के काम के समय को ठीक से बाँटने में बड़ा ध्यान रखता है। उसकी रुचि बहुत सीधी-सादी है।.........

जब मैं स्तालिन् से मिला, मैंने उसे एकान्तप्रिय आदमी पाया। धन, सुख और महत्त्वाकांक्षा तक का भी उस पर प्रभाव नहीं। यद्यपि अपार शक्ति उसके हाथों में है, लेकिन उसके लिए उसे अभिमान नहीं।..... मैं कहूँगा कि स्तालिन् के स्वभाव में दो बातें अधिकता से पाई जाती

दाता दुनिया भर में तार खटखटाते हैं—सोवियत् का दिन समीप है, स्तालिन् की तानाशाही एक दो दिन की मेहमान है। तारीफ़ तो यह है कि छः महीने पहले जिन पकड़े जानेवाले लोगों की ख़बर छपी थी, ६ महीने बाद उन्हीं नामों को फिर दोबारा पकड़े जानेवालों की सूची में लिया जाता है। अख़बार पढ़नेवाले सभी नामों को तो याद नहीं रखते। उनको मालूम होता है कि फिर नये लोगों को पकड़ा गया। इस प्रकार जून १९३७ में पकड़े जानेवाले आदमियों ने पिछले ९ महीने में कई बार संवाद-दाताओं को नई ख़बर भेजने का अवसर दिया है।

यदि बुख़ारिन् या रादेक् अपने कसूरों को खुली अदालत में और रेडियो के संमुख स्वीकार करते हैं, तो पूँजीवादी पत्र झट से कह उठते हैं—'उनसे मार मार कर कहलवाया जा रहा है'। रेडियो पर बोलते वक़्त उसको मारा पीटा जाता हो और बोलनेवाला उसी तरह ज़रा भी स्वर को विकृत किए घंटे आध घंटे बोल रहा हो, इस बात को अक़्ल रखने वाले लोग नहीं मान सकते। इस लिए दूसरा झूठ गढ़ा गया—'बोलशेविकों ने एक ऐसी दवा ईजाद की है जो लोगों की मति बदल देती है'। ऐसी दवा का आविष्कार विज्ञान से तो नहीं हो सकता। और जादू-टोने पर बोलशेविकों को विश्वास नहीं। लोगों को एक ही तरह की बातें बार बार और बरसों तक सुनाई जाती हैं, तो उनके मन में भ्रम पड़ना आसान बात है।

बुख़ारिन् घंटा भर तक अपने अपराधों की स्वीकृति के बारे में बोलता है, और सारी दुनिया में रेडियो द्वारा उसका ब्राडकास्ट होता है। उस समय जादू-मंत्र, मतफेरनी दवाई और मारपीट की बात को छोड़ कर आप अपने दिमाग़ पर थोड़ा ज़ोर डालें तो मालूम होगा कि बुख़ारिन् का अपराध स्वीकार कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बुख़ारिन् उन आदमियों में से है, जिसने अपनी ज़िन्दगी का सारा भाग लाल क्रान्ति के आवाहन और सफलता में ख़र्च किया। पीछे अपनी अहम्मन्यता, व्यर्थ के विचारों की उड़ान, और क्रियात्मक आर्थिक योजनाओं पर बार बार प्रहार करने से साम्यवादी

हैं। पहली बात है धैर्य और इसको उसने अंतिम दर्जे तक पहुँचा दिया है। और दूसरी बात है, दूसरों पर बिना अवलंब किये पूर्णतया आत्मावलम्बी होना।.......

वह अब (१९३३) ५० के करीब पहुँच रहा है। एक वर्ष में ३–४ से अधिक यूरोपियनों से भेंट नहीं करता। इसलिए जब कोई पाश्चात्य आदमी पहले पहल उससे मिलने आता है, तो उसे 'अन्कुस' सा मालूम होता है। मुझे इससे आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि मैं संसार के ६ठे हिस्से के वास्तविक शासक के सामने हूँ।..... अगर मेरा दिल ठीक कहता है, तो मैं कहूँगा कि स्तालिन् स्वभाव से ही अच्छे दिल का आदमी है। लेकिन उसके पद ने उसे कठोर और आग्रही बना दिया है। उसमें कल्पना का अभाव नहीं है; लेकिन उसकी उड़ान की शौकीनी से वह इनकार करता है। वह महत्त्वाकांक्षी नहीं है, लेकिन अपने प्रतिद्वन्द्वियों से नर्मी नहीं रखना चाहता। स्वभाव से ही वह रूखा और लागू चित्त वाला है। जिस कर्तव्य के पालन में उसने अपना जीवन लगाया, उसने उसे सुन्न और गंभीर बना दिया है। पिछले ३५ वर्षों से उसके दिमाग़ में सिर्फ़ एक ही बात रही है, जिसके लिए उसने अपना यौवन, अपना स्वास्थ्य अपनी सुरक्षा तथा जीवन के सभी दूसरे आनंद कुर्बान कर दिये। इसलिए नहीं कि वह खुद शासन करे, बल्कि इसलिए कि उन सिद्धान्तों के अनुसार शासन हो जिनके लिए कि उसने प्रतिज्ञा की है। उसने मुझ से कहा—'मेरे जीवन का उद्देश्य है कि जाँगर चलानेवाली श्रेणी को और ऊपर उठाया जाय। जातीय राज्य बनाने का ख़याल नहीं है, बल्कि एक समाजवादी राज्य चाहता हूँ, जो कि संसार के सभी कमकरों के स्वार्थ की रक्षा करेगा। अगर मेरे जीवन का हर एक क़दम उस राज्य की स्थापना की ओर नहीं ले जाय; तो मैं समझूँगा कि मैं व्यर्थ ही जिया।' वह बड़ी नर्मी से बोल रहा था। और धीमी आवाज़ ऐसे निकल रही थी, मानों वह अपने आप से बात कर रहा था।...............

मेरे एक प्रश्न के उत्तर में उसने कहा—'मेरे माता-पिता अशिक्षित थे। लेकिन उन्होंने मेरे लिए बहुत किया। मसारिक (जेकोस्लाविया के राष्ट्र-निर्माता) को जैसे धुन हुई, वैसे मैं ६–१० या १२ वर्ष में समाज-वादी नहीं हो गया। जबतक मैं पादरियों की पाठशाला में रहा, मैं समाज-वादी नहीं बना। फिर प्रचलित शासन-प्रथा का विरोधी हुआ। शासन-प्रथा क्या थी, खुफ़िया का पीछा करना और धोखा देना। हम ९ बजे सवेरे चाय के लिए बुलाये गये और जब कोठरी में लौटे तो देखा कि सभी दराज़ों की एक एक कर के छान-बीन हुई है। वह हमारे काग़ज़ों की छानबीन नहीं कर रहे थे, बल्कि हमारे दिलों के एक एक कोंने की छान-बीन कर रहे थे। यह असह्य था। मैं किसी भी हद तक और किसी भी प्रथा के पक्ष में जाने के लिए तैयार होता, यदि मैं समझता कि मैं उस शासन-व्यवस्था का विरोध कर सकता हूँ। उसी समय रूसी समाजवादियों का एक कानून-विरोधी समुदाय काकेशस् के पहाड़ों में आया। उन्होंने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला और उसी समय से निषिद्ध साहित्य का मुझे चस्का लगा।'

'........मेरा साथी एक तरुण पत्रकार था। जो कई भाषाओं को ख़ूब अच्छी तरह से बोल और ठीक से अनुवाद कर सकता था। स्तालिन् और मुस्तफ़ा कमाल दो ही ऐसे आदमी हैं, जिनसे बात करते समय मुझे दुभाषिया की ज़रूरत पड़ी। जिस कमरे में हम प्रविष्ट हुए, वह लंबा था। उसके एक छोर पर एक मझोले क़द का आदमी भूरे रंग के बन्द गले का कोट पहने कुरसी के पास खड़ा था। उसकी पोशाक उतनी ही साफ़ थी, जैसा कि वह कमरा।.......एक लंबी मेज़ बीच में रखी थी।.....जिस पर पानी की झारी, ग्लास और राखदानी पड़ी थी। हर एक चीज़ से सु व्यवस्था टपकती थी। दीवारें गहरे हरे रंग से रँगी थीं। लेनिन्, मार्क्स तथा कुछ मेरे अपरिचित व्यक्तियों के फ़ोटो टँगे हुए थे। स्तालिन् की लिखने की मेज़ भी सुव्यवस्थित तौर से रखी थी। उसपर लेनिन् का एक फ़ोटो था। बग़ल में ४–५ टेलीफ़ोन् के यंत्र वैसे ही रखे थे, जैसे कि गवर्नमेंट

आफ़िसों में होते हैं। लड़खड़ाती रूसी में मैंने कहा—"दोब्रे उत्रा" (सुप्रभातम्)। उसने मुसकरा दिया और कुछ संकोचा भी, लेकिन वह बड़ा ही विनम्र था। उसने एक सिगरेट देने के लिए मुझे उठाया। उसने विश्वास दिलाया कि आप जो भी प्रश्न पूछना चाहें, पूछ सकते हैं। और मेरे पास १।। घंटा समय है। लेकिन जब समय के खतम होते वक्त मैंने अपनी घड़ी निकाली तो उसने मना करने का संकेत किया और आध घंटा और पास रखा। कुछ मात्रा तक संकोच, यह एक शक्तिशाली पुरुष के लिए उतनी ही अच्छी बात है, जैसा कि एक सुन्दर स्त्री में।......

चूँकि वह दुभाषिया के सहारे मुझसे बात कर रहा था, इसलिए प्रायः बराबर वह मुझ से दूसरी ओर देखता था। सारे दोनों घंटे कागज़ के टुकड़े पर वह चीन्हा खींचता था। एक लाल पेंसिल से वृत्त और दूसरी शकलें खींचता तथा अंक लिखता था। उसने पेंसिल के दूसरे छोर को नहीं बदला। यद्यपि उधर नीला रंग था। हमारे बात करने के समय उसने कई टुकड़े कागज़ के लाल रेखाओं से भरे और समय समय पर उनको मोड़ कर फाड़ दिया।..............स्तालिन् का स्वभाव है, बिना हिलेडोले बैठने का। वह बोलते वक्त किसी शब्द पर ज़ोर या हाथ मुँह हिलाना नहीं जानता।.........मुख्य बात उसके बारे में जो मेरे दिल में धँसी, यह थी कि वह संरक्षक है। स्तालिन् वह आदमी है जिसके नाम से कितने नर-नारी रोब में पड़ जाते हैं। लेकिन एक बच्चा या पशु वैसा नहीं कर सकता। पुराने युग में ऐसे पुरुष को लोग देश का पिता कहते।.......

यद्यपि मेरे सभी प्रश्नों के लिए उसने तैयारी नहीं की थी, और उसे हमारी यूरोपीय सरकारों के मंत्रियों—जिनको कि वही प्रश्न हफ़्ता बाद हफ़्ता पूछे जाते हैं—जैसा अनुभव नहीं था। और वह यह भी जानता था कि उसके उत्तर को मैं सारे संसार के लिए प्रकाशित करूँगा। सभी ऐतिहासिक घटनाएँ और नाम उसको कंठाग्र थे। मेरे दुभाषिया ने जो हमारे वार्तालाप को लिखा था, उसकी उसने कापी नहीं माँगी और न किसी संशोधन

की इच्छा प्रकट की। इस प्रकार का आत्मविश्वास मैंने कहीं नहीं देखा। दुनिया के और नेताओं से, जिनसे मैंने वार्तालाप किया है, उनके कहने को मैंने उसी वक्त काग़ज़ पर नहीं उतारा बल्कि पीछे उतार कर उनकी स्वीकृति को दिया। लेकिन यहाँ मैंने दूसरे आदमी द्वारा त्वरित लिपि में लिखे हुए लेख को लिया और जब मैंने उसे ग़ौर से मिलाया, तो उसमें ज़रा भी कोई बात छूटी नहीं देखी तो भी वाक्यावली बिलकुल दुरुस्त।. . . . . . जब मैं अपने मन में अपने ग़रीब मंत्रियों की आदत को ख़याल में लाता हूँ, जो कि अपने पार्लियामेंट में देनेवाले व्याख्यान या संवाद देते वक्त अपने प्रेस-विभाग के अध्यक्ष द्वारा उसका संशोधन कराते हैं, तो इस काकेशस् के जूते बनानेवाले के लड़के के लिए सन्मान से मेरा दिल भर जाता है।. . . . .

मैंने कहा—"तुमने षड्यंत्र का जीवन बहुत काल तक बिताया है। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे वर्तमान शासन में ग़ैरकानूनी आन्दोलन संभव नहीं है?"

"यह संभव है, कम से कम कुछ हद तक।"

"क्या इसी संभावना के डर के मारे अब भी, क्रान्ति के १५ वर्ष के बाद भी, इतनी सख़्ती से शासन करते हो?"

"नहीं! इसके लिए प्रधान कारण क्या है, इसे मैं कुछ ऐतिहासिक उदाहरण देकर बतलाऊँगा। जब बोल्शेविक अधिकारारूढ़ हुए तो अपने शत्रुओं के प्रति वह नरम और सरल थे। उदाहरणार्थ उस समय मेन्शेविक् (नरम समाजवादी) और समाजवादी क्रान्तिकारी भी अपने अपने समाचार-पत्र कानूनन् छाप रहे थे। फ़ौजी केडेट् (धनिकों के सैनिक पुत्र) भी अपने समाचार-पत्र निकालते थे। जब सफ़ेद बालवाले जेनरल **क्रास्नोफ़्** ने लेनिन्ग्राद् पर धावा किया और हमने उसे गिरफ़्तार किया; तो फ़ौजी कानून के अनुसार हम उसे गोली मरवा सकते थे, या कम से कम जेल में भेजवा सकते थे। लेकिन उसके वचन देने पर हमने उसे छोड़ दिया।

लेकिन पीछे यह बात साफ़ मालूम होने लगी कि ऐसा करने से हम उस संस्था को ही खतरे में डाल रहे हैं; जिसके निर्माण के लिए हमारी इतनी कोशिश है। हमने ग़लती करते हुए अपना काम आरंभ किया। ऐसी शक्ति के साथ नर्मी श्रमिक-श्रेणी के साथ अन्याय करना है, यह जल्द ही स्पष्ट हो गया। दक्षिण-पक्षीय समाजवादी क्रान्तिकारियों और मेन्शेविकों ने **बोग्दानोफ़्** और दूसरों के साथ मिल कर उस समय **जुंकर** (धनिक श्रेणी के सैनिक) ने विद्रोह किया। वे सोवियत् के साथ दो साल तक लड़ते रहे। मामोन्तोफ़् भी उनसे मिल गया। हमें यह मालूम करने में देर नहीं हुई कि इन सब की पीठ पर पश्चिम की महाशक्तियाँ और जापानी हैं। तब हमने अनुभव किया कि हमारे लिए एक ही रास्ता है कि पूरी सख़्ती दिखलायें।" . . . .

मैंने कहा—"यह निर्दयता की नीति लोगों में बहुत भय का कारण हुई है। इस देश में मुझे मालूम होता है कि हर एक आदमी भय खाता है। और आपका यह महान् तजर्बा एक ऐसी ही जाति में कामयाब हो सकता है जिसने चिर काल से पीड़ित रह कर आज्ञा-कारिता का पाठ पढ़ा है।"

स्तालिन् ने कहा—"तुम भूल कर रहे हो। लेकिन तुम्हारी भूल आम है। क्या तुम समझते हो, कि लोगों को भय दिखला कर १४ वर्ष तक शासन-शक्ति अपने हाथ में रखी जा सकती है? असंभव! ज़ारों को अच्छी तरह मालूम था कि भय से शासन कैसे चलाया जा सकता है। यूरोप का यह पुराना तजर्बा है। फ़्रांस के पूँजीवादियों ने इस भय-प्रदर्शन की नीति में जनता के ख़िलाफ़ ज़ारों की मदद की। लेकिन क्या परिणाम हुआ? कुछ नहीं।"

मैंने जवाब दिया—"लेकिन इसके द्वारा रोमनोफ़् ३ शताब्दियों तक अधिकारारूढ़ रहे।"

"हाँ, लेकिन कितनी बार विद्रोह के कारण वह अधिकार हिल गया। पुरानी बातों को छोड़ दीजिए। (उदाहरणार्थ) १९०५ की क्रान्ति ही को

ले लीजिए। ....आप इसके द्वारा एक दो साल के लिए डर पैदा कर सकते हैं या कुछ अंश में उतने समय तक शासन कर सकते हैं। लेकिन भय-प्रदर्शन के बल पर किसानों पर शासन नहीं कर सकते। दूसरी बात यह है कि सोवियत्-संघ के किसान कमकर चिरकाल पीड़ित रहने के कारण उतने भीरु नहीं हैं जितना कि तुम समझते हो। तुम समझते हो कि हमारी जनता भीरु और सुस्त है, यह बहुत पुराने ज़माने का ख़याल है। पहले इस पर विश्वास किया जाता था, क्योंकि उस समय धनी ज़मींदार रईस पेरिस में जाकर अपना पैसा ख़र्च करने के सिवा और कुछ नहीं करते थे। इसीसे लोग समझने लगे कि रूसी सुस्त होते हैं। लोग सोचते थे, कि किसान आसानी से डराये और अधीन किये जा सकते हैं। यह ग़लत ख़याल था। और कमकरों के संबंध में तो यह ग़लती तिगुनी थी। कमकर फिर अब एक आदमी का शासन सहन नहीं कर सकेंगे। ऐसे व्यक्ति जो यश के सर्व्वोच्च शिखर पर पहुँच गये थे, उसी वक्त उनका पतन हो गया, जब कि उन्होंने जनता से संबंध तोड़ा। **प्लेख़ानोफ़्** के हाथ में बहुत भारी शक्ति थी, लेकिन जब राजनीति में उसने गड़बड़ की, उसी समय जनता ने उसे भुला दिया। त्रोत्स्की को भी बहुत अधिकार मिला था, हाँ, उतना ऊँचा नहीं, जितना कि प्लेख़ानोफ़् को। और आज वह भी भूला जा चुका है। यदि कभी लोग उसे याद भी करते हैं, तो बड़ी घृणा के साथ।" (इस वक्त स्तालिन् ने लाल पेंसल से कोई जहाज़ सा अंकित किया था)।

मैंने कहा—"जब मैं बार बार 'जनता की शक्ति, जनता की शक्ति' को दोहराये जाते सुनता हूँ तो मुझे ताज्जुब होता है कि इतनी वीर-पूजा—जो कि जितनी यहाँ है, उतनी संसार में और कहीं नहीं है—कसे सम्भव है? क्योंकि आपके इतिहास के भौतिक विचार के ख़िलाफ़ यह बात जाती है। तुम्हारा यह भौतिकवाद[1] नेताओं और लांछनों को सड़कों

---

[1] सभी चीजें पंचभूतों से बनी हैं। मनुष्य भी पंचभूतों की उपज है।

पर मूर्तियों और चित्रों के रूप में प्रदर्शित करने के ख़िलाफ़ है। तुम लोगों के लिए यही उचित है कि अज्ञात सिपाही या किसी दूसरे व्यक्ति का सन्मान न करना। कैसे तुम इस विरोध का परिहार करोगे?"

"तुम भूल कर रहे हो। मार्क्स के उस भाग को पढ़ो, जिसमें वह दर्शन की दरिद्रता के बारे में लिखता है।"

स्तालिन् के सिर के ऊपर स्वेत-केश **कार्ल मार्क्स** का चित्र लटक रहा था। जब जब हमारे वार्तालाप में उस महान् समाजवादी का ज़िक्र आता, मैं उसके चित्र की ओर देखने को मजबूर होता।

"वहाँ तुम्हें मालूम होगा, कि मनुष्य इतिहास का निर्माण करते हैं। लेकिन वैसे नहीं, जैसे कि तुम्हारी कल्पना कह रही है। मनुष्य इतिहास का निर्माण करता है, लेकिन उस निश्चित वातावरण की प्रतिक्रियाओं से, जिस वातावरण में कि वह डाल दिया गया है। प्रत्येक पीढ़ी को एक नये वातावरण का सामना करना पड़ता है। साधारणतया यह कहा जा सकता है कि महान् पुरुषों का मूल्य केवल इसी में है कि वह अपनी परिस्थिति के वातावरणों का योग्यता के साथ मुक़ाबला कर सकें। नहीं तो वह शेख़-चिल्ली है। .... मेरी राय में यह इतिहास है जो कि मनुष्यों को बनाता है। हम तीस साल से मार्क्स को पढ़ रहे हैं।"

मैंने कहा—"लेकिन हमारे प्रोफ़ेसर दूसरी तरह से व्याख्या करते हैं।"

"वह ऐसा करके मार्क्सवाद को आम-फ़हम बनाना चाहते हैं। मार्क्स ने ख़ुद कभी वीर के काम के महत्त्व से इनकार नहीं किया है। दरअसल उसके काम का महत्त्व बहुत बड़ा है।

"क्या मैं इससे यह मतलब निकाल सकता हूँ कि यहाँ मास्को में भी

उसीसे उत्पन्न होकर उसीमें हमेशा के लिए लीन हो जाता है। इसलिए उत्पन्न-विलीन होती पंचभूत परंपरा या मनुष्य परंपरा को महत्त्वपूर्ण कार्यों का श्रेय होना चाहिए, न कि क्षणविध्वंसिनी मनुष्य व्यक्ति को।

एक आदमी शासनकर्त्ता है? समिति नहीं। और मैं मेज़ की बग़ल में १६ कुर्सियाँ देख रहा हूँ।"

स्तालिन् ने कुर्सियों की तरफ़ देखा—"व्यक्ति नहीं निर्णय करते। हर एक कौंसिल (समिति) में ऐसे लोग होते हैं, जिनकी सम्मति का ख़्याल करना होता है। लेकिन ग़लत सम्मति भी मौजूद होती है। हमें ३ क्रान्तियों का अनुभव है कि १०० व्यक्तियों के किए निर्णयों में ९० एकतर्फ़ा थे। हमारी मुख्य संस्था है पार्टी (कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय समिति और उसके ७० सदस्य। इन ७० सदस्यों में कितने ही हमारे योग्य उद्योग-निष्णात हैं। कितने ही सहयोग-निष्णात हैं, कितने ही श्रेष्ठ व्यापारी हैं। कितने ही और सहयोगी और वैयक्तिक कृषि की योग्यता में विशेषज्ञ हैं। और फिर कितने ही ऐसे आदमी हैं, जो कि नाना जातियों—जिनसे हमारा सोवियत्-संघ बना है—से कैसे बर्ताव करना चाहिए, इसका उच्च दर्जे का ज्ञान रखते हैं।.....यह समिति व्यक्ति को मौक़ा देती है कि अपने आंशिक पक्षपात का संशोधन करे। समिति के साधारण हित के लिए हर एक आदमी अपना अनुभव प्रदान करता है। इस ढंग के विना बहुत ज़्यादा भूलें होंगी। चूंकि हर एक आदमी निर्णय में भाग लेता है, इसलिए हमारा फ़ैसला बहुत कुछ ठीक होता है।..........."

घड़ी की सूई—जिसे कि मैंने सामने टेबुल पर रखा था—बतला रही थी कि हमारे पास समय बहुत कम है। मैंने एक दूसरा प्रश्न ऐसी बे-तकल्लुफ़ी से रक्खा, जिससे मालूम होता था, कि मैं अमेरिका के प्रति रूस के ख़याल को नहीं जानता। मैंने कहा—"इस देश में हर जगह मैं देखता हूँ कि अमेरिका का सन्मान किया जाता है। एक ऐसा राज्य जिसका उद्देश्य है, पूँजीवाद को उलट देना—कैसे एक ऐसे देश का सन्मान करता है जहाँ पर कि पूँजीवाद अपने विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुका है।"

एक क्षण के लिए भी रुके विना स्तालिन् ने एक अत्यन्त सुन्दर उत्तर दिया—"आप बात को बढ़ा कर कह रहे हैं। अमेरिका की हर एक बात के

लिए हमारे यहाँ सन्मान नहीं है। उद्योग, साहित्य, व्यापार के हर एक काम में व्यावहारिकता का ध्यान जो अमेरिका में पाया जाता है, उसीके लिए हमारे यहाँ सन्मान किया जाता है। वे मजबूत आदमी हैं या कम से कम वहाँ बहुत से मजबूत आदमी हैं। दिमाग़ में भी और शरीर में भी मजबूत। काम और प्रतिदिन की घटनाओं के बारे में उनका सारा व्यवहार मजबूत है। अमेरिकन जीवन का व्यावहारिक कार्य तथा उसकी सादगी हमारे सन्मान का पात्र है।..............."

"जहाँ तक मुझे मालूम है, तुम्हें कुछ ही महीने यूरोप में रहने का मौक़ा मिला है। जब कि लेनिन् वहाँ २० साल रहा। तुम्हारे विचार में घर में रह कर क्रान्तिकारी नेतृत्व की तैयारी अच्छी रही या विदेश में रहकर?"

उसने 'हाँ' और 'न' में जवाब न दे कर इसकी एक साधारण व्याख्या की।

उसने कहा—"लेनिन् को मैं अपवाद समझता हूँ। रूस के भीतर रहनेवालों में भी ऐसे बहुत कम थे जो देश में होती घटनाओं का पूरा पूरा ज्ञान रखते हों, लेकिन लेनिन् देश से बाहर रहते भी उनका पूरा ज्ञान रखता था। मैं उससे कई बार (१९०७, १९०८ और १९१२ ई०) बाहर जाकर मिला और मैंने आमतौर से देखा, कि वह रूसी राजनीतिकों के पुलंदे के पुलंदे पत्र पाता था। रूस में क्या घटित हो रहा है, इसे वह उन लोगों से भी ज़्यादा अच्छी तरह जानता था, जो कि देश के भीतर रहते थे। तो भी इसे वह अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता था कि उसे हमेशा बाहर रहना पड़ रहा है। जो लोग कि रूस में रह गये थे—और उनकी संख्या बहुत अधिक थी—उन्होंने आन्दोलन की निश्चय ही ख़ूब मदद की। जिन्होंने बाहर जाकर आन्दोलन की मदद की, उनकी संख्या घर में रह कर काम करनेवालों की अपेक्षा २०० में एक थी और आज केन्द्रीय समिति में ३ या ४ ही ऐसे सदस्य हैं जो कि विदेश में रह चुके थे।........."

मैंने कहा—"हमें बड़ा आश्चर्य हुआ जब कि समानता की स्थापना को तुमने मध्यम वर्ग का दुराग्रह बतलाया।"

स्तालिन् ने जवाब दिया—"एक पूर्णतया समाजीकृत राज्य, जिसमें हर एक व्यक्ति को एक ही परिमाण में मांस रोटी मिले, एक ही प्रकार के कपड़े मिलें, वही सामग्री और उतने ही परिमाण में हर एक सामग्री मिले—ऐसा समाजवाद मार्क्स को स्वीकृत नहीं था। मार्क्स सिर्फ इतना ही कहता है कि जब तक श्रेणियों का भेद बिलकुल नष्ट नहीं हो जाता, और जब तक श्रम, इच्छा—क्योंकि अभी बहुत लोग काम को बोझा समझते हैं—का विषय नहीं हो जाता, तब तक ऐसे बहुत से लोग मिलेंगे, जो चाहेंगे कि दूसरे उनसे ज़्यादा काम का बोझा उठावें। जब तक कि श्रेणियों का भेद बिलकुल नष्ट नहीं हो जाता, तब तक लोगों को तनख्वाह उनके काम के मूल्य—अधिक उपज की योग्यता—के अनुसार हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार दिया जायगा। यह है, मार्क्सवाद का सूत्र, समाजवाद की पहली अवस्था के लिए। जब समाजवाद अपनी पूर्ण अवस्था पर पहुँच जायगा, तो हर एक आदमी अपनी कार्य-क्षमता के अनुसार काम करेगा और अपने काम के लिए आवश्यकता के मुताबिक उसे वेतन मिलेगा। यह बिलकुल स्पष्ट है कि भिन्न भिन्न लोगों की छोटी और बड़ी भिन्न भिन्न आवश्यकताएँ हैं। समाजवाद ने कभी नहीं इनकार किया, कि व्यक्तियों की अपनी अपनी भिन्न भिन्न रुचि और भिन्न भिन्न आवश्यकताएँ—प्रकार और परिमाण दोनों में—हैं। **स्टर्नर** और गोथा की योजना का मार्क्स ने जो खंडन किया है, उसे पढ़ो। वहाँ पर मार्क्स ने समानता की स्थापना के सिद्धान्त का खंडन किया है। समानता स्थापित करना दकियानूसी किसानी मनोभाव का अंश है। यह समाजवादी नहीं है। पाश्चात्य लोग बातों को इस तरह और ऐसे दकियानूसी ढंग से देखते हैं कि वे ख़याल करने लगते हैं, कि हम हर एक चीज़ को बराबर बाँटना चाहते हैं। यह **बाबेकोफ़्** का मत है। उसे वैज्ञानिक समाजवाद का कुछ भी ज्ञान नहीं था।......"........

दल की आँखों से वह गिर गया। उसने देखा कि लीडरी मेरे हाथ से चली जा रही है। शिक्षित व्यक्ति जब वैयक्तिक अभिमान और स्वार्थ के लिए निराश होता है तो वह अक़्ल खोकर और गिरकर नीचता की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है। बुख़ारिन् जैसे लोगों ने देखा—पार्टी में उसकी बात कोई सुननेवाला नहीं है, देश में उसके प्रति घृणा फैली हुई है। लेखनी और भाषण का उपयोग वह अपने मतलब के लिए नहीं कर सकता। तब उसको खयाल आया—आर्थिक योजनाओं और यंत्रों के अधिक प्रचार ने असन्तुष्ट व्यक्ति के हाथ में भी काफ़ी ताक़त छोड़ रखी है। कारख़ाने का बायलर ख़राब कर दो और ४००० आदमी १० दिन के लिए बेकार हो जायँ। खानों के पंप को ख़राब कर दो और सारी खान पानी से भर जाय। हज़ारों आदमी बेकार हो कर घर बैठ जायँगे। रेल के सिगनल में ज़रा ख़राबी कर दो, गाड़ियाँ लड़ जायँ। इन सब से वह लोगों में आतंक और नेताओं के प्रति अविश्वास प्रकट करने में सफल हो सकते हैं।

बुख़ारिन् जैसे लोगों ने ऐसा ही किया। पकड़े गये, गवाही से कसूर साबित हुआ, जेल की एकान्त कोठरी में वह अपने पिछले जीवन पर विचार करने लगे—"कैसे जिस आदर्श के लिए अपने जीवन का इतना बड़ा समय उन्होंने दिया? कैसे उन निराशा के दिनों में अपनी जान को हथेली पर रख कर वे घूमा करते थे? कैसे उनकी ही तरह हज़ारों औरों ने अपने जीवन अर्पण किये? कितने ही साइबेरिया के जेलों और फाँसी के तख़्तों पर अपने प्राण को विसर्जित कर चुके। उनकी कुर्बानियाँ व्यर्थ नहीं गईं। आदर्श का ठोस रूप सोवियत् सरकार की शकल में सामने आया। यह सब देखकर क्या हमारे लिए यह लज्जा की बात नहीं कि वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षा के लिए हमने अपने आदर्श के इस साकार रूप को तोड़ना चाहा! अपने आदर्श के दुश्मनों फ़ासिस्ट राज्यों तक से हम अपने इस हीन कार्य में मदद लेने से भी बाज़ नहीं आये। ओह! यह घोर पतन!"

और तब बुख़ारिन् आकर न्यायालय में कहता है—

मैंने कहा—"कहा जाता है कि तुम पँवारा बनाने के ख़िलाफ़ हो और तो भी तुम्हारी प्रसिद्धि में कोई चीज़ उतनी सहायक नहीं हुई, जितनी कि यह पँवारा कि स्तालिन् हमेशा पाइप (तंबाकू) पीता रहता है।"

वह हँस पड़ा—"तुम देख रहे हो, कि मुझे उसकी कितनी कम आवश्यकता है। आज मैं उसे घर छोड़ आया।"

"तो क्या तुम सचमुच पँवारा के ख़िलाफ़ हो?"

"नहीं; जब कि वह ग्रामीण (जनता का) पँवारा हो।"

"देर हो गई। क्या कृपया आप अपनी दी हुई इस पुस्तिका पर अपना हस्ताक्षर कर देंगे?"

उसने सिर हिलाया; लेकिन वह किंकर्तव्यविमूढ़ सा दिखाई पड़ा, क्योंकि वह इस यूरोपीय प्रथा का आदी नहीं था। "हाँ, अच्छा! लेकिन मुझे क्या लिखना होगा?"

दुभाषिये ने कहा—"तुम्हारा अपना नाम। और हेर् **लुड्विग् का भी।**

उस वक्त के उसके संकोच ने मुझे बहुत ज़्यादा उसकी ओर आकर्षित किया। उसने लाल पेंसिल—जिससे कि चीन्हें खींच रहा था—को उठा कर पुस्तिका पर लिख दिया। मैंने गिना, ३ ताव काग़ज़ पूर्णतया उसकी चिन्हारियों से भरे हुए थे। .... मैंने खड़े होकर उससे पूछा—"आप आश्चर्य तो नहीं करेंगे मेरे एक प्रश्न पूछने पर?"

"रूस में होनेवाली कोई भी बात मुझे आश्चर्यित नहीं कर सकती!"

"दिमाग़ का ढाँचा अन्तर्राष्ट्रीय है। जर्मनी में भी होनेवाली कोई बात हमें आश्चर्यित नहीं कर सकती। क्या भाग्य पर तुम्हारा विश्वास है?"

वह बड़ा गंभीर हो उठा और मेरी तरफ़ मुँह कर के उसने अपनी नज़र मेरे चेहरे पर गड़ाई, फिर थोड़ी गंभीर नीरवता के बाद बोला—"नहीं, मैं भाग्य को नहीं मानता। यह बिलकुल मिथ्या-विश्वास है। यह निर्बुद्धिपूर्ण विचार है।"

वह हँस पड़ा और धीरे धीरे मन्द-स्वर में जर्मन भाषा में कहा—"स्चिक्सल् स्चिक्सल् (भाग्य)"।

फिर वह अपनी भाषा में बोलने लगा—"ठीक वैसे ही जैसे यूनानियों का। उनके देवी और देवता थे जो ऊपर से हर बात के होने की प्रेरणा करते थे।"

मैंने कहा—"तुम सैकड़ों ख़तरों से हो कर गुजरे हो। जेल और निर्वासन के समयों में, क्रान्तियों और युद्धों में। यह सिर्फ़ भाग्य ही है कि तुम मारे नहीं गये; और आज तुम्हारी जगह पर दूसरा आदमी नहीं है।"

उसे कुछ अन्कुस सा लगा, लेकिन ज़रा ही देर के लिए। फिर उसने साफ़ और ठनकती आवाज़ में कहा—"भाग्य नहीं, हेर् लुड्विग् ! भाग्य नहीं। शायद वहाँ आन्तरिक और बाह्य कारण थे, जिनके कारण मेरी मृत्यु नहीं हुई। लेकिन यह हो सकता था कि यहाँ मैं नहीं दूसरा बैठा होता।"

मालूम होता था कि वह इस घने और अन्कुस लानेवाले बादल को चीर कर अपनी स्पष्ट तर्क-श्रेणी पर लौट जाना चाहता था। उसने कहा—"भाग्य ! नियम के सिद्धान्त के विरुद्ध है। यह कुछ छायावाद सा है। और ऐसी छायावादी बात में मुझे विश्वास नहीं। ज़रूर ऐसे कारण थे, जिनकी वजह से मैं इन सारे ख़तरों से बच निकला। यह सिर्फ़ अकस्मात् या भाग्य से नहीं हुआ।"

श्चिस्कल् (भाग्य, भवितव्यता)! इस ज़बर्दस्त जर्मन शब्द की प्रतिध्वनियाँ अब भी मेरे कानों में गूँज रही थीं, जब कि हम अपनी मोटर पर आकर बैठे।

***   ***

चिरकाल से लोग अपने वीरों की प्रशंसा के गीत गाते और उनके विषय में अपने हृदयोद्गार प्रकट करते आये हैं। सोवियत्-संघ की नाना

भाषा-भाषी जनता ने भी लेनिन् और स्तालिन् के गीत बनाये हैं। अत्याचार और भूख से जिन्होंने उन्हें मुक्त किया, जिन्होंने अथाह अन्धकार से निकाल कर उन्हें प्रकाश में रखा, जिन्होंने परतंत्रता की बेड़ी काट कर मुक्त किया, २० ही वर्ष के भीतर उन्होंने अपनी आँखों के सामने ऐसा संसार देखा, जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे। ऐसे महापुरुषों के लिए कृतज्ञता से दिल का भर जाना बिलकुल स्वाभाविक है। लेनिन् और स्तालिन् की प्रशंसा में बने गीत सिर्फ़ साहित्यिक कवियों ही ने नहीं बनाये हैं, बल्कि उनमें से कितने ही साधारण जनता के हृदय से निकले हैं। और बहुतों के कर्त्ताओं का तो नाम भी दुनिया नहीं जानती। स्तालिन् के संबंध में बनी कुछ कविताओं को हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

(१)

जब कभी जनता के लिए तुम्हारे शब्द निकलते हैं;
तो मँडराते बाज़ जैसी हमारी नज़र हो जाती है।
जो कोई तुम्हारे बुद्धिमत्ता के शब्द सुनता है,
उसे वह सदा के लिए अपने हृदय पर उत्कीर्ण करता है।

(२)

तुम्हारा आज़माया हुआ फ़ौलाद हमारे सभी दुश्मनों के ऊपर,
बिना विचलित हुए और किसी को न छोड़े गिरता है।
अपने नेता सूर्य-मित्र का मैं सम्मान करता हूँ,
जो कि हमारे शत्रुओं का एक एक कर के संहार करता है।

(३)

मनुष्य का सुख तुम ने हमें दिया;
यह स्तालिन् के हाथ का काम था।
तुम्हारी अंगुलियों ने इसे शब्द शब्द लिखा;
हमारे इस देश के विधान पर।

सुखमय श्रम में सभी बराबर,
सब को अद्भुत है अधिकार।
स्तालिन् के शब्द अति स्पष्ट सरल,
स्तालिन् के शब्द अति महान् और सत्य।

(४)

महान् नेता हमें एक ढाल दी तुम ने,
रत्नजटित तारा आड़ने के लिए।
दी जवानी काल के आघात से अनाशमान,
अनन्त सुखमय दिनों की।

इन ग्रामीण कविताओं के कवि अज्ञात हैं।

चुवाश् जाति के कवि **'शेलेपि'** ने 'सर्प' कविता लिखी है। सर्प का मतलब यहाँ युद्ध की आग भड़काने वाले साम्राज्यवादी फ़ासिस्टों से है।

(५)

सर्पों के गुम्बद के ऊपर,
है श्रमिकों की भूमि।
सर्पों के गुम्बद के ऊपर,
है श्रमिकों का कानून।

(६)

तेरी निर्मल दृष्टि हे प्रिय नेता,
है दृष्टि हमारी।
तेरे निर्मल सुविचार सभी,
हैं स्पष्ट विचार हमारे।

बहुत सी कविताओं में स्तालिन् की प्रशंसा और उपमाओं में निम्न प्रकार के वाक्य उपयुक्त हुए हैं—

(७)

"शिखर जहाँ से क्षितिज दीखता"
"नेता और भ्राता"
"बाज़, हज़ारों बाज-बच्चों के साथ"
"जनता का इंजीनियर"
"चट्टान यूसेफ़् स्तालिन्"
"पार्टी क़ा हीरक अति प्रकाशमान"
"चन्द्र-सूर्य के नीचे अति चतुर मनुज"
"निर्भय योद्धा"
"महान् लेनिन्-जैसा"

(८)

यदि होते दो हृदय मेरे सीने में,
मैं लेकर चढ़ घोड़े पर।
ले आता उन्हें मास्को,
पुर-द्वार उतरता अश्व से।
लेता निकाल कटिबन्द रेशमी,
रखता उस पर दो ज्वलित हृदय।
देता रख सुघड़ पावड़ों पर,
कहता पुकार दरवानों को।
उपहार स्तालिन् के लिए एक रेशमी पोटलिका,
पोटलि से हृदयद्वय जल उठते,
जल उठते, जैसा महा हृदय,
जगमग करता क्रेमलिन् में।

—अज्ञात कवि।

(६)

दाग़स्तानी कवि सुलेमान स्तालस्की कहता है—

जीवन बढ़ता है आगे,
दल करता है नेतृत्व।
श्रमिकों का महाप्रयाण,
साथ तुम्हारे उनके ध्वज़।
स्तालिन्!

तव तरुणायी में चमकी,
तव ज्योति दिखाती पथ श्रमिकों को;
नेतृत्व जहाँ तव शोक नहीं,
जीवन है सुखमय।
स्तालिन्!

वर्षों बीते और कभी नहीं,
जब से हम को त्राण दिया;
आया दुर्भग वत्सर कोई।
उत्तुंग शिखर से तुम को,
है साफ़ दीखते दूर क्षितिज,
स्तालिन्!

अरिभुज को तुम ने भग्न किया,
दृढ़ किया हमारे भुज को।
और पूर्ण विजय माला को,
दे दिया शीर्ष दुर्बल के।
एक कुंजी नवज़ीवन की,
स्तालिन्!

तेरा, ओ मेरे युगप्रसिद्ध !
जिस का है नाम,
है सुन्दर कृतियों की संज्ञा।
तेरा कि जिसने शब्द सुने,
औ समझे मन दुखियों के,
तेरा गाता हूँ मैं यश।
स्तालिन् !

(१०)

ऊपर ऊपर घाटी के,
गिरि-शिखर तुंग।
ऊपर ऊपर शिखरों के,
है नभ महान्।
किन्तु स्तालिन् के आगे,
है खर्व गगन।
सम सम हैं तेरे केवल,
वे उच्च विचार।
ऊँचे उगते हैं नभ में,
तारे और रजनीपति।
रवि सन्मुख होते मलिन किन्तु,
वह रवि भी होता मलिन,
चमक तेरी के सन्मुख।
रवि-किरण लुप्त होती,
रजनी के सन्मुख;
पर वुद्धि पार कर उसे चमकती।
अति कठिन धातु है,
यह कठिन लौह,

पर धातु कल्पना की तेरी,
है कठिन कठिन तर।
तू नभ से है अति महान्,
सन्मानित है इस से ही,
इन सभी पर्वतों भीतर।
औरों के ऊँचे ऊँचे,
नभचुम्बी सुविचारों को;
ऊँचे पर्वत के वासी,
नहिं लाते मन में।
जन-नेत्र चमत्कृत होते,
उन गिरिबाज़ों से,
जब शब्द पहुँचते तेरे,
आदेश हमें देने को।
जो शब्द तेरे सुनता है,
नहिं उसे बिसर वह सकता।
जो कोई अवगम करता,
तेरी उस हितशिक्षा को;
जय-शिक्षा पाई उसने,
हारेगा कभी न रण में।
उत्सुक हैं सारे जनगण,
ऊँचे पर्वत-पुंजों में;
कि देवें दिल को अपने।
तेरी सच्ची शिक्षा में।
मुँह फेर ज़रा तो देखो,
शत शत हैं पीछे तेरे।
वे हैं तेरे अनुयायी,

क्यों कि सत्पथ है तेरा।
एक बार जो तेरा अनुचर,
नहि वह मरने से डरता।
स्तालिन्!
—अज्ञात कवि

(११)

सीमा से सीमा भू तक घाटी औ वन पर्वत में,
जँह बाज़ परम अभिमानी मँडराता केवल ऊपर।
अति प्रेम-पात्र स्तालिन् सुचतुर के (गुण-गौरव को ले कर),
जनता के हृदयों से उठता संगीत।
द्रुततर बाज़ों की गति से यह गीत उड़ रहा नभ में,
कम्पित हैं अत्याचारी सब इसके भय-भैरव से।
कंटकित-तार-संरक्षित औ दुर्ग-गुप्त सीमाएँ,
अवरुद्ध न कर सकती हैं संगीत सतत-प्रसरण को।
नहिं कोड़ा और न गोली कर चुप सकता है इसको,
यह साभिमान लँघ जाती खाईं औ मोर्चा-बन्दी।
रिक्शों के चलते पहियों औ ओठों से कुलियों के,
हलवाहों के हल से भी है गीत निकलता इसका।
जय कर्त्ता ध्वज सा इसको ऊँचे स्वर से वह गाते,
जनता का संयुत-संगर बढ़ रहा प्रबल पंक्ती में।
ऊँचे और ऊँचे स्वर से साहस औ अग्नि बढ़ाता,
बढ़ रहा बढ़ाता अपने अत्याचारी को मग से।
कर प्राप्त विजय हम याँ पर अब साभिमान हैं गाते,
स्तालिन् के युग को मिल कर हम सम्मानित हैं करते।
सुखमय अद्भुत नवजीवन को गाते हैं हम अपने,

अपनी पाई विजयों के गाते सुख के गीतों को।
सीमा से सीमा भू तक घाटी औ वन पर्वत में,
घहराता यान गगन का, मोटर गर्जन करती जहँ;
जनता के अतिशय प्रेमों का भाजन जो है स्तालिन्,
यह विजयी जनता सारी उस सुचतुर के यश गाती।

—मिखाइल् इन्युश्किन्

* * * *

लोरी

लाउ लाउ लाउ ला।
रात आई मेरे बच्चे सो जा।
सो जा मेरे छोटे भूरी आँखों वाले!
मैं गाती हूँ तेरे लिए,
बड़े दिन होंगे।
तेरा भाग्य।
ओ मेरे प्रसिद्ध,
खेत और जंगल,
सरिता और गिरिवर,
जो कुछ देखता है मेरे धनी,
सब तेरे।
मेरे छोटे भूरीआँखो वाले!
रात आई,
हो गए राजपथ सूने,
खेतों का काम बन्द हुआ,
सुनता है घर आने के गीत,
दूर से ट्रैक्टर ड्राइवरों के।

"दस बार भी यदि मैं गोली से उड़ाया जाऊँ तो मैं उसका पात्र हूँ।"

असल बात यह है। लेकिन पूँजीवादी पत्रकार लोगों को उलटा-पुलटा समझा कर सोवियत्-शासन को कमज़ोर साबित करना पसन्द करते हैं।

दूसरे मुल्कों में प्रचार किया जाता है—स्तालिन् ख़ून का प्यासा है। उसको इस तरह चित्रित किया जाता है, मानो वह बड़ा स्वार्थी है, बड़ा महत्त्वाकांक्षी है, दया और मानवता उसमें छू तक नहीं गई है। लेकिन सोवियत् जनता के लिए स्तालिन् क्या है? वह गाँधी जी से भी सौगुना ज़्यादा अपने देश-वासियों के प्रेम और श्रद्धा का पात्र है। सोवियत् के हर स्त्री-पुरुष की रगों में बिजली दौड़ जाती है, जब वह तवारिश स्तालिन् का नाम सुनते हैं। क्योंकि वह जानते हैं, सोवियत् का आज का आर्थिक वैभव स्तालिन् के पथ-प्रदर्शन से हुआ है। खेती को पंचायती बनाना, पंच-वार्षिक योजनाओं को सफल करना, स्तालिन् का काम था। स्तालिन् किसी दूर भविष्य के स्वर्ग का प्रलोभन उनके सामने नहीं रखता। बल्कि वह इसी संसार में स्वर्ग रच कर दिखला रहा है। और इस पर यदि सोवियत् जनता उसे अपना इष्ट देव मान कर पूजती है, तो इसमें अस्वाभाविक क्या बात है! वीर-पूजा मनुष्य के स्वभाव में है। और वह पूजा हमेशा होती भी रहेगी। स्तालिन् को ज़ोर-ज़बर्दस्ती से अपनी बात मनवाने की कोई ज़रूरत नहीं।

* * * * * *

भारत से सोवियत् भूमि बहुत दूर नहीं है। बनारस से २०) से कम में ही पेशावर पहुँचा जा सकता है। वहाँ से ३०) में काबुल होते हुए सोवियत् सीमा—वक्षुतट (आमू दरिया) पर पहुँच सकते हैं। लेकिन सोवियत् यात्रियों के लिए यह रास्ता जाते वक़्त ठीक नहीं है, क्योंकि सोवियत् के भीतर यात्रा का प्रबन्ध सोवियत् की यात्रा-प्रबंधक समिति इन्तूरिस्त करती है, किंतु उसकी शाखा काबल में नहीं है। सब से नज़दीक इन्तूरिस्त कार्या-

जल्दी ही मेरे बच्चे तू होगा बड़ा,
जब बढ़ के तू मर्द होगा,
तू भी पुत्र, कंबाइन् चलायेगा।
हाँ मेरे छोटे भूरीआँखों वाले!
तू सिद्ध करेगा अपने को मेरा पुत्र,
बढ़ने को है तेरे समाजवादी सम्वत्सर।
तेरे सीने पर अच्छे कामों के लिए,
चमकेंगे रंग पदक के।
तू होगा सन्मानित अपने काम में,
तू पिछड़ेगा नहीं संगर में।
कौन तुझ से हाथ मिलायेगा?
हमारा स्तालिन्,
वह मिलायेगा तेरे छोटे हाथों से।
लाउ लाउ लाउ ला।
सो जा कोमल औ गहरी नींद,
ओह कैसा चमकीला यश,
तेरे लिए रक्खा है,
कैसा सुन्दर और यशस्वी जीवन।

—ज़ुरियत् शकोवा

(चेरकास्, स्वायत्तप्रजातंत्र)

८. सोवियत् के कुछ नेता

स्तालिन् सोवियत् का हर समय का नेता है। सोवियत् ही नहीं, बल्कि समाजवाद का जब इतिहास लिखा जायगा, तो मार्क्स और लेनिन् के बाद उसीका तीसरा नंबर आयेगा। सिद्धान्त को खोज निकालना मार्क्स का काम था। अब उसके बारे में कोई दूसरा मार्क्स नहीं हो सकता; चाहे भले ही वह वैज्ञानिक समाजवाद के कुछ नये नियमों को खोज निकाले। इसी तरह दुनिया में समाजवादी क्रान्तियों की हर जगह सम्भावना है; और उन क्रान्तियों को सफल बनाने के लिए प्रतिभाशाली नेताओं की आवश्यकता होगी। उनके सामने भी समस्या वैसी ही विकट होगी, लेकिन प्रथम साम्यवादी क्रान्ति की सफलता का सेहरा लेनिन् के सिर पर ही रहेगा; यह हम कह चुके हैं। समाजवादी समाज का—और सो भी शहरों से लेकर गाँवों तक—निर्माण करने का प्रथम श्रेय स्तालिन् को ही रहेगा।

स्तालिन् एक काल का नेता नहीं है; इसलिए उसे सोवियत् के साधारण नेताओं में नहीं गिना जा सकता। स्तालिन् के बाद सोवियत् का सब से बड़ा सर्वप्रिय नेता **क्लेमिन्ती एफ़्रेमोविच् वोरोशिलोफ़् है।**

(१) वोरोशिलोफ़्

वोरोशिलोफ़् का जन्म १८८१ ई० में एक मज़दूर परिवार में हुआ था। ६ साल की उम्र से ही उसे खान में काम करने के लिए जाना पड़ा। वह कभी स्कूल में नहीं गया। जो कुछ पढ़ा अपने आप पढ़ा। भूख और अपमान समाजवाद को ढूंढ़ कर पकड़ते हैं। वोरोशिलोफ़् से बढ़कर दरिद्रता का अनुभव किसको था? समाजवाद की लहर जो लेनिन् और उसके

साथियों ने चलाई, उसका असर उसपर भी पड़ा; और १९०३ में वह कम्युनिस्ट पार्टी में दाख़िल हुआ। अभी वह लड़का ही था कि एक ज़ार-शाही अफ़सर के सामने टोपी न उतारने के कारण उसे गिरफ़्तार किया गया। उसी वक्त से उसका क्रान्तिकारी जीवन आरंभ हुआ। १९०५ की क्रान्ति में वह **लुगांस्क** के कमकरों की सोवियत् का अध्यक्ष था; और उसने भी क्रान्ति में भाग लिया था। एक तरह सोवियत् के भविष्य के प्रधान सेनापति को १९०५ की क्रान्ति में ही सैनिक विज्ञान का क-ख पढ़ना पड़ा था। स्तालिन् की तरह वोरोशिलोफ़् भी रूस के भीतर ही छिपकर काम करता रहा। लड़ाई के पहले उसे भी कई बार पुलीस के हाथ में पड़ना पड़ा। १९१७ की क्रान्ति में वह प्रगट होकर काम करने लगा। जब गृहयुद्ध आरंभ हुआ, तो उसने उक्रइन् में लाल-सेना की पहली टुकड़ी संगठित की। इस प्रकार लाल-सेना का वर्तमान प्रधान सेनापति ही उसका आरंभक भी था। पहले वह पंचम उक्रइनी-पलटन का सेनानायक बना, फिर दसवीं पलटन का। दोन् की भूमि में जर्मनों से लड़ने में उसने अपने कौशल का परिचय दिया; और सारित्सिन् में जर्मन सेना को इस तरुण सेनानायक के हाथ से हार कर बहुत लज्जित होना पड़ा। १९१९ में वोरो-

मार्शल वोरोशिलोफ़् (युद्ध-सचिव)

शिलोफ़् सारे सोवियत् की सवार सेना का सेना-नायक बनाया गया। १९२४-२५ में वह मास्को सैनिक इलाक़े का सेना-नायक था। वोरोशिलोफ़् बराबर स्तालिन् का घनिष्ट मित्र रहा है। अब भी मास्को के बाहर दोनों के रहने के बंगले नज़दीक नज़दीक हैं। १९२७ में त्रोत्स्की के हटाये जाने पर वोरोशिलोफ़् सोवियत् का युद्ध-मंत्री बना। आज वही संसार की सब से ज़बर्दस्त सेना (जो संख्या और योग्यता, शिक्षा और यांत्रिक शक्ति, सब में अव्वल है। सोवियत् के हर एक सिपाही के पीछे प्रायः १० अश्वशक्ति के यंत्र पड़ते हैं। संसार में अधिक से अधिक यंत्र प्रयुक्त करनेवाली सेनाओं—जैसे फ़्रांस और जर्मनी—में प्रति सिपाही ३ अश्व-शक्ति से ज़्यादा यंत्र नहीं हैं) का प्रधान सेनापति है।

वोरोशिलोफ़् का चेहरा बहुत प्रभावशाली है। जितने विदेशी उससे मिले हैं, सभी उसके स्वभाव की प्रशंसा करते हैं। वह न तो महत्त्वाकांक्षी है, न राजनीतिज्ञ। उसका विषय है सेना-विज्ञान। सोवियत्-भूमि को अपराजित रखना यही रात-दिन उसकी धुन है।

वोरोशिलोफ़् के बाल भूरे हैं, बदन गठीला जैसा कि एक सिद्धहस्त-घुड़सवार के लिए होना चाहिए। सेना में 'क्लिम्' की पूजा होती है। वह इतना प्रिय है लेकिन विनय के नाम पर सिपाहियों को अपने से नीचा समझना उसका सिद्धान्त नहीं है। सिपाहियों में वह हिल-मिल जाता है। एक बार नौसैनिकों का उत्सव था। सेनापति **बुद्योन्नि** के साथ वह भी मौजूद था। सिपाही नाच रहे थे। बड़ी देर के नाच के बाद एक सिपाही ने अपने साथी के कान में कुछ कहा। **वोरोशिलोफ़्** पूछ बैठा—"क्या कहता है?" बतलाया गया—'कह रहा है कि साथी बुद्योन्नि नहीं नाचे।' वोरोशिलोफ़् ने हँसते हुए बुद्योन्नि की ओर देखा। अपनी विकराल मूँछों के लिए मशहूर तथा पोलिश सेना को खदेड़नेवाला सोवियत् सेनापति बुद्योन्नि खड़ा हो गया। उसने ओवरकोट अलग रखते हुए ललकारा —'जो तुममें सब से ज़बर्दस्त नाचनेवाला है, वह सामने आये।' बुद्-

योन्नि तीन घंटे तक नाचता रहा। साथी थक कर बैठ गया। बुद्योन्नि अब भी मूँछ फटकारे खड़ा था।

पक्षपात या दो निगाह से देखना वोरोशिलोफ़् को छू नहीं गया है। निशाना उसका अचूक होता है और इसके लिए सैनिक वोरोशिलोफ़् को अपना आदर्श मानते हैं। व्याख्यान में मज़ाक़ करने में वह बड़ा सिद्धहस्त है। एक बार पार्टी की कांग्रेस में बोलते हुए उसने कहा—"कौन सी कठिनाई बड़ी है मानसिक या भौतिक? निश्चय ही मानसिक ज़्यादा बड़ी है। और वह है क्या? प्रारंभिक विनय के अभाव में सभी चीज़ों का असंगठन। मैं नहीं समझता हूँ कि मैं भेद खोल रहा हूँ"। (हँसी और हर्ष ध्वनि)

कगानोविच् मंच पर मौजूद था। वह बीच में बोल उठा—'अगर तुम कोई भेद खोलो भी, तो पार्टी-कांग्रेस में हम उसे मना नहीं करेंगे।'

सेना की हर एक बातें गुप्त रखी जाती हैं। और उसीको लेकर मज़ाक़िया तौर पर वोरोशिलोफ़् बोल रहा था।

सोवियत् की स्थायी सेना ९,४०,००० है। इतनी बड़ी स्थायी सेना संसार में और कहीं नहीं है। इसके दो मुख्य भाग हैं। एक जापान के मुक़ाबले के लिए पूर्वी सिबेरिया में रखा गया है और दूसरा जर्मनी के मुकाबले के लिए पश्चिम में पोलैंड की सीमा के पास। एक अंगरेज़ लेखक ने सोवियत् सेना के बारे में लिखा है—

"लाल-सेना संसार की योग्यतम सेना है। संख्या में वह जैसी बड़ी है, वैसी ही जोश और हिम्मत में भी। वह अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित है। उसके सेनानायक भी योग्य हैं। यूरोप की सभी सेनाओं से इसमें मशीनों का इस्तेमाल अधिक है। १९२९ में प्रतिसैनिक २·६ अश्व-शक्ति यंत्र था। १९३० में ३·७ और १९३३ में ७·७४।..........लाल सेना के सिपाहियों में ७० सैकड़ा मशीन का काम जानते हैं।"

शिलोफ़् सारे सोवियत् की सवार सेना का सेना-नायक बनाया गया। १९२४-२५ में वह मास्को सैनिक इलाक़े का सेना-नायक था। वोरोशिलोफ़् बराबर स्तालिन् का घनिष्ट मित्र रहा है। अब भी मास्को के बाहर दोनों के रहने के बंगले नज़दीक नज़दीक हैं। १९२७ में त्रोत्स्की के हटाये जाने पर वोरोशिलोफ़् सोवियत् का युद्ध-मंत्री बना। आज वही संसार की सब से ज़बर्दस्त सेना (जो संख्या और योग्यता, शिक्षा और यांत्रिक शक्ति, सब में अव्वल है। सोवियत् के हर एक सिपाही के पीछे प्रायः १० अश्वशक्ति के यंत्र पड़ते हैं। संसार में अधिक से अधिक यंत्र प्रयुक्त करनेवाली सेनाओं—जैसे फ़्रांस और जर्मनी—में प्रति सिपाही ३ अश्व-शक्ति से ज़्यादा यंत्र नहीं हैं) का प्रधान सेनापति है।

वोरोशिलोफ़् का चेहरा बहुत प्रभावशाली है। जितने विदेशी उससे मिले हैं, सभी उसके स्वभाव की प्रशंसा करते हैं। वह न तो महत्त्वाकांक्षी है, न राजनीतिज्ञ। उसका विषय है सेना-विज्ञान। सोवियत्-भूमि को अपराजित रखना यही रात-दिन उसकी धुन है।

वोरोशिलोफ़् के बाल भूरे हैं, बदन गठीला जैसा कि एक सिद्धहस्त-घुड़सवार के लिए होना चाहिए। सेना में 'क्लिम्' की पूजा होती है। वह इतना प्रिय है लेकिन विनय के नाम पर सिपाहियों को अपने से नीचा समझना उसका सिद्धान्त नहीं है। सिपाहियों में वह हिल-मिल जाता है। एक बार नौसैनिकों का उत्सव था। सेनापति **बुद्योन्नि** के साथ वह भी मौजूद था। सिपाही नाच रहे थे। बड़ी देर के नाच के बाद एक सिपाही ने अपने साथी के कान में कुछ कहा। **वोरोशिलोफ़्** पूछ बैठा—"क्या कहता है?" बतलाया गया—'कह रहा है कि साथी बुद्योन्नि नहीं नाचे।' वोरोशिलोफ़् ने हँसते हुए बुद्योन्नि की ओर देखा। अपनी विकराल मूँछों के लिए मशहूर तथा पोलिश सेना को खदेड़नेवाला सोवियत् सेनापति बुद्योन्नि खड़ा हो गया। उसने ओवरकोट अलग रखते हुए ललकारा —'जो तुममें सब से ज़बर्दस्त नाचनेवाला है, वह सामने आये।' बुद्-

योन्नि तीन घंटे तक नाचता रहा। साथी थक कर बैठ गया। बुद्योन्नि अब भी मूँछ फटकारे खड़ा था।

पक्षपात या दो निगाह से देखना वोरोशिलोफ़् को छू नहीं गया है। निशाना उसका अचूक होता है और इसके लिए सैनिक वोरोशिलोफ़् को अपना आदर्श मानते हैं। व्याख्यान में मज़ाक़ करने में वह बड़ा सिद्धहस्त है। एक बार पार्टी की कांग्रेस में बोलते हुए उसने कहा—"कौन सी कठिनाई बड़ी है मानसिक या भौतिक? निश्चय ही मानसिक ज़्यादा बड़ी है। और वह है क्या? प्रारंभिक विनय के अभाव में सभी चीज़ों का असंगठन। मैं नहीं समझता हूँ कि मैं भेद खोल रहा हूँ"। (हँसी और हर्ष ध्वनि)

कगानोविच् मंच पर मौजूद था। वह बीच में बोल उठा—"अगर तुम कोई भेद खोलो भी, तो पार्टी-कांग्रेस में हम उसे मना नहीं करेंगे।"

सेना की हर एक बातें गुप्त रखी जाती हैं। और उसीको लेकर मज़ाक़िया तौर पर वोरोशिलोफ़् बोल रहा था।

सोवियत् की स्थायी सेना ९,४०,००० है। इतनी बड़ी स्थायी सेना संसार में और कहीं नहीं है। इसके दो मुख्य भाग हैं। एक जापान के मुक़ाबले के लिए पूर्वी सिबेरिया में रखा गया है और दूसरा जर्मनी के मुकाबले के लिए पश्चिम में पोलैंड की सीमा के पास। एक अंगरेज लेखक ने सोवियत् सेना के बारे में लिखा है—

"लाल-सेना संसार की योग्यतम सेना है। संख्या में वह जैसी बड़ी है, वैसी ही जोश और हिम्मत में भी। वह अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित है। उसके सेनानायक भी योग्य हैं। यूरोप की सभी सेनाओं से इसमें मशीनों का इस्तेमाल अधिक है। १९२९ में प्रतिसैनिक २·६ अश्व-शक्ति यंत्र था। १९३० में ३·७ और १९३३ में ७·७४।.......... लाल सेना के सिपाहियों में ७० सैकड़ा मशीन का काम जानते हैं।"

(२) महामन्त्री मोलोतोफ़्

सर्वप्रियता में वोरोशिलोफ़् के बाद मोलोंतोफ़् का नंबर है। वह लेनिन् के पुराने साथी क्रान्तिकारियों में है। बोलशेविक पत्र 'प्रोस्वेश्चेन्ये' में उसके लेख १९११ से निकलने लगे थे। वह सोवियत् के अच्छे वक्ताओं में है; और स्तालिन् का बहुत विश्वास-पात्र मित्र है।

प्रधान मंत्री मोलोतोफ़्

(३) कगानोविच्

यह रेल-विभाग का मंत्री है। सोवियत् मन्त्रियों में यह सब से कम उम्र का है। काले बाल और काली मूँछोंवाला लम्बे और सुदृढ़ शरीर का यह सोवियत्-मन्त्री शरीर से बड़ा प्रभावशाली और सोवियत् का सर्वश्रेष्ठ वक्ता है। जाति का यहूदी है। स्तालिन् का इसके ऊपर बहुत अधिक प्रेम और विश्वास है। कठिन से कठिन काम इसे दिया गया और उसे इसने सफलता पूर्वक निबाहा। रेल की समस्या सोवियत् की सब से बड़ी समस्या है। पंच-वार्षिक-योजनाओं में यदि कोई भाग पिछड़ा रहता था, तो यह रेल-विभाग ही। कगानोविच् के हाथ में आते ही उसमें उसने नई जान डाल दी, और उसकी प्रगति तेजी से बहुत आगे बढ़ी। उसके व्याख्यान में बहुत विनोद होता है। एक बार सरकारी आफ़िसों और विभागों की सुस्ती

पर मज़ाक़ करते हुए कह रहा था—'कृषि-मंत्रि-विभाग के पास २९ बोर्ड हैं और २०२ लोकल-बोर्ड।' (लोगों ने ओह ओह कहा)। कगानोविच् ने कहा—"अभी यह तो कुछ नहीं है। हर एक लोकल-बोर्ड सारे स०स०स०र० का प्रबंध करता है।" (हँसी)

एक मर्तबे उसने एक रस्सी के कारख़ाने के दो अधिकारियों का किस्सा सुनाया। 'उसमें एक का नाम था, नेवोस्लाब्नी (अनथक) दूसरे का नाम था प्रेलेस्लिकोफ़् (सुन्दर)। एक था रस्सी बटने वाले विभाग का अध्यक्ष और दूसरा था रस्सी उधेड़ने वाले विभाग का अध्यक्ष। जिस वक्त एक बटता था, उसी वक्त दूसरा उधेड़ता जाता था।' (हँसी)

एक बार उसने ज़िक्र किया—'किसी गवर्नमेंट के पास एक विभाग था निर्णय-सफलता-निरीक्षण विभाग। उसे ५ दिन के काम का निरीक्षण करने में ५ महीने लगे। इस विभाग के शब्दों के आरंभिक अक्षरों को लेने से 'सो जाना' बनता है।

रेल-मंत्री कगानोविच्

"लाल-उषा मोज़े की फ़ैक्टरी को भिन्न भिन्न मंत्रि-विभागों, बोर्डों और ४६ लोकल-बोर्डों ने निरीक्षण किया। निरीक्षणकर्त्ताओं ने फ़ैक्टरीको ९० प्रकार की भिन्न भिन्न हिदायतें दीं। और उनमें से हर एक दूसरे को खंडित करती थीं। योजना बराबर बदली जाती रही।

नतीजा यह हुआ कि फ़ैक्टरी को बिना योजना के ही काम करना पड़ा। १६३३ की योजना अंत में ४ जनवरी १६३४ को स्वीकार की गई। इस प्रकार १६३३ की योजना के काम का आरंभ सिर्फ़ १ साल ४ महीना पिछड़ कर हुआ।"

अयोग्यता के ख़िलाफ़ वह बड़ी निर्दयता के साथ हाथ धोकर पड़ता है। एक बार उसने मज़ाक करते हुए कहा—"एक फैक्टरी को कहीं से चीज़ों की माँग आई। उसमें कुत्ते का कालर इतने परिमाण में था जिस से ज़िले के हर एक कुत्ते का बदन सिर से पैर तक ढँक जाय; और कई टन लालटेन के बर्नर, बिना लैम्प के शीशे के; और बहुत से लैम्प के शीशे, बिना बर्नर के माँगे गये थे।"

कगानोविच् १८६३ में उक्रइन् के एक गरीब यहूदी घर में पैदा हुआ। उसे सिर्फ़ २ साल प्रारंभिक पाठशाला में पढ़ने का मौक़ा मिला। इसके बाद जीविका के लिए मज़दूरी करनी पड़ी। १६११ में वह पार्टी में दाख़िल हुआ और उसने क्रान्ति और गृह-युद्ध में भाग लिया। पार्टी के काम के लिए तुर्किस्तान तथा समारा आदि जगहों पर उसे रहना पड़ा। वहीं स्तालिन् को इसकी योग्यता का पहले पहल पता लगा। फिर १६२२ में यह उक्रइन् के पार्टी-संगठन का अधिष्ठाता हुआ। १६२८ में केन्द्रीय सरकार में मास्को चला आया। आजकल वह सोवियत्-सरकार के अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तियों में है।

(४) लित्विनोफ़्

माख़िम् माख़िमोविच् लित्विनोफ़् संसार का सब से ज़्यादा चतुर वैदेशिक मंत्री है। १८७६ में वह ब्यालिस्तोक् में पैदा हुआ था। उस वक्त यह जगह रूस के अधीन थी। आज कल पोलैंड में है। वह शिक्षित यहूदी घर में पैदा हुआ था। उसे बाक़ायदा हाई स्कूल की शिक्षा पाने का अवसर मिला। ५ साल तक वह ज़ार की सेना में भर्ती हो कर मामूली सिपाही

लय तेहरान में हैं। बनारस से तेहरान तक जाने में ७५) के क़रीब खर्च पड़ेगा। वहाँ से कास्पियन तट पर अवस्थित पह्लवी वन्दर पर १०) में पहुँचा जा सकता है। वीज़ा का इन्तज़ाम तेहरान में इन्तूरिस्त की मार्फ़त करवाना होगा। सोवियत् में हर जगह १ पौंड या १४) रोज़ पर इन्तूरिस्त द्वारा घूमने का इन्तज़ाम हो सकता है। इसी में खाना, रेल का किराया और दुभाषिये के साथ ३ घंटे रोज़ के घूमने का खर्च भी शामिल है। अगर आदमी एक महीने सोवियत् में घूम कर मास्को, ताशकन्द, तिर्मिज़, (अफ़-ग़ानिस्तान सरहद पर) के रास्ते लौटे तो ४२५) में अफ़ग़ानिस्तान की सीमा में पहुँच जायगा। और वहाँ से ५०) में बनारस। ५६०) में यह सारी यात्रा समाप्त हो जायगी। यदि यात्री अकेला जाने की जगह ४ आदमी के दल के रूप में जाय तो उसको कई बातों का सुभीता रहेगा। यदि इन यात्रियों में एक व्यक्ति फ़ारसी भी जानता हो तो ईरान, मध्य एशिया और अफ़ग़ानिस्तान में उसे बहुत सुभीता रहेगा।

राहुल सांकृत्यायन

रहा। अपने क्रान्तिकारी कामों के लिए १९०१ में उसे पकड़ कर सिबेरिया में निर्वासित कर दिया गया; लेकिन रास्ते में से ही चकमा देकर भाग गया। स्वीज़रलैंड में लेनिन् से उसकी मुलाक़ात हुई। १९०३ में पार्टी में आया। कितनी ही बार भेस बदल कर वह रूस आता था; कितनी ही बार षड्यन्त्रों में शामिल होता था। उसके लेख कितने ही नामों से छपते थे। जिनमें से कुछ ये हैं—पापाशा, फेलिके, दाविद्, मोर्देसेह, फिन्केल्स्ताइन्, लित्विनोफ़्, हैरिसन्, लुविन्ये, एम्० जी० हैरिसन्, मुस्ताफ़् ग्राफ़्। उसका असली नाम था मोयेशियेकवलख़। १९०५ के षड्यंत्र में वह शामिल था और चुपके से हथियार भेजने का काम उसे सुपुर्द किया गया था।

१९०६ में कानूनन् पितर्बुर्ग से निकलनेवाले समाचार-पत्र 'नवजीवन' का संपादक बना। १९०७ में फिर उसे बाहर जाना पड़ा और काम था, लाख रुपये के करीब के उन नोटों का भुनाना, जिन्हें कि स्तालिन् ने तिफ़्लिस् के बैंक को लूट कर जमा किया था। लित्विनोफ़् पैरिस् गया। नोट भुनाने का काम हो गया। पीछे फ़्रांस सरकार ने उसे देश से निकाल दिया। फिर वह रूस आया लेकिन फिर भाग कर उसे लन्दन जाना पड़ा। फिर कई साल उसे विदेश ही में रहना पड़ा।

दोहरा जीवन रखने में वह बड़ा सिद्धहस्त था। दिन के वक़्त वह किसी प्रकाशक का मुंशी बनकर हस्तलेख पढ़ता, प्रूफ़ देखता, हिसाब-किताब रखा करता था; और रात के वक़्त फिर उसका क्रान्ति का प्रचार चलता था। पेट की रोटी उसे प्रकाशक की मुंशीगीरी या एक जर्मन बिजली की कंपनी की नौकरी से मिलती थी; और राजनीतिक भूख को मिटाने वाली रोटी लेनिन् से।

लाल-क्रान्ति होने के बाद १९१७ में सोवियत् का प्रतिनिधि बनाकर उसे लंदन भेजा गया। अगस्त १९१८ में ब्रिटिश सरकार ने उसे क़ैद कर लिया; क्योंकि सोवियत् सरकार ने अंगरेज़ों के एक आदमी को क़ैद किया था। अंगरेज़ी प्रतिनिधि के छूट जाने पर वह भी छोड़ दिया गया;

और फिर मास्को लौट आया। वहाँ सहायक वैदेशिक मंत्री बना। १९३० में चिचिरेन् की जेनोवा में हत्या कर दी गई; तब से आज तक लित्विनोफ़् सोवियत् का वैदेशिक मंत्री है।

१९१५ में जब लित्विनोफ़् लंदन में था, उसी समय एक प्रसिद्ध सुन्दरी इवी (सर सिड्नी लो की भतीजी) से उसने शादी की।

१९३३ में लित्विनोफ़् अमेरिका से दूत-संबंध स्थापित करने के लिए वाशिंगटन गया था; और उसमें उसे कामयाबी हुई। लित्विनोफ़् ने वहाँ से अपनी स्त्री से टेलीफ़ोन पर बात की—

लित्०—हेलो?

इवी—हेलो प्रियतम! मैं तुम्हारी बात खूब अच्छी तरह सुन रही हूँ।

लित्०—धीरे से बोलो, सुन रही हो?

इवी—तुम कहाँ हो?

लित्०—धवलगृह (ह्वाइटहाउस) में।......प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट तुम से नमस्कार करने को कह रहे हैं।

इवी—बहुत बहुत धन्यवाद। मेरी तरफ़ से उनसे कहो।...... मिश्का तुम से बोलना चाहता है।

लित्०—मिश्का तुम्हारे पास है? हलो मिश्का! तुम्हारी पढ़ाई कैसी हो रही है।

मिश्का—बहुत अच्छी। पापा! तुम कैसे हो?

लित्०—कैसा मौसम तुम्हारे यहाँ है?

इवी—सुंदर साफ़ बर्फ़! दूत के काम की सफलता के बारे में क्या हुआ? सब ठीक है न?

लित्०—हाँ!

इवी—हम कब तुम्हें देख सकेंगे?

लित्०—प्यार और चुम्बन! पुनर्दर्शनाय।

(५) कालिनिन्

मिखाइल् इवानोविच् कालिनिन् १८७५ में त्वेर् के प्रान्त में एक किसान के घर पैदा हुआ था। १६ वर्ष की उम्र में रोज़ी कमाने के लिए उसे नौकरी करनी पड़ी। पहले एक धनी ज़मींदार के यहाँ घोड़ा मलने आदि के लिए छोटे साईस का काम मिला। गाँव में ज़्यादा आशा न देख कर मिखाइल् पीतर्बुर्ग चला आया; और एक फ़ैक्टरी में मज़दूर हो गया। १८९८ में वह पार्टी में शामिल हो गया। आज वह अखिल-संघ-केन्द्रीय-कार्यकारिणी-समिति का अध्यक्ष अर्थात् सोवियत्-संघ का संघपति है। विदेशी शक्तियों के नये राजदूत पहुँचने पर उसीके सामने अपना प्रमाणपत्र पेश करते हैं।

संघपति कालिनिन्

अब भी वह किसानों जैसे कपड़े पहनता है।

कालिनिन् पुराने बोल्शेविकों में है। यद्यपि ज्ञान और प्रभाव में कितने ही दूसरे उससे अधिक महत्त्व रखते हैं, लेकिन कालिनिन् का सम्मान ज़्यादा है। व्यक्तिगत तौर से स्तालिन् पर उसका बहुत असर है; और किसानों के बारे में तो उसकी राय बहुत क़ीमती समझी जाती है। कालिनिन् एक किसान का लड़का है।

येज़ोफ़्, मिकोयान्, चुबार और और भी कितने ही सोवियत्-नेता हैं। येज़ोफ़् गृहसचिव है; और भीतरी मामलों में उसका बहुत प्रभाव है। जब से हाल के षड्यंत्र—जिसमें बुख़ारिन्, रेदेक् आदि शामिल थे—का उसने पता लगाया, तब से उसकी ख्याति और प्रभाव बहुत बढ़ गया है। इस वक्त वह सोवियत् के आधे दर्जन सर्वोपरि नेताओं में से है।

६—स्त्री-पुरुष

सोवियत्-संघ में स्त्री-पुरुषों के संबंध में भारी और मौलिक परिवर्तन हुआ है। लेकिन पूँजीवादी लेखक और पत्र उसे बढ़ा चढ़ा कर इस प्रकार दिखलाना चाहते हैं कि जिसमें बाहर के अधकचरे सहानुभूति रखने वाले लोग भड़क उठें। इस संबंध में जो परिवर्तन हुआ है, वह दो बातों के कारण हुआ है। सोवियत् राष्ट्र ने सिर्फ सिद्धान्त के रूप ही में स्त्री-पुरुष को बराबर नहीं माना है; बल्कि क्रियात्मक रूप से उसने इसे दिखला दिया है। दरअसल स्त्रियों की कागज़ी स्वतंत्रता तब तक वास्तविक रूप धारण नहीं कर सकती, जब तक कि उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता न हो। पूँजीवादी देश चाहे यूरोप के हों या एशिया के, अमेरिका के हों या अफ़्रीका के, विवाह-संबंध को स्त्रियों के लिए जीविकोपार्जन का एक पेशा मानते हैं। सामाजिक नियम राजनैतिक कानून से भी बलवान् होते हैं; और वह कभी इस बात के लिए उत्साह नहीं देते कि स्त्री अपनी रोज़ी कमाने में पुरुषापेक्षी न हो। रोज़ी कमानेवाली स्त्री को नीची निगाह से देखा जाता है। डाक्टरी, वकालत, प्रोफ़ेसरी—जैसे कुछ काम ऐसे ज़रूर हैं, जिनमें जानेवाली स्त्रियों को उतनी नीची निगाह से नहीं देखा जाता। लेकिन इनमें जानेवाली औरतें कितनी हैं ही ? जिनमें प्रतिभा और शिक्षा है, उनके लिए भी वहाँ पुरुषों से ज़बर्दस्त प्रतियोगिता है। कैसे पुरुषों से ? जो शताब्दियों से इन स्थानों पर अपना पक्का अधिकार जमा चुके हैं। स्त्री जो कुछ स्वतंत्र जीविका कर भी सकती थी, उसमें भी आये दिन बाधा उपस्थित की जा रही है। हिटलर-शासित जर्मनी ने विवाहित स्त्रियों को नौकरी करने से वंचित कर दिया है। उसके अन्दर यही विचार काम कर रहा है; कि विवाह ऐसी स्त्री के लिए एक पेशा मिल

ही चुका है; उसे दूसरे पेशे की ज़रूरत क्या ?

सोवियत् ने स्त्रियों को स्वतंत्र पेशा अख़्तियार करने के लिये सारे दर्वाज़े खोल दिए हैं। आज वहाँ ऐसी स्त्री का मिलना मुश्किल है; जो पति की कमाई पर गुज़ारा करती हो। स्थलीय, समुद्री और वायवीय—तीनों सेनाओं में साधारण सिपाही से ले कर बड़े बड़े अफ़सर बनने तक का अधिकार स्त्रियों को प्राप्त है। वायुसेना में तो उनकी काफ़ी तादाद है। राजनीति में वह खुल कर हिस्सा लेती हैं; और राष्ट्रीय प्रजातंत्रों तथा सोवियत्-संघ-प्रजातंत्र के मंत्री जैसे दायित्वपूर्ण पदों पर वह पहुँच रही हैं। पार्लियामेंट के मेंबरों में उनकी खासी संख्या है। इंजीनियर, प्रोफ़ेसर, डाक्टर ही नहीं, बड़ी बड़ी फैक्टरियों में कितनी ही डाइरेक्टर तथा डिप्टी डाइरेक्टर तक स्त्रियाँ हैं। वर्तमान सोवियत् पार्लियामेंट के सब से कम उम्र के सदस्य क्लाउदिया सखारोवा को ही ले लीजिए। सखारोवा की उम्र अभी १६ साल है। वह रोदिन्की स्थान में पैदा हुई थी। उसके माँ-बाप उसी जगह कपड़े की मिल में मज़दूर थे। आजकल की बोल्शेविक-बुनाई-मिल, जिसकी सखारोवा डिप्टी डाइरेक्टर है, क्रान्ति के पहले एक व्यापारी की सम्पत्ति थी। उस वक्त घंटों का नियम नहीं था; और सखारोवा के माँ-बाप काम के मारे पिसे जाते थे। सखारोवा के जन्म के समय लाल क्रान्ति हो चुकी थी, लेकिन अभी गृह-युद्ध भयंकर रूप धारण किये हुए था। धीरे धीरे सभी जगह सोवियत्-शासन स्थापित हुआ, और हर जगह श्रमजीवियों और किसानों के लिए स्कूल और दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ क़ायम हुईं। सखारोवा ने स्कूल में प्रवेश किया। सोलह वर्ष की उम्र तक उसने प्रारंभिक शिक्षा और अपने भविष्य के व्यवसाय की शिक्षा प्राप्त की। १६३५ में बुनकर के तौर पर उसने काम शुरू किया। साम्यवादी सरकार ने अच्छा काम करने में उत्साह पैदा करने के लिए वेतन और पुरस्कार भी अधिक नियत कर रखा है। जिस साल सखारोवा ने काम करना शुरू किया, उसी साल अलेक्सेइ स्तख़ानोफ़् ने सोवियत् के श्रमिकों के सामने

बुद्धिपूर्वक तत्परता से काम करने का एक नया उदाहरण पेश किया। उसने काम करने के विभाग और यंत्र के उपयोग द्वारा साधारण उपज से कई गुना अधिक कोयला उतने ही समय में निकाला। स्तालिन् ने जब यह खबर पाई तो स्तखानोफ़् को सुदूर दक्षिण दोन् की खानों से बुला कर क्रेमलिन् में उसका सम्मान किया; और चन्द ही दिनों में स्तखानोफ़् की कीर्ति बाल्तिक्-समुद्र से प्रशान्त महासागर तक फैल गई। सखारोवा ने भी स्तखानोफ़् का नाम सुना। पहले वह दो कर्घों पर काम करती थी। फिर उसने सोचा, किस तरह वह अकेले ४ कर्घों का संचालन कर सकेगी। उसमें वह सफल हुई। फिर कुछ दिनों बाद वह ६ कर्घों को चलाने लगी। इस सफलता पर उसका मानसिक हर्ष और उल्लास ही नहीं बढ़ा, बल्कि उसे नक़द इनाम मिले। मास्को और काकेशस् की सैर के लिए टिकट और पैसे मिले; और सब से बड़ी बात यह हुई कि वह कारखाने के प्रधान बुनकरों में गिनी जाने लगी।

पलाजदिया सखारोवा (डिपुटी)

निश्चय ही अगर सखारोवा किसी पूँजीपति के कारखाने में काम करती होती, तो उसे वह सुभीता न होता। पहले तो उसे इतना अच्छा काम करने का जितना चाहिए उतना पुरस्कार न मिलता; और यदि दो से ४ कर्घों को पकड़ती तो एक मजदूर बेकार हो जाता। ६ कर्घे तक पहुँचने तक तो २ मजदूर बेकार हो जाते। इस प्रकार वह अपने सहयोगी मजदूरों के कोप का भाजन बनती। सोवियत् में किसी के बेकार होने का

डर नहीं। अव्वल तो उनके पास काम बहुत है, और जब काम कम हो, तो आदमी को बेकार करने की अपेक्षा काम के घंटों को कम कर वह अधिक आदमियों को काम दे सकते हैं।

सखारोवा सिर्फ अपने ही कामों से सन्तुष्ट न थी; दूसरे साम्यवादी श्रमजीवियों की तरह अपने अनुभव से अपने दूसरे साथियों को फ़ायदा पहुँचाना भी वह अपना कर्तव्य समझती थी। उसने ख़ुद कहा है—"मैंने अपने कारख़ाने के युवक-युवती श्रमिकों को सुधरे हुए ढंग सिखलाने में मदद दी। मैंने कुछ बुनकरों को लेकर उन्हें सिखलाया; कि जिन चीज़ों पर काम करना है, उनकी सावधानी से देखभाल करनी चाहिए। मशीन और पुरज़ों को साफ़ और बाक़ायदा रखना चाहिए।" बोल्शेविक-मिल में आज दर्जनों ऐसे चतुर उत्साही कार्यकर्ता हैं; जिनको सखारोवा ने इतनी थोड़ी उम्र में सिखा कर आगे बढ़ाया। उसी फैक्टरी में एक तरुण बुनकर वान्या स्मिर्नोफ़् भी काम करता था। उसका काम बहुत ख़राब था। जब वह पहले पहल कारख़ाने में आया, तो उसने इतना कपड़ा और सूत ख़राब किया कि उसे काम से हटा दिया गया। सखारोवा ने यह बात सुनी। उसने प्रबन्ध-समिति से उसे फिर लेने के लिए प्रार्थना की; और फिर सिखलाना शुरू किया। पहले ही महीने में उसने अपने हिस्से से एक सौ सात सैकड़ा अधिक काम किया; और कुछ ही महीनों में स्मिर्नोफ़् ने अपने काम के ढंग को इतना सुधारा कि वह अपनी फैक्टरी के अच्छे कार्यकर्ताओं में हो गया।

सखारोवा सिर्फ काम करने में ही अपने साथियों को मदद नहीं देती, बल्कि वह शिक्षा-संबंधी और सामाजिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ी हुई है। वह स्वयं पढ़ने की बड़ी शौकीन है। रूसी और विदेशी साहित्य, राजनैतिक और उद्योग-संबंधी पुस्तकों को पढ़ने का उसे बहुत शौक़ है। वह खुद पढ़ती है, और अपने साथियों की प्रवृत्ति भी पढ़ने की ओर करती है। दो वर्ष के छोटे से समय में जब कि सखारोवा १८वें साल से जरा ही आगे बढ़ी थी,

उसने अपने कार्य द्वारा सब पर अपना सिक्का जमा लिया; और प्रवन्ध-समिति ने उसे कारखाने का असिस्टेंट डाइरेक्टर (सहायक प्रवन्धक) निर्वाचित किया। बोल्शेविक्-मिल हमारे यहाँ जैसी कोई छोटी मोटी मिल नहीं है, इसमें ११००० मजदूर काम करते हैं; और इसीके सहारे रोदिन्की की ३०००० जनसंख्या गुजर वसर करती है। सत्रह वर्ष की लड़की के लिए किसी पूँजीवादी देश में क्या ऐसा स्वप्न भी देखने को मिलता!

जिस वक्त क्लाउदिया सखारोवा को यह पद मिला तो वह भी इस के भारी उत्तरदायित्व को समझ कर सहम सी गई थी। उसने कहा—"मुझे डर मालूम होता था कि मैं इस उत्तरदायित्व को निभा न सकूँगी। लेकिन मजदूर-संघ, इंजीनियर और पार्टी के सदस्यों ने मेरे इस नये काम में मेरी मदद की। पहले हमारा कारखाना अपनी योजना को पूरा नहीं करता था, लेकिन अब हमने अपनी उपज को योजना से भी ऊपर बढ़ा दिया है।"

सखारोवा के माँ-बाप अभी जिन्दा हैं। उसके दो छोटे भाई और एक बहन है। लड़के अभी स्कूल में पढ़ रहे हैं। सखारोवा के माँ-बाप के आनन्द के बारे में क्या पूछना है? कहाँ वह पुराने सौदागर के कारखाने में १२-१२ घंटे खटना और उसपर भी पेट को अन्न तथा तन को कपड़ा दुर्लभ! और कहाँ अब इन्हें सात घंटे रोज़ का काम और अच्छा वेतन! और उनकी बेटी इस छोटी उम्र में फैक्टरी में सहायक प्रवन्धक और इसके बाद देश की सर्वोपरि पार्लियामेंट की सदस्य! सखारोवा के माँ-बाप के घर में, जहाँ चूहे कलाबाजियाँ खेला करते थे, अब रेडियो, फ़ोनोग्राफ़ और सिलाई की मशीन है। खाना, पीना, रहना, सभी काफ़ी ऊँचा है। पार्लियामेंट का सदस्य चुने जाने पर सखारोवा ने कहा—"कहाँ मैं एक १६ वर्ष की कपड़े के कारखाने की मजदूरिन् थी और वही मैं अब राजनीतिज्ञ बन गई? मैं जानती हूँ कि मेरे ऊपर कितनी भारी जवाबदेही है। दुनिया के किसी भी देश में मेरी जैसी अनपढ़ लड़की शासन-संचालन में हाथ डालने का अधिकार नहीं पा सकती।" सखारोवा अब भी अपने कारखाने की

सहायक-प्रबन्धक है; और साथ ही उसे पार्लियामेंट के सदस्य का कर्तव्य भी करना पड़ता है। अभी हाल में वह अध्ययनार्थ औद्योगिक एकेडेमी में इंजीनियर का डिप्लोमा पाने के लिए दाखिल हुई है।

*** ***

हम लोग पतिव्रता, सती, आदि शब्दों से अपने यहाँ की स्त्रियों को पृथ्वी की नहीं, आसमान की चीज़ बना देते हैं; और इन शब्दों से जैसा चित्र हमारे सामने खिंचता है, हम मान लेते हैं कि वैसा ही रूप हमारी स्त्रियों का है। प्रेम को हम दैवी विभूति कहते हैं। पहले तो यह भी विचारणीय बात है कि स्त्रियों के बारे में जो हमारी भावना है, क्या वास्तव में वह भावना सौ में सत्तर ठीक है? खैर, कुछ भी हो, हम इसी भावना के बटखरे से सभी जगह तौलना चाहते हैं; और इस तरह हमारे देश के कितने ही लोगों की नज़र में रूस की स्त्रियाँ भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा में पहुँच गई जँचती हैं। लेकिन वास्तविकता क्या है? हमारे यहाँ एक लड़की विवाहित होती है। विवाह के पीछे भी माँ-बाप को ख़याल होता है, कहाँ हमारी लड़की को खाने-कपड़े का सुख होगा? खाना-कपड़ा देनेवाले को वे लोग ढूँढ़ते हैं। पति का मतलब है खाना कपड़ा देनेवाला। पत्नी का मतलब है खाना-कपड़ा पाने के लिए जो एक पुरुष की मुहताज़ है। पतिव्रत और सतीत्व का मतलब है, जो तुम्हें खाना कपड़ा देता है; मन-वचन-कर्म से उसकी तावदारी करो। पति चूँकि खाना-कपड़ा देता है, इसलिए पत्नी पर वह ख़ास अधिकार रखता है। यदि स्त्री खाने-कपड़े के लिए किसी दूसरे की मुहताज न हो; तो निश्चय ही पुरुष का यह अधिकार गिर जाता है। शास्त्र और समाज सभी स्त्री के लिए तो पातिव्रत्य और सतीत्व का गंभीरता-पूर्वक उपदेश ही नहीं देते हैं, वल्कि ज़रा भी चूक होने पर भयंकर से भयंकर दंड देने के लिए तैयार हैं। उसे अनजान शहर में छोड़ आयेंगे। उसे जान से मार डालेंगे। और उसे

विषय-सूची

प्रथम खंड

(सोवियत्-भूमि में)

समाज में ज़िन्दगी भर अपमानित और लांछित कर नरक की ज़िन्दगी बिताने पर मजबूर करेंगे। लेकिन पुरुष का भी स्त्री के प्रति कोई कर्तव्य है, इसकी तरफ़ उतना ध्यान नहीं है। बहुत हुआ तो हल्के दिल से कह दिया कि पुरुष को पत्नी के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए। किसी भारी से भारी चूक करने पर भी पुरुष के लिए कोई दंड नहीं। वह एक पत्नी के रहते दो—चार-दस से विवाह कर सकता है; और समाज में उसका चौधराना कम नहीं होता। वह बिना विवाह किये खुले आम भी अनेक स्त्रियों को रख सकता है; लेकिन 'मर्द-बच्चा' कहकर उसके इस दुराचार को टाल दिया जाता है। अनिच्छा से रोगी, कुरूप, दुर्गुणी पति से विवाहित स्त्री असन्तुष्ट हो किसी दूसरे पुरुष से यदि प्रेम करना चाहती है; तो उसके लिए उसे भयंकर से भयंकर दंड किन्तु पुरुष के लिए सात ख़ून माफ़ क्यों? यह है हमारा-स्त्री-पुरुष-संबंधी सदाचार और न्याय?

सोवियत् में स्त्री और पुरुष दोनों बराबर हैं। समाज की दृष्टि में भी, कानून की दृष्टि में भी, और आर्थिक दृष्टि में भी। वहाँ स्त्री के लिए ज़रा सी चूक पर प्राण-दंड और पुरुष के लिए सात-ख़ून-माफ़ का नियम नहीं है। माँ-वाप ख़ाने-कपड़ों की तलाश में किसी लड़की को किसी के गले नहीं मढ़ते। वह जानते हैं कि लड़की अपनी रोज़ी आप कमा सकती है। वहाँ हर एक युवती अपने इच्छानुकूल जिस पुरुष को पसन्द करती है; उससे ब्याह करती है। इसमें सिर्फ पुरुष की सम्मति भर अपेक्षित है। न वहाँ जाति का ख़याल है, न धन का ख्याल है, न रंग का प्रश्न है, न धर्म का विचार है, न आयु का ध्यान है। विवाह हो जाने पर भी पति इसलिए धौंस दिखा कर पत्नी को अपने काबू में नहीं रख सकता कि वह उसका पति है। खाना-कपड़ा देने का तो सवाल ही नहीं है। स्त्री ख़ुद अपने लिए कमाती है। सन्तान होने पर उसके भरण-पोषण का भार जैसे पति वहन करता है, वैसे ही पत्नी भी अपने हिस्से का वहन करती है। कहने के लिए स्त्री को हमारे यहाँ अर्द्धाङ्गिनी कहते

हैं, लेकिन स्त्री अर्द्धांगिनी तभी हो सकती है, जब पुरुष अर्द्धांग हो। लेकिन पुरुष पर क्या कभी अर्द्धांग का नियम लागू होता है?

सोवियत् में पति पत्नी का सम्बन्ध मित्र का सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे से प्रेम रखने का वादा करते हैं और वादा-खिलाफ़ी का हक़ नहीं रखते। कुछ साल पहले विवाह के बाद अनबन हो जाने पर तिलाक बड़ी आसानी से मिल जाता था, लेकिन अब सरकार ने तिलाक के कानून को कड़ा कर दिया है। वह चाहती है कि लोग पहले ही भली प्रकार देख भाल लें; एक दूसरे के स्वभाव से भली भाँति परिचित हो जायँ; और विवाह करने में जल्दी न करें। विवाह हो जाने पर तुरन्त तिलाक को वह पसन्द नहीं करती। पहले तिलाक में दंड स्वरूप कुछ थोड़ा रुपया सरकार को देना पड़ता है। दूसरी बार के तिलाक में वह दंड की मात्रा तिगुनी चौगुनी कर दी जाती है। और तीसरी बार तो इतना जुरमाना देना पड़ता है, कि उसके लिए तिलाक चाहनेवाले को वर्षों खट कर रुपया जमा करना होगा। तिलाक के लिए जो इतनी रोक-थाम की गई है, उसके भीतर सरकार की जन-संख्या बढ़ाने की नीति काम कर रही है। भारत से सात गुना सोवियत् का क्षेत्रफल है; और आबादी हमारे यहाँ से आधी (१८ करोड़) है। सोवियत् सरकार चाहती है कि वहाँ अधिक बच्चे पैदा हों जिससे कि गैरआबाद जगहों को आबाद किया जा सके। क्रान्ति से पहले रूस साम्राज्य में हर दसवें साल १७ फी सदी जनसंख्या बढ़ती थी; लेकिन अब वह बढ़ती २४ फी सदी हो गई है। इधर दो वर्षों में कुछ और बढ़ी है। इसका मतलब है, हर दसवें साल चौथाई जनसंख्या का बढ़ जाना। १९३८ में यदि १८ करोड़ है; तो १९४८ में २२।। करोड़ हो जायगी; और १९५८ में २९ करोड़ के करीब। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के अन्त में ७० करोड़ आदमी सोवियत्-भूमि में बसने लगेंगे। जनसंख्या की वृद्धि को रोकना उनके हाथ में वैसा ही है, जैसे पंचवार्षिक योजनाओं द्वारा औद्योगिक और कृषि-संबंधी उपज को अपने हाथ में रखना। वर्तमान शताब्दी के अन्त तक तो

सोवियत् सरकार को जनसंख्या की वृद्धि को रोकने की ज़रूरत न पड़ेगी।

जनसंख्या के बढ़ाने की नीति ने तिलाक़ को कम करने का विधान बनाया है; उसी प्रवृत्ति ने गर्भ गिराने को भी क़ानूनन दंडनीय बना दिया है। दो साल पहले अस्पतालों में गर्भ गिराने का बाक़ायदा इन्तज़ाम था। कोई भी स्त्री जिसका गर्भ ३ महीने से कम का है, यदि बच्चा पैदा करना पसन्द नहीं करती थी, तो वह अस्पताल में चली जाती थी; और विशेषज्ञ डाक्टर और नर्स की सहायता से गर्भ गिरा देती थी। अब गर्भ गिराना बन्द कर दिया गया है। गर्भ वे ही स्त्रियाँ गिरा सकती हैं, जिनके बारे में डाक्टर की राय है कि यदि उक्त स्त्री बच्चा पैदा करने के लिए मजबूर की जायगी, तो उसके शरीर और जीवन के लिए अनिष्ट होगा।

स्त्री-पुरुष के संयोग को दो हिस्सों में बाँट कर, जहाँ तक संभोग-सुख का संबंध है वहाँ तक सरकार ने पुरुष-स्त्री को स्वतंत्र छोड़ दिया है। यह उनका वैयक्तिक कार्य समझा जाता है। लेकिन सन्तान के बारे में वह उदासीन नहीं हो सकती। इसी लिए जहाँ तक सन्तान के भविष्य का सम्बन्ध है, पुरुष स्त्री के संभोग-संबंधी स्वातंत्र्य में वह बाधक है। विवाह का मतलब वहाँ है, जाकर दफ़्तर में रजिस्ट्री करवा देना। रजिस्ट्री करवाये बिना भी दोनों स्त्री-पुरुष के तौर पर रह सकते हैं। इसके लिए न समाज की ओर से भर्त्सना है, न सरकार की ओर से दंड। यदि सन्तान होगी, तो वह हरामी नहीं समझी जायगी; और माँ-बाप की भूल का दंड बच्चे को नहीं मिलेगा। हरामी बच्चा सोवियत्-नियम के अनुसार कोई हो ही नहीं सकता। बाप के बिना लड़का तो पैदा नहीं होता, तो वह हरामी या बे-बाप का कैसे? हाँ, ऐसी अवस्था में यदि बाप लड़के के भरण-पोषण की ज़िम्मेवारी न लेना चाहे तो माँ पर अधिक बोझ पड़ने का डर है। किन्तु ऐसे झगड़ों में जहाँ पुरुष लड़के का बाप होने से इनकार करता है, वहाँ माँ की बात मान ली जाती है। तो भी जिसमें झगड़े की गुंजायश न

रहे, इसके लिए सरकार उत्साहित करती है कि लोग अपने विवाह की रजिस्ट्री करा लें।

स्त्री-पुरुष के संबंध में, इसमें शक नहीं, वहाँ वहुत भारी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है; और जितना परिवर्तन अब तक हो चुका है आगे उससे और भी वड़ा होगा। लेकिन सहस्राब्दियों से इस सम्वन्ध में लोगों की ऐसी धारणा हो गई है, कि अव भी पुराने भाव लटके हुए हैं। मुझे वड़ा आश्चर्य हुआ था, जव मैंने एक सुसंस्कृत महिला को इसी संवंध में वात करते हुए कहते सुना कि ऐसी भी युवतियाँ हैं जिनको विवाह के विना यदि गर्भ रह जाय, तो वह आत्महत्या कर लेंगी। मैंने पूछा—"उन युवतियों को लज्जा और भय तो अपने संवंधियों से ही होगा न? मान लो उनके संवंधी भाई-वन्धु साम्यवादी दल के सदस्य हैं, ऐसी अवस्था में विवाह-संबंधी मूर्खतापूर्ण रूढ़ि को वह कोई महत्त्व नहीं दे सकते। फिर उस युवती को आत्महत्या की क्या आवश्यकता? और विवाह तो पुरुष स्त्री के प्रेम का नाम है! रजिस्ट्री कराने से कौन सी ज़्यादा वात हो जाती है।" उत्तर मिला—"साम्यवादी दल के सदस्य भाई-वहन भी ऐसा मनोभाव रखते हैं, कि यदि अपनी वहन को उक्त अवस्था में देखें, तो देहली पर पैर रखने से मना कर देंगे।"

इस उदाहरण से पता लगेगा कि आर्थिक स्वतंत्रता के कारण स्त्रियाँ यद्यपि पुरुषों की गुलाम नहीं रही हैं, तो भी संभोग-सम्बन्धी स्वच्छन्दता पर अव भी वहुत से अंकुश हैं। आपको सोवियत् के स्त्री-पुरुषों के दुराचार और मिथ्याचार की वहुत सी कथाएँ सुनाई जायँगी। लेकिन आपको एक वात याद रखनी चाहिए। सोवियत् में रुपये के वल पर औरत की आवरू नहीं खरीदी जा सकती। सिर्फ़ एक इसी वात से पता लग जाता है कि सोवियत् और उसके वाहर के देशों में इस सम्वन्ध में कितना ज़मीन और आसमान का अन्तर है। भय और प्रलोभन वहाँ किसी स्त्री को मजवूर नहीं कर सकते। अपनी इच्छा से वे एक दूसरे के प्रेम-पाश में फँस सकते

हैं। वहाँ वेश्यावृत्ति की कोई गुंजायश नहीं और वेश्यावृत्ति के कारण पैदा होनेवाले अनेक रोग सोवियत्-भूमि से लुप्त हो चुके हैं।

***　　　　***

सोवियत्-स्त्री को आगे बढ़ने का कितना मौक़ा है। इसका एक और उदाहरण देकर मैं इस परिच्छेद को समाप्त करता हूँ। **बस्ती बागीरोवा** या पूरा नाम **बस्ती मासिम् किज़ी बागीरोवा** सोवियत् के एशियाई भाग आज़ुर्बाइजान् के एक खेतिहर मज़दूर की लड़की है, लेकिन आज कोई ऐसा सोवियत् नागरिक न होगा जिसने बागीरोवा का नाम न सुना हो। पिछले ७ नवम्बर को जब लाल क्रान्ति का बीसवाँ महोत्सव बड़ी धूम धाम के साथ मनाया जा रहा था, तो आज़ुर्बाइजान् प्रजातंत्र का कोई नगर, गाँव, क़स्बा न होगा, जिसके जलूस में उसका फोटो आगे आगे न चलता हो। यदि आपको उस दिन के बाकू शहर के जलूस को देखने का अवसर मिलता तो वहाँ बागीरोवा के एक नहीं, अनेक फ़ोटो देखने में आते। इस महोत्सव के जलूसों में कहीं बागीरोवा को क्रेम्लिन् में स्तालिन् से हाथ मिलाते हुए दिखाया गया है, कहीं उसे दोनों हाथों से कपास चुनते दिखाया गया है, कहीं उसे तरुण कन्याओं के सामने कपास चुनने की कला बतलाते हुए दिखाया गया है।

बस्ती बागीरोवा (डिपुटी)

कपास के चुनने और उसकी सफल खेती करने में बागीरोवा अपने ही प्रजातंत्र में नहीं, बल्कि सारी सोवियत् में प्रसिद्ध है। इस शाल ओढ़े ठिगनी औरत के संबंध में कितनी ही कविताएँ लिखी गईं। दूर से और नज़दीक से उससे इतने आदमी मिलने आते हैं, कि कुसुम्-इस्माइलोफ़् ज़िले के वोरोशिलोफ़् कोल्ख़ोज़् के इसके अपने सीधे सादे घर में कितनी ही चारपाइयाँ तैयार रखनी पड़ती हैं। पिछले ७ नवम्बर को जब वह बाकू की एक नाट्यशाला में नाटक देखने गई, तो बीच के अवकाश के समय नाट्यकार ने अपने नाटक के विषय में उसकी राय पूछी—"आप इसे कैसा समझती हैं? हमारे अभिनय में कोई दोष तो नहीं है? संगीत में तो किसी तरह की कमी नहीं हुई? पर्दा तो कोई बेमौक़े नहीं है?" जनवरी सन् १९३७ ई० में आज़ुरबाइजान प्रजातंत्र के जो प्रतिनिधि सोवियत् सरकार द्वारा सम्मानित किये गये थे, उनमें बागीरोवा भी थी। १९३५ में अखिल सोवियत् पंचायती खेती के प्रधान कार्यकर्ताओं का जो द्वितीय सम्मेलन हुआ था, बागीरोवा उसमें सम्मिलित ही नहीं हुई थी; बल्कि वह उस समिति की भी सदस्या थी, जिसने पंचायती खेती के विधान का मसौदा तैयार किया था। अखिल-सोवियत्-संघ-कांग्रेस का आठवाँ (विशेष) अधिवेशन जो दिसंबर १९३६ में हुआ था, उसने सोवियत् का नया शासन-विधान तैयार करने के लिए जो समिति बनाई थी, बागीरोवा भी उसकी एक सदस्या थी। आज बागीरोवा सोवियत् पार्लियामेंट की एक सम्माननीय सदस्या है।

लेकिन इस बागीरोवा की जीवन-कहानी क्या है? वह आज़ुर्बाइ-जान् के एक गाँव में एक गरीब किसान के घर पैदा हुई थी। उसके माँ-बाप दिन रात अपने और अपने मालिकों के खेतों में मर मर कर काम करते थे। लेकिन तब भी एक साँझ पेट भर कर खाना उनके लिए हराम था। उसके ८ भाई-बहनों में ६ बचपन ही में मर गए, और बाप भी जल्द ही उनका अनुगामी हुआ। बागीरोवा को लड़कपन ही से खेतों में काम करना

पड़ा। कपास बोने में कुछ अधिक फायदा था। बागीरोवा की माँ ने अपने खेत में कपास बोई, लेकिन ज़मींदार (बेग) ने सींचने के लिए पानी देने से इनकार कर दिया और पौधे वहीं धूप से सूख गए। लाल क्रान्ति (७ नवम्बर १९१७) से दो-एक वर्ष पहले बागीरोवा की १५ वर्ष की अवस्था में शादी हो गई। उसका पति भी उसीकी तरह गरीब था। न उसके पास खेत था न हल न बैल। लेकिन क्रान्ति के होने के साथ बागीरोवा के भविष्य का रास्ता खुल गया। ज़मींदारों की ज़मींदारी छीन ली गई। सोवियत् सरकार ने किसानों को खेत दे दिये। अब बागीरोवा के पास खेत हो गया। हल और बैल भी हो गये। अब दोनों स्त्री-पुरुष अपने लिए काम करते थे, बेग के लिए नहीं। अब उन्हें खुली हवा में साँस लेने का मौक़ा मिला। बेगों के साथ मुल्ला और मौलवी भी ख़तम हुए और साथ साथ मज़हब और पर्दे का भी अन्त हुआ।

लेकिन अब भी बागीरोवा को अपना जौहर दिखाने का मौक़ा नहीं मिला। यह मौक़ा तब्र आया जब कोल्ख़ोज़् (पंचायती खेती) का आरंभ हुआ। छोटे छोटे खेतों की मेंड़ें तोड़ दी गईं; और उनकी जगह बड़े बड़े ख़ेत बन गए। एक एक, आधे आधे हलों की जुताई की जगह सारे गाँव के ५०–५० पंचायती हल एक के पीछे एक चलने लगे। कोल्ख़ोज़् की बात सुनते ही बागीरोवा ने उसका मतलब समझ लिया; और १९३० में जब पहले-पहल उसके गाँव में कोल्ख़ोज़् का संगठन हुआ, तो वह सब से पहले उसमें शामिल हुई और प्रबन्ध-समिति की सदस्या निर्वाचित हुई। वैज्ञानिक ढंग की जुताई और वैज्ञानिक खाद के इस्तेमाल का मौक़ा मिला। भूमि कपास के योग्य समझी गई; इस लिए गाँव ने कपास की खेती करना निश्चय किया। १९३१ की गर्मियों में (जाड़ों में अधिक सर्दी के कारण उस देश में खेती नहीं होती) बागीरोवा ५० सेर कपास प्रतिदिन लोढ़ती थी। उस वक्त तक एक ही हाथ से कपास लोढने का रिवाज था। बागीरोवा ने सोचा, यदि एक हाथ से मैं ५० सेर कपास चुन सकती हूँ; तो दो हाथ

से चुनने पर १०० सेर चुन सकूँगी। जितनी ही ज़्यादा मैं कपास जमा कर सकूँगी, उतना ही अधिक कपड़ा मेरे देश के भाई-बहनों को मिलेगा; और उतना ही उनका ज़ीवन सुखमय होगा। इस तरह के विचार बागीरोवा को उस वक्त नहीं आये थे, जब वह अपने खेत में अकेले खेती करती थी। बागीरोवा ने दोनों हाथों से कपास चुनना शुरू किया। पहली फ़सल में उसने ८५ सेर प्रतिदिन के हिसाब से चुना। दूसरे साल ११८ सेर, फिर २७० सेर, फिर ४६४ सेर और १९३७ में उसने ६४८ सेर (१६१८) प्रतिदिन के हिसाब से चुना। इस गति में वृद्धि के लिए मशीन भी कुछ सहायक बनी।

इतना ही तक उसने बस नहीं किया। उसने कपास की खेती को अधिक लाभदायक बनाने की ओर ध्यान दिया। खाद और सिंचाई का पूरा प्रबन्ध किया गया। अब वहाँ कोई ज़मींदार नहीं था कि बागीरोवा को सिंचाई के पानी के लिए रोकता। इसका परिणाम यह हुआ कि १९३७ में उसने प्रति एकड़ ४८०० सेर (१२०5) कपास पैदा की। पिछले साल तक इसके तिहाई को ही आज़ुर्बाइजान् में सब से बड़ी फ़सल कहते थे।

बागीरोवा का ध्यान हमेशा रहता है, कि जिस मुस्तैदी और योग्यता के साथ वह काम कर रही है, उसी मुस्तैदी और योग्यता के साथ उसके साथी भी करें। वह अपना ज्ञान उन्हें सिखाती है। वह उन्हें उत्साहित करती है। १९३५ के नवम्बर में अपने प्रजातंत्र की ओर से उसका स्वागत किया गया था। उस वक्त उसने कहा था—"योग्य कार्यकर्ताओं पर सब कुछ निर्भर है। कैसे योग्य कार्यकर्ता? जो कि पूरे दिल से अपने काम को प्यार करते हैं; और हमेशा सोचते रहते हैं कि कैसे वह और अधिक शीघ्रता और योग्यता के साथ अपना काम कर सकेंगे? हम सब को ऐसे ही बनना चाहिए। मैं खुद तथा कुद्रत् और दूसरे कोशिश कर रहे हैं कि अधिक से अधिक कोल्खोज़ियों को दोनों हाथों से कपास लोढ़ने की कला सिखाई जाय।"

आज बागीरोवा के सैकड़ों शिष्य और शिष्याएँ सारे आज़ुर्बाइजान् में फैली हुई हैं। उनमें कोई कोई तो गुरु से भी बाज़ी मार ले गए हैं। उदाहरणार्थ १९३६ में बागीरोवा ने ४६४ सेर क़पास प्रतिदिन लोढ़ी थी। लेकिन उसकी शिष्या मनिया करीमोवा ने ५०४ सेर लोढ़ी। बागीरोवा अपनी इस शिष्या को बहन कहती है। १९३७ में बागीरोवा ने प्रतिदिन ६४८ सेर लोढ़ा; लेकिन उसकी दूसरी शिष्या **पसिरा हुसेनोवा** ने ६५० सेर लोढ़ा। इस साल के लिए बागीरोवा ने तय किया है कि १००० सेर या एक पूरा टन कपास एक दिन में लोढ़ेंगी।

१०—सोवियत्-लेखक

सुखी समाज यदि उन्नति की तरफ़ अग्रसर नहीं हो रहा है, तो वह विलासितापूर्ण मृत्यु की तरफ लेजानेवाला साहित्य पैदा करेगा। दुखी समाज यदि निराशापूर्ण अवस्था में पड़कर किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं हो गया है; तो वह घनान्धकार को चीर कर आती किरणों की भाँति जीवन-संदेश-वाहक साहित्य को पैदा करेगा। ज़ारशाही रूस में एक तरफ़ चन्द लोग विलासिता की सभी सामग्रियों से पूर्ण जीवन बिता रहे थे, और दूसरी तरफ़ अधिकांश लोग दरिद्रता और दुःखमय जीवन के सब से निम्न तल पर पहुँचे हुए थे। इस दूसरी श्रेणी और उससे सहानुभूति रखनेवालों ने रूसी भाषा में इस प्रकार का साहित्य पैदा किया, जिसने परम अवसाद को प्राप्त हुई जनता में आशा और जीवन के लिए उत्तेजना प्रदान की। **पुश्किन्, लेर्मेन्तोफ़्, तुर्गनियेफ़्, क्रोपत्किन्** जैसे लेखक इसी श्रेणी के थे। जिस वक्त रूसी पीड़ित जनता को काली घटाओं के सिवा और कुछ नहीं दिखाई देता था, उस समय इन लेखकों ने उत्साह प्रदान किया। अलेक्ज़ेइ गोर्की ने कलम उस वक्त उठाई थी, जब कि अमावस्या की काल-रात्रि में प्रकाश की कोई छींट दिखलाई न पड़ती थी। उसने अपनी सफल लेखनी से 'माँ' जैसी शक्तिप्रद सुन्दर कृतियाँ निर्माण कीं। क्रान्तिकारियों के साथ सम्पर्क रखने के कारण वह ज़ारशाही के कोप का भाजन बना। तो भी रूस की विद्वन्मंडली अलेक्ज़ेइ माख़िमोविच् पेश्कोफ़् (माख़िम् गोर्की) की क़लम का लोहा मान चुकी थी। २१ फ़रवरी सन् १६०२ को गोर्की रूसी एकेडेमी के सभासद जैसे परम माननीय पद के लिए निर्वाचित हुआ। ज़ार इस समाचार को सुन आपे से वाहर हो गया। उसने ५ मार्च के पत्र में लिखा—'गोर्की के वैज्ञानिक एकेडेमी के सभासद के तौर पर चुने जाने

द्वितीय खंड

(अफ़ग़ानिस्तान में)

(परिशिष्ट)

की ख़बर ने मेरे मन को ऐसे ही धक्का लगाया, जैसा कि उसने हर एक ठीक से विचारनेवाले दूसरे रूसी के दिल पर लगाया। मुझे समझ में नहीं आता कि योग्य और चतुर पुरुषों ने कैसे इस काम को पसन्द किया? न गोर्की की उम्र ही इतनी है, और न उसकी थोड़ी सी कृतियाँ ही काफी हैं, कि उसे ऐसे सम्माननीय पद के लिए निर्वाचित किया जाय। और सब से बढ़ कर बुरी बात यह है कि वह विचाराधीन अपराधी है। वर्तमान कठिन समय में एकेडेमी ऐसे आदमी को अपना सभासद् चुने, इसपर मुझे बहुत असन्तोष होता है। . . . . निकोला।'

गोर्की

एकेडेमी ने अपने निर्वाचन को रद्द कर दिया और इसके विरोध में कोरोलेन्को और चेख़ोफ़् ने उसकी सभासदी से इस्तीफ़ा दे दिया। गोर्की तब से १९३७ तक—जिस साल कि मृत्यु हुई—बराबर साहित्य के निर्माण में लग्न रहा। उसने खुद ही साहित्य-निर्माण नहीं किया, बल्कि कितनों को उसने रास्ता बतलाया। कितनों को प्रोत्साहित किया और कितने ही धूल में पड़े हीरों को उठा कर उनको योग्य आसन पर आसीन कराया। कज़ाक कवि **जम्बुल्** और **दागिस्तानी** कवि सुलेमान स्तालस्की ऐसे ही धूल के हीरे थे; जिन्हें गोर्की की परखनेवाली आँखों ने परख लिया और उनकी कृतियों का सम्मान सारी सोवियत्-भूमि में होने ही नहीं लगा,

१०—सोवियत्-लेखक

सुखी समाज यदि उन्नति की तरफ़ अग्रसर नहीं हो रहा है, तो वह विलासितापूर्ण मृत्यु की तरफ लेजानेवाला साहित्य पैदा करेगा। दुखी समाज यदि निराशापूर्ण अवस्था में पड़कर किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं हो गया है; तो वह घनान्धकार को चीर कर आती किरणों की भाँति जीवन-संदेश-वाहक साहित्य को पैदा करेगा। ज़ारशाही रूस में एक तरफ़ चन्द लोग विलासिता की सभी सामग्रियों से पूर्ण जीवन बिता रहे थे, और दूसरी तरफ़ अधिकांश लोग दरिद्रता और दु:खमय जीवन के सब से निम्न तल पर पहुँचे हुए थे। इस दूसरी श्रेणी और उससे सहानुभूति रखनेवालों ने रूसी भाषा में इस प्रकार का साहित्य पैदा किया, जिसने परम अवसाद को प्राप्त हुई जनता में आशा और जीवन के लिए उत्तेजना प्रदान की। **पुश्किन्, लेर्मेन्तोफ़्, तुर्गनियेफ़्, क्रोपत्किन्** जैसे लेखक इसी श्रेणी के थे। जिस वक्त रूसी पीड़ित जनता को काली घटाओं के सिवा और कुछ नहीं दिखाई देता था, उस समय इन लेखकों ने उत्साह प्रदान किया। अलेख़ेइ गोर्की ने कलम उस वक्त उठाई थी, जब कि अमावस्या की काल-रात्रि में प्रकाश की कोई छींट दिखलाई न पड़ती थी। उसने अपनी सफल लेखनी से 'माँ' जैसी शक्तिप्रद सुन्दर कृतियाँ निर्माण कीं। क्रान्तिकारियों के साथ सम्पर्क रखने के कारण वह ज़ारशाही के कोप का भाजन बना। तो भी रूस की विद्वन्मंडली अलेख़ेइ माख़िमोविच् पेश्कोफ़् (माख़िम् गोर्की) की क़लम का लोहा मान चुकी थी। २१ फ़रवरी सन् १९०२ को गोर्की रूसी एकेडेमी के सभासद जैसे परम माननीय पद के लिए निर्वाचित हुआ। ज़ार इस समाचार को सुन आपे से वाहर हो गया। उसने ५ मार्च के पत्र में लिखा—'गोर्की के वैज्ञानिक एकेडेमी के सभासद के तौर पर चुने जाने

की ख़बर ने मेरे मन को ऐसे ही धक्का लगाया, जैसा कि उसने हर एक ठीक से विचारनेवाले दूसरे रूसी के दिल पर लगाया। मुझे समझ में नहीं आता कि योग्य और चतुर पुरुषों ने कैसे इस काम को पसन्द किया? न गोर्की की उम्र ही इतनी है, और न उसकी थोड़ी सी कृतियाँ ही काफी हैं, कि उसे ऐसे सम्माननीय पद के लिए निर्वाचित किया जाय। और सब से बढ़ कर बुरी बात यह है कि वह विचाराधीन अपराधी है। वर्तमान कठिन समय में एकेडेमी ऐसे आदमी को अपना सभासद् चुने, इसपर मुझे बहुत असन्तोष होता है। . . . . निकोला।'

गोर्की

एकेडेमी ने अपने निर्वाचन को रद्द कर दिया और इसके विरोध में कोरोलेन्को और चेख़ोफ़् ने उसकी सभासदी से इस्तीफ़ा दे दिया। गोर्की तब से १९३७ तक—जिस साल कि मृत्यु हुई—बराबर साहित्य के निर्माण में लग्न रहा। उसने खुद ही साहित्य-निर्माण नहीं किया, बल्कि कितनों को उसने रास्ता बतलाया। कितनों को प्रोत्साहित किया और कितने ही धूल में पड़े हीरों को उठा कर उनको योग्य आसन पर आसीन कराया। कज़ाक कवि **जम्बुल्** और **दागिस्तानी** कवि सुलेमान स्ताल्स्की ऐसे ही धूल के हीरे थे; जिन्हें गोर्की की परखनेवाली आँखों ने परख लिया और उनकी कृतियों का सम्मान सारी सोवियत्-भूमि में होने ही नहीं लगा,

बल्कि उन्होंने दुगुने उत्साह से नये उत्पन्न हुए समाज के लिए नये साहित्य का निर्माण किया। जम्बुल् इस साल ९३ साल में प्रविष्ट हुआ है। यद्यपि वह अक्षर-ज्ञान से वंचित था, तो भी उसने सच्चा कवि-हृदय पाया था। क्रान्ति से पहले भी उसने कितनी कविताएँ की थीं और हवा ने उड़ा कर उन्हें कज़ाक के गाँवों में पहुँचा दिया था। लेकिन उस वक्त इस अनपढ़ कवि की कृतियों से सिर्फ़ अनपढ़ ख़ानाबदोशों का ही मनोरंजन होता था। क्रान्ति के बाद बिलकुल संसार ही बदल गया। कज़ाक भाषा जो अब तक लेखबद्ध नहीं हो पाई थी, रोमन् लिपि में लेखबद्ध ही नहीं हुई, बल्कि वह आरंभिक, माध्यमिक और टेकनिकल शिक्षा का माध्यम बन गई। अब जम्बुल् की कविताओं की कदर करने वाली सिर्फ अशिक्षित ही नहीं, शिक्षित जनता भी हो गई। उसकी कविताएँ रूसी तथा सोवियत् की दूसरी भाषाओं में अनुवादित हुईं और इस प्रकार सारे सोवियत् प्रजातंत्र में जम्बुल् की महिमा फैल गई। जम्बुल् ने कितने ही गीत विद्रोहियों और क्रान्तिकारियों के यशोगान में बनाये हैं। किसान विद्रोही पुगाचेफ़् और लाल क्रान्ति के वीर सैनिक चपायेफ़् की तारीफ़ में उसके बनाये गीत बहुत प्रसिद्ध हैं। वर्तमान जीवन से वह कितना सन्तुष्ट है, वह उसके निम्न वचन से मालूम हो जायगा, जिसे कि उसने २२ दिसम्बर १९३७ को एक प्रेस-प्रतिनिधि से वार्तालाप करने के अवसर पर कहा था—"मैं जनता के नेता स्तालिन् की जन्मभूमि गुर्जी के दर्शन के लिए जा रहा हूँ; और पहली बार ज़ा रहा हूँ। मैं गोरी शहर को देखूँगा जहाँ स्तालिन् उत्पन्न हुआ और बड़ा हुआ। मैं गुर्जी के अंगूरों के बगीचों को देखूँगा और देखूँगा गुर्जी के आकाश को। मैं गुर्जी के नाटकों को देखूँगा और गुर्जी (जार्जिया) के ग्राम-गायकों की आवाज़ सुनूँगा। सोवियत् प्रजातंत्र का सौन्दर्य, विशालता और शक्ति मेरे अन्दर आनन्दपूर्ण भावों को पैदा कर देती है; जिन्हें मैं अपने गीतों में व्यक्त कर देता हूँ। कजाकस्तान का विस्तृत विषम मैदान अराल् समुद्र, महान् वोल्गा, रूस की सुविशाल भूमि सभी सानन्द और सुखपूर्ण

जीवन में है; और अनेक शताब्दियों बाद पहली बार पूर्णतया खुश हाल है। मुझे यह जानकर ख़ास तौर पर अभिमान होता है कि यह हमारी अद्भुत् पितृ-भूमि १७ वर्षों से युद्ध-रहित हो शान्ति का सुख अनुभव कर रही है। जिस पितृ-भूमि की हिफ़ाज़त में लाल-सेना सर्वदा तत्पर है, जिस सेना का सेनापति दुर्जेय **वोरोशिलोफ़्** है। गृध्र-दृष्टि सोवियत् गुप्तचर-विभाग देश के प्रेम-भाजन सरदार येज़ोफ़् के नायकत्व में बड़ी तत्परता के साथ अपना काम कर रहा है। सोवियत् के भीतर की सभी जातियाँ—रूसी, गुर्जी, कज़ाक, दुङ्गन्, किर्गिज़, उजबेक आदि तथा सभी देश वोरोशिलोफ़् और येज़ोफ़् की सहायता में हैं। मैं एक तेज चलने वाली ट्रेन की आरामदेह गाड़ी में सफर कर रहा हूँ। अपने चारों तरफ़ हँसमुख और प्रसन्न चेहरों को देखता हूँ। मेरी पितृ-भूमि के लोग प्रसन्न और सुखी हैं। मैं अपनी दिली उमंगों को छिपा नहीं सकता; यह ख़याल करके कि मैं क्रेम्लिन् को देखूँगा, जिसमें साथी स्तालिन् रहते और काम करते हैं; और मैं उस प्रदेश को देखूँगा जिसमें स्तालिन् पैदा हुए। सोवियत्-संघ की जनता ने मनुष्यता द्वारा निर्माण किये गये सभी संस्कृति और कला के ख़ज़ानों को अपनाया है। रूसी, पुश्किन् और गोर्की, उकरैनी शेव्चेंको, कज़ाकी कुनन्वायेफ़्, ईरानी कवि फ़िरदोसी, अंग्रेज़ शेक्सपियर और गुर्जी रुस्तावेली—सभी हमारे अत्यन्त प्रिय हैं। मैं एक गीति-महोत्सव और हर भाषा के कवियों के मैत्री-पूर्ण सम्मेलन में शामिल होने के लिए जा रहा हूँ। मेरे आनन्द पर सिर्फ एक ही शोक की छाया पड़ी है, कि तिफ्लिस् में मैं अपने दोस्त तथा सोवियत्-भूमि के महान् गायक सुलेमान स्ताल्स्की को न देख सकूँगा। अपने समय से कुछ पहले वह मर गये। कुछ ही दिन और रहते, तो सोवियत् पार्लियामेंट के निर्वाचित सदस्य होने के गौरव को वह अनुभव करते।

"सुलेमान और मुझमें बहुत सी समानताएँ थीं। मैं और वह दोनों निरक्षर थे। हमने कभी नहीं लिखा। हमेशा पद्यबद्ध कर अपने गीतों को गाया। हम दोनों ने पूँजीवादी जगत् के जुए का अनुभव किया है; और

क्रान्ति के बाद ही सुख क्या है, इसका हमें, अनुभव हुआ। सुलेमान् और मैं दोनों ने इस सुख, इस पुनरुत्पन्न जनता और इस महान् स्तालिनीय युग और अपनी पितृ-भूमि का गान गाया।

"जनता का संगीत कभी इतना मधुर और भावपूर्ण नहीं हुआ। गलीचे और आभूषण इससे पहले कभी इतने सुन्दर नहीं बनाये गये। जनता की कला कभी इतनी कुड्मलित और प्रफुल्लित नहीं हुई, जैसी कि इस स्तालिनीय युग में।"

*** ***

मेख़ाइल् शोलोख़ोफ़् का स्थान सोवियत् उपन्यासकारों में बहुत ऊँचा है। इसके दो ग्रंथ 'शान्त दोन्' (तिख़ी दोन्) और 'धरती उलट-पलट' के अनुवाद अंग्रेज़ी में And Quite flows the Don; और Soil upturned के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। दोन् सोवियत् की विशाल और सुंदर नदियों में है। ईसाई-धर्म के प्रचार से पहले यह गंगा की तरह ही पवित्र नदी समझी जाती थी; और सन्मान के लिए इसे 'दोन् बाबा' कहते थे। सोलहवीं, सत्रहवीं शताब्दियों में सामन्तों के अत्याचार के कारण कितने ही रूसी किसान परिवार दोन्-तट की दुर्गम उपत्यका में आकर बस गये। यहाँ उन्हें खुली हवा में साँस लेने का अवकाश मिला और इस स्वतंत्रता से उन्हें इतना प्रेम हुआ कि उसकी रक्षा के लिए वह अपने प्राणों को भी तुच्छ समझने लगे। इस प्रकार परिस्थिति ने उन्हें जन्मजात योद्धा बना दिया। इन्हीं दोन्-तट-वासियों का नाम पड़ा 'कसाक्'। अपनी वीरता के कारण यह ज़ार के सब से बहादुर और विश्वस्त सैनिकों में माने जाने लगे। दाहिने कान में बाली, कसाक् पुरुष का जातीय चिह्न, उनके लिए बड़े सन्मान की चीज़ थी। धीरे धीरे उन्होंने अपनी एक अलग जाति कायम की और वह दोन् के राजपूत बन गये। कोई कसाक् लड़की ग़ैर-कसाक् से विवाह-संबंध करने पर अपनी जाति खो बैठती थी। ऐसे विवाह से

उत्पन्न सन्तान के लिए उस पुराने ज़माने—जिसको गुज़रे अभी २० ही साल हुए हैं—में अपमान के सिवा और कुछ नहीं धरा था। वेशोंस्काया नगर के पास क्रुश्लिनो गाँव कसाकों की बस्ती थी। अलेक्सान्देर् शोलोखोफ़ एक नवागत ग़ैरकसाक तरुण का क्रुश्लनो की एक कसाक विधवा से प्रेम हो गया। विवाह हुए बिना ही उनको १९०५ ई० में एक बच्चा पैदा हुआ। लड़के का नाम मिखाइल् रक्खा गया। उस ज़माने में कहाँ कोई अनुमान कर सकता था कि यह एक विधवा की संकर सन्तान सोवियत्-संघ के विशाल प्रजातंत्र के सर्वोच्च लेखकों में होगा। लड़कपन से ही मिखाइल् को दोन् की स्वच्छ शुद्ध हवा खाने का अवसर मिला। पहाड़ी भूमि पर तपते सूरज की धूप में दौड़ने और गर्म हवा में खेलने का मौक़ा मिला। उसी वक्त से वह देख रहा था कि कैसे गंभीर और विशाल दोन् शान्त भाव से उसके गाँव के नीचे बह रही है। दोन् के किनारे के कसाकों के गाँव,

सोवियत् उपन्यास का एक चित्र

उनके छोटे छोटे घर, खलिहान और ऊँचे नीचे खेत उसके चित्त को अपनी ओर बराबर आकर्षित करते रहे। अपने कसाक् हमजोलियों के साथ वह कभी धूल पड़ी और कभी घास उगी सड़कों और गलियों में खेलता रहता था। जब वह कुछ बड़ा हुआ, तो कसाक् तरुण और तरुणियों के साथ निर्मल चाँदनी में सड़कों पर गाता और हँसता बेफ़िक्र घूमता था। कसाक् बड़े ही ख़ुशदिल, हँसमुख और विनोदप्रिय लोग हैं। जहाँ कहीं वह जमा हो जाते हैं, हँसी मज़ाक़ और ठट्ठे से आस पास की मनहूसी भाग जाती है। उनके गीत बड़े सुन्दर और प्रभावशाली होते हैं। दिल के अन्तस्तल तक चुभ जानेवाले होते हैं। कसाक् भाषा बड़ी चलती, तीक्ष्ण, चित्र-विचित्र, और सजीव भाषा है। शोलोख़ोफ़् ने अपनी माँ के दूध के साथ उस भाषा को पिया और इस भाषा के मुहावरों को बड़ी स्वतंत्रता के साथ अपने ग्रंथों में प्रयुक्त किया। मिख़ाइल् के पिता ने अपने लड़के को आरंभिक स्कूल में दाख़िल किया। अपनी श्रेणी में वह हमेशा अव्वल रहा करता था। मिख़ाइल् की माँ अब तक भी अक्षर-ज्ञान से परिचित न थी, लेकिन अपने लड़के के साथ पत्र-व्यवहार रखने के लिए उसने लिखना-पढ़ना सीखा। माँ और बेटे के बीच लिखे गये इन पत्रों के देखने से मालूम होता है, कि शोलोख़ोफ़् ने कहाँ से लेखन-प्रतिभा पाई थी। शोलोख़ोफ़् अभी बारह ही साल का हो पाया था कि लाल-क्रान्ति आई। उसने शहर से गाँव तक ऐसी झंझावात बहाई कि जिससे कितने ही कूड़ा-कर्कट, पुराने रीति-रस्म, धनियों और ज़मींदारों के साथ साथ बहा दिए गए। कसाकों की भूमि में भी रूस के और भागों की तरह दो टुकड़े हो गये। गरीबों ने क्रान्ति का अनुगमन किया। धनी क्रान्ति के विरोधी बने। शोलोख़ोफ़् के सामने भी धीरे धीरे यह प्रश्न आया—किस तरफ़? पन्द्रहवें वर्ष में पहुँचते पहुँचते उसने निश्चय कर लिया किस तरफ़? उसने पोथी-पत्रा बाँध कर ताक में रखा और क्रान्ति के भँवर ने उसे अपने चक्कर में खींच लिया। शोलोख़ोफ़् एक गरीब घर में

पैदा हुआ था। साथ साथ माँ-बाप के जिस तरह के संबंध से उसका जन्म हुआ था उससे भी उसे लांछित रहना पड़ता था। उसको मालूम था कि दरिद्रता और अपमान किसे कहते हैं। पीड़ितों और मेहनत करते करते मरनेवालों की भलाई की चिन्ता उसके दिल में आग की तरह जल रही थी। उसने क्रान्ति-विरोधियों से युद्ध किया। क्रान्ति के सफल होने पर जब उसने देखा कि धनी किसान (कुलक) आगे बढ़ने में बाधक हैं तो वह उनके विरुद्ध खड़ा हो गया। जब बन्दूक़ की ज़रूरत नहीं रही तो उसने क़लम हाथ में ली और आज तक वह वैसी ही सफलता के साथ चल रही है जैसे कि उसकी बन्दूक। गृह-युद्ध के समय शोलोख़ोफ़् ने दोन्-प्रदेश के कोने कोने की ख़ाक छानी थी। फिर डाकुओं के ख़िलाफ़ वह तब तक लड़ता रहा, जब तक कि १९२२ में डाकुओं को तितर बितर नहीं कर दिया गया।

१९२३ में शोलोख़ोफ़् तरुण कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था। उसी वक्त उसने लिखना शुरू किया। उसकी छोटी कहानियों की पहली पुस्तक १९२५ में छपी। इसी साल से उसका साहित्यिक लेखक-जीवन आरंभ होता है।

वेशेंस्काया स्तानित्सा (ग्राम) दोन् नदी के बिलकुल क़िनारे पर बसा है। इसकी चौड़ी सड़कों के किनारे सफेदी किये हुए, साफ सुथरे कसाकों के घर हैं। सड़क पर वृक्षों की अपेक्षा धूल अधिक है। नदी के ढलुआँ किनारे पर हरी घास दिखलाई पड़ती है। नदी से थोड़ी दूर पर एक नया घर है जिसमें शोलोखोफ़् आज कल रहता है। अपने लिखने पढ़ने के कमरे को मज़ाक से कहता है—'गर्मी में बहुत गर्म और सर्दी में बहुत सर्द।'

शोलोख़ोफ़् अपना काम रात को करता है। ऐसी आदत बनाने के लिए उसे मजबूर होना पड़ा, क्योंकि दिन में उससे मिलनेवालों का ताँता बना रहता है। कसाक पंचायती खेतिहर, मज़दूर, फ़ौजी अफ़सर, विद्यार्थी, देशी-विदेशी यात्री, वृद्धाएँ, बच्चे, संवाद-दाता, लेखक, गायक, अभिनेता,

नाटक-कार, कवि, सभी उसके पास पहुँचते रहते हैं। कोई मोटर पर आता है, कोई घोड़े पर, कोई नाव पर, कोई स्टीमर पर और कितने ही हवाई जहाज़ पर। शोलोख़ोफ़् सबका दिल खोल कर स्वागत करता है, बात करता है, समझाता है, सहायता करता है और राह बतलाता है।

शान्त दोन्, जिसे होश सँभालने के साथ साथ शोलोख़ोफ़् ने देखा, अब भी उसके प्रेम की सब से बढ़ कर पात्र है। उसकी रूखी हवा, उसके चमकीले सूरज, उसकी झुलसाती तथा गर्म पहाड़ी भूमि और खड्ड, उसमें रहने वाले पशु-पक्षी सभी उसके चित्त को आकर्षण करते हैं। दोन् में बहुत तरह की मछलियाँ होती हैं; और शोलोख़ोफ़् को वंशी लगाने का बहुत शौक है। कसाक मछुओं से उसकी बड़ी घनिष्टता है। उसके उपन्यासों में पैने चुभते मुहावरे इस्तेमाल हुए हैं, वह उसे इसी घनिष्टता के फल-स्वरूप मिले हैं। दोन् में मछलियों का मारना और सूर्योदय से सूर्यास्त तक आस पास की पहाड़ी भूमियों—जिनमें जहाँ तहाँ पंचायती खेतियाँ बिखरी हुई हैं—में शिकार खेलना उसके शरीर में स्वास्थ्य और स्फूर्ति का संचार ही नहीं करता, बल्कि वहीं से अपने उपन्यासों के लिए वह सामग्री भी इकट्ठा करता है। दोन् नद, पहाड़ी उपत्यका, कसाक और उनका इतिहास, जीवन और मनोभाव ये सब शोलोख़ोफ़् के ख़मीर में दाख़िल हो गए हैं।

एक शाम को शोलोख़ोफ़् पहाड़ियों से घोड़ा दौड़ाता घर की तरफ़ आ रहा था। गाँव में पहुँचने से पहले ही जिस वक्त वह एक तरफ़ से मोड़ पर आया, उसी वक्त एक तेज़ दौड़ती मोटरकार पहुँच गई। घोड़ा दूसरी तरफ़ मुड़ गया और शोलोख़ोफ़् एक तरफ़ ज़मीन पर आ पड़ा। अगर ज़रा सी देर हुई होती, तो सवार और घोड़ा दोनों मोटर के पहियों के नीचे कुचल जाते। ड्राइवर ने झटपट ब्रेक लगाया। मोटर-सवारों ने बाहर कूद कर घुड़सवार से माफ़ी माँगना चाहा। उन्होंने चाहा कि शोलोख़ोफ़् को घर चढ़ा ले चलें और घोड़े को वहाँ पहुँचा दें। शोलाख़ोफ़् ने—'सब ठीक है, कोई परवा नहीं' कह कर उनकी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी। शोलोख़ोफ़् फिर

चित्र-सूची

घोड़े पर बैठा। उसके ख़याल में एक घुड़सवार के लिए यह बड़े अपमान की बात है कि वह मोटर पर चढ़े और लगाम पकड़ कर घोड़े को साथ ले चले। जिस वक्त वह गाँव में घुस रहा था, तो उसने देखा, कि घोड़े के जबड़े पर ख़ून लगा हुआ है। ऐसी अवस्था में गाँव में घुसना उसके लिए असह्य बात थी। वह नदी की तरफ़ मुड़ा। किनारे पर उतर कर घोड़े को पकड़े पानी में ले गया और मुँह और पैरों को अच्छी तरह मल मल कर धोया। उसके पैर में दर्द हो रहा था, लेकिन उसकी उसने कुछ परवा न की। हिम्मत करके वह फिर घोड़े पर चढ़ा। घर पर पहुँचने पर वह खुद उतरने में असमर्थ हो गया था। दूसरे लोग उठाकर उसे कमरे में ले गये। घुड़सवारी के बूट को पैरों से निकालना असंभव था। पैर फूल कर काला हो गया था; और सूखे काठ की तरह निर्जीव मालूम होता था। बूट को टुकड़े टुकड़े काट कर निकालना पड़ा। शोलोख़ोफ़् ने साबित कर दिया कि वह सच्चा क़साक़ है। चाहे वह घायल भले ही हुआ हो, लेकिन उसका घोड़ा बाक़ायदा होना चाहिए।

शोलोख़ोफ़् अकसर किसी कोल्ख़ोज़् में पहुँच जाता है और वृद्ध तरुण स्त्री-पुरुषों में शामिल होकर खुले दिल से गाता-नाचता है और उनसे युद्ध, क्रान्ति, कोल्ख़ोज़ी जीवन तथा दूसरे प्रकार की कथाओं को बड़े ध्यान से सुनता है। वह खेती के हर एक काम को बड़ी बारीकी से जानता है। उसने इसे दूर रह कर सीखा पढ़ा नहीं है, बल्कि कितनी ही बार जोतने और बोने के काम में औरों से पीछे न रह कर खुद योग दिया है।

शोलोख़ोफ़् अपने ग्राम के सामाजिक जीवन में पूरा भाग लेता है। वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर है। अपने गाँव में उसने तरुण नाटक-मंडली संगठित की है। उसका गृहस्थ-जीवन बहुत सुखमय है। वह तीन बच्चों का बाप है।

सच्चाई, सहृदयता, आन्तरिक सौन्दर्य और कलापूर्णता शोलोख़ोफ़्

के ग्रंथों की विशेषताएँ हैं। उसके रंग-विरंगे तथा अतिगंभीर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का पाठकों के ऊपर वड़ा प्रभाव पड़ता है। उसकी किताबें बहुत सी यूरोपीय भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। वह कितनी ही बार विदेशों की यात्राएँ कर चुका है और विदेशी लेखकों और पाठकों को उसके सत्संग से सोवियत्-संवंधी ग़लत-फ़हमियों को हटाने का मौक़ा मिला है।

*** ***

अलेख़ेइ ताल्स्त्वा—गोर्की के वाद सोवियत्-प्रजातंत्र का सब से वड़ा उपन्यासकार अलेख़ेइ ताल्स्त्वा है। उसकी कितनी ही पुस्तकों के अनुवाद अनेक यूरोपीय भाषाओं में हो चुके हैं। "प्रथम पीतर" (Peter The Great), "रोटी" (Bread) आदि उसके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। ताल्स्त्वा की अवस्था ४५ से ऊपर है। वह क्रान्ति से पहले स्वयं भी एक कौंट (ग्राफ़) था। उसका कौंट टाल्स्टाय के परिवार से संवंध था। अपने नामराशि पुराने लेखक और आदर्शवादी टाल्स्टाय की भाँति यह भी सिर्फ़ लेखक और विचारक ही नहीं, वल्कि एक आदर्शवादी व्यक्ति है। सोवियत् जनता और सरकार ने उसके ग्रंथों का वड़ा आदर किया है। सब से बढ़ कर उसका सम्मान हाल में हुआ है; जब कि पिछले १२ दिसंबर को वह सोवियत् पार्लियामेंट का सभासद चुना गया। यहाँ उसके चुनाव-संबंधी एक सभा का वर्णन हम दे रहे हैं। स्तारया-रूसा (वृद्ध-रूस) ज़िले से ताल्स्त्वा पार्लियामेंट की सभासदी के लिए खड़ा हुआ था। अनीश्वरवादी-कोल्ख़ोज़् के वोटरों के सामने व्याख्यान देने के लिए वह पहुँचा। श्रोताओं में सिर्फ वोटर ही नहीं थे, बल्कि कितने ही पाठक और पाठिकाएँ भी थीं। वे १८ वर्ष से कम उम्र होने के कारण वोट देने के अधिकारी न थे। कोल्ख़ोज़् के संस्कृति-भवन के पुस्तकालय में ताल्स्त्वा के ग्रन्थों की प्रदर्शिनी की गई। कोल्ख़ोज़् के सव से वृद्ध किसान करयोफ़् ने वक्ता का स्वागत किया। उसने भूमिका के तौर पर स्तारया-रूसा के

किसानों की पुरानी जीवनी पर संक्षेप से प्रकाश डाला। उस वक्त बहुत से गाँव वाले खेत-बिना अत्यन्त गरीबी और निरक्षरता की जिन्दगी बिताने के लिए मजबूर थे। बे-खेत के ग्रामीण किसानों के सामने सिर्फ़ एक ही स्वप्न था कि कैसे एक छोटा सा टुकड़ा खेत का मिल जाय; लेकिन पीढ़ियों तक यह स्वप्न ही रहता। खेत ज़मींदारों और धनी किसानों के अधिकार में था। करयोफ़् ने एक पुरानी कहानी सुनाई। एक ज़मींदार ने अपने गाँव के बे-खेत के मज़दूरों से कहा—बिना रुके दौड़ते जाओ और सूर्यास्त तक जितनी भूमि पर तुम घूम जाओगे, वह तुम्हारी होगी। गरीब किसान सूर्यास्त तक कहाँ दौड़ सकता था; वह उससे पहले ही चल बसा। आज ज़मीन के लिए दौड़ने की ज़रूरत नहीं। सोवियत्-सरकार ने कोल्ख़ोज़ियों को मुफ़्त ज़मीन हमेशा के लिए दे दी है।

गाँव वालों ने ताल्स्त्वा से बड़े अभिमान से कहा—हमारे गाँव का हर एक बच्चा स्कूल में जाता है। हमारें इलाक़े में ७०० अध्यापक और एक ट्रेनिंग स्कूल है। १९३५ में १८० अध्यापक ट्रेनिंग पा कर निकले थे और १९३६ में ४६८ अध्यापक ट्रेनिंग पा रहे हैं।

गाँव के तरुण शिक्षक निकितिन् और कुछ दूसरे नौजवानों ने लेखक के ग्रन्थ 'हरे नगर' (Azure cities) के बारे में वार्तालाप किया। एक किसान ने कहा—हरे नगर सोवियत्-प्रजातंत्र में बसाये जा चुके हैं। मग्-नितोगोर्स्क, कोम्सोमोल्स्क, किरोब्स्क ऐसे ही नये शहर हैं, जो चन्द बरसों में लाखों की जनसंख्या और हरे भरे बाग बग़ीचों के साथ ज़मीन के भीतर से निकल आये।

ताल्स्त्वा ने अपने भाषण में कहा—"आज जब नौजवानों और प्रतिभाशाली पुरुषों द्वारा अपने प्रति कहे गये शब्दों को मैंने सुना, तो मैंने निश्चय किया कि दूनी ताक़त से सारी शक्ति लगा कर अपनी पितृ-भूमि के बारे में, तुम्हारे बारे में अपने बन्धुओं के लिए, अपने देश के लिए, बहुत सी क़िताबें लिखूँ (ज़ोर की करतलध्वनि)। सोवियत् क्रान्ति के

पहले रूस और सारे संसार में सिर्फ एक ही प्रथा थी और वह थी ज़मींदारी और पूँजीवाद की। मैं उसका विवेचन करने नहीं जा रहा हूँ। उसके बारे में सिर्फ इतना ही कहना काफ़ी है कि इस प्रथा ने साम्राज्यवादियों के युद्ध को हमारे सिर पर गिराया। उस युद्ध में डेढ़ करोड़ आदमी बलि चढ़े। इन डेढ़ करोड़ को साकार बना कर, आँखों के सामने लाने के लिए ज़रा सोचिए दो करोड़ मन मनुष्य का मांस। जर्मन व्यवहार कुशल हैं। उन्होंने इससे फ़ायदा उठाया; और युद्ध के समय में मनुष्य के मांस से वे ग्लेस्रिन् निकाल रहे थे। . . . .

"आज फ़ासिस्ट देश—जर्मनी, जापान और इटली—अपनी सारी ताक़त लगाकर एक नये संसार-व्यापी युद्ध की कढ़ाई चढ़ाना चाहते हैं। मैं पच्छिम (यूरोप) में था, और मैंने इसे अपनी आँखों से देखा। हमारी क्रान्ति ने एक नई साम्यवादी प्रथा स्थापित की। यह बिलकुल ही भिन्न राष्ट्रीय अर्थ-नीति है। साम्यवादी अर्थनीति के विकास के लिए सर्वत्र शान्ति आवश्यक चीज़ है। सारे समाज के लिए सुख और सम्पत्ति, हर एक नागरिक के लिए सुख और सम्पत्ति, यह हैं ध्येय साम्यवादी अर्थनीति का।

"खाने से भूक लगती है—एक रूसी कहावत है। सुख और सम्पत्ति के लिए कोई सीमा नहीं हैं। और न कोई सीमा या बंधन होना चाहिए।

"इस साल हमने दो अरब दस करोड़ तुमन (७ अरब पुड, १ पुड=१२ सेर) गेहूँ पैदा किया। इस साल के लिए शाबास; लेकिन भविष्य में हमें इससे भी बड़ी फ़सल काटनी है। हमने निरक्षरता को दूर कर दिया। बिना अपवाद के अब सभी बच्चे पाठशाला में पढ़ते हैं। इतना काफ़ी नहीं है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हमारा हर एक बच्चा हाई स्कूल की शिक्षा समाप्त करे और पीछे कोशिश करनी होगी कि हमारा हर एक जवान लड़का-लड़की विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त करे।

"पुराने ज़माने में गाँव की जिन्दगी गन्दगी की जिन्दगी थी। आप किसी झोपड़ी में घुसते, और उसे खटमलों से भरा पाते। यदि पूछें—दादी,

तुम्हारे घर में इतने खटमल क्यों भरे हैं ?'। 'कुछ नहीं बच्चा ये हमारे ही हैं।' जवाब मिलता था।

"आज बिजली और रेडियो गाँव में घुस गये। घर साफ़ हैं। ढोरों के लिए गर्म रखी जानेवाली गोशालाएँ बनी हैं। बाग लगाये गये हैं और जाड़े के दिनों में सब्ज़ी पैदा करने के लिए काँच के गर्म घर तैयार किये गये हैं; तो भी इतना काफ़ी नहीं है। गाँव को देहात का नगर बनना होगा। यहाँ पर भी अस्फाल्ट (सख्त पत्थर) की सड़कें, मोटर-खाने, सुन्दर और विशाल क्लबघर, दाईखाने, बड़े स्कूल और विस्तृत खेल के मैदान होने चाहिएँ। .... २० साल पहले जर्मनी ज़ारशाही ज़मींदारों के रूस की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली और अधिक संस्कृत देश था। आज सोवियत् रूस जर्मनी ही से अधिक शक्तिशाली और वैभवशाली नहीं है, बल्कि जापान और इटली के जर्मनी के पल्ले पर बैठ जाने पर भी हमारा पल्ला भारी है। आप पूछेंगे, और अधिक संस्कृत भी ? 'हाँ, अधिक संस्कृत भी। यद्यपि हम जानते हैं कि हमें और कितनी ही सांस्कृतिक आदतें सीखनी हैं। .... हम अधिक संस्कृत हैं, क्योंकि किसी जाति की संस्कृति हैं वह समस्याएँ और वह आदर्श जिसे वह जाति सामने रखती है। मेरी राय में हमारे गाँव का वह अध्यापक, जो पुस्तकों के पढ़ने और सोवियत् मानवता के आदर्श को सीखने में रात-रात खर्च करता है, वह उस जर्मन प्रोफ़ेसर से अधिक संस्कृत है, जो जर्मन-जाति की लम्बी खोपड़ियों की उच्चता पर व्याख्यान झाड़ने में अपना सारा समय खर्च करता है।

"हमारी कोल्खोज़ी किसान स्त्री जिसने ज़्यादा सन उपजाने के लिए स्तालिन् को वचन दिया है, और इसके बारे में काम करने के बाद रातों पढ़ती है; उस जर्मन प्रोफ़ेसर की स्त्री से अत्यधिक सुसंस्कृत है जिसका उद्देश्य है बच्चे पैदा करना।—हाँ, दो से अधिक नहीं, और रसोई-खाने में हँड़िया पकाना, कमरे की धूल को झाड़ना और फ़ुरसत के वक्त दूसरी घरनियों से गप मारना। हम एक उत्कृष्ट संस्कृति का निर्माण कर रहे हैं।

और सारे संसार की शान्ति की रक्षा कर रहे हैं। जब कि फ़ासिस्ट संस्कृति को मटियामेट कर रहे हैं और युद्ध को भड़का रहे हैं।...........याद रखिए स्तारया-रूसा (वृद्ध रूस) ने स्वतंत्रता के युद्ध में शताब्दियाँ विताई हैं। शताब्दियों तक स्वातंत्र्य युद्ध को सारी रूसी जाति चलाती रही। जब उन्होंने देखा कि ज़मींदारों के अत्याचार को वह अधिक नहीं सह सकते तो बोलोत्-निकोफ़्, रज़िन्, पुगाचेफ़् के नायकत्व में विद्रोह किया। यह १७वीं शताब्दी के अन्त और १८वीं शताब्दी में हुआ। १९वीं सदी में कितनी ही बार सिपाहियों और किसानों ने बलवा किया। अन्त में १९०५ की क्रान्ति आई। और फिर १९१७ की महाक्रान्ति ! जनता ने एक भयंकर चोट के साथ ज़ार, ज़मींदार, बनियाँ और धनी किसानों के ज़ुल्म को ख़त्म कर दिया। जनता भूमि की मालिक बनी। उसने अपने मज़दूर-किसान-राज्य का निर्माण किया।............चिरंजीव सोवियत्-संघ की जातियाँ, चिरंजीव स्तालिनीय विधान, चिरंजीव वह महान् ऐतिहासिक साम्यवाद का पथ, जिस पर साथी स्तालिन् हमें अग्रसर कर रहे हैं।

* * * * * *

ब्लादिमिर् **मायाकोव्स्की**—यह सोवियत् युग का सर्वश्रेष्ठ कवि है। वर्तमान शताब्दी के आरंभ से कुछ वर्ष पहले काकेशस् के एक छोटे गाँव बगदादी में पैदा हुआ था। उसका जन्म एक जंगल-कर्मचारी के घर में हुआ था। मायाकोव्स्की-ख़ानदान पहले गाँव को छोड़ कर कुतइसी में चला गया था। वहीं ब्लादिमिर् ने स्कूल में प्रवेश किया। कुतइसी के स्कूल में १८७२ की लिखी एक पीले काग़ज़ पर अर्ज़ी है। चौथे दर्जे का विद्यार्थी ब्लादिमिर् मायाकोव्स्की उसमें लिखता है—"मेरा पिता अत्यन्त गरीब है; और उसके ऊपर सात व्यक्तियों के परिवार का बोझ है, जिनको वह बड़ी मुश्किल से खिला पाता है। अपनी दुस्सह दरिद्रता के कारण मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी फ़ीस माफ़ कर दी जाय।" उसी अल-

मारी में एक दूसरी अर्ज़ी भी पाई जाती है, जो कि ब्लादिमिर् माया कोब्स्की नामक एक दूसरे विद्यार्थी ने फ़ीस माफ़ करने के लिए दी थी। दोनों अर्ज़ियाँ एक ही हाथ की लिखी हुई थीं। दोनों की तारीख़ में ३० साल का अन्तर है। पहली में ब्लादिमिर् कान्स्तान्तिनोविच् मायाकोब्स्की ने अपने लिए फ़ीस की माफ़ी चाही थी और दूसरी अर्ज़ी में अपने पुत्र के लिए।

३० वर्षों ने उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं किया। १९०५ की क्रान्ति, हड़तालें, सभाएँ और पुलीस के साथ सशस्त्र मुक़ाबला ये घटनाएँ थीं, जिन्होंने कि बालक ब्लादिमिर् पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। १२ वर्ष की उम्र में मायाकोब्स्की ने अपनी बड़ी बहन को एक पत्र लिखा "......अब तक कुतइसी के ऊपर कोई आफ़त नहीं आई। यद्यपि अपर स्कूल और महाजनी पाठशाला में हड़ताल हुई। अपर स्कूल में तोपों की प्रदर्शिनी हुई। महाजनी पाठशाला में और बढ़ चढ़ कर किया गया। वहाँ तोप लगा दी गई और घोषित कर दिया गया कि अगर किसी ने ज़रा भी मुँह खोला तो वह इस जगह की धुस उड़ा देंगे। ...... कुतइसी हथियार-बन्द हो रही है। सड़क में चारों ओर मार्सेई (के क्रान्तिकारी गीत) की आवाज़ सुनाई देती है।"

मायाकोब्स्की (कवि)

मायाकोव्स्की के दिमाग़ में इन घटनाओं ने ऐसी उत्तेजना पैदा की कि वह स्कूल छोड़ कर मार्क्सीय स्वाध्याय-मंडली में प्रविष्ट हो गया। उसने राजनैतिक और साम्यवादी ट्रैक्ट पढ़े और वह रियोन नदी के किनारे भाषण का अभ्यास करने लगा। वह यूनान के महान् वक्ता, देमोस्थेनेस् की तरह उत्तम वक्ता होने के लिए उसी तरह मुँह में पत्थर डाल कर अभ्यास भी करता था।

१९०६ में मायाकोव्स्की का पिता मर गया; और परिवार को मास्को चला जाना पड़ा। माँ को थोड़ी सी पेंशन मिल रही थी, जो कि ६ आदमियों के परिवार के लिए पर्याप्त न थी। इसलिए उन्होंने अपने घर के एक कमरे को काकेशस् के २ विद्यार्थियों को भाड़े पर दे दिया। ब्लादिमिर् ने उनसे दोस्ती की और गुप्त क्रान्तिकारी-दल से सम्बन्ध स्थापित किया।

२८ मार्च १९०८ को मायाकोव्स्की पहली बार गिरफ्तार हुआ। वह कुछ गैरकानूनी काग़ज़ों और अख़बारों को लिये जा रहा था। उम्र बहुत छोटी होने से छोड़ दिया गया, लेकिन पुलीस उस पर बड़ी कड़ी निगाह रखने लगी। जनवरी १९०९ में पकड़ कर छोड़ दिया गया। जुलाई १९०९ में तीसरी बार पकड़ा गया और उसे ९ महीने जेल की हवा खानी पड़ी। क्रान्तिकारियों की गुप्त बैठकें और पुलीस की धर-पकड़ ने उसके लिए शिक्षा का काम दिया। उन्होंने उसकी हिम्मत को मजबूत कर दिया। जेल से निकलने के बाद उसके सामने प्रश्न हुआ कि वह किस व्यवसाय के लिए अपने को तैयार करे। अन्त में उसने कलाकार बनने का निश्चय किया। १९३१ के अन्त में उसने चित्र-सम्बन्धी एकेडेमी से एंट्रेंस पास किया। यही उसकी अन्तिम पाठशाला थी, जिसमें कि वह चित्रकार बनने के लिए दाख़िल हुआ था, किन्तु निकला एक कवि बनकर। इसी समय उसके प्रथम पद्य प्रकाशित हुए, जिनका संग्रह १९१३ में प्रथम भविष्यत्-वादी काव्य-संचय के रूप में छपा। संग्रह का नाम था—"स्वतंत्र-

कला की हिमायत में" और हेडिंग था "जन-रुचि के गाल पर एक थप्पड़।" **मायाकोव्स्की** की प्रथम कविताओं का विषय था, नगर का विस्मृत अकिंचन प्राणी। जन-प्रिय होने का गुण और सभा में भाषण करने का कौशल उसे रंगमंच की तरफ़ खींच ले गया। और इसके फल स्वरूप उसने 'ब्लादिमिर् मायाकोब्स्की' दुःखान्त नाटक लिखा। विषय है--कवि सभी दीनों और दुखियों के लिए दुःख सह रहा है। वह मनुष्य जाति के शोक को स्वयं वहन करना चाहता है। लोग उसके पास सहायता के लिए आते हैं, लेकिन वह असमर्थ है। सिवाय संवेदना के और कुछ नहीं प्रदान कर सकता।

उसके गर्म विचारों के कारण चित्रकला की एकेडेमी ने मायाकोब्स्की को निकाल दिया। इसपर वह मास्को से पीतर्बुर्ग चला गया। वहाँ उसने अपना सारा समय लिखने के लिए अर्पण किया। १९१३ के अन्त में उसका नाटक एक छोटी सी नाट्यशाला में खेला गया। विरोध के साथ साथ कितनों ने उसकी दाद दी। इससे वह उत्साहित हुआ। उसमें विश्वास की मात्रा बढ़ी। उसकी कलम और निर्भीक हो गई। १९१४–१५ में '१३वाँ शिष्य' के नाम से उसने अपना दूसरा बड़ा काव्य ग्रंथ लिखा। सेंसर ने नाम बदलने के लिए ही मजबूर नहीं किया बल्कि कितने ही हिस्सों को निकलवा दिया। 'पतलूनवाले बादल' के नाम से ग्रंथ प्रकाशित हुआ। इसमें भी उसने पीड़ितों और दलितों की हिमायत की। लेकिन यहाँ दलितों और पीड़ितों की बेबसी के गीत नहीं गाये गये हैं। वह कहता है--दान के तौर पर समय की भिक्षा मत माँगो और आगे बढ़ो। जो तुम्हारा है, अपना अधिकार समझ कर ले लो। अत्याचारी वह कहता है पहले धनियों को फिर उन कवियों और लेखकों को, जो इन मोटी तोंदवाले मालिकों को खुश करने के लिए क़लम घिसते हैं। और अन्तिम अत्याचारी वह खुदा को कहता है, जो इन सभी अत्याचारों और अन्यायों को उचित ठहराता है।

क्रान्ति के बाद 'पतलूनवाले बादल' अपने असली रूप में फिर से प्रकाशित हुआ। उसके चारों परिच्छेदों के हेडिंग हैं—'तुम्हारे प्रेम का क्षय हो', 'तुम्हारी कला का क्षय हो', 'तुम्हारे समाज का क्षय हो', 'तुम्हारे धर्म का क्षय हो'। अभी भविष्य का प्रोग्राम कवि ने निश्चय नहीं कर पाया था, लेकिन विद्रोही होना वह सब से ज़रूरी समझता था। आनेवाली क्रान्ति का स्वागत वह इन शब्दों में करता है—

"वह समय के भींटे को पार कर रहा है।
मैं उसे देख रहा हूँ जो कि अब भी अदृश्य है।
क्योंकि उस दूरी पर दृष्टि असफल हो जाती है।
भूखों के मुंडों के साथ
विद्रोह के काँटों की माला पहने
सन् १९१६ आ रहा है।"

अभी तक मायाकोव्स्की अकेला था, और इस अकेलेपन का उसपर प्रभाव पड़ रहा था। १९१५ में पहले पहल वह गोर्की से मिला। गोर्की ने तुरन्त उसकी अप्रतिम प्रतिभा और विद्रोही कवित्व को पहचान लिया। १९१५ के अन्त में गोर्की ने अपना मासिक पत्र निकाला और मायाकोव्स्की नियमपूर्वक उसमें लिखने लगा। क्रान्ति के कुछ ही समय पूर्व जब चारों ही ओर निराशा ही निराशा दिखलाई पड़ती थी, उसने लिखा था—

"कैसी बुरी
वाई चढ़ी रात में,
कैसे मूढ़ ने,
मुझे निर्मित किया।
मैं इतना बड़ा
इतना निरर्थक।"

जब १९१७ की क्रान्ति आ गई, उस वक्त मायाकोव्स्की सैनिक-सेवा में था। क्रान्ति के पहले दिनों में उसने 'क्रान्ति' नाम से कविता लिखनी

शुरू की और बोल्शेविक् कला पर व्याख्यान दिया। क्रान्ति के बाद कितने ही लेखक और कवि अभी सोच ही रहे थे कि नवयुग का स्वागत किया जाय या नहीं। मायाकोव्स्की पहले ही दिन से अपने लिए निश्चय कर चुका था। वह अपनी जीवनी में लिखता है—'स्वीकार करें, या अस्वीकार करें? अपने बारे में मेरे सामने ऐसा कोई प्रश्न नहीं था। क्रान्ति मेरी है, मैं स्मोल्नी चला गया और काम में लग गया। जो करने को था, किया।'

१७ नवम्बर सन् १९१७ को कलाकार-संघ की बैठक थी। शिक्षा कमीसर **लुनाचार्स्की** का प्रस्ताव था—देश के कला संबंधी जीवन को संगठित किया जाय। उपस्थित कलाकारों में कितने बोल्शेविकों के अधिकारारूढ़ होने की निन्दा करते थे और कह रहे थे, कि सहयोग नहीं देना चाहिए। लेकिन अधिकांश सदस्य कोई निश्चय नहीं कर रहे थे और चुप थे। मायाकोव्स्की ने सीधे और साफ़ शब्दों में प्रस्ताव किया—'नई शक्ति का स्वागत किया जाय और उसके साथ सम्बन्ध जोड़ा जाय।'

जिस वक्त क्रान्ति की आग धक धक जल रही थी, उस वक्त कितने ही लेखनी के धनी इस कहावत को चरितार्थ कर रहे थे—जब तोप की आवाज़ चलती है, तो कविता देवी चुप हो जाती हैं। मायाकोव्स्की ने कहा—मैं ऐसी कविताएँ नहीं लिखता जो कि अच्छे समय की प्रतीक्षा में दराज़ में बन्द रहें। मेरे पास ऐसे ज़ोरदार शब्द हैं जो तोप के साथ स्वर मिला कर बोल सकते हैं। मैं शब्द के ऐसे बमों को ढाल सकता हूँ जो शत्रु को चिथड़े चिथड़े उड़ा सकते हैं।

वह कविताएँ लिखता था और जब उसने काग़ज़ की कमी देखी, तो क्रान्ति की प्रशंसा में ऐसे नाटक लिखे, जिन्हें देश की हज़ारों नाट्यशालाओं में लाखों आदमी देख सकते हैं। १९१८ में उसने "रहस्यमय सैलाब" नाटक लिखा। उसने बाइबिल में आये बड़े जलप्लावन से क्रान्ति की उपमा दी। क्रान्ति वह बाढ़ है, जो पुराने संसार की सभी गन्दगियों को डुबाती बहाती साफ़ कर देती है। नाटककार ने इस नाटक को क्रान्ति के प्रथम वार्षिकोत्सव

से एक मास प्रथम समाप्त किया था। इसका सभी जगह बड़ा स्वागत हुआ। सोवियत्-नाटक-साहित्य में इसका विशेष स्थान है। यह सोवियत् युग का सोवियत् कवि द्वारा सोवियत् शक्ति की प्रशंसा में लिखा गया पहला नाटक था।

१६१८ में बाल्तिक के नौसैनिकों ने मायाकोव्स्की को कविता-पाठ के लिए निमंत्रित किया। कवि ने पुरानी कविता पढ़ने की जगह उस समय के लिए एक नई कविता बनाई, जो 'बाँएँ चलो' के नाम से उसकी अत्यन्त प्रसिद्ध कविता है; और संसार की बहुत सी भाषाओं में उसका अनुवाद हो चुका है। १६१६ में उसने '१५ करोड़' नामक अपना महाकाव्य समाप्त किया। इस महाकाव्य में लेखक का नाम नहीं दिया गया। वह मानता था, कि १५ करोड़ सोवियत्-जनता इसकी निर्माता है, जिसने कि क्रान्ति को सफल बनाया।

गृह-युद्ध बड़े ज़ोर से चल रहा था। तरुण सोवियत्-प्रजातंत्र सर्वस्व की बाज़ी लगा कर अपनी रक्षा कर रहा है। उस वक्त प्रेसों और छापने की मशीनों की बड़ी कमी थी। जो थीं भी, वह ठीक से काम नहीं कर सकती थीं। कुछ कलाकारों ने सोचा कि प्रचार के लिए वह हाथ से पोस्टर तैयार करें। उन्होंने रूसी तार-विभाग के सामने अपनी इच्छा प्रकट की और उसके स्वीकार करने पर परिहासमय "रोस्तजंग्ले" के नाम से कार्टून निकलने शुरू हुए। यह कार्टून अधिकतर तत्कालीन समस्याओं को ले कर तैयार किये जाते थे। ये क्रान्ति-विरोधियों के ख़िलाफ़ प्रचार ही नहीं करते थे, बल्कि ताज़ी समस्याओं द्वारा समाचार का भी काम देते थे। रोस्तजंग्ले थोड़े ही दिनों में सारे देश में फैल गये। मायाकोव्स्की इस योजना का प्रधान नायक था और उसने हज़ारों कार्टून खुद बनाये। कितनी ही बार उसकी कविताएँ रोस्तजंग्लों में निकलीं। इस वक्त मायाकोव्स्की को चित्रकार और काव्यकार दोनों की शक्ति का पूरा पूरा उपयोग लेने का अवसर मिला। तत्कालीन सभी घटनाओं पर कार्टून खींचे

गये। सफ़ेद जेनरल देनिकिन्, उदेनिन्, रेंगल् से ले कर पोल् सामन्तों तथा दूसरे हज़ारों विषयों पर कार्टून निकाले गये। वह जनता के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने में बहुत सफल हुए। अहम्मन्य कवि और कितने ही अहम्मन्य पाठक उस समय मायाकोब्स्की को बड़ी नीची निगाह से देखने लगे। उनके ख़याल में था, कि ऐसा छोटा काम किसी ऊँचे कवि के लिए शोभा नहीं देता। मायाकोब्स्की के ख़याल में कोई काम छोटा-बड़ा नहीं है। जो उपयोगी हो और जिसकी आवश्यकता हो, वही बड़ा काम है।

गृह-युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद भी कितने ही समय तक रोस्त-जंगले कार्टूनों से अलंकृत होते रहे। अब निर्माताओं ने आर्थिक योजना, देश की पुनर्रचना से ले कर इन्फ़्लुएंज़ा, भूख और अव्यवस्था पर कार्टून बनाने शुरू किये। १९२२ के मार्च में जा कर यह कार्टून-प्रचार बन्द हुई। ५ मार्च की "इज़्वेस्तिया" में मायाकोब्स्की ने बहुत दिनों बाद एक कविता लिखी। जवाबदेह कार्यकर्ताओं पर अधिक सभाओं के बोझ का लादना यही कविता का विषय था। दूसरे दिन लेनिन् ने अखिल रूसी धातु के कारख़ानों के मज़दूरों की कांग्रेस में इस कविता की तारीफ़ करते हुए कहा—अपनी कविता में कम्युनिस्टों के बहुत अधिक सभा करने का वह उपहास करता है। उसकी कविता में कवित्व कितना है, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन जहाँतक राजनीति का संबंध है, मैं कह सकता हूँ कि वह बिलकुल उचित है।

अब मायाकोब्स्की ने नियमित रूप से अपनी कविताएँ समाचार-पत्रों में भेजनी शुरू कीं और इस कार्य को वह मृत्यु के समय तक करता रहा। उसके काव्य 'लेनिन्' और 'अच्छा' पत्रों में प्रकाशित हुए। अब भी उसकी कविताएँ तात्कालिक समस्याओं को ही ले कर होती थीं। कितनी ही बार जब संपादक ने मायाकोब्स्की को फोन किया कि अमुक विषय पर कोई कविता होती, तो अच्छा था। और उत्तर मिलता—'हाँ, मैं समझता हूँ। इस पर आधा मैं लिख भी चुका हूँ।'

१९२० में लेनिन् की पचासवीं वर्षगाँठ पर मायाकोव्स्की ने जो कविता लिखी थी; उसकी दो पंक्तियाँ थीं—

*करता हुआ लेनिन् प्रशंसा सूक्ष्म अपने ज्ञान से।
निज विश्व-आशा की प्रशंसा कर रहा हूँ ध्यान से॥

जब लेनिन् की बीमारी की पहली सूचना निकली, तो मायाकोव्स्की ने लिखा—

क्रान्ति चाहती है अपने सीने के भीतर।
नित के लिए समोद प्रेम से लेनिन्-उर-वर।

२७ जनवरी १९२४ को लाल-मैदान में लेनिन् की अर्थी के साथ मायाकोव्स्की मौजूद था। उसने उस समय के दृश्य को इस प्रकार वर्णित किया—

अतिशय नीरव सुन्दर अर्थी,
जग के ऊपर निश्चल।
होंगे किन्तु बगल में उसकी,
हम वाचाल अमितचल॥

मायाकोव्स्की व्यक्ति का बड़प्पन व्यक्ति की विभूति नहीं समझता। उसके विचार में व्यक्ति समाज की उपज है। वह ऐतिहासिक आवश्यकता है। वह लिखता है—

दो सौ वर्ष हुए आने का,
समाचार था आया।
धन्य भाग्य से भू ने पहले,
लेनिन् को जब पाया॥

पूँजीवादियों की लूट और वर्गद्वन्द्व ने लेनिन् को पैदा किया—

इसीलिये सिम्बिर्स्क पुरी में,
जन्मा वह था शुभ दिन।

---

* **साहित्यरत्न पंडित श्यामनारायण पांडे, शास्त्री द्वारा पद्यबद्ध।**

पर टोपी शिर पर रही, न मैं,
दे सकता हूँ सत्कार इसे॥

हमें वीर सोवियत् जान रहे,
किस का करना सम्मान उचित।
पूँजीवादी-मानव-गण का,
आदर करना अतिशय अनुचित॥

मायाकोब्स्की इस थोथी धारणा को नहीं मानता था, कि कवि को उत्प्रेरणा अन्दर से आती है, बाहर से प्रेरणा सच्चे कवि की चीज़ नहीं है। मायाकोब्स्की बड़े ज़ोर से इसका प्रतिवाद करता है। उसका कहना है—एक महान् युग की आवश्यकताएँ और समस्याएँ सच्चे कवि के दिल में उस से कहीं अधिक सबल प्रेरणा उत्पन्न कर सकती हैं, जैसी कि ऋतुओं के परिवर्तन या कवि के सफल-असफल प्रेम के परिणाम। उसने एक जगह कहा है—

तुम अन्य सुमन-गण को रहने,
दो, चयन-प्रतीक्षा में सन्तत।
मुझ को तो आर्थिक मेजों पर,
बस स्वेद बहाने दो शतशत॥

कवि के लिए वह कहता है—

कवि चाहे यदि सदियों तक,
वह बना रहे यश-धारी।
कवि चाहे मानवता का,
संकेतक बनना भारी॥

तो जगती के रस जिनसे,
वह पीता है निशि-वासर।

उन नलियों के रहने दो,
पद गड़े मही के भीतर॥

ले हँसवे और हथौड़े,
जग से श्रमजीवी आते।
कवि-नभ से उनके भुज में,
जाते, जब प्रेम न पाते॥

१९२८–२९ में मायाकोव्स्की ने "खटमल" और "स्नानागार" नामक दो नाटक लिखे। दोनों में सोवियत् जीवन के बचे खुचे विरोधियों की कश्मकश को चित्रित किया गया है। मायाकोव्स्की की अन्तिम कविता 'गला फाड़ कर' १९३० में समाप्त हुई।

स्तालिन् के शब्दों में 'मायाकोव्स्की हमारे सोवियत्-युग का सर्वोत्तम तथा अत्यन्त प्रतिभाशाली कवि था और है।'

***   ***

सोवियत् लेखक और कवि अपनी कला के निर्माण में सारे संसार में सब से अधिक स्वतंत्र हैं। शर्त यह है कि वह वास्तविकता से बिलकुल नाता तोड़कर गगन-विहारी बनना न चाहें। वहाँ उनके सामने जीविका का प्रश्न नहीं है। अच्छे से अच्छे सरकारी कर्मचारी ही नहीं, बड़े बड़े विशेषज्ञों से भी अधिक उनकी मासिक आय है। अपनी कृति के निर्माण में जैसे एकान्त और शान्त निवास तथा जितने साधनों की आवश्यकता है, वे सब उनके लिए तैयार हैं। वह अपने काम के लिए सुविशाल सोवियत् प्रजातंत्र में काम्स्चत्का (कनाडा के पास) से लेनिन्ग्राद् तक ही चक्कर नहीं लगा सकता, बल्कि अगर दूसरे देशों की तरफ़ से रुकावट न पैदा की जाय, तो सारे संसार में घूम सकता है। उसकी कृति में यदि वास्तविक गुण है, तो उसे किसी की सिफ़ारिश की आवश्यकता नहीं और न प्रकाशकों के सामने गिड़गिड़ाने की ज़रूरत। सब से बड़ी बात यह है, कि भूत की रूढ़ियाँ

और धारणाएँ उसके रास्ते में वहाँ ज़रा भी रुकावट डालने की शक्ति नहीं रखतीं। बल्कि ऐसे स्वतंत्र विचारवाले लेखक के लिए तो वहाँ सब से अच्छा सहानुभूति-पूर्ण क्षेत्र है। सोवियत् साहित्य बिलकुल २० साल की चीज़ है। अभी वह अत्यन्त शैशव में है लेकिन इतने ही में उसने अपनी धाक संसार में जमा दी है। यदि नोबुल पुरस्कार के संचालकों को सोवियत् का नाम भड़काने वाला न होता, तो अब तक कितने सोवियत्-लेखक साहित्य के पुरस्कार पा चुके होते। गोर्की जैसा संसार का सर्वोत्तम लेखक जब नोबुल पुरस्कार के योग्य नहीं समझा गया, तो इसीसे समझ लीजिए कि नोबुल पुरस्कार का क्या मूल्य रह जाता है।

*** ***

सुलेमान् स्तालस्की—दागिस्तान का यह गायक ६८ वर्ष की उम्र में पिछले दिसम्बर के पहले सप्ताह में मर गया। इसकी जीवनी भी इस बात का उदाहरण है कि सोवियत्-शासन धूलि में पड़े हीरे को कितना जल्दी पहचानता है। सुलेमान का जन्म दागिस्तान के एक छोटे से गाँव अशग़-स्ताल में हुआ था। बचपन ही में उसका बाप मर गया। फिर वह गाँव के धनी किसानों की चरवाही कर के पेट पालता था। कुछ बड़ा होने पर उसने मज़दूरी तथा गाँव के किसी आदमी की साईसी भी की। गाँव की मज़दूरी इतनी कम थी कि उससे पेट चलना भी मुश्किल था। मज़दूरी की तलाश में वह दर्बेन्त पहुँचा और वहीं ४ वर्ष रहा। इसी वक्त उसे मालूम हुआ कि मध्य-एशिया में रेल बनाई जा रही है। वह वहाँ पहुँचा और समर-कन्द रेलवे पर मज़दूरी करने लगा। वहाँ से लौट कर बाकू के तेल के कुओं पर उसे काम मिला। उसने कुछ रुपया भी कमाया। अब वह ३० वर्ष का हो चुका था; इसलिए शादी के लिए और देरी नहीं करना चाहता था। शादी कर गाँव में चला आया। उसने नया झोपड़ा बनाया। पैसे से नया झोपड़ा तो बना लिया, लेकिन रोज़ी का सवाल वैसा ही था। बीबी को लेकर फिर

बाकू जाना नहीं चाहता था। इसलिए गाँव ही में दूसरों के खेतों पर मज़दूरी करने लगा।

होश सँभालते वक़्त ही से सुलेमान को तुकबन्दी की आदत थी। जवानी की ठंडी और गर्म आँधी से हो कर जब वह गुज़र रहा था, तो उसे इस शौक से आनन्द और सन्तोष मिलने लगा। मुल्ला, गाँव के पंच, ज़मींदार, सरकारी नौकर, महाजन के ख़िलाफ़ अपनी भाषा में वह पद्य बनाता था। पद्य इतने रोचक होते थे, कि लोग ले उड़ते थे। एक मुँह से दूसरे मुँह में हो कर वह सर्वत्र फैल जाते थे। लेकिन दो-चार आदमियों को छोड़ कोई नहीं जानता था कि इन पद्यों का क़र्त्ता कौन है। शादी किये १८ वर्ष गुज़र गये। सुलेमान ४८ साल का हो गया था। बच्चों और परिवार के बोझ ने उसकी कमर तोड़ दी थी। इसी बीच लाल क्रान्ति हो गई और क्या हुआ, यह सुलेमान के शब्दों ही में सुनिए—
"बोल्शेविक भूकंप ने पुराने संसार को तर-ऊपर कर दिया। हमारे चिर-कालीन दुःख के पहाड़ ढह गये; और हमारी अन्धकारपूर्ण घाटी को अक्तूबर के महान् प्रकाश ने आलोकित कर दिया।"

सुलेमान के कहने के मुताबिक अब उसे नया जीवन ही नहीं मिला, बल्कि नई जवानी मिली। सोवियत्-सरकार ने हर जाति की उन्नति के लिए उसी की भाषा को साधन बनाया। अब गँवारू भाषाएँ भी साहित्यिक बन गईं। सुलेमान ने अक्षरज्ञान पाने का कभी सौभाग्य नहीं पाया। वह अपने पदों को कंठ ही में जोड़ता था। उसके पद अब दागिस्तानी भाषा में लिपिबद्ध हुए। पढ़नेवालों के दिल से दागिस्तानी के गँवारू भाषा होने का ख़याल उठ चुका था। वह देखने लगे कि यह अनपढ़ कवि अपनी कविता में कैसे बहुमूल्य मोतियों को पिरो रहा है। अब सुलेमान की पुरानी कविताएँ, मुल्लों और ज़ारशाही के नौकरों के ख़िलाफ़ जो कही गई थीं, उन्हें शिक्षित लोग भी बड़े आदर से पढ़ने लगे। सुलेमान ने अब क्रान्ति और नये युग पर अपनी सरस्वती को जगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों में

उसकी कविता को दागिस्तान से बाहर जाना पड़ा। उसके कुछ पद्य रूसी भाषा में अनुवादित हो कर छपे। गोर्की ने देखा, वह दंग हो गया। उसने सुलेमान से परिचय प्राप्त किया। उसकी बहुत सी कविताओं को रूसी भाषा में अनुवादित करवाया। **स्ताल्स्की** (स्ताल् गाँव वाला) की कविताओं का बहुत बड़ा भाग सोवियत् की दूसरी भाषाओं में अनुवादित हो चुका है। सरकार की ओर से उसे पेंशन मिली थी। जनता की ओर से अपार सम्मान। उसे पार्लियामेंट का उम्मेदवार खड़ा किया गया था लेकिन निर्वाचन-दिन से चार पाँच दिन पहले उसकी मृत्यु हो गई।

स्ताल्स्की ऐसे निरक्षर प्रतिभाशाली कवि भारत में भी हैं और हुए होंगे। अपनी गाँव की भाषा में वह भी सजीव चुभती और ललित कविताएँ करते होंगे लेकिन इन प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मौक़ा कहाँ? स्ताल्स्की भी यदि ज़ारशाही के ही दागिस्तान में मर गया होता, या हिन्दुस्तान में पैदा हुआ होता, तो उसकी गति क्या होती?

चित्र	पृष्ठ

११—सोवियत्-फ़िल्म

ललित-कला में रूस पिछली शताब्दी से ही यूरोप में अग्रणी माना जाने लगा है। यदि युरोप के बड़े बड़े गायक-गायिका, नर्तक-नर्तकी, वादक-वादिका के नाम की सूची ली जाय, तो उनमें रूसियों का नम्बर बहुत काफ़ी आयेगा। लाल-क्रान्ति के बाद सोवियत्-भूमि ने अपने को इस उत्तराधिकार से वंचित नहीं किया, बल्कि आज इन बातों में वह संसार में प्रथम स्थान ग्रहण कर रहा है। सोवियत् फिल्म सभी दृष्टि से संसार में सर्वोत्तम है। सीन-सीनरी दिखलाने में तो वह कमाल करते हैं। वर्षा, सूर्योदय, सूर्यास्त, चाँदनी आदि का इतना सच्चा और इतना सुन्दर चित्रण संसार के किसी भी फ़िल्म में न मिलेगा। चाहे आप होलीउड को लीजिए या जर्मन, फ़्रेंच, अंग्रेज़ी फ़िल्मों को। सोवियत्-फ़िल्मों के सामने वह दरिद्र मालूम होंगे। यह ज़रूर है, कि अगर स्त्रैण संबंधों को लीजिए, तो होलीउड क्या हमारे हिन्दुस्तानी फ़िल्मों के सामने भी वह दरिद्र मालूम होंगे। चुम्बन तो वहाँ देखने में ही नहीं आयेगा। और आलिंगन आदि उतना ही, जितना स्वाभाविक समाज में होता है। जहाँ एक ओर सोवियत् फ़िल्मों में अश्लीलता नहीं आने दी जाती, वहाँ उनके प्लाट, दृश्य और अभिनय में बड़ी गंभीरता रहती है। ऐतिहासिक फ़िल्मों में उस समय के संसार को बड़े प्रयत्न के साथ चित्रित किया जाता है। उस समय लोग कैसा कोट पहनते थे, कैसा पतलून और कैसी टोपी। कैसी उनके पास बन्दूक़ थी और किस तरह के आमोद-प्रमोद को वह पसन्द करते थे? समाज और धर्म के बारे में उनके कैसे ख़याल थे? इन सभी बातों को सच्चाई के साथ फ़िल्म में लाने की कोशिश जितनी सोवियत्-फ़िल्म करते हैं, उतनी दुनिया के किसी फ़िल्म में नहीं देखी जाती। सोवियत्-फ़िल्मों में इस बात का भी ख़याल रखा जाता है कि उनसे जहाँ

साधारण जनता का मनोरंजन हो, वहाँ उच्च साहित्यिक भी उसे पसन्द करें। "बाल्तिक् के डिपुटी" नामक फ़िल्म को फ़्रांस, अमेरिका में उसी तरह की सफलता हुई, जैसी सोवियत्-भूमि में। **रोम्यो रोलाँ** ने इसकी बड़ी तारीफ़ की थी। जहाँ वहाँ साधारण दर्शकों की टिकट के जँगलों पर भीड़ रहती थी, वहाँ संसार के लब्ध-प्रतिष्ठ वैज्ञानिक भी इसे देखने के लिए लालायित थे। "महान् पीतर" सोवियत् का एक दूसरा फ़िल्म पिछले साल चल रहा था। यह सोवियत् के सर्वोच्च उपन्यासकार **अलेक्सेइ तालस्त्वा** के उसी नाम के उपन्यास के आधार पर बना है। पीतर के समय के संसार और समाज को चित्रित करने में इस फ़िल्म ने कमाल किया है। कैसे समाज के भिन्न भिन्न अंग ज़मींदार, व्यापारी एक दूसरे से आगे बढ़ने के लिए प्रतिद्वन्द्विता कर रहे थे, इसका इसमें अच्छी तरह परिचय कराया गया है। इसमें पीतर को एक चतुर और कर्मठ शासक के रूप में दिखाया गया है। यह पीतर ही था जिसने पुराने ढाँचे में ढले रूस को यूरोप के विज्ञान और प्रगतिशील सभ्यता से प्रभावित होने का उद्योग किया। पीतर के इस काम में उसके सामन्त और धर्माधिकारी बाधक थे। फ़िल्म में बड़ी चतुरता से दिखलाया गया है कि कैसे सामन्तों और महन्तों ने पीतर के पुत्र को उसके बाप के
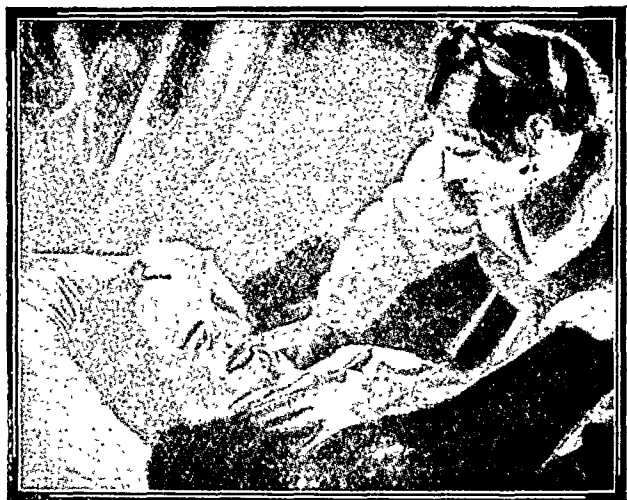
महान् पीतर (फिल्म)

खिलाफ़ भड़काया। सौदागर पीतर के सुधारों को चाहते थे, क्योंकि उनके द्वारा व्यापार की वृद्धि के साथ साथ समाज में उन्हें सम्माननीय स्थान मिलने का अवसर था। ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तियों के भाव-चित्रण और व्यक्तित्व-चित्रण में कलाकारों ने कमाल किया है।

अलेखेइ ताल्स्त्वा (लेखक) (पृ० २४२)

*** ***

१९ नवम्बर को हमने लेनिनग्राद् में "पुगाचोफ़्" फ़िल्म देखा। यह भी एक ऐतिहासिक फ़िल्म है। ज़मींदारों के अत्याचार और ज़ार के अन्याय के कारण रूस के किसान नरक की ज़िन्दगी बिता रहे थे। हज़ारों ने जान से हाथ धोया और हज़ारों जेलों में पड़े सड़ रहे थे। इन्हीं क़ैदियों में एक तरुण किसान पुगाचोफ़् भी था। उसका हृष्ट पुष्ट बदन, उसकी निर्भीकता और साथियों के साथ दिली सहानुभूति ने उसे क़ैदियों में सर्वप्रिय बना दिया था। एक दिन वह जेल से भाग निकलता है। किसानों को ज़ालिमों के खिलाफ़ उठ खड़े होने के लिए उत्तेजित करता है। हज़ारों किसान खुशी खुशी उसके दल में शामिल होते हैं। ज़ार और उसके पिट्ठुओं की सेना पुगाचोफ़् के दल के सामने संठी की तरह चूर चूर हो जाते हैं। पुगाचोफ़् के अनुयायी उससे 'राजा' बनने का आग्रह करते हैं। वह राजा घोषित किया जाता है। राजा होने के साथ अपनी पुरानी किसान बीबी के साथ राजसी ठाट को क़ायम रखने में बाधा होती है। मुसाहिब राय देते हैं, पुरानी

पत्नी को तिलाक दे कर नई रानी लाने के लिए। पुगाचोफ़् दिल से नहीं चाहता। अन्त में एक पत्नी के रहते दूसरी से विवाह उसका समाज बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसलिए दिल को पत्थर करके वह पत्नी को विदाई देता है। नई रानी और मुसाहिबों की इच्छा के विरुद्ध स्वयं फाटक तक अपनी पत्नी को पहुँचाने आता है। पुगाचोफ़् का एक सहायक तातार सरदार उसके राजदरबार में किसी ग़लतफ़हमी के कारण अपमानित होता है। जातीयता और धर्म (मुसलमान तथा ईसाई) का भेद भी उसमें दख़ल देता है। इस प्रकार एक ओर पुगाचोफ़् की शक्ति क्षीण होने लगती है; और दूसरी ओर ज़ार और उसके अनुयायियों की शक्ति बढ़ती है। पुगाचोफ़् फिर भी वहादुरी के साथ सामना करता है और गिरफ़्तार कर मास्को ले जाया जाता है। अन्त में जल्लाद के हाथ में कुठार और हाथ पैर बँधे शेर की तरह खड़े पुगाचोफ़् को दिखलाया जाता है। फ़िल्म का कथानक यही है। लेकिन हर एक चीज़ के पीछे जितने बड़े और सुंदर दृश्य हैं, उनको देखते ही बनता है। फ़िल्म के देखने से ही पुगाचोफ़् जिस संसार में घूमता था, उसका सजीव चित्र हमारे सामने आ जाता है। ज़ारीना कैथराइन उस वक़्त रूस की शासिका थी। उसके दरबार और मुसाहिबों की सजावट और वेश-भूषा ही का इस फ़िल्म से पूरी तरह परिचय नहीं मिलता, बल्कि यह भी मालूम होता है कि कैथराइन के सलाहकारों में कैसे कैसे डरपोक, वंचक और नीच पुरुष थे।

*** ***

वहीं हमने अर्मनी में क्रान्ति के संबंध का एक फ़िल्म भी देखा। सोवियत्-फ़िल्मों का उद्देश्य दर्शकों का सिर्फ मनोरंजन करना मात्र नहीं है। वह मनोरंजन के साथ जनता के ज्ञान की वृद्धि करते हैं। भारतीय फ़िल्म तो इस दृष्टि से देखने पर अत्यन्त निम्न कोटि के हैं। इनका सारा प्लाट कलकत्ता या बम्बई के शहर और आसपास की थोड़ी सी जगह पर ही

चित्रित होता है। बहुत कुछ तो वह अपने स्टुडियो के भीतर ही कर डालते हैं। इस अर्मनी फ़िल्म में वहाँ के हरेभरे पहाड़ों, घने जंगलों, कल-कल-नादिनी नदियों का इतना सुन्दर चित्रण हुआ था कि उस एक चित्र से आदमी आर्मेनिया के प्राकृतिक भूगोल के बारे में बहुत सा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। क्रान्तिकारी सैनिक—जिनमें पुरुषों के अतिरिक्त स्त्रियाँ भी शामिल थीं—जिन समाजों से आये थे, जैसे उनके घर थे, जिस तरह का व्यवसाय करते थे, इन सब को भी बारीकी के साथ दिखाया गया था। करुणा, क्रोध, जहाँ जिस भाव की आवश्यकता थी वहाँ उसी को बड़ी सफलता के साथ अंकित किया गया था।

*** ***

हाल में लाल-क्रान्ति के सम्बन्ध में भी कुछ फ़िल्म बने हैं। इनमें 'अक्तूबर में लेनिन्' बहुत ही सफल फ़िल्म है। लाल क्रान्ति पर पोथे के पोथे पढ़ जाने पर भी उस समय की अवस्था का जितना ज्ञान नहीं होगा, उतना इस फ़िल्म को दो घंटा देख लेने में होता है। वास्तविकता लाने में कमाल किया गया है। लेनिन्, स्तालिन्, ज़ेर्ज़िन्स्की, करेन्स्की ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, जिनमें कुछ अब भी जीवित हैं। फिल्म को देखने से मालूम होता है कि हम उन्हीं व्यक्तियों को फ़िल्म में देख रहे हैं। मोम, रबर और दूसरी चीज़ों से चेहरों की हूबहू नक़ल ही नहीं उतारी गई है, बल्कि उनके सिर पर हाथ रखने, दाढ़ी पर हाथ फेरने, सीटी बजाने आदि विशेष ढंगों और बोलने के तकिया-कलाम को भी बारीकी के साथ लाया गया है। व्यक्तियों के चित्रण में जिस सूक्ष्मता से काम लिया गया है, स्थानों और प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण में भी वही बात दिखलाई पड़ती है। लेनिन् कई साल के प्रवास के बाद वेष बदल कर चुपके से एक बोल्शेविक इंजन-ड्राइवर के साथ शाम को पीतर्बुर्ग के फ़िनलैंड स्टेशन पर पहुँचता है। करेन्स्की-गवर्नमेंट—जो लेनिन् से बहुत ख़ौफ़ खाती है—को इसका पता लग गया। उसने पुलीस के

जत्थे भेजे। इंजन-ड्राइवर ट्रेन को प्लेटफ़ार्म से थोड़ा आगे बढ़ा देता है, और फिर भाप का एक घना बादल इंजन से छोड़ता है। उसी भाप की आड़ में वह लेनिन् को स्टेशन से बाहर निकाल ले जाता है। वहाँ मित्र लोग तैयार हैं। लेनिन् क़द में नाटा है और इंजन से आया उसका मित्र

अक्तूबर में लेनिन् (एक फ़िल्म)

बहुत लंवा चौड़ा है। उसी आदमी के साथ लेनिन् पहले ही से निश्चित

किये गये घर में जाता है। मकान के दरवाज़े को अच्छी तरह देख कर बन्द किया जाता है। घर उसी साथी का है। वहाँ उसकी स्त्री रहती है। स्त्री ने स्वागत किया। लेनिन् ओवरकोट उतार कर झट से मेज़ पर बैठ जाता है। लेनिनग्राद् के नक़शे को सामने रखता है। उसी समय स्तालिन्, जेर्जेन्स्की तथा दूसरे बोल्शेविक आ पहुँचते हैं। क्रान्ति का झंडा कैसे और किस वक़्त उठाया जाय, कहाँ और कितने हमारे साथ सहयोग देनेवाले सैनिक हैं आदि आदि बातों पर विचार होता है। सब लोग चले जाते हैं। लेनिन् की नज़र एक दूसरी मेज़ पर जाती है। वहाँ पर गृहपत्नी ने अपने होनेवाले बच्चे के लिए कुर्ती सी कर रखी है। लेनिन् का उस कुर्ती को उठाकर देखने तथा टिप्पणी करने का ढंग बड़ा ही मनोरंजक है। लेनिन् अपने लम्बे साथी से—जो कि कई दिन से नहीं सो सका था—सो लेने के लिए बड़ा आग्रह करता है। वह बहाना करके बाहर जाता है। बड़ी देर बाद लेनिन् खुद सोने के लिए उठता है। उसके लिए चारपाई तैयार की हुई है लेकिन वह फ़र्श पर कुछ पुस्तकों को तकिया बना ओवरकोट ओढ़ सो जाता है। उसका लम्बा रक्षक लेनिन् को सोया देख सन्तुष्ट होता है।

करेन्स्की की सरकार लेनिन् का काम ख़तम करना चाहती है। लेनिन् को मारने के लिए एक मजदूर तैयार किया जाता है। उसे बहुत आश्वासन और प्रलोभन दे कर बड़े अफ़सर के पास लाया जाता है। मजदूर अभिवादन करके हाथ आगे बढ़ाता है। उसके मैले कुचैले कपड़े, अस्तव्यस्त केश और कालिख पुते हाथ को देख कर अफ़सर अपने हाथ को समेटे रखता है। पैसे के लोभ के लिए मजदूरों के प्राण लेनिन् की जान लेने के लिए यह तैयार हैं; लेकिन उनके साथ उस अफ़सर का यह व्यवहार हत्यारे के चेहरे पर अनेक स्पष्ट रेखाओं में अंकित हो जाता है। हत्यारा उस मकान को देख आया है, जिसमें लेनिन् ठहरा है। वहाँ पर उसने एक हथियारबन्द आदमी भी छोड़ रखा है। अब सशस्त्र पुलिस

लेनिन् को पकड़ने चलती है। हत्यारा ड्राइवर के पास बैठता है। ड्राइवर को किसी तरह यह मालूम हो जाता है। आगे बढ़ता देख हत्यारा पहले ज़बान से, फिर हाथ से ड्राइवर को रोकना चाहता है। ड्राइवर एक ऐसा घूँसा रसीद करता है कि हत्यारा बेहोश हो जाता है। ड्राइवर मोटर को आगे दौड़ा किसी चीज़ से टकरा कर उसे बेकार कर देता है। सिपाही लोग उतर कर पैदल जाने के लिए मजबूर होते हैं; लेकिन पथप्रदर्शक हत्यारा बेहोश है।

उधर संकट के जीवन के चिरअभ्यासी लेनिन् ने मकान को छोड़ना चाहा। साथी कहता है—अभी रक्षा का पूरा प्रबन्ध नहीं हुआ है। तो भी लेनिन् जाने के लिए आग्रह करता है। रोकने पर वह छटपटाता है और रुक जाता है। निश्यच ही यदि मोटर ड्राइवर बाधक न हुआ होता, तो कभी की पुलिस मकान में दाख़िल हो गई होती। आख़िर लेनिन् के गंजे सिर में बाल चिपका, दाढ़ी मूँछ को घायलों की सफ़ेद पट्टी में छिपा बाहर निकाला जाता है। दरवाज़े से बाहर जाकर पहले लम्बा आदमी ख़ुद झाँकता है और वहाँ हथियारबन्द आदमी को खड़ा देख वहीं पटक कर उसे ख़तम कर देता है। फिर कितने ही उपायों से बचा कर वह लेनिन् को एक जगह ले जाता है। वहाँ मज़दूरों के भीतर लेनिन् भी बैठता है। पेत्रोग्राद् के मज़-दूरों की बग़ावत का करेन्स्की की सरकार को सामना करना पड़ता है। वह उसको रोकना चाहती है। लेकिन असफल!

जिस मज़दूर की बग़ल में लेनिन् बैठा है, उसने भी लेनिन् का नाम सुना है। वह अपने पास के आदमी से पूछता है—'तुमने लेनिन् को देखा है, वह काले बालोंवाला है या भूरे बालोंवाला?' लेनिन् बड़ी संजीदगी से कहता है—मैंने नहीं देखा! 'कहाँ है' के जवाब में कहता है—शायद यहीं हो। बाल्तिक के नौसैनिक क्रान्ति का पक्ष लेते हैं। मज़दूर और मज़दू-रिनें अपने ऊलजलूल कपड़ों में बन्दूकें हाथ में लिये क्रान्ति-युद्ध आरम्भ करती हैं। युद्ध के भिन्न भिन्न मोर्चों को बड़ी ख़ूबी से दिखलाया गया है।

युद्ध के बीच में करेन्स्की के मंत्रिमंडल की बैठक होती है। लाल योद्धा ज़ार के शरद्-प्रासाद में दाख़िल होते हैं। वहाँ किसी जगह सुन्दर पाषाणमूर्तियाँ हैं। किसी जगह किसी महान् कलाकार द्वारा चित्रित अद्भुत चित्रपट हैं। बेपरवाई से या जानबूझ कर इन चीज़ों को सिपाही नष्ट न कर दें, इसके लिए मज़दूर सेना का अगुआ बहुत ख़याल करता है। वह एक बार चिल्ला कर कहता है—'साथियो, यह सुन्दर कला की वस्तुएँ राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। सोवियत् सरकार को इनकी ज़रूरत पड़ेगी। ख़याल रखना, इनको नुक़सान न पहुँचे।'

शरद्-प्रासाद पर बोल्शेविकों का अधिकार होता है। करेन्स्की का मंत्रिमंडल पकड़ा जाता है। विजय के उपलक्ष में प्रासाद के बड़े हाल में सभा होती है। लेनिन् मंच पर व्याख्यान देने आता है। वह मज़दूर, जिसकी बगल में लेनिन् कुछ समय तक बैठा था, ख़ुशी के मारे फूला नहीं समाता। साथियों से कहता है—अरे, लेनिन् तो मेरे पास बैठा था! मैंने उससे बात की थी। मैंने पूछा—लेनिन् कहाँ है; तो बोला, शायद यहीं हो।

'अक्तूबर में लेनिन्' सोवियत्-फ़िल्म-उद्योग की प्रगति को बहुत ऊँचा साबित करता है। कलाकारों ने जिन व्यक्तियों को अपने नाट्य का विषय बनाया है, उनके रूप और भाव के चित्रण में इसने अद्वितीय सफलता प्राप्त की है। जन-कलाकार श्चुकिन् ने अपने चित्रण द्वारा सिद्ध किया है कि ज़ारशाही की मजबूत शक्ति को ध्वस्त करने के लिए लेनिन् के पास कितना सुदृढ़ दिल और दिमाग़ था।

*** ***

'बाल्तिक् के आदमी' एक दूसरा फ़िल्म है, जो कि क्रान्ति-युद्ध के एक अंग को दिखलाता है। यह फ़िल्म एक एक शहर में महीनों चलता रहा; और तब भी दर्शकों की भीड़ कम न होती थी। मैंने पहले दिन टिकट के लिए कोशिश की, तो देखा, पहले और दूसरे प्रदर्शन के सभी टिकट बँट चुके

हैं और तीसरे प्रदर्शन के लिए मेरे आगे एक लम्बी क़तार खड़ी है। टिकट मिलता, तो भी ११ बजे रात से ४ बजे तक फ़िल्म आरंभ की प्रतीक्षा में बैठने के लिए मैं तैयार नहीं था। दूसरे दिन किसी तरह टिकट मिला। दृश्य १९१९ में मित्र (अंग्रेज़-फ्रेंच)-शक्तियों की मदद से सफ़ेद रूसी (ज़मींदार और पूँजीपति) पेत्रोग्राद् पर कब्ज़ा करना चाहते थे। एक तरफ़ जेनरल यूदेनिच् की सेनाएँ पेत्रोग्राद् के पास पहुँचती हैं और दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ी जहाज़। बालतिक् समुद्र में वे माइन डाल कर सोवियत् बेड़े को नष्ट करने की प्रतीक्षा में खड़े होते हैं। दो सोवियत् जंगी जहाज़ गबरील और आज़र्द, फ़िन्लैंड की खाड़ी (पेत्रोग्राद् की खाड़ी) की हिफ़ाज़त के लिए तैयार हैं। गबरील का कप्तान ज़ारशाही के वक़्त का एक अफ़सर है। वह लाल क्रान्ति को दिल से नहीं पसंद करता तो भी वह बागी होना नहीं चाहता। इधर क्रान्ति के बाद सैनिकों में विनय की कमी और उच्छृंखलता अधिक बढ़ जाती है। सैनिक अपने पुराने कप्तान से बड़ी बेतकल्लुफ़ी से बातचीत ही नहीं करते, बल्कि मुँह पर मज़ाक़ उड़ाने से भी बाज़ नहीं आते। कप्तान को यह बहुत बुरा लगता है। सोवियत् कायदे के मुताबिक हर एक सेना या जंगी जहाज़ में सैनिक अफ़सर के अतिरिक्त एक राजनैतिक अफ़सर या कमीसर रहना भी ज़रूरी था। एक मज़दूर कमीसर हो कर आता है। सोवियत्-शासन के ऊपर काली घटाएँ छाई हुई हैं। चारों ओर शत्रुओं की शक्ति अधिक दृढ़ हो चुकी है। कमीसर बड़ी हँसी-ख़ुशी के साथ अपनी स्त्री और एकलौते लड़के से विदाई लेता है। जहाज़ में आकर सैनिकों को लज्जा और उच्चादर्श की ओर ध्यान दिला कर विनीत बनाने में सफल होता है। पुराने कप्तान को भी नई परिस्थिति के अनुकूल बनाने के लिए प्रस्तुत करता है। जहाज़ के भीतर भी दुश्मन के आदमी पहुँचे हुए हैं। वह उलटा सन्देश दे गबरील के सैनिकों को दुश्मनों के आधीन एक तट पर उतार देते हैं। शत्रु गोलाबारी शुरू करता है। सैनिक खुद ख़तरे में तो हैं ही, लेकिन वह चाहते हैं कि इस ख़तरे को उनका साथी जहाज़ जान जाय। वे एक दूत भेजते

चित्र	पृष्ठ

हैं, लेकिन वर्षा की बूँदों की तरह बरसती गोलियों के भीतर वह चार क़दम आगे भी जीवित नहीं बचता। दूसरा तैयार होता है। तीसरा भी उसी हिम्मत और उत्साह से सन्देश ले जाने के लिए अपने को अर्पण करता है। आखिर गोलियों के भीतर से एक सन्देश-वाहक जहाज़ की ओर भागता है। सैनिक एक पहाड़ के डाँड़े की आड़ से दुश्मन का मुक़ाबला कर रहे हैं। एक सिगरेट जला कर एक छोर से दूसरे छोर तक सभी मुँहों में घड़ी की सुई की तरह कैसे खिसकता चला जा रहा है, और किस तरह वह सैनिक मृत्यु से निडर हो दुश्मनों की गोलियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं; ये दृश्य बहुत ही भावपूर्ण हैं।

सन्देश-वाहक जहाज़ पर पहुँचता है। सैनिक भी कुछ हानि के बाद अपने जहाज़ पर लौटते हैं। एक अंग्रेज लड़ाई का जहाज़ हमला करता है। समुद्री लड़ाई का एक बहुत ही भीषण दृश्य दर्शकों के सामने आता है। तोपें आग उगल रही हैं। उनका धुआँ आसमान में छा रहा है। गोलों के आघात से नौकाएँ और जहाज़ के पटरे गज़ों ऊपर उड़कर समुद्र-तल पर गिर रहे हैं। अंग्रेजी ज़हाज़ डूबने लगता है। बचे-खुचे नौसैनिक पानी में कूद पड़ते हैं। सोवियत् जहाज़ जीवित अंग्रेज़ सैनिकों को बचाता है। अंग्रेज़ कप्तान गिरफ़्तार होता है। उसे सोवियत् के साधारण सैनिक और अफ़सर में कोई भेद नहीं दिखलाई देता। लाल सिपाहियों के समानता के व्यवहार से झुंझला उठता है। उसके रूखे बर्ताव को लाल सैनिक हँसी में उड़ा देते हैं।

दो ख़तरों से अभी तक वे बच चुके थे। लेकिन इसी समय दुश्मन का भेदिया भुलावा दे कर गबरील को उस तरफ़ भेज देता है, जिस तरफ़ कि समुद्र में विस्फोटक बिछे हुये हैं। भेदिया मृत्यु से डर जाता है और भेद खोल देता है। लेकिन तब तक जहाज करीब पहुँच गया है। उसे ख़ुद बचने की कोई गुंजायश नहीं, लेकिन वह अपने साथी जहाज़ आज़र्द को संकेत द्वारा ख़तरे की सूचना दे देता है। जहाज़ से टकरा कर विस्फोटक फूटता है और जहाज़

में भारी छेद हो जाता है। बचने के लिए छोटी नावें और कमर-पेटियों के सहारे लोग उतर रहे हैं। कमीसर और कप्तान उतरने से इनकार कर देते हैं। इसी वक़्त पता लगता है, कि कमीसर का एकलौता लड़का भी छिप-कर जहाज़ में चला आया है। कमीसर अपने लड़के को गोद में लेता है। अब तक उसके चेहरे पर हर्ष का चिह्न था। अपनी मृत्यु उसके लिए तृण के समान थी। उसको ख़ुशी इस बात की थी, कि उसने एक जहाज़ को बचा दिया; और दुश्मन के एक जहाज़ को वह पहले ही डुबा चुका है। लेकिन मृत्यु की घड़ी में अपने बच्चे को सामने पा कर वह विचलित हो जाता है। उसी समय नाव से कोई आदमी बच्चे को लेने के लिए आ जाता है। कमीसर प्यार कर के बच्चे को दे देता है। जहाज़ पर कमीसर और कप्तान ख़ुशी ख़ुशी मृत्यु का आलिंगन करने के लिए खड़े हो जाते हैं। इंच-इंच कर के जहाज़ पानी में धँसता जाता है और वह दोनों प्रसन्नमुख अनन्त जलराशि के भीतर निमग्न हो जाते हैं। कलाकारों ने भाव-चित्रण में ही सिद्धहस्तता नहीं दिखलाई है; बल्कि प्राकृतिक दृश्यों के दिखलाने में भी वैसी ही उदारता है जैसी कि सोवियत्-फ़िल्मों में देखी जाती है।

* * * * * *

छोटे छोटे लड़कों के लिए सोवियत् ने अलग फ़िल्म तैयार किये हैं। इनकी संख्या हज़ारों तक पहुँच गई है। शिक्षाप्रद कहानियों को ऐसे मनो-रंजक ढंग से बोलते चित्रपटों में उतारा गया है कि बालक देखते वक़्त लोट-पोट हो जाते हैं। पुश्किन की सोने की मछली और मछुएवाली कहानी मैंने देखी। उसमें मछुए का जाल गिराना, मछली का जाल में आना और उसकी प्रार्थना पर मछुए का छोड़ देना। फिर मछुए की औरत की फ़रमाइश पर मछुए का एक के ऊपर एक वरदान माँगना और धीरे धीरे झोपड़ी की जगह महल और मछुइन की जगह महारानी बनना आदि सभी घटनाओं को बड़े स्वाभाविकरूप में चित्रित किया गया है।

मछुइन-रानी के दरवार और उसकी लौंडियों का ऐसा खाका खींचा गया है कि लड़के भी अपनी हँसी को रोक नहीं सकते थे।

ऐसे ही कितने दूसरे पशु-पक्षियों की कहानियों के भी फ़िल्म तैयार किये गये हैं, जिनसे मनोरंजन ही नहीं, लड़कों के ज्ञान की भी वृद्धि होती है।

इतिहास के ज्ञान के लिए वड़े सुन्दर प्रयोग हुये हैं। 'लेनिन्ग्राद्' के पहले दृश्य में १५ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी की अवस्था दिखलाई गई है। कैसे लाल धधकती गोल धरती के ऊपर ताज़ी पपड़ी पड़ी। पपड़ियों के वीच में जहाँ-तहाँ लाल आग दिखलाई पड़ रही है। दहकता तरल पदाथ वीच वीच से ऊपर फिंक जाता है; और वह धीरे धीरे ठंडा होने लगता है। उस दहकती हुई धरती की लौर दूर तक आसमान में फैल रही है। गर्म वादल उस पर बूंदें डालते हैं। उस नवीन ग्रह के चारों ओर आँधियाँ दौड़ रही हैं। पृथ्वी थर्राती है। धीरे धीरे ऊपर की लाली छिप जाती है। घन वादल भी जहाँ-तहाँ फट जाते ह और सूरजकी किरणें धरातल तक पहुँचने लगती हैं। पृथ्वी पर प्रथम दिन होता है। लेकिन अभी वहाँ किसी प्राणधारी का पता नहीं।

दूसरे दृश्य में भिन्न भिन्न भूगर्भी युगों को दिखलाया जाता है। कैसे पपड़ियों की सिकुड़न में पानी जमा हुआ। कैसे धीरे धीरे उसकी भाप कम होने लगी और कैसे ताप-मान के गिरने के अनुसार केंचुए जैसे जानवरों और क्रमशः बड़े बड़े विशालकाय जीवधारियों का प्रादुर्भाव हुआ।

फिर कैसे उन जीवों की पैदायश हुई जो धरती और जल—दोनों में रहते हैं। उन वनस्पतियों को भी दिखलाया गया ह जो उस अवस्था में रह सकते थे। मछलियाँ जल-थल-वासिनी हुईं। फिर वृक्ष भी समुद्र के सूखे किनारों पर उगने लगे और अपने भीतर से आक्सिजन निकाल कर हवा में फैलाने लगे।

चौथे दृश्य में दिखाया गया है कि कैसे वड़ी वड़ी दलदल पृथ्वी में पैदा

हुई। पानी में झुंड की झुंड मछलियाँ और पनिहे साँप दौड़ने लगे। अभी तक चिड़ियाँ नहीं उत्पन्न हो पाई थीं और न फूलों का अब तक प्रादुर्भाव हुआ था। करोड़ों महाकाय वृक्ष टूट-फूट कर गिरने लगे और पानी के भीतर नरम काली राख जैसे कोयले का रूप धारण करने लगी और करोड़ों वर्षों बाद यही चल कर कोयले बने।

फिर ५ लाख वर्ष पहले का दृश्य सामने आया। हिमयुग सारे उत्तरी भूमंडल को विशाल हिमराशि से ढक कर सर्द करने लगा। आज जिस जगह पानी कभी नहीं जमता, वहाँ भी निरन्तर हज़ारों वर्षों तक बर्फ़ पड़ी रही। धीरे धीरे हिमयुग की कड़ाई दूर होने लगी। बर्फ़ पिघलने लगा और हिमानियाँ (ग्लेसियर) उत्तर की ओर हटने लगीं। अब नये वृक्ष जो आज भी सिबेरिया के तुन्द्रा में मिलते हैं, प्रकट होने लगे। बड़े बड़े बालोंवाले महागज (मम्मथ) और उत्तरी गैंड़े जहाँ-तहाँ घूमने लगे। उसके बाद हमारे बाप-दादा प्रस्तरयुग के मनुष्य अपने अनगढ़ पत्थर के हथियारों से रीछों को गुफ़ाओं से भगाने लगे। और उन गुफाओं को अपने घर के रूप में परिणत कर दिया।

फिर ७ हज़ार वर्ष पहले के लेनिन्ग्राद् का दृश्य दिखलाया गया। उस वक़्त नेवा नदी के मुँह पर इतने अधिक द्वीप न थे। नेवा उस वक़्त लदोगा झील और फ़िनलैंड की खाड़ी को मिलाती थी। आजकल जिसे वसिलियेफ़् द्वीप कहते हैं, वहाँ अजगर, मछली और भेड़िया के सिर की नक़्क़ाशीवाले कितने ही बजरे आते थे। ये यूनानी व्यापारियों के पोत थे, जो सुदूर काला सागर से आते थे। उन्हीं पर स्कन्दनेविया के नाविक भी देखे जाते हैं। यही वे नाविक थे, जिन्होंने कि नावों से यूनान तक के रास्ते का पता लगाया।

इसके बाद आधुनिक समय के भौगोलिक और सामाजिक परिवर्तनों को दिखलाया गया है।

समाचार देनेवाले बोलते फ़िल्म कितनी जल्द सोवियत् में तैयार कर

जा रहे हैं। हर एक आदमी को नया काम मिलने से बेकारी की समस्या हल होती है। काम करनेवाले आदमी की आवश्यकताएँ कैसे पूर्ण होंगी, इसका जवाब सोवियत्-सरकार के पंचायती खेत और कपड़ा आदि पैदा करनेवाले कारखाने देंगे। सारांश यह कि सोवियत्-सरकार के सामने किसी उपयोगी काम में हाथ डालते वक्त टैक्स बढ़ाने की भयंकरता नहीं आती। यही वजह है कि सोवियत्-सरकार इन उपयोगी फ़िल्मों पर इतना श्रम और सामग्री लगाने में समर्थ है। सोवियत् में फ़िल्म उद्योग की कितनी तेज़ी से तरक्की हुई है, यह इसीसे मालूम होगा कि १९३२ ई० में जहाँ दो करोड़ ५६ लाख ७९ हज़ार मीतर फ़िल्म बना था, वहाँ १९३५ ई० में ८ करोड़ ६३ लाख ८५ हज़ार मीतर* फ़िल्म तैयार हुआ।

१२—सोवियत्-नाटक

सोवियत्-नाटक प्रायः चार प्रकार के होते हैं। बलत् (बैलेट् या मूक नाटक), ओपेरा (पद्यमय नाटक), कंसर्ट (संगीत), ड्रामा (गद्य नाटक)। लाल क्रान्ति के पहले भी नाट्य, नृत्य और संगीत में रूसी लोग बढ़े-चढ़े हुए थे। ज़ार के पास अपार सम्पत्ति थी और रूस के ग्राण्ड-ड्यूक, प्रिंस, कौंट आदि भी जगद्विख्यात् धन-कुबेर थे। विषय-वासना की उत्तेजना में नृत्य, संगीत और नाट्य अधिक सहायक हैं; इस ख़याल से ये लोग खुले हाथों इन पर रुपया बहाते थे। आज भी लेनिन्ग्राद् की पुरानी नाट्य-शालाओं को देखने से मालूम होता है कि इनके बनाने में निर्माताओं ने दिल खोल कर पैसा खर्च किया है।

जब से बोलते फ़िल्मों का प्रचार हुआ, तब से पूँजीवादी देशों की नाट्य-शालाओं पर वज्र सा पड़ गया। फ़िल्मों में एक बार के अभिनय को हज़ारों जगह और हज़ारों बार दिखलाया जा सकता है। लोगों को एक तो फ़िल्म के रूप में वह अभिनय देखने में सस्ता पड़ता है। दूसरे हज़ारों फ़िल्मों के लिए एक अभिनय पर फ़िल्म-उत्पादक अभिनेता को मुँहमाँगा दाम भी दे सकता है। इस प्रकार वह बड़े से बड़े सितारों के अभिनय को अपने फ़िल्म में समाविष्ट कर सकता है। यह दूसरा कारण है। इससे फ़िल्म-दर्शक को उत्कृष्ट कोटि के अभिनेताओं और गायकों की कला को इतने सस्ते में देखने का मौक़ा मिलता है। फ़िल्म को दिखाते वक़्त न बाजा बजानेवालों की आवश्यकता, न नटों और नटियों की आवश्यकता, और न गायक, गायि-काओं की आवश्यकता। इस प्रकार वह अपने दर्शकों पर कम से कम टिकट लगा सकता है। कम से कम टिकट और अच्छा से अच्छा अभिनय जहाँ हो, उसे छोड़ कर चौगुना, अठगुना दाम दे अपेक्षाकृत घटिया अभिनेताओं के

अभिनय को देखना कौन पसन्द करेगा ? पूँजीवादी देशों में बोलते फ़िल्मों ने लाखों मध्यम और निम्न श्रेणी के कलाकरों को बेकार कर दिया। लन्दन, न्यूयार्क जैसे शहरों में जहाँ पहले सैकड़ों नाट्यशालाएँ बराबर आबाद रहती थीं, अब दो-चार ही रह गईं। और यह उन्हीं धनियों के प्रताप से जिनके पास इतना पैसा है कि वह उसे आँख मूँद कर लुटा सकते हैं।

सोवियत्-प्रजातंत्र में फ़िल्म के द्वारा नाट्यशाला को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। जिन लेनिन्ग्राद् और मास्को शहरों में पहले पचीसों नाट्यागार थे, वहाँ अब उनकी संख्या पचासों हो गई है। यही नहीं, जहाँ पहले बालकों के लिए अलग नाटकों का प्रबन्ध नहीं था, वहाँ अब उनके लिए अलग कितनी ही शिशु-नाट्य-शालाएँ स्थापित हुई हैं। पहले सभी नाट्य-शालाएँ सोवियत् प्रजातंत्र के रूस प्रदेश में और उसमें भी मास्को और पेत्रोग्राद् जैसे दो, तीन शहरों ही में थीं। अब नाट्यशालाएँ सभी बड़े बड़े शहरों में और एक से अधिक संख्या में स्थापित हो गईं। ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, किर्गिज़स्तान, कज़ाकस्तान, याकूतिया, तातार आदि ऐसे प्रजातंत्रों में भी, जहाँ पहले न कोई रंगशाला थी, और न कोई नाटक-साहित्य। क्रान्ति के बाद इन पिछले २० वर्षों में इन जातीय प्रजातंत्रों की रंगशालाएँ इतनी समुन्नत हुई हैं कि समय समय पर होनेवाले अखिल-सोवियत्-संघ नाटक-सम्मेलनों में इन्होंने प्रशंसा-पत्र पाया है। और ताजि-किस्तान का रंगमंच तो सारे सोवियत् प्रजातंत्र में ऊँचा माना जाने लगा है। १९१८ से पहले ताज़िक भाषा—जो फ़ारसी भाषा की एक बोली है—में कोई नाटक लिखा न गया था। जिस नौजवान ने अपनी भाषा में पहले पहल नाटक लिखा, वह एक धर्मान्ध क़ातिल की छुरी का शिकार हुआ। जो लड़की पहले पहल रंगमंच पर आई, उसकी ख़बर जब गाँव में उसके पिता को मालूम हुई, तो वह क्रोध से पाग़ल हो गया। उसने कहा—"एक मुस-लमान की लड़की—जिसकी अनगिनत पीढ़ियों ने किसी अजनबी के सामने मुँह तक न खोला—लोगों के सामने इस तरह निर्लज्ज हो मुँह खोलकर

नाचे। उसने खुद रंगमच पर कूदकर लड़की के सीने में उस वक्त छुरा भोंक दिया, जब कि वह एक नाटक में अभिनय कर रही थी। इन घटनाओं से पता लगेगा, कि सोवियत्-प्रजातंत्र के कुछ भागों म नाट्यकला को कितने और कैसे भयंकर रास्ते पार करने पड़े।

आज सोवियत् के नाट्यकलाकार बहुत ही सम्माननीय स्त्री-पुरुष हैं। मास्क्विन मास्को का सब से बड़ा अभिनेता सारे सोवियत् जगत् में प्रसिद्ध ही नहीं है; बल्कि वह अब की बार सोवियत् पार्लियामेंट का मेंबर चुना गया है। उसी की भाँति एक दो और अभिनेता और अभिनेत्रियाँ पार्लियामेंट की सदस्य चुनी गई हैं। पूँजीवादी देशों में अच्छे अभिनेताओं की कुछ क़दर ज़रूर है, लेकिन वह सिर्फ़ अधिक मूल्य चुकाने के स्वरूप में ही। और यदि स्त्री है, तो उसे तो रूप की दुकान और खुला सौदा समझा जाता है। सोवियत् के नट और नटी के सामने क्रय-विक्रय का सवाल नहीं है। वह राजा, राजकुमार और कुछ रईसों के लिए अपनी कला को नहीं प्रदर्शित कर रहा है। वह मनोरंजन करता है, अपने अपार जन-समूह का, जो ऐसे अभिनेता को हमेशा श्रद्धा और सन्मान की दृष्टि से देखता है।

सिगान्स्की (रोमनी या जिप्सी), पोलिश्, यहूदी तथा दूसरी अत्यन्त अल्पसंख्यक जातियों के भी अपनी अपनी भाषा में अथवा अपनी अपनी कला के अनुसार अलग अलग नाट्य-मंच हैं। सोवियत् नाट्य-मंच दुनिया में सब से अधिक उन्नत है, इसे दुनिया भर के नाट्य-तत्त्वविद् और नाट्य-कला-प्रेमी मानते हैं। एक और भी बात सोवियत् नाट्य-कला के विषय में स्मरणीय है। वहाँ के नाट्यकलाकार मास्को, लेनिनग्राद् जैसे कुछ बड़े बड़े शहरों की जनता के मनोरंजन में ही अपना सारा समय नहीं गुजारते। गर्मियों में वे इन बड़े बड़े शहरों में रहते हैं और जाड़ों के ४–५ महीने कोल्-खोज़ों और दीहात में घूमते हैं। इस प्रकार साधारण ग्रामीण जनता को भी बड़े बड़े कलाकारों का अभिनय देखने का मौक़ा मिलता है। स्मरण

रखिए, इन कलाकारों में कितने ऐसे स्त्री-पुरुष हैं, जो अपने अभिनय, नृत्य और संगीत के लिए सारी दुनिया में ख्याति पा चुके हैं। ये लोग मोटरों पर अपने पर्दे, वाद्ययन्त्र, आदि के साथ रेलवे स्टेशनों से दूर दूर के गाँवों तक में पहुँचते हैं। यह इस बात का द्योतक है, कि सोवियत्-राष्ट्र उपभोग-सामग्री की भाँति अपने ज्ञान-विज्ञान और ललित-कला को भी सभी नागरिकों के उपभोग की वस्तु बनाना चाहता है।

***   ***

सोवियत् फ़िल्मों का टिकट दो रूबल से तीन रूबल तक है और नाटकों के टिकट १५, २०, २५ रूबल के होते हैं। लेनिन्ग्राद् में राष्ट्रीय ओपेरा-और-बैलेट-थियेटर में मैं एक बैलेट देखने गया। समय से सिर्फ ३ मिनट पीछे मैं पहुँचा था। मेरा टिकट २० रूबल का था। रेलवे टिकट की तरह सिनेमा और नाटक के टिकटों पर भी कुर्सी का नम्बर लिखा रहता है। मेरी कुर्सी रंगमंच के सामने के अर्द्धवृत्ताकार चबूतरे पर थी। मैं ३ मिनट पीछे पहुँचा था। इसलिए उधर का रास्ता रुक गया था। मजबूरन् मुझे चबूतरे के तीन ओर अर्द्धवृत्ताकार पाँच तल्ले की बैठकों में से सब से ऊपरवाली पर जाना पड़ा। ख़ैरियत यह हुई थी, कि मैंने अपने टिकट का प्रबन्ध इन्तुरिस्त द्वारा करवाया था; नहीं तो टिकट ख़रीदनेवालों की इतनी भीड़ थी कि उसका मिलना असम्भव सा था। पहले दृश्य के बाद अवकाश जब हुआ तो मुझे अपनी कुर्सी पर जाने का मौक़ा मिला। नाट्यशाला के निर्माण में बड़ी सुरुचि का प्रदर्शन किया गया है। यह नाट्यगृह १८४० ई० के करीब बना था। रंगमंच के सामने कुछ नीची जगह में ५० के करीब वादक अपने भिन्न भिन्न प्रकार के वाद्यों को लेकर बैठते हैं। उसके बाद वह चढ़ा-उतार अर्द्धवृत्ताकार चबूतरा है। पहले और दूसरे दर्जे के दर्शकों की कुर्सियाँ हैं। तीसरे दर्जे के लिए अर्द्धवृत्ताकार पाँच तल्ले की बैठकें हैं। दो हज़ार से ऊपर आदमी इस नाट्यशाला में बैठ सकते हैं। रंगमंच के सामने सुन-

चित्र | पृष्ठ

हले रेशमी पर्दे और नाना प्रकार के बेल-बूटों से अलंकृत मंच हैं जिसपर किसी समय ज़ार और ज़ारीना बैठकर अभिनय देखा करते थे। आजकल कोई भी ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा वहाँ पहुँच सकता है। मैंने समझा था कि नाटकों का जब इतना अधिक टिकट है, तो वहाँ दर्शकों की कमी ज़रूर होगी। लेकिन जब कभी मैं किसी नाट्यशाला में गया, हमेशा ही कुर्सियों को भरी पाया।

बैलेट् का नाम था—**शमराल्दा।** यह कह चुका हूँ कि बैलेट् कहते हैं, मूक-नाटक को। इसमें नृत्य होता है, लेकिन जिह्वा का काम संकेत और इशारे से लिया जाता है और इसी संकेत और इशारे में अभिनेता का कमाल देखा जाता है। किसी तरुण को प्राण-दंड की आज्ञा होती है। वहाँ एक रोमनी (जिब्सी या नट) का गिरोह पहुँचा हुआ है। एक रोमनी तरुणी अपने नृत्य से सारी राजसभा को मुग्ध कर लेती है। राजा प्रसन्न होकर वर देता है। तरुणी उसी तरुण को माँग लेती है। एक महन्त रोमनी युवती के असाधारण सौन्दर्य और अनुपम कलानैपुण्य पर मुग्ध हो जाता है। तरुणी उसे पसन्द नहीं करती, वह उसी नये पति और रोमनियों के गिरोह के साथ एक दूसरे राजदरबार में पहुँचती है। एक तरफ़ राजा और रानी सिंहासन पर बैठे हैं। उनके सामने राजकन्या अपने पति के साथ बैठी है। राजा के दाहिने अर्द्धवृत्त में दरबारी लोग बैठे हैं। अनेक रोमनी तरुणियाँ एक हाथ में छोटी झालोंवाले चंग को लाल-पीले लटकते रूमालों से सजा कर बजाती अपना जातीय नृत्य दिखलाती हैं। रोमनी तरुणी अपने नृत्य में कमाल करती हैं। हर एक तरह के कठिन से कठिन नृत्यों को दिखलाते दिखलाते थक जाती हैं, लेकिन उस सारी सभा में एक भी गुण-ग्राहक नहीं, कोई एक पैसा भी इनाम नहीं देता। सुन्दर तरुण फिर अपनी पत्नी को खड़ा कर नाचने के लिए बाध्य करता है। शायद अब की बार किसी का दिल पसीज जाय और रोमनियों को आज उपवास न करना पड़े। लेकिन कोई फल नहीं। इस प्रकार तीसरी

चौथी बार भी। थक कर मरणासन्न हो जाने पर भी तरुणी अपना नृत्य दिखलाती है। इसी बीच सभा वर्खास्त होती है। राजा-रानी एक तरफ़ जाते हैं। दरवारी खिसकने लगते हैं। राजकन्या कुछ आगे बढ़ती है; उस समय उसका पति ठमक जाता है। वह रोमनी तरुणी को अपनी चद्दर इनाम देता है और अपना प्रेम प्रकट करता है। दूसरे दृश्य में राजकुमार रोमनी तरुणी को लेकर कहीं दूर जाकर एक मठ में पहुँचता है। वहाँ धर्मशाला में ठहरता है। रोमनी तरुणी को नहीं मालूम था कि यह उसी महन्त का मठ है, जिसने उससे पहले छेड़खानी की थी। महन्त ने साथी तरुण को मार डाला और तरुणी से प्रणय-भिक्षा माँगी। लेकिन उसने इनकार कर दिया। इसपर राजकुमार के मारने का दोष रोमनी तरुणी पर लगाया गया। महन्त और दूसरे कितने ही भलेमानुस साक्षी बने। तरुणी को प्राण-दंड की सज़ा हुई।

बैलेट् की विशेषता है संकेत से अभिप्राय प्रकट करना। इसमें कलाकारों को कितनी सफलता हुई, इसके लिए मैं ही प्रमाण हूँ। बिना किसी के बतलाये भी कथा के भाव को मैं खुद समझ गया था। वाचेस्लोवा ने प्रधान पात्र रोमनी तरुणी का पार्ट लिया था और नृत्य में उसने ग़ज़ब किया था। सोवियत् कलाकारों के देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ कलाकार के लिए सुन्दर होना आवश्यक चीज़ नहीं। कई अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को तो सुन्दर क्या कुरूप भी कहा जा सकता है, लेकिन उससे उनकी सफलता में कोई बाधा नहीं होती। वाचेस्लोवा कुरूप तो नहीं थी, लेकिन उसकी प्रशंसा उसके नृत्य और अभिनय में थी। **दूदीनिकाया** और **उलूनोवा** दूसरी अभिनेत्रियाँ थीं, जिन्होंने दर्शकों को अधिक प्रसन्न किया। नृत्य और भावव्यंजन के अतिरिक्त दूसरी विशेषता थी पर्दे पर दृश्यों के अंकन की। जो चीज़ भी रंग-मंच पर चित्रित की गई थी, ऐसे ढंग से उसमें दृष्टिभ्रम उत्पन्न किया गया था, कि सभी चीज़ें वास्तविक ही नहीं मालूम होती थीं, बल्कि दर्शक को आश्चर्य होने लगता था

कि इतने छोटे से रंगमंच पर वह कैसे मीलों फैला आकाश, दुर्ग और प्रासाद खिड़कियों और दरवाज़ों के साथ देख रहा है।

***   ***

ओपेरा पद्यमय नाटक को कहते हैं। बैलेट् रूस की अपनी विशेषता है। उसका उद्भव और विकास रूस में हुआ है। ओपेरा रूस की कोई खास चीज़ नहीं है। यह यूरोप के अन्य देशों में भी खूब प्रचलित है। लेकिन कला के लिए जितना उत्साह, जितना स्वच्छन्द वातावरण सोवियत्-प्रजातंत्र में है, उतना और कहीं नहीं है। इसलिए इन पद्यमय नाटकों ने वहाँ बड़ी तरक़्क़ी की है। यहाँ मैं १९३७ के ओपेरा पोतेम्किन् का उदाहरण देता हूँ। १९०५ ई० में पहली बार रूस की दलित जनता ने ज़ार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी। जुल्म के मारे पिसी रहने पर भी उसने अब तक न ज़बान खोली थी, न हाथ उठाया था। रूस-जापान के युद्ध में रूस की हार से जनता के दिल से ज़ार की धाक कुछ कम हो चुकी थी; और अब अपने ऊपर होते हुए अत्याचारों को वह मूक रहकर सहना नहीं चाहती थी। जहाँ उस वक़्त पीतरबुर्ग में मजदूरों ने खुले तौर से अपना विरोध प्रदर्शित किया, और ज़ारशाही ने बहुत निर्दयतापूर्वक तलवार के ज़ोर से उसे दबा दिया; वहाँ कालासागर के नौसैनिकों ने भी खुलेआम विद्रोह किया। यह पहला अवसर था, जब कि युद्ध-पोत ने क्रान्तिकारियों का साथ दिया हो। पोतेम्किन् उस जंगी जहाज़ का नाम था, जिसके नाविकों ने विद्रोह का झंडा ऊँचा किया। उस समय सारे साम्राज्य में एक जबर्दस्त हलचल थी। किसानों ने ज़मींदारों की कचहरियाँ और हवेलियाँ जला दी थीं। कारख़ाने और रेलवे के मज़दूरों ने हड़ताल कर दी थी। "पोतेम्किन्" के कर्त्ता ओलेस्चिश्को (उक्रईन् जातीय) ने अपनी रचना के बारे में लिखा है—'इस नाटक के निर्माण में हमारा मतलब सिर्फ़ यही नहीं है कि उस युद्ध-पोत के नाविकों की वीरता—जो कि लाल क्रान्ति के पहले के रिहर्सल के

अद्‌भुत पृष्ठों में से एक थी—को पुनर्जागृत किया जाय, बल्कि उन घटनाओं को आज की वर्तमान घटनाओं से जोड़ना भी हमारा काम था। इस तरह का जीवित संबंध मौजूद था। हमने प्रयत्न किया कि उस संबंध को पूर्णरूप में दर्शकों के सामने लाया जाय।'

क्रान्तिकारी नाविकों का चित्रण ओपेरा का सब से अधिक सफल भाग है। **मत्युशैंको** क्रान्ति का प्रेमी एक ज़बर्दस्त वक्ता और साहसी है। वह जानता है कि कैसे उत्साह को बढ़ाया जा सकता है। बकुलेंचुक् एक ज़बर्दस्त मौक़ाशनाश नेता है। उसमें जहाँ एक वीर योद्धा और पटु संगठनकर्त्ता के गुण हैं, वहाँ वह मनुष्य-स्वभाव से भी पूरा परिचित है। नाटक में इस क्रान्तिकारी का चित्र बड़ी योग्यता से चित्रित किया गया है। नौसैनिक कचूरा को बड़ी कुशलता के साथ एक विश्वासपात्र खुले दिलवाले साथी के रूप में नाटककार ने चित्रित किया है। **बकुलेंचुक्** की मित्र **ग्रुन्या** युवती को बड़े मनोहर रूप और औचित्य के साथ उपस्थित किया गया है। क्रान्तिविरोधी कप्तान और उसके साथियों को स्वाभाविकता के साथ चित्रण करते हुए भी इस प्रकार उपस्थित किया गया है कि दर्शकों की नज़र में वह गिर जाते हैं। घटनाएँ दर्शक के दिल में असफल क्रान्तिकारियों के दिल में सहानुभूति और सहयोगिता का भाव पैदा कर देती हैं। अपने वीर क्रान्तिकारी बकुलेंचुक् के मरने पर जब ओदीसा के मज़दूर उससे सहानुभूति प्रकट करते हैं।—'साथियो, मुझे रोने के लिए मत समझाओ। क्या मैं नहीं जानती कि किसी को रोना नहीं चाहिए? यहाँ आँसू की एक बूँद न होनी चाहिए।' ग्रुन्या इन शब्दों में रोते हुए गाती है। उसकी प्रतिध्वनि और शब्दों में अन्तर्हित भाव दर्शक के अन्तस्तल तक पहुँच जाता है। वह उनमें प्राण और शक्ति का संचार करती है। लोग क्रान्ति के नेता की अर्थी बड़ी सजधज के साथ निकालते हैं। वे गाते चलते हैं—"ख़ूनी लड़ाई में निहत अपने सिपाहियों को हम दफ़नाने जा रहे हैं।" इन शब्दों को सुन कर एक बड़ा-जनसन्दोह जमा होता है और

वह जहाँ एक ओर जनता की सहानुभूति शहीदों की ओर प्रदर्शित करता है, वहाँ शासकों के प्रति घोर विरोध भी प्रकट करता है। कोई गाता है—'हर एक सब के लिए और सब हर एक के लिए।'

पोतेम्किन् के सैनिकों में अशिक्षित असंस्कृत कहे जानेवाले मछुए ही अधिक हैं। नाटक में उनकी बात, उनके गीत और उनके नृत्य अत्यन्त स्वाभाविक हैं।

पात्रों के चित्रण करने में जन-कलाकार **पिरोगोफ़्** क्रान्तिकारी नायक बकुलेंचुक् का पार्ट बड़े सुन्दर रूप से अदा करता है। नाट्यकार के शब्दों में कैसे एक सिद्धहस्त अभिनेता अपने स्वर से नवजीवन फूँक सकता है, कैसे वह अपनी भाव-भंगी से नाट्यकार के अभिप्राय को कई गुना अधिक करके अभिव्यक्त कर सकता है, इसके लिए पिरोगोफ़् का अभिनय एक अच्छा उदाहरण है। दविदोवा ने ग्रुन्या का पार्ट लिया है। प्रेमी की मृत्यु के समय जिस तरह ग्रुन्या के मनोभावों को संयत और सबल से व्यक्त किया है, वह बड़े मार्के की बात है।

पर्दों की चित्रकारी में तो कमाल किया गया है। भारी युद्धपोत के दृश्य को रंगमंच पर लाना असंभव सी बात थी। लेकिन चित्रकार ने इसमें बड़ी सफलता प्राप्त की है। छोटी सी रंगभूमि में पोत, उसकी तोपें और उसके सैनिकों को उसने ऐसे चित्रित किया है, कि देखने से मालूम नहीं होता कि कितने पात्र यहाँ सजीव हैं और कितने चित्रमय ?

*** ***

"राष्ट्रीय-ओपेरा-और-बैलेट्-थियेटर" में हम एक दिन ओपेरा देखने गये। ओपेरा का नाम था 'माज़ेपा'। कथानक था, एक छोटे सरदार की कन्या एक तरुण को चाहती है। पिता भी उसी को पसन्द करता है, लेकिन एक शक्तिशाली सरदार माज़ेपा मरिया के सौन्दर्य पर मुग्ध है। पिता के आना-

क़ानी करने पर वह उसे ज़बर्दस्ती पकड़ले जाता है। पिता एक क़िले में ज़ंजीर से बाँध कर बन्द कर दिया जाता है। माज़ेपा मरिया के साथ जबर्दस्ती विवाह करता है। मरिया के पिता को अब भी बड़ी रुकावट समझ उसे मार डालता है। वध्य-स्थान पर ले जाने के समय का दृश्य अत्यन्त करुणापूर्ण है।

मरिया भाग जाती है। पिता के मकान का बहुत सा हिस्सा गिर चुका है। लेकिन उसी टूटे-फूटे खंडहर में वह आधी पगली की तरह रहती है। कितने ही दिनों बाद एक अँधेरी रात में उसका प्रेमी वह तरुण खोजते हुए उसी खंडहर पर पहुँचता है। उसकी भग्नावस्था को देख कर वह शोकोद्‌गार प्रकट करता है। इसी वक़्त मरिया की ख़बर पाकर माज़ेपा उसी खंडहर में आता है। उसको देखकर युवक की आँखों में ख़ून चढ़ आता है। वह जानता है—इस महल के स्वामी का प्राण लेने और उसे खंडहर के रूप में परिणत करने में इसी दुष्ट का हाथ है। वह द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारता है। लेकिन माज़ेपा उसके लिए तैयार नहीं होता। युवक तलवार लेकर दौड़ता है और माज़ेपा के तमंचे की गोली का शिकार होता है। पगली मरिया खंडहर के एक कोने से बाहर आती है। पहले उसकी नज़र माज़ेपा पर जाती है। माज़ेपा प्रेम प्रदर्शित करता है और अनुनय-विनय करके घर लेजाना चाहता है। मरिया का जवाब ऐसा होता है, जैसा कि कोई अर्द्ध-विक्षिप्त व्यक्ति दे सकता है। वह स्वयं हर्ष और विषाद दोनों अवस्थाओं को पार कर चुकी है। लेकिन उसकी दशा को देख कर दर्शक उसकी सहानुभूति में विकल हो उठता है। मरिया के बालों में तिनके पड़े हुए हैं। उसके कपड़े जहाँ-तहाँ फट चुके हैं। उसकी आँखों के नीचे काले दाग़ दिखाई पड़ते हैं। माज़ेपा से बात करते करते ज़मीन पर पड़ी किसी चीज़ को वह देखती है। फिर आँखें फाड़कर ग़ौर से देखती है और अन्त में अपने तरुण प्रेमी को पहचानती है। माज़ेपा को धिक्कारती है और तरुण के पास बैठ जाती है।

पर्दे पर हर एक दृश्य को दिखाने में चित्रकार ने गज़ब ढाया है। गाँव और सरदार की हवेली मानों मीलों तक फैली हुई है। मालूम होता था

कि सैकड़ों आदमी (एक बार १५० आदमी तक गिने गये) एक पहाड़ी के पीछे से सामने आते जा रहे हैं। रात के वक़्त शून्य, निश्शब्द, गलियों को बड़ी ख़ूबी से दिखलाया गया है। खंडहर के दिखलाने में कितना भाग पर्दे का है और कितना भाग ईंटे-चूने द्वारा रंग मंच पर बनाया गया है, इस का पता नहीं लगता था। अन्धकार और झुलमुल प्रकाश को इतनी बारीकी से सम्मिश्रित किया गया था, कि बनावटी न होकर वह वास्तविक रात में एक गाँव का दृश्य मालूम होता था।

"माज़ेपा" एक ख़ास समय और एक ख़ास प्रदेश में घटित घटना के आधार पर रचा गया है; और उसके हर एक दृश्य पर उस काल और प्रदेश की स्पष्ट छाप दीख पड़ती है। माज़ेपा पोल-जातीय एक बड़ा सर-दार था। मरिया का पिता उक्रइन् का एक छोटा सरदार था। उस समय बारूद के हथियारों का प्रयोग हो चुका था; लेकिन अभी कारतूस नहीं आये थे। उक्रइन् के किसान का मुँह देखने में रोहतक या गुड़गाँवाँ के किसी जाट के मुख की तरह मालूम देता था। दाढ़ी-शून्य वैसी ही बड़ी बड़ी मूँछें, सिर के बाल सब मुँडे हुए, लेकिन सिर के बीच में पतली चुटिया, उसी तरह का भोलाभाला किन्तु संयम और वीरताद्योतक मुख। वेशभूषा में भी उस समय का पूरी तौर से ख़याल रखा गया था। सोवियत् नाटक और फ़िल्म, कला, ऐतिहासिक और भौगोलिक औचित्य आदि सभी दृष्टियों से क्यों इतने अच्छे होते हैं? कारण यह है कि उसकी हर एक बात को उन उन विषयों के विशेषज्ञ बड़ी बारीकी से देखते हैं और आलोचना करते हैं। सब की आलोचना के अनुसार फिर कथानक, नृत्य, संगीत, और दृश्य में हेर-फेर किया जाता है। और इस प्रकार उसमें सर्वांग-पूर्णता आती है।

* * *　　　* * *

बैलेट् और ओपेरा की तरह कन्सर्त (संगीत) और ड्रामा में भी सोवि-यत् ने बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त किया है। उसके प्रहसन गंभीरता के साथ

साथ सार्वजनीन होते हैं। सोवियत् रंगमंच हर एक अभिनय को किसी ऊँचे आदर्श, किसी विशेष सन्देश को ले कर दर्शक के सामने उपस्थित होता है। दर्शकों में जागृति और स्फूर्ति का संचार करना, अपने आदर्श के लिए सर्वस्व त्याग की भावना पैदा करना, आदर्श के विरोधियों के प्रति रोष और घृणा पैदा करना, छोटे बड़े दुर्गुणों से व्यक्तियों का परिहास-पात्र बन जाना आदि आदि एक या अनेक अभिप्राय को लेकर सोवियत् नाट्यकार अपनी क़लम उठाता है। कलाकार अपनी कला को सम्पादित करता है। चित्रकार अपनी तूलिका संचालित करता है। गायक अपने गान को प्रेरित करता है। 'कला कला के लिए' इन ढकोसलों से वहाँ का क़लाकार अपनी विडम्बना नहीं कराता।

*** ***

इवान् मास्कोविन् सोवियत् का सब से बड़ा अभिनेता है। अपनी कला-कुशलता के कारण उसे "जन-कलाकार" की अत्यन्त सन्मानित पदवी मिली है। मास्को-कला-नाट्यशाला के इस ६३ वर्ष के बूढ़े कलाकार की संसार में जितनी प्रसिद्धि है, उसे पाने में उसको बहुत कठिन रास्तों से गुज-रना पड़ा। मास्को के एक ग़रीब घर में १८७४ में वह पैदा हुआ था। उसका पिता एक छोटा घड़ीसाज़ था। एक ओर आमदनी बहुत कम थी, दूसरी ओर उसके सिर पर ८ जनों का बोझ था। इन्हीं में मास्कोविन् का छोटा भाई तथा स०स०स०र० जन-क़लाकार **तर्खानोफ़्** भी था। दोनों ने स्कूल की साधारण शिक्षा पाई। आगे मास्कोविन् कला-विद्यालय में पढ़ना चाहता था, लेकिन उसके लिए १०० रूबल वार्षिक फ़ीस देनी पड़ती थी; जो उसके ग़रीब परिवार की शक्ति से बाहर की चीज़ थी। अन्त में मास्कोविन् को नगर के स्कूल में भेजा गया। वहाँ १० रूबल वार्षिक फ़ीस देनी पड़ती थी। घर और भी आर्थिक कठिनाई में पड़ा हुआ था, इसलिए मास्कोविन् की माँ को अपने वान्या (इवान्) के साथ एक भंडार में नौकरी

करनी पड़ी। माँ को ५० रूबल मासिक मिलते थे, और वान्या घलुए में था। वान्या के धर्मपिता (ईसाई धर्म के अनुसार नामकरण के वक़्त बना पिता) पचास वर्ष का एक कमकर भी वहीं काम करता था। वान्या को रात दिन वहीं जेल का जीवन बिताना पड़ता था। रात को एक बदबूदार चहबच्चे में चटाई पर वह सो जाता था। सिर्फ़ ऐतवार को घर जाने के लिए दो घंटे की छुट्टी होती थी। सवेरे दूकान का दरवाज़ा खुलता। ९ बजे (जाड़ों में वहाँ ९ बजे सूर्योदय होता है) तड़के दूकान के सभी नौकर कतार बाँध कर मालिक को सलामी देने के लिए खड़े हो जाते। वान्या भी उनमें एक होता। ज़रा ज़रा से कसूर में लड़कों को पीट देना मामूली बात थी। कुछ दिन काम करने के बाद वान्या को १० कोपेक् प्रतिदिन (३ रूबल प्रति मास) मिलने लगे। फिर वह लोहे की फौंडरी (ढलाई) में २५ रूबल वार्षिक पर नौकर हुआ। यहाँ उसे ५ बजे सुबह से ७ बजे रात तक (१४ घंटा) काम करना पड़ता। एक साल वह वहीं रहा। भंडार में रहते वक़्त उसे नाटक खेलने का शौक हो गया था। एकाध बार उसके जौहर को किसी समझनेवाले आदमी ने देखा। उसने मास्कोविन् के धर्मपिता से कहा और उसने १५० रूबल दे कर नाट्य स्कूल में उसे भर्ती करा दिया। माली थियेटर—जो कि पहले राज्य-थियेटर था—की प्रवेश-परीक्षा में वह असफल रहा। लोगों ने उसे बहुत निरुत्साहित किया, तो भी वह एक प्राइवेट नाट्य-स्कूल में दाख़िल हो गया। डेढ़ वर्ष की शिक्षा के बाद अपनी कक्षा में वह अपनी योग्यता का सिक्का जमाने में कामयाब हुआ। दूसरे वर्ष जब नाटक-मंडली रूस के और नगरों में भ्रमण करने के लिए गई, तो मास्कोविन् को भी साथ चलने का हुक्म हुआ। उस वक्त उसे अपनी योग्यता दिखलाने का पूरा मौक़ा मिला। स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद वह मास्को-कला-नाट्यशाला में चला आया; और तब से आज तक उसी नाट्यशाला का प्रधान अभिनेता है। मास्कोविन् ज़ार के ज़माने में ही एक सफल और प्रसिद्ध अभिनेता हो चुका था। शाही दरबार, राजाओं

प्रथम खंड

(सोवियत्-भूमि में)

सोवियत्-भूमि

१—लेनिन्ग्राद् को[1]

आज (१२ नवम्बर) हवा बिलकुल नहीं चल रही थी। कास्पियन समुद्र में लहरों का नाम न था। वह छोटा शान्त जलाशय सा मालूम होता था। ९ बजे पश्चिमी तट के नंगे पहाड़ दिखाई दे रहे थे। इन पहाड़ों के नीचे आबादी मुश्किल से कहीं देख पड़ती थी। कुछ और चलने पर दाहिनी तरफ़ एक छोटा सा पहाड़ी द्वीप दिखाई पड़ा। ऊपर कुछ सफ़ेद मकान, नीचे कुछ छोटी बस्तियाँ तथा समुद्र-तट पर कितनी ही नौकाएँ थीं। स्थान सैनिक-महत्त्व का जान पड़ता था। १० बजे हमें बाकू शहर और उसकी बग़ल में दूर तक फैले तैल-क्षेत्र के कूप-वृक्ष दिखाई पड़ने लगे। जहाज़ को घूम कर जाना था। इससे तट तक पहुँचने में काफ़ी देर लगी। बंदर की सीमा में हम ११ बजे ही पहुँच गए। समुद्र-जल पर मीलों तक मिट्टी के तेल की तह पड़ी हुई थी, जिस पर इन्द्र-धनुष के सभी रंग चित्र विचित्र रूप में दिखाई पड़ते थे। साँस लेने में मिट्टी के तेल की ही गन्ध नाक में आती थी। किनारे तक पहुँचने में पौने १२ बज गए। भार-वाहकों ने सामान उतारा और हम कस्टम-आफ़िस में पहुँच गए। यात्रियों की संख्या ३० से अधिक न होगी जिनमें से १५–१६ तो जर्मनी जाने वाले ईरानी छात्र थे। इन्तूरिस्त का आदमी वहाँ पहुँचा हुआ था। भारतीय स्कालर का नाम सुनकर उसने बड़ी नम्रता दिखलाई। यद्यपि हमारे बक्सों की

---

[1] पहिले का यात्रांश "ईरान" में देखिये।

तलाशी राई-रत्ती कर के हुई, तो भी कस्टम के अधिकारी बड़ी नम्रता प्रदर्शित कर रहे थे। मेरी ताल-पत्र की पुस्तकों के पन्ने गिन कर पास-पोर्ट पर चढ़ा दिए गए, जिसमें कि लौटते वक़्त उन्हें साथ ले जाने में कोई दिक़्क़त न हो। फ़ोटो के केमरे का नंबर भी दर्ज कर दिया गया। इसी तरह सफरी-चेक भी लिख लिए गए। कस्टम से छुट्टी पाकर मोटर द्वारा हम इन्तूरिस्त होटल में पहुँचाए गए।

हमने समझा था कि पिछली वार के होटल में ही जाना पड़ेगा। लेकिन यह तो एक नई इमारत थी, जो कि पिछले ही साल बन कर तैयार हुई थी। यह समुद्र-तट के क़रीब एक चारमहल का प्रासाद है। ७६ कमरे हैं। आराम, सफ़ाई और सजाने में कमाल किया गया है। हमें ४६३ नंबर के कमरे में जगह मिली। भीतर २ मेज, ३ कुर्सियाँ, १ आयनेदार अलमारी, एक पलंग, कई बिजली के लैम्प, सुंदर पर्दे, तथा बात करने के लिए दूरी-फूँक (टेलीफ़ोन) लगा था। कमरे के साथ ही स्नानगृह था। हमने टिकट के साथ इन्तूरिस्त को रेल-यात्रा सहित प्रतिदिन एक पौंड दिया था। यूरोप में तो १ पौंड रोज़ ऐसे कमरे का किराया ही लग जाता। और यहाँ उस १ पौंड (१३ रुपये) में न सिर्फ़ रेल और होटल का किराया ही शामिल है, बल्कि तीन वक़्त का सुन्दर और नफ़ीस भोजन तथा दुभाषिया के साथ मोटर पर तीन घंटे की सैर भी शामिल है। भोजनालय बहुत सुंदर था और भोजन के लिए कहना ही क्या? बहुत कम आदमी अपच से बच पाते होंगे! खाना खा कर थोड़ा विश्राम किया गया और फिर ५ बजे घूमने निकले। तेल साफ़ करने का शोधनखाना (Refinery), पार्क आदि का मोटर पर चक्कर लगाया। ढाई साल पहले बाकू को हम देख भी चुके थे, इस लिए उतनी दिलचस्पी भी न थी, दूसरे समय भी कम था। हाँ, यह हमने ज़रूर फ़र्क़ देखा कि कितनी ही विशाल और भव्य नई गृह-श्रेणियाँ सड़कों के किनारे खड़ी हो गई हैं। पहले इन जगहों पर छोटे छोटे मकान थे। क्रान्ति का बीसवाँ वार्षिकोत्सव ५ दिन पहले गुज़र चुका था।

लेकिन अब भी कितनी जगह लाल ध्वजाएँ और कपड़ों पर लंबे लंबे लेख टँगे हुए थे। पार्क-कुल्तूर (सांस्कृतिक उद्यान) की तरफ़ जाते वक़्त लाल-सेना के कुछ नए मकान देखे।

यूरोप जाने वाले लोग रात ही को चले गए। मास्को की गाड़ी दूसरे दिन (१३ नवम्बर को) दोपहर को जाने वाली थी। १० बजे हमने होटल छोड़ा। सोवियत् रेलों में यात्रियों के टिकट पर ट्रेन के साथ गाड़ी और सीट का नंबर भी लिखा रहता है। गाड़ी में सीट ख़ाली न हो, और तब भी पैसा लेकर आपके लिए टिकट काट दिया जाय, इसका वहाँ रवाज नहीं। हमें उस दिन तीसरे दर्जे की सातवीं गाड़ी में १९ नम्बर की सीट मिली। हर एक कंपार्टमेंट में दो नीचे दो ऊपर सीटें थीं। एक पूरी बेंच एक आदमी के लिए रिज़र्व थी। सीटों को गाड़ी की चौड़ाई में रखा गया था, और बग़ल से ट्रेन से ओर-छोर तक जाने का रास्ता था। हर एक डिब्बे के दोनों तरफ़ पाख़ाना और मुँह धोने का स्थान था। हर एक डिब्बे में दो दो कंडक्टर थे, जिनका काम था, मुसाफिर के पहुँचते ही टिकट ले लेना और उसकी सीट दिखला देना। अगर मुसाफ़िर ने पैसा दिया हो तो उसकी बेंच पर तकिया और बिछौना लगा देगा। चाय की ज़रूरत हो, तो सस्ती चाय लाकर दे देना। दो दो, तीन तीन घंटे पर कोठरी, गली, और पाख़ाने का साफ़ करना भी उसी का काम है। टिकटों को रखने के लिए उसके पास चमड़े का एक बेग था, जिसमें गाड़ी के सभी ख़ानों के सीट के नंबर छोटे छोटे ख़ानों पर लगे हुए थे। वह मुसाफ़िरों के टिकटों को इन्हीं ख़ानों में रख देता था। हमें जगह नीचे मिली थी। हमारे सामने एक लाल सैनिक बैठा हुआ था जो तुर्क मालूम होता था। सारे डब्बे में हमारे सिवा कोई परदेशी न था, और अंगरेज़ी जानने वाला तो सारी ट्रेन में हमें कोई दिखलाई न पड़ा।

पिछली बार दो साल पहले हम रात को इधर से गुज़रे थे। और मसच्-कला के आस पास की सूखी भूमि और नंगी पहाड़ियों को देख कर हमने समझा था कि बाकू तक ऐसा ही होगा। किन्तु यहाँ तो चारों ओर

जंगल और हरियाली देखने में आ रही थी। जाड़े के आगमन की प्रतीक्षा में वृक्षों और वनस्पतियों के पत्ते सुनहले हो चुके थे। पंचायती खेतों (=कोल्खोज़=कलेक्टिव फ़ार्म) में अंगूर की लताएँ पीली पीली पड़ रही थीं। मीलों लम्बे खेत जुते तैयार थे। वैयक्तिक छोटे छोटे खेत बहुत कम दिखाई पड़ते थे। हम अभी एशिया में ही जा रहे थे। पंचायती गाँवों की सफ़ेद दीवार, दोहरे शीशे वाले जंगलों के पाँती से खड़े मकान देखने ही से मालूम पड़ता था कि सोवियत् के किसानों की अवस्था में लाल-क्रान्ति ने कितना परिवर्तन कर दिया है।

शाम हो गई थी, जब हम दरबन्द पहुँचे। अँधेरा हो गया था, जब **इज़्बरिबश्** के स्टेशन के पास ज़मीन से निकलती ७–८ आग की ज्वालाओं को साथियों ने मुझे दिखलाया। पिछली बार जब मैं बाकू की ज्वाला-माई को देखने गया था और वहाँ न सिर्फ़ उस हिंदू मठ की कोठरियों को साधुओं से शून्य पाया; बल्कि आँगन के बीच पत्थर की छतरी के नीचे उस ज्वाला-कुण्ड को भी, जिसमें काँगड़े की माई की बड़ी बहन निकल कर श्रद्धालुओं को साक्षात् दर्शन देती थीं; और वे उल्लास में आकर उनकी धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करते थे। लाल क्रान्ति और उसके अग्रदूत बोलशेविकों ने जैसे अन्य मस्ज़िदों और गिरजों को सूना कर दिया, वैसे ही बाकू की ज्वाला-माई को भी अन्तर्द्धान होने को मजबूर किया। कहते हैं, काँगड़े की ज्वाला-माई की परीक्षा के लिए अकबर बादशाह ने लोहे के मोटे मोटे तवों से उसे ढक दिया, लेकिन धन्य है ज्वाला-माई का प्रताप कि वह सात सात परत के तवों को चीर कर बाहर निकल आई। अकबर बादशाह को नतमस्तक हो माई की शरण में आना पड़ा। बाकू वाली माई को बोलशेविकों ने दस वर्ष पहले दबा दिया और सचमुच ही उनके लिए यह बड़ी लज्जा की बात होती, यदि वह हमेशा के लिए दब जातीं। यहाँ इन सातों आठों ज्वालाओं को देख कर एक भारतीय के नाते तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं एक दम बोल उठा—आओ न फिर ज्वाला-माई को दबाओ! देखो, तुमने बाकू में दबाया और

माई सवा सौ मील पर प्रगट हो गईं; एक नहीं आठ आठ ज्वाला के रूप में। कहीं भारतीय हिन्दू जनता इस चमत्कार को देखती, तो जो मेला चारों तरफ़ लगता, उसके सामने कुंभ भी तुच्छ होता। लेकिन इन नास्तिकों के मुल्क में ज्वाला-माई की क्या क़द्र! वह तो कह देंगे—यह तो पेट्रौल की भूमि है। ज़मीन से कहीं कहीं गैस फूट निकलती है; और उसी में घर्षण से आग लग जाती है। इसमें कोई दैवी चमत्कार नहीं।

वहीं एक नया मुसाफ़िर तवारिश् (=कामरेड या साथी) अली के रूप में हमारे कंपार्टमेंट में सवार हुआ। थोड़ी ही देर में वह लाल सैनिक का चिरपरिचित सा जान पड़ने लगा। तवारिश् अली ने अपने कोल्खोज़ की बनी अंगूरी शराब की बोतल निकाली और लाल सैनिक ने कोड़े की शक्ल में पका कर गुथा हुआ सूअर का मांस। मुझे भी शामिल होने के लिए दावत दी गई। मैंने तो पेट भरा होने का बहाना कर के जान छुड़ाई। दोनों बहादुरों ने मांस के साथ ख़ूब प्याले पर प्याले उँडेले। मैं सोच रहा था, अभी कल तक ये लोग मुसलमान थे और शायद पचीसों पीढ़ियों से चले आ रहे थे; और आज इनको हराम-हलाल का कुछ ख़याल नहीं। इनके मृत पुरखा क़ब्र में बैठे क्या कहते होंगे!

बराबर आसमान बादलों से घिरा ही रहा। जब तब वर्षा भी होती देख पड़ी। पतझड़ का मौसम इधर अक्तूबर-नवम्बर में होता है और उस समय वर्षा बहुत हुआ करती है। जाड़े में सर्दी के मारे यह पानी की वर्षा बर्फ़ के रूप में परिणत हो जाती है। मेरी राय में दोन नदी—जो **कफ्काश्** और उक्रइन् की सीमा है—वहीं एशिया और यूरोप की भी सीमा है। पिछली यात्रा में मैंने देखा था कि यहीं से हिन्दुस्तानी गायों की नसल शुरू होती है। यहीं से तवे और तन्दूर की रोटी मिलती है। यहीं से हिन्दुस्तानी जूतों जैसे जूते शुरू होते हैं। और यहीं से स्त्रियों में पंजाब-जैसा घाघरा भी दिखाई देता है। इसमें शक नहीं कि जिस तेज़ी के साथ यूरोपीय वेश-भूषा और खानपान की चीज़ों का जोर से प्रसार हो रहा है, उसके कारण

पिछली तीन चीज़ें बहुत दिनों तक इस भेद-भाव को क़ायम रखने में समर्थ न हो सकेंगी।

स्टेशनों पर मिट्टी के तेल का कीचड़ उछलता सा मालूम होता था। और नई नई इमारतें तो तूफ़ानी वेग सी उठती चली आ रही हैं।

मेरा रूसी भाषा का ज्ञान नहीं के बराबर था। गाड़ी के साथियों में मेरी भाषा समझ सकने वाला कोई न था; तो भी मुझे अकेलापन अनुभव नहीं हो रहा था। मैं अपने चंद परिचित शब्दों तथा 'रूसी स्वयं-शिक्षक' के सहारे साथियों से बात चीत करता रहता था। साथियों में एक महिला **अन्ना इवानोव्ना कुद्रेश्चेवा** थीं। वह **लेनिन्ग्राद्** की एक रोमनी (जिप्सी) थियेटर की गायिका नटी थीं। उनका पिता रोमनी था और माँ रूसी। रोमनी लोग मुसलमानों के राज्य स्थापित होने से दो तीन शताब्दी पहले भारत से पश्चिम की ओर निकले थे। रोमनी शब्द डोमनी का अपभ्रंश है। अर्थात् हमारे यहाँ के चलते-फिरते रहने वाले ख़ाना-बदोश डोम या नट तथा यूरोप के रोमनी या जिप्सी एक ही जाति से हैं। शताब्दियों से ठंडे मुल्क में रहने तथा रक्त-सम्मिश्रण के कारण रोमनी यूरोपियन जैसे मालूम होते हैं। विद्वानों ने अन्वेषण कर पता लगाया है कि रोमनी भाषा हिन्दी भाषा की बहन है। इस नाते **तवारिश् अन्ना** से रोमनी भाषा के जानने के लिए मेरी जिज्ञासा बहुत अधिक जाग्रत हो उठी थी। लेकिन माँ के रूसी होने के कारण उन्हें रोमनी भाषा मालूम न थी। रूसी भाषा में रोमनी को **सिगांस्की** कहते हैं। तवारिश् (साथी) **अन्ना** भी लेनिन्ग्राद् जा रही थीं; इसलिए हमें रूसी भाषा सिखलाने की ओर उनका ख़ास तौर से ध्यान था। रोमनी स्त्रियों का सौन्दर्य यूरोप में बहुत मशहूर है। अन्ना की अवस्था अब ४६–४७ वर्ष की थी, लेकिन इसमें शक नहीं कि यौवनावस्था में वह **पीतर्-बुर्ग** की श्रेष्ठ सुंदरियों में रही होंगी।

दोन् नदी को पार कर हम **रोस्तोव्** नगर के साथ साथ **उक्रइन्-**सोवियत्-साम्यवादी-प्रजातंत्र में दाख़िल हुए। शाम को **उक्रइन्** के

एक बड़े शहर खर्कोफ् को पार किया। पहले यहीं उक्रइन् की राजधानी थी। अब वह प्राचीन नगर कियेफ़ में चली गई है। खर्कोफ् की आबादी १० लाख से ऊपर है।

छोटे छोटे स्टेशन तो इधर दीखते ही नहीं, सभी स्टेशनों की इमारतें बड़ी बड़ी हैं। और मुसाफ़िर-खाना, भोजनालय तथा दूसरे कमरों में कांच की दोहरी खिड़कियां और दोहरे दरवाजे लगे हुए हैं। इन्हें आग जला कर या गर्म पानी के नल को ले जाकर बराबर गर्म रखा जाता है। १४ तारीख की शाम तक ज़मीन पर न हमें बर्फ़ का दर्शन हो रहा था, न रेलवे लाइन के आसपास देवदारों के वृक्ष ही दिखाई पड़ते थे। १५ नवम्बर को हम रूस में पहुँच गये। सबेरे से ही हमें योल्का (देवदार) और बियोंजा (भोजपत्र) के वन दिखलाई पड़ने लगे। दूर तक बर्फ़ की सफ़ेद चादर ज़मीन पर बिछी हुई देख पड़ती थी। ज़मीन यहाँ ऊँची नीची है। मकानों की छतें और दीवारों का कुछ भाग भी बर्फ़ से ढँका दिखाई पड़ता था। इधर के गाँवों के भी मकान कुछ और अधिक अच्छे ढंग के दिखाई पड़ते थे।

जा रहा है। ३०–३५ सेर सामान ले जाने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन कितने ही लोग हमारी तरह दो दो मन का बोझा ले कर चल रहे थे। फिर उनसे किराया क्यों न लिया जाय। इन्तूरिस्त के आदमी ने हमारे लिए परदेशी या न जाने क्या क्या कहकर छुट्टी करवाई। मोटर द्वारा हम होटल-नव-मास्को में पहुँचे। वैसे हमने दो दिन मास्को में रहने का विचार किया था और इसीलिए होटल और खाने आदि के लिए दो दिन का प्रबन्ध किया था। लेकिन मास्को के इन्तूरिस्त ने बतलाया कि हमारा **वीज़ा** लेनिन्ग्राद् के लिए है, इसलिए हम एक दिन से अधिक मास्को में नहीं ठहर सकते। हमारे टिकट में दो दिन तीन तीन घंटा शहर की सैर भी शामिल थी। इस लिए हमने एक ही दिन में ६ घंटा सैर करने का निश्चय किया। ११ बजे हम एक दुभाषिणी के साथ **पोलीतेक्निक्** म्यूज़ियम (उद्योगकला-संग्रहालय) देखने गये। एक बजे वहाँ से लौटे। **पोलीते-क्निक्** म्यूज़ियम के बारे में हम अलग लिखना चाहते हैं, इस लिए उसके बारे में यहाँ कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। डेढ़ बजे से साढ़े चार बजे तक शहर की सैर की। इस सैर में क्रेमलीन, लेनिन् की समाधि, लाल-मैदान, विश्वविद्यालय, लेनिन्पुस्तकालय, सांस्कृतिक-उद्यान, नये मकान, नाटकागार, दो भूगर्भी रेलें, सभी शामिल थे।

आज ही (१६ नवम्बर) १० बजे रात की गाड़ी से हम लेनिन्ग्राद् के लिए रवाना हुए। हमारे कंपार्टमेंट में सिबेरिया की एक रूसी तरुणी थी जो मास्को के मेडिकल कालेज में वैद्यक पढ़ रही थी, और अपने किसी दोस्त से मिलने लेनिन्ग्राद् जा रही थी। सवेरे ६ बज कर १० मिनट पर हमारी गाड़ी लेनिन्ग्राद् पहुँची। जितने ही हम लेनिन्ग्राद् के नज़दीक पहुँचते गए, उतनी ही अधिक बर्फ़ भी बढ़ती जाती थी। देवदार और भोजपत्र बर्फ़ीली भूमि के बड़े प्रेमी हैं, इसी लिए उनके जंगल भी इधर अधिक थे। देवदार को छोड़ कर बाक़ी सारे वृक्षों के पत्ते गिर गये थे और वह देखने में सूखे दरख़्त से

मालूम होते थे। १० वजे हम होतेल्-यूरोपा में पहुँच गये। पहले हमें दो आदमियों के रहने लायक़ कमरे में ठहराया गया, जिसमें पहले से एक अमेरिकन ठहरे हुए थे। हमने कहा—हमें अधिक दिन ठहरने की आवश्यकता होगी और साथ ही लिखने-पढ़ने और मिलने-जुलने वालों से काम पड़ेगा, इस लिए अलग कमरा दें तो अच्छा होगा। इस पर ४६ नंबर की शान्त एकान्त कोठरी मिली। उस वक़्त हमें यह नहीं मालूम हुआ था कि हम तीन दिन कम दो महीने के लिए ठहरने जा रहे हैं। कोठरी में एक लिखने-पढ़ने की मेज, एक खानपान की मेज़, तथा एक चारपाई के साथ छोटी मेज—**तीन मेज़ें**, ६ कुर्सियाँ, १ पलंग, १ सोफ़ा और १ अलमारी थी। छत के अलावा दो मेज़ के लैम्प, एक ठंडी गर्म नलके वाली 'मुँह-धोवनी' का लैम्प, एक कपड़ा वदलने वाली दलीची का लैम्प, और एक घंटी वजाने पर लाल हो जानेवाला दरवाज़े के वाहर का लैम्प, कुल ६ लैम्प थे। कमरे के भीतर दो घंटियाँ थीं। एक को वजाने से खाना लानेवाली महिला आ जाती थी, और दूसरे के वजाने से कोठरी की प्रवन्धिका। पाखाने और स्नान का इन्तजाम कमरे से अलग था, जिन पर आस पास के दूसरे मुसाफ़िरों का भी अधिकार था। होटल का खर्च चूँकि एकेडेमी ने दिया, इसलिए हमको मालूम नहीं कि रोज़ाना क्या देना पड़ता था। वैसे १५ रूवल से क्या कम देना पड़ता होगा। वाक़ू में भी हमारे कमरे में टेलीफ़ोन था, लेकिन वहाँ हमें उसे इस्तेमाल करने की आवश्यकता न थी। यहाँ अपनी मेज पर के टेलीफ़ोन को अकसर हमें इस्तेमाल करना पड़ता था।

२—लेनिन्ग्राद् नगर

वैसे लेनिन्ग्राद् मास्को के इतना पुराना शहर नहीं है। प्रथम **पीतर्**—जिसने कि पश्चिमी यूरोप की उन्नति—राजनीतिक, सैनिक और आर्थिक उन्नति—को देख कर उसकी नक़ल करना आरंभ किया—ने १७०३ ई० में समुद्र के पास नेवा नदी के किनारे **पीतर्-बुर्ग** के नाम से यह शहर बसाया था। पहले यह जहाज़ का बन्दरगाह और बाहर के मुल्कों से यातायात सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बनाया गया था। लेकिन १७१४ में जब राजधानी भी मास्को से उठ कर **पीतर्-बुर्ग** में आ गई तो इस नगर का महत्त्व बहुत बढ़ गया, और यही रूस का राजनैतिक और सांस्कृतिक केन्द्र हो गया। १८४० के बाद कल-कारख़ानों की स्थापना ज़्यादा होने लगी। तब से यह औद्योगिक केन्द्र भी बन गया। १७१४ से १९१८ तक—२०४ साल तक पीतर्-बुर्ग रूस की राजधानी रहा। इस लिए इसका महत्त्व बहुत ज़्यादा था। दिन पर दिन तरक्की होती गई। ज़ारों, राजकुमारों तथा दूसरे अमीरों ने करोड़ों रुपये लगा कर बड़े बड़े महल खड़े किये। शहर की स्थापना के वक़्त पहले ही से योजना बना ली गई थी। इस लिए नगर बहुत सुन्दर बना। बाल्तिक् समुद्र के किनारे होने के कारण इसकी औद्योगिक प्रगति का ज़्यादा होना आवश्यक था। यहीं से जहाज़ माल लेकर दूसरे मुल्कों को जाया करते थे। **पीतर्-बुर्ग** बहुत सी राजनैतिक हलचलों का केन्द्र रहा है। **पीतर्-बुर्ग** वह अखाड़ा था जिसमें बड़े महत्त्व की राजनैतिक घटनाएँ घटीं। १८२५ में अलेक्ज़न्द्र प्रथम के शासन काल में ज़ार की निरंकुशता के खिलाफ़ धनिक ज़मींदारों ने बग़ावत की। इसे दिसम्बरी विद्रोह कहते हैं। तब से लेकर १९१७ तक कई उपद्रव और विद्रोह हुए, जिनमें १९०५ की क्रान्ति तथा १९१७ की प्रथम और द्वितीय क्रान्ति (लाल क्रान्ति) बहुत महत्त्वपूर्ण

हैं। १९०५ में पहले पहल मज़दूरों ने अपने हक़ के लिए हथियार उठाया। जब कि ज़ार निकोला ने आवेदन-पत्र लेने के लिए गोलियों से उनका स्वागत किया। **पेत्रो-ग्राद्** ही, (महायुद्ध से पूर्व) का **पीतर-बुर्ग,** इस क्रान्ति का केन्द्र रहा। १९१७ की ७ नवंबर को यहीं पर बोलशेविकों ने पूँजीवाद का शासन हमेशा के लिए ख़तम कर समाजवादी सरकार की स्थापना की। यहीं लेनिन् ने आदिम सरकारी खरीते निकाले थे। यद्यपि १९१८ में अधिक सुरक्षित और केन्द्रीय समझ कर राजधानी लेनिन्ग्राद् से उठ कर मास्को चली गई, लेकिन लेनिन्ग्राद् अब भी सोवियत् उद्योग और संस्कृति का केन्द्र बना ही हुआ है। १९२४ में सोवियतों की कांग्रेस ने शहर का नाम बदल कर अपने महान् नेता लेनिन्—जो कि कुछ ही पहले मर चुका था—के नाम पर लेनिन्ग्राद् रक्खा। लेनिन्ग्राद् की हर एक सड़क, हर एक गली अपना अलग अलग इतिहास रखती है। कहीं पुश्किन्, और लेर्मन्तोफ्, टाल्स्टाय्, और चेखोफ़् की स्मृतियाँ पड़ी हुई हैं और कहीं सैकड़ों हँसते हँसते फाँसी पर लटकने वाले क्रान्तिकारी युवकों की जीवन-दायिनी जीवनियाँ अंकित हैं।

लेनिन्ग्राद् को प्रथम **पीतर** ने अपना सारा ऐश्वर्य लगाकर बनाना आरंभ किया था और दो शताब्दियों तक जहाँ एक ओर रूसी साम्राज्य की अपार सम्पत्ति इसका निर्माण करने के लिए मौजूद थी, वहाँ रुपये को पानी की तरह बहा कर यूरोप के चोटी के इंजीनियर और कलाकार, इस काम में लगाये गये थे। मीलों तक चले गये यहाँ के अनेकों पुराने प्रासाद और धनिकों के घर अपने स्थापत्य की विचित्रता और सौन्दर्य के लिए म्यूजियम से मालूम होते हैं। सड़कें, उद्यान, चौक, सब में बड़ी शाहखर्ची और सुरुचि का परिचय दिया गया है। नेवा नदी और उसकी अनेक नहरों के जाल के कारण इसे उत्तर का वेनिस् कहते हैं।

प्रथम पीतर ने १७०३ में लेनिन्ग्राद् की स्थापना की, यह हम कह चुके हैं। उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में **पीतर्-बुर्ग** राजनैतिक और सांस्कृतिक

केन्द्र स्थान ही नहीं था, बल्कि वह यूरोप के बड़े बड़े व्यापारिक केन्द्रों में समझा जाता था।

आज भी लेनिन्ग्राद् का महत्त्व इसी से मालूम हो सकता है कि यहाँ कई वैज्ञानिक प्रतिष्ठान (इन्स्तीत्यूत्) और संस्थाएँ हैं। १९३३ में सोवियत् की सारी औद्योगिक उपज का १४ सैकड़ा यहाँ तैयार हुआ था। लेनिन्-

उरित्स्की चौक (पृष्ठ १३)
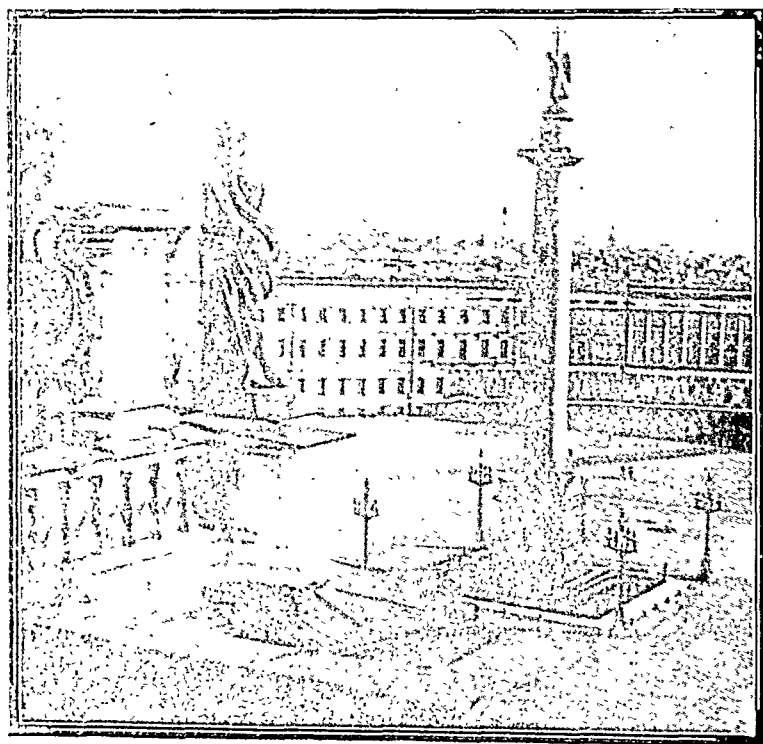
ग्राद् का घेरा १२१ किलोमीतर (८० मील से ज़्यादा) है। और इस तरह घेरे में दुनिया के शहरों में उसका नंबर तीसरा है। अव्वल लन्दन और दूसरा न्यूयार्क। १९३२ में जनसंख्या ३० लाख थी और लाल क्रान्ति के

बाद जनसंख्या का डेढ़ गुना के करीब बढ़ना बतलाता है कि क्रान्ति ने लेनिन्ग्राद् को उन्नत करने में सहायता की है।

लेनिन्ग्राद् का **उरित्स्की** चौक संसार का सबसे बड़ा चौक है। यद्यपि देखने वाले को वह बहुत छोटा मालूम होता है। और उसकी वजह यह है, कि आस पास की सभी इमारतें बहुत ऊँची हैं। और तुलना करने में आदमी की नज़र ग़लती खा जाती है। चौक के बीच में संगखारे का एक विशाल स्तम्भ है। यह संसार का सब से बड़ा पाषाण-स्तंभ है। ऊँचाई ५० मीतर (१५० फीट से अधिक) और वज़न २२४ टन है। यह सारा खंभा एक पत्थर का है। आस पास की इमारतों की विशालता के कारण यह भी देखने में छोटा मालूम होता है। स्तम्भ के ऊपर एक देवदूत (फ़रिश्ता) की भाव-पूर्ण मूर्ति है। नेपोलियन् के पराजय के उपलक्ष्य में ज़ार **अलेक्ज़न्द्र** ने इसे बनवाया था। शिल्पी था **मोत्फेराँ**।

उत्सवों के समय शहर के बड़े बड़े जलूस आकर यहीं इकट्ठे होते हैं और उस वक्त सर्चलाइट की तेज़ रोशनी और लाउड-स्पीकर की वजह से यह लाखों की जमा हुई भीड़ दर्शक पर अद्भुत प्रभाव डालती है। चौक के चारों तरफ़ की इमारतों को बनाने में ऐसा ख़याल रखा गया है कि जिसमें सब मिल कर स्थान पर एक ख़ास सौन्दर्य पैदा करें।

चौक के एक तरफ़ शरद्-प्रासाद है। ज़ार इसी में रहा करता था। इसे १७६२ में शिल्पी **रास्त्रेली** ने बनाया था। इसमें १००० कमरे और हाल हैं। १९४५ खिड़कियाँ और १७८६ दरवाज़े हैं। प्रासाद की छत ८ एकड़ ज़मीन घेरती है। ज़ार के वैयक्तिक कमरों की सजावट को अब भी वैसे ही क़ायम रखा गया है। इसके कितने ही हालों में क्रान्ति-संग्रहालय है, जिसके देखने के लिए हर साल १० लाख दर्शक आते हैं। शरद्-प्रासाद का कुछ भाग **एर्मिताज** (Hermitage) म्यूज़ियम है जो कि दुनिया के कला-संग्रहालयों में बहुत ऊँचा स्थान रखता है। इसका मुक़ाबला लन्दन का ब्रिटिश म्यूज़ियम और पैरिस के लूव्रे ही कर सकते हैं।

शरद्-प्रासाद के सामने एक अर्द्ध-वृत्ताकार बहुत विशाल इमारत है, इसे शिल्पी रोसी ने १८२८ में बनाया था। लंबाई ५३० मीतर है (१७००
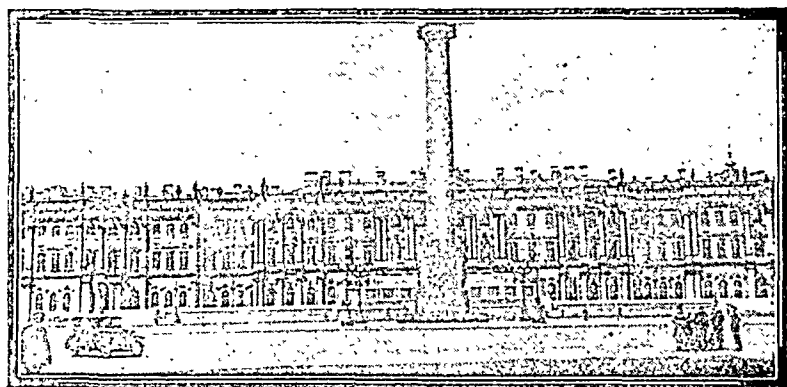
शरद्-प्रासाद

फीट के करीब) और इस प्रकार फ़्रांस के वेर्सोई प्रासाद से थोड़ी ही कम है।

९ जनवरी १९०५ तक शरद्-प्रासाद ज़ार का निवासस्थान रहा। उसी दिन (ख़ूनी रविवार के दिन) मज़दूर अपना आवेदन-पत्र लेकर जलूस के साथ ज़ार की सेवा में आ रहे थे और यहीं रहते हुए ज़ार ने विशाल चौक में खड़ी जनता के ऊपर गोली चलवाई थी। यह वही ज़ार निकोला (द्वितीय) था, जिसे १९१८ में उसी तरह परिवार सहित जनता की गोलियों का शिकार वनना पड़ा। १९०५ में यद्यपि ज़ार अपार क्रूरता द्वारा जनता को दवाने में सफल हुआ, लेकिन फिर उसे शरद्-प्रासाद में रहने की हिम्मत न हुई; यद्यपि महल के भीतर के चहवच्चों में शरीर रक्षा के लिए ३ पूरी पलटनें और एक शरीर-रक्षक सेना मौजूद थी। वह इस प्रासाद को छोड़ कर **चा़र्स्कोयसेलो** (ज़ार का गाँव)—जिसे आज कल **देत्स्कोये सेलो** (वच्चों का गाँव) कहते हैं—के महल में चला गया। १२ साल बाद फिर

पुराने चौक में बन्दूकों की आवाज़ हुई। अब की बार भी वे ही कमकर थे, लेकिन अब वे आवेदन-पत्र लेकर किसी ज़ार को देने नहीं आये थे। ज़ार तो
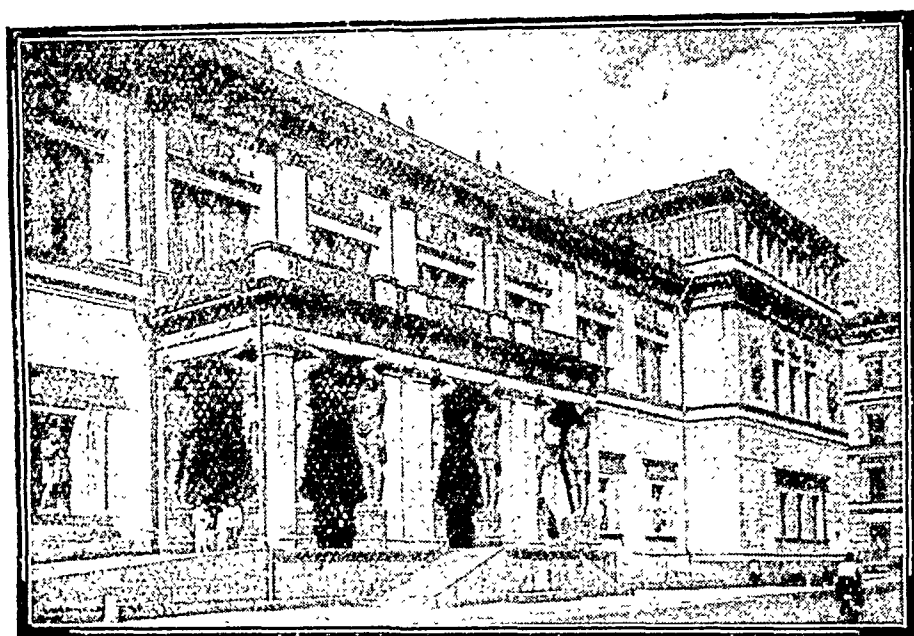
शरद्-प्रासाद का द्वार

आठ महीने पहले ही गद्दी से उतारा जा चुका था। हाँ, शरद्-प्रासाद में रहने वाले वनियों और ज़मींदारों से अधिकार छीनने के लिए वे बन्दूकों के साथ आये थे। धनिकों की सरकार ने पूरी मोर्चाबन्दी कर रखी थी, लेकिन ७ नवंबर को मज़दूरों ने ज़ार के प्रासाद को दख़ल ही नहीं कर लिया बल्कि उस के साथ साथ शासन मज़दूर-सरकार के हाथ में चला गया।

शरद्-प्रासाद की एक तरफ़ विशाल **उरित्स्की** चौक है, और दूसरी तरफ़ नेवा नदी। नदी का किनारा संगख़ारे से बँधा हुआ है। प्रासाद की वग़ल से जानेवाली सड़क पर पुल है, जिसके उस पार लेनिन्ग्राद् का विश्वविद्यालय तथा दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ हैं। जाड़े के दिनों में नेवा जम जाती है और ऊपर वर्फ़ पड़ कर उसे विशाल कर्पूर-राशि सी वना

देती है। पुराने ज़माने में जाड़े के दिनों में नेवा पर गाड़ियाँ और दूसरे यान चला करते थे। अठारहवीं सदी में रानी एनी ने नदी के ऊपर बर्फ़
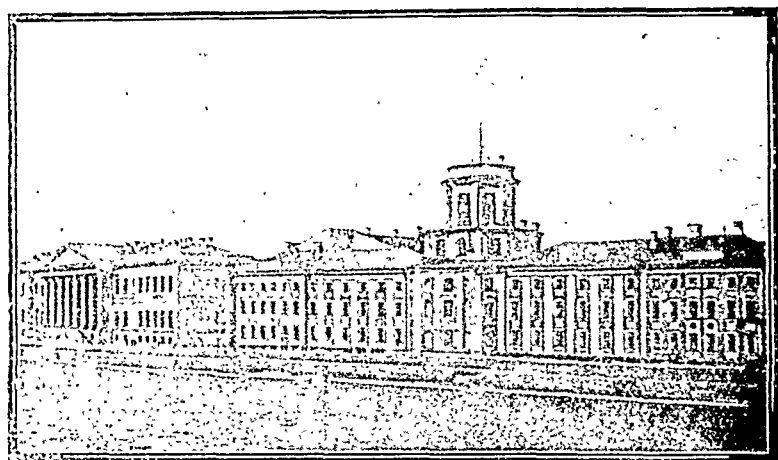
विश्वविद्यालय (लेनिन्ग्राद्) (पृ० २४)

का महल बनवाया था, जिसे बर्फ़ की ही मूर्तियों और आभूषणों से सुसज्जित किया गया था। रानी के कुछ 'मूर्ख' (विदूषक) बन्द हो कर यहीं ठंडे हो गये थे।

शरद्-प्रासाद् की बग़ल में पुल की तरफ़ जानेवाली सड़क को पार करने
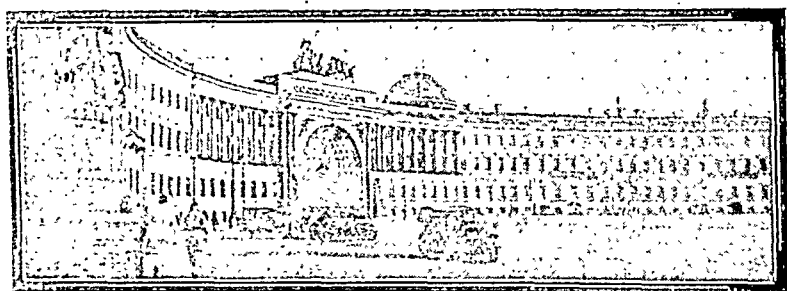
शरद्-प्रासाद के सन्मुख (पृ० १५)

पर नौसैनिक-संग्रहालय की विशाल इमारत है। इसे १८२३ में शिल्पी **जख़ारोफ़्** ने वनाया था। यह ४४० मीतर (प्राय: १४०० फ़ीट) लंवी इमारत है। वीच में सोने का सुन्दर **गन्धोला** वहुत दूर से दिखलाई पड़ता है। यह ९० मीतर (प्राय: ३०० फ़ीट) ऊँचा है। उसके ऊपर एक सोने का जहाज़ है, जो देखने में यद्यपि छोटा मालूम होता है, लेकिन है १३ फ़ुट के करीव (४ मीतर)।

पहले इस इमारत को जहाज़ वनाने के डक के वास्ते तैयार किया गया था। इमारत के भीतर जहाज़ वनते थे और फिर एक ख़ास नहर से नेवा में उतारे जाते थे। यही जगह है जहाँ पर प्रथम पीतर ने अपना ५० तोपों वाला जहाज़ वनवाया था। आजकल इस इमारत में नौसैनिक-संग्रहालय है।

नौसैनिक-संग्रहालय की एक तरफ़ नेवा नदी है और दूसरी तरफ़ उद्यान। उद्यान के छोर से लेनिन्ग्राद् की सव से वड़ी सड़क नेव्स्की—आजकल २५ अक्तूवर एवेन्यू—आरंभ होती है। यह सड़क ४, ५ किलोमीतर (६ मील से ऊपर) लम्वी है। इसी सड़क पर होतेल्-यूरोपा के पास कज़ान्स्की-सवोर् मशहूर गिर्जा है। इसे १८११ में शिल्पी **वोरोनिख़िन्** ने अपने मालिक ग्राफ़(कौंट) **स्त्रोगानोफ़्** के लिए वनाया था। सामने की तरफ़ इसके १४४ विशाल स्तंभ— जो अर्द्ध वृत्ताकार वरांडे में खड़े किये गये हैं— इमारत की शोभा को और वढ़ा देते हैं। और इनकी ही विशालता की वजह से इमारत उतनी वड़ी मालूम नहीं होती, जितनी वह है। वाहर वगीचे के ढले लोहे के कठघरे भी वड़े सुन्दर हैं। वाग़ में **ग्राफ़् स्त्रोगानोफ़्** की मूर्ति है। लेकिन उसकी आतमा स्वर्ग में वैठी वैठी क्या कहती होगी, जव वह देखती होगी कि ईसा और उसकी माता को प्रसन्न करने के लिए गरीवों का लाखों मन ख़ून चूस कर जिस इमारत को उसने वनवाया था, उसे अव धर्म-विरोधी (धर्म-इतिहास) म्यूज़ियम के रूप में वदल दिया गया है; और उसके भीतर जा कर आदमी यही ख़याल लेकर लौटता है कि धर्म के समान झूठ और धोखा तो पतित से पतित व्यक्ति भी नहीं कर सकता।

२

अक्तूबर-एवेन्यू द्वारा कज़ान्स्की गिर्जे से और आगे चलने पर **फोन्तन्का** नदी पर अवस्थित **अनिच्किन्** पुल आता है। इस पुल के ऊपर मूर्ति-शिल्पी
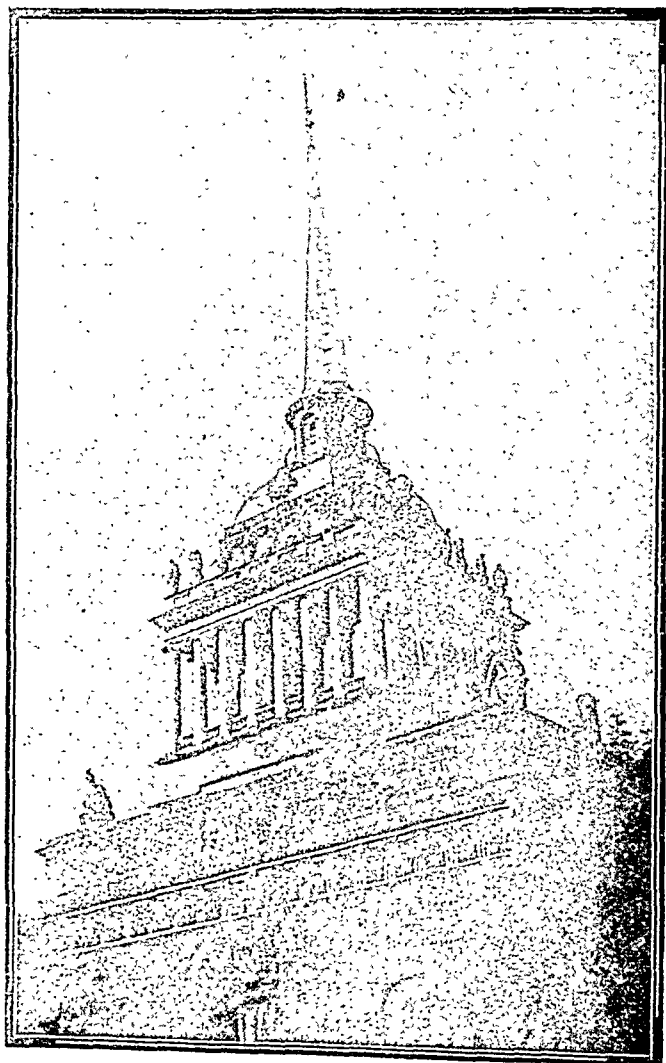
नौसैनिक-संग्रहालय (लेनिन्ग्राद्)

क्लोत् के वनाये पीतल के ४ अद्भुत घोड़े हैं। शिल्पी ने अश्वजाति के

सिकन्दर और घोड़ा (लेनिन्ग्राद्) (पृष्ठ १८)

सौन्दर्य और शक्ति को निचोड़ कर उनमें रख दिया है। घोड़ों के पास विजयी

सिकन्दर की मूर्ति उनका दमन करती हुई दिखाई गई है।

लेनिन्ग्राद् का अक्षांश ६२° है जिसके कारण फरवरी में यहाँ श्वेत-रात्रि होती है। उस समय ध्रुव के पीछे छिपे सूरज की चमक इतनी अधिक पहुँचती है कि सारी रात कुछ मिनटों को छोड़ कर बिना दीपक के सहारे आदमी अखबार पढ़ सकता है।

अक्तूबर एवेन्यू **वोस्तानियाँ**-चौक में जाकर समाप्त होता है। यहीं मास्को जानेवाला रेलवे का स्टेशन है। वोस्तानियाँ का अर्थ है विद्रोह। १९१७ की प्रथम क्रान्ति—मार्च (फ़रवरी) में हुई थी—का सूत्रपात यहीं हुआ था। एक कसाक सिपाही ने एक पुलीस अफसर को यहीं मारा था। और उसके बाद विद्रोह मच गया। चौक में ज़ार **अलेखन्द्र** तृतीय की मूर्ति है।

मार्शल वुद्योन्नी (पृष्ठ २०८)

नौसेना-म्यूज़ियम के पास नेवा नदी से कुछ हट कर प्रथम पीतर की घोड़े पर चढ़ी मूर्ति है। इस मूर्ति को कलाकार **फल्कोनेत्** ने वनाया था। घोड़ा अपने पिछले पैर पर खड़ा है। मूर्ति अत्यन्त भावपूर्ण है। इस विशाल मूर्ति को खड़ा करने के लिए संगखारे की चट्टान की चट्टान समुद्र के तट से यहाँ लाई गई। चट्टान इतनी भारी थी कि ४०० आदमी रोज़ खींचने में लगे रहे, तव १ वर्ष में इस

जगह ला सके। वह प्रतिदिन २०० मीतर (७०० फ़ीट के करीब) से अधिक नहीं खींच सकते थे। चट्टान इतनी बड़ी थी कि उसकी दरारों में वृक्ष उगे हुए थे।

इस मूर्ति के पास ही सिनेट का विशाल चौक है। १४ दिसंबर १८२५ में दिसम्बरी विद्रोह यहीं हुआ था। उस वक्त प्रगतिशील धनी ज़मींदारों
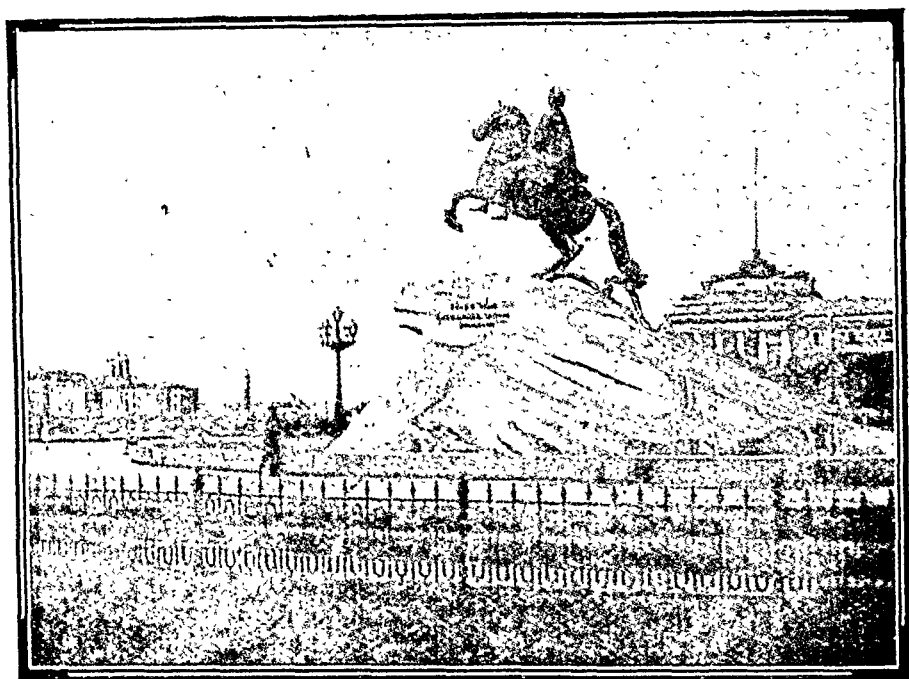
प्रथम पीतर की मूर्ति

ने भड़का कर शरीर-रक्षकों को ज़ार निकोला प्रथम के ख़िलाफ़ लड़ाना चाहा था। विद्रोहियों पर तोपें चलाई गई थीं। उनके पाँच नेता फाँसी चढ़ा दिये गये। एक सौ से ज़्यादा रईसों को या तो पदच्युत कर दिया गया अथवा विदेश या सिवेरिया में निर्वासित कर दिया गया। बड़ी निर्दयता के साथ इस विद्रोह का दमन हुआ था।

इसाइकी (आइज़क्)-गिर्जा इसी चौक में खड़ा है। शिल्पी मोत्-फेराँ ने ४० (१८१७ से १८५७ ई०) साल में इसे वनाया था। १०

हज़ार मज़दूर रोज़ काम करते थे। उस समय मजदूरी और सामान दोनों के सस्ता रहते भी २ करोड़ ८० लाख रूबल इस पर खर्च आया था। मुख्य गन्धोला (गुम्बद) ३०० फीट ऊँचा है और सामने से चौड़ाई ३०० फ़ीट है। (इससे एक लट्टू लटकता है जो कि अपने हिलने की चाल से पृथ्वी की गति को बतलाता है।) इस गिर्जे के भीतर ४५ फ़ीट लंबे ११२ संगखारे के विशाल स्तंभ हैं। रोम के **अलेक्सेन्द्र और ट्रोजेन** खंभों को छोड़ कर संसार में दूसरे इतने ऊँचे स्तंभ नहीं हैं। एक एक खंभे का वज़न १०० टन है। गिर्जे के भीतर १२००० आदमी बैठ सकते हैं। संगमर्मर, संगमूसा तथा दूसरे प्रकार के कितने ही क़ीमती पत्थर इसमें लगाये गये हैं। छत पर जाने से सारा लेनिन्ग्राद् शहर दिखलाई पड़ता है।

नेवा-तट
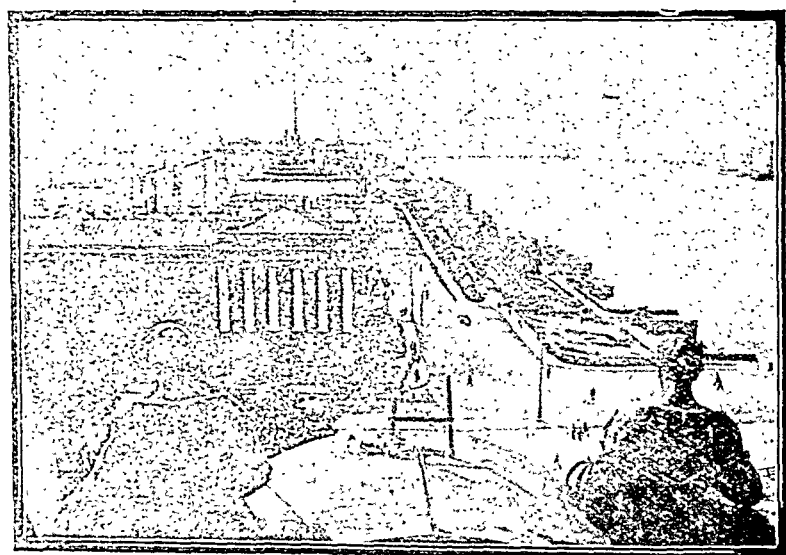
इसाइकी गिरजे के पीछे की ओर **वोरोफ्स्की** चौक है। यहाँ ज़ार निकोला प्रथम की अश्वारूढ़ मूर्ति है। यह भी शिल्पी क्लोत् की बनाई हुई

है। इसमें घोड़ा पिछले पैरों पर खड़ा है। मूर्ति के पास में **अस्तोरिया** होटल की विशाल इमारत है। इस चौक से करीव ही **पावलोव्स्की** वैरक हैं। यहाँ पहले ज़ार के शरीर-रक्षक रहते थे। ज़ार पावल (प्रथम) चुन कर नीली आँखों और लंवी नाकों वाले जवानों को ही शरीर-रक्षक बना कर रखता था। १८१८ में यह इमारत वनी थी। आजकल इसमें विजली के पावर-स्टेशन के केन्द्रीय प्रवंध का दफ़्तर है। मोयिका नदी पार करने पर रूसी-म्यूज़ियम की सुन्दर इमारत मिलती है। इसके पास के वाग़ के दरवाज़े के क़रीव रक्त-मन्दिर है। यह उस जगह वनाया
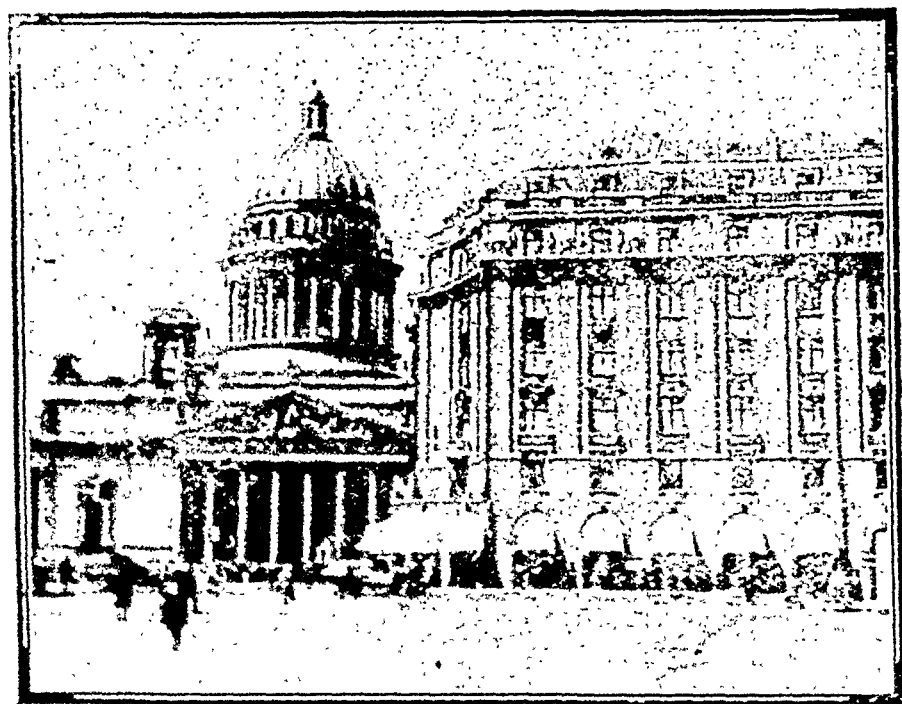
इसाइकी-सवोर और अस्तोरिया होटल (लेनिन्ग्राद्) (पृष्ठ २१)

गया है, जहाँ ज़ार अलेक्सेन्द्र द्वितीय क्रान्तिकारियों के वम का शिकार हुआ था। ज़ार का शरीर चिथड़े चिथड़े हो कर उड़ गया था। सिर्फ़ फ़र्श

के पत्थर और बाँध के कठघरे पर ख़ून लगा हुआ था। इन्हीं को मन्दिर के भीतर रखा गया है।

इंजीनियरिंग-प्रासाद दूसरी बड़ी इमारत है। यहीं पर पावल प्रथम अपने पुत्र अलेखन्द्र प्रथम की आज्ञा से दरबारियों द्वारा मारा गया था। इस प्रासाद को शिल्पी ब्रेन ने १७३४ में ज़ार की आज्ञा से बनाया था। हत्या के डर के मारे ज़ार ने प्रासाद को खाईं से घिरवाया था।

प्रथम पीतर ने अपना पहला महल ग्रीष्म-उद्यान (क्रान्ति-चौक के पास) १७१८ में बनवाया था। शिल्पी का नाम था त्रेसर्नी। इस महल के भीतर पीतर के वक्त के असबाव और सजावट अभी तक मौजूद हैं।

शरद्-प्रासाद के पास वाले पुल को पार करने पर विश्वविद्यालय और दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ मिलती हैं। यहाँ पंखदार दो ऊँचे मीनार हैं, जो नेवा
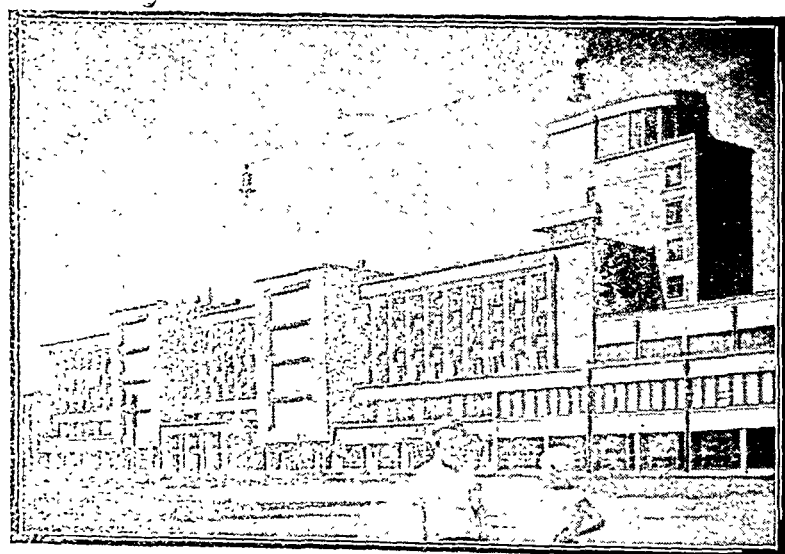
सांस्कृतिक-भवन (लेनिन्‌ग्राद्) (पृ० २९)

की एक शाखा के किनारे खड़े हैं। इससे थोड़ा आगे जाने पर सार्वजनिक

पुस्तकालय है। पुस्तकों की संख्या ५५ लाख से ऊपर है, जिनमें २½ लाख हस्तलिखित हैं। लेनिन्ग्राद् समुद्र और छोटी छोटी कितनी ही नदियों के किनारे बसा है। **क्रास्ने-जोरी** (रक्त-उषा) सड़क से जाने पर आदमी **पेत्रो-पाव्लोव्स्की** किले में पहुँचता है। 'समानता-पुल' की बाईं तरफ़ नेवा नदी के तट पर यह किला अवस्थित है। नगर के निर्माण के साथ साथ इसका भी निर्माण १७०३ में हुआ था। पहले ही से राजनैतिक कैदी इसमें रखे जाते थे। सब से पहला कैदी था पीतर प्रथम का लड़का **अलेखन्द्र**। उसके बाद की दो शताब्दियों में सैकड़ों क्रान्तिकारी इसमें रखे गये। सीड़-वाले अंधेरे भुँइधरों में रख कर इन कैदियों के ऊपर बड़ा अत्याचार किया जाता था। बहुतेरे उनमें से मर जाते थे या पागल हो जाते थे। किले में वह जगह है, जहाँ फाँसी दी जाती थी। इस तरह मरे हुओं की सिर्फ संख्या भर मालूम हो पाती थी।

मार्शल ब्लूखेर (पृष्ठ १०२)

दिसंबरी-विद्रोह (१८-२५) से लेकर नरोदो-वोल्त्सी (जनता की इच्छा; उन्नीसवीं शताब्दी का उत्त-रार्द्ध) तक के राजनैतिक कैदी यहीं रखे जाते थे। गोर्की यहीं कैद किया गया था। लेनिन् का बड़ा भाई **अलेखन्द्र उल्यानानोफ़** फाँसी पर चढ़ाने के पहले इसी क़िले में रखा गया था। क़िले के बीच में **पेत्रो**

पाव्लोव्स्की गिर्जा है। इसे १७७३ में शिल्पी त्रेसर्नी ने बनाया था। प्रथम पीतर से ले कर अलेक्सन्द्र तृतीय (अंतिम ज़ार से पहले का) तक सारे ज़ार यहीं दफ़नाये गये हैं। गिर्जे का गन्धोला १२२½ मीतर है और इसके ऊपर एक पर-दार फरिश्ते की मूर्तिहै, जिसके पंख साढ़े आठ मीतर (६ गज़ के करीब) लंबे हैं।

इस क़िले की दाहिनी ओर क्रान्तिचौक है, जिसके सामने एक छोटा सा मकान है, जिसमें अन्तिम ज़ार निकोला का कृपापात्र एक अभिनेता क्शेसिन्स्की रहता था। फरवरी १९१७ की क्रान्ति के बाद ही इस घर में बोलशेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति का कार्यालय चला आया। विदेश से आने पर स्टेशन से सीधे लेनिन् यहाँ आये और रोज़ मकान के सिंहपंजर (उभड़ी हुई बड़ी खिड़की Balcony) पर खड़े हो कर व्याख्यान दिया करते थे, जिसके सुनने के लिए मज़दूर और सैनिक हज़ारों की तादाद में जमा हुआ करते थे।

मार्शल येगोरोफ़

विद्रोह-संगठन का कार्यकारी मंडल भी यहीं रहता था। आजकल इस मकान में वृद्ध-बोलशेविक-सभा का कार्यालय है।

इसी चौक में एक लंबी चौड़ी नई इमारत बनी है। यह भूतपूर्व राजनैतिक कैदियों का समान-गृह (कम्यून्-गृह) है। पास ही में

प्रथम पीतर का दोमिक (कुटिया) है, जिसमें पीतर्-बुर्ग बसने के वक्त पीतर एक साल रहा था। कुटिया को उसी हालत में रखा गया है।
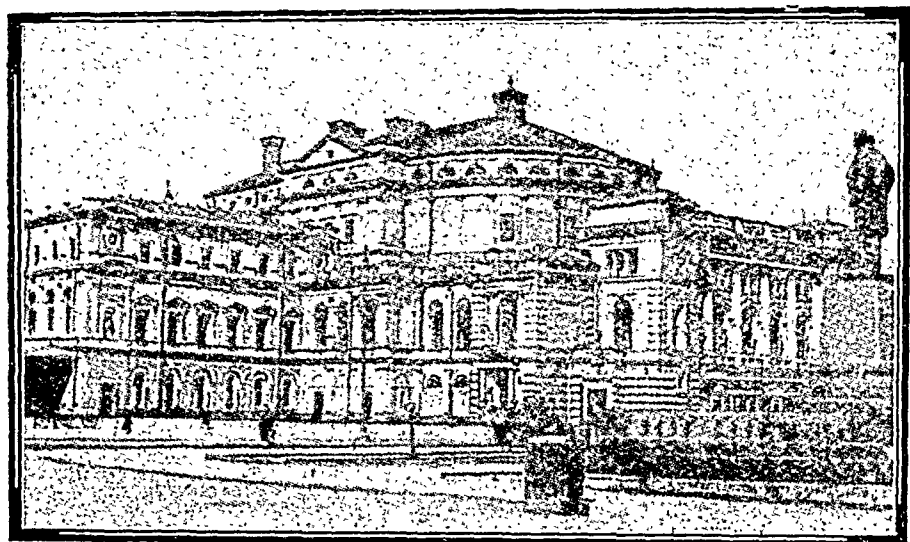
मारिइन्स्की-थिएटर (लेनिन्ग्राद्)

ज़ार के हाथ के कितने ही औज़ार और सामान भी रखे गये हैं। कुटिया की रक्षा के लिए उसके ऊपर पत्थर का मकान बना दिया गया है।

*** ***

क्रान्ति के बाद लेनिन्ग्राद् में भारी परिवर्तन हुआ है। शहर के केन्द्रीय स्थानों और सुन्दर सड़कों पर थोड़े से धनी लोगों के रहने के मकान थे। बाकी सभी जनता—मजदूर—लकड़ी के छोटे छोटे घरौंदों में शहर के बाहर फ़ैक्टरियों के पास रहा करती थी। क्रान्ति के बाद जो मकानों का नव-निर्माण हुआ है, उसने उन घरौंदों का पता नहीं छोड़ा। अब वहाँ चार चार पाँच पाँच तल्ले की बड़ी बड़ी इमारतें हैं। पानी के नल, बिजली और पाख़ाने के पंप का इंतज़ाम है। हर जगह क्लब, स्कूल, बाग़ बग़ीचें हैं।

*** ***

फ़िन्लैंड-स्टेशन (लेनिन्ग्राद्) पर लेनिन् की मूर्ति

लेनिन्ग्राद् का फ़िन्लैंड-स्टेशन एक ऐतिहासिक स्थान है। विदेश से लौट कर आने पर लेनिन् इसी स्टेशन पर उतरे थे; और यहीं मज़दूरों और सैनिकों के सामने उन्होंने अपना पहला व्याख्यान दिया था। व्याख्यान

की समाप्ति पर उन्होंने कहा था—

"चिरंजीव, सार्वभौम समाजवादी क्रान्ति!"

स्टेशन के चौक में लेनिन् की एक सुन्दर मूर्ति स्थापित है। उसके नीचे लेनिन् के उक्त वाक्य उत्कीर्ण हैं।

पश्चिमी यूरोप के जाने वाले मुसाफ़िरों को लेनिन्ग्राद् के **वर्सावा** स्टेशन से जाना पड़ता है। इससे आगे **बाल्तिक्** स्टेशन है। जहाँ से बिजली की रेल पीतर्-होफ़ को जाती है। यहाँ हड़ताल-चौक है। यहीं नाव्स्कीं विजय-मेहराब है, जिसे नैपोलियन के विरुद्ध विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में १८३४ में वनवाया गया था। शिल्पी का नाम था स्तासोफ़्। चौक के पास की बाकी इमारतें हाल में बनी हैं। मेहराब की बांईं ओर नाव्स्कीं ज़िले का गोर्की-संस्कृति-भवन है। सारी इमारत सीमेंट और लोहे की है। यह लाल **पुतिलोफ़्** फ़ैक्टरी के कमकरों की प्रेरणा से बनाई गई है और सारा ख़र्च उन्होंने ही दिया है। जिस जगह यह इमारत खड़ी है, वहाँ पहले एक शराब की भट्ठी थी, जहाँ मज़दूर हफ़्ते की कमाई एक दिन में पी जाते थे।

नाव्स्कीं मेहराब की दूसरी तरफ़ विशाल क्रीड़ा-क्षेत्र है। इसीके पास नाव्स्कीं का भोजनालय है। इस इमारत के एक ओर हर तरह की चीज़ों के बड़े बड़े क्रय-भंडार हैं और बाक़ी हिस्से में भोजन-शालाएँ और विश्रामगृह। इस भोजन-शाला में १ लाख ६० हज़ार परोसे प्रतिदिन तैयार होते हैं और सारे ज़िले के कमकर यहाँ का खाना खाते हैं। अन्य सार्वजनिक भोजनालयों की तरह यहाँ भी सब काम मशीनों से होता है। लेनिन्ग्राद् के सभी भोजनालयों में ४ साल पहले प्रतिवर्ष ७० करोड़ परोसे तैयार होते थे।

लेनिन्ग्राद् में निरक्षरता बिलकुल नहीं है। हर एक विद्यार्थी को ९ साल की निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा मिलती है। भिन्न भिन्न जातियों को उनकी अपनी भाषा में शिक्षा दी जाती है।

लेनिन्ग्राद् के दर्शनीय स्थानों में **स्मोल्नी** भी एक है। **स्मोल्नी** गिज को शिल्पी **रस्त्रेली** ने १७३५ में बनाया था। इसके पास **स्मोल्नी** की विशाल इमारत है। इसमें पहले अमीरों की लड़कियाँ पढ़ा करती थीं। लाल क्रान्ति के समय सैनिक क्रान्ति-कारिणी-समिति का हेड क्वार्टर यहीं
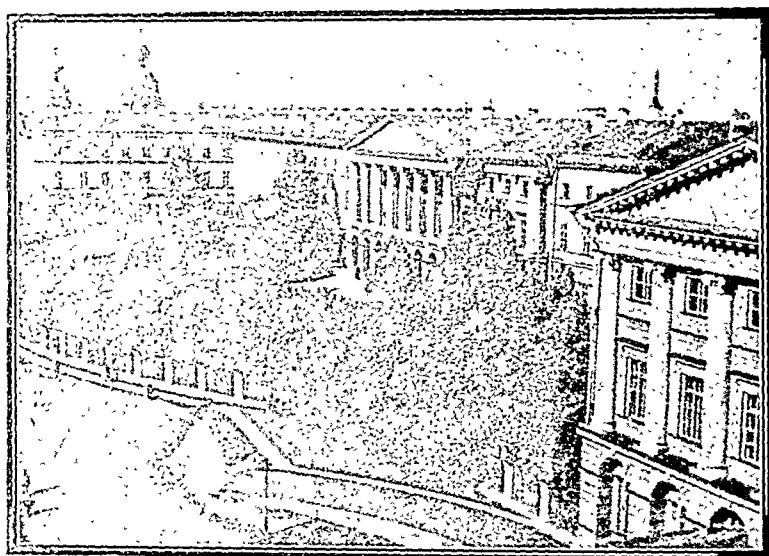
स्मोल्नी

पर था। समिति रात-दिन क्रान्ति के संचालन का काम करती थी। ८ नवम्बर १९१७ ई० से नई स्थापित सोवियत् सरकार का मंत्रिमंडल यहीं चला आया। द्वितीय सोवियत्-कांग्रेस की वह रात वाली ऐतिहासिक बैठक यहीं हुई थी, जिसमें सोवियत्-शासन-स्थापना की घोषणा की गई थी। २८० नंबर के कमरे में अब भी लिखने की एक मेज़, एक सोफ़ा, एक चारपाई पड़ी है। इसी कमरे में रह कर क्रान्ति के प्रथम दिनों में लेनिन् काम करते थे।

३—लेनिन्ग्राद् में दो मास

१७ नवंबर को जल-पान के बाद हमने डाक्टर श्चेर्बास्की को फ़ोन किया। गिर जाने से उनके पैर में चोट आ गई थी, और डाक्टरों ने प्लास्तर लगा कर उन्हें चारपाई पर लिटा दिया था। आचार्य श्चेर्बास्की ने न आ सकने के लिए अफ़सोस प्रकट किया। मैंने सात बजे शाम को स्वयं आने की सूचना दी। पता और ट्राम का नंबर लिख लिया और पथ-प्रदर्शक के बिना ही ७ नम्बर की ट्राम पकड़ कर चल पड़ा। यह मालूम था कि लेनिन्ग्राद् में कहीं के लिए भी एक बार ट्राम पर चढ़ने का १५ कोपेक् (१ रूबल=१०० कोपेक्=सात आना) लगता है। ट्राम पर बैठ जाने पर टिकट बेचनेवाली महिला से मैंने स्थान के बारे में पूछा। संयोग से उसी ट्राम में एक वृद्धा जा रही थीं, जो डाक्टर श्चेर्बास्की से परिचित थीं, और जिन्हें जाना भी उनके मकान के पास था। उन्होंने मुझे अजनबी और भाषा से अल्प-परिचित जान कर वहाँ तक पहुँचा देने का वचन दिया। ट्राम 'नेब्स्की प्रास्पेक्टस' (अक्तूबर सड़क) नामक लेनिन्ग्राद् की प्रधान सड़क से होती हुई, ज़ार के 'शरद्-प्रासाद' की बग़ल से नेवा नदी को पार कर विश्वविद्यालय-क्षेत्र में घुसी। नदी के तट ही तट दूर तक जा कर एक जगह उतर पड़े और फिर थोड़ा चल कर वृद्धा ने मुझे आचार्य श्चेर्बास्की के मकान पर पहुँचा दिया। इस प्रकार बिना किसी दिक्कत के मैं आचार्य श्चेर्बास्की के निवास-स्थान पर पहुँच गया। वे दूसरी मंज़िल में रहते थे। घंटी बजाने पर एक वृद्धा आ उपस्थित हुईं। उन्होंने 'दोब्रे वेचेरा' (सुसायम्) कह कर अभिवादन किया। मैंने भी लड़खड़ाती ज़बान से 'दोब्रे वेचेरा' किसी तरह कह कर सिर झुका दिया। वृद्धा मेरे आने की सूचना देने गई। उस वक़्त मेरे दिल में तरह तरह के ख़याल उठ रहे

थे। यद्यपि मैंने अब तक डाक्टर श्चेर्बास्की (श्चेर्बास्क्वा) का दर्शन नहीं कर पाया था, लेकिन १० वर्ष पहले से ही मैं उनकी कृतियों और उनके अगाध पांडित्य से परिचित था। जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय डाक्टर ल्युडर्स ने पूछने पर सन् १९२७ ई० में मुझ से कहा था कि यूरोप में भारतीय दर्शन के सब से बड़े विद्वान् डाक्टर श्चेर्बास्की हैं। प्रोफ़ेसर सिलवेन् लेवी के मुख से भी मैं कितनी ही बार उनकी तारीफ़ सुन चुका था। उनकी कितनी ही गंभीर कृतियों को पढ़ कर मैं स्वयं उनके पांडित्य का कायल था। भारत छोड़ने के थोड़े ही दिन पहले जैन विद्वान् पंडित सुखलाल से भेंट हुई थी। संस्कृत के प्रमाण-शास्त्र का उनका अध्ययन बहुत ऊँचा है। उन्होंने हाल में ही डाक्टर श्चेर्बास्की के 'बुद्धिस्ट लॉजिक' (बौद्ध न्याय) को पढ़वा कर सुना था, और वे उनकी विद्वत्ता से इतने प्रभावान्वित हुए थे कि कह रहे थे—इस ग्रन्थ का पठन-पाठन काशी के न्यायाचार्य के अन्तिम खंड में आवश्यक कर देना चाहिये। ऐसे ग्रन्थ के पढ़े बिना आदमी की आँखें ही नहीं खुल सकतीं कि भारतीय दर्शन का विकास क्रमशः कैसे होता चला आया है। आचार्य श्चेर्बास्की से मेरा पत्र-व्यवहार सन् १९३२ से होने लगा था और उससे हम दोनों में बहुत घनिष्टता स्थापित हो गई थी। तो भी मैं उनके आकार प्रकार के बारे में अनभिज्ञ था। मैं यह

आचार्य श्चेर्बास्क्वा

जानता था कि वे वृद्ध हैं, लेकिन वह लम्बे हैं या ठिगने, मोटे हैं या पतले, प्रसन्न-मुख़ हैं या मुहर्रमी सूरत वाले, मिलनसार हैं या एकान्तता-प्रिय। मैं यह भी सुन चुका था कि क्रान्ति से पहले वे एक बड़े ज़मींदार थे और उनका परिवार ख़ानदानी पदवीधारी था। रूसी ज़मींदारों के बारे में मैंने काफ़ी कहानियाँ पढ़ी थीं और मालूम था कि वे ठाटबाट में हमारे राजाओं महाराजाओं के कान काटते थे। डाक्टर श्चेर्बास्की इसी श्रेणी के ज़मींदार थे। पर क्रान्ति ने उस श्रेणी को ख़तम कर दिया। श्चेर्बास्की का वह वैभव, वह महल, वे नौकर-चाकर सब अतीत की बात हो गये। लेकिन अब भी उनका पद उनकी विद्या के कारण बहुत ऊँचा है। वे **स०स०स०र०** (साम्यवादी-सोवियत्-संघ-रिपब्लिक) विज्ञान-एकेडेमी के मेम्बर हैं। इस संस्था की सदस्य-संख्या सारे १८ करोड़ सोवियत्-निवासियों में १०० से भी कम है। इस प्रकार आज भी प्रतिष्ठा और सम्मान में वे पहले से छोटा दर्जा नहीं रखते।

मुझे अपने विचारों में डूबने का ज़्यादा मौक़ा नहीं मिला कि वृद्धा ने आकर जर्मन भाषा में—'बिते' कह कर हाथ से 'पधारिए' का इशारा किया। मैं बैठक के कमरे में दाख़िल हुआ। एक अच्छा सजा कमरा था। नीचे कालीन बिछी थी। कई गद्दीदार कुर्सियाँ और एक मेज़ रखी थी। दीवारों पर कितने ही सुन्दर चित्र लटक रहे थे। एक निगाह से यह सब देख कर मुझे बग़ल की कोठरी में घुसना पड़ा। यही उनका शयन-कक्ष था। कोठरी छोटी थी। एक तरफ़ दो-तीन अलमारियों में किताबें भरी थीं, जिनमें दर्शन-संबंधी संस्कृत की पुस्तकें सैकड़ों की संख्या में थीं। दीवार के सहारे जो मेज़ रक्खी थी उस पर भी किताबें थीं। एक तरफ़ चारपाई थी। ख़ाली जगह में तीन चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। आचार्य ने लेटे ही लेटे हाथ जोड़ "स्वागतं, आगम्यतां, इदं आसनम्" कह कर मुस्कराते हुए पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। खड़े न हो सकने के लिए और इसके लिए भी शोक प्रकट किया कि वे स्टेशन तक नहीं आ सके। उनके मुख को देखने

से यह नहीं मालूम होता था कि उनका जन्म १९ सितंबर १८६२ को हुआ था। ७१ क्या देखने में तो वे ५५–५६ साल के मालूम होते थे। लम्बा

आचार्य श्चेर्वास्की, प्रो० दत्त तथा भारतीय भाषाओं के दूसरे अध्यापक

हट्टा-कट्टा शरीर है। दाढ़ी-मूँछ नदारद, सिर भी घुटा। उस भव्य गौर मुख पर निरन्तर झलकती हँसी की रेखा जहाँ एक ओर दर्शक पर अत्यन्त प्रभाव डालती है, वहाँ उसके संकोच को भी दूर कर देती है।

यात्रा के सम्बन्ध में कुशल-प्रश्न हुए। फिर तिब्बत में मिली पुस्तकों के सम्बन्ध में कुछ बातें हुईं। मैंने अपनी सम्पादित कुछ पुस्तकें भेंट कीं। फिर मार्च में न आकर इतनी देर से क्यों आये—पूछा। मैंने पहले की सूचना को न पाने तथा पीछे डाक्टर जायसवाल की बीमारी और निधन की बात कही। जायसवाल की मृत्यु से उन्हें भी अफ़सोस हुआ। उन्होंने पूछा—'कितने दिनों तक रहने का विचार है!' इसके बारे में अभी निश्चयात्मक रूप से तो मैं कोई जवाब न दे सकता था। पता लगा, एकेडेमी ने

मेरे रहने आदि का भार अपने ऊपर लिया है। भाषा की दिक्कत हल करने के लिए विश्वविद्यालय के संस्कृत (तृतीय वर्ष) के एक तरुण विद्यार्थी श्री रवीनोविच् दिये गये हैं, वे अंगरेज़ी भी जानते थे। मोटर के लिए भी आज्ञा दे दी गई।

सोवियत् ने अपने देश में सातवें दिन एतवार की छुट्टी हटा कर छठा दिन छुट्टी का रखा है, शेष ५ दिन काम के हैं। हर मास की छठी, बारहवीं, अठारहवीं, चौबीसवीं और महीने की अन्तिम् (२८, २९, ३० या ३१) तारीखें छुट्टी के लिए निश्चित हैं। अगला दिन छुट्टी का था।
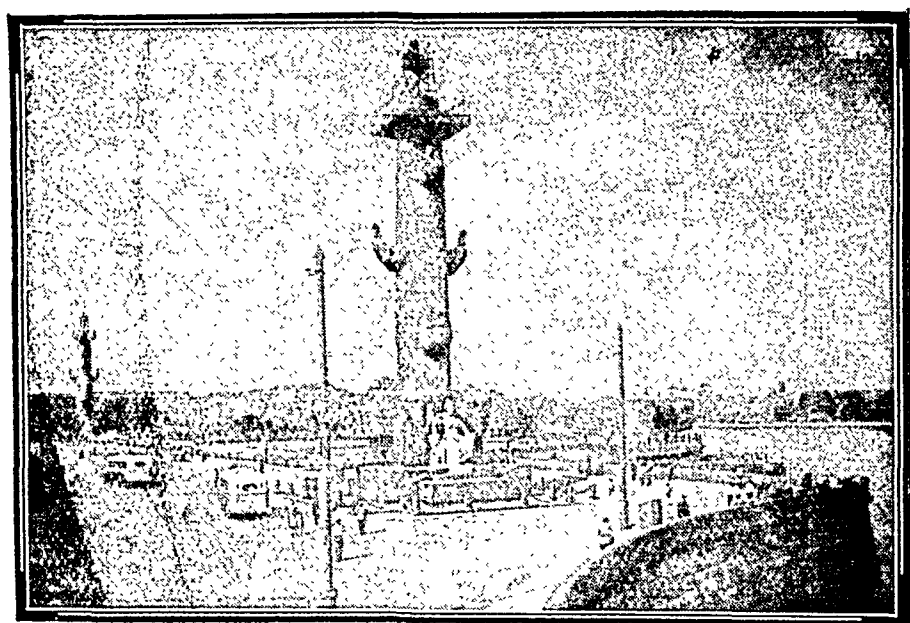
पंखदार-स्तम्भ (लेनिन्ग्राद्) (पृष्ठ २४)

रवीनोविच् महाशय १० ही बजे आ गये थे। एक बजे 'अर्मिताज़् म्यूज़ियम' देखने गये। जिस मकान में यह म्यूज़ियम अवस्थित है, वह पहले ज़ार का 'शरद्-प्रासाद' था। प्रासाद का कुछ हिस्सा क्रान्ति के वाद सन् १९१८ में संग्रहालय के रूप में परिणत कर दिया गया था।

'अमिताज़् म्यूज़ियम्' इतना विस्तृत है कि उसे देखने के लिए कई दिन चाहिए। हमने सिर्फ़ पूर्वी विभाग देखना चाहा। चीनी-तुर्किस्तान से प्राप्त मूर्तियों, भित्ति-चित्रों, काष्ठ की तख़्तियों, वस्त्रों और वर्तनों का वहुत सुन्दर संग्रह यहाँ है। चीज़ों के नाम लिख कर वहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया है। एक जगह तुंगुत्-मंगोल-साम्राज्य की प्राचीन वस्तुएँ संग्रह की गई हैं। यहाँ के चित्र-पट तिब्वत की तेरहवीं-चौदहवीं सदी के चित्रों से वहुत मिलते हैं। सोवियत् तुर्किस्तान की खुदाई से निकली चीज़ों में यवन-वाख़्तरी कला की वस्तुएँ विशेषतया उल्लेखनीय हैं। ईरानी कला का जितना सुंदर संग्रह यहाँ है, उतना सुन्दर संग्रह संसार में कहीं नहीं है। अख़ामनशी, पार्थिव और सासानी काल की समुन्नत कला के अनेक नमूने यहाँ मौजूद
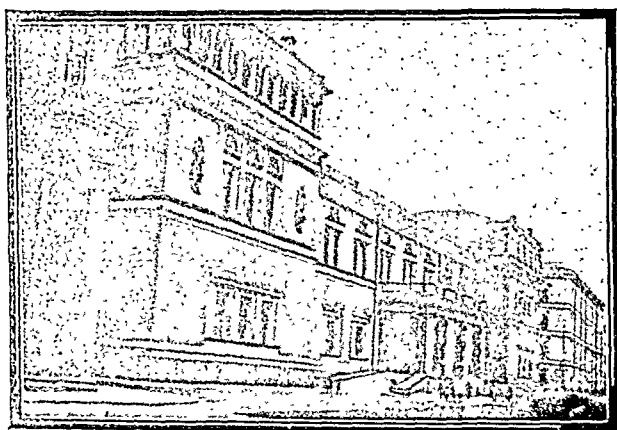
अमिताज़्-संग्रहालय (लेनिन्ग्राद्)

हैं। कला की जो वस्तुएँ इस्लाम के आने पर ईरान में नष्ट कर दी गई थीं उनके वहुत से उत्कृष्ट नमूने सौदागरों ने ले जाकर ईरान की उत्तरी सीमा के वाहर वसने वाले काफ़िरों के हाथ वेच दिये थे। रूस ईसाई होने पर भी मूर्ति-पूजा का विरोधी नहीं था। इस प्रकार वे वस्तुएँ रूसियों के हाथ में पड़ कर सुरक्षित रह गईं। आज ईरानी राष्ट्रीयता के लिए अमिताज़्

का यह ईरानी-विभाग तीर्थ सा बन रहा है। दो साल पूर्व इस विभाग की ख़ास तौर से प्रदर्शनी की गई थी। उसमें शामिल होने के लिए ईरान के शाह ने अपने वज़ीर तथा दूसरे विद्वानों को भेजा था।

मंगोल-विभाग में ईसा की पहली सदी की भी चीज़ें इकट्ठी की गई हैं। मिश्री और आसुरी (असीरियन) विभाग का संग्रह यद्यपि पेरिस और लन्दन का मुक़ाबिला नहीं कर सकता, तो भी उनके बाद इसीका नंबर है। सोवियत् के संग्रहालयों को सब से बड़ा सुभीता यह हुआ कि और देशों में ऐसी चीज़ों का एक बहुत क़ाफ़ी महत्त्वपूर्ण भाग वैयक्तिक सम्पत्ति होकर लोगों के घरों में बन्द रहता है, और उत्तराधिकारी के अयोग्य होने से कुछ नष्ट-भ्रष्ट और तितर-बितर भी हो जाता है। सोवियत् देश में वैयक्तिक सम्पत्ति के उठा देने पर अमीरों के निजी संग्रह भी इन संग्रहालयों में चले आये हैं। ये चीज़ें इतने अधिक परिमाण में एकाएक आ गईं कि सोवियत्-प्रजातंत्र ही इनकी रक्षा का प्रबंध आसानी से कर सकता था। उसने 'शरद्-प्रासाद' जैसे कितने ही महलों को संग्रहालय के रूप में परिणत कर दिया और आवश्यकतानुसार कितने ही नये मकान बनवाये।

इन विभागों को देखकर हम उन कमरों की ओर गये, जहाँ बहुमूल्य वस्तुओं का संग्रह बड़ी कड़ी हिफ़ाज़त के साथ रखा गया है। बड़े बड़े ताले और रिवाल्वरधारी पुरुष ही यहाँ नहीं रखे गये हैं बल्कि बिना ख़ास तौर से इजाज़त लिए हर किसी का भीतर जाना निषिद्ध है। हमारे देखने के लिए इजाज़त ले ली गई थी। भीतर काफ़ी आदमियों के देखने से भी मालूम होता था, कि लोगों के देखने के मार्ग में ख़ाहमख़्वाह रोड़ा नहीं अटकाया जाता। आज्ञापत्र को देखकर दरबान ने मोटा ताला खोला, और रबिनोविच्, मैं तथा संग्रहालय के पथ-प्रदर्शक भीतर गये। एक कमरे में काला-सागर-तटवर्ती दक्षिणी रूस की खुदाई में मिले सिथियन लोगों के नाना प्रकार के सोने के आभूषण आदि रखे थे। इनका समय ईसा-पूर्व पाँचवीं-छठी सदी तक जाता है। सोने की यह विशाल राशि सिथियन सरदारों और

राजाओं की क़ब्र के भीतर से निकली थी। पास के कुछ दूसरे कमरों में पुराने ज़ार और ज़ारिनों के आभूषण, घड़ी, छड़ी तथा और चीज़े रखी गई हैं। एक जगह प्रतापी केथराइन की सोने की मूठ लगी छड़ी है। उसी मूठ में सोने की घड़ी भी है। सरसरी तौर से पश्चिमी कला-विभाग के कुछ कमरों को भी देखा। पुनर्जागरण काल के बहुत से प्रतिभाशाली योरोपीय चित्रकारों के मूल चित्रों का यहाँ बहुत भारी संग्रह है। हमें वह कमरा भी दिखाया गया, जहाँ करेन्स्की का मंत्रि-मंडल लाल-क्रान्ति के समय नवम्बर १९१७ में पकड़ा गया था।
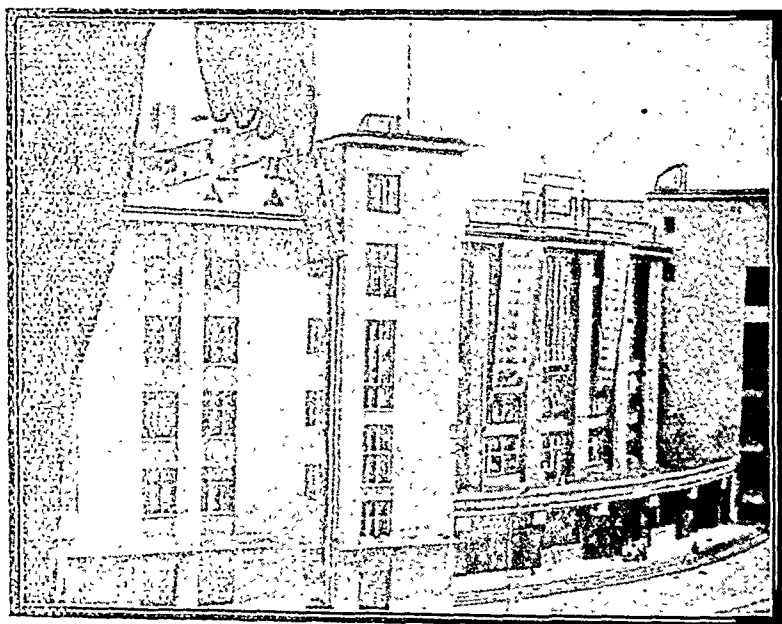
सांस्कृतिक-प्रासाद (लेनिन्ग्राद्)

'शरद्-प्रासाद' ख़ुद भी एक बहुत सुंदर इमारत है। नेवा नदी के दूसरे तट से इसकी लंबी पंक्ति, विशाल भित्ति और छत पर बनी सुन्दर पाषाण-मूर्त्तियाँ बहुत ही सुन्दर मालूम होती हैं। लाल क्रान्ति के नेताओं

का यह काम भी कम प्रशंसनीय नहीं था जो इतनी लड़ाई और गोलाबारी के समय भी उन्होंने इसका पूरा ध्यान रखा कि कला के उत्कृष्ट नमूनों का संहार न होने पाये। ज़ार के महल के भिन्न भिन्न भागों में बहुत सी संगमर्मर की तथा दूसरी मूर्तियाँ रखी हुई थीं।

वहाँ से हम प्रोफ़ेसरों के भोजनालय में गये। यह विशाल भवन पहले किसी राजकुमार का प्रासाद था। सीढ़ी, दीवारें, छत सभी को अलंकृत करने के लिए खुले दिल से धन ख़र्च किया गया है। भोजन-भवन राजकुमार का वही प्राचीन भोजनागार है। इसकी दीवारों पर रूस के किसी पुराने महान् चित्रकार-द्वारा चित्र अंकित हुआ है। पहले यहाँ नाना वाद्यों की मधुर ध्वनि के साथ राजकुमार और राजकुमारियाँ सुआच्छादित सुअलंकृत परिचारक और परिचारिकाओं द्वारा लाये गये नाना प्रकार के व्यंजनों को बहुमूल्य तश्तरियों और पान-पात्रों में ग्रहण करते रहे होंगे। आज उन्हीं जगहों पर किसानों और मज़दूरों की सन्तानें आधुनिक विश्वविद्यालय के ये प्रोफ़ेसर भोजन कर रहे हैं। उस समय इन नीच कुलियों को क्या इस प्रकार पढ़ कर विश्वविद्यालय की कुर्सी तक पहुँचने का मौक़ा भी मिलता? और एक-आध किसी तरह पहुँच भी जाते, तो क्या वे इस बेतकल्लुफ़ी से राजकुमारों के दस्तरख्वान पर आसन जमा सकते?

वहाँ से हम कज़ान्स्की-सवोर नामक विशाल गिर्जाघर में गये। कई गिर्जों को वन्द देख कर मैंने रविनोविच् महाशय से पूछा—क्या यहाँ कोई ऐसा गिर्जा घर नहीं है जिसमें लोग अब भी पूजा के लिए इकट्ठे होते हों? उन्होंने ले जाकर पास के एक पोलिश् गिर्जा को दिखलाया। इसका हाल भी काफ़ी वड़ा है। सुन्दर मूर्तियाँ हैं। लेकिन देखा, १४—१५ औरतें जिनमें सबसे कम उम्रवाली भी पचास वर्ष से ऊपर पहुँच चुकी थी—घुटना टेके प्रार्थना कर रही हैं। उस विशाल गिर्जे के एक कोने में बैठी इन १५ मूर्तियों का घुटना टेकना पूजा नहीं उसके लिए एक उपहास की बात थी। मैंने गिर्जे के कारिन्दे से गिर्जे के बारे में पूछा। उसने कहा—

देख नहीं रहे हैं। यही चन्द बुढ़िया बैठी हुई हैं। कहाँ पहिले श्रद्धालुओं से यह सारा हाल खचाखच भरा रहता था। गिर्जे के लिए पैसा इतना कम मिल रहा है कि जाड़ों में इससे गर्म करने के लिए कोयला ख़रीदना भी
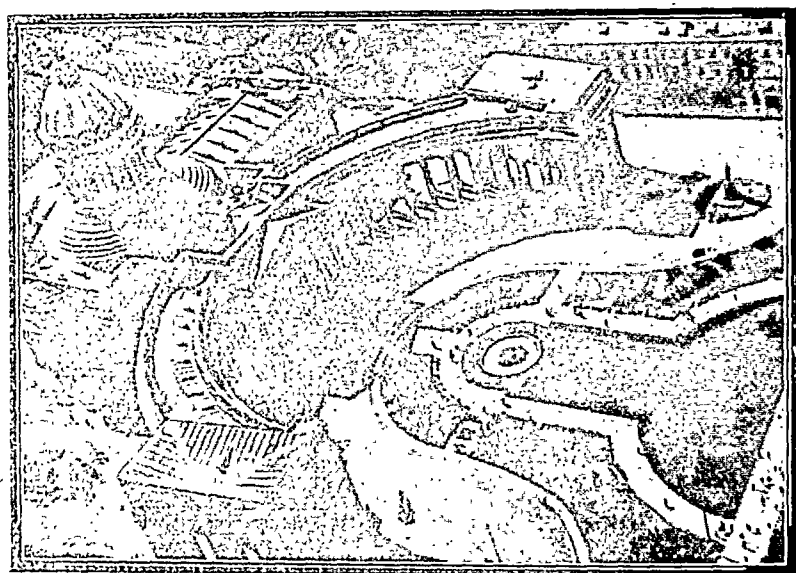
कजान्स्की-सबोर (लेनिन्ग्राद्) (पृष्ठ १७)

मुश्किल हो रहा है। और यदि गर्म करना छोड़ दिया जाय, तो ठंड में मरने के लिए ये १५ बुढ़िया भी यहाँ न आवें। रूस में धर्मों का भविष्य क्या होगा, इसका पता हमें इस उदाहरण से खूब लग गया।

*** ***

हफ़्ते भर रहने के बाद निश्चित हो गया कि जाड़े के दिनों में लेनिन्-ग्राद् में सूर्य को मुँह दिखाने के लिए शाप है। कभी कभी कुछ हिम-वर्षा भी हो रही थी, लेकिन रास्ते में अभी वह बहुत दिखलाई नहीं पड़ती थी। २२ नवम्बर से हमने नित्य 'प्राच्य-प्रतिष्ठान' (Oriental Institute)

में जाना निश्चय किया। पुस्तकालय से 'वार्तिकालंकार' के तिब्बती अनुवाद को निकाल कर संस्कृत से मिलाना ही प्रधान काम था। 'होतेल्-यूरोपा' से दो मील से ऊपर जाना पड़ता था। कुछ दिन तक हम ने मोटर का इस्तेमाल किया, लेकिन फिर रबिनोविच् के कहते रहने पर भी उसे छोड़ ट्राम से जाना ही ठीक समझा। रात बड़ी होने से ९ बजे नींद खुलती थी और जलपान करते करते ११-११॥ बज जाते थे। इसी लिए जल्दी के लिए जाते वक्त हम ट्राम से चले जाते और लौटते वक्त व्यायाम के खयाल से पैदल ही आते थे। २७ नवम्बर को रास्ते में कुछ विशेष बर्फ़ दिखाई पड़ने लगी और २८ को तो वह जम कर सख़्त हो गई थी। बर्फ़ पर इतनी बिछलाहट थी कि हम एक जगह गिर पड़े। आस
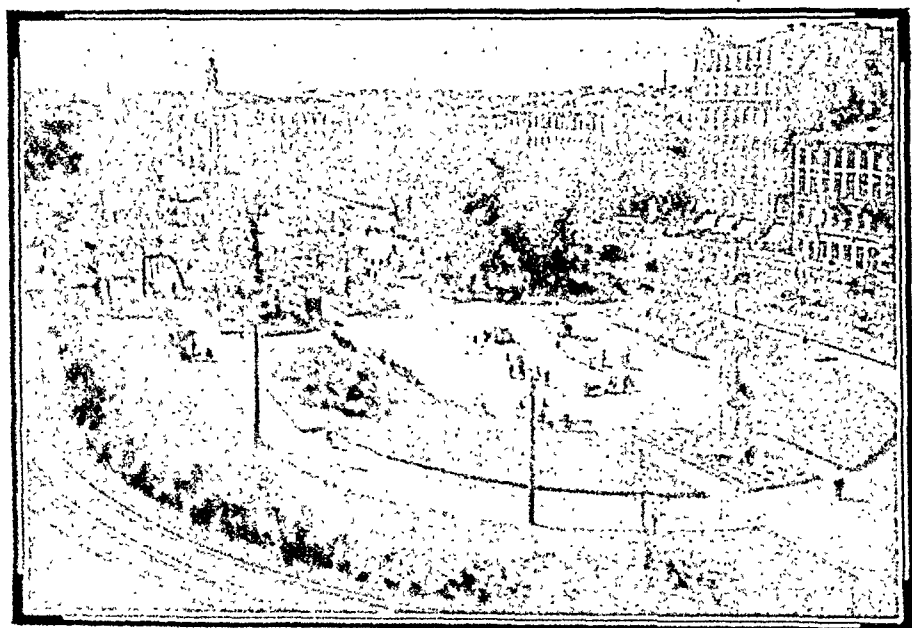
तुर्गनियेफ़-चौक

पास नज़दीक कोई था नहीं। हम कपड़े की बर्फ़ झाड़ कर झटपट खड़े हो गये। दो दिन बाद हमारे इन्दो-तिब्बती विभाग की सेक्रेटरी तवारिश्

लोला (हेलेना) कज़ारोव्स्का भी इसी तरह बर्फ़ से बिछल कर गिरीं। उन्हें कुछ चोट भी आई थी। उनके ज़िक्र करने पर यार लोगों ने कहना शुरू किया—'काले वारिधाराणां अपतितया न शक्यते स्थातुं"। कज़ारोव्स्का महाशया जर्मन और फ़्रेंच ही अच्छी नहीं जानती हैं, बल्कि तिब्बती और मंगोल भाषाओं की भी पंडिता हैं। अंगरेज़ी भी पढ़-समझ लेती हैं। उन्होंने तिब्बती-रूसी-भाषा का एक कोष लिखा है। मैंने उन्हें परामर्श दिया कि इसमें संस्कृत को भी शामिल कर लें। उन्होंने संस्कृत विशेष तौर से नहीं पढ़ी है। मैंने उनके लिए कहानी के रूप में संस्कृत के कुछ पाठ भी तैयार किए। यद्यपि माध्यम के अभाव से कुछ दिक्कत हो रही थी, तो भी हमें एक दूसरे की बात समझने के लिए दिमाग़ पर काफ़ी ज़ोर देना पड़ता था, जो कि भाषा सीखने के लिए बड़ी उपयोगी बात है। मैंने अपने पाठों में ऐसे ही शब्दों को ज़्यादा इस्तेमाल करना शुरू किया, जो संस्कृत और रूसी दोनों भाषाओं में समान पाये जाते हैं। जैसे—एतत् (एतोत्), तत् (तोत्), भ्राता (ब्रात्), माता (मात्), दुहिता (दोच्), उद (वद=पानी), अग्नि (ओगोन्), नभ (नेबो), हिम (ज़िम), दम (दोम्), गव्यादनीय (गव्याद्न्या), चषक (चशक=प्याला)। ऐसे समान शब्दों को देखकर उन्हें आश्चर्य भी होता था। चषक के बारे में तो उनका सन्देह तबतक दूर नहीं हुआ, जबतक पढ़ते वक्त एक पुरानी छपी संस्कृत पुस्तक में उन्होंने इस शब्द को देख नहीं लिया।

*** ***

कुछ दिनों के बाद आचार्य श्चेर्वास्की का प्लास्तर उखाड़ दिया गया और वे कमरे में ज़रा ज़रा चलने लगे। एक दिन मैं वहाँ ऐसे वक्त में गया जब वे विद्यार्थियों को पढ़ा रहे थे। ५ विद्यार्थियों में दो छात्र और एक छात्रा उपस्थित थे। दो छात्रायें उस दिन हाज़िर नहीं थीं। दशकुमार-चरित का पाठ वहाँ चल रहा था, जहाँ काममंजरी वेश्या के नेत्रों की नील कमल से उपमा दी गई थी। विद्यार्थियों को सन्देह हो रहा

था कि सिर्फ़ कमल न कह कर नील कमल क्यों कहा गया। मुझ से पूछने पर मैंने कहा—काममंजरी की आँखें नीली रही होंगी। झट प्रश्न हुआ—क्या भारत में नीली आँखोंवाले आदमी रहते थे? मैंने कहा—पाली ग्रन्थों में वुद्ध की आँखें नीली कही गई हैं। और पिंगल या भूरे केशों का होना तो संस्कृत में बहुत पाया जाता है। व्याकरण महा-भाष्यकार पतंजलि ब्राह्मणों को 'पिंगल-केश' कहता है। मुमकिन है, उस समय कुछ नीली आँखों वाले स्त्री-पुरुष रहे हों।

जेजिन्स्की

एक दिन एक दूसरे विद्वान् ने भी पूछा—'श्यामा का अर्थ क्या है? काली तो नहीं'? मैंने उन्हें आप्टे की संस्कृत-डिक्शनरी देखने को कहा। वहाँ उसके अर्थ में काली होने का नाम तक न था। श्यामा से वहाँ मतलव था षोडशी तरुण-सुन्दरी से। तव मैंने अपनी व्याख्या उनके सामने रक्खी। भारत के पुराने आर्य वैसे ही गौर थे, जैसे आजकल के यूरोपीय। उनके वाल भी भूरे और आँखें नीली थीं जैसी कि आजकल पामीर के नज़दीक काफ़िरस्तान (नूरिस्तान) के लोगों में पाई जाती हैं। उनमें अगर कोई काले वालों वाली तरुणी होती थी तो उसे श्यामा कहते थे; और भूरे वालोंवाली को पिंगला। अव भी जहाँ-तहाँ संस्कृत साहित्य में किसी किसी स्त्री का नाम पिंगला मिल जाता है। लेकिन पिंगला और श्यामा का परस्पर तथा वालों

से कोई सम्बन्ध था, इसे पीछे के लोग भूल गये। इसी लिए श्यामा का अर्थ करने में वे शरीर का रंग श्याम नहीं लेना चाहते और शब्दार्थ में श्यामता को निरर्थक समझते हैं।

संस्कृत तथा भारत की दूसरी भाषाओं के विद्यार्थियों और अध्यापकों के देखने से मुझे मालूम हुआ कि यहाँ के लोगों का पूर्वी भाषाओं का ज्ञान अँगरेज़, फ़्रांसीसी, और जर्मन लोगों के ज्ञान से कहीं बढ़ कर है।

एक दिन एक मित्र ने एक भारतीय अध्यापक तवारिश् दत्त का ज़िक्र किया। मुझे एक भारतीय का नाम मालूम होने पर उनसे मिलने की बड़ी उत्सुकता हुई, और मैं उसी दिन उनसे मिलने गया। दत्त महाशय का पूरा नाम है, प्रमथनाथ दत्त। वंग-भंग के बाद जो विकट आन्दोलन हुआ और उसके बाद जो कितने ही भारतीय हिन्दुस्तान से बाहर चले गये, दत्त महाशय उन्हीं में से एक थे। बहुत साल तक वह यूरोप और अमेरिका तथा पीछे तुर्की और ईरान में रहे। वहीं उन्होंने अपना नाम दाऊद अली रख लिया। लड़ाई के पिछले दिनों में तथा १९२१ तक वे ईरान में रहे। वह फ़ारसी, तुर्की जानते हैं और हिन्दी-उर्दू का उच्चारण ऐसा करते हैं कि कोई कह नहीं सकता कि वह बंगाली हैं। लेनिन्ग्राद् में वह हिन्दी, उर्दू और बंगला के अध्यापक

प्रो० प्रमथनाथ दत्त (लेनिन्ग्राद्)

हैं। सूफ़ी अम्बाप्रसाद और सरदार अजीत सिंह भी उस वक़्त ईरान में ही थे, जब कि ये ईरान में थे। अम्बा प्रसाद से इनकी अधिक घनिष्टता थी। वतलाते थे—सूफ़ी ने शीराज़् में एक मदरसा खोल रखा था। ईरानी लोग उनको वहुत मानते थे। लड़ाई के वक्त शीराज़् के ज़मींदार ने राजनीतिक भारतीयों को पकड़ लिया। जब सूफ़ी अम्बाप्रसाद को अँगरेज़ों के आने की ख़बर मिली, और ख़याल आया कि उक्त ज़मींदार उन्हें अँगरेज़ों के हाथ में दे देगा, तो उन्होंने ज़हर खाकर आत्महत्या कर ली। मुरादाबाद के सूफ़ी अम्बाप्रसाद भारतीय क्रान्ति के प्रथम ज्योति जगानेवालों में थे। उन्होंने अपनी ज़बान और क़लम से क्रान्ति का सन्देश लोगों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया, और जब समझा कि अब भारत में रह कर सिवा जेल में बंद रहने के और कुछ नहीं कर सकते, तो 'खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं,' कहकर हसरत भरी निगाह से अपनी मातृभूमि को देखते निकल गये। दत्त महाशय ने कितने ही भारतीय क्रान्तिकारियों को विदेशों में अपनी लाश छोड़ते देखा है, इसीलिए उन्हें विश्वास नहीं होता कि वह फिर कभी अपनी मातृभूमि का दर्शन कर सकेंगे। वह बड़े ही सरल और प्रेमी जीव हैं। उनके अकृत्रिम व्यवहार ने मुझे बहुत अधिक आर्कर्षित किया। कहते थे—'मातृभूमि के पुनर्दर्शन का सौभाग्य अब कहाँ मिलेगा ? लेकिन आप के देह से उसी भूमि की सुगन्धि आ रही है'।

मैंने कहा—'भारत की अवस्था वड़े ज़ोरों से बदल रही है और मुझे विश्वास है कि आपको भारत जाने के लिए मौक़ा मिल सकेगा।'

दत्त महाशय १९२१ में यहाँ आये और तव से रूस ही में हैं। उनकी उमर ५५ के आस पास होगी। दस वर्ष हुए वह कहीं गिर पड़े और उनकी एक टाँग (दाहिनी टाँग) का घुटना उखड़ गया। तब से बेचारे सिर्फ़ **पाखी** के सहारे कमरे के भीतर थोड़ा वहुत चल फिर सकते हैं। दत्त महाशय की धर्मपत्नी—जिनको पति ने नूरजहाँ नाम दे रखा है—एक रूसी महिला हैं। वह अपने पति की वड़ी सहायता करती हैं। अँगरेज़ी जानने

के कारण मुझे बड़ा सुभीता था। वैसे भी वह हँसमुख हैं और हमारा तो भाभी का नाता था। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने सुना कि संस्कृत में भी रूसी भाषा का शब्द 'देवर' ही पति के छोटे भाई के लिए इस्तेमाल होता है। एक दिन उनकी बड़ी बहन भी वहाँ बैठी हुई थीं। मैंने मज़ाक में कहा—'भाभी, तुम्हारी बड़ी बहन तुम से ज़्यादा सुन्दरी है।' उन्होंने झट उत्तर दिया—'विवाह से पहले दस तरुण मेरे पाणिग्रहण के उम्मेदवार थे। लेकिन मेरी बहन के लिए सिर्फ़ एक।' इस जवाब से सचमुच देवर को हार माननी पड़ी।

श्रीमती दत्ता (लेनिन्ग्राद्)

***   ***

दिसम्बर के प्रथम हफ़्ते में रहने का स्थायी प्रबंध निश्चित सा मालूम पड़ता था और एक पखवाड़े में मित्रों और परिचितों की संख्या काफ़ी बढ़ चुकी थी। इसी वक़्त हमारे दिमाग़ में तरह तरह के ख़याल पैदा होने लगे। कभी ख़याल आता—क्या अपना जीवन मुर्दों के लिए अर्पण कर देना उचित है? पुरानी तवारीख़ और पुराने बुज़ुर्गों की किताबें तथा तत्संबंधी खोज आख़िर मुर्दों की ही चीज़ें हैं। इस खोज के करनेवाले बहुत आसानी से मिल सकते हैं। साम्यवादी क्रान्ति के इतिहास और क्रान्ति के रंगमंच

पर खेलनेवाले पात्रों की जीवनियों को पढ़ कर मुझे अपने वर्तमान मार्ग पर घृणा होने लगी। ख़याल आने लगा—चीन या स्पेन के युद्ध-क्षेत्र में जाकर क्यों न काम किया जाय? यद्यपि वहाँ तक पहुँचने में कई बाधाएँ थीं, लेकिन उन बाधाओं ने मुझे उधर जाने से नहीं रोका। मुझे ख़याल आता था—कौन सी युद्ध-विद्या मैं जानता हूँ, जिससे कि मैं वहाँ साम्यवादी क्रान्तिकारियों को लाभ पहुँचा सकूँगा। भाषा आदि की अनभिज्ञता तो मुझे उन पर बोझ बना देगी। फिर ख़याल आया—क्या मुझे अपने काम के लिए स्वदेश में क्षेत्र नहीं है? वहाँ मैं अपनी लेखनी और वचन दोनों से अच्छी तरह कार्य कर सकता हूँ। भारत की ग़रीब जनता का उद्धार साम्यवाद ही से हो सकता है; और साम्यवाद का ठीक ठीक ज्ञान और उसका सन्देश सर्वसाधारण तक जब तक नहीं पहुँच जाता, तब तक किसी भावी क्रान्ति में लोग दृढ़तापूर्वक कैसे लड़ सकते हैं? इसमें शक नहीं कि दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में—जब इस प्रकार के ख़यालों के तूफ़ानों का ताँता बँधा हुआ था—मैं किसी एक निर्णय पर नहीं पहुँच सका; तो भी बारह वर्ष से जो रास्ता मैंने पकड़ा था, और जिसके लिए ही मैं रूस तक पहुँचा था, उसके प्रति अवहेलना ज़रूर हो गई। इसीने आगे मुझे अपना रास्ता निश्चित करने में मदद दी।
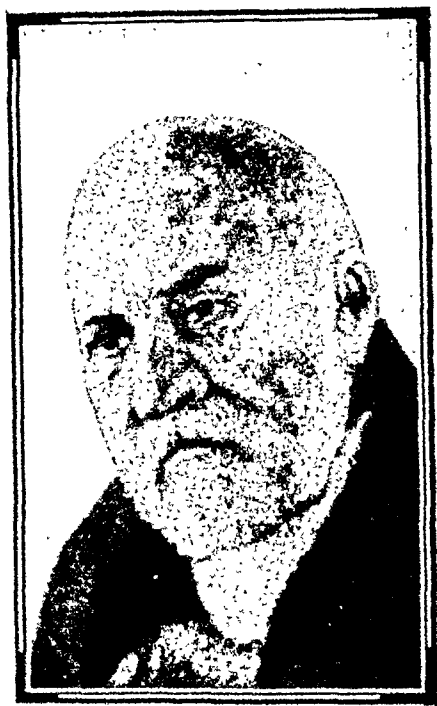
मर्कलोफ़्

पहली दिसम्बर को सर्दी की वृद्धि साफ़ मालूम हुई। होटल का हमारा कमरा खौलते पानी के नलों से गर्म किया गया था, इसलिए अपने कमरे

के अन्दर पतली मलमल पहन कर भी बैठ सकते थे, और हिन्दुस्तान में आ कर सच्चाई के साथ डींग मार सकते थे, कि मैं नदी और समुद्र जमा देने वाली लेनिन्ग्राद् की सर्दी में भी पतली मलमल पहन कर बैठा रहता था। लेकिन अब बाहर जाने पर आटे-चावल का भाव मालूम होने लगा। कानों में ही नहीं, चमड़े के दस्ताने के भीतर रहने पर भी हाथों में सर्दी पहुँचने लगी। दो दिसम्बर को नेवा नदी जहाँ तहाँ जमी दिखाई पड़ी, और ७ दिसम्बर तक तो वह बिलकुल जम गई।

***   ***

अभी तक मैं वहाँ रहने का ख़याल रखता था। होटल में यद्यपि जब तब कोई मित्र चला आता था, और इन्स्टीटच्यूट् में भी अपने काम के बाद कभी कभी कुछ बात करने का मौक़ा मिल जाता था, लेकिन रूसी भाषा के शीघ्र परिचय के लिए रूसी बोलनेवाले सहवासियों की बड़ी आवश्यकता थी। हमारे आस पास की कोठरियों में जो रहने वाले मेहमान आते थे, वे दो एक दिन से ज़्यादा नहीं ठहरते थे। फिर उनसे परिचय प्राप्त कर वार्तालाप करने का अवसर कहाँ से मिलता? मैंने भाभी दत्ता से इसके बारे में कहा। वह किसी दूसरी जगह कमरा भी ढूँढ़ने लगीं। एक दिन उन्हें रास्ते में एक स्त्री मिल गई। बातचीत चलने पर मालूम हुआ कि वह अपने मकान का आधा हिस्सा देने के लिए तैयार है। भाभी ने मुझसे कहा और यह भी बतलाया कि स्त्री बूढ़ी और एक प्रेस में स्याही लगाने का कोई काम करती है, एक साधारण मज़दूर श्रेणी की स्त्री है। मैंने सोचा—सोवियत् मज़दूर के जीवन को नज़दीक से देखने का यह अच्छा अवसर होगा, लेकिन साथ साथ मुझे यह भी मालूम था कि एक विदेशी पंडित का ऐसी जगह में रहना खटक भी सकता है। ख़ैर, मैंने भाभी को कहा—'देखने में क्या हरज है। चलें, घर को तो देख लें।' पहले तो दो तीन ट्रामों को बदलने की बात जब देखी, तभी मालूम हो गया, कि वह हमारे

बूते का काम नहीं। फिर यह भी पता लगा कि ट्राम द्वारा इंस्टीट्यूट जाने में एक घंटे से कम न लगेगा। आखिर हम लोग उस अर्द्ध-जरती महिला के घर पर पहुँचे।

सारा इलाक़ा मज़दूरों का था। लेकिन इन मज़दूरों के मकानों को, पूँजीवादी देशों के मज़दूरों की वस्ती से नहीं मुक़ाविला किया जा सकता। यहाँ छोटे छोटे गन्दे और घने घरौंदों की जगह चौड़ी सड़क पर दो-दो तीन-तीन तल्ले के ऊँचे मकान खड़े थे। महिला की कोठरी दूसरे तल्ले पर थी। दो कोठरियों का एक सम्मिलित द्वारवन्द वड़ा वरामदा या आँगन था। रसोई वनाने के लिए एक कोठरी अलग थी। रहने की कोठरी नहीं, वल्कि बरामदा और रसोईघर भी गर्म किये हुए थे। रहने की कोठरी में एक मेज़ और दो अलमारियाँ थीं। एक तरफ़ एक पलंग था और दूसरी तरफ़ एक लम्वा सोफ़ा। तीन चार कुर्सियाँ भी पड़ी थीं। सड़क की तरफ़ काँच के दोहरे किवाड़ों वाला जँगला था। छत के अलावा मेज़ पर रखने के लिए भी विजली का लैम्प था। महिला ने वतलाया, उनके पास खाना खाने-वनाने के सभी वर्तन मौजूद हैं। उन्हें दस वजे काम पर चला जाना होता है और ५ वजे लौटना पड़ता है। सवेरे और शाम का नाश्ता और भोजन भी वह वना कर दे सकती हैं। यदि मुझे एक ही कोठरी में दूसरी स्त्री के साथ रहने में संकोच हो तो इसके लिए कहा—दोनों में से एक पलंग ले लेगा और दूसरा सोफ़ा। वीच में एक ज़ीन का पर्दा डाल कर कमरे को दो हिस्सों में विभाजित कर लिया जायगा। मैंने हँसते हुए भाभी से कहा—'यदि दिल साफ़ है, तो इन पर्दों की क्या ज़रूरत? और यदि दिल साफ़ नहीं, तो पर्दे कर ही क्या सकते हैं?' भाभी ने भी हँसते हुए कहा—'शायद इन श्रीमती का चेहरा ही अच्छा पर्दे का काम दे देगा।' ख़ैर, देवर-भौजाई दोनों को क्या निर्णय करना है, यह तो पहले ही मालूम हो चुका था, लेकिन हमने महिला को निराश नहीं करना चाहा। उनसे तारीफ़ करते हुए हमने उनका निर्णय जानना चाहा। महिला ने कहा कि मैं अपने मुहल्ले के मकानों के अधिकारी

से पूछ कर कल जवाब दूँगी। अधिकारी जब सुनेगा कि आनेवाला आदमी एक [illegible] स्कालर है, तो क्या सम्मति देगा, इसे हम अच्छी तरह जानते थे। और इसीलिए निश्चिन्त थे कि 'नहीं' महिला की तरफ ही से होगा।

सारे मकान का किराया रसोईघर के साथ १७ रूबल (=७।≡)) मासिक था। इसी में रसोई, खाना, पाखाना, बराण्डा और कोठरी के भीतर के बिजली के लैम्प तथा घर गर्म करने का खर्च भी शामिल था। ऐसे मकान का किराया कलकत्ता-बम्बई में ३०) महीने से कम नहीं होता। उक्त स्त्री का मासिक वेतन १५० रूबल के क़रीब था। उसे देख कर हमें मालूम हो गया कि सोवियत्-शासन ने श्रमिकों की अवस्था को कितना उन्नत कर दिया है। मासिक वेतन और घर की निश्चिन्तता सिर्फ काम लगने के वक़्त ही नहीं है। बेकारी तो सोवियत् देश में स्वप्न हो गई है। हर एक योग्य शरीरवाले आदमी के लिए काम मौजूद है। शरीर से अयोग्य या बीमार हो जाने पर भरण-पोषण का प्रबंध सरकार करती है। कल की चिन्ता वहाँ के लोगों को परेशान नहीं करती।

***   ***

१२ दिसम्बर पहुँचते पहुँचते सर्दी ने अपना रूप दिखाना शुरू किया। अब हमें पोस्तीन का कनटोप, दस्ताना और ओवरकोट पहनना ज़रूरी जान पड़ा। चमड़े का कोट और पतलून पहनने में हमने दो चार दिन और आनाकानी की; क्योंकि अभी उनके पहननेवाले हमारे इन्स्टीट्यूट में दिखाई नहीं पड़ते थे। लेकिन जब देखा, कि सर्दी चर्बी और मांस को चीर कर सीधी हड्डियों तक पहुँच रही है, तो वैसा करना ही पड़ा।

३१ दिसम्बर को नव-वर्षोत्सव होनेवाला था। लोग देवदार की हरी हरी डालियाँ और खिलौने ख़रीद कर ले जा रहे थे। ३० की रात को लड़के शरद्-बाबा का त्योहार मनाते हैं। यूरोप के अन्य देशों में यह त्योहार क्रिसमस्-बाबा के नाम से पचीस दिसम्बर ही को हो जाता है, लेकिन

सोवियत्-जनता ने ईश्वर और उसके पुत्र को जवाब दे दिया है—इसीलिए २५ दिसम्वर की जगह ३०–३१ को उत्सव मनाया जाता है। दत्त महाशय के घर भाभी की वड़ी वहन आई हुई थीं। वह मास्को में एक पुस्तकालय-में काम करती हैं और महीने की छुट्टी ले कर अपने लड़के अर्काशा के साथ अपनी वहन के यहाँ ठहरी हुई थीं। अर्काशा साढ़े छः वर्ष का बच्चा है। तो भी उसके स्वास्थ्य और डील-डौल को देख कर हिन्दुस्तान में उसे ९ वर्ष से कम का कोई नहीं कह सकता। अभी अक्षर सीखने के लिए उसे छै महीने की और देरी है; लेकिन माँ की तरह उसे भी कविता-पाठ का वड़ा शौक है। माँ से सुन कर पुश्किन् की वहुत सी कविताएँ उसने कंठ कर रखी हैं। मैं जव कभी वहाँ जाता, तो वह द्याद्या (चाचा) के पास आ कर वैठ जाता था। अपने वाचालपन से वह द्याद्या को कुछ शव्द सीखने को मजबूर करता था। जव उसे कहा जाता, कि कोई कविता या व्याख्यान सुनाओ तो कहीं से फ़ेल्ट की हैट ढूँढ़ कर सिर पर रख एक कुर्सी पर खड़ा हो जाता। फिर तीन चार व्यक्तियों की उस भारी-भरकम सभा की ओर दाहने, वाएँ और सामने टोपी उतार कर सिर झुकाता और वड़े जोश के साथ कविता-पाठ या व्याख्यान झाड़ने लगता। व्याख्यान में विषय के अनुसार स्वर के चढ़ाव-उतार का वह पूरा ख़याल रखता था। व्याख्यान समाप्त होने के बाद श्रोतृ-मंडली को शांतिपूर्वक सुनने के लिए धन्यवाद दे कुर्सी से उतर आता था।

मैं पूछता था—'अर्काशा, इन्दुस् देश चलोगे?' कहता—'हाँ, और मौसी को लेकर'। मैं कहता—'हाँ, मौसा और मौसी दोनों भारत चलेंगे और उसी समय तुम्हें भी चलना होगा।' एक दिन अर्काशा काग़ज़ पर रंगीन पेंसिल से कुछ लकीरें खींच रहा था। मैंने पूछा—'क्या करते हो?' उत्तर मिला—'तसवीर वनाता हूँ।' 'ले आओ तो!' 'ठहरिए! पूरी करके दिखलाता हूँ।' फिर अर्काशा ने अपनी तसवीर ले आकर हमारे सामने रख दी। ऊपर की ओर उसने हँसुआ-हथौड़ा से अलंकृत एक हवाई जहाज़ वनाया था, और नीचे कुछ सिपाहियों को। व्याख्या करते हुए

कहा—"यह हमारी सोवियत् का हवाई जहाज़ है और यह फासिस्ट सिपाही खड़े हैं। उनके ऊपर सोवियत् विमान बम फेंक रहा है।"
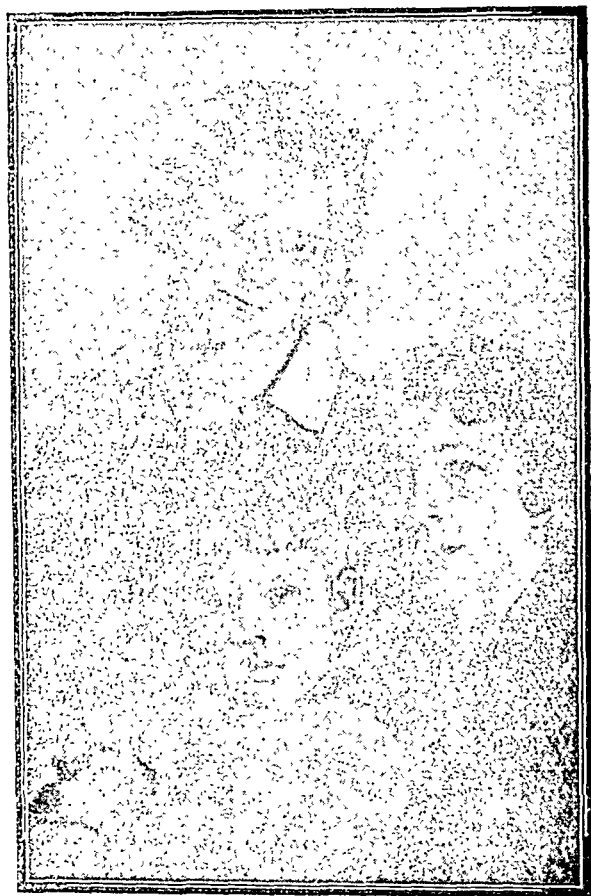
श्रीमती दत्ता (बहन और अर्काशा के साथ)

३० की रात को बच्चों का महोत्सव था। इसलिए अर्काशा ने एक देवदार की हरी शाखा को सवेरे ही से खूब सजाना शुरू किया। चाचा के उपस्थित रहने के लिए खास तौर से आग्रह था। रात को पहुँचने

पर देखा, देवदार की टहनी-टहनी पर नारंगी, काग़ज़ की गुड़ियाँ, पन्नी के लट्टू तथा पचीसों जलती मोमबत्तियाँ टाँगी हुई हैं। वृक्ष के नीचे बर्फ़ जैसे काग़ज़ का लबादा ओढ़े शरद् बाबा डंडे के सहारे खड़े हैं। आज अर्काशा मेहमानों के स्वागत में लगा था। उसकी एक सहेली लड़की भी वहाँ बैठी हुई थी। लड़की की माँ और अर्काशा की माँ तथा मौसी के अतिरिक्त दो तीन दूसरे मेहमान और मेहमानिनें बैठी हुई थीं। अर्काशा ने आज लोगों को एक खास तौर से जोशीला व्याख्यान सुनाया। प्यानो पर कुछ गीत गाये गये। वैसे अर्काशा की सहेली बोलती चालती नहीं थी और जब लोगों ने गूँगी कह कर ताना दिया, तो उसने भी प्यानो पर दो चार हाथ चलाये। दर्शक-मंडली ने अर्काशा को नाचने के लिए उत्तेजित किया। वैसे अर्काशा का नाचने की ओर ज़्यादा झुकाव नहीं है, तो भी वह मेहमानों को खुश करने के लिए तैयार था; लेकिन क्या करता, वहाँ जोड़ी पूरी करने के लिए उसकी सहेली तैयार न थी। लड़कों के लिए कुछ भेंट तथा मिठाई और चायपान के साथ उत्सव समाप्त किया गया।

३१ की मध्यरात्रि को नये वर्ष का उत्सव मनाया गया। नव-वर्ष के उत्सव के लिए सभी जगह छुट्टी थी। नाच-घरों में रात भर स्त्री-पुरुष नाचते रहे। हमारे होटल में भी नाच का विशेष रूप से आयोजन हुआ था। और मुझे भी निमंत्रणपत्र आया था। इसके पहले एक दिन मेरे एक दोस्त ने मुझे नाचने के लिए बुलाया। जब मैंने कहा कि मुझे नाचना नहीं आता, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उनकी समझ में नहीं आता था, कि मेरे ऐसा बहुमुखी आदमी नृत्य-कला से कैसे वंचित रह गया। उन्होंने पूछा—आपने क्यों नाचना नहीं सीखा? मैंने कहा—मैं एक बहुत ग़रीब किसान के घर में पैदा हुआ था। नृत्य और संगीत का सीखना अमीरों और धनियों के ही लिए सुलभ है। ग़रीब किसान के बच्चे के भाग्य में वह कहाँ बदे हैं। मेरे दोस्त, मेरे मज़ाक को नहीं समझ रहे थे। उन्होंने कहा—'तो अच्छा, मैं आपको नाचना सिखाऊँगा।'

मैंने पूछा—'कब से और कैसे ?'

उन्होंने कहा—'मैं किसी जोड़ीदारिन सुन्दरी को ठीक कर नाचने का पाठ शुरू कराऊँगा।' ख़ैरियत हुई कि गुरु से भी अधिक चेले की सुस्ती के कारण नव-वर्ष से पहले नृत्य का एक भी पाठ समाप्त नहीं हो सका, और नृत्य मंडली में शामिल होने की नौबत नहीं आई।

***   ***

३१ दिसम्बर तक हमारा भारत लौटना निश्चित हो चुका था। उस दिन और पहिली तारीख़ को भी तातील होने से हम निर्गमन के वीज़ा के लिए आवेदनपत्र नहीं दे सके। दो तारीख़ को मैंने इन्स्टीट्यूट के सेक्रेटरी को वीज़ा आदि के प्रबंध के लिए कहा। उन्होंने फोन द्वारा वीज़ा-अधिकारी को इसके लिए आदेश कर दिया।

हमारे विभाग की सेक्रेटरी तवारिश् कज़ारोब्स्का इन्स्टीट्यूट से ट्राम द्वारा घंटे भर के रास्ते पर कारख़ाने के मज़दूरों के मुहल्ले में रहती थीं। मैं उस मुहल्ले को ख़ास तौर से देखने के लिए एक दिन उनके साथ वहाँ पहुँचा। चार चार, पाँच पाँच तल्ले के ईंट, सीमेंट और लोहे के इन भव्य प्रासादों को देख कर कौन कह सकता है कि वे मज़दूरों के घर हैं। वस्तुतः मज़दूर शब्द का जो अर्थ पूँजीवादी देशों में है, वही अर्थ सोवियत्-भूमि में नहीं होता। सोवियत् का श्रमिक अपने देश का मालिक है। वह सिर को उन्नत और छाती को तान कर चलता है। कहीं उसको नत-मस्तक और अपमानित नहीं होना पड़ता। वल्कि सोवियत् के सभी श्रेणी के मनुष्यों में उसका स्थान सबसे ऊँचा है। तवारिश् कज़ारोब्स्का जिस मकान में रहती थीं, वहाँ तीन कमरों के लिए एक कोठरी, रसोई और हाथ धोने के लिए थी। बीच में एक कोठरी बन्द आँगन का काम देती थी। रहने का कमरा उस सत्रह रूबल मासिकवाले कमरे से ज़्यादा लम्बा-चौड़ा था। छत और दीवारों को फूल-पत्ती के चित्रों से सजाया गया था। कमरे के भीतर दो मेज़, तीन

अलमारियाँ, चार कुर्सियाँ और एक पलंग पड़ा हुआ था। भीतर बिजली के तीन लैम्प लगे हुए थे। लोला कज़ारोब्स्का एक सुशिक्षित बुद्धि-जीवी महिला हैं; इसलिए उनके कमरे में कोई ख़ास बात की गई हो, यह बात न थी। उनके आस पास और ऊपर नीचेवाले तल्लों के सभी कमरे इसी नमूने के थे। लोला को छोड़ कर बाक़ी सभी रहनेवाले स्त्री-पुरुष पास के कारख़ानों के मज़दूर थे। तवारिश् (कामरेड) लोला के साथ मैं मुहल्ले के स्कूल को देखने गया। सीमेंट की सुन्दर स्वच्छ इन दो तल्ले की भव्य इमारतों को देख कर कोई कह नहीं सकता, कि यह प्राइमरी स्कूल है। दो तरफ़ स्कूल के कमरों की पाँती है, और बीच में रसोईघर और भोजनशाला। हर एक बच्चे को दोपहर का भोजन स्कूल से मिलता है, इसीलिए हर स्कूल के साथ रसोई और भोजनशाला होती है। वोली-बाल फुटबाल तथा दूसरी तरह के खेलों के लिए स्कूल के सामने और पिछवाड़े मैदान पड़ा हुआ है। आजकल वह बर्फ़ से ढँका हुआ था और उसपर लड़के स्केटिंग कर रहे थे। गर्मी के दिनों में बर्फ़ के पिघल जाने पर यहाँ हरी हरी घास उग आयेगी। और उस वक़्त लड़के हरे क्रीड़ाक्षेत्र में फुटबाल या दूसरे गर्मी के खेल खेलते दीख पड़ेंगे। स्कूल के बाद हमने मुहल्ले के क्लब और सिनेमाघर को भी देखा। दूसरे मुल्क में तो इन मकानों पर ही लाख डेढ़ लाख खर्च हो जाते। पूँजीवादी देशों के मज़दूर क्या ऐसे मकानों का स्वप्न भी देख सकते हैं? सोवियत्-जन-नायक समझते हैं कि खेल-कूद तथा मनबहलाव के दूसरे साधन (नृत्य, संगीत, स्वाध्याय आदि) मनुष्य के स्वास्थ्य और दिल लगाकर काम करने की योग्यता सम्पादन करने के लिए उतने ही आवश्यक हैं जितनी कि काम करके थके आदमी के लिए निद्रा; और इसीलिए हर जगह इन चीज़ों का पूरा प्रबंध किया गया है।

* * * * * *

९ जनवरी तक हम निश्चिन्त हो प्रतीक्षा कर रहे थे कि वीज़ा अब

आ जाता है; लेकिन उस दिन फोन करने पर वीज़ा-कार्यालय ने सूचित किया—'कोई परवा नहीं, पन्द्रह तारीख़ तक आप रह सकते हैं'।

मैंने कहा—'मैं जाने के लिए तैयार बैठा हूँ और सोच रहा था कि वीज़ा अब आ जायगा और आप कह रहे हैं—कोई परवा नहीं, १५ तारीख़ तक आप और ठहर सकते हैं?'

जवाब मिला—'वीज़ा लेने के लिए तो छपे फार्म पर आवेदनपत्र देना होता है। आपने कब आवेदनपत्र दिया? हमने तो समझा कि आप कुछ दिन और रहना चाहते हैं।'

ख़ैर बहुत कहना सुनना बेफ़ायदा था। जा कर हम वीज़ा के लिए आवेदनपत्र दे आये और आवेदनपत्र के ख़ाने में यह भी भर दिया, कि तेर्मिज़् के रास्ते हम अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहते हैं।

१२ जनवरी को स्मोल्नी देखने गये। यही वह स्थान है, जहाँ बैठ कर लेनिन् ने लाल-क्रान्ति का आरंभ किया और क्रान्ति-युद्ध के आरंभिक दिनों में यहीं संचालन-केन्द्र रहा। अब भी वह कमरा मौजूद है, जहाँ रहकर, लेनिन् रात दिन क्रान्ति की सफलता में चिन्तित रहा करते थे। क्रान्ति के पहले रूस के राजा-बाबुओं और सेठ-साहूकारों की लड़कियों का यह विद्यालय था। पहले पहल इस इमारत और पास के पाँच सुन्दर गिर्जाघरों को सम्राज्ञी कैथराइन ने ईसाई साधुनियों के लिए बनाया था। लेकिन पीछे यह इमारत विद्यालय के रूप में परिणत कर दी गई। ये गिर्जा पत्थर के बड़े सुन्दर बनें हुए हैं। लेकिन इनसे भी सुन्दर सुन्दर गिर्जे लेनिन्ग्राद् में अपने भाग्य के लिए झंख रहे हैं; फिर इनकी परवा कौन करे। वर्षों से मरम्मत न होने से कितने ही शीशे और दरवाजे टूटफूट गये हैं। बड़े गिर्जे के हाल को कुछ दिनों तक सिनेमाघर बनाया गया था। यदि वह बेचारा सिनेमाघर ही रहता, तो भी उसकी मरम्मत और देख-भाल रहती, और जीवित रहने का भरोसा होता। अब तो जैसी अवस्था है, उससे मालूम होता है, कि धीरे धीरे इसे धराशायी होना पड़ेगा।

स्मोल्नी को दिखलाने में तवारिश् कज़ारोव्स्का ने मेरी सहायता की थी। मेरे लिए क्रान्ति का यह प्रथम संचालन-केन्द्र एक बड़ा तीर्थ था। दर-असल मैं वहाँ वैसे ही भावपूर्ण हृदय से गया था, जैसे १९३२ में लन्दन में कार्ल मार्क्स की समाधि पर फूल चढ़ाने। कार्ल मार्क्स ने यदि दीर्घ-चिन्तना के बाद संसार के दलितों को विज्ञान-सम्मत मौलिक साम्यवाद का सन्देश दिया, तो लेनिन् ने उस वैज्ञानिक साम्यवाद को धरती की ठोस चीज़ बनाने के लिए असाधारण कौशलपूर्वक लाल-क्रान्ति की अभूतपूर्व सफलता में कृतकार्यता प्राप्त की। साम्यवाद के सम्बन्ध में लेनिन् का स्थान मार्क्स से कम नहीं है।

तवारिश् कज़ारोव्स्का बहुत प्रतिभाशालिनी महिला हैं। उनके पिता ज़ारशाही के वक़्त फौजी अफ़सरों के विद्यालय में गणित के अध्यापक थे; और उस स्थान से भी क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करते थे। क्रान्ति के समय वह उसमें सम्मिलित हो गए। उनके तीन बेटों में दो लाल-सेना के अफ़सर हैं। तीसरा पढ़ रहा है। लोला कज़ारोव्स्का क्रान्ति के समय काफ़ी सयानी थीं और उन्हें ज़ारशाही के अत्याचार और मजदूरों की हीन दशा का पूरा स्मरण है। यद्यपि उस समय उनके घर में दाई और नौकर चाकर थे, तथा अब उनको अपना काम खुद करना पड़ता है। लेकिन उस समय के जीवन से आज के जीवन ही को वह अच्छा पसन्द करेंगी। वह एक तीक्ष्णबुद्धिसम्पन्न महिला ही नहीं हैं, बल्कि उनका स्वभाव बहुत मधुर और ज्ञान-पिपासा बहुत तीव्र है। उन्होंने बहुत शौक से संस्कृत पढ़ना शुरू किया था, और मुझे रूसी सीखने में मदद दे रही थीं। लेकिन अकस्मात् जो दूसरा निश्चय करना पड़ा, उससे उन्हें जरूर बहुत अफ़सोस हुआ। उन्होंने चलते वक़्त कोई वाक्य लिखने के लिए कहा। मुझे उस वक़्त नैषध का यह श्लोकखंड याद आ गया—

"स्मरणीया वयं वयः"

४—सोवियत्-संघ की सम्पत्ति

सोवियत्-संघ पृथ्वी के स्थलभाग का छठा हिस्सा है। संसार में क्षेत्र-फल के लिहाज़ से इतना बड़ा राष्ट्र कोई नहीं है। अगर भारत और चीन जैसे परतंत्र और अर्द्ध-परतंत्र देशों को अलग कर दिया जाय, तो दुनिया में जनसंख्या के लिहाज़ से भी वह सब से बड़ा देश है। इसका क्षेत्रफल २ करोड़ १३ लाख वर्ग किलोमीतर (८२ लाख वर्गमील) है। सीमा का घेरा ६५ हज़ार किलोमीतर जिसमें $\frac{2}{3}$ समुद्र तट और $\frac{1}{3}$ खुश्की है। सोवियत्-संघ संयुक्त-राज्य अमेरिका से ढाई गुना और जर्मनी से ४० गुना-भारत (१५६३२६२ वर्गमील) से ७ गुना, युक्त प्रदेश से ३२ गुना बड़ा है। इसकी लम्बाई पूर्व पश्चिम २६° देशान्तर से १९०° देशान्तर तक और चौड़ाई उत्तर दक्षिण ३५° अक्षांश से ७७·३७° अक्षांश है। यदि एक रेल गाड़ी ६०० मील रोज़ के हिसाब से चले तो उसकी पूर्वी सीमा से पश्चिमी सीमा तक पहुँचने में १० दिन लगेंगे। सोवियत् की पूर्वी सीमा पर पश्चिमी सीमा की अपेक्षा सूर्य ९ घंटा पहले उगता है। ब्रिटिश साम्राज्य आकार में सोवियत् की अपेक्षा बड़ा है लेकिन वह लगातार पृथ्वी के एक हिस्से में फैला नहीं है; और आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से वह वैसा ठोस राष्ट्र नहीं है, जैसा कि सोवियत्-संघ।

सोवियत्-संघ में ११ संघ प्रजातंत्र हैं जिनके सब के अधिकार बराबर हैं। सोवियत्-संघ खेती के लिहाज़ से दुनिया में अव्वल है—आबाद भूमि २ अरब २३ करोड़ ९० लाख हेक्टर (हे०=२$\frac{1}{2}$ एकड़) है, जिसमें २ करोड़ एकड़ बाग़-बग़ीचे हैं।

कोयले का ज़खीरा १६ खरब ५४ अरब टन हैं जो कि संसार का $\frac{1}{5}$, है। संयुक्त-राज्य अमेरिका में ८० अरब टन कोयले का ज़खीरा है।

खनिज-द्रव्य सोवियत् की भूमि में ३ नील ५५ खरब ५७ अरब टन हैं; जो कि दुनिया के ज़ख़ीरे का ५४·८०° है। और इस प्रकार खनिज में सोवियत् का स्थान प्रथम है।

लोहे का ज़ख़ीरा १० अरब ६१ करोड़ २० लाख टन है जो कि संसार का ५२ फी सदी है और इसमें भी सोवियत् का नम्बर अव्वल है। मंगानीज़ का ¼ सोवियत् में है। सोने की उपज में सोवियत् का नंबर दूसरा है। और तृतीय पंच-वार्षिक योजना के समाप्त होने तक वह संयुक्त-राज्य अमेरिका से आगे बढ़ जायगा।

एपिटाइट (खाद) का ज़ख़ीरा २ अरब टन सोवियत् के पास है। फास्फोरस् (खाद) ६० सैकड़ा सोवियत्-भूमि में है। पोटाश १८ अरब ३७ करोड़ टन इसके पास है। ऊपर जो हिसाब लगाया गया है, वह सोवियत् की सारी भूमि की पैमाइश का परिणाम नहीं है। अभी तक ३५ सैकड़ा भूमि ही का भूगर्भ-शास्त्रीय नाप हो चुका है। ६५ सैकड़े का नाप हो रहा है। सब मिलाने पर सोवियत प्रजातंत्र ऊपर के लिखे सभी खनिज पदार्थों के ज़ख़ीरे में अव्वल हो जायगा।

समूरी चर्म तथा दूसरी पोस्तीन १९३५ ई० में १ अरब ७४ करोड़ ६० लाख रूबल अर्थात् प्रायः ८० करोड़ रुपये का तैयार हुआ है।

उसी साल १ करोड़ ३५ लाख ४० हज़ार टन मछली निकाली गई।

जनसंख्या

१ जनवरी १९३३ की जन-गणना के अनुसार सोवियत्-संघ में साढ़े सोलह क़रोड़ आदमी बसते थे जिनमें ४६ सैकड़ा लोग १९१७ की क्रान्ति के बाद पैदा हुए। ज़ारशाही के ज़माने में प्रति वर्ष १००० पर ४४ पैदा होते थे और २७ मरते थे। इस प्रकार हर साल हज़ार पर १७ की वृद्धि थी। सोवियत्-शासन ने एक तरफ़ बीमारियों की चिकित्सा और स्वास्थ्यरक्षा की ओर ध्यान दिया और दूसरी ओर लोगों की ग़रीबी और भुखमरी को

दूर किया। इसके कारण इस वक्त हर साल प्रति हज़ार २४, यानी दसवें साल २४ सैकड़ा या प्रायः $\frac{१}{४}$ की वृद्धि हो रही है। हिन्दुस्तान में १९२१ से १९३१ के १० वर्षों में तो $\frac{१}{११}$ ही की बढ़ती हुई थी। हर साल सोवियत-संघ में ३० लाख आदमी बढ़ रहे हैं। १९३८ के शुरू में वहाँ की आवादी १८ करोड़ से कम नहीं है। यूरोपीय देशों में जनसंख्या प्रति वर्ष प्रति हज़ार ५ सैकड़ा ही वढ़ती है।

सोवियत् जनसंख्या संसार की जनसंख्या का $\frac{१}{१२}$ है। आवादी प्रति वर्ग-किलोमीतर ८ है। लेनिन्ग्राद्, कज़ान्, सारातोफ़्, रस्तोव्-दोन ये इलाके सब से ज़्यादा घने बसे हुए हैं और वहाँ आबादी प्रति वर्ग-किलोमीतर ४० पड़ती है।

खेती

खेती की ज़मीन का परिमाण निम्न प्रकार था—

सन्	एकड़	लाख
१९१३	२६,२५	,,
१९२०	२३,१७	,,
१९२८	२८,२५	,,
१९३७	३४,७५	,,

जिनमें कपास की उपज निम्न प्रकार थी—

सन्	एकड़	हज़ार
१९१३	१४,७०	,,
१९२०	२,४५	,,
१९२८	२४,३०	,,
१९३७	५२,२५	,,

खेती के लिए इस्तेमाल होनेवाली मशीनों और ट्रैक्टरों आदि की उन्नति भी इसी प्रकार शीघ्रता से हुई; और १९३७ के अन्त में ४॥ लाख ट्रैक्टर,

१ लाख २० हज़ार कम्बाइन् और ५६१२ मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन थे। कृषि के लिए बिजली के स्टेशन निम्न प्रकार थे—

१९२८ ई०	१९३४ ई०	१९३५ ई०
६५४	१८७४	२७७४

वैज्ञानिक खाद का प्रयोग निम्न प्रकार हुआ—

१९३२ ई०	१९३६ ई०	१९३७ ई०
११११ हज़ार टन	३०८३ हज़ार टन	४७२८ हज़ार टन

सोव्-ख़ोज़—१९३६ में सोवियत्-संघ में ४१३७ सोव्खोज़ (सरकारी खेती) १२७० लाख एकड़ भूमि जोतते थे। इनमें २१२७ हजार व्यक्ति काम करते थे। उनके पास १,८७,००० ट्रैक्टर, ८४,७०० कंबाइन्, ५०१४ हज़ार ढोर, ४०६० हज़ार सुअर, १०६९९ हज़ार भेड़-बकरी थीं। उन्होंने १०लाख बुशल् (१ बुशल्=१६ सेर) या ४ लाख मन अनाज पैदा किया।

चावल सोवियत् के बहुत कम भागों में पैदा होता था। इधर चावल की खेती में भी बहुत तरक्की हुई है। लिसेंको की बीज-संस्कार प्रक्रिया ने—जिससे कि फसल दो हफ़्ते पहले तैयार हो जाती है—चावल की फसल का क्षेत्र ठंढी जगहों तक पहुँचा दिया है। १९३७ में प्रति एकड़ ३८ बुशल् (१४ मन ८ सेर) चावल की औसत रही, जो कि युद्ध के पहले की औसत से दूनी है।

स्थान	कुल एकड़	बुशल् प्रति एकड़
क्रासोदर	६२,५००	६७ (२६ मन ३२ सेर)
वोरोशिलोफ़् (चेर्नियास्कं) दमित्रोफ़्		८० (३२ मन)
रोस्तोफ़्		९० (कुछ में १२०=४८ मन)

कोल्-ख़ोज़—१९३७ में सोवियत् के कोल्खोज़ों (पंचायती खेती) में एक लाख ट्रैक्टर-ड्राइवर, ७० हज़ार शोफर, दो लाख कम्बाइन्-मिस्त्री

और २० लाख दूसरे कमकर थे। ५५ हज़ार कोल्खोज़ों में अपने क्लब थे और उनमें ३८ हज़ार वाचनालय थे। १९३६ में ८० हज़ार कोल्खोज़ों में ३५ लाख बच्चों के लिए बच्चाख़ाने का इन्तज़ाम था।

आय-व्यय

१९३७ में सोवियत्-संघ की आय ९८ अरब ६ करोड़ ९५ लाख रूबल (प्राय: ४८ अरब रुपये) और व्यय ९७ अरब ११ करोड़ ९५ लाख रूबल (प्राय: ४७ अरब रुपया) था। इसमें टैक्स से आय २ अरब ६४ करोड़ ५० लाख और उद्योग से ८३ अरब आय हुई।

आय के मार्ग १९१३ ई० से १९३७ ई० में निम्न प्रकार से बढ़े हैं—

	१९१३ ई०	१९३७ ई०
आय	१००	४१०
इंजीनियरिंग	१००	२८००
खेती की मशीन	०	५६१७
स्वास्थ्य-व्यय	१००	५१८८
विद्यार्थी-संख्या	१००	४७०
पुस्तक-प्रकाशन	१००	६६४

भिन्न भिन्न चीज़ों की उपज १९१३ से १९३७ तक किस प्रकार बढ़ी है, उसका लेखा यहाँ दिया जाता है।—

	१९१३	१९२८	१९३२	१९३७
बिजली (किलो-वाट् घंटा)	१९४५	५००७	१३५४०	४०५००

	१९१३ ई०	१९२७–२८ ई०	१९३२ ई०	१९३६ ई०
पेट्रोल (करोड़ टन)	९२३४१	११७४९२०	२२३१८७०	२९१३९३०
कोयला (क० ट०)	२९११७००	३५५१०००	६४६६४००	१५०१५०००

	'१३ ई०	'२७-२८ ई०	'३२ ई०	१९३६ ई०
कच्चा लोहा (हज़ार टन)	४२१६	३२८२	६१६१	१४३९८
फ़ौलाद (हज़ार टन)	४२३१	४२५०	५९२७	१६३२५
ताँबा (टन)	८८०६००	२७८८१००		

	१९१३ ई०	१९३६ ई०
ताँबा (सिल)	३११०० टन	१००००० टन
ताँबे का तार	१६७०० टन	८६३०० टन
ताँबा (केबिल)	०	२८४१०० टन

	१९३२ ई०	१९३७ ई०
जूता	८२० लाख जोड़ा	१८०० लाख जोड़ा
	प्रथम पंच-वार्षिक	द्वितीय पंच-वार्षिक
सर्वजनोपयोगी माल	७·८ अरब (रूबल)	१९·५ अरब (रूबल)

	१९२७ ई०	१९३६ ई०	१९३७ ई०
मछली (लाख क्वाटर)	९५	१६२	१८०

१९२७ में मछली की पैदावार में सोवियत् का नंबर पाँचवाँ था। १९३६ में संसार में दूसरा नंबर हुआ। सारे सोवियत् में खाने के लायक ३१० प्रकार की मछलियाँ मारी जाती हैं, जिनमें १९ जीवित ही एक जगह से दूसरी जगह भेजी जाती हैं।

टिन में बन्द खाद्य, फल और दूध की भी माँग इधर बहुत बढ़ गई है; और इसके लिए सोवियत् ने बड़े बड़े कारख़ाने खोल रखे हैं। यहाँ उनका कुछ हिसाब दिया जाता है—

	१९३६	१९३७
खाद्य (टिन)	११ अरब	१४ अरब
फल (टिन)	२९८० लाख	

	१६३२	१६३४	१६३५	१६३६
दूध (लाख टिन)	४०	८६	१६०	२५४

	१६३२	१६३३	१६३४	१६३५	१६३६
मक्खन (टन)	७१६००	१२४०००	१३८०००	१५४०००	२०००००

	१६२७	१६३६	१६३७
पनीर (हज़ार क्वार्ट)	७०००	२५०००	३४०००

१६३३ में सोवियत् चीनी पैदा करने में तीसरे नंवर पर था। १६३५ में संसार में अव्वल हो गया।

	१६२७	१६३६	१६३७
चीनी (लाख टन) ..	१६	३०	४०

क्रान्ति से पहले रूस में चाय वहुत कम पैदा होती थी। अधिकांश चाय वाहर के देशों से आती थी। पंच-वार्षिक-योजनाओं में इसकी ओर विशेष ध्यान दिया गया; और उसका परिणाम निम्न प्रकार से देखा जाता है।

	क्रान्ति से पूर्व	१६३५	१६३७
चाय (कारख़ाने)	५	२८	३६
चाय (टन) ..	१३०	..	१६,०००

सिगरेट सोवियत् में वहुत पीया जाता है। अमेरिका—जहाँ कि हरएक औरत सिगरेट पीना अपना फ़र्ज़ समझती है—सिगरेट वनाने में अव्वल है। यद्यपि १६३६ में सोवियत् ने ८६ अरव सिगरेट बनाये, तो भी उसका नंवर अभी दूसरा ही है। और शायद जव तक औरतें मदद देने के लिए मैदान में न आयेंगी, तव तक दूसरा ही रहेगा।

वेतन

सोवियत्-संघ में क्रान्ति के वाद जो आर्थिक उन्नति हुई है, उससे लोगों का औसत वेतन वहुत वढ़ गया है। १६१३ की जुलाई में कारख़ाने के

और सेठों में उसकी क़दर थी। क्रान्ति के बाद जिस तरह शासन दूसरी श्रेणी के हाथ में चला गया, उसी तरह नाट्यशालाओं के दर्शकों में भी परिवर्तन हुआ। कहाँ राजा-महाराजा दर्शक-मंच की शोभा बढ़ाते थे और कहाँ मैले-कुचैले पत्थर जैसे कड़े हाथोंवाले मज़दूर उन्हीं मंचों पर बेपरवाई से बैठने लगे। मास्कोविन् देश से भागा नहीं लेकिन तब भी आरंभिक वर्षों में वह भौंचक सा हो गया था। वह समझ नहीं सकता था, कि ये अशिक्षित और रूखे लोग उसकी कला की क्या दाद देंगे। लेकिन उसने देखा कि क्रान्ति ने अपनी कला को विकसित करने के लिए उसे और भी अधिक मौक़ा दिया है। जहाँ पहलेवाले मालिक हमेशा ग़ुलामों की तरह उससे ख़ुशामद की आशा रखते थे, दिल में उसकी नीच-कुलीनता आदि के प्रति घृणा करते थे, वहाँ आज के मालिक श्रमिक उसे बिलकुल बराबर समझते हैं। यही नहीं, बल्कि छोटा बन कर ख़ुशामद करने को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। मास्कोविन् ने परिस्थिति की अनुकूलता को समझ लिया और उसने अपनी कला को सोवियत्-नवनिर्माण का एक भाग बना दिया। आज वह सोवियत् का अत्यन्त सम्माननीय अभिनेता है। मास्को-आर्ट-थियेटर और मास्कोविन् नाट्यजगत में एक समझे जाते हैं। अब की बार इवान् मास्कोविन् पार्लियामेंट का मेंबर चुना गया है।

१३—सोवियत्-संग्रहालय

विज्ञान के बहुत से आविष्कार कितने ही मुल्कों में तमाशे की चीजें हैं। हिन्दुस्तान में भी युनिवर्सिटी कालेजों में साइंस (रसायन और भौतिकी), कृषि-कालेजों में कृषि-विज्ञान और इम्पीरियल एग्रिकल्चरल् इंस्टीट्यूट जैसी संस्थाओं में कृषि और पशुपालन-संबंधी अन्वेषण इसी तरह के तमाशे हैं। इन वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रयोग से तो देश की दरिद्रता कब की दूर हो जानी चाहिए थी, लेकिन उनका परिणाम क्या देखा जाता है? यही कि कृषि और उद्योग के नाम पर मोटी मोटी तनख्वाह दे कर कुछ रिसर्च-स्कालर, कुछ प्रोफ़ेसर, कुछ डाइरेक्टर और डिप्टी डाइरेक्टर बना कर बैठा दिये गये। उनको बँधी हुई तनख्वाह मिलने लगी। ज़िन्दगी की तरफ़ से उन्हें बेफ़िक्री हुई। डिपार्टमेंट को रोज़ का काम दिखलाना ज़रूरी है और उसके लिए मुफ़्त की कागज़-स्याही मिल ही रही है, इसलिए अपने दौरे का स्थान और मील गिना दिये। प्रयोगशाला में जो दो-चार कीड़े-मकोड़े या मेंढक मारे उनको भर दिया। दो-चार सुझाव रख दिये और यह जानते हुए कि हिन्दुस्तान में इनपर कभी अमल नहीं होगा। बस, कृषि की उन्नति, गो-जाति का विकास कागज़ पर हो गया और उनका काम ख़तम। इस कहने का मतलब यह नहीं कि विज्ञान झूठा है, वैज्ञानिक कार्यकर्ता बिल्कुल निकम्मे हैं। बल्कि असली दोष है, उन चीज़ों का उपयोग न होना। हमारे दैनिक कार्य में जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बाधाएँ हैं, उनको दूर करने से सभी डरते हैं।

सोवियत् भूमि में विज्ञान मनुष्य के लिए इसी पृथ्वी पर स्वर्ग बनाने का काम कर रहा है; और इसी दृष्टि से हर चीज़ का मूल्य वहाँ आँका जाता है।

दुनिया में किसी देश में इतनी संख्या में संग्रहालय (म्यूज़ियम) नहीं हैं, जितने कि सोवियत्-भूमि में। ऐतिहासिक, चित्रकला, नाटक, संगीत, साहित्य, विज्ञान आदि के संबंध के अलग अलग म्यूज़ियम सैकड़ों नहीं, हज़ारों की तादाद में हैं। कोई शहर ऐसा नहीं, कोई ज़िला या प्रान्त ऐसा नहीं जिसमें स्थानीय म्यूज़ियम न हों। और विशेष बात यह है कि वहाँ के म्यूज़ियमों में लोग अतवार के दो घंटे काटने के लिए नहीं जाया करते! जिस विषय के भी म्यूज़ियम में जाना हो, आपको उस विषय का जानकार पथ-प्रदर्शक मिलेगा और वह हर एक चीज़ को ख़ूब अच्छी तरह समझाकर आपको बतलायेगा। इस प्रकार वहाँ से आप कुछ सीख कर आयँगे। म्यूज़ियमों का कितना अधिक प्रचार है, और गवर्नमेंट का ध्यान उस ओर कितना है, इसे आप मास्को के म्यूज़ियमों की इस सूची से जान सकते हैं—

१—इतिहास-सम्बन्धी

(१) केन्द्रीय लेनिन्-म्यूज़ियम
(२) क्रान्ति-म्यूज़ियम
(३) जेलों में बन्द और विदेशों में निर्वासित बोल्शेविक-म्यूज़ियम
(४) ख़ुफ़िया क्रान्तिकारी छापाख़ानों का म्यूज़ियम
(५) क्रास्नाया प्रेस्न्या ज़िले का क्रान्ति-इतिहास-म्यूज़ियम
(६) लाल-सेना केन्द्रीय म्यूज़ियम
(७) सरकारी इतिहास म्यूज़ियम, (इसकी शाखायें भी हैं)
(८) भूतपूर्व नवोदेवीची साधुनी-मठ-म्यूज़ियम
(९) भूतपूर्व पोकरोव्स्की गिर्जा-म्यूज़ियम
(१०) सत्रहवीं सदी के सामन्तों के जीवन का म्यूज़ियम

(११) स०स०स०र० की जातियों का म्यूज़ियम
(१२) धर्म-विरोधी केन्द्रीय म्यूज़ियम

२—ललित-कला—

(१३) त्रेत्याकोफ़् राजकीय चित्रशाला
(१४) आधुनिक पश्चिमी कला का म्यूज़ियम
(१५) पुश्किन् ललित-कला राजकीय म्यूज़ियम
(१६) वस्नेत्सोफ़् चित्र प्रदर्शिनी
(१७) गोलुकिना तक्षणकला म्यूज़ियम और स्टूडियो
(१८) पूर्वी सभ्यताओं का म्यूज़ियम
(१९) अखिल-संघ वास्तु-शास्त्री एकेडेमी का म्यूज़ियम

३—नाटक और संगीत

(२०) बख़्रुशिन् नाटकीय केन्द्रीय म्यूज़ियम
(२१) गोर्की मास्को कला नाटक म्यूज़ियम
(२२) स्क्रापिन् म्यूज़ियम

४—साहित्य—

(२३) राजकीय साहित्य म्यूज़ियम
(२४) दोस्तोयेब्स्की म्यूज़ियम
(२५) राजकीय ताल्स्त्वा म्यूज़ियम
(२६) ल्यू ताल्स्त्वा प्रासाद म्यूज़ियम
(२७) मायाकोव्स्की म्यूज़ियम और पुस्तकालय वाच-नालय

५—प्रकृति-विज्ञान—

(२८) प्लेनोटोरियम् (नक्षत्र-भवन)
(२९) राजकीय डार्विनीय म्यूज़ियम
(३०) तिमिर्याज़ेंफ़् बायोलोजी (जीवनशास्त्र) म्यूज़ियम

(३१) राजकीय केन्द्रीय प्राणिशास्त्र म्यूज़ियम
(३२) राजकीय मानवशास्त्र म्यूज़ियम

६—शिक्षा—

(३३) राजकीय शिशु पुस्तक म्यूज़ियम
(३४) शिशु रेखांकन (ड्राइंग) की स्थायी प्रदर्शिनी

७—शिशु और प्रसूता की सुरक्षा—

(३५) शिशु और प्रसूता की सुरक्षा के केन्द्रीय अन्वेषणालय की प्रदर्शिनी

८—समाजवादी अर्थशास्त्र और टेक्नौलोजी (यंत्रशास्त्र)

(३६) राजकीय पोलीटेक्निक् (नाना यंत्र) म्यूज़ियम
(३७) सोवियत् निर्यात केन्द्रीय म्यूज़ियम
(३८) भवन-निर्माण उद्योग की अखिल-संघ प्रदर्शिनी
(३९) नगर म्यूज़ियम
(४०) कला दस्तकारी म्यूज़ियम
(४१) फ्रुंज़े विमान-संचालन-म्यूज़ियम
(४२) घोड़े की नसल संबंधी म्यूज़ियम

*** ***

पोलीटेक्निक म्यूज़ियम—१९३७ म इस म्यूज़ियम म १० लाख आदमी देखने गये। यहाँ के चार्ट, मॉडल (नमूने) और संग्रहों की संख्या १० हज़ार है। और सबसे बड़ी विशेषता इस म्यूज़ियम में यह है, कि सारे सोवियत् के नगरों और ग्रामों में, साम्यवादी नवनिर्माण ने जिन उद्योगों की वृद्धि और पंचायती खेतियों और मशीनों के प्रयोग से युगान्तर स्थापित कर दिया है, उन सब को आप इस म्यूज़ियम में देख सकते हैं।

कहने को तो यह म्यूज़ियम १८७२ ई० में खोला गया था, लेकिन उस समय के म्यूज़ियम और आज के म्यूज़ियम में ज़मीन आसमान का

अन्तर है। उस वक़्त यह ज़ारशाही के प्रति भय और सन्मान के प्रचार का साधन समझा गया था। प्रदर्शित वस्तुओं में महान् पीतर तथा तत्कालीन ज़ार के पैरों के नाप के दो जोड़े जूते बड़े अभिमान के साथ दिखाये गये थे। थोड़े से कपड़े, कुछ ईसाईधर्म-सम्बन्धी पताकाएँ और चित्र थे। १८७२ में १८२८ आदमी म्यूज़ियम देखने आये थे।

आजकल यह म्यूज़ियम प्रदर्शिनीय चीज़ों को ही नहीं दिखाता बल्कि उसके झलकानेवाले नमूने, तस्वीरें, नक़शे, पंचवार्षिक योजनाओं में स्थापित उद्योगों का जन्म और विकास बतलाते हैं। साथ ही यह म्यूज़ियम अपने वैज्ञानिकों की सहायता से देश में बड़े विस्तार के साथ वैज्ञानिक और यंत्र-संबंधी खोज का काम करता है। १९३७ में म्यूज़ियम पर ४० लाख रूबल ख़र्च हुआ था, जिसमें १२ लाख वैज्ञानिक अन्वेषण पर।

पथप्रदर्शक पहले दर्शक को जिस कमरे में ले जाता है, उसके बीचो-बीच एक धातुस्तंभ पर भावपूर्ण दो तरुण स्त्री-पुरुष मूर्ति है। पुरुष के हाथ में हथौड़ा और स्त्री के हाथ में हँसुआ। अपने एक हाथ को ऊपर उठाकर उन्होंने मिला लिया है। और हँसुए-हथौड़े वाले हाथ ऊपर आसमान में फैले हुए हैं। उनके सारे शरीर, मुख-मुद्रा से उत्साह और शक्ति का परिचय मिलता है। हँसुआ खेती को सूचित करता है और हथौड़ा उद्योग को। क़मकर और किसान के मेल ने सोवियत्-शासन का निर्माण किया है; उसी भाव को इस मूर्ति में दिखाया गया है। दीवार के ऊपर सोवियत् भूमि का एक बहुत विशाल नक़शा है। पथ-प्रदर्शक (अंग्रेज़ी, जर्मन, फ़्रेंच जाननेवाले भी मौजूद हैं), आपका ध्यान नक़शे की ओर आकर्षित करता है। फिर बिजली के स्विच् को दबाता है। नक़शे पर कई जगह रोशनी हो जाती है। रोशनी में कोई लाल है, कोई पीली, कोई दूसरे रंग की है। पथ-प्रदर्शक बतलाता है—देखिए, क्रान्ति से पहले इन्हीं थोड़ी सी जगहों में—जो कि यूरोप के थोड़े से ही हिस्से में हैं—लोहे-कोयले के कारखाने बिजली
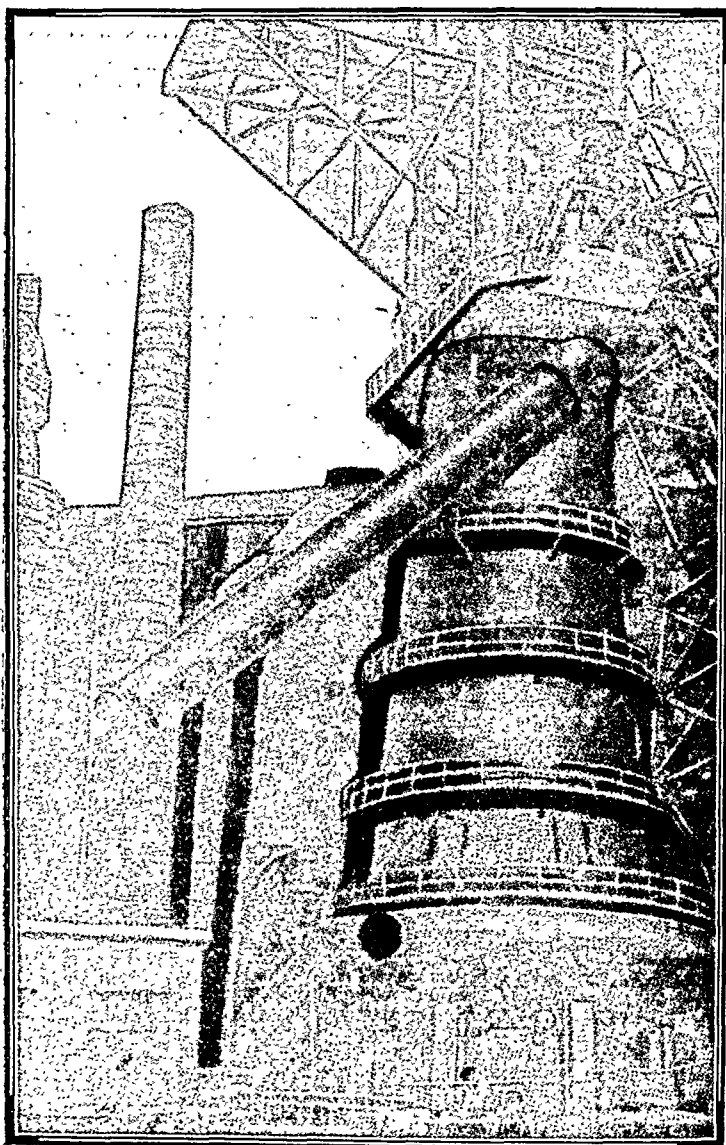
पोलिटेक्निक् म्यूजियम में एक भट्ठे का नमूना

के स्टेशन आदि थे। फिर वह दूसरी स्विच् दबाता है और बतलाता है—क्रान्ति के बाद गृहयुद्ध के फलस्वरूप इन कारखानों में भी बहुत से बेकार हो गये थे। कैसे साम्यवादियों ने लेनिन् के नेतृत्व में पुर्ननिर्माण का काम आरम्भ किया। कैसे अभी वह पुर्ननिर्माण के काम में थोड़ी ही दूर अग्रसर हो पाये थे, और लेनिन् की योजना—सारे देश में बिजली का सार्वजनिक प्रचार—अभी कागज़ से धरती पर पहुँची ही थी कि १९२४ में उनका देहान्त हो गया। फिर स्विच् दबा कर कुछ नये आलोकों से आलोकित स्थान को दिखलाते हुए वह बतलाता है—स्तालिन् के नेतृत्व में सोवियत्संघ ने पुर्ननिर्माण का काम १९२७ में खतम कर दिया। सभी उद्योगों में देश उस समय उस अवस्था में पहुँच गया, जिसमें कि वह १९१३ में था।

अब उसका स्विच् दबाना आपके ऊपर जादू की तरह असर करने लगेगा। जहाँ पहले इस बड़े चित्रपट का एक छोटा सा कोना, वह भी कमज़ोर टिमटिमाते बल्बों (विद्युत-प्रदीपों) से आलोकित हो रहा था, वहाँ अब तेज़ रोशनीवाले बल्ब बहुत दूर तक फैले आपको मिलेंगे। उसमें आपको मग्नीतोगोर्स्क के विशाल लोहे के कारखाने का पता लगेगा। आप स्तालिन्ग्राद् के भारी ट्रैक्टर के कारखाने को देखेंगे। नई नई कपड़े की मिलों, तेल की खानों तथा दूसरी चीज़ों को पायेंगे। हाँ, आपको यह ध्यान रखना होगा कि लाल बल्ब बहुमूल्य पत्थरों (माणिक, पुखराज आदि) को सूचित करते हैं। पीले बल्ब सोने को। इसी तरह दूसरे रंग दूसरी चीज़ों को सूचित करते हैं।

प्रथम पंचवार्षिक योजना में आप देखेंगे कि प्रकाश दूर तक में प्रकट हुआ है; लेकिन अब भी उसका अधिकांश भाग सोवियत् के यूरोपीय भाग में है। अब द्वितीय पंचवार्षिक योजना की स्विच् दबाई गई। आलोक-क्षेत्र और भी बढ़ गया। अब सुदूर सिबेरिया ही नहीं, प्रशान्त महासागर के उदर में अवस्थित सखालिन् और उत्तरी अमेरिका के पड़ोसी कम्चत्स्का में भी दीप दिखलाई दे रहे हैं। पथ-प्रदर्शक प्रथम पंचवार्षिक से द्वितीय

पंचवार्षिक के भेद को दिखलाने के लिए जल्दी जल्दी दोनों स्विचों को बारी बारी से बुझायेगा और जलायेगा। अब बिना उसके कहे आप समझ सकते हैं कि सोवियत् का उद्योग-धंधा प्रथम पंचवार्षिक से द्वितीय पंचवार्षिक में कितनी दूर तक फैल गया। द्वितीय पंचवार्षिक में उद्योग, मध्य-एशिया में हिन्दुस्तान की सीमा के २५ मील पास तक आ जाता है। अगर दर्शक भारतीय है तो बड़ी उत्सुकता से पामीर के ऊपर चमकते उन चिराग़ों को देखेगा, और एक ठंडी साँस लिए बिना नहीं रहेगा।

इसके बाद पथ-प्रदर्शक अन्तिम स्विच् दबायेगा। अब जो प्रकाश-पुंज हर जगह के चमकते बल्बों से आपके ऊपर पड़ेगा, उससे आपकी आँखें चौंधिया जायेंगी। देखेंगे, प्रशान्त महासागर से बालतिक् सागर तक ध्रुव-कक्षीय महासमुद्र से पामीर के शिखर तक अगणित रंग विरंगे बल्ब जल रहे हैं।

इस एक नक़शे के देखने से सोवियत् शासन ने देश के लिए क्या किया, इसे आप समझ जायँगे। लेकिन अभी तो सोवियत् की आर्थिक उन्नति का और भी सजीव उदाहरण, हाँ, सचमुच सजीव उदाहरण आपके सामने आनेवाला है। आप एक जगह जीती जागती गाय देखेंगे। एक छोटी सी कोठरी है। दरवाज़े पर काँच लगा है। उसके पीछे गाय खड़ी है। सामने चारा भी पड़ा हुआ है। आप देखते ही चौंक पड़ेंगे। ख़याल होगा हम तो म्यूज़ियम देखने आये थे, यह खिड़की के पीछे हज़ार गायों का रेवड़ और हरा-भरा चरागाह जाड़े के दिनों में कहाँ से चला आया। ख़ैर, आपको यह समझने में दिक़्क़त नहीं होगी कि सजीव गाय यही आपके पासवाली है, क्योंकि यही कान हिला रही है और पूँछ चला रही है; बाक़ी ९९९ चुपचाप निर्जीव खड़ी हैं।

यहाँ चित्रकार की तूलिका ने वह कमाल किया है कि आपका दिमाग़ भ्रम में पड़ गया। जितनी ही चीज़ें दूर, दूरतर, दूरतम होती जाती हैं,

उतना ही उनका आकार छोटा होता जाता है। इसी दूरी के कारण आकार की तारतम्यता को लेकर चित्रकार ने इस चित्र को नाना रंगों से चित्रित किया है। जब आप सेब के कमरे में जायँगे, तो वहाँ भी यही भ्रम आपके दिल में उत्पन्न होगा। सामने के दो सच्चे सेब के दरख़्तों को देख कर आप सारी तसवीर को सच्चा बाग समझ जायँगे। लेकिन यह म्यूज़ियम चतुर चित्रकार या कुशल फोटोग्राफ़र की कला को प्रदर्शित करने के लिए नहीं बना है, उसके लिए तो दूसरी जगहें हैं। यहाँ यह दिखलाना है कि अमुक सरकारी बाग़ जो इतने हज़ार एकड़ का है, उसमें सेब के दरख़्त कैसे लगे हैं। किस तरह के फल होते हैं। कैसे फलों को तोड़ते हैं। कीड़ा लगने पर कैसे दवाई का फुहारा छोड़ते हैं आदि।

यहाँ पानी से बिजली पैदा करनेवाले नये नये कारख़ानों की कलों के छोटे छोटे नमूने हैं। ये नमूने जड़ निर्जीव नहीं हैं। पथ-प्रदर्शक स्विच् दबाता है, और द्नीयेपर् की सब से बड़ी टर्बाइन ज़ोर से चलने लगती है। आपको बतलाया जायगा कि सोवियत् में १९१३ से १९३७ में २०गुनी बिजली पैदा हुई।

यहाँ आपको कुइविशेफ़् का वोल्ग़ा के ऊपर बँधता महान् बंध दिखलाई पड़ेगा। वह १३५० करोड़ किलोवाट घंटा बिजली देगा। अर्थात् १९३२ में सारे सोवियत् में जितनी बिजली पैदा होती थी उतनी यह अकेला स्टेशन देगा। और यह बंध और उसके साथ खोदी जाती नहरें सूखी पथरीली ज़मीन को हरी-भरी कर देंगी।

बिजली पैदा करने की एक दूसरी टर्बाइन (चक्का) का माडल आप देखेंगे। इसकी ताक़त है १ लाख किलोवाट और सोवियत् के कारख़ाने एलेक्त्रोसिला में बनी है। साथ ही ख़ारकोफ़् में बननेवाले २५ हज़ार से ५० हज़ार और १ लाख किलोवाट् ताक़त के और भी जेनेरेटर (विद्युत्-उत्पादक) आपके देखने में आयँगे। ज़ारशाही रूस ने ढाई हज़ार किलोवाट् से अधिक ताक़त का जेनेरेटर कभी नहीं बना पाया। कुइविशेफ़् का बिजली

का कारख़ाना कैसे कैसे वल्बों को बनाता है, उसके बहुत से नमूने यहाँ देखने को मिलेंगे। उनमें पतली फाउंटेन पेन में छिप जानेवाले बल्ब से ले कर ५००० वाट की ताक़तवाले प्रचंड बल्ब—जिससे कि क्रेमलिन् के दोनों लाल तारे रात को आलोकित किये जाते हैं—दीख पड़ेंगे।

एक दूसरा हाल है जिसमें लोहा, फौलाद, ताँबा और दूसरी धातुओं को दिखलाया गया है। यहाँ खुद माल ढोने, गिराने, पिघला कर निकालने-वाले माकेयफ़्का के एक धौंकू भट्ठे का नमूना है। दूसरा नमूना है, पत्थर को पीस कर सोना निकालनेवाली मशीन का। और भी कितनी ही तरह के माडल आपको यहाँ मिलेंगे। एक कमरे में श्रम की उपज कैसे बढ़ाई जा रही है, इसे प्रदर्शित किया गया है। सौ वर्ष पहले कोयला कैसे हाथ से काटकर निकाला जाता था। ३० वर्ष पहले भी ज़ारशाही कोलियरी मशीन के बारे में कितनी दरिद्र थी। क्रान्ति के बाद और विशेष कर पिछले १०–१२ सालों में कैसे सूमा और खंती की जगह बिजली से चलनेवाले बर्मों ने लिया और फिर १९३५ में वह पतले से शरीरवाला तरुण—जिसके नाम से आज सोवियत् का बच्चा बच्चा परिचित है, यानी स्तख़ानोफ़्—के दिमाग़ में वात समाई और उसने चार साथियों की मदद से कोयला काटने और थूनी लगाने के काम को वाँट दिया। स्तख़ानोफ़् और उसके साथियों की छोटी छोटी मूर्तियाँ यहाँ कोयले के स्तर में अपनी योजना चलाती हुई दिखलाई गई हैं। एक कमरे में ट्रैक्टर और कम्बाइन् दिखलाये गये हैं। सब से नये माडल का ढोलाकार (कटरपिलर) ट्रैक्टर भी रखा हुआ है। इसमें ईंधन की भी किफ़ायत है और जंजीर पर चलने के कारण ऊँची नीची जगह में चलाना भी आसान है। एक अत्यन्त नये कम्बाइन् को दिखलाकर पथप्रदर्शक कहेगा, इस मशीन के द्वारा पहले के ३०० आदमियों का काम अब ३ आदमी करते हैं।

एक कमरे में मास्को की मेत्रो (भूगर्भी रेलवे) के माडल भी रखे हैं। कैसे ६२ भाषाओं में रेडियो पर ब्राडकास्ट होता है। कैसे मास्को

का भारी टेलीफ़ोन्-आफ़िस लाखों आदमियों के लिए अपने आप लाइन बदल कर काम करता रहता है। कैसे ३०–३० लाख छपनेवाले सोवियत् के दैनिक पत्रों का मुद्रण और वितरण होता है।

स्कूल के छात्र और छात्राएँ आपके इधर उधर आती जाती दिखलाई पड़ेंगी। कितनी ही जगहों पर तो मालूम होगा कि यह म्यूज़ियम नहीं कोई कालेज का लेक्चर-हाल है।

१६ नवम्बर १९३७ को जब मैं इस म्यूज़ियम को देखने गया था, तो एक अंगरेज़ सज्जन भी दर्शकों में थे। वह पथप्रदर्शक से बार बार प्रश्न करते थे——यंत्रों का इतना अधिक प्रयोग क्या आदमियों को सुस्त और निकम्मा नहीं बना देगा? और फिर उससे मनुष्य समाज घोर पतन की ओर नहीं जायगा? उन बेचारों को दुनिया के कमकरों की आजकल की नारकीय ज़िन्दगी का कोई ख़याल नहीं था। उनका सारा दिमाग़ उस सुदूर भविष्य की ही समस्या से विचलित था जब कि मशीनों के उपयोग से मनुष्य-समाज दो मिनट में अपनी आवश्यक सभी चीज़ों को पैदा कर लेगा। वह चिन्तित थे——उस समय अपने ख़ुराफ़ाती दिमाग़ से बचने के लिये उपाय क्या रहेगा?

*** ***

केन्द्रीय लेनिन् म्यूज़ियम——यह बिलकुल नया म्यूज़ियम है, जो सन् १९३६ में स्थापित हुआ है। इसमें २२ हाल हैं, जिनमें लेनिन् के कार्य और जीवन-संबंधी पत्र, फ़ोटो, चित्र तथा दूसरी चीज़ें जमा की गई हैं। लेनिन् का जीवनचरित्र समझने के लिए यह म्यूज़ियम बड़ा अच्छा साधन है। एक हाल से दूसरे हाल में जाते हुए उस महान् नेता के बचपन, उसके माँ बाप, विद्यार्थी जीवन, क्रान्तिकारी कार्य, जेल, सिबेरिया में देश-निकाला, वर्षों विदेशों में भटकना, १९०५ की क्रान्ति, क्रान्ति की असफलता से जोश का ठंडा होना, महायुद्ध, फरवरी की क्रान्ति, लेनिन् का देश लौटना, महान् साम्यवादी क्रान्ति, गृह-युद्ध, नवीन अर्थ-नीति, सोवियत्

सरकार के अध्यक्ष के तौर पर लेनिन् के काम, कम्युनिस्ट पार्टी का २५ वर्ष के करीब नेतृत्व और जीवन के अन्तिम दिन; सभी यहाँ सामयिक सामग्रियों के साथ प्रदर्शित किये गये हैं। यहाँ मुल्क की उस राजनैतिक अवस्था को भी चित्रित किया गया है, जिसमें रह कर लेनिन् को काम करना पड़ा। वह सब मौलिक सामग्री यहाँ मौजूद है जिससे सिद्ध होता है कि लेनिन् को मैन्शेविक, त्रोत्स्की, जिनोवियेफ़्, कामेनेफ़् के ख़िलाफ़ कितनी जद्दोजहद करनी पड़ी।

स्तालिन् के लिए लिखे लेनिन् के कितने ही व्यक्तिगत पत्र भी यहाँ रखे हैं, जिनसे पता लगता है कि, लेनिन् स्तालिन् से कितना स्नेह रखते थे। कुछ पत्रों में लेनिन् ने स्तालिन् के स्वास्थ्य के बारे में पूछा है।

यहाँ लेनिन् के घनिष्ट सहकारी स्वेर्दलोफ़्, जेर्ज़िन्स्की, फ्रुंज़े, किरोफ़्, कुइबिशेफ़् और ओर्जोनीकिद्ज़े—जो क्रान्ति के लिए जिये और क्रान्ति के लिए मरे—से भी दर्शक का परिचय होता है। स्तालिन्, मोलोतोफ़्, वोरोशिलोफ़्, कगानोविच्, कालिनिन् आदि अभी तक जीवित लेनिन् के सहकारियों के बारे में भी ज्ञान होता है।

लेनिन् के मूल हस्तलेख और वैयक्तिक काग़ज़-पत्रों के फ़ोटो-चित्र यहाँ सजाए हुए हैं। लेनिन की घड़ी यहाँ रखी है। उनकी वह क़लम भी यहाँ मौजूद है, जिससे कि उन्होंने सोवियत् सरकार की पहली घोषणा पर हस्ताक्षर किया था। १६१८ में उनपर किसी क्रान्तिविरोधी ने गोली चलाई थी, गोली ओवरकोट को छेदकर भीतर चली गई। वह ओवर कोट यहाँ रखा है। फटी हुई जगह की मरम्मत लेनिन् की स्त्री क्रुप्सकाया ने की थी। ज़ार की पुलीस के लिखे लेनिन् के ख़िलाफ़ काग़ज़-पत्र भी यहाँ मौजूद हैं, और उनकी किताबों के ग़ैरक़ानूनी प्रथम संस्करण भी।

साम्यवादी क्रान्ति के आरंभिक दिनों में लेनिन् के लिखे हुए कितने ही ऐतिहासिक काग़ज़-पत्र यहाँ संगृहीत हैं। यहीं लेनिन् और स्तालिन् द्वारा

संपादित अधिकारों की घोषणावाला मूल पत्र मौजूद है। कमकर-किसान सरकार की स्थापना की घोषणा, लाल-सेना के कायम करने की घोषणा, जिन पर लेनिन् और दूसरों के हस्ताक्षर हैं, यहाँ रखे हुए हैं। एक हाल में लेनिन्-ग्रन्थ-संग्रह की सभी जिल्दें तथा उनके संपूर्ण या आंशिक अनुवाद दुनिया की ८३ भाषाओं में—जिनमें भारत, चीन, जापान की भाषाएँ तथा यूरोप आदि की भाषाएँ शामिल हैं—रखे हुए हैं।

काग़ज़-पत्रों के फ़ोटो वहुत महत्त्वपूर्ण हैं; लेनिन् की जीवनी के लिए ही नहीं, वल्कि साम्यवादी इतिहास के लिए भी। इन काग़ज़पत्रों से यह भी मालूम होता है कि लेनिन् जहाँ एक जबर्दस्त राजनीतिज्ञ थे, वहाँ उनका ज्ञान और विषयों में भी कितना विस्तृत था। क्रान्ति-युद्ध के लिए उनकी प्रतिभा कितनी अद्वितीय थी। कारख़ाना, विजली के पावर हाउस, खेती, उपज का वितरण, यातायात का प्रवन्ध, शिक्षा और संस्कृति, वैदेशिक नीति, सभी विषयों पर लेनिन् की कलम गंभीरतापूर्वक चली है; और उन काग़ज़ों का यहाँ वहुत अच्छा संग्रह है। सीधे सादे किसानों और मज़दूरों ने जो पत्र लेनिन् को लिखे थे, उनमें से भी कितने यहाँ प्रदर्शित किये गये हैं। उनसे मालूम होता है कि रूस के किसान मज़दूर लेनिन् से कितना प्रेम रखते थे।

मशहूर चित्रकारों—अन्द्रेयेफ़्, अल्तमान्, ब्रोद्स्की द्वारा अंकित लेनिन् के चित्र या ड्राइंग यहाँ मौजूद हैं।

एक हाल में ऐसे मूल काग़ज़-पत्र हैं, जिनमें लेनिन् की मृत्यु पर दुनिया के वड़े वड़े राजनीतिज्ञों और साहित्यिकों—रोम्याँ रोलाँ, वर्बुसे, सुन्यात्सेन्, टामस्मान्—आदि ने जो शोक प्रकट किया था। यहीं किसानों और मज़दूरों के कितने ही शोक-पत्र भी हैं।

एक हाल में सोवियत् के भिन्न भिन्न जाति के प्रजातंत्रों और वाहर के कलाकारों के वनाये रेशम, कालीन, कमख़ाव, चद्दर आदि पर वनी लेनिन् की तसवीरें जमा की गई हैं। गाँव की साधारण जनता ने अपनी भाषा

में कविता के रूप में लेनिन् के प्रति जो उद्गार प्रकट किया, उसका भी यहाँ अच्छा संग्रह है। इन पद्यों और गीतों में कितने ऐसे हैं, जिनके कर्त्ताओं का नाम संसार ने नहीं जाना।

यहाँ पर लेनिन् के भाषण के फ़िल्म हैं; और दर्शकों को जीवित लेनिन् के शब्द सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

१४—नगरों की कायापलट

स्तालिन्स्क——क्रान्ति के बाद दो-दो चार-चार लाख आबादीवाले कोड़ियों नये शहर आबाद हुए हैं। स्तालिस्क भी पश्चिमी सिबेरिया में उसी तरह का एक शहर है। नगर की वृद्धि कितनी तेज़ी से हुई है, और वह कितना समृद्धिशाली है, यह निम्नलिखित वर्णन से समझा जा सकता है। लेखक——जो एक रूसी पत्र का संवाददाता है——पिछले दिसम्बर (१९३७) में वहाँ गया था।

अंधेरा होने लगा था जब कि हमारी ट्रेन स्टेशन पर पहुँची। जाड़े के मारे रेल के शीशे बाहर से हिम-जटित हो गये थे; इसलिए बाहर देखने के लिए दरवाज़े खुले हुये थे। मुसाफ़िर चारों ओर दिखाई दे रहे थे। कोई घर की तरफ़ जल्दी जल्दी जा रहा था और कुछ लोग स्टेशन को बड़ी दिलचस्पी और आश्चर्य से देख रहे थे।

एक भाई देर तक बाहर रह कर लौट रहा था। उसने देखा, एक कोलाहलपूर्ण लम्बे चौड़े स्टेशन पर सिबेरिया की उस सर्दी में भी स्टेशन के भोजनालय में गमलोंवाले ताड़ लगे हुए हैं। यात्री ने कितनी देर तक इधर उधर दृष्टि डालने के बाद एक छोटा सा सफ़ेद पत्थर का झोपड़ा प्लेटफ़ार्म के एक छोर पर देखा। वह हँस पड़ा।

"हाँ, यहाँ ही कुज़्नेत्स्क के इस झोपड़ेवाले स्टेशन में ७ वर्ष पहले मैं बर्फ़ बरसती शाम को आया था।"

स्टेशन के पीछे स्तालिंस्क नगर है। उसे पतले कुहरे में कम्पित लाखों बिजली-बत्तियाँ प्रकाश का सरोवर जैसा बनातीं थीं। लोहे और फौलाद के कारख़ाने शहर से कुछ दूर पर खड़े नगर की शोभा को दुगुना कर रहे थे। लोहे के भट्ठे शोर मचाते सनसना रहे थे। उनसे पेंदी-में-लाल-लौर-

लिये हुए धुएँ का बादल निकल रहा था।

१९१३ में इसी नगर के बारे में लिखते हुए एक लेखक ने लिखा था—

"क़सबा तेल्वेस् ताइगा (जंगल) के छोर पर बसा हुआ है। यहाँ आग की रखवाली के लिए एक मीनार, तीन गिर्जे और दो छोटी प्रार्थना-शालाएँ हैं। इस ज़िले में एक पाठशाला है; जिसमें प्रथम दो दर्जों तक पढ़ाई होती है। एक फ़ौजी जेल अस्पताल है, जिसमें २२ मरीज़ों के लिए चारपाइयाँ हैं। क़सबे में २४०० घर हैं; जिनमें एक तिहाई ही ईंट के हैं। आबादी ४०८२ है। पिछले १० साल के भीतर आबादी में सिर्फ दो आदमियों की वृद्धि हुई। क़सबे की तरह ज़िले में भी जन-वृद्धि नहीं के बराबर है। पुराने बाशिन्दे बड़ी तेज़ी से मर कर लुप्त हो रहे हैं, और रूसी गाँव की जनवृद्धि तो कालापानी के लिए भेजे कैदियों पर निर्भर है। यद्यपि ज़िले में लोहा, सीसा, ताँबा, कोयला और अज़्बेस्तो की बहुत अच्छी खानें हैं लेकिन इस समय उनको कोई नहीं निकालता। खानों में काम न होने में सब से बड़ी कठिनाई है यातायात का न होना। ज़िले में ८५ शराब की दुकानें, ४ पुलीस के थाने और और दुकानें हैं। वसन्त और शरद् में कुज़नेत्स्क नगर का बाहरी दुनिया से संबंध टूट जाता है"।

और अब २४ वर्ष बाद क्या है? सात वर्ष बाद लौटे उस यात्री ने अपनी आँखों के सामने एक नये नगर को खड़ा देखा। सड़कों पर सब जगह बिजली-बत्तियाँ जगमगा रही हैं। तोम् नदी पर रोशनी में झिलमिल करता एक लोहे का पुल खड़ा है। सड़क की पगडंडियों पर हमेशा हरे रहनेवाले देवदारु वृक्षों की पांतियाँ खड़ी हैं। बड़े बड़े जँगलों वाले विशाल प्रासाद दोनों ओर खड़े हैं जिनके निचले तल में कितनी ही दुकानें सजी हुई हैं। चौरस्तों पर मोटरों की कतारोंको लाल, हरी स्वयं जलनेवाली लालटेनें रोके हुए हैं।

स्तालिंस्क नगर सिर्फ ६ वर्ष हुए, प्रगट हो कुजनेत्स्क के पुराने क़सबे बेसोनोफ़् गाँव को निगल गया। स्तालिन्-लोह-कारख़ानों के साथ साथ यह नगर भी बढ़ा। स्तालिन्-कारख़ाना लोहा और फौलाद पैदा करने के लिए

एक बहुत भारी कारख़ाना ही नहीं है, बल्कि वहाँ नई से नई मशीनों को इस्तेमाल किया गया है। यह दुनिया के सब से बड़े लोहे के कारख़ानों में है।

स्तालिंस्क में ६७ स्कूल हैं, १ लोह फौलाद इंस्टीट्यूट है, ३ टेक्निकल स्कूल हैं, १७ क्लब, १ सांस्कृतिक भवन, २ सिनेमा, १ नाटकशाला, ३ सरकस, २ म्यूज़ियम,,२ समाचारपत्र, ३० पुस्तकालय, (३०,००० स्थायी पाठकों के साथ) २ विश्राम-शालाएँ और १ होटल जिसकी इमारत के लिये कोई भी शहर लज्जित नहीं हो सकता। और विद्यार्थी कितने हैं? ५० हज़ार! इस ज़िले में १०० चिकित्सा संस्थाएँ और १०० प्रसूति-गृह बच्चा-ख़ाना और किन्डर-गार्टन हैं।

ज़िले के भीतर से हो कर एक बड़ी सुन्दर रेलवे लाइन गई है। पत्थर, लोहा, और दूसरी खानों में बड़े ज़ोर के साथ काम हो रहा है। लोहा फौलाद कारख़ाना लगातार दिन रात काम करता है। स्तालिंस्क नगरी रात को भी नहीं सोती। कारख़ाने में काम करनेवाले अपनी अपनी ड्यूटी के समय के मुताबिक आते जाते रहते हैं।

स्तालिंस्क के निवासियों में तीन-चौथाई से भी अधिक नौजवान हैं। इसलिए इसे नौजवानों की नगरी कहा जा सकता है।

*** ***

मिन्स्क—कई शताब्दियों तक मिन्स्क—**बेलोरूसिया** स०स०र० की राजधानी—एक भारी वाणिज्य-केन्द्र था। और पूर्व से पश्चिम जानेवाले वाणिज्य-पथ पर अवस्थित होने से विशेष महत्त्व रखता था। अपने प्रान्त का यह शासन-केन्द्र भी था। ज़ारशाही के शासन में बेलोरूसीय लोगों के साथ शासकों का वैसा ही बर्ताव था, कि जैसा अन्य पराधीन जातियों के साथ। मिन्स्क में उद्योग-धंधे के लिए कोई स्थान नहीं था। बेलोरूसिया को सिर्फ अनाज पैदा करने के लिए मजबूर किया गया था। ज़ारशाही उसे अनाज और कच्चे माल पैदा करने तथा कारख़ाने के बने हुए माल

की खपत का सुन्दर क्षेत्र समझती थी। इसीलिए क्रान्ति के आरंभ होने तक सारा प्रजातंत्र उद्योग-धन्धों, कल-कारख़ानों से शून्य था। लोग पुराने तरीके से कुछ हाथ की छोटी छोटी दस्तकारियाँ कर लेते थे।

६० सैकड़ा खेत ज़मींदारों और कुलकों के हाथ में थे। किसी किसी किसान को खेत की छोटी टुकड़ी प्राप्त थी और वहुसंख्यक तो उससे भी महरूम थे। गाँव के ग़रीब किसानों और खेतिहर मज़दूरों को जितना अधिक चूसा जाता था, उससे किसानों की अवस्था बड़ी ख़राब थी। वे भूख और ग़रीबी में डूबे हुए थे। इसके अतिरिक्त बेलोरूसी जाति पराधीन समझ कर हर तरह के ज़ुल्म की शिकार थी।

मिन्स्क शहर बसाने में कोई क़ायदा-क़ानून की पाबन्दी नहीं की गई थी। न सड़कें सीधी थीं, न शहर के स्वास्थ्य और सफ़ाई का ख़याल रखा गया था। अपने हज़ारों निवासियों के लिए वह सासतख़ाना था। साम्य-वादी क्रान्ति ने उस अवस्था से लोगों को मुक्त किया। १९१९–२० तक मिन्स्क क्रान्ति-विरोधियों के हाथ में पड़ कर और भी वर्बाद हो गया था। क्रान्ति की सफलता के बाद मिंस्क को पहली ही अवस्था तक नहीं पहुँचा दिया गया, वल्कि यहाँ नये कल-कारख़ाने खोले गये और साम्यवाद के आधार पर नगर में नवजीवन का प्रसार किया गया। क्रान्ति के पहले यहाँ के इंजीनियरिंग कारख़ाने में २०९ कमकर थे और यही नगर का सब से बड़ा कारख़ाना समझा जाता था। आज मिंस्क में हज़ारों से ऊपर कम-करवाले अनेक कारख़ाने हैं। भारी और हलके उद्योग-धन्धे, खानें और लकड़ी के कारख़ाने, कपड़े, जूते, ब्रुश की फैक्टरियाँ और मकान के सजाने के सामान बनानेवाले कारख़ाने सभी बड़े पैमाने पर मौजूद हैं। मिन्स्क में जिस तरह कल-कारख़ानों की तरक़्क़ी हुई, उसी तरह यह बेलोरूसीय प्रजातंत्र का सांस्कृतिक केन्द्र भी होता जा रहा है। इसकी जन-संख्या वहुत बढ़ गई है और जल्द ही साढ़े तीन लाख पहुँचनेवाली है। शहर को रोशनी देने के लिए जो पावर-स्टेशन था, वह क्रान्ति से पहले सिर्फ़ ८००

किलोवाट विद्युत्-शक्ति देता था जो कि शहर के दशांश को आलोकित करने के लिए पर्याप्त न थी और वह बिजली शहर के केन्द्र में रहनेवाले कुछ धनियों को ही मिलती थी। शहर के बाहरी ओर रहनेवाले कमकरों के लिए तो बिजली स्वप्न की बात थी।

आज मिंस्क में बिजली के दो पावर-स्टेशन हैं। एक ६७५० किलोवाट का और दूसरा २४ हज़ार किलोवाट का। शहर के नवनिर्माण की जो योजना है, उसमें ६४ हज़ार किलोवाट बिजली तैयार करना रखा गया है। घरों और सड़कों में बड़ी शाहख़र्ची के साथ बिजली की रोशनी इस्तेमाल की जाती है। पुराने घिसे सड़े पानी के पाइप प्रति दिन १००० घन मीतर[1] पानी भी नगर को नहीं दे सकते थे। सिर्फ राजा-बाबू सेठ-साहूकार लोगों के ही घरों में पानी के पाइप थे; और वह भी एक परिमित संख्या में। आज सारे शहर को पाइप का पानी मिलता है। रोज़ाना ख़र्च ६६००० घन-मीतर है। यानी पहले से ६६ गुना ज़्यादा। १९३० से मिंस्क में मल और गन्दे पानी आदि के बहाने के लिए सीवेर का प्रबन्ध हो गया है। १९२९ तक घोड़े से खींची जानेवाली ट्राम और सो भी ४ मील तक ही मौजूद थी। १९२९ में नगर-सोवियत् ने ३६ मील लम्बी बिजली की ट्रामवे जारी की। इसके अतिरिक्त बहुत अधिक तादाद में मोटरबस और टैक्सी भी हैं।

क्रान्ति के पूर्व सुव्यवस्थित स्नानागारों और धोबीख़ानों का नाम न था, किन्तु अब बहुत अधिक तादाद में उन्हें बनाया गया है। पुराने मिंस्क की कच्ची सड़कों में धूल उड़ा करती थी। एक दो प्रधान सड़कें ही पक्की थीं। आज एकाध को छोड़ सभी सड़कें पक्की हैं। कमकर महल्ले की सड़कें भी पत्थर कूटी हुई हैं। सड़कों के सुधार के साथ साथ मोटरों और लारियों का उपयोग भी बहुत बढ़ा है।

---

[1] १ घन मीतर = ३२·७५ घनफुट

पाँच पाँच छः छः महलों के हवादार एपार्टमेंट (घर) और सरकारी इमारतों को देखकर पुराने मिंस्क का पहचानना मुश्किल हो गया है। पुरान मकानों की मरम्मत के अतिरिक्त ५ लाख वर्गमीतर[1] फर्श वाले नये मकान बने हैं। कितने ही ४ से ६ तल्ले वाले एपार्टमेंट (घर) आधुनिक सभी सुविधाओं के साथ बनाये गये हैं। नगर के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में बड़ी उन्नति हुई है। क्रान्ति के पहले स्कूलों में सिर्फ ४५०० लड़के पढ़ते थे, और अब सत-साला और दस-साला स्कूलों में ३० हज़ार लड़के पढ़ रहे हैं। अध्ययन-वर्ष को बढ़ा कर इनकी तादाद ६५००० होने जा रही है। इन स्कूलों में १७ टेकनिकल स्कूल, १२ हाई स्कूल, २५ अन्वेषणसंस्थाएँ, १७ विज्ञान एकेडेमी के इंस्टीट्यूट शामिल नहीं हैं। उच्च शिक्षण-संस्थाओं में २० हज़ार से अधिक विद्यार्थी, अध्यापक, और अन्वेषण-कर्ता हैं। महान् साम्यवादी क्रान्ति के बाद बेलोरूसिया प्रजातंत्र की सभी जातियों को अपनी भाषा में शिक्षा पाने का अधिकार दिया गया है। स्कूल में दाख़िल होने से पहले की अवस्था में लड़कों की शिक्षा बच्चाख़ानों और किंडरगार्टेन द्वारा दी जाती है। केन्द्रीय सांस्कृतिक उद्यान में बहुत से क्लब हैं। इनके अतिरिक्त और भी कितने हैं। एक बहुत भारी सांस्कृतिक प्रासाद तृतीय वार्षिक योजना के अनुसार बन रहा है। ४० लाख जिल्दों के साथ कई पुस्तकालय बनाये जा रहे हैं। ४ म्यूज़ियम तैयार हो रहे हैं।

पुराने मिंस्क में एक भी थियेटर नहीं था, और आज १ यहूदी, १ पोल, और १ बेलोरूसी—३ थियेटर हैं। नई योजना के अनुसार कई नाट्यशालाओं और सिनेमा-भवनों के बनाने में हाथ लग चुका है। मिंस्क ने स्वास्थ्य-रक्षा के क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त की है। एक विशाल स्वास्थ्य-भवन है, जिसकी कितनी ही शाखाएँ शहर के भिन्न भिन्न हिस्सों में बनी हैं।

---

[1] १ वर्गमीतर=१०·५६२ वर्गफुट

१० पोलीक्लीनिक (विविध रोग चिकित्सालय), ५ डिस्पेंसरी और कोढ़ियों स्वास्थ्य-परामर्शशालाएँ तैयार हैं। नगर के हर एक मुहल्ले में एक दिन का और एक रात का सेनीटोरियम है। ५० चिकित्सा-स्थान मौजूद हैं। इनके अतिरिक्त मिंस्क के १० अस्पतालों में २००० चारपाइयों का प्रबन्ध है। ऐम्बुलेंस की गाड़ियों से ला कर प्रतिदिन ५०० मरीज़ों की चिकित्सा होती है।

साम्यवादी सरकार ने स्त्रियों के अधिकार की रक्षा के लिए विशेष ध्यान दिया है। माँ और बच्चे के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए बड़े ऊँचे पैमाने का आयोजन किया गया है। कई हज़ार बच्चों की देखभाल के लिए ७० बच्चेख़ाने बनाये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त माँ और बच्चों के लिए ख़ास इंस्टीट्यूट और पचासों परामर्श-स्थान हैं।

मिंस्क के पुनर्निर्माण की जो बड़ी योजना है, उसमें स्वास्थ्य-रक्षा की ओर और भी ख़याल रखा गया है। २४ संस्थाएँ इसके लिए बनाई जायँगी जिसमें १४०० रोगियों के लिए ४ सेनीटोरियम, २८०० चारपाइयों के साथ ३ अस्पताल, १७०० चारपाइयों और बहुत से प्रसूति-शालाओं के साथ ३ स्थायी सेनीटोरियम बनने जा रहे हैं। मिंस्क की सड़कों पर अब बहुत सी सुन्दर इमारतें बन गई हैं। विश्वविद्यालय की दूर तक फैली भव्य इमारतें चिकित्सा-केन्द्र, औद्योगिक-म्यूज़ियम, प्रेस-भवन, विशेषज्ञ-भवन, अनेक होटल, स्कूल और एपार्टमेंट (घर) बड़े विशाल रूप में बने हैं। गवर्नमेंट-भवन, लाल-सेना-भवन, विज्ञान एकेडेमी-भवन तथा दूसरी इमारतें वास्तु-कला के सुन्दर उदाहरण हैं। स्वास्थ्य-रक्षा, शिक्षा-प्रचार, सांस्कृतिक उन्नति के कारण बीमारियों और मृत्यु पर बड़ा असर हुआ है। युद्ध के पहले की अपेक्षा अब मृत्यु-संख्या एक-तिहाई रह गई है।

***　　　***

गोर्की प्रान्त—निज़नीनोवोग्राद् का नाम दुनिया में मशहूर था।

ख़ास कर अपने उस बड़े मेले के कारण जो कि संसार का सबसे बड़ा मेला था। इस मेले में एशिया और यूरोप के बहुत से भागों के व्यापारी और ज़मींदार आते थे। ख़रीद-फ़रोख़्त में नफ़ा नहीं, लूट थी। २० वर्ष के सोवियत्-शासन ने नाम के साथ साथ इसका सारा ढाँचा ही बदल दिया। यहाँ के गाँव की ग़रीबी उस समय अपना सानी नहीं रखती थी। उनका काम था पल्लादारी और लकड़ी लादना। अधिकांश को तो काम भी मयस्सर न था।

अब नाम बदल कर प्रसिद्ध लेखक के नाम पर गोर्की हो गया है। सोवियत्-संघ के प्रधान, औद्योगिक और सांस्कृतिक-केन्द्रों में से वह एक है। पिछली दो पंचवार्षिक योजनाओं में सैकड़ों फैक्टरियाँ और विशाल कारख़ाने बने हैं। अपनी मशीनरी तथा टेकनीक में वह बिलकुल नये हैं। हज़ारों कोलखोज़ों के खेत गोर्की के ट्रैक्टरों (मोटरहलों) से जोते जाते हैं; और देश की करोड़ों एकड़ खेती का काटना-दाँवना गोर्की की कंबाइन मशीनों से होता है।

१९१३ में सारे प्रान्त के ४६१ कल-कारख़ानों में ५० हज़ार कमकर काम करते थे। १९३६ में १०४० फैक्टरियाँ और कारख़ाने थे, जिनमें काम करनेवाले मज़दूरों की तादाद २ लाख २० हज़ार थी। गोर्की प्रान्त की सम्पूर्ण उपज में आधा भाग बनी हुई मशीनों का है। मोटरें, डीसेल मोटर इंजन, दर्जनों प्रकार की मशीनें, औज़ार, काग़ज़ के मिलों की मशीनें, यहाँ तैयार की जाती हैं। सिर्फ गोर्की प्रान्त के कारख़ानों में इतनी मशीनें, औज़ार बनते हैं, जितने सारा ज़ारशाही रूस में बनाते थे। उस समय थोड़े से छोटे छोटे काँच-कारखाने तथा और आधे दस्तकारी जैसे कारख़ाने थे, जिनकी जगह अब बड़ा जबर्दस्त काँच-उद्योग तैयार होगया है। १९३६ में जितना काँच तैयार हुआ था, वह क्रान्ति से पहले का पँचगुना था।

इस एक ज़िले में जितनी बिजली तैयार होती है वह १९१३ के सारे रूस की बिजली का ७/१० है। लेनिन् की योजना के मुताबिक देश को

विद्युत्मय वनाने का काम शुरू हुआ। वड़े भारी भारी बिजली के पावर स्टेशन वनाये गये जो सिर्फ केन्द्र के कारखानों और फ़ैक्टरियों को ही विजली नहीं देते, बल्कि कोलख़ोज़ी गाँवों तक में उसका प्रचुर प्रचार हो गया है। भारी उद्योग के कारख़ाने तो वड़े बड़े हैं ही, बनियान और कपड़े की फैक्टरियाँ—कपड़े की फैक्टरी तो पहले इस ज़िले में अज्ञात थीं—

तीन छात्राएँ (गोर्की)

कोड़ियों तैयार हुई हैं। चमड़ा सिझाने और जूता वनाने की भी कई फैक्टरियाँ ज़िले में खुली हैं।

गोर्की ज़िले की खेती में तो आमूल परिवर्तन हुआ है। जोते खेत, ३२,८०,००० एकड़ से ५,४२,००,००० हो गए। गेहूँ के खेत तो तव से पँचगुने हो गये। १९३० से पहली जुलाई १९३७ तक ट्रैक्टर १६३ से ४४७५ हो गये। कम्वाइन (काटने दाँवने की मशीन), ट्रक (खुली लारी) और दूसरी कृषि-संवंधी मशीनों में भी इसी प्रकार वृद्धि हुई है। पशु-पालन वहुत तेज़ी से आगे वढ़ा है। पशु-पालक गाँव १९३४ में १६६० थे। पहली जनवरी १९३७ को ६४६८ अर्थात् चौगुना—हो गये। उतने ही समय में कोल्ख़ोज़ी किसान ३७३०० की जगह १५६८०० हो गये।

कोल्खोज़ी गाँवों में भी बुड्ढे लोगों के लिए कितने ही भवन बनाये गये हैं। १९२४ की अपेक्षा ज़िले के अस्पतालों की संख्या दूनी हो गई है। अस्पतालों में मरीज़ों की चारपाइयाँ तो उससे भी ज़्यादा तेज़ी से बढ़ी हैं। अब उनकी संख्या ७६६१ है। हाल में बने प्रसूतिका-गृह में चारपाइयों की तादाद ८७ से १५९५ उसी समय में हो गई। पूँजीवाद के अधीन रहते समय मज़दूर औरतों के लिए बच्चाखाना का कोई प्रबन्ध नहीं था। १९३७ में १,०४,००० से अधिक बच्चे गोर्की प्रान्त के बच्चाखानों में थे।

पानी का पाइप, सेव्रेज़् (मल तथा कूड़ा कर्कट के बहा ले जाने के लिए बनी नहरें), ट्रामवे और एपार्टमेंट (घरों) की कतार की कतार ने ज़िले के रूप में बहुत परिवर्तन किया है। नये मकानों के बनाने में भी बड़ी फ़ुर्ती से काम लिया जाता है।

जब से अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा स्थापित हुई है, तब से हाई स्कूलों की संख्या बढ़ गई है। ज़िले में ६२६ हाई स्कूल हैं जिनमें ३ लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। इन स्कूलों के सिवा १२१ फैक्ट्री स्कूल और ६५ टेकनिकल स्कूल के अतिरिक्त और बहुत से औद्योगिक स्कूल और कालेज बने हैं।

१९१४ में ११ समाचार-पत्र थे, जिनकी ग्राहक-संख्या ५४ हज़ार थी। आज १३५ समाचार-पत्र हैं जिनकी ग्राहक-संख्या ४,७५,२०० है।

१५—मास्को नगर

सोवियत् राजधानी मास्को ५५° ४५′ उत्तर अक्षांश और ३७° ३७′ पूर्वी देशान्तर में मास्को नदी तथा उसकी शाखा ओका के किनारे अवस्थित है। यह **सोवियत्** के यूरोपीय भाग के केन्द्र में है और यहाँ से चारों ओर को ११ रेलवे लाइनें जाती हैं। १९३५ में शहर २८५ वर्ग-किलोमीतर में बसा था और मास्को-नगर-योजना के अनुसार १९४५ में वह ६०० वर्ग-किलोमीतर हो जायगा।

मास्को शहर २३ ज़िलों में बँटा हुआ है, जिनमें कुछ के नाम **लेनिन्स्की, स्तालिन्स्की, फ़्रुन्ज़ेन्स्की, सोवियत्स्की, स्वेर्द्लोवस्की, कोमिन्तेर्नोव्स्की, ज़ेर्जिन्स्की, कुईविशेव्स्की, बौमान्स्की, मोलोतोप्स्की, किरोव्स्की** हैं।

१९३६ में मास्को की जनसंख्या ३६ लाख थी। संसार में इसका बंबर छठा है। बोल्शेविक चाहते तो १० वर्ष में इसे अव्वल बना देते। लेकिन दुश्मन के हवाई जहाज़ों के डर से लन्दन और तोकियो की परेशानी को देखकर वे वैसा नहीं करना चाहते। मास्को की जनसंख्या निम्न प्रकार बढ़ी है—

१८७१	६ लाख २ हज़ार
१८९७	१० लाख ३९ हज़ार
१९१२	१६ लाख १८ हज़ार
१९२७	२० लाख ३२ हज़ार
१९३२	३१ लाख ३५ हज़ार
१९३६	३६ लाख ३५ हज़ार

सोवियत् के मज़दूरों की संख्या का ६ सैकड़ा यहीं रहता है। मास्को में एक भी आदमी बेकार नहीं है। तनख्वाह साल बसाल बढ़ती जा रही है। १६२८ की अपेक्षा १६३५ में तनख्वाह दुगुनी (२०४ सैकड़ा) हो गई।

१६३६ के आरंभ में मास्को के कमकरों में ४०·६ सैकड़ा स्त्रियाँ थीं। मास्को की जनसंख्या में १० लाख से ऊपर संख्या विद्यार्थियों की है।

*** ***

इतिहास—मास्को का नाम पहले पहल ११४७ ई० में सुनने में आता है। पुरातत्त्ववेत्ताओं का कहना है कि बस्ती उससे पहले भी थी।
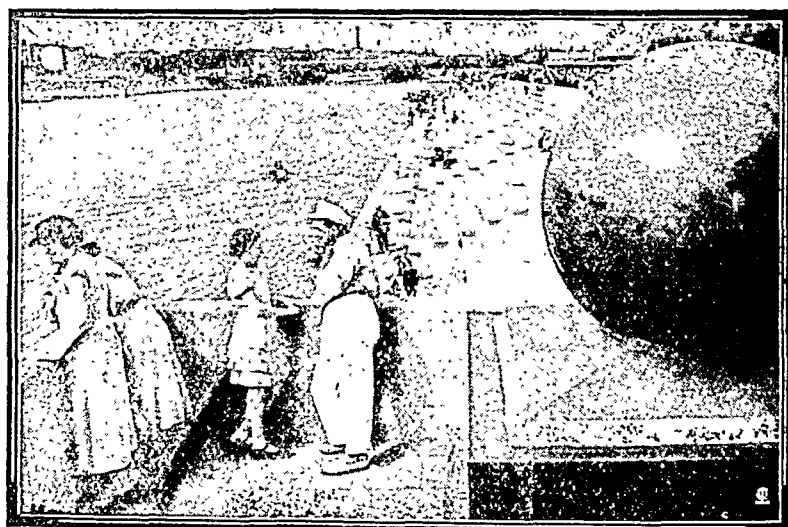
मास्को (मॉस्क्वा) नदी

प्राचीन नगर उस जगह था, जहाँ मास्को और **नेग्लिन्नया** नदियाँ मिलती थीं। इसी जगह **क्रेम्लिन्** का दक्षिण-पश्चिमी भाग अवस्थित है। इस जगह एक क़िला था, जिसके तीन तरफ़ पानी होने से उस समय के अस्त्र-

शस्त्रों के लिए वह काफ़ी सुरक्षित था। पुराने समय में मास्को की भूमि में कितनी ही छोटी छोटी नदियाँ थीं, जिनमें अब ययूज़ा और सेतुन् दो ही बच रही हैं, बाकी ज़मीन के भीतर भीतर जानेवाली गन्दे पानी की नहरों में मिला दी गई हैं।

सैनिक ख़याल ही से मास्को को आदर्श स्थान नहीं मिला था, बल्कि यह संसार के बड़े बड़े वणिक्-पथों के मिलने के स्थान पर था। **बाल्तिक** समुद्र-**कास्पियन** समुद्र, **अजोफ़** समुद्र तथा यूरोप और एशिया से आनेवाले व्यापारी मार्ग यहीं आ मिलते थे। उस समय रूस बहुत से छोटे छोटे सामन्तों में बँटा था, जो कि बराबर आपस में लड़ा करते थे। वे सभी कज़ान् के तातार ख़ानों को कर दिया करते थे। मास्को के सामन्त, ख़ान की ओर से कर उगाहने के लिए नियुक्त किये गये थे।

केन्द्र में होने की वजह से मास्को के सामंतों की आमदनी भी बढ़ रही थी। पहले ये लोग एक दूसरे सामन्त ब्लादिमिर् के अधीन थे, लेकिन कुछ ही समय में वे रूस के अन्य सामन्तों की अपेक्षा अधिक बलवान् और धनी हो गये। उन्होंने क्रय और विजय द्वारा राज्य की सीमा बहुत बढ़ा ली। **इवान् कलिता** (१४६२–१५०३) के समय सारे रूस को एक करने का काम आरंभ हुआ, और पन्द्रहवीं शताब्दी में **तृतीय इवान्** (१४६२–१५०५) के समय सारे रूस का एक राज्य बना। मास्को उसकी राजधानी घोषित हुई। उसी वक्त (१४८०) रूस कज़ान के खानों की अधीनता से बिलकुल स्वतंत्र हो गया। आरंभ में सामन्त लोग बहुत कुछ स्वतंत्र थे, लेकिन अब मास्को के इन महासामन्तों ने अपने प्रभाव को बढ़ाते हुए छोटे सामन्तों की स्वतंत्रता का अपहरण करना शुरू किया। सोलहवीं सदी के आरंभ में ये सामन्त एक तरह के अमीर और बड़े ज़मींदार भर रह गये। **इवान्** तृतीय और उसके उत्तराधिकारियों के शासन में सामन्तों ने कई बार विद्रोह किया, लेकिन उन्हें सख़्ती से दबा दिया गया। कितनों की जागीर छीनी गई, कितने निर्वासित हुए और कितने फाँसी पर चढ़े। ज़ार (चार्)

इवान् चतुर्थ (१५३३–८४) अपने भारी अत्याचार के लिए क्रूर इवान् कहा जाता था।

क्रूर इवान् ने सामन्तों की शक्ति नष्ट करने के लिए **'ओप्रिच्निना'** का आरंभ किया। जिन सामन्तों से वह नाखुश होता, उनकी जागीरों को छीन लेता, यही **ओप्रिच्निना** था। फिर छोटे छोटे ज़मींदारों और अपने दरबारियों को **ओप्रिच्निना** से छीनी हुई ज़मींदारियों को बाँट देता था। इन नये अमीरों को **ओप्रिच्निकी** कहते थे। ख़ुशामद की वजह से तथा इस ख़याल से भी कि पुराने सामन्तों और ओप्रिच्निकियों से एक ही साथ बिगाड़ कर लेना हानिकर होगा, इन पर राज्य का कोई अंकुश नहीं था; और वे खुल कर किसानों और साधारण जनता पर अत्याचार करते थे। तभी से रूसी भाषा में **ओप्रिच्निक्** अत्याचार का पर्याय माना जाने लगा। **बाल्तिक्** समुद्र तक पहुँचने के लिए क्रूर इवान् बहुत उत्सुक था; और इसके लिए उसने स्वीडेन और पोलैंड से कई लड़ाइयाँ लड़ीं, लेकिन असफल रहा। वह अपने राज्य को **कज़ान्, अस्त्राख़ान्,** और सिबेरिया के विजयों द्वारा पूर्व और दक्षिण में बहुत दूर तक बढ़ाने में सफल हुआ। **वोल्गा** की सारी उपत्यका—जो कि पूर्व और पश्चिम के व्यापार का भी मिलन स्थान थी—उसके हाथ में आ गई। ईसाई धर्म की यूरोप में पहले दो शाखाएँ थीं। एक कैथोलिक (उदार) और दूसरे **अर्थोडक्स** (सनातनी)। कैथोलिकों का केन्द्र था रोम में, इसलिए उन्हें रोमन कैथोलिक कहा जाने लगा। **अर्थोडक्स** सम्प्रदाय ने ग्रीस (यूनान) से अपना संबंध जोड़ा। वह **बैज़ंटाइन्** राजवंश का कृपापात्र था और इस प्रकार **बैज़ंटाइन्** साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया (**कान्स्तन्तिनो-पोल=कान्सतन्तिनोपुर**) ग्रीक अर्थोडक्स सम्प्रदाय का भी केन्द्र हो गया। जब तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया को दख़ल कर लिया, तो **अर्थोडक्स** सम्प्रदाय के प्रधान गुरु **मेत्रोपोलितन** को भी वहाँ से भागना पड़ा। १३४५ में **मेत्रोपोलितन** ने मास्को को अपना

निवासस्थान बनाया। इस प्रकार मास्को ग्रीक-अर्थोडक्स-संप्रदाय---जो कि पीछे सारे रूस में सर्वमान्य धर्म हो गया---का केन्द्र और तीर्थ सा बन गया। मास्को के ज़ारों का काम था अपने धर्म (ग्रीक अर्थोडक्स संप्रदाय) के प्रति अपनी अधिक श्रद्धा दिखला कर संप्रदाय की सहानुभूति प्राप्त करना। मेत्रोपोलितन् और उसका संप्रदाय ज़ार को मदद दे कर लाभान्वित हो सकते थे। इस प्रकार चौदहवीं सदी में जो मेत्रोपोलितन् और ज़ारों का गँठबंधन हुआ, वह बराबर लाल क्रान्ति तक उसी तरह चला आया। धर्म के अगुआ, ज़ार के अधिकार को अक्षुण्ण रखना अपना धर्म समझते थे।

क्रूर इवान् के समय में मास्को नगर की शकल में बहुत तबदीली हुई। बारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में शहर **क्रेम्लिन्** के सिर्फ $\frac{1}{3}$ हिस्से ही में बसा था। यह एक व्यापार का केन्द्र था, जिसकी रक्षा के लिए सेना का प्रबंध
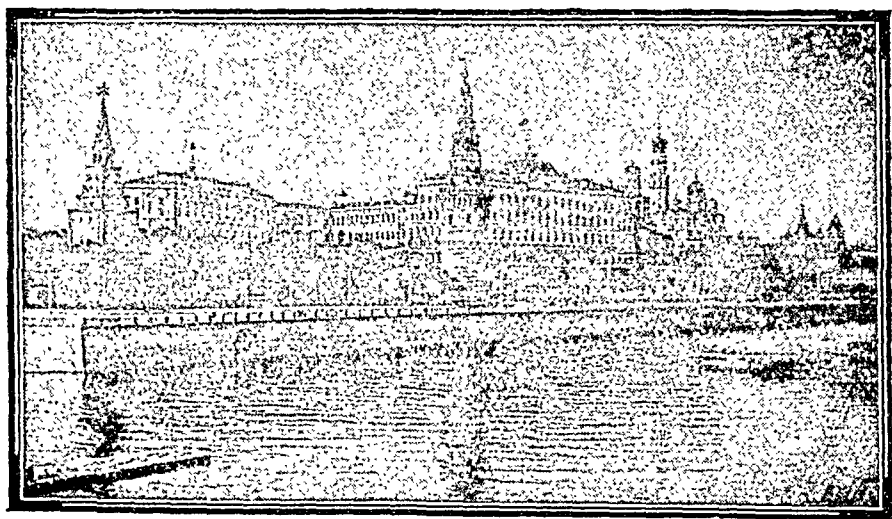
क्रेम्लिन् (मास्को)

था और चारों ओर लकड़ी का प्राकार था। तेरहवीं-चौदहवीं सदी में मास्को के तीन भाग थे। एक **क्रेम्लिन्** (क्रेम्ल=दुर्ग)—नगर का क़िला-बन्द भाग,

जहाँ कि सामन्त रहता था। दूसरा **पोसद्—क्रेम्लिन्** के बाहरवाला भाग जहाँ पर व्यापारी और शिल्पी आदि रहा करते थे; और जिसे चीनी व्यापारियों की आमदरफ़्त तथा चीनी माल रखने के कारण पीछे **किताई-गोरद्** (चीनी नगर) कहा जाने लगा। तीसरा भाग मास्को नदी के पार था, जिसे **ज़ारेच्ये** कहते थे। यह एक बड़ा गाँव सा मालूम पड़ता था।

सोलहवीं सदी के मध्य में आनेवाले पश्चिमी यात्रियों ने लिखा है कि मास्को लन्दन से बड़ा है। मास्को में सिबेरिया का समूर, रेशम चीन से, मसाला भारत से और बहुत सी दस्तकारी की चीज़ें यूरोप से आती थीं। मास्को में बहुत से शिल्पकार थे, लेकिन प्रायः सभी ज़ारों के दरबार और उसके दरबारियों की कृपा पर आश्रित थे।

मरने से कुछ समय पहले क्रूर इवान् ने अपने पुत्र इवान् से झगड़ कर उसे मार डाला। ज़ार के उत्तराधिकारी थे एक बच्चा **दिमित्री** और एक निर्बुद्धि **फ़ेदोर्। फ़ेदोर्** (१५८४–१५९८) को दरबारियों ने गद्दी पर बैठाया। वह नाममात्र का ज़ार था, सारा काम उसका साला **बोरिस् गोदुनोफ़्** करता था। **फ़ेदोर्** के मरने के बाद **गोदुनोफ़्** (१५९८–१६०५) ज़ार चुना गया। **फ़ेदोर्** निस्संतान मर गया और **दिमित्री** किसी दुर्घटना में मरा। **बोरिस्** के चुनाव को बड़े सामन्तों ने नहीं माना; क्योंकि बोरिस् छोटे सामन्तों में से आया था। बोरिस् भी क्रूर इवान् की ही तरह अत्याचार करता था। पुराने सामन्तों ने **रोमनोफ़्** सरदारों और **शुइस्की** सामन्तों के नेतृत्व में विद्रोह किया। बोरिस् के राज्यकाल ही में किसानों को धीरे धीरे दबा कर अर्द्धदास के रूप में परिणत कर दिया गया। यह वही समय था, जब हिन्दुस्तान में अक़बर शासन कर रहा था।

जिन किसानों को अर्द्धदास जैसा जीवन पसन्द नहीं था, वे घर-बार छोड़कर मास्को की अमलदारी के बाहर दोन् **उपत्यका** और **उक्रइन्** में चले गये। ये ही पीछे चलकर **दोन्** के कसाक् हुए।

१६०२–४ ई० में अकाल पड़ गया। किसान तथा दूसरे करदाता कर

देने में असमर्थ हो गये; जिससे आपस में बहुत झगड़े बढ़ गये। इस मौक़े को ग़नीमत समझ कर **पोलैंड** की नज़र मास्को की तरफ़ घूमी। उसने एक नक़ली **दिमित्री** प्रथम होने के दावादार के पक्ष में हो कर १६०५ में—जिस साल कि अकबर मरा—मास्को पर क़ब्ज़ा कर लिया। पीछे मास्को के सरदारों को अपनी ग़लती मालूम हुई। उन्होंने सामंत **वासिली शुइस्की** के नेतृत्व में नक़ली **दिमित्री** को मार डाला। **वासिली** खुद सिंहासन पर बैठा। दक्षिण के कुछ सामन्तों ने **वासिली** को ज़ार नहीं स्वीकार किया।
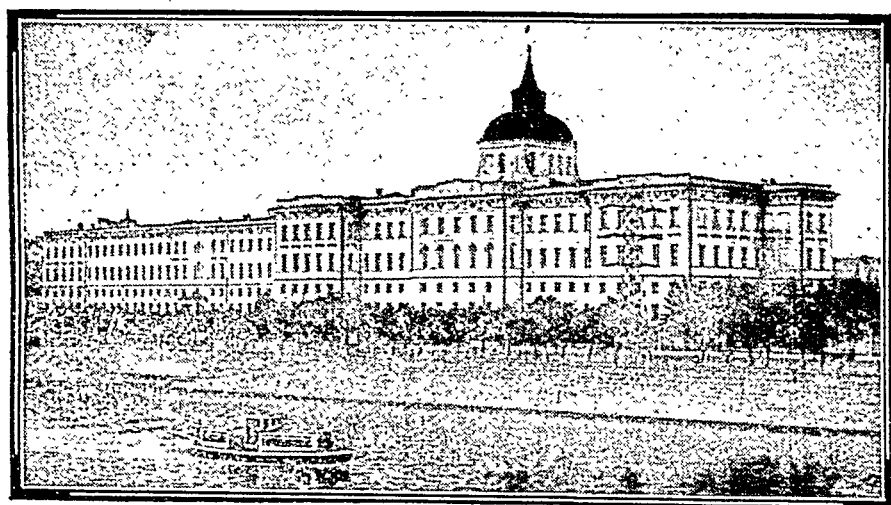
द्वरेत्स्त्रुदा (मास्को)

उन्होंने पहलेवाले दिमित्री को न मरा कह कर एक और **दिमित्री** के पक्ष में विद्रोह किया। इसी समय किसानों में भी धनी ज़मींदारों और सामन्तों के ख़िलाफ़ भाव फैल रहा था। किसानों का नेता था इवान् **बोलोत्निकोफ़्**। **बोलोत्निकोफ़्** की सेना मास्को की दीवारों के बिलकुल पास (क़ोलो-मेन्स्कोये गाँव) तक चली आई थी, लेकिन यहाँ उसे हारना पड़ा।

इधर दूसरे **दिमित्री** के पक्ष में होकर पोलों ने **कसाक्** और दूसरे असन्तुष्ट समुदाय को लेकर मास्को पर धावा बोला। मास्को से चन्द मील पर **तुशिनो** (एक क़िलाबन्द) गाँव में वह ठहरा। इस प्रकार **वासिली**

शुइस्की और द्वितीय **दिमित्री** दो ज़ार हुए। पीछे दोनों को हटा कर पोलिश् सामन्त व्लादिस्लाव ज़ार बना। पोल मास्को के शासक हुए। उनका बर्ताव रूसियों के साथ ख़राब था। वह अपने को विजेता और रूसियों को रैयत समझते थे। रूसियों को इससे बड़ी आत्म-ग्लानि हुई। निज्नी नोव्गोरद् (वर्तमान गोर्की) के व्यापारी **मिनिन्** ने घूम घूम कर देश की स्वतंत्रता के लिए धन जमा किया और सामन्त **पोज़ार्स्की** ने उसकी मदद की। १८२६ में इन दोनों के स्मृति-चिह्न लाल-मैदान में बने।
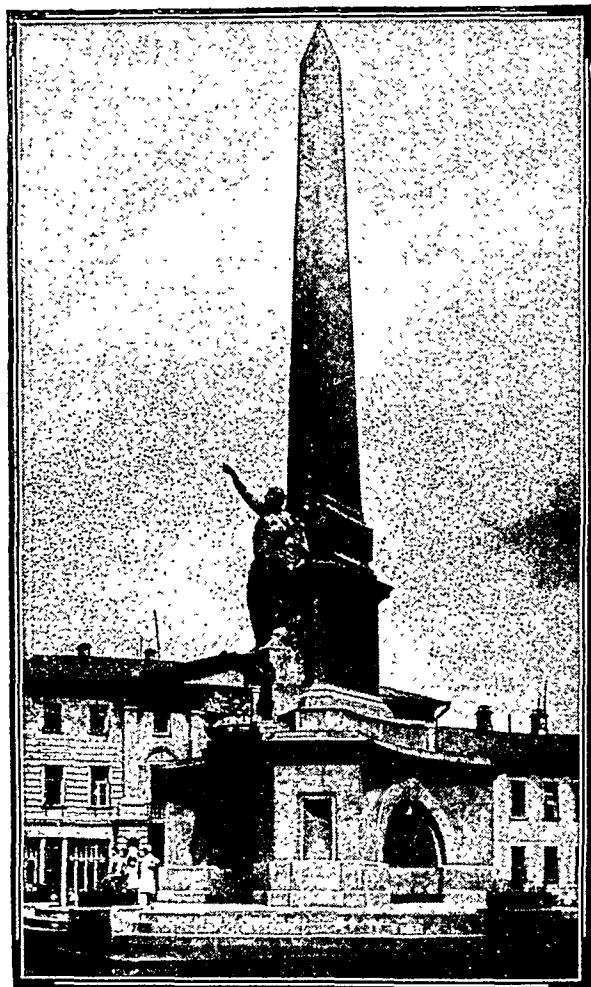
जय-स्तम्भ (मास्को)

अन्त में १६१२ में (जब कि जहाँगीर नूरजहाँ की सहायता से हिन्दुस्तान पर शासन कर रहा था) एक सामन्त **मिख़ाइल् रोमनोफ़्** (१६१३–४५ ई०) पोलों को हरा कर खुद

सिंहासन पर बैठा। इस प्रकार १६१३ से लेकर १९१७ तक—३०४ वर्ष—रोमानोफ़्-वंश ने रूस पर शासन किया। इसके शासन-काल में भी किसानों ने विद्रोह किया, लेकिन सामन्तों और अमीरों की मदद से दबा दिया गया।

प्रथम **रोमानोफ़्** के पुत्र **अलेख़्ज़ेइ मिख़ाइलोविच्** (१६४५–१६७६) के शासन काल में फिर जनता ने विद्रोह किया। इस विद्रोह को नमक-विद्रोह (१६४८) कहते हैं; क्योंकि यह नमक पर कर लगाने के ख़िलाफ़ हुआ था। १६६२ में ताम्र-विद्रोह हुआ था। ज़ार ताँबे का पैसा चला कर चाँदी के भाव बेचना चाहता था। **अलेख़्ज़ेइ** के अन्तिम शासनकाल (१६६७–७१) में **वोल्गा** और **उराल** के किसानों ने **स्तेपन् राज़िन्** के नेतृत्व में ज़मींदारों के ख़िलाफ़ घोर-विद्रोह किया। विद्रोह में भी किसानों को हारना पड़ा और राज़िन् को मास्को में लाकर प्राणदंड दिया गया। एक सौ साल बाद (१७७३–१७७५) फिर किसानों ने **येमेल्यन् पुगाचोफ़्** के नेतृत्व में ज़मींदारों के ख़िलाफ़ बग़ावत की। कज़ान के ग़रीब किसानों की हार हुई और मास्को में लाकर पुगाचोफ़् का सिर काटा गया। अठारहवीं सदी के आरंभ में मास्को की महिमा काफ़ी घट गई, जब प्रथम **पीतर** ने १७०९ में मास्को को बदल कर **बाल्तिक** के तट पर अपने बसाये **पीतर्-बुर्ग** नये नगर को अपनी राजधानी बनाई। इतना होने पर भी व्यापार, गृहशिल्प और उद्योग-धंधे के कारण मास्को अपने को काफ़ी सँभाल सका।

१७वीं १८वीं सदी में मास्को की जनसंख्या धीरे धीरे बढ़ती ही रही। **क्रेम्लिन्** अब भी शासन-केन्द्र था। उससे पूर्व **किताईगोरद्** और उसके बाहर **बेलीगोरद्** थे। ये प्राकार से घिरे हुए थे। **किताईगोरद्** की दीवारें अभी हाल में (१९२४ में) गिराई गईं। **बेलीगोरद्** का प्राकार १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गिराया गया। सड़कें केन्द्र **(क्रेमलिन्)** से चारों ओर को निकलती थीं; और वे बीच की वृत्ताकार दीवारों के द्वारों

को पार करती थीं। उस समय के मकान अधिकतर लकड़ी के थे। १८१२ में **नेपोलियन्** की फ़ौज मास्को में दाख़िल हुई। उस समय आग लगने से बहुत से मकान जल गये। लेकिन जब **नेपोलियन्** की फ़ौज चली गई, तो कई अच्छे अच्छे मकान बने। १८२० के बने कितने ही अच्छे मकान आज भी मौजूद हैं।

पीतरबुर्ग की तरह मास्को भी कला और शिक्षा का केन्द्र रहा। १८वीं सदी के मध्य में रूस का पहला विश्वविद्यालय मास्को में बना। मास्को विश्वविद्यालय ने रूसी शिक्षा के इतिहास और सार्वजनिक विचार के निर्माण में १८३०–१८४० में बड़ा काम किया।

१८४० में मास्को में कपड़े बनाने की पहिली मिल् स्थापित हुई; लेकिन मज़दूरों की कमी से काम आगे नहीं बढ़ा। १८६० में जब किसानों
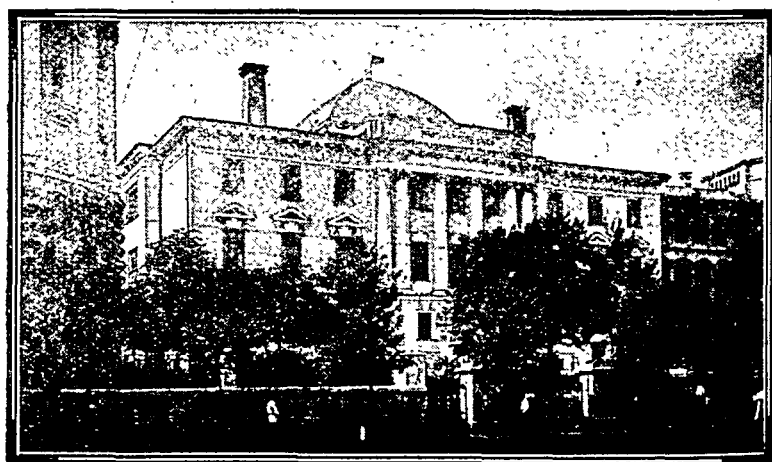
मास्को विश्वविद्यालय

को अर्द्धदासता से मुक्त कर दिया गया, तो खेतिहर मज़दूर **फैक्टरियों** में भरती होने लगे। कहने को किसान स्वतंत्र कर दिये गये थे, लेकिन अब भी उनकी भूमि के मालिक ज़मींदार थे।

१८६० से पहले मास्को अधिकतर धनी ज़मींदारों के रहने की जगह थी; और उन्हीं के बड़े बड़े महल नगर की शोभा बढ़ाते थे। पीछे हथियार बनाने का कारख़ाना, बुनने की मिल और कमकरों की बैरक शहर की बाहरी ओर बनने लगे। १६वीं और २०वीं सदी में मास्को में कई नाट्यशालाओं, चित्रशालाओं और वृहद् प्रकाशन-गृहों की स्थापना हुई। अन्त में पूँजीपतियों और व्यापारियों के हाथों में म्युनिसिपल शासन का काम चला गया। लेकिन ये पूँजीपति शासक शहर के पुनर्निर्माण में असमर्थ थे; क्योंकि हर एक सड़क को सीधी और चौड़ी करने में वैयक्तिक सम्पत्ति का सवाल आ जाता था।

राजनैतिक क्षेत्र में मास्को के पूँजीवादी ज़ारशाही की निरंकुशता को पसन्द नहीं करते थे, लेकिन तो भी मिश्री की डली मुँह में डाल कर
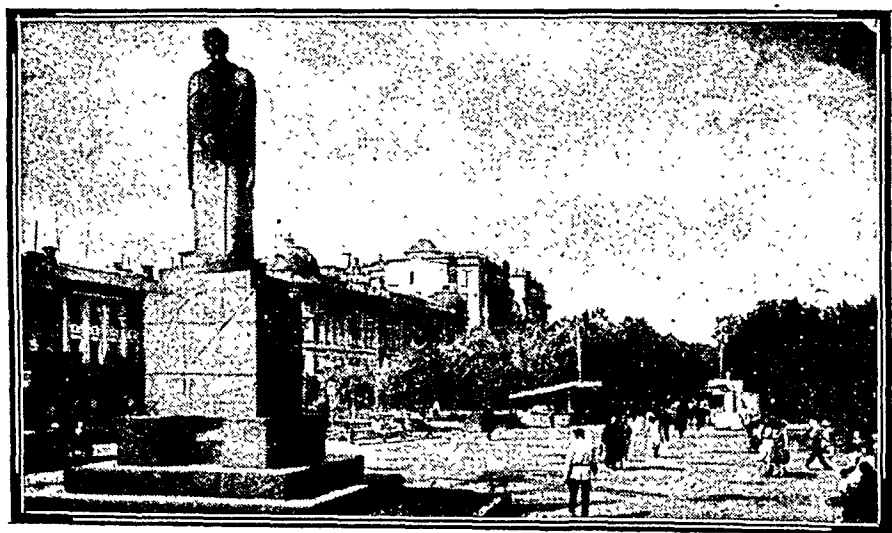
तिमिथियेफ़् की मूर्त्ति (मास्को)

'हुजूर सरकार माँ बाप' के साथ कुछ नर्म-नर्म आलोचना भर करते थे। कभी कोई ज़बान निकालने में थोड़ा आगे भी बढ़ता था, तो भी क्रान्ति और उसके आन्दोलन का विरोध करना वह अपना फ़र्ज़ समझता था। १६०५

में कमकर स्वतंत्रता के लिए ज़ारशाही से लड़ रहे थे। उनके दबाने के लिए जब पीतरबुर्ग से सेना आई, तो मास्को के पूँजीवादियों ने उसका स्वागत किया। अगस्त १९१७ में भी ऐसा ही हुआ। उस वक़्त मास्को के एक धनी पूँजीवादी **स्याबोशिन्स्की** ने सारे रूस के व्यापारियों और कारख़ानादारों के प्रतिनिधियों की कॉंग्रेस बुलाई थी, और प्रस्ताव पास किया था कि सभी कारख़ानों के दरवाज़ों में ताला लगा कर "भूख के कोमल हाथों" से क्रान्ति का गला घोंट देना चाहिए। लाल-क्रान्ति के समय भी उन्होंने ऐसा ही किया था। **पेत्रोग्राद्** की अपेक्षा यहाँ अधिक लड़ाई और ख़ूनख़राबी हुई थी। मास्को के पूंजीवादियों ने **मेन्शेविकों** और समाजवादी क्रान्तिकारियों को **सोवियत्** के ख़िलाफ़ मदद दी थी। उनके विरोध के शान्त होने पर भी ये पूँजीवादी चुप नहीं हुए; और वर्षों तक क्रान्ति के विरोध में षड्यन्त्र और नव-निर्माण के काम में रुकावट पैदा करते रहे।

१८८० के बाद रूस के क्रान्तिकारी आन्दोलन ने एक नया रूप धारण किया। इसने मार्क्सवाद को स्वीकार किया। १८९० में व्यापार ख़ूब चमका था; लेकिन उसीके साथ साथ मज़दूरों ने अपनी तकलीफ़ों को दूर करने के लिए एक के बाद एक हड़तालें कीं। पहले ये हड़तालें वेतन तथा अन्य शिकायतों के लिए हुई थीं, लेकिन पीछे इन्होंने राजनैतिक रूप धारण किया। "श्रमिक स्वातंन्त्र्य" ने इस आन्दोलन को बढ़ाया। १८७३ में **प्लेख़ानोफ़्** के नेतृत्व में मार्क्सवाद के सुप्रचार के लिए इस संस्था का संगठन विदेश में किया गया। रूस में प्रचार ग़ैरक़ानूनी तरीक़े से करना पड़ता था। विचारों के प्रचार के लिए कितने ही स्वाध्याय-केन्द्र बने थे। १८८० से १८९० तक के समय में इस तरह के बहुत से केन्द्र मास्को में स्थापित हो चुके थे। फिर मास्को से निकल कर इन संस्थाओं का प्रचार **तुला, इवानोवो, ख़रकोफ़्** आदि शहरों में होने लगा। ज़ब्त की हुई पुस्तकें बराबर प्रचारित होती थीं।

लेनिन् के पहले इस काम ने उतनी जड़ नहीं पकड़ी थी। १८९३ में लेनिन् पहली बार मास्को आये और वहाँ मध्यमवर्गी शिक्षित प्रतिनिधियों और विद्यार्थियों की एक सभा में वाद-विवाद किया। उनकी युक्तियों का नौजवानों पर बड़ा असर हुआ।

पुश्किन् की मूर्त्ति (मास्को)

१८९३–९४ में लेनिन् के नेतृत्व में "श्रमिक स्वातंत्र्य-युद्ध-संघ" नाम की ग़ैरक़ानूनी संस्था पहले **पीतरबुर्ग** में स्थापित हुई और पीछे मास्को में भी। इन संस्थाओं ने सभी राजनैतिक केन्द्रों को एक सूत्र में संबद्ध कर दिया।

बोल्शेविक पार्टी का पहले नाम था 'रूसी जनसत्ताक समाजवादी **श्रमिक दल**'। इसकी पहली कांग्रेस १८९८ में मिन्स्क में बुलाई गई थी; लेकिन जो केन्द्रीय समिति वहाँ चुनी गई, वह चन्द दिनों बाद ही गिरफ़्तार हो गई। सिर्फ 'रूसी' **जनसत्ताक** समाजवादी
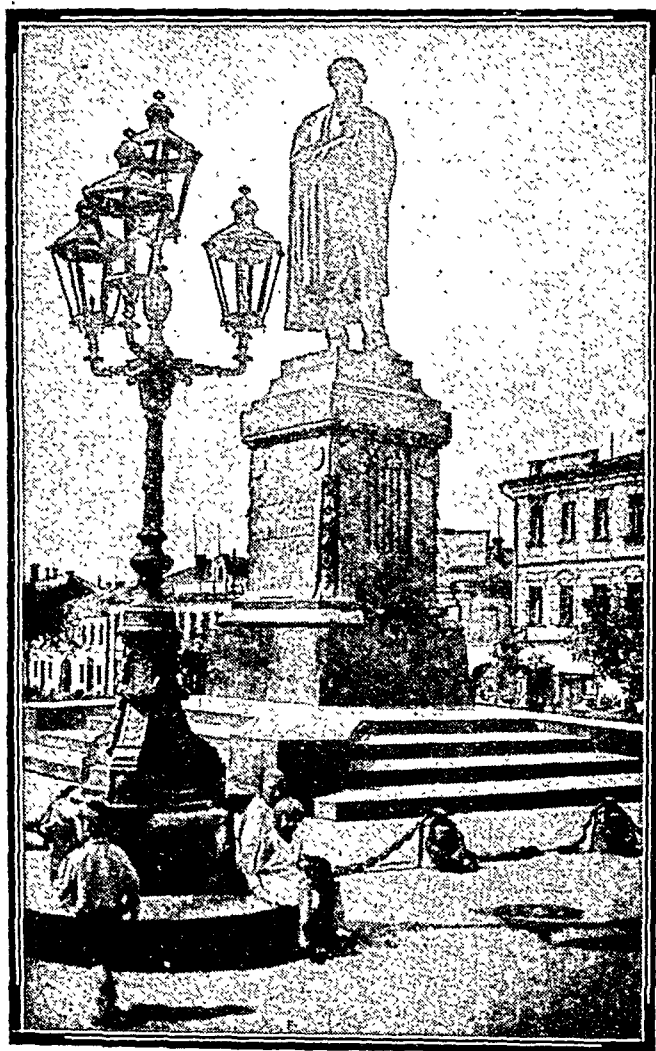
श्रमिक दल' नाम मात्र बाक़ी रह गया।

क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए लेनिन् ने १६०० के अन्त में "इस्क्रा" (चिनगारी) पत्र निकाला। दो साल वाद उक्त जनसत्ताक-समाजवादी-दल की (१६०३) दूसरी कांग्रेस बुलाई गई। इस कांग्रेस में पार्टी में मतभेद हो कर दो टुकड़े हो गये। बहुमत लेनिन् के पक्ष में था। बहुमत पक्ष या बोल्शेविक पार्टी लेनिन् के नेतृत्व में अलग हो गई। मेन्शेविक या अल्पमत पक्ष **मर्तोफ़्, अख़िल्रोद** आदि के नेतृत्व में अलग काम करने लगा। मास्को की क्रान्तिकारी संस्थाएँ लेनिन् के अनुयायियों के साथ थीं।

१६०२–३ में रोस्तोव् (दोन् पर) बाकू, **ओदेसा** आदि जगहों में भी हड़तालें शुरू हुईं। इनका संबंध राजनीति से स्पष्ट था। **उक्रइन्** और **वोल्गा** की उपत्यका में किसानों के आन्दोलन छिड़े। चारों तरफ़ वायुमंडल गर्म हो पड़ा और अन्त में ६ जनवरी १६०५ के हत्याकांड—जो कि **पीतरबुर्ग** में शरद्-प्रासाद के सामने ज़ार की आज्ञा से हुआ था—के वाद इसने क्रान्ति का रूप धारण कर लिया।

अप्रैल-मई १६०५ में तृतीय पार्टी काँग्रेस—जो सिर्फ बोल्शेविकों की थी—बैठी। उसने सशस्त्र युद्ध की तैयारी का प्रस्ताव स्वीकृत किया। जून के महीने तक मास्को के बोल्शेविकों ने कमकरों की सैनिक टुकड़ियाँ वनानी शुरू कीं। धन जमा किया गया। बारूदवाले हथियार ख़रीदे गये। पार्टी की प्रार्थना पर कमकरों ने ख़ुद नाना प्रकार के हाथ के बने हथियार तैयार किये। **सोकोल्निकी, इज़्माइलोवो** और दूसरे जंगलों में चाँदमारी का अभ्यास किया जाता था।

इस साल के अगस्त-सितंबर के महीनों में मास्को की उच्च शिक्षण-संस्थाएँ—विशेष कर विश्वविद्यालय—क्रान्तिकारी संस्थाओं के केन्द्र बन गये। क्रान्ति के इस भयंकर तूफ़ान को देखकर ज़ारशाही घबरा गई। उसने आजकल के फासिस्टों की तरह 'काले सैकड़ों' को संगठित किया

कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन और मज़दूर-संगठन के नेताओं पर प्रहार कर। इसी दल ने मास्को के प्रमुख बोल्शेविक् **बौमान्** को मारा। जब इस शहीद की अर्थी निकली तो उसके साथ एक लाख आदमी थे। अब तक रूस में ज़ारशाही के ख़िलाफ़ इतना बड़ा प्रदर्शन नहीं हुआ था। इस प्रदर्शन को मास्को की बोल्शेविक् समिति ने संगठित किया था। वे मास्को में रहनेवाली पलटनों में भी क्रान्तिकारी आन्दोलन को बड़े ज़ोर से फैला रहे थे। प्रायः हर एक पलटन के सैनिकों—और कसाकों तक—ने अपनी माँगें अफ़सरों के सामने पेश कीं।
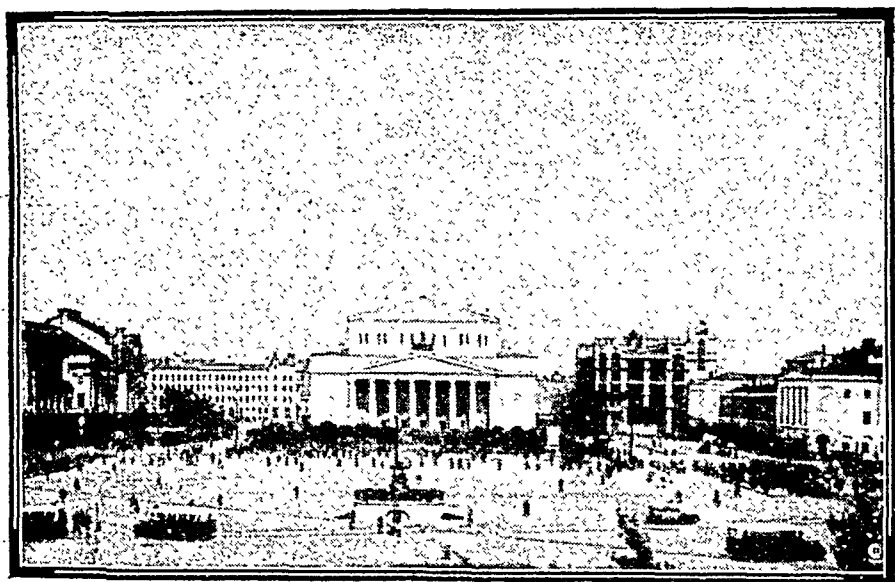
स्वेर्द्लोव्-चौक (मास्को)

१९०५ की गर्मियों में फिर सारे देश में हड़तालों का ताँता बँधा। अक्तूबर में एक सार्वजनिक हड़ताल हुई, जिसमें तार-घर, डाकख़ाने और रेलों तक के कमकर शामिल थे। इससे घबरा कर ज़ार ने ३० (१७) अक्तूबर १९०५ को जनता को कुछ अधिकार देने की घोषणा की, लेकिन आन्दोलन दबा नहीं। सारे देश में कमकर प्रतिनिधियों की सोवियतों द्वारा

लड़ाई के लिए जनता का एक नये ढंग का संगठन हुआ। ५ दिसंबर (२२ नवम्बर) को कमकर प्रतिनिधियों की सोवियत् मास्को में बनाई गई। इसमें सभी क्रान्तिकारी दलों, मजदूरसंघों आदि के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। सैनिक-प्रतिनिधि-सोवियत् भी स्थापित हुई, लेकिन उसकी बैठक एक ही बार हो पाई। १९ (६) दिसंबर को मास्को सोवियत् ने दूसरे दिन दोपहर से सार्वजनिक हड़ताल का प्रस्ताव पास किया। इसी हड़ताल को सशस्त्र युद्ध में परिणत करना था। निश्चित समय पर सभी कारखाने और रेलें बन्द हो गईं। २२ (९)[1] तारीख़ को मास्को में जगह जगह मोर्चेबन्दियाँ हो गईं। सारी जनता ने बाढ़ लगाने में मदद की। लड़नेवालों के लिए लोग भोजन लाते थे और अपने घरों में उन्हें छिपाते थे। उसी दिन सरकारी फ़ौजों ने फ़िद्लर हाई स्कूल को घेर कर गोलाबारी शुरू की। यहाँ मुक़ाबले में थे अधिकतर स्कूल के नौजवान। मास्को में यह लड़ाई १० दिन (३१ दिसंबर) तक जारी रही। लाल प्रेस्न्या के कमकरों ने अपनी वीरता का जबर्दस्त परिचय दिया। यद्यपि ज़ार की भारी सेना के सामने उन्हें हारना पड़ा, लेकिन कौन कह सकता है कि उनकी क़ुर्बानियाँ बेकार गईं। लाल प्रेस्न्या के कमकरों को पत्र लिखते वक़्त १९२० में लेनिन् ने कहा था—"दिसंबर १९०५ के सशस्त्र विप्लव के पहले रूसी जनता शोषकों के विरुद्ध सामूहिक सशस्त्र युद्ध के संचालन में अयोग्य थी, लेकिन दिसम्बर के बाद फिर वह वही जनता नहीं रह गई। वह बिलकुल बदल गई। विप्लव ने उन्हें पक्का कर दिया। उसने उन लड़नेवाले अगुओं को तैयार किया, जो १९१७ में विजयी हुए।"

१९०५ का विद्रोह दबा दिया गया और चारों तरफ़ निर्जीविता सी दिखलाई पड़ने लगी। लेकिन बोल्शेविक पार्टी ने अपने काम को एक मिनट

---

[1] पुरानी रूसी तारीखें अंगरेज़ी तारीख़ों से १३ दिन पीछे रहा करती थीं।

भी बन्द नहीं किया। ये बोल्शेविक ही थे, जिन्होंने फरवरी-मार्च १९१७ की प्रथम क्रान्ति कराने के लिए सारा आयोजन किया। मास्को के कमकरों ने **पेत्रोग्राद्** के कमकरों और सिपाहियों के कामों में सहायता पहुँचाई। बोल्शेविकों का बल बढ़ते देख **करेन्स्की** ने यह सोचकर मास्को में राज्यकान्फ्रेंस बुलाई कि इस प्रकार वह पेत्रोग्राद् के कमकरों और सैनिकों

क्रान्ति-म्यूजियम (मास्को)

के क्रान्तिकारी प्रभाव से बचा कर अपने मतलब के प्रस्ताव पास करा सकेगा। लेकिन इसका स्वागत मास्को के कमकरों ने एक सार्वजनिक हड़ताल द्वारा किया। १८ (५) सितंबर (१९१७) को मास्को के कमकरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियत् ने बोल्शेविकों के प्रस्ताव को स्वीकृत करते हुए कहा—"सभी राज्य-शक्ति सोवियतों को।"

पेत्रोग्राद् की तरह मास्को ने भी विजयी लाल-क्रान्ति में भाग लिया। मास्को के बोल्शेविकों ने युद्ध-संचालन के लिए सैनिक-क्रान्तिकारिणी-समिति स्थापित की। पूँजीवादी दलों ने मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्ति-कारियों के साथ मिल कर सार्वजनिक-रक्षा-समिति स्थापित की। इस

समिति ने धनिक सैनिकों (कैडेट) की मज़वूत शक्ति से मिलकर क्रान्ति का ज़वर्दस्त मुक़ावला किया। ६ नवंबर (२७ अक्तूवर) से १५ (२) नवंवर तक ख़ूनी गृहयुद्ध, मास्को के चौकों और सड़कों पर तथा क्रेमलिन् की चहारदीवारियों के चारों तरफ़ होता रहा। कमकरों ने सभी कारख़ानों और फैक्टरियों से निर्वाचित कर अपना लाल गारद कायम किया। क्रान्ति-कारी पलटनों से मिलकर इस लाल गारद ने क्रान्ति-विरोधियों के साथ लोहा लिया। **कैडेटों** और अफ़सरों ने **क्रेम्लिन्** की मोर्चावन्दी ख़ूव की थी। ५ दिन की लड़ाई के वाद—जिसमें क्रान्तिकारी कमकरों और सैनिकों ने अभूतपूर्व त्याग और साहस का परिचय दिया—दुश्मनों ने आधीनता स्वीकार की। इस लड़ाई में क्रान्ति-विरोधियों ने गिर्जों के घंटा-

नक्षत्रभवन (मास्को)
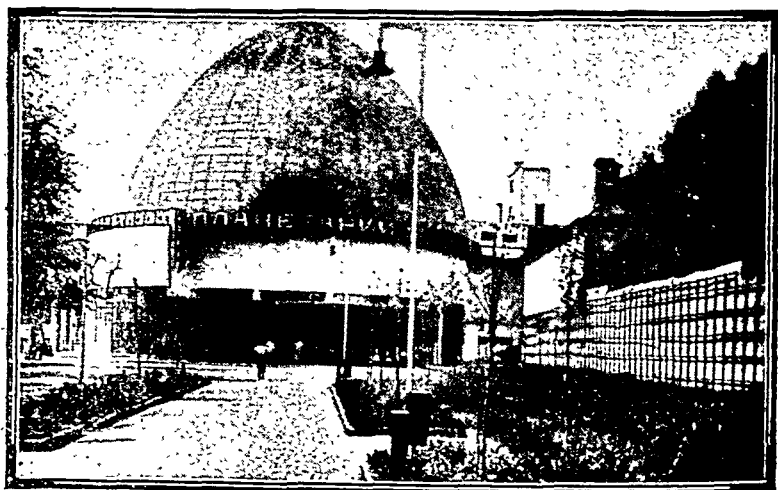
घरों तक पर मशीनगनें वैठाई थीं और ईसाई पुरोहितों और उनके धर्म की सहायता और सहानुभूति क्रान्ति-विरोधियों के साथ थी। क्रेम्लिन् के लिए लड़ने में क्रान्तिकारी वहुत संख्या में मारे गये। लाल मैदान पर

क्रेम्लिन् की दीवारों के पास इन वीरों की सामूहिक समाधि बनी हुई है।

क्रान्ति की विजय हुई। १५ (२) नवंबर १९१७ को मास्को में सोवियत शासन की दृढ़ नींव पड़ी। २५ (१२) मार्च १९१८ को—२०० वर्ष बाद—मास्को फिर राजधानी बना। लेकिन अब वह ज़ार की राजधानी न थी, बल्कि संसार के सर्व प्रथम साम्यवादी सरकार की राजधानी थी। पेत्रोग्राद् से राजधानी को मास्को बदलने की बात जब लेनिन् ने कही, तो लोगों ने कहा—"क्रान्ति के युद्ध की सफलता और उस वक़्त की कितनी ही आरंभिक घटनाएँ पेत्रोग्राद् में हुई हैं, इसलिए जनता के भावुक हृदय का उस नगर से विशेष प्रेम हो गया है।"
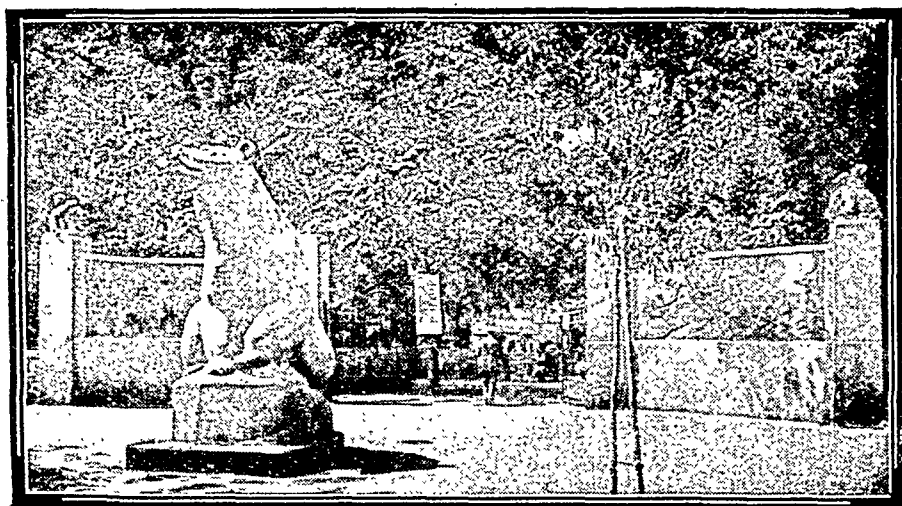
चिड़ियाख़ाना (मास्को)

लेनिन् ने कहा—"भावुकता पैदा करनेवाला सोवियत्-शासन है। मास्को चले जाने पर लोगों का वैसा ही प्रेम मास्को के साथ भी हो जायगा।"

***　　　***

नव-निर्माण—सोवियत् शासन की स्थापना के समय रूस के अन्य

भागों की तरह मास्को की भी आर्थिक अवस्था नष्टप्राय हो चुकी थी। महायुद्ध के समय उसके जन धन का दोहन हुआ था। १९१७—२० में घर और बाहर के शत्रुओं ने सोवियत्-सरकार पर ज़बर्दस्त प्रहार करना शुरू किया। इस प्रकार मास्को के पुनर्निर्माण की तो बात ही क्या, ईंधन और कच्चे माल के अभाव से रही सही फ़ैक्टरियों में से भी बहुत सी बन्द हो गईं।

गृह-युद्ध की समाप्ति के बाद पुनर्निर्माण का काम शुरू हुआ। बन्द हुई फ़ैक्टरियों और कारख़ानों को फिर से चालू किया गया। मास्को की म्युनिसिपलिटी की हालत भी धीरे धीरे सुधरने लगी। पहले पहल कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार का सारा ध्यान उद्योग और कृषि की ओर था; लेकिन प्रथम और द्वितीय पंचवार्षिक योजनाओं ने—विशेष कर १९३१ के बाद—नगर के जीवन में भारी परिवर्तन किया। १० जुलाई १९३५ को सरकार और पार्टी ने मास्को के पुनर्निर्माण की दस वार्षिक योजना स्वीकार की जो कि १९४५ में ख़तम होगी। इस योजना के अनुसार अभी ही मास्को की सड़कों और मकानों में भारी परिवर्तन होने लगा है; और सारी योजना के समाप्त होने के बाद तो उसका रूप ही बदल जायगा।

मास्को के पुराने मुहल्लों—जहाँ कमकरों की **दरिद्रता** साकार रूप धारण किये रहती थी—का अब पता नहीं। उन जगहों पर अब चौतल्ले पंचतल्ले हवादार साफ़ मकान हैं। स्कूल, अस्पताल, प्रसूति-गृह बने हैं। पानी, बिजली, गैस, पाखाने के पंपों का इंतज़ाम है। दो ज़मीन के भीतर जानेवाली रेलें तैयार हो गई हैं और तीसरी बन रही है। मास्को पहले जितना पानी ख़र्च करता था, अब उससे ६ गुना ज़्यादा ख़र्च करता है। सड़कों का क्षेत्रफल २० गुना बढ़ा है।

उद्योग—(प्रथम पंच वार्षिक योजना)—ज़ारशाही के ज़माने में भी मास्को उद्योग-केन्द्र था। लेकिन क्रान्ति के बाद फ़ैक्टरियों और कारख़ानों
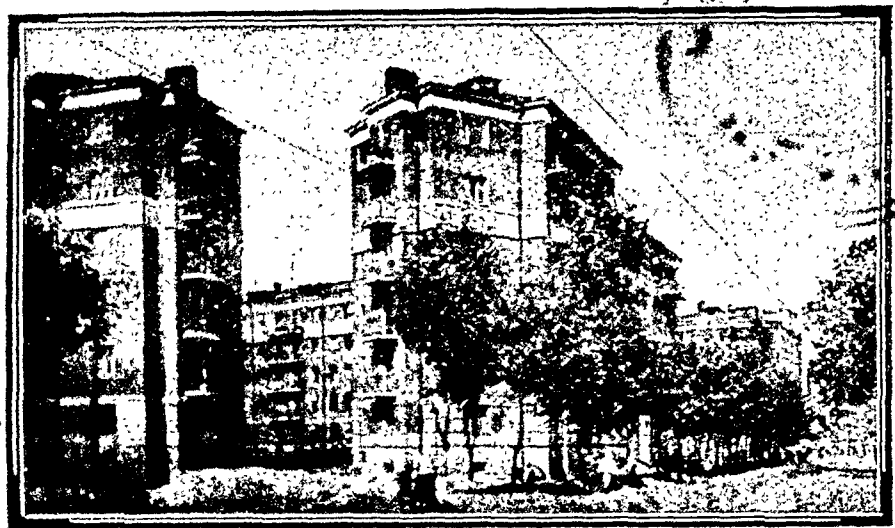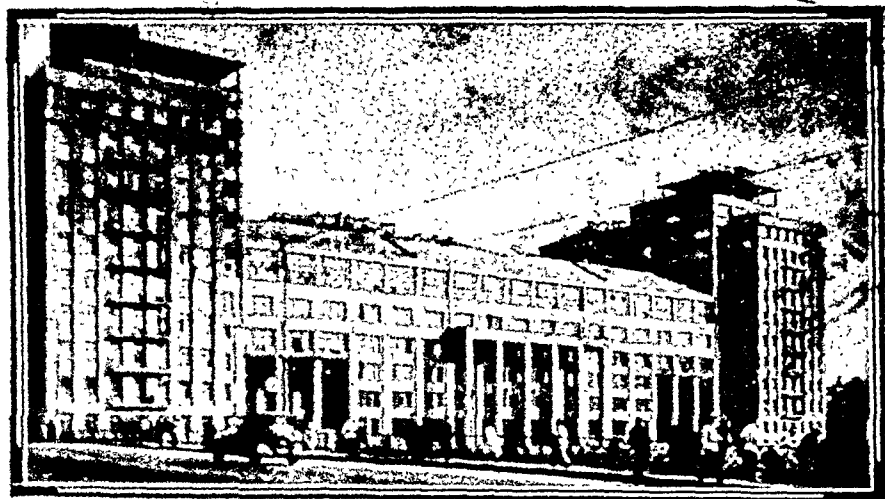
कमकरों के घर (मास्को)

कमकरों के घर (मास्को)

का जो परिवर्तन और परिवर्द्धन हुआ है, इसका उससे मुक़ावला नहीं किया

जा सकता। भारी उद्योग[१] बहुत तेज़ी से बढ़ा है। हलका[२] उद्योग और खाद्य-उद्योग का जड़मूल से पुनर्निर्माण हुआ है। मशीनों में नये से नये आविष्कारों का प्रयोग किया गया है।

कुछ उद्योग तो बिलकुल नये—मास्को ही के लिए नहीं, बल्कि सारे देश के लिए—स्थापित हुए हैं। मोटर, माप-यंत्र, घड़ी, एनिलाइन के

कमकर-परिवार (मास्को)

रंग, बाइसिकिल, बिजली का सामान, आदि चीज़ें बनानेवाली फ़ैक्ट-रियाँ इसी प्रकार की हैं। संसार-प्रसिद्ध फ़ैक्टरियाँ स्तालिन्-मोटर-फैक्टरी,

---

[१] लोहे, कोयले आदि आरंभिक वस्तुओं के उत्पादन तथा कपड़े आदि बनानेवाली मशीनों को बनानेवाले कारख़ाने—अर्थात उद्योग के मूलभूत उद्योग को भारी उद्योग कहते हैं।

[२] भारी उद्योग से उत्पन्न सामग्रियों से लेकर आगे चलनेवाला उद्योग हलका उद्योग कहलाता है।

हँसुआ-हथौड़ा-फैक्टरी, कुइविशेफ्-विद्युत्-कारखाना आदि तो प्रायः शून्य से आरंभ हुये हैं।

स० स० स० र० के उद्योग का १५ सैकड़ा मास्को में है। १९३६ के आरंभ में मास्को में २२१० कल-कारखाने थे। सोवियत् के भारी उद्योग की उपज में मास्को का हाथ ५२·३ सैकड़ा (१९३६) है। १९३५ में जितना माल मास्को के कारखानों ने बनाया, वह लड़ाई से पहले का दस गुना था। मास्को के सभी कल-कारखाने समाज के हैं; व्यक्ति कहीं मालिक नहीं है। १९३५ में यहाँ के कल-कारखानों में १९ लाख कमकर थे।
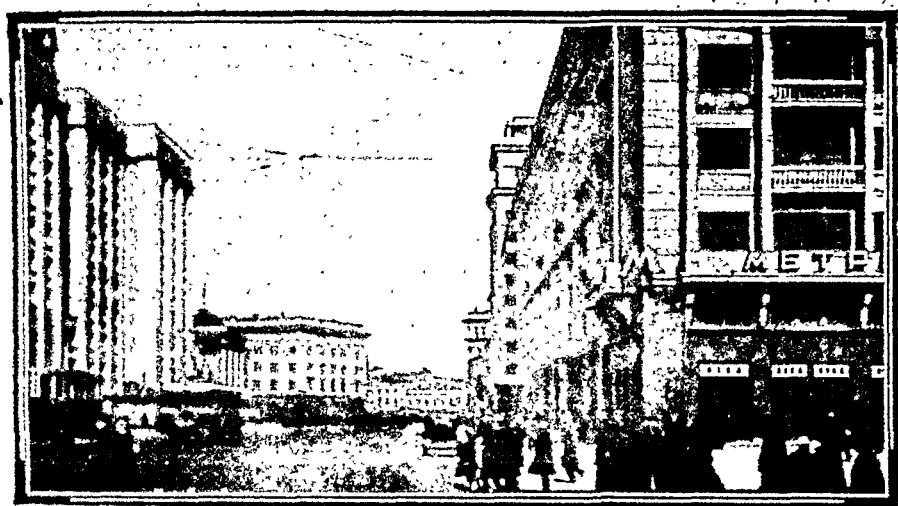
नये मकान (मास्को)

द्वितीय पंचवार्षिक योजना—प्रथम पंचवार्षिक योजना के अन्तिम साल में मास्को के उद्योग-धंधों ने ४॥ अरब रूबल का माल तैयार किया था। द्वितीय पंचवार्षिक योजना के अन्त (१९३७) में उसने १० अरब रूबल का माल तैयार किया। इसीसे मालूम कर सकते हैं कि मास्को के कल-कारखानों में कितनी तरक्की हो रही है। सरकार अब अधिक उद्योग-धंधे मास्को में नहीं बढ़ाना चाहती। वह चाहती है कि उद्योग-धंधे सारे देश में बराबर बँटें जिसमें अधिक जन और धन एक ही जगह जमा न हों तथा

लड़ाई के वक़्त बहुत संकट का सामना न करना पड़े।

द्वितीय पंचवार्षिक योजना में प्रथम की अपेक्षा मोटरों की उपज चौगुनी बढ़ गई। दूसरी मशीनों की तीनगुनी, और बारीक यंत्रों की बारह गुनी। ३० अगस्त १९३५ को **दोनेत्स** की कोयले की ख़ान में **अलेख़ेइ स्तख़ानोफ़्** ने ४ साथियों की मदद से ६ घंटे के भीतर ७ टन की जगह १०२ टन कोयला खोद निकाला था, जिसने वहीं श्रम की शक्ति को नहीं बढ़ाया बल्कि **स्तालिन्** के उत्साह दिलाने के कारण आज **स्तख़ानोफ़्**-आन्दोलन सारी सोवियत्-भूमि में फैल गया है। मास्को के कारख़ानों में तो, इस आन्दोलन का ख़ास तौर से अधिक प्रचार है। यहाँ के सैकड़ों स्ताख़ानोफ़ी कमकरों ने बड़े से बड़े सरकारी पदक और पारि-तोषिक प्राप्त किये हैं।

मास्को में ११ रेलें मिलती हैं, इसीलिए माल और मुसाफ़िरों का आना जाना बहुत ज़्यादा है। १९३५ में यहाँ २ करोड़ २२ लाख मेट्रिक टन (१ टन = ·९८४ टन या २५ मन से कुछ ऊपर) माल में १ करोड़ ८८ लाख टन माल आनेवाला और ३४ लाख टन माल जानेवाला था। हर साल यह बढ़ रहा है; और यूरोप में लन्दन, बर्लिन या किसी और जगह इतना माल आता जाता नहीं।

मुसाफ़िरों के यातायात में भी इसी तरह वृद्धि हुई है। युद्ध के पहले मास्को में १ करोड़ ६० लाख मुसाफ़िर आने जानेवाले थे; लेकिन १९३५ में उनकी तादाद १४ करोड़ ५ लाख हो गई। शहर के बाहरी छोरों पर रहनेवाले मुसाफ़िरों में और भी ज़्यादा वृद्धि हुई है। जहाँ युद्ध से पहले ऐसे मुसाफ़िरों की तादाद सवा करोड़ थी, वहाँ १९३५ में १३ करोड़ ४५ लाख हो गई। अब शहर के छोरों पर जानेवाली सभी रेलें बिजली से चलती हैं। नई योजना में माल के स्टेशनों को शहर की सीमा से बाहर रखना तय किया गया है और सुरंगों के द्वारा मास्को में आनेवाली रेलों का सम्बन्ध जोड़ा जा रहा है।
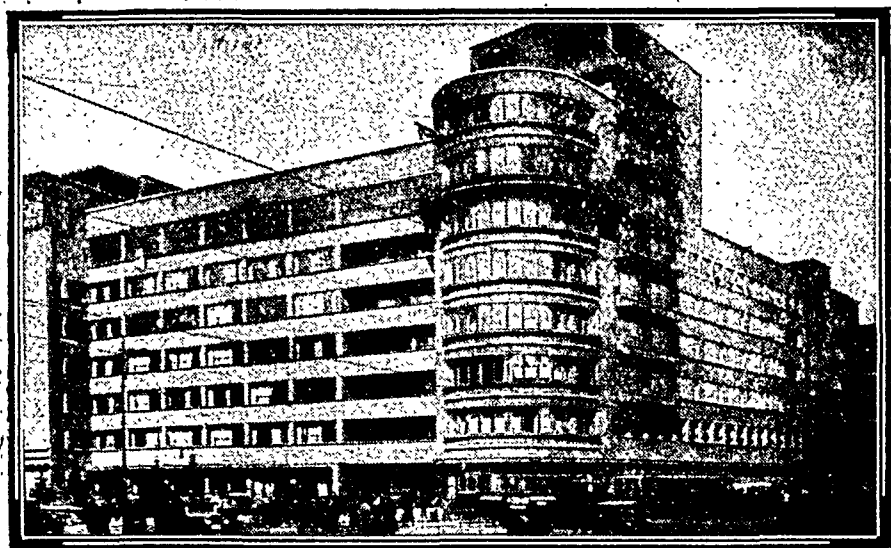
सरकारी आफ़िस (मास्को)

मास्को-वोल्गा नहर—मास्को प्रान्त में बहुत सी नदियाँ हैं। इन नदियों के ज़रिये देश के दूसरे भागों से मास्को का संबंध जोड़ने का सरकार को ख़याल आया। इससे पहले उसने बाल्तिक्-समुद्र और श्वेत-समुद्र को नहरों से मिला दिया था। दो साल के परिश्रम के बाद उसने १२८ किलोमीतर (प्रायः ९० मील) लंबी ८५.५ मीतर (२५० फ़ीट से अधिक) चौड़ी और ५.५ मीतर (१७ फ़ीट) से अधिक गहरी नहर खोदकर **वोल्गा** को मास्को नदी से मिला दिया गया। इस नहर के ज़रिए मास्को और यऊज़ा नदियों का पानी और गहरा हो गया है। मास्को में १५० कीलो-मीतर तथा यऊज़ा में ५९ किलोमीतर लंबा गहरा जलमार्ग तैयार हुआ है। कुल मिला कर २४० ताले, पंप-स्टेशन, छोटे स्टेशन, बिजली के पावरहाउस और पुल इस नहर पर बनाये गये हैं। मास्को-**वोल्गा** नहर संसार में अपने किस्म की सब से बड़ी नहर है। इस नहर के द्वारा कास्पियन, **बाल्तिक्** और श्वेतसागर के स्टीमर अब मास्को पहुँचने लगे हैं। पूर्वी देशों से इमारत बनाने का सामान दक्षिण से अनाज़ और कोयला, कास्पियन से

मछली और पेट्रोल, **करेलिया** से काग़ज़ बनाने का पल्प, वोनेगा झील के तट से संगखारे की पट्टियाँ और श्वेत सागर से एपेटाइट (रसायनिक खाद) अव मास्को पहुँचने लगी हैं। हर साल डेढ़ करोड़ टन माल आने का
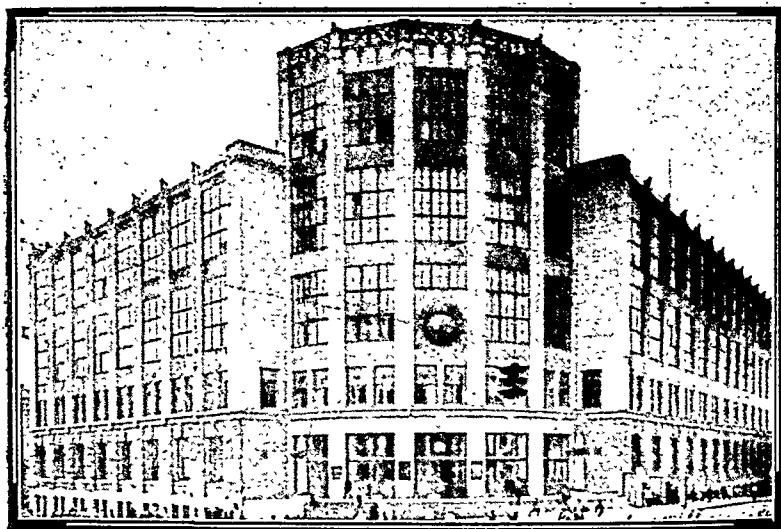
केन्द्रीय तारघर (मास्को)

प्रवन्ध है। इसके साथ ही इस नहर द्वारा **मारीइन्स्क-नहर-जाल** (श्वेत सागर और वाल्तिक् सागर को मिलाने वाली नहरें) की दूरी १ हज़ार किलोमीतर कम हो गई। इसके साथ नहर ने एक और वड़ा काम किया है। उसने ६॥ लाख घनमीतर की जगह ४० लाख घनमीतर पानी प्रति-दिन मास्को नगर को देने के लिए मास्को नदी को तैयार कर दिया। इस नहर के कारण मास्को (मास्क्वा) **यऊज़ा** और **स्खोद्न्या** नदियों का पानी वहुत वढ़ गया है।

शिक्षा—मास्को के प्रारंभिक और हाई स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या ६ लाख १४ हज़ार है। इनमें वे विद्यार्थी नहीं गिने गये हैं, जो थोड़े थोड़े समय के पाठ्य विषयों को ले कर फैक्टरियों

के स्कूलों तथा दूसरी जगह पढ़ते हैं। १९३७ में मास्को ने २५ करोड़ रूबल (१२ करोड़ रुपया) अपने नगर की शिक्षा पर ख़र्च किया। १९३८ के वजट में ३७ करोड़ ६० लाख रूबल (प्रायः १८ करोड़ रुपया) ख़र्च किया जानेवाला है। इसमें से ७॥ करोड़ रूवल मास्को के ६० नये स्कूलों की इमारतें वनाने में ख़र्च होंगे। ये मकान नये ढंग के वनेंगे। हर एक स्कूल के साथ साथ वच्चों के क्लवघर, स्वाध्याय-केन्द्र आदि भी शामिल होंगे। हाई स्कूलों में १९३६ की अपेक्षा १९३७ में ४२ हजार विद्यार्थी अधिक वढ़े हैं। १९३८ में ९॥ हज़ार विद्यार्थी हाई स्कूल से निकलेंगे। विद्यार्थियों को विशेष छात्रवृत्ति देने के लिए २२ लाख रूवल (१० लाख रुपये से ऊपर) अलग रखे गये हैं। १९३८ के वजट में २१ लड़कों के क्लव, १४ वालचर-भवन, १७ टेकनिकल स्टेशन, ८ क्रीड़ाकेन्द्र, ८ घुमक्कड़-निवास, २ शिशुकला-शिक्षणगृह, १ ललित-कला-विद्यालय, १५ वालपुस्तकालय, १ वालचर-कैम्प, अनेक तैराकी स्थान, और वालकों के उद्यान तथा क्रीड़ा-क्षेत्र वनाने मंजूर हुए हैं। इसके लिए ३ करोड़ ५ लाख रूवल अलग रखा गया है। १९३७ में इस मद में १ करोड़ ही ख़र्च किया गया था। १९३८ में मास्को में भी एक विशाल वालचर-प्रासाद के निर्माण की योजना तैयार होने वाली है।

विद्यार्थी ७वें साल में जाने पर स्कूल में भेजे जाते हैं। स्कूली अवस्था के पहले के लड़कों की शिक्षा के लिए भी मास्को का शिक्षा-विभाग विशेष ध्यान देता है। १९३८ में ८५ हज़ार ऐसे लड़के किंडर गार्टन (वालोद्यानों) में शिक्षा पा रहे हैं। नये किंडर-गार्टनों के वनाने के लिए मास्को शिक्षा-विभाग ने ३ करोड़ ४० लाख रूवल मंजूर किया है। यह रक़म भी पिछले साल से दूनी है। ३५ लाख रूवल वच्चों की क्रीड़ा-भूमि के वढ़ाने और हिफ़ाज़त करने में ख़र्च किये जायँगे।

४ करोड़ रूवल इसलिए अलग रखा गया है कि उसे शिशुभवनों तथा और स्वास्थ्य-संवंधी उपायों—विशेष कर गर्मी के दिनों में शहर के वाहर के हरे-भरे जंगलों में वच्चों के कैम्प लगवाने—में ख़र्च किया जाय।

१६३८ में ६ हज़ार नये अध्यापक पुस्तकाध्यक्ष, स्कूली अवस्था से पहले के बच्चों के लिए तैयार हो कर निकलनेवाले हैं। १४ हज़ार ५ सौ अध्यापक
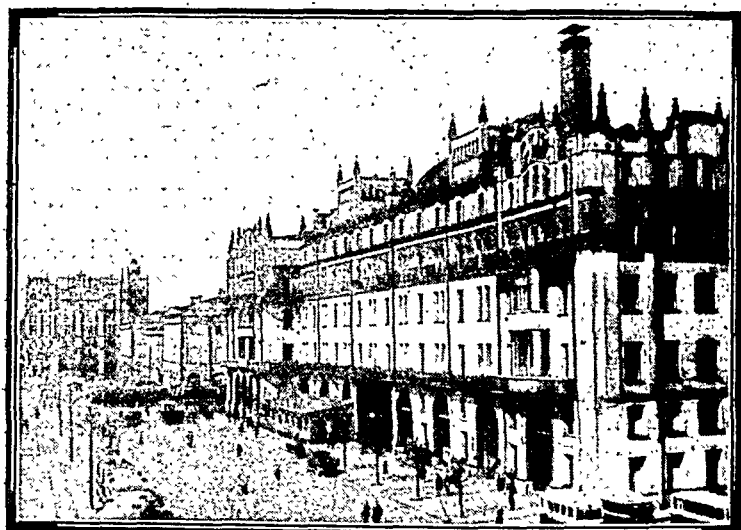
मेत्रोपोल् होटल (मास्को)

अपनी शिक्षण-योग्यता बढ़ाने के लिए विशेष पाठ्य-श्रेणियों में पढ़ रहे हैं। इसके लिए दो करोड़ २० लाख रूबल अलग रखा गया है। ४० लाख रूबल ख़र्च किया जा रहा है, एक ट्रेनिंग कालेज की इमारत पर।

स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन में शारीरिक और दिमाग़ी योग्यता—दोनों की अधिक ज़रूरत है। इसीलिए इस आन्दोलन ने कमकरों में ज्ञान की प्यास वहुत अधिक वढ़ा दी है। और वहुत से कमकर रात्रि-पाठशालाओं तथा दूसरे शिक्षणालयों में टेकनिकल और वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन कर रहे हैं। कितने ही विदेशी भाषाओं और साहित्य की कक्षाओं में जुट रहे हैं। एक तरह कहा जा सकता है कि मास्को का हर एक कमकर किसी न किसी कक्षा का विद्यार्थी है। १६३० में मास्को में ७ साल (८ से १४वें साल) की अनिवार्य शिक्षा की गई। १६३२ से इसे मास्को के लिए १०

माल कर दिया गया। निःशुल्क की तो बात ही क्या स्कूलों में दोपहर के वक्त विद्यार्थियों को गर्मागर्म भोजन मिलता है, जिसके लिए बहुत कम को
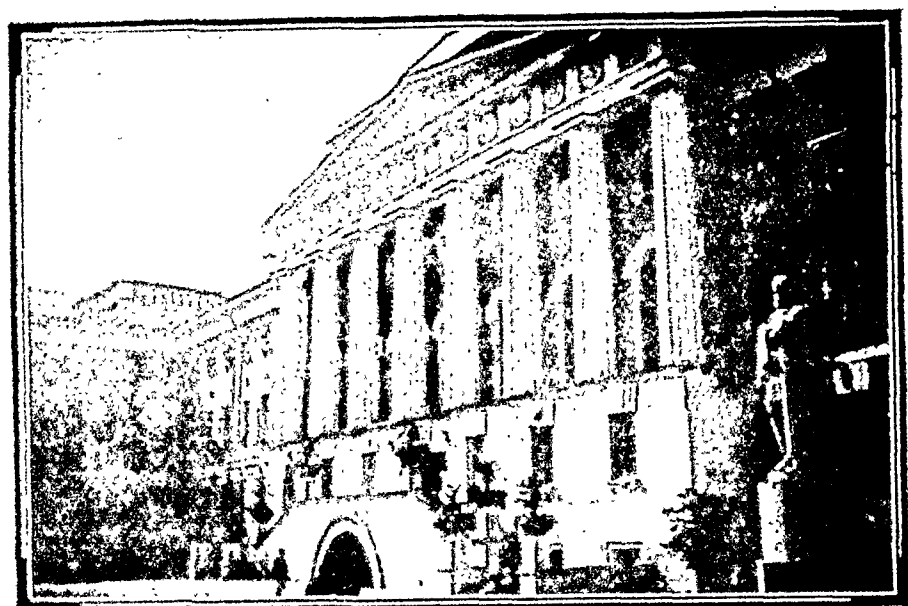
विश्वविद्यालय (मास्को)

नाम मात्र मूल्य देना पड़ता है। गर्मियों के दिनों में विद्यार्थियों को शहर से दूर दूर ग्रीष्म-कैम्पों में भेजा जाता है। १९३६ में ऐसे भेजे हुए विद्यार्थियों की संख्या ४२ हज़ार थी।

विद्यार्थियों की संख्या कितनी अधिकता से बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है, कि १९३५ में ७२ बड़े बड़े स्कूल बनाये गये। १९३६ में १०५ बनाये गये। और अकेले १९३८ में ४०० बनाये जा रहे हैं। इन स्कूलों की इमारतें मामूली नहीं हैं, ३–३, ४–४ तल्ले की इमारतें जिनमें सिमेंट, लोहा और कांच ही अधिक दिखाई पड़ते हैं। भिन्न भाषा-भाषी जातियों—जैसे तातार, मोर्दविन्, और रोमनी (जिप्सी) के लिए मास्को में अलग स्कूल हैं। अंग्रेज और अमेरिकन विशेषज्ञों के लड़कों के लिए अंग्रेजी स्कूल भी मौजूद है।

१९३६ के आरंभ में मास्को में १०० टेकनिकल स्कूल थे। १९१३ में सिर्फ २२ स्कूल सो भी बहुत छोटे छोटे। १९१३ में इन स्कूलों में पढ़ने-वाले लड़कों की संख्या ६००० थी, और १९३६ में ३५०००। १९३६ में कमकरों के विशेष शिक्षणालय (ख़्फक्) ३२ थे जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी थे। इन शिक्षणालयों का संबंध विश्वविद्यालयों से है और इनमें पढ़ाई हाई स्कूल जैसी होती है। यहाँ तैयारी करके विद्यार्थी फिर उच्च शिक्षा के लिए आगे बढ़ सकते हैं। क्रान्ति के पहले ऐसे स्कूलों का नाम न था। १९३६ के आरंभ में फैक्टरी उम्मेदवारों के ११८८ कूल थे, जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी ५४४ प्रकार के विषयों को पढ़ कर अपनी योग्यता बढ़ाते थे। क्रान्ति के पहले उच्च शिक्षा के ३६००० विद्यार्थियों के लिए १३ शिक्षणालय थे। किसानों, कमकरों और पिछड़ी जातियों का शायद ही कोई विद्यार्थी इनमें पढ़ सकता था। लेकिन क्रान्ति के बाद मास्को के कालेजों और विश्वविद्यालय में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या ९० हज़ार से ज्यादा है। अधिकांश विद्यार्थी सरकारी छात्रवृत्ति पाते हैं। कितने मुहल्ले के मुहल्ले ऐसे हैं जहाँ छात्र-छात्राएँ ही रहती हैं।

पुस्तकालय—१९३४ के आरंभ में स्कूलों और फैक्टरियों के पुस्त-कालयों को छोड़ देने के बाद २००० से अधिक पुस्तकालय थे। सब से बड़ा पुस्तकालय है, अखिल-संघ-लेनिन्-पुस्तकालय। यह पुस्तकालय जिस मकान में इस वक़्त है, उसे शिल्पी बाजेनोफ़् ने १७७० में बनाया था। लेकिन अब पुस्तकालय को और बढ़ाने के लिए बड़ी इमारत बन रही है, जिसका एक हिस्सा तैयार भी हो गया है। १९३६ में इसमें ६६ लाख पुस्तकें थीं। इस वक़्त सोवियत्-संघ के पुस्तकालयों में इसका दूसरा नंबर है। लेकिन नई योजना के मुताबिक इसमें एक करोड़ २० लाख पुस्तकें होंगी और इस प्रकार यह संसार का सब से बड़ा पुस्तकालय होगा। दुर्लभ ग्रन्थों के विभाग में स्वदेश और विदेश की छपी १ लाख पुस्तकें मौजूद हैं। इनमें कितनी ही १५५० ई० के पहले की छपी तथा ग़ैरक़ानूनी रूसी क्रान्ति-

क़ारी साहित्य की पुस्तकें भी हैं। हस्तलेख-विभाग में ६० हज़ार पुस्तकें हैं, जिनमें पुश्किन्, गोगोल् और दूसरे रूसी लेखकों के हस्तलेख भी हैं। सड़क
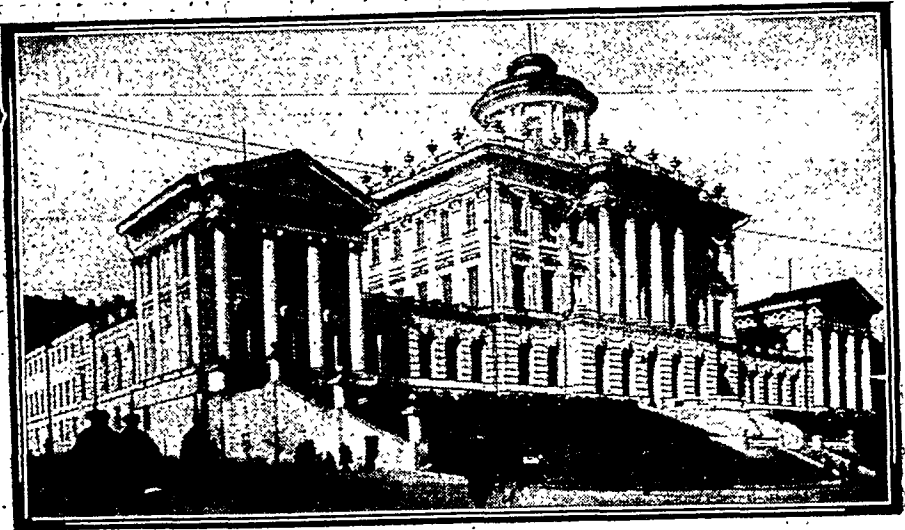
लेनिन्-पुस्तकालय (मास्को)
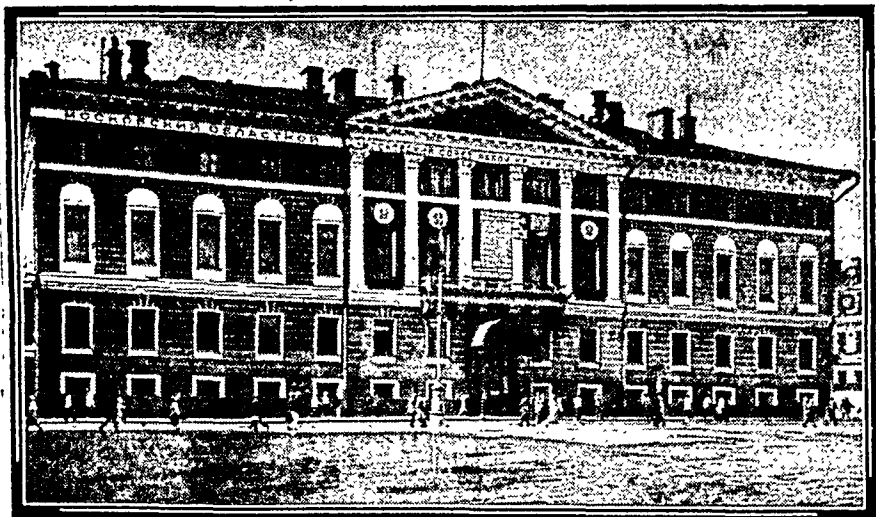
मास्को-सोवियत् (मास्को)

की दूसरी तरफ़ साहित्य-संग्रहालय है। इसमें १७ वीं शताब्दी से ले कर

२०वीं शताब्दी के प्रथम पाद तक रूसी साहित्य-संबंधी सामग्री जमा की गई है। इसमें लेखकों के ही जीवन के संबंध में नहीं, बल्कि तत्कालीन जनता के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक जीवन से संबंध रखनेवाली सामग्री भी जमा की गई है। हस्तलेख-विभाग में १५ लाख वस्तुएँ जमा की गई हैं, जिनमें हस्तलिखित ग्रंथ, चिट्ठियाँ, डायरी, स्मृति-ग्रंथ आदि शामिल हैं। ग्रामीण कहानियों से संबंध रखने वाली ४ लाख चीज़ें इकट्ठी की गई हैं। मूर्ति-विभाग में लेखकों के चित्र, फ़ोटो और मूर्तियाँ हैं। इसके पुस्तकालय में ४० हज़ार पुस्तकें साहित्य के परिचय आदि के संबंध में हैं। इनमें बहुत से उन ग्रंथों के संस्करण हैं, जिन्हें ज़ारशाही ने ज़ब्त या नष्ट कर दिया था। यहाँ पर एक ख़ास विभाग ऐसी पुस्तकों का है, जिनपर लेखकों के स्वहस्ताक्षर मौजूद हैं।

लेनिन्-पुस्तकालय में १९३५ में ४८ हज़ार पाठक थे। वे ४॥ लाख बार पुस्तकालय में आये। नई इमारत के वाचनालय में ३ हज़ार आदमियों के बैठने की जगह है। लाइब्रेरी की इमारत के सामने के हिस्से पर बहुत से प्रसिद्ध लेखकों और राजनीतिज्ञों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

मार्क्स-ऐंगेल्-लेनिन्-इंस्टीट्यूट, मास्को की ख़ास चीज़ है। इसके साथ कार्लमार्क्स, **फ़्रीड्रिख़्** ऐंगेल् म्यूज़ियम तथा केन्द्रीय लेनिन् म्यूज़ियम है। समाजवाद के संबंध की इतनी अधिक पुस्तकें दुनिया के किसी पुस्तकालय में नहीं हैं। यहाँ प्रथम, द्वितीय और तृतीय इन्टर-नेशनल (समाजवाद-संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय सभा), **पैरिस्-कम्यून्** तथा १८वीं, १९वीं और २०वीं शताब्दियों की कितनी ही क्रान्तियों की मौलिक सामग्री जमा की गई है। १९३४ की जनवरी में इसमें १० लाख चीज़ें जमा थीं।

मास्को में दुनिया की सब से ऊँची इमारत सोवियत्-प्रासाद का इस वक़्त निर्माण हो रहा है। अभी इसको समाप्त होने में ४ साल और लगेंगे। इसके प्लेन बनाने में सारी दुनिया के बड़े बड़े इंजीनियरों ने सहायता दी है। इसकी ऊँचाई होगी ४१५ मीतर (१३०० फ़ीट से ज़्यादा) सब से बड़ा हाल १३६

मीतर (४०० फ़ीट से अधिक) व्यास का गोलाकार होगा; और इसमें २० हज़ार आदमियों के बैठने की जगह होगी। एक दूसरा छोटा हाल ६००० आदमियों के बैठने लायक होगा। प्रधान हाल के ऊपर एक दूसरा हाल होगा,
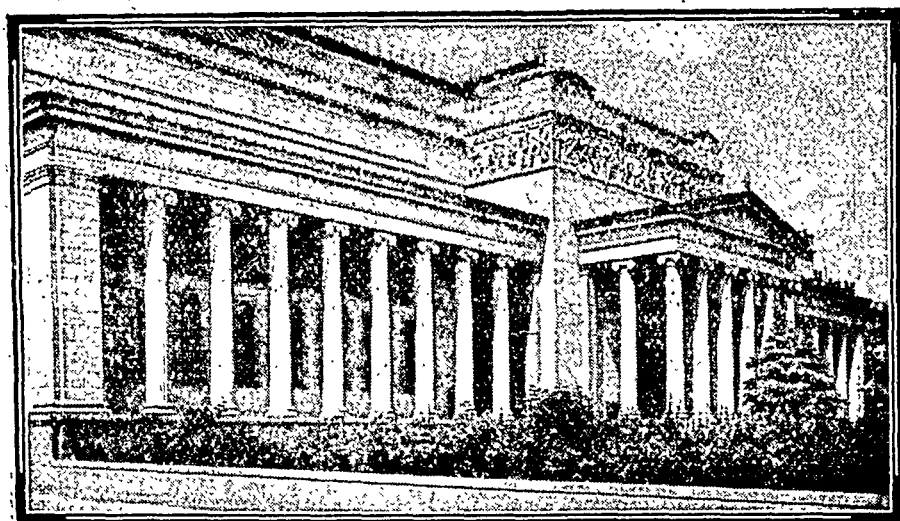
म्यूज़ियम (मास्को)

जिसमें श्रमिक क्रान्ति की अनेक अवस्थाओं को चित्रित किया जायगा। ऊपरवाले तलों में म्यूज़ियम रहेंगे। सारी इमारत लेनिन् की एक प्रकाण्ड मूर्ति की पाद-पीठिका (चौकी) मात्र रहेगी। चारों तरफ़ पत्थरों पर दुनिया के सभी जातियों के जाँगर चलानेवालों के चित्र अंकित रहेंगे।

प्रेस—१९३६ में मास्को से ५६ समाचारपत्र निकलते थे, जिन में ५ प्रान्त और शहर से संबंध रखते थे और बाक़ी अखिल-संघ से। २८५ पत्र फैक्टरियों के थे। १० पत्र विदेशी भाषाओं और अल्पसंख्यक जातियों के निकलते थे। नंबर २४ **उलित्सा प्राव्दी (प्राव्दा सड़क)** पर **"प्राव्दा"** पत्र का कार्यालय है। यह ८ तल का महल है। इसमें १ लाख घनमीतर (१ लाख घनगज़ से अधिक) कमरे, मकान और हाल हैं। छापने की सभी कार्रवाई मशीन से होती है। और छापने, काटने, बाँधने आदि का काम

इतना पास पास है कि चीज़ों के इधर से उधर भेजने में देर नहीं लगती। ३६ कम्पोज़ करनेवाली मशीनें लगी हुई हैं। स्टीरियोटाइप-विभाग ६५० घनमीतर में है। "प्राब्दा" की ग्राहक-संख्या २० लाख से ज़्यादा है। रोटरी मशीन प्रति घंटे एक लाख 'प्राब्दा' के साइज़ (अमृतबाज़ारपत्रिका के साइज़) की चौपेजी छापती है। स्वयं काग़ज़ खींचने वाली मशीन ३ मालगाड़ी भर काग़ज़ एक बार लेती है। १२ मालगाड़ियाँ प्रतिदिन **प्राब्दा** नामक स्टेशन के माल-गोदाम पर काग़ज़ लेकर पहुँचती हैं। इसी प्रेस से **क्रोम्सोमोल्स्काया-प्राब्दा,** (तरुण-साम्यवादी-संघ-सत्य) **प्यूनिर्काया-प्राब्दा** (बालचर-सत्य) और दो मासिक पत्र **बोल्शेविक** और **क्रोकोदिल्**
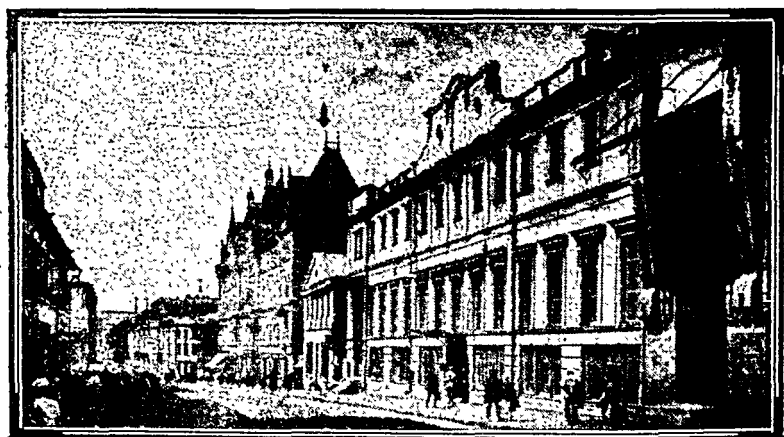
गोर्की-सड़क (मास्को)

(मगर, परिहासपत्र) भी निकलते हैं। इनके अतिरिक्त पुस्तकें भी छपती हैं। 'प्राब्दा' सोवियत्-संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का मुख्य पत्र है। १९१८ में इसकी ग्राहक संख्या ९० हज़ार थी; १९२९ में ६ लाख ६२ हज़ार और १९३६ में २० लाख। सोवियत् सरकार का मुख्य पत्र है **"इज़्वेस्तिया"** जो १९२९ में ४ लाख ४० हज़ार छपता था और जनवरी १९३६ में १६

लाख। '**प्राव्दा**' के बाद दूसरा नंबर है, किसानों के पत्र '**क्रेस्त्यन्स्काया गजेता**' (किसान ग़ज़ट)। १९३६ में यह १७॥ लाख रोज़ाना छपता था।

१९३६ के आरंभ में मास्को से ४६७ पत्र भिन्न भिन्न विषयों पर निकलते थे; जिनमें विषय के लिहाज़ से १९३ टेक्निकल, ८६ सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक, ४ प्रकृतिविज्ञान और गणित, ३१ चिकित्सा-शास्त्र, २ भाषा-तत्व, ३६ साहित्य और कला, १४ श्रम और मज़दूर-संघ-आन्दोलन, २९ कृषि और कोल्ख़ोज़् आन्दोलन।

मास्को में कई प्रकाशन संस्थाएँ हैं। 'पर्तिज़्दात'—यह अधिकतर मार्क्स, लेनिन् तथा कम्युनिस्ट-पार्टी के संबंध के ग्रंथों को छापता है। १९३६ में इसने ३२१ ग्रंथों की ७ करोड़ ६० लाख ८६ हज़ार प्रतियाँ छापीं। '**गोस्तलितीज़्दात्**'—इसमें स्वदेशी और विदेशी मशहूर लेखकों (जीवित और मृत दोनों) के ग्रन्थ छपते हैं। १९३६ में इसने ६७८ ग्रंथों की सवा दो करोड़ से ज़्यादा प्रतियाँ छापीं। **सोत्सेक्गिज्**—अर्थशास्त्र और समाजतत्व पर पुस्तकें छापता है। १९३६ में इसने १५५ ग्रंथों की २७ लाख ८१ हज़ार कापियाँ छापीं। '**ओन्ति' वैज्ञानिक** और टेकनिकल विषयों पर किताबें छापता है। १९३६ में इसने ३०६८ पुस्तकें छापीं। स०स०स०र० में विदेशी कमकरों की सहयोगी-प्रकाशक-समिति विदेशी पाठकों के लिए अंग्रेज़ी, फ़्रांसीसी, जर्मन, पोल, चीनी, कोरियन आदि भाषाओं में पुस्तकें छापती है।

मास्को में क्लबों की संख्या १६० से ज़्यादा है। कुछ क्लबों के नाम हैं—वैज्ञानिक-भवन, लेखक-भवन, समाचार-पत्र-भवन, सिनेमा-भवन, अभिनेता-भवन, शिल्पि-भवन, अध्यापक-भवन आदि।

नाट्यशाला—मास्को में नाट्यशालाओं की संख्या ६० से ऊपर है। १९१७ में इनकी संख्या २१ थी। लाल-सेना तथा दूसरी कितनी ही नाट्यशालाओं की भव्य इमारतें बनी हैं। शाम के वक़्त इनका हाल खचाखच भरा रहता है। सितंबर के पहले दो हफ़्तों में नाट्यमहोत्सव होता है।

इसके लिए सभी नाट्यशालाएँ पहले से तैयारी करती हैं। इस समय दुनिया के भिन्न भिन्न भागों से नाट्यमर्मज्ञ लोग उन्हें देखने के लिए मास्को पहुँचते हैं। मास्को की सब से पुरानी नाट्यशाला है माली-थियेटर,
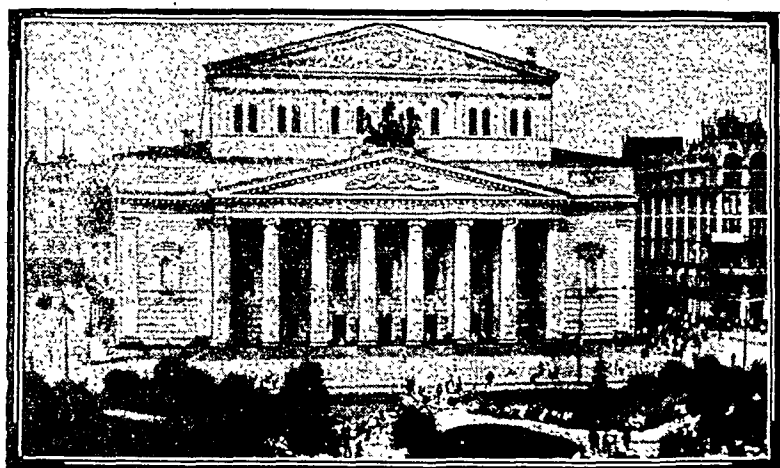
बोल्शोइ थियेटर (मास्को)

जिसे १८२४ में स्थापित किया गया था। मास्को-कला-थियेटर—जिसे अब गोर्की कला-थियेटर कहते हैं—१८९८ में स्थापित हुआ था।

लड़कों के विनोद, म्युनिसिपलिटी का काम, स्वास्थ्य-रक्षा, जिस किसी-भी विभाग को देखा जाय, मास्को सब में बहुत आगे बढ़ा मिलता है। जुलाई-१९३६ में-जो मास्को के नवनिर्माण की योजना आरंभ हुई है—उस से मास्को दुनिया के सब से समृद्ध नगरों में हो जायगा। वहाँ टूटी झोपड़ियाँ और गिरे पड़े मकान कहीं ढूंढ़ने पर भी न मिलेंगे। योजना के पूरा हो जानेपर मास्को का क्षेत्रफल दूना हो कर ६० हज़ार हेक्तर हो जायगा; और उसके सुन्दर विशाल घरों में ५० लाख आदमियों के रहने का इन्तज़ाम रहेगा। इस वक़्त मास्को में प्रति एकड़ ४०० आदमी रहते हैं। १९४५ में प्रति एकड़ २०० आदमी रहेंगे; हालाँकि इमारतें औसतन् ६—७ तल्ले की होंगी

और बहुत सी १० और १४ तल्ले की भी। आजकल मास्को के मकान जितनी भूमि पर हैं, उस वक्त उस से आधी ही पर रहेंगे। बाक़ी जगहों में चौड़ी सड़कें और बग़ीचे बनेंगे। मकानों के हर एक ब्लाक में बच्चाख़ाना, किन्डरगार्टन, बाल-क्रीड़ा-क्षेत्र, अखाड़ा, भोजनालय, क्लब आदि रहेंगे। ३ से ७ एकड़वाले वर्तमान ब्लाकों (चारों ओर सड़क से घिरी गृहश्रेणी) की जगह २० से ३० एकड़ के ब्लाक बनेंगे। इसके कारण गलियों और सड़कों की संख्या कम हो जायगी, और लोगों को उनको पार करने में भी कमी रहेगी।

पुराने समय के बेढंगे छोटे बड़े मकान तोड़ कर हटाये जा रहे हैं। लाल मैदान को सामने के मकान हटा कर दूना कर दिया जायगा। क्रेम्लिन् को केन्द्र मान कर समकेन्द्रक वृत्त में निकलनेवाली सड़कें और चौड़ी कर दी जायँगी और उनके किनारे हरे हरे दरख़्त लगेंगे। मास्को नदी के दोनों तरफ़ प्रशस्त राजपथ बनना शुरू हो गया है। मास्को नदी के किनारे को संगख़ारे से बाँधा जा रहा है। इसकी बग़ल में ४० से ५० मीतर (६० से ८० फ़ीट) चौड़ी वृक्षोंवाली सड़क रहेगी।

*** ***

मास्को के कुछ स्थान—क्रेम्लिन् दीवार—इसी के पास लाल क्रान्ति के बड़े बड़े नेताओं की समाधियाँ हैं। सोवियत्-प्रजातंत्र के प्रथम राष्ट्र-पति स्वेर्द्लोफ़्, काकेशस्-प्रजातंत्र के राष्ट्रपति नारीमानोफ़्, गृहसचिव जेर्जिन्स्की, यहीं पर दफ़नाये गये। सोवियत् राजदूत वोरोव्स्की और वोइकोफ़्—जिनकी हत्याएँ विदेश में हुई थीं—तथा प्रसिद्ध सेनानायक फ्रुन्जे भी यहीं दफ़नाया गया है। यहीं पर कम्युनिस्ट पार्टी के बहुत बड़े नेताओं—किरोफ़्, ओर्जोनीकिद्जे, कुइबिशेफ़् और क्रासिन् की राख रखी हुई है। माख़िम् गोर्की तथा विज्ञान-एकेडेमी के प्रधान करविन्स्की की राखें भी यहीं हैं। १९३४ में आकाश के शांत ऊपरी तल (स्ट्रेटोस्फेयर)

का पता लगाने के लिए जो तीन वैज्ञानिक—फेदोसेयेन्को, वस्सेन्को और उस्सिस्किन्—गुबारे में उड़े थे, और गिर कर मर गये थे; उनका शरीरावशेष भी यहाँ रखा हुआ है। इनके अतिरिक्त विदेशों के कितने ही क्रान्तिकारी नेताओं का शरीरावशेष क्रेमलिन् की दीवार के पास गड़ा है। इन में कुछ के नाम हैं—चर्लिस रदेन्वर्ग (युक्त-राष्ट्र अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी का मंत्री), **मेक्मैनेस्** (इंगलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी का मंत्री), **सेन् कातायामा** (जापान की कम्युनिस्ट पार्टी का नेता।), **लैंडेलेर** (हुंगरी का कम्युनिस्ट), क्लैरा जेत्किन् (जर्मनी), **फ़्रिट्ज़ हेकर्ट,** विल्हेउड्, और अमेरिकन कवि तथा लेखक **जौन् रीड्।**

लाल मैदान के पश्चिमी किनारे पर पोकरोब्स्की गिर्जा है। यह १५५५ ई० में क्रूर **इवान् की** आज्ञा से कज़ान् के विजय के उपलक्ष में बना था।

गिर्जे के पास में **लोब्नीयेमेस्तो** नामक एक गोल चबूतरा है। यहीं पर खड़े होकर ज़ार की राज-घोषणाएँ और मृत्युदंड सुनाये जाते थे।

गोर्की-केन्द्रीय-संस्कृति-विश्राम-उद्यान—६०० एकड़ से ऊपर भूमि में मास्को नदी के दक्षिणी तट पर यह उद्यान बना है। इसके ३ भाग हैं—(१) **यर्तेरे** (दरवाज़े के पास का भाग), (२) हरित-भूमि (नदी के किनारे का भाग), (३) लेनिन्-पर्वत। शहर भर के लोग मनोरंजन के लिए इस बाग़ में जाया करते हैं। १८ मई १९३७ (दसवें मौसिमी उद्घाटन दिवस) में ३ लाख आदमी बाग़ में गये थे। यहाँ संगीत, नृत्य, वाद्य, सर्कस, लड़कों के खेल, मछली मारना, बाग़बानी, फ़ोटोग्राफ़ी, रेडियो आदि सब तरह के मनोविनोद उपलब्ध हैं। उद्यान में रंगशालाएँ हैं जिनमें छत के नीचे या खुली जगह में मास्को-कला-नाट्यशाला, माली-नाट्यशाला, वख्तंगोफ़्-नाट्यशाला आदि मास्को के नाट्यशालाओं ही के अभिनेता नहीं बल्कि लेनिन्ग्राद् और **उक्रइन्** की नाट्यशालाओं के नट भी आकर अपने अभिनय दिखलाते हैं। उद्यान की नाट्यशालाओं में प्रति दिन ३० हज़ार से अधिक दर्शक आते हैं। खुली जगह में हरित नाट्यशाला

यहाँ की एक विशेषता है, जिसमें २० हज़ार आदमी सैकड़ों अभिनेताओं के सामूहिक अभिनय एक साथ देखते हैं। रात को हरित-नाट्यशाला में फिल्म दिखलाये जाते हैं और ये फिल्म पौने दो सौ गज़ लंबे और पौने दो सौ गज़ चौड़े पर्दे पर दिखलाये जाने के कारण बहुत स्पष्ट और मनो-रंजक मालूम होते हैं।

*** ***

मास्को प्रान्त में कुछ और भी जगहें दर्शनीय हैं। इनमें शहर से १४–१५ मील पर अवस्थित **आर्ख़न्गेल्स्कोये** (रिज़ेब रेलवे-स्टेशन) एक पुरानी जगह है। सामन्त **गोलित्सिन् ने** १८ वीं शताब्दी के अन्त में यहाँ अपना दरबार बनाया था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में वह सामन्त (प्रिंस) **युसुपोफ़्**—रूस के सब से धनी और प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक——के हाथ में चला गया। यहाँ पर फ़्रांसीसी शिल्पी **शेवालिए-द-गर्** द्वारा १७७० में बनाया एक प्रासाद है। प्रासाद के चारों ओर बाग़ है। यहाँ पुराने यूरोपीय कलाकारों के चित्रों का एक बहुत उत्तम संग्रह है। बाग़ की बीथियों पर मशहूर मूर्त्तिकारों की बनाई मूर्तियाँ सजाई हुई हैं। **युसुपोफ़्** के लिए इटा-लियन् चित्रकार गोन्ज़गा ने १८१७ में एक विशाल नाट्यशाला बनाई, जिसमें सामन्त के असामी अर्द्धदास अभिनेता अभिनय किया करते थे। कला-संग्रह में प्रासाद के काम में आनेवाले बर्तन तथा दूसरी चीजें सुरक्षित रखी गई हैं। भोजनालय मिस्री ढंग से सुसज्जित किया गया था। बग़ल के कमरों में **राबर्ट हवर**, तथा **तीपोलो** और **रोतोरी** के बनाये चित्र हैं। अध्ययनागार में **युसुपोफ़्** के परिवार के आदमियों के चित्र रखे हुए हैं। आज-कल **युसुपोफ़्** के खेतों पर कोल्ख़ोज़् स्थापित हैं। कितने ही स्कूल और फैक्टरियाँ बनी हैं; लेकिन **युसुपोफ़्** के दरबार की कला-संबंधी वस्तुओं को बहुत सुरक्षित रखा गया है। प्रासाद के भित्ति-चित्रों, मूर्त्तियों और नाट्यशाला के बिगड़े और बेमरम्मत हिस्से को बहुत ख़र्च कर के मरम्मत कर दी गई है। नाट्यशाला में उन्हीं अर्द्धदास किसानों को बैठ कर

नाटक देखते देख कर **युसुपोफ़्** की आत्मा क्या कहती होगी ?

कुस्कोवो—**कुर्स्क** स्टेशन से ६ मील पर एक जगह है। यहाँ **ग्राफ़्** (कौंट) **शेरेमेत्येफ़्** (१७७०) का बनवाया महल है। शेरेमेत्येफ़् के अधिकार में २ लाख अर्द्धदास किसान और २० लाख एकड़ से अधिक ज़मीन थी। इसके अलावा **इवानोवो** की बड़ी बड़ी कपड़े की मिलें भी इसी की थीं। अकूत धन था, इसलिए **शेरेमेत्येफ़्** परिवार दोनों हाथ से उसे अपने विलास के लिए ख़र्च भी करता था। तरह तरह की मूर्तियाँ, चित्र, जाड़े गर्मी के घर और क्या क्या चीज़ें नहीं बनवाई हैं? इन चीज़ों में अधिकांश को ग्राफ़् के अर्द्धदासों ने वनाया है। दासों में से कितनों ही को मालिकों ने वास्तु-शिल्प, कितनों को मूर्ति-कला, कितनों को चित्रकला और कितनों को नाट्यकला सिखलाई थी। वैयक्तिक नाट्यशाला के लिए ख़ास ध्यान था। ग्राफ़् के अभिनेताओं की संख्या २०० थी; और वह मास्को की नाट्य-शालाओं का मुक़ाबला करते थे।

उद्यान, सरोवर और आरंभिक इमारतें अब भी सुरक्षित रखी गई हैं। मकान को ऐतिहासिक म्यूज़ियम के रूप में परिणत कर दिया गया है; और उसे इस तरह से सजाया गया है, जिसमें कि ज़ारशाही के धनिकों के जीवन का दर्शकों को पूरा पता लग जाय। म्यूजियम में १८वीं सदी के पश्चिमी यूरोप और रूस के कलाकारों के वहुत से चित्र संगृहीत हैं। अर्द्धदास वढ़इयों के लकड़ी के कामों का भी अच्छा संग्रह है। एक लकड़ी की मेज़ पर **कुस्कोवो** दरवार के महल और बग़ीचों को सुन्दरता के साथ उत्कीर्ण किया गया है। **म्यूजियम** में उस काल की कुर्सी, मेज़ तथा दूसरे घर के सजाने के सामान एकत्रित हैं। पहले तल्ले के २० कमरों में कम-ख़्वाव, ग़लीचे, झाड़, मूर्तियाँ और तसवीरें रखी हुई हैं। यहाँ पर स्थायी तौर से एक म्यूज़ियम मिट्टी और चीनी के बर्तनों का स्थापित किया गया है। इसमें यूनानी मिट्टी के बर्तन, इटली और फ़्रांस के १६वीं-१८वीं शताब्दी के **मजोलिका पात्र,** स्पेन के मुसलमानों के बर्तन, १७ वीं-१८वीं शताब्दी के

हालैंड के वर्तन, १७वीं-१८वीं शताब्दी के चीन-जापान के बने चीनी के वर्तन और **सोवियत्** के चीनी के वर्तन रखे हुए हैं। चित्रों में **लागरान्** मोनिये और रोतोरी विदेशी कलाकारों तथा **अर्गुनोफ़्**-परिवार, **तेप्पलोफ़्** और **शुविन्** की कला के नमूने मौजूद हैं।

जागोर्स्क—मास्को से ७१ किलोमीतर (प्राय: २५ मील) पर है। क्रान्ति से पहले इस शहर का नाम था **सेर्गियेफ़्पोशद्** और यहाँ सेर्गियेफ़् मठ के दर्शनार्थ हज़ारों तीर्थयात्री ठहरा करते थे। आजकल यह **जागोर्स्क** ज़िले का केन्द्र है; और हाथ के बने खिलौनों के लिए स०स०स०र० और बाहर भी प्रसिद्ध है। १९३३ में इसकी जन संख्या ३० हज़ार थी।

स्टेशन से ½ किलोमीतर पर त्र्वात्सेसेर्गियेफ़् मठ है। इसकी स्थापना १४ वीं शताब्दी में हुई थी; और धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते यह रूस के बड़े शक्तिशाली मठों में हो गया। इसके पास बहुत जागीर थी। १८वीं शताब्दी के अन्त में मठ के अधीन ५ लाख अर्द्धदास किसान थे। क्रान्ति के बाद मठ का काम बन्द हो गया और सेर्गियेफ़् मठ रूसी कला के म्यूज़ियम के रूप में परिणत कर दिया गया। दर्शनीय स्थानों में है—१८वीं शताब्दी का बना घंटाघर जिसे कि शिल्पी रस्त्रेली ने बनाया था। **त्र्वात्स्की** गिर्जा सफ़ेद पत्थर से १४२२ में बनाया गया। दीवारों के किनारे तथा रखने के स्थानों पर मूर्तियों का बड़ा संग्रह है। इनमें चौदहवीं सदी से ले कर २० वीं सदी तक की मूर्तियाँ हैं। म्यूज़ियम में पुराने गोटे, वस्त्र और पच्चीकारी की बहुत सी चीज़ें हैं। सबसे ज़्यादा दिलचस्प वह इमारत है जिसमें **मेत्रोपोलितन्** (ग्रीक-अर्थोडक्स सम्प्रदाय का सबसे बड़ा महन्त या पोप) रहता था। यह १८वीं सदी में बनाया गया था; और बड़ी सुरक्षित अवस्था में रखा गया है। पुरानी सजावटें वैसी ही मौजूद हैं। म्यूज़ियम के एक ख़ास विभाग में यह प्रदर्शित किया गया है कि क्रान्ति के बाद लोगों के जीवन में कैसा परिवर्तन हुआ।

खिलौना-म्यूज़ियम १९१८ में मास्को में स्थापित किया गया था,
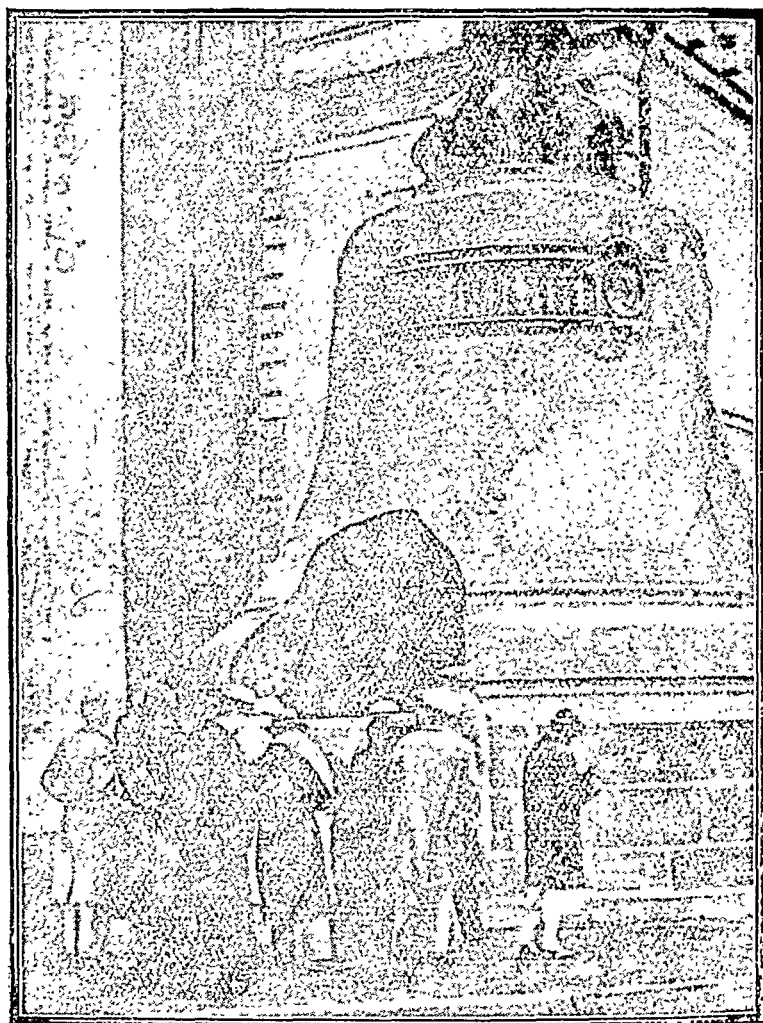
मास्को का घण्टा।

लेकिन अब उसे इसी मठ की एक इमारत में रखा गया है। यहाँ पर कई हज़ार पुराण-काल से ले कर आज तक के तरह तरह के हाथ के बने खेलौने रखे हुए हैं। १९३२ से खेलौनों के अन्वेषण के लिए एक विशेष अन्वेपणशाला स्थापित की गई है।

१६—सोवियत्-विधान पर स्तालिन्

५ दिसंबर १९३६ को अष्टम सोवियत्-कांग्रेस के विशेष अधिवेशन ने सोवियत् का नया विधान स्वीकृत किया। यह विधान सोवियत् के लिए ही नहीं, सारे संसार के लिए एक अपूर्व चीज़ है। इसके निर्माण का इतिहास जानने के लिए **तवारिश् स्तालिन्** ने जो व्याख्यान २५ नवंबर १९३६ को दिया था, वह बहुत उपयोगी है। उस व्याख्यान से इस विधान ही का इतिहास नहीं मालूम होता, बल्कि क्रान्ति के बाद सोवियत्-भूमि में समाजवाद की कैसी प्रगति हुई है, उसका भी पता लग जाता है। हम उस व्याख्यान को यहाँ उद्धृत करते हैं—

१—विधान-कमीशन और उसका काम

साथियो,

विधान-कमीशन—जिसका मसविदा विचार करने के लिए कांग्रेस के सामने रखा गया है—आप जानते हैं; स०स०स०र० के सप्तम-सोवियत्-कांग्रेस के विशेष निश्चय के अनुसार निर्मित किया गया है। उक्त निश्चय ६ फ़रवरी १९३५ को स्वीकृत किया गया। उसका उद्देश्य इस प्रकार है—

"(१) संघ-सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (स०स०स०र०) के विधान में संशोधन निम्न बातों का ख़्याल कर के—

(क) पूर्णतया न समान मताधिकार की जगह पर समान मताधिकार, अप्रत्यक्ष निर्वाचन की जगह प्रत्यक्ष निर्वाचन और खुली वोट की पुर्जियों की जगह गुप्त पुर्जियों द्वारा चुनाव की प्रक्रिया को और अधिक जनसत्ताक बनाना।

(ख) विधान को स०स०स०र० की वर्ग-शक्तियों के वर्तमान

सम्बन्ध (एक नये समाजवादी उद्योग का निर्माण, कुलक श्रेणी का लोप, कोल्ख़ोज़् प्रथा की विजय, सोवियत् समाज की आधार-शिला के तौर पर समाजवादी सम्पत्ति की व्यापकता आदि) के अनुसार विधान को ले आ कर विधान के सामाजिक और आर्थिक आधार की और भी स्पष्टता के साथ व्याख्या करना;

(२) स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति को हिदायत करना कि वह एक ऐसे विधान-कमीशन को चुने जो कि प्रथम धारा में वतलाये सिद्धान्तों के अनुसार विधान के संशोधित मसविदे को तैयार करे और उसे स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अधिवेशन में स्वीकृति के लिए पेश करे।

(३) नये निर्वाचन-नियम के अनुसार स०स०स०र० की सोवियत् गवर्नमेंट की संस्थाओं के आनेवाले साधारण निर्वाचनों को संचालित करना।"

यह ६ फरवरी, १९३५ को हुआ था। एक दिन बाद ७ फरवरी को यह निश्चय स्वीकृत हुआ। उस दिन स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का प्रथम अधिवेशन हुआ और स०स०स०र० की सप्तम सोवियत् कांग्रेस के निश्चयानुसार ३१ व्यक्तियों का एक विधान-कमीशन स्थापित किया गया। उसने विधान कमीशन को हिदायत की कि वह स०स०स०र० के विधान का एक संशोधित मसविदा तैयार करे। यह हैं स०स०स०र० की सर्वोपरि समिति की हिदायतें और आधार जिनके अनुसार कि विधान-कमीशन के काम को चलाना था।

इस प्रकार विधान-कमीशन को प्रचलित विधान—जो कि १९२४ में स्वीकृत हुआ था—में १९२४ से आजतक के समय में स०स०स०र० के जीवन के संबंध में समाजवाद की तरफ़ हुए परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए तब्दीली करना था।

२—१९२४-३६ में परिवर्तन

१९२४ से १९३६ तक के समय में स०स०स०र० के जीवन में वे क्या परिवर्तन हुए हैं, जिन्हें कि विधान के मसविदे में विधान-कमीशन को दिखालाना है।

परिवर्तनों का क्या सार है?

१९२४ में क्या परिस्थिति थी?

यह नवीन-आर्थिक-नीति का प्रथम काल था; जब कि सोवियत् गवर्नमेंट ने समाजवाद के सभी तरीक़ों को अख़्तियार करते हुए पूँजीवाद को थोड़ा पुनर्जीवित होने दिया। जब कि उसने हिसाब लगा लिया कि समाजवादी और पूँजीवादी—दोनों आर्थिक सिद्धान्तों की प्रतिद्वन्द्विता में समाजवाद पूँजीवाद पर हावी होगा। काम था, इस प्रतिद्वन्द्विता के समय समाजवाद की स्थिति को मज़बूत करना, पूँजीवादी अंश को निर्मूल करने में सफलता प्राप्त करना और राष्ट्रीय अर्थनीति के मौलिक सिद्धान्त के तौर पर समाजवाद के सिद्धान्त की विजय को पूर्णता पर पहुँचाना।

उस समय हमारे उद्योग—विशेष कर भारी उद्योग—की अवस्था बहुत शोचनीय थी। यह सच है कि धीरे धीरे उसे पूर्व स्थिति पर पहुँचाया जा रहा था, लेकिन तो भी उस वक़्त तक उपज युद्ध के पहलेवाले आँकड़े तक नहीं पहुँची थी। वह पुरानी पिछड़ी हुई और बहुत थोड़ी सामग्री से युक्त **टेक्नीक्** (यन्त्र-चातुरी) पर अवलंबित थी। यह भी ठीक है कि वह समाजवाद की ओर बढ़ रहा था। उस समय हमारे उद्योग में समाजवाद का भाग ८० सैकड़ा था; लेकिन पूँजीवादी भाग अब भी हमारे उद्योग का २० सैकड़ा अपने हाथ में रखे हुए था।

कृषि की अवस्था और भी शोचनीय थी। यह सच है कि ज़मींदार श्रेणी कभी की लुप्त हो चुकी थी; लेकिन तो भी कृषि के पूँजीवादी—कुलक श्रेणी अब भी काफ़ी ताकत रखती थी। सब देखने पर उस समय की कृषि पिछड़े हुए दकियानूसी किसानी तरीकों से युक्त छोटे छोटे वैयक्तिक खेतों

के अपरिमित समुद्र सी दिखलाई पड़ती थी। उस समुद्र में छोटे छोटे विन्दुओं और द्वीपों की भाँति कुछ कोल्ख़ोज़् (पंचायती खेती) और सोव्ख़ोज़् (सरकारी खेती) थे। ठीक तौर से कहने पर अभी हमारी राष्ट्रीय अर्थनीति में उनका कोई विशेष स्थान न था। कोल्ख़ोज़् और सोव्ख़ोज़ निर्वल थे, जब कि कुलक अब भी प्रवल था। उस समय हमने कुलकों के नष्ट करने की जगह पर उन्हें सीमाबद्ध करने के लिए कहा।

यही बात देश के व्यापार के वारे में भी उस समय कही जा सकती थी। व्यापार में समाजवादी भाग ५० से ६० सैकड़ा तक था, अधिक नहीं। जब कि वाक़ी हिस्सा बनियों, लाभ कमानेवालों तथा दूसरे वैयक्तिक व्यापारियों के हाथ में था।

यह चित्र था हमारी अर्थनीति का १६२४ में।

और आज १६३६ में क्या परिस्थिति है?

उस समय हम थे नवीन-आर्थिक-नीति के प्रथम काल में; नवीन-आर्थिक-नीति के आरंभ में, पूँजीवाद के कुछ पुनरुज्जीवन के काल में। लेकिन अब हम हैं नवीन-आर्थिक-नीति के अन्तिम काल में, नवीन अर्थनीति के अन्त में, ऐसे काल में जब कि राष्ट्रीय अर्थनीति के सभी क्षेत्रों में पूँजीवाद का पूर्णतया मूलोच्छेद हो गया है।

उदाहरणार्थ—यह यथार्थ बात है कि इस काल में हमारा उद्योग बड़ी विशाल शक्ति के रूप में बढ़ा है। अब इसको कमज़ोर, और यांत्रिक प्रक्रिया में दरिद्र नहीं कहा जा सकता। बल्कि इसके विरुद्ध आज यह एक वलिष्ट और उन्नत भारी उद्योग तथा एक उससे भी अधिक उन्नत मशीन-निर्माण-उद्योग के साथ नये लाभदायक आधुनिक यांत्रिक साधनों के ऊपर अवलंबित है। लेकिन सब से महत्त्वपूर्ण वात यह है कि पूँजीवाद हमारे उद्योग के क्षेत्र से विलकुल ही लुप्त हो चुका और उपज का समाजवादी तरीक़ा अव वह सिद्धान्त है, जो कि हमारे उद्योग के हर क्षेत्र में अव्याहत अधिकार रखता है। हमारी आज की समाजवादी उद्योग की उपज युद्ध के पहले के

उद्योग से सातगुना से भी अधिक है। यह कोई मामूली बात नहीं है।

कृषि के क्षेत्र में अपनी दरिद्र कृषि-प्रक्रिया से युक्त और कुलकों के ज़बर्दस्त प्रभाववाले छोटे छोटे वैयक्तिक किसानों के खेतों के समुद्र की जगह पर आज हमारे पास है यंत्रों द्वारा खेती का उपजाना। वह नई से नई कृषि-विज्ञान की प्रक्रियाओं से युक्त कोल्ख़ोज़् और सोव्ख़ोज़् के सर्व-व्यापी सिद्धान्त के रूप में इतने बड़े पैमाने पर किया जा रहा है जैसा कि संसार में और कहीं नहीं देखने में आता। सभी लोग जानते हैं कि कृषि से कुलक (धनी किसान) श्रेणी लुप्त हो चुकी है, और पिछड़े दकियानूसी कृषि-प्रक्रियाओं से युक्त छोटे वैयक्तिक किसानों का अंश भी अब नगण्य के बराबर रह गया है। जोती हुई भूमि को लेने पर कृषि में इसका भाग २ या ३ सैकड़ा से अधिक नहीं है। हमें यह बात भूलनी नहीं चाहिए कि आज कोल्ख़ोज़ों के पास ५७ लाख अश्व-शक्तिवाले ३ लाख १६ हज़ार ट्रैक्टर हैं। सोव्ख़ोज़ों को भी ले लेने पर ७५ लाख ८० हज़ार अश्वशक्ति के ४ लाख ट्रैक्टर हो जाते हैं।

देश के व्यापार को देखने पर मालूम होगा कि इस क्षेत्र से बनिये और लाभ उठानेवाले बिलकुल नष्ट हो चुके हैं। सारा व्यापार अब राज्य, सहयोग-समितियों और **कोल्ख़ोज़ों** के हाथ में है। एक नया सोवियत् व्यापार—व्यापार बिना लाभ उठानेवालों के, व्यापार बिना पूँजीवादियों के—उत्पन्न हो कर विकसित हुआ है।

इस प्रकार राष्ट्रीय अर्थनीति के सभी क्षेत्रों में समाजवादी सिद्धान्त की पूर्ण विजय अब एक वास्तविक घटना है।

और इसका क्या मतलब है ?

इसका मतलब है कि मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण बन्द हो गया, नष्ट हो गया; जब कि उपज के हथियारों और साधनों पर समाज का अधिकार हमारे सोवियत् समाज में अचल नींव के रूप में स्थापित हो गया। (देर तक हर्ष-ध्वनि)

स०स०स०र० की राष्ट्रीय अर्थनीति के क्षेत्र में इन सभी परिवर्तनों के फल-स्वरूप अब हमारे पास एक नई समाजवादी अर्थनीति है। जिसमें न मन्दी संभव है, न बेकारी; जिसमें न गरीबी संभव है, न सर्वनाश। और जो नागरिकों को समृद्ध और संस्कृत जीवन बिताने के लिए हर प्रकार का मौक़ा देती है।

ये हैं वे मुख्य परिवर्तन जो कि हमारी अर्थनीति के क्षेत्र में १९२४ से १९३६ के समय में हुए हैं।

स०स०स०र० की अर्थनीति के क्षेत्र में होनेवाले इन परिवर्तनों के अनुसार हमारे समाज का श्रेणी-ढाँचा भी बदल गया है।

ज़मींदार-श्रेणी, जैसा कि आप जानते हैं, गृह-युद्ध की विजयपूर्ण समाप्ति के परिणाम स्वरूप पहले ही लुप्त हो चुकी; और दूसरी शोषक श्रेणियों की भी गति ज़मींदार श्रेणी जैसी ही हुई। उद्योग-क्षेत्र में पूँजीवादी श्रेणीं का ख़ात्मा हो चुका। कृषि-क्षेत्र में कुलक-श्रेणी का अस्तित्व मिट चुका। व्यापार के क्षेत्र में बनियों और लाभ कमानेवालों की सत्ता मिट गई। इस प्रकार सभी शोषक श्रेणियाँ अब ख़तम हो चुकीं।

अब बाकी है, श्रमिक-श्रेणी।
अब बाकी है, कृषक-श्रेणी।
अब बाकी है, बुद्धि-जीवी-श्रेणी।

लेकिन यह समझना ग़लत होगा कि उक्त काल में इन श्रेणी-समूहों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ; और वे अब भी वैसी ही हैं, जैसी कि पूँजीवाद-काल में थीं।

उदाहरणार्थ स०स०स०र० की श्रमिक-श्रेणी को ले लीजिए। इसे **प्रोलेतेरियत्** (मज़दूर) आदत के बस कहा जाता है। लेकिन **प्रोलेतेरियत्** क्या चीज़ है? **प्रोलेतेरियत्** वह श्रेणी है, जिसके पास उपज के औज़ार और साधन का अभाव है। और जो ऐसे आर्थिक सिद्धान्त के आधीन हैं, जिसमें उपज के औज़ार और साधन का मालिक पूँजीपति है, जो कि **प्रोले-**

तेरियत् का शोषण करता है। मज़दूर वह श्रेणी है, जिसका कि पूँजीवादी शोषण करते हैं। लेकिन हमारे देश में, जैसा कि आप जानते हैं, पूँजीवादी-श्रेणी कभी की ख़तम हो चुकी। उपज के औज़ार और साधन पूँजीवादियों के हाथ से छीन कर राज्य के हाथ में दे दिये गये। जिस राज्य की एक जबर्दस्त ताक़त है श्रमिक-श्रेणी। यहाँ पर अब कोई पूँजीवादी-श्रेणी नहीं रह गई, जो श्रमिक-श्रेणी का शोषण करेगी। अतएव हमारी श्रमिक-श्रेणी उपज के औज़ारों और साधनों से वंचित होने की तो बात कौन कहे, उलटे वह सारी जनता के साथ उनकी मालिक है। और चूँकि वह उनकी मालिक है, और पूँजीवादी-श्रेणी नष्ट हो चुकी है, इसलिए श्रमिक श्रेणी के शोषण की संभावना ही बिलकुल नहीं रही। ऐसा होने पर क्या हमारी श्रमिक-श्रेणी को मज़दूर (प्रोलेतेरियत्) कहा जा सकता है? बिलकुल साफ़ है कि नहीं! मार्क्स ने कहा था—अगर मज़दूर अपने को मुक्त करना चाहता है, तो उसे पूँजीवादी-श्रेणी को नष्ट करना होगा, और उपज के औज़ारों और साधनों को पूँजीपतियों के हाथ से छीन लेना होगा। उपज की उन अवस्थाओं को बन्द करना होगा, जो कि मज़दूर उत्पन्न करते हैं। क्या यह कहा जा सकता है कि स०स०स०र० की श्रमिक-श्रेणी अपनी मुक्ति के लिए इन अवस्थाओं को उत्पन्न कर चुकी है? निस्सन्देह! यह कहा जा सकता है और इसे कहना चाहिए। फिर इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है—स०स०स०र० का मज़दूर एक बिलकुल ही नई श्रेणी में, स०स०स०र० की श्रमिक-श्रेणी में परिवर्तित हो गया है। उसने उपज के पूँजीवादी सिद्धान्त को उठा दिया, उसने उपज के औज़ारों और साधनों पर समाज का स्वामित्व स्थापित किया और वह सोवियत् समाज को साम्यवाद के रास्ते पर ले जा रहा है।

जैसा कि आप देखते हैं, कि स०स०स०र० की श्रमिक-श्रेणी एक बिलकुल ही नई श्रमिक-श्रेणी, शोषण से मुक्त श्रमिक-श्रेणी है, जिसकी तरह की श्रेणी को मानव-इतिहास ने इससे पहले कभी नहीं देखा।

आओ, किसानों के प्रश्न पर एक नज़र डालें। आमतौर से कहा जाता है कि किसान छोटे उत्पादकों की एक श्रेणी हैं। इस श्रेणी के व्यक्ति बहुत छोटी-छोटी भूमि पर चारों ओर बिखरे हुए हैं; और अकेले हल से पिछड़ी दक़ियानूसी प्रक्रिया के साथ अपने छोटे खेतों को जोतते हैं।

वे वैयक्तिक सम्पत्ति के दास हैं और उन्हें ज़मींदार, कुलक, बनियाँ, महाजन, लाभ उठानेवाले तथा दूसरे बे-खटके चूस सकते हैं। और सचमुच पूँजीवादी देशों में सबको लेकर देखने पर किसान ठीक ऐसी ही श्रेणी है। क्या यह कहा जा सकता है कि आजकल का हमारा किसान-समुदाय, सोवियत्-किसान-समुदाय, सबको लेकर देखने पर उस प्रकार के किसान-समुदाय सा मालूम होता है ? नहीं, ऐसा नहीं कहा जा सकता ! अब हमारे देश में वह किसान-समुदाय नहीं रहा। हमारा सोवियत्-किसान बिलकुल नया किसान है। हमारे देश में किसानों को चूसने के लिए एक भी ज़मींदार और कुलक नहीं रहा। एक भी बनियाँ और महाजन नहीं रहा। इसलिए हमारा किसान हर प्रकार के चूसने से मुक्त किसान है। और भी, हमारे सोवियत्-किसान की सबसे अधिक संख्या कोल्ख़ोज़ी (पंचायती खेती-वाली) है। इसका कार्य और धन वैयक्तिक श्रम और पिछड़ी हुई कृषि-प्रक्रिया पर निर्भर न होकर; सामूहिक श्रम और नई से नई वैज्ञानिक प्रक्रिया पर निर्भर है। अन्ततः, हमारे किसान की खेती वैयक्तिक सम्पत्ति के आधार पर न हो, सामूहिक सम्पत्ति पर है; और सामूहिक श्रम के आधार पर बढ़ी है।

जैसा कि आप देखते हैं, सोवियत्-किसान एक बिलकुल नया किसान है, जिसकी तरह की श्रेणी को मानव-इतिहास ने इससे पहले कभी नहीं देखा।

अन्त में आइए, बुद्धि-जीवी-श्रेणी के प्रश्न पर विचार करें। इंजीनियर मिस्त्री, सांस्कृतिक क्षेत्र के कमकर, साधारण आफ़िस आदि में काम करनेवाले आदि के प्रश्न पर गौर करें। इस काल में बुद्धि-जीवी-श्रेणी में

भी भारी परिवर्तन हुआ है। अब ये वह बुद्धि-जीवी-श्रेणी नहीं हैं, जो अपने को श्रेणियों से ऊपर समझती थीं; हालाँकि वह ज़मींदारों और पूँजी-पतियों की सेवक मात्र थी। पहली बात यह है, कि अब बुद्धि-जीवी-श्रेणी की बनावट में परिवर्तन हो गया है। आज की सोवियत् बुद्धि-जीवी-श्रेणी में अमीरों और मध्यवित्त के लोगों से आनेवाले लोगों की संख्या बहुत कम है। सोवियत् बुद्धिवादी-श्रेणी का ८० से ९० सैकड़ा कमकर, किसान और श्रमिक जनता के निम्नस्तर से आया है। अन्तिम बात यह है कि बुद्धि-जीवी-श्रेणी के काम का ढंग ही बिलकुल बदल गया है। पहले ये धनिक-श्रेणी की सेवा करने के लिए मजबूर थी, क्योंकि दूसरा चारा नहीं था; लेकिन आज उसे जनता की सेवा करनी है। क्योंकि अब वह चूसनेवाली श्रेणियाँ (ज़मींदार और पूँजीपति) रही ही नहीं। अब वे सोवियत्-समाज में बराबर के सदस्य हैं। उस समाज में यह किसानों और मज़दूरों से कन्धा से कन्धा मिला कर एक साथ ज़ोर लगाते हुए नई श्रेणीरहित समाजवादी समाज के निर्माण में लगी हुई है।

जैसा कि आप देखते हैं, सोवियत्-बुद्धि-जीवी-श्रेणी एक बिलकुल ही नई श्रेणी है, जिसकी तरह की श्रेणी को पृथ्वीतल पर किसी भी दूसरे देश में आप नहीं पायेंगे।

यह हैं वह परिवर्तन जो कि सोवियत्-समाज की श्रेणी के ढाँचे में इस काल में हुए हैं।

ये परिवर्तन क्या बतलाते हैं?

अव्वल यह बतलाते हैं कि किसानों और श्रमिक-श्रेणी तथा इन दोनों श्रेणियों और बुद्धि-जीवी-श्रेणी को विभक्त करनेवाली रेखा मिट-सी चुकी है। श्रेणियों का पुराना अलगथलगपन लुप्त हो रहा है। इसका मतलब यह है, कि समाज के इन समुदायों का फ़र्क़ तेज़ी से ख़तम हो रहा है।

दूसरे, यह बतलाते हैं कि समाज क इन समुदायों के पारस्परिक आर्थिक द्वन्द्व दबते जा रहे हैं, लुप्त होते जा रहे हैं।

और अन्त में, यह वतलाते हैं, कि इनके पारस्परिक राजनैतिक द्वन्द्व भी दवते जा रहे हैं, लुप्त होते जा रहे हैं।

यह है स्थिति स०स०स०र० के श्रेणी-ढाँचे के सवन्ध में हुए परिवर्तनों के वारे में।

स०स०स०र० के सामाजिक जीवन के परिवर्तनों का जो चित्र यहाँ खींचा गया है, वह अपूर्ण रहेगा; जव तक कि कुछ शब्द एक और भी क्षेत्र के परिवर्तनों के वारे में न कहा जाय। मेरा मतलव है, स०स०स०र० की जातियों के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय से। जैसा कि आप जानते हैं, सोवियत्-संघ के भीतर रहनेवाली जातियों, जाति-समूह और राष्ट्रों की संख्या ६० है। सोवियत्-राज्य एक वहुजातिक राज्य है। यह स्पष्ट ही है कि स०स०स०र० की जनता के पारस्परिक संबंध का प्रश्न अव्वल दर्जे के महत्त्व का प्रश्न है।

आप जानते हैं कि संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक(स०स०स०र०) प्रथम सोवियत् कांग्रेस में १९२२ में संगठित हुआ था। इसे स०स०स०र० की जातियों की स्वतंत्रता और स्वेच्छा से सम्मिलित होने के सिद्धान्त पर संगठित किया गया था। जो विधान आजकल काम कर रहा है, वह स०स० स०र० का प्रथम विधान है। और उसे १९२४ में स्वीकृत किया गया था। यह वह समय था, जव कि लोगों का पारस्परिक संबंध अभी ठीक तौर से जम नहीं पाया था। जव कि महान् रूसियों के प्रति सदियों से चला आता अविश्वास लुप्त नहीं हुआ था। और जव कि विखरनेवाली शक्तियाँ अव भी काम कर रही थीं। इन अवस्थाओं में यह ज़रूरी था, कि श्रमिक, राजनैतिक और सैनिक पारस्परिक सहायताओं के आधार पर एक संयुक्त वहुजातिक राज्य के रूप में सभी जातियों में परस्पर भ्रातृ-भाव-पूर्ण सहयोग स्थापित किया जाय। सोवियत्-सरकार इस काम की कठिनाइयों को जानती थी। उसके सामने पूँजीवादी देशों के वहुजातिक राज्यों के नाकामयाव तजर्वे मौजूद थे। उसके सामने पुराने आस्ट्रिया-हंगरी का

नाकामयाव तजर्वा मौजूद था। लेकिन तो भी, उसने निश्चय किया, एक वहुजातिक राष्ट्र के वनाने के तजर्वे का; क्योंकि वह जानती थी, कि समाजवाद के आधार पर जो बहुजातिक राज्य स्थापित होगा, वह अवश्य हर तरह की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा।

तव से १४ वर्ष वीत गये। तजर्वे की परीक्षा के लिए यह काफ़ी लंवा समय है। और अव हम क्या पा रहे हैं? इस समय ने विलकुल असंदिग्ध रूप से दिखला दिया, कि समाजवाद के आधार पर संगठित वहुजातिक राष्ट्र का तजर्वा विलकुल कामयाव रहा। यह है निःसन्दिग्ध विजय लेनिन् की जातीय नीति की। (देर तक हर्षध्वनि)

यह विजय क्यों हुई?

चूसने वाली श्रेणियों के अभाव के कारण। यही श्रेणियाँ हैं, जो मुख्यतया जातियों में पारस्परिक वैमनस्य को संगठित करती हैं। चूसने का अभाव इसका कारण हुआ। क्योंकि यही पारस्परिक अविश्वास को वढ़ाता और जातिक द्वेष को उत्तेजित करता है। चूँकि शक्ति कमकर-श्रेणी के हाथ में है, उस श्रेणी के हाथ में, जो कि हर तरह की दासता का शत्रु और अन्तर्राष्ट्रीय विचारों का सच्चा वाहन है। और कारण है, हर सामाजिक और आर्थिक जीवन-क्षेत्र में लोगों की पारस्परिक सहायता में योग देना। और आख़िरी कारण है, स०स०स०र० की जनता की जातिक संस्कृति—वह संस्कृति जो आकार म जातिक है, और भीतर से समाजवादी है—की समृद्धि। यह और इसी तरह के दूसरे कारण हैं, जिन्होंने स०स०स०र० के लोगों की दृष्टि में भारी परिवर्तन किया। उनका पारस्परिक अविश्वास लुप्त हो गया। उनमें परस्पर मित्रता का भाव विकसित हुआ। और इस प्रकार एक अकेले संयुक्त राष्ट्र के भीतर लोगों में परस्पर वास्तविक भ्रातृ-भाव-पूर्ण सहयोग स्थापित हो गया।

इसके परिणामस्वरूप अव हमारे सामने एक पूर्णतया तैयार बहुजातिक समाजवादी राष्ट्र मौजूद है; जो कि हर प्रकार की परीक्षाओं में उत्तीर्ण

हुआ है। जिसकी स्थिरता को संसार के किसी भाग का कोई भी राष्ट्रीय राज्य देखकर ईर्ष्या किये बिना नहीं रहेगा। (ज़ोर की हर्ष-ध्वनि)

उक्त समय के भीतर स०स०स०र० के जातिक संबंध के क्षेत्र में यह परिवर्तन उपस्थित हुए हैं।

१९२४ से १९३६ तक के समय के भीतर स०स०स०र० के आर्थिक और समाजी-राजनीतिक जीवन के क्षेत्र में जो परिवर्तन हुए हैं, उनका यह है पूर्ण योग।

३—विधान-मसविदे की कुछ विशेषताएँ

नये विधान के मसविदे में स०स०स०र० के जीवन के इन परिवर्तनों का क्या आभास मिलता है?

दूसरे शब्दों में, मुख्य निश्चित विशेषताएँ क्या हैं इस विधान-मसविदे की—जो वर्तमान कांग्रेस के सामने विचारार्थ उपस्थित किया गया है?

विधान-कमीशन को हिदायत हुई थी कि वह १९२४ के विधान में संशोधन करे। विधान-कमीशन के कार्य के परिणामस्वरूप एक नया विधान, स०स०स०र० के नये विधान का मसविदा, सामने आया है। विधान-कमीशन नये विधान के मसविदे को तैयार करते वक़्त यह ख़याल कर चुका था, कि विधान को प्रोग्राम से नहीं मिलाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि विधान और प्रोग्राम में आवश्यक भेद है। प्रोग्राम बतलाता है ऐसी चीज़ को, जो अभी मौजूद नहीं है, जिसे कि भविष्य में प्राप्त करना और जीतना है। इसके विरुद्ध विधान को कहना होता है उस चीज़ को, जो कि मौजूद है। जो कि अब तक वर्तमान काल में पाई और जीती जा चुकी है। प्रोग्राम का संबंध मुख्यतया भविष्य से होता है और विधान का सम्बन्ध वर्तमान से।

इसको स्पष्ट करने के लिए दो उदाहरण देते हैं—

हमारा समाजवादी समाज अभी ही मुख्यतया समाजवाद को प्राप्त करने में कामयाब हुआ है। इसने एक समाजवादी जीवन—जिसे कि मार्क्सवादी दूसरे शब्दों में प्रथम या निम्न प्रकार का साम्यवाद कहते हैं—का निर्माण किया है। अतएव प्रधानतया हमने साम्यवाद के प्रथम आकार, समाजवाद को अभी ही प्राप्त कर लिया (देर तक हर्ष-ध्वनि)। साम्यवाद के इस आकार का मौलिक सिद्धान्त है, जैसा कि आप जानते हैं—'हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार, हर एक को उसके काम के अनुसार'—सूत्र है। क्या हमारा विधान यह बात—कि समाजवाद तक पहुँचा जा चुका है—को प्रदर्शित करता है? क्या इसे हमें अपनी सफलताओं पर आधारित करना चाहिए? निस्सन्देह इसे ज़रूर करना चाहिए। ऐसा ज़रूर करना चाहिए। क्योंकि स०स०स०र० के लिए समाजवाद ऐसी चीज़ है जिसे प्राप्त किया और जीता जा चुका है।

लेकिन सोवियत्-समाज अभी साम्यवाद के ऊँचे रूप पर नहीं पहुँच सका है। जहाँ पर पहुँचने पर यह सूत्र माना जायगा—'हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार, हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार'—यद्यपि हमारे सोवियत्-समाज के सामने भविष्य में समाजवाद के इसी ऊँचे रूप की प्राप्ति अभीष्ट है। क्या हमारा विधान साम्यवाद के इस ऊँचे आदर्श पर आधारित होना चाहिए, जो कि अभी मौजूद नहीं है, जिसे कि अभी हमें प्राप्त करना है? नहीं, आधारित नहीं होना चाहिए। क्योंकि स०स०स०र० के लिए साम्यवाद का वह ऊँचा रूप ऐसी चीज़ है, जो कि अभी तक प्राप्त नहीं की जा चुकी है, जिसे कि भविष्य में प्राप्त करना है। विधान ऐसा नहीं कर सकता; जब तक कि इसे प्रोग्राम या भविष्य की सफलताओं की घोषणा के रूप में न परिणत कर दिया जाय।

वर्तमान ऐतिहासिक समय में हमारे विधान के लिए यह सीमाएँ हैं।

इस प्रकार नये विधान का मसविदा, जितना रास्ता हमने तय किया है, जितनी चीज़ें हम पा चुके हैं, उनका संक्षेप है। इसीलिए जो कुछ पाया

जा चुका है, और जो कुछ वास्तविक रूप में जीता जा चुका है, उसका अंकन और कानूनी एकीकरण यह विधान है। (ज़ोर की हर्ष-ध्वनि)

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे का यह प्रथम निश्चित आकार है।

और भी। पूँजीवादी देशों के विधान इस धारणा के साथ तैयार होते हैं कि पूँजीवादी सिद्धान्त अचल है। इन विधानों का मुख्य आधार है, पूँजीवाद के सिद्धान्त, जिसके कि प्रधान स्तंभ हैं—भूमि, जंगल, फैक्टरी, कारख़ाना और उपज के दूसरे औज़ारों और साधनों का वैयक्तिक स्वामित्व। मनुष्य का मनुष्य द्वारा चूसा जाना, तथा चूषक और चूषित का मौजूद रहना; समाज के एक छोर पर बहुसंख्यक जाँगर चलानेवालों का निराशापूर्ण जीवन और दूसरी ओर मुट्ठी भर जाँगर न चलानेवालों का व्यसनपूर्ण निश्चित जीवन आदि आदि। वे विधान इन या ऐसे ही दूसरे पूँजीवाद के स्तंभों पर अवलंबित हैं। वे विधान इन्हें सूचित करते हैं। वे उन्हें कानून का रूप देते हैं।

उनके विरुद्ध स०स०स०र० के नये विधान का मसविदा इस बात को सामने रख कर चलता है कि पूँजीवादी प्रथा ख़तम हो चुकी, और स०स०स०र० में समाजवादी सिद्धान्त की विजय हुई। स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे का प्रधान आधार है, समाजवाद के सिद्धान्त। उसके मुख्य स्तंभ हैं—जिन्हें कि जीता और पाया जा चुका है—भूमि, जंगल, फैक्टरी, कारख़ाने और उपज के औज़ारों और साधनों में समाज का स्वामित्व; चूषक श्रेणी और चूसने को उठा देना। बहुसंख्यक की दरिद्रता और अल्पसंख्यक के ऐश व आराम को उठा देना। बेकारी को उठा देना। 'जो काम नहीं करता, वह खा नहीं सकता' के सूत्र के अनुसार हर एक उपयुक्त शरीर-वाले नागरिक के लिए काम करना आवश्यक और सन्माननीय कर्तव्य है। काम करने का अधिकार अर्थात् हर एक नागरिक को काम मिलने की गारंटी का अधिकार मिलना चाहिए। अधिकार मिलना चाहिए छुट्टी

और विश्राम का, अधिकार मिलना चाहिए शिक्षा आदि का। नये विधान का मसविदा समाजवाद के इन और ऐसे अन्य स्तंभों के ऊपर अवलंबित है। विधान उन्हें सूचित करता है और उन्हें कानून का रूप देता है।

नये विधान के मसविदे का यह दूसरा विशेष रूप है।

और भी। पूँजीवादी विधान पहले ही से इस प्रतिज्ञा को ज़ोर से पकड़ कर आगे चलते हैं; कि समाज परस्पर विरोधी श्रेणियों पर अवलंबित है—ऐसी ऐसी श्रेणियों पर अवलंबित हैं—जिनमें एक सम्पत्ति की मालिक हैं और दूसरी वे जिन के पास सम्पत्ति नहीं। चाहे कोई भी दल अधिकारारूढ़ हो, समाज का नेतृत्व करने में राज्य (अधिनायकत्व) अवश्य पूँजीवादियों के हाथ में होना चाहिए और वह मानते हैं कि विधान का प्रयोजन है, लाभ उठानेवाली धनी श्रेणियों की इच्छा के अनुसार सामाजिक व्यवस्था को दृढ़ करना।

पूँजीवादी विधानों के बरख़िलाफ़ स०स०स०र० के नये विधान का मसविदा इस बात को ले कर चलता है; कि यहाँ समाज में परस्पर विरोधी श्रेणियाँ नहीं रह गईं; और समाज में दो मित्रतापूर्ण भाव रखनेवाले वर्ग कमकर और किसान हैं। और यही वर्ग—जाँगर चलानेवाले वर्ग—अधिकारारूढ़ हैं। समाज का नेतृत्व करने में राज्य (अधिनायकत्व) अवश्य श्रमिक वर्ग—जो कि समाज में बहुत उन्नत वर्ग है—के हाथ में होना चाहिए। विधान का यह प्रयोजन है, कि जाँगर चलानेवालों की इच्छा के अनुकूल तथा उनके लिए लाभप्रद सामाजिक व्यवस्था को दृढ़ करना।

नये विधान के मसविदे का यह तीसरा विशेष रूप है।

और भी। पूँजीवादी विधान इस प्रतिज्ञा को मज़बूती से पकड़ कर चलते हैं; कि सभी राष्ट्र और जातियाँ बराबर का अधिकार नहीं रख सकतीं। राष्ट्रों में भी कुछ पूर्ण अधिकार-प्राप्त हैं और कुछ को पूर्ण अधिकार नहीं प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त एक तीसरे प्रकार के राष्ट्र और जातियाँ हैं। उदाहरणार्थ परतंत्र देश, जिन्हें कि पूर्ण अधिकार न

पानेवाली जातियों से भी कम अधिकार है। इसका मतलब यह है कि ये सभी विधान भीतर से राष्ट्रीय शासक राष्ट्रों के विधान हैं।

उन विधानों से भिन्न स०स०स०र० के नये विधान का मसविदा उनके बिलकुल विरुद्ध (राष्ट्रीय नहीं बल्कि) पूर्णतया अन्तर्राष्ट्रीय है। वह इस बात को मान कर चलता है कि सभी जातियों और राष्ट्रों का समान अधिकार है। वह इस बात को मान कर चलता है कि कहीं रंग और भाषा के भेद नहीं, सांस्कृतिक विकास और राजनैतिक विकास का तारतम्य नहीं, राष्ट्रों और जातियों का कोई दूसरा पारस्परिक भेद नहीं। जातियों के अधिकार-विषयक असमानता के औचित्य को सिद्ध नहीं किया जा सकता। इससे सिद्ध होता है कि सभी राष्ट्रों और जातियों को भूत और भविष्य की स्थिति के ख़याल को छोड़ कर उनकी सबलता या निर्बलता के ख़याल को छोड़ कर समाज के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में समान अधिकार मिलना चाहिए।

नये विधान के मसविदे का यह चौथा विशेष रूप है।

नये विधान के मसविदे का पाँचवाँ रूप है, इसका एकाकारता के साथ सर्वतोभावेन जनसत्ताकपन। जन-सत्ता के ख़याल से पूँजीवादी विधानों को दो समुदायों में बाँटा जा सकता है। एक समुदायवाले विधान, नागरिकों के अधिकारों की समानता और जन-सत्ताक स्वतंत्रता से खुले तौर से इनकार करते हैं, या काम में उसे नहीं मानते। दूसरे समुदायवाले विधान, जनसत्ताक सिद्धान्तों को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, बल्कि उनका विज्ञापन भी देते हैं; लेकिन साथ ही साथ वह ऐसे संरक्षण और नियंत्रण तैयार करते हैं, जो कि जनसत्ताक अधिकारों और स्वातंत्र्यों को तोड़-मरोड़ देते हैं। वे सभी नागरिकों के लिए समान मताधिकार की बातें करते हैं; लेकिन एक ही साँस में उसपर निवास-स्थान, शिक्षा और धन की भी योग्यताओं की शर्त रख कर सीमित कर देते हैं। वे नागरिकों के समानाधिकारों की वात करते हैं, और साथ ही एक साँस में अपवाद भी

कर डालते हैं कि यह स्त्रियों या उनके कुछ भाग के लिए नहीं हैं। और इसी तरह और भी।

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे का यह भी एक विशेषरूप है कि संरक्षण (अपवाद) और नियंत्रण (सीमित करना) से यह मुक्त है। इसकी दृष्टि में क्रियाशील और अक्रियाशील नागरिकों का भेद नहीं। इसके लिए सभी नागरिक क्रियाशील हैं। यह स्त्री और पुरुष, निवासी और ग़ैरनिवासी, धनी और निर्धन, शिक्षित और अशिक्षित के बीच किसी प्रकार का भेद नहीं स्वीकार करता। समाज में हर एक नागरिक का स्थान धन की योग्यता, जातीयता, या स्त्री-पुरुष भेद या पद निश्चित नहीं करते; बल्कि वैयक्तिक योग्यता और वैयक्तिक जाँगर उसे निश्चित करता है।

अन्तिम, नये विधान के मसविदे का एक और भी रूप है। पूंजीवादी विधान प्रायः ऊपरी तौर से नागरिकों के अधिकारों को निश्चित करने ही तक में अपने कर्तव्य की इति श्री समझते हैं। वे इन अधिकारों के उपयोग के लिए आवश्यक स्थितियों, उनके उपयोग की संभावनाओं और जिन साधनों द्वारा उनका उपयोग हो सकता है, उन साधनों के बारे में सोचने की तकलीफ़ गवारा नहीं करते। वे नागरिकों की समानता की बात करते हैं, लेकिन वे इसे भूल जाते हैं कि मालिक और मज़दूर, ज़मींदार और किसान—जब कि समाज में एक के पास धन और राजनीतिक बल है, और दूसरा उन दोनों से वंचित है, जब कि एक चूसनेवाला है और दूसरा चूसा जानेवाला—के बीच कैसे वास्तविक समानता हो सकती है। अथवा वह व्याख्यान, सभा और प्रेस की स्वतंत्रता की बात करते हैं; लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि सभी स्वतंत्रताएँ श्रमिक-श्रेणी के लिए सिर्फ़ खोखले शब्दमात्र हैं; जब कि उनके पास सभाओं के लिए उपयुक्त मकान नहीं, अच्छा छापाखाना नहीं, पर्याप्त परिमाण में छापने का काग़ज़ नहीं है, इत्यादि।

नये विधान के मसविदे का यह विशेष रूप है, कि यह नागरिकों के बाहरी अधिकार को निश्चित करने ही तक महदूद नहीं रहता, बल्कि इन अधिकारों की गारंटी के लिए और इन अधिकारों के उपयोग के लिए आवश्यक साधनों का प्रबंध करता है। यह नागरिकों के अधिकारों की समानता की घोषणा मात्र नहीं करता, बल्कि कानून द्वारा इस बात को दृढ़ कर देता है, कि चूसने का राज्य उठा दिया गया। नागरिक सभी प्रकार के चूसनों से स्वतंत्र कर दिया गया। यह काम पाने के अधिकार की घोषणा नहीं करता, बल्कि कानून इस बात का ज़िम्मा लेता है कि सोवियत्-समाज में (मंदी आदि) दुर्घटनाओं का अस्तित्व नहीं। बेकारी नष्ट की जा चुकी है। यह जन-सत्ताक स्वतंत्रताओं की सिर्फ घोषणा ही नहीं करता, बल्कि कानूनन् उनकी ज़िम्मेवारी लेता है और उसके लिए निश्चित आर्थिक साधन मुहय्या करता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नये विधान के मसविदे में जो जन-सत्ताकपन है, वह साधारण 'मामूली' और 'सर्वत्र स्वीकृत' जनसत्ताकता नहीं है; बल्कि समाजवादी जनसत्ताकता है।

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे के ये हैं मुख्य निश्चित रूप।

नये विधान का मसविदा १९२४ से १९३६ तक के समय के भीतर स०स०स०र० की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन के संबंध में होने वाली उन्नति और परिवर्तनों को सूचित करता है।

४—विधान मसविदे पर पूँजीवादियों का आक्षेप

विधान-मसविदे पर पूँजी-वादियों के आक्षेप के बारे में चंद शब्द।

विधान-मसविदे के प्रति विदेशी पूँजीवादी समाचार-पत्रों के भाव निस्सन्देह दिलचस्पी से खाली नहीं हैं। चूँकि विदेशी पत्र पूँजीवादी देशों की जनता के भिन्न-भिन्न स्तरों के जनमत प्रकट करते हैं, इसलिए उन्होंने विधान के मसविदे के ख़िलाफ़ जो दोष लगाये हैं, उनकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

विधान-मसविदे के प्रति विदेशी पत्रों के मनोभाव का प्रथम आभास था, विधान-मसविदे की उपेक्षा करना। मेरा मतलब यहाँ है, सब से अधिक प्रगति-विरोधी फ़ासिस्ट पत्रों से। इस श्रेणी के समालोचकों ने यही अच्छा समझा, कि विधान के मसविदे की उपेक्षा कर दी जाय, जिससे मालूम हो कि विधान जैसी चीज़ न कोई है न थी। यह कहा जा सकता है कि चुप रहना समालोचना नहीं है; लेकिन यह ठीक नहीं। चुप रहना भी, वस्तु की सत्ता की उपेक्षा करने का एक ख़ास ढंग भी, एक प्रकार की आलोचना है—यह सच है कि वह मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद प्रकार की—लेकिन तो भी वह एक आक्षेप है (हँसी और हर्ष ध्वनि)। लेकिन उनके चुप रहने का ढंग असफल रहा। अन्त में वे मजबूर हुए कि बात को खोलें और दुनिया को सूचित करें। यद्यपि यह उनके लिए अफ़सोस की बात थी, कि स०स०स०र० के विधान के मसविदे का अस्तित्व है। इतना ही नहीं, बल्कि वह जनता के दिमाग़ों पर विषैला असर भी करने लगा है। यह छोड़ दूसरा हो ही नहीं सकता था। क्योंकि आख़िर संसार में पढ़नेवालों में जीते लोगों में कुछ जनमत है, और वे चाहते हैं बात के सच-झूठ के बारे में जानना। ऐसे लोगों को चिरकाल तक धोखे में रखना बिलकुल असंभव है। धोखा देना बहुत दूर तक नहीं चल सकता। ....

दूसरे प्रकार के समालोचक स्वीकार करते हैं कि विधान-मसविदा नाम की एक चीज़ वस्तुतः है; लेकिन यह मसविदा कोई ख़ास दिलचस्पी की चीज़ नहीं है; क्योंकि वह वस्तुतः विधान का मसविदा नहीं है, बल्कि रद्दी का टुकड़ा, एक खोखली प्रतिज्ञा, तिकड़म लगा कर जनता को धोखे में डालना है। वह यह भी कहते हैं, कि स०स०स०र० इससे बेहतर मसविदा नहीं तैयार कर सकता था; क्योंकि वह एक राज्य नहीं है, बल्कि भौगोलिक संज्ञा है (हँसी)। और चूँकि वह एक राज्य नहीं है, इसलिए उसका विधान वास्तविक विधान नहीं हो सकता। इस प्रकार के समालोचकों का अच्छा नमूना, यद्यपि यह सुनकर ताज्जुब होगा, जर्मन अर्द्धसरकारी पत्र "ड्वाश्

नये विधान के मसविदे का यह विशेष रूप है, कि यह नागरिकों के बाहरी अधिकार को निश्चित करने ही तक महदूद नहीं रहता, बल्कि इन अधिकारों की गारंटी के लिए और इन अधिकारों के उपयोग के लिए आवश्यक साधनों का प्रबंध करता है। यह नागरिकों के अधिकारों की समानता की घोषणा मात्र नहीं करता, बल्कि कानून द्वारा इस बात को दृढ़ कर देता है, कि चूसने का राज्य उठा दिया गया। नागरिक सभी प्रकार के चूसनों से स्वतंत्र कर दिया गया। यह काम पाने के अधिकार की घोषणा नहीं करता, बल्कि कानून इस बात का ज़िम्मा लेता है कि सोवियत्-समाज में (मंदी आदि) दुर्घटनाओं का अस्तित्व नहीं। बेकारी नष्ट की जा चुकी है। यह जन-सत्ताक स्वतंत्रताओं की सिर्फ घोषणा ही नहीं करता, बल्कि कानूनन् उनकी ज़िम्मेवारी लेता है और उसके लिए निश्चित आर्थिक साधन मुहय्या करता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नये विधान के मसविदे में जो जन-सत्ताकपन है, वह साधारण 'मामूली' और 'सर्वत्र स्वीकृत' जनसत्ताकता नहीं है; बल्कि समाजवादी जनसत्ताकता है।

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे के ये हैं मुख्य निश्चित रूप।

नये विधान का मसविदा १९२४ से १९३६ तक के समय के भीतर स०स०स०र० की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन के संबंध में होने वाली उन्नति और परिवर्तनों को सूचित करता है।

४—विधान मसविदे पर पूँजीवादियों का आक्षेप

विधान-मसविदे पर पूँजी-वादियों के आक्षेप के बारे में चंद शब्द।

विधान-मसविदे के प्रति विदेशी पूँजीवादी समाचार-पत्रों के भाव निस्सन्देह दिलचस्पी से ख़ाली नहीं हैं। चूँकि विदेशी पत्र पूँजीवादी देशों की जनता के भिन्न-भिन्न स्तरों के जनमत प्रकट करते हैं, इसलिए उन्होंने विधान के मसविदे के ख़िलाफ़ जो दोष लगाये हैं, उनकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

विधान-मसविदे के प्रति विदेशी पत्रों के मनोभाव का प्रथम आभास था, विधान-मसविदे की उपेक्षा करना। मेरा मतलब यहाँ है, सब से अधिक प्रगति-विरोधी फ़ासिस्ट पत्रों से। इस श्रेणी के समालोचकों ने यही अच्छा समझा, कि विधान के मसविदे की उपेक्षा कर दी जाय, जिससे मालूम हो कि विधान जैसी चीज़ न कोई है न थी। यह कहा जा सकता है कि चुप रहना समालोचना नहीं है; लेकिन यह ठीक नहीं। चुप रहना भी, वस्तु की सत्ता की उपेक्षा करने का एक ख़ास ढंग भी, एक प्रकार की आलोचना है—यह सच है कि वह मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद प्रकार की—लेकिन तो भी वह एक आक्षेप है (हँसी और हर्ष ध्वनि)। लेकिन उनके चुप रहने का ढंग असफल रहा। अन्त में वे मजबूर हुए कि बात को खोलें और दुनिया को सूचित करें। यद्यपि यह उनके लिए अफ़सोस की बात थी, कि स०स०स०र० के विधान के मसविदे का अस्तित्व है। इतना ही नहीं, वल्कि वह जनता के दिमाग़ों पर विषैला असर भी करने लगा है। यह छोड़ दूसरा हो ही नहीं सकता था। क्योंकि आख़िर संसार में पढ़नेवालों में जीते लोगों में कुछ जनमत है, और वे चाहते हैं बात के सच-झूठ के बारे में जानना। ऐसे लोगों को चिरकाल तक धोखे में रखना बिलकुल असंभव है। धोखा देना बहुत दूर तक नहीं चल सकता।..........

दूसरे प्रकार के समालोचक स्वीकार करते हैं कि विधान-मसविदा नाम की एक चीज़ वस्तुतः है; लेकिन यह मसविदा कोई ख़ास दिलचस्पी की चीज़ नहीं है; क्योंकि वह वस्तुतः विधान का मसविदा नहीं है, वल्कि रद्दी का टुकड़ा, एक खोखली प्रतिज्ञा, तिकड़म लगा कर जनता को धोखे में डालना है। वह यह भी कहते हैं, कि स०स०स०र० इससे वेहतर मसविदा नहीं तैयार कर सकता था; क्योंकि वह एक राज्य नहीं है, बलिक भौगोलिक संज्ञा है (हँसी)। और चूँकि वह एक राज्य नहीं है, इसलिए उसका विधान वास्तविक विधान नहीं हो सकता। इस प्रकार के समालोचकों का अच्छा नमूना, यद्यपि यह सुनकर ताज्जुव होगा, जर्मन अर्द्धसरकारी पत्र "ड्वाश्

डिप्लोमातिश्-पोलितिश् कोरेस्पोन्डेंज"। यह पत्र मुँहफट होकर कहता है—कि स०स०स०र० के विधान का मसविदा एक खोखली प्रतिज्ञा, जालसाज़ी और "पोतेम्किन् गाँव" है। यह निस्संकोच होकर घोषित करता है कि 'स० स०स०र० एक राज्य नहीं है। स०स०स०र० निश्चित सीमा से युक्त एक भौगोलिक संज्ञा से अधिक कुछ भी नहीं है।' (हँसी)। इस मत के अनुसार स०स०स०र० का विधान वास्तविक विधान नहीं समझा जा सकता।

कृपया वतलाइए तो, ऐसे समालोचकों के लिए क्या कहना चाहिए ?

रूसी महान् लेखक **श्चेद्रिन्** अपनी कहानियों में एक बैल अफ़सर को चित्रित करता है। वह बड़ा ही संकीर्ण और ज़िद्दी स्वभाव का था। लेकिन उसका आत्मविश्वास और उत्साह हद को पहुँचा हुआ था। इस नौकरशाह ने हज़ारों निवासियों को नाश कर और बीसों शहरों को जला कर अपने शासित प्रदेश में शान्ति और व्यवस्था स्थापित की। फिर उसने अपने चारों तरफ़ देखा और क्षितिज पर अमेरिका जैसे एक देश को देखा, जो बहुत कम लोगों को मालूम था। और जहाँ के बारे में कहा जाता था, कि वहाँ किसी न किसी तरह की स्वतंत्रता है, जो लोगों को उत्तेजित करती है। और जहाँ का राज्य-शासन दूसरे किस्म का है। नौकरशाह ने अमेरिका को देखा। और उसे बुरा लगने लगा। वह कैसा देश है ? और कैसे वहाँ पहुँच गया ? अपनी सत्ता क़ायम रखने का उसको क्या अधिकार है (हँसी और हर्षध्वनि)? हाँ, उसका अकस्मात् कई सदियों पूर्व पता लगा था, लेकिन क्या उसे फिर अन्तर्हित नहीं किया जा सकता ? जिसमें कि उसकी छाया तक बाक़ी न रह जाय (हँसी) ? तब उसने हुक्म लिखा—"वन्द कर दो अमेरिका को फिर।" (हँसी)। मैं समझता हूँ, ड्वाश-डिप्लोमातिश्-पोलितिश्-**कौरेस्पोन्डेंज** के सज्जन और **श्चेद्रिन्** का नौकरशाह जुड़वें की तरह हैं (हँसी और हर्षध्वनि)। स०स०स०र० देर से इन सज्जनों की आँखों में किरकिरी वना हुआ था। १९ वर्ष तक स०स०स०र० प्रदीप-

स्तंभ की भाँति सारी दुनिया की श्रमिक-श्रेणी में मुक्ति का भाव फैलाता एवं श्रमिक-श्रेणी के दुश्मनों के क्रोध को जगाता मौजूद है। और पता लगता है कि यह स०स०स०र० मौजूद ही नहीं है, बल्कि बराबर बढ़ रहा है। बढ़ ही नहीं रहा है, बल्कि सम्पत्तिशाली होता जा रहा है। सम्पत्तिशाली ही नहीं होता जा रहा है, बल्कि वह एक नये विधान का मसविदा भी तैयार कर रहा है। ऐसा मसविदा जो कि दलित श्रेणियों के दिमाग़ में उत्तेजना पैदा करता और नई आशा का संचार करता है (हर्षध्वनि)। ऐसा होने पर कैसे जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्र के सज्जनों को अनकुस न लगेगा? वह चिल्लाते हैं, कौन यह देश है? और यदि अक्तूबर १९१७ में उसका पता चला, तो इसे फिर क्यों न उसी तरह बन्द कर दिया जाय कि उसकी छाया भी बाकी न रहे। उसके बाद उन्होंने तय किया—स०स०स०र० को फिर बन्द कर दो। लोगों के सामने बाँह उठा कर चिल्लाओ। स०स०स०र० राष्ट्र के तौर की कोई चीज़ नहीं है। स०स०स०र० सिर्फ़ भौगोलिक संज्ञा है (हँसी)।

श्चेद्रिन् के नौकरशाह ने अमेरिका को फिर बन्द करने का हुक्म लिखते हुए, चाहे कुछ भी हो, कुछ वास्तविकता का ख़याल ज़रूर रखा, जब कि हुक्म लिखते वक्त उसने यह भी जोड़ दिया—'तो भी यह मालूम होता है, कि यह मेरे अधिकार के भीतर की बात नहीं है।" (हँसी और हर्ष-ध्वनि की गर्जना)। मैं नहीं जानता कि जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्र के सज्जन इतने अधिक बुद्धिमान् हैं जो सोचें कि 'बन्द कर दो' यह किसी राज्य के बारे में वह काग़ज़ पर नहीं लिख सकते! लेकिन विचारपूर्वक कहने पर 'यह मेरे अधिकार के भीतर नहीं है' कहना पड़ेगा।......... (हँसी और हर्षध्वनि की गर्जना)

यह कहना कि 'स०स०स०र० का विधान खोखली प्रतिज्ञा है, **पोतेम्किन्** गाँव है' इत्यादि। इसके लिए मैं कुछ सर्वसिद्ध घटनाएँ कहूँगा, जो ख़ुद शहादत देंगी।

१९१७ में स०स०स०र० की जनता ने पूँजीवादियों को पदच्युत किया और श्रमजीवियों का अधिनायकत्व स्थापित किया। एक सोवियत् सरकार को स्थापित किया। यह वास्तविक है, (खोखली) प्रतिज्ञा नहीं है।

और भी। सोवियत् सरकार ने ज़मींदार श्रेणी को उठा दिया और १५ करोड़ हेक्तर (प्रायः ३६ करोड़ एकड़) ज़मीन जो पहले ज़मींदारों, मठों, और ज़ार के हाथ में थी, इसके अतिरिक्त और भी भूमि जो कि पहले ही से किसानों के हाथ में थी, छीन कर किसानों को दे दी। यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं।

और भी। सोवियत् सरकार ने पूँजीपति-श्रेणी को बेदखल कर दिया। उनके बैंकों, फ़ैक्टरियों, रेलों, और उपज के औज़ारों तथा साधनों को छीन-कर उन्हें समाज की सम्पत्ति घोषित किया और इन उद्योगों के प्रबंध के लिए श्रमिक-श्रेणी के योग्यतम व्यक्तियों को नियुक्त किया। यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं। (देर तक हर्षध्वनि)

और भी। उद्योग और कृषि को, एक नये साम्यवादी तरीक़े के अनु-सार, एक नई वैज्ञानिक प्रक्रिया के आधार पर संगठित कर आज सोवियत् सरकार ऐसी अवस्था में पहुँची है; जब कि स०स०स०र० की खेती लड़ाई के पहले होनेवाले अनाज का ड्योढ़ा अन्न पैदा करती है; और उद्योग लड़ाई के पहले से पँचगुना चीज़ें पैदा कर रहा है। राष्ट्रीय आय लड़ाई के पहले से चौगुनी हो गई है। यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं। (देर तक हर्षध्वनि)

और भी। सोवियत् सरकार ने बेकारी को उठा दिया। काम पाने का अधिकार, शान्ति और छुट्टी पाने का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, सब को दिया। कमकरों, किसानों और बुद्धिजीवियों के लिए बेहतर आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति तैयार की, और (चुनाव में) छिपी पुर्जी के साथ सार्वजनिक प्रत्यक्ष और समान-मताधिकार अपने नागरिकों के लिए प्रदान किया, यह वास्तविक है, (खोखली) प्रतिज्ञा नहीं। (लंबी हर्षध्वनि)

अन्त में, स०स०स०र० ने एक नये विधान का मसविदा तैयार किया।

वह प्रतिज्ञा नहीं है, बल्कि सर्व-साधारण को विदित बातों का दर्ज करना और क़ानून द्वारा दृढ़ करना है। यह उन बातों का दर्ज करना और क़ानून द्वारा दृढ़ करना है, जो जीती और प्राप्त की जा चुकी हैं।

प्रश्न होता है; क्यों जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्र के सज्जन यह सब पोते-म्किन् गाँव के बारे में कहते हैं; अगर वह नहीं चाहते कि जनता से स०स०स०र० संबंधी सत्य को छिपाया जाय; उन्हें वरग़लाया जाय, धोखा दिया जाय।

यह वास्तविक बात है और वास्तविकता के बारे में कहा जाता है कि वह दुर्दम्य चीज़ है। जर्मन-अर्द्धसरकारी पत्र के सज्जन कह सकते हैं, वह और भी बुरा है (हँसी)। लेकिन हम उन्हें प्रसिद्ध रूसी कहावत के शब्दों में कह सकते हैं—'क़ानून बेवकूफ़ों के लिए नहीं बनाये जाते'। (हँसी और लम्बी हर्ष-ध्वनि)

तीसरी श्रेणी के समालोचक विधान के मसविदे के कुछ गुणों को स्वीकार करने के विरुद्ध नहीं हैं। वह इसे अच्छी बात समझते हैं, लेकिन उनको बहुत सन्देह है कि उसके सिद्धान्तों में से कितने ही प्रयोग में नहीं लाये जा सकते। उनको विश्वास है, कि ये सिद्धान्त आमतौर से अव्यवहार्य हैं और वे किताब ही में पड़े रहेंगे। यह सन्दिग्ध-विचारी लोग हैं। ऐसे सन्दिग्ध-विचारी सभी देशों में पाये जाते हैं।

लेकिन ऐसे सन्देहवाले लोग हमें यह पहली ही बार नहीं मिले हैं। जब १९१७ में बोल्शेविकों ने अधिकार हाथ में लिया, तो इन सन्देहवादियों ने कहा—"बोल्शेविक बुरे नहीं हैं, शायद! लेकिन वे शासन नहीं कर सकेंगे। वे विफल होंगे!" लेकिन असल बात क्या हुई? बोल्शेविक नहीं, बल्कि सन्देहवादी नाकामयाब हुए।

इस प्रकार के सन्देहवादियों ने गृह-युद्ध और उसमें विदेशियों के नाजायज़ दख़ल देने के वक़्त कहा—सोवियत् सरकार बुरी चीज़ नहीं है, लेकिन देनिकिन् और कोल्चक्—हम बतला देना चाहते हैं, अवश्य

विजयी होंगे। लेकिन यहाँ भी बात उलटी हुई। सन्देहवादियों का अनुमान ग़लत निकला।

जब सोवियत् सरकार ने प्रथम पंचवार्षिक योजना प्रकाशित की, तो फिर सन्देहवादियों की सूरतें दिखलाई देने लगीं। उन्होंने कहा—पंचवार्षिक योजना ज़रूर अच्छी चीज़ है, लेकिन इसका होना बहुत मुश्किल है। बोल्शेविकों की पंचवार्षिक योजना कामयाब होनेवाली नहीं है। लेकिन असल बात ने सिद्ध कर दिया कि अभाग के मारे सन्देहवादी फिर एक बार हारे! पंचवार्षिक योजना चार वर्ष में पूरी हुई!

यही बात नये विधान के मसविदे और संदेहवादियों के किये आक्षेपों के बारे में कही जा सकती है। जैसे ही मसविदा प्रकाशित हुआ, वैसे ही इस प्रकार के समालोचक मैदान में अपने निराशापूर्ण सन्देह के साथ तथा विधान के कुछ सिद्धान्तों की अव्यवहार्यता पर सन्देह करते दिखलाई पड़े। इसमें संदेह की ज़रा भी गुंजायश नहीं, कि इस बार भी सन्देहवादी नाकामयाब होंगे। आज भी वैसे ही नाकामयाब होंगे, जैसे पहले अनेक बार हो चुके हैं।

चौथे प्रकार के समालोचक नये विधान के मसविदे पर आक्षेप करते हुए उसके बारे में नाना स्वरों में कहते हैं—"यह दक्षिणपार्श्व (नर्मदल) की ओर झुकना", "श्रमजीवियों के अधिनायकत्व का परित्याग", "बोल्-शेविक शासन का ख़ातमा", "बोल्शेविक् दक्षिण पार्श्व की ओर झुक गये, यह सच्ची बात है।" ऐसे कहनेवालों में कुछ पोलैंड के समाचार-पत्र तथा कितने ही अमेरिका के समाचार-पत्र बड़ा जोश दिखला रहे हैं। कृपया बतलाएँ तो ऐसे समालोचकों के लिए क्या कहा जाय?

श्रमजीवी श्रेणी के अधिनायकत्व के आधार को और विस्तृत करने और अधिनायकत्व को और भी लचकदार तथा राज्य द्वारा समाज के नेतृत्व के लिए और भी प्रबल; श्रमजीवी श्रेणी के अधिनायकत्व को मज-बूत करना नहीं कह कर कमज़ोर करना कहते हैं, या त्याग देना तक कहते हैं, तो क्या उनसे यह पूछना उचित न होगा?—क्या ये सज्जन वस्तुतः

जानते हैं कि श्रमजीवी श्रेणी का अधिनायकत्व क्या चीज़ है ? यदि समाज-वाद की विजयों को कानूनन् दृढ़ता प्रदान करना, उद्योगीकरण, पंचायतीकरण और जनसत्ताकी-करण की कामयाबियों को कानूनन् दृढ़ करना 'दक्षिण-पार्श्व की ओर झुकना है' तो यह पूछना उचित होगा—"क्या सचमुच यह सज्जन जानते हैं कि दक्षिण और वाम में क्या भेद है ?" (हँसी और हर्षध्वनि)।

इसमें सन्देह नहीं कि यह सज्जन विधान के मसविदे की आलोचना करते हुए अपना रास्ता बिलकुल भूल गये। और रास्ता भूल जाने पर दक्षिण-वाम का उन्हें पता नहीं।

इस सम्बन्ध में मुझे गोगोल् के 'मृत आत्मा' की दासी पेलागेया याद आ रही है। पेलागेया ने चिचिकोफ़् के कोचवान सेलिफन् को रास्ता बताने का ज़िम्मा लिया। लेकिन उसे रास्ते का दाहिना, बायाँ भाग मालूम नहीं था, जिससे वह रास्ता भूल किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। यह मानना पड़ेगा, जानकारी का दम भरते हुए भी पोलिश् समाचार-पत्र-वाले आलोचकों का ज्ञान 'मृत आत्मा' की दासी **पेलागेया** से अधिक नहीं है (हर्षध्वनि)। आप को स्मरण होगा, कि कोचवान **सेलिफन्** ने ताना मारते हुए कहा—'ओः, तू मूर्खा ... तुझे दाहिने-बायें का भेद मालूम नहीं है।' हमारे ये अभागे आलोचक भी उसी तरह के ताने के पात्र मालूम होते हैं—'ओः, तुम बेचारे आलोचको, ... तुम्हें दाहिने बायें का भेद मालूम नहीं है।' (लम्बी हर्षध्वनि)

अन्तिम। दूसरे प्रकार के भी कुछ आलोचक हैं। पिछले प्रकार के आलोचक जहाँ विधान के मसौदे पर श्रमिक-श्रेणी के अधिनायकत्व को परित्याग करने का दोष लगाते हैं; वहाँ ये आलोचक लोग, उसके विरुद्ध आक्षेप करते हैं, कि इसमें स०स०स०र० की वर्तमान अवस्था में परिवर्तन करने की कोई बात नहीं; श्रमिक श्रेणी का अधिनायकत्व पूर्ववत ही है; राजनीतिक दलों को स्वतंत्रता नहीं दी गई है; और स०स०स०र० में

पूर्ववत् ही साम्यवादी-दल (कम्युनिस्ट पार्टी) का नेतृत्व कायम रक्खा गया है। इस प्रकार के आलोचकों का खयाल है, कि स०स०स०र० में (राजनीतिक) दलों का अभाव, जनसत्ताकता के सिद्धान्तों की अवहेलना है।

मैं स्वीकार करता हूँ, कि नये विधान के मसौदे में, सचमुच, श्रमिक-श्रेणी का अधिनायकत्व वैसे ही क़ायम रक्खा गया है; जैसे कि उसमें साम्यवादी दल का नेतृत्व क़ायम रखा गया है (उच्च हर्षध्वनि)। यदि हमारे आदरणीय आलोचक इसे विधान के मसौदे का कलंक समझते हैं, तो यह अफ़्सोस की बात है। हम बोल्शेविक इसे मसौदे का गुण समझते हैं (उच्च हर्षध्वनि)।

राजनैतिक दलों की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में हमारी सम्मति दूसरी है। दल का मतलब है श्रेणी का एक भाग, उसका अग्रणी भाग। बहुत से दल और इसीलिये दलों की स्वतंत्रता ऐसे ही समाज में रह सकती है, जिसमें परस्पर विरोधी श्रेणियाँ हैं, जिन श्रेणियों का स्वार्थ एक दूसरी के ख़िलाफ़ और न सुलह होने लायक़ है। जिनमें कि पूँजीपति और कमकर, ज़मींदार और किसान, कुलक और ग़रीब किसान आदि हैं। किन्तु स०स०स०र० में अब पूँजीपति, ज़मींदार, कुलक जैसी श्रेणियाँ नहीं हैं। स०स०स०र० में सिर्फ दो श्रेणियाँ हैं। कमकर और किसान, जिनके स्वार्थ एक दूसरे के विरोधी नहीं। बल्कि उनके स्वार्थ एक दूसरे के सहायक हैं। इसी-लिए स०स०स०र० में अनेक राजनीतिक दलों की ज़रूरत नहीं। और इसीलिए इन दलों की स्वतंत्रता का भी प्रश्न नहीं होता। स०स०स०र० में सिर्फ एक दल साम्यवादी-दल की आवश्यकता है। स०स०स०र० में सिर्फ एक दल साम्यवादी दल रह सकता है जो कि हिम्मत के साथ कमकरों और किसानों के स्वार्थ की पूर्णतया रक्षा करता है। और यह इन श्रेणियों के स्वार्थ की रक्षा बहुत ख़ूबी से करता है; इसमें ज़रा भी सन्देह की गुंजायश नहीं। (उच्च हर्षध्वनि)

वे लोग जनसत्ताकता की बात करते हैं; लेकिन जनसत्ताकता क्या

है? पूँजीवादी देशों में जहाँ कि परस्पर विरोधी श्रेणियाँ हैं—दूर तक विचार करने पर वह जनसत्ताकता है बलवानों के लिए, जनसत्ताकता है अल्पसंख्यक धनी श्रेणी के लिए। इसके विरुद्ध स०स०स०र० में प्रजा-सत्ताकता है जाँगर चलानेवालों की प्रजासत्ताकता। अर्थात् सबकी प्रजासत्ताकता। इससे तो यही मालूम होता है कि जनसत्ताकता के सिद्धान्तों की अवहेलना स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे में नहीं है; बल्कि पूँजीवादी विधानों में है। इसीलिए मैं समझता हूँ कि स०स०स०र० का विधान ही संसार में पूर्णतया जनसत्तात्मक विधान है।

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे की जो आलोचना पूँजीवादियों ने की है, उसकी यह स्थिति है।

५—विधान-मसविदे के संशोधन

आइए, मसविदे के संबंध में जो सारे राष्ट्र में चारों ओर बहस करते समय नागरिकों ने विधान के मसविदे में संशोधन पेश किये हैं, उनपर विचार करें।

सारे राष्ट्र में चारों ओर विधान के मसविदे पर वाद-विवाद हुए हैं। उन्होंने बहुत अधिक संख्या में संशोधन और संवर्द्धन पेश किये हैं। वे सोवियत् पत्रों में प्रकाशित हुए हैं। संशोधनों की नानाकारता और सभी का मूल्य बराबर नहीं है। इसे देखते हुए मेरी राय में उन्हें तीन क़िस्मों में विभक्त किया जा सकता है।

पहली क़िस्म के संशोधनों की यह विशेषता है कि वह विधान-संबंधी प्रश्न से संबंध नहीं रखते, बल्कि उन प्रश्नों से संबंध रखते हैं, जो कि भविष्य की धारा-सभाओं के तात्कालिक क़ानूनी काम के भीतर आते हैं। कुछ बीमा के प्रश्न से संबंध रखते हैं। कुछ कोल्ख़ोज़् के ढांचा संबंधी प्रश्न, कुछ हमारे उद्योग के ढाँचे तथा आर्थिक समस्याओं से संबंध रखते हैं। इन संशोधनों का विषय उक्त प्रकार से है। मालूम देता है, इन संशोधनों को

पेश करनेवालों को विधान-संबंधी समस्याओं और तात्कालिक क़ानून-संबंधी समस्याओं का भेद स्पष्ट नहीं मालूम हुआ। यही वजह है कि अधिक से अधिक जितने क़ानून हो सकें, उन्हें विधान के भीतर ठूंसने का प्रयत्न करते हैं और इस प्रकार विधान को एक क़ानून की पोथी की शकल देना चाहते हैं। विधान मौलिक क़ानून है और वह सिर्फ मौलिक क़ानून है। विधान भविष्य की धारा-सभाओं के अख़्तियार के तात्कालिक क़ानून-निर्माण के काम को पहले ही से मान लेता है, और उनके कामों को भी अपने भीतर नहीं शामिल करता। विधान का काम है कि वह इन धारासभाओं के भविष्य के क़ानून बनाने के काम में सीमा और वैधानिकता प्रदान करें। इस प्रकार के संशोधन और परिवर्द्धन विधान से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रखते। इसलिए उन्हें देश के भविष्य की धारा-सभाओं में भेज देना चाहिए।

दूसरे प्रकार के संशोधन वे हैं, जो कि विधान में ऐतिहासिक उल्लेखों या सोवियत् सरकार जिसे अभी नहीं पा चुकी है, या जिसे भविष्य में उसे पाना चाहिए, के बारे में घोषणाओं को शामिल करना चाहते हैं। विधान में पार्टी, श्रमिक-श्रेणी और सभी जाँगर चलानेवालों ने समाजवाद की विजय के लिए वर्षों की लड़ाइयों में जिन कठिनाइयों को दूर किया; उनका विधान में उल्लेख करना सोवियत् आन्दोलन का अन्तिम लक्ष्य अर्थात् पूर्णतया साम्यवादी समाज के निर्माण को विधान में सूचित करना। ये हैं वे विषय जिन्हें अनेक प्रकार से ये संशोधन पेश करते हैं। मैं समझता हूँ कि इस प्रकार के संशोधनों को भी छोड़ देना चाहिए, क्योंकि विधान से उनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं है। जो बातें अभी तक हस्तगत और प्राप्त की जा चुकी हैं, उनके उल्लेख और क़ानून के रूप देने को विधान कहते हैं। यदि हम विधान के इस मौलिक लक्षण को तोड़ना-फोड़ना नहीं चाहते हैं, तो हमें भूत के ऐतिहासिक उल्लेखों या भविष्य में स०स०स०र० के जाँगर चलानेवालों की सफलताओं के संबंध की घोषणाओं से इसे भरने से

परहेज़ करना चाहिए। इसके लिए हमारे पास दूसरे तरीक़े और दूसरे दस्तावेज़ मौजूद हैं।

अन्तिम। तीसरे प्रकार के संशोधन वे हैं; जिनका सीधा संबंध विधान के मसविदे से है।

इस प्रकार के संशोधनों में अधिकतर ऐसे हैं जो सिर्फ शब्द-योजना से संबंध रखते हैं। उन्हें वर्तमान कांग्रेस के मसविदा बनानेवाले कमीशन को दे देना चाहिए। मैं समझता हूँ कि कांग्रेस ऐसे एक कमीशन को नये विधान के अन्तिम आकार को निश्चित करने के लिए नियुक्त करने जा रही है।

बाकी संशोधन अपने विषय में विशेषता रखते हैं। उनके बारे में मेरी राय में कुछ कहना चाहिए।

(१) सब से पहले मैं विधान-मसविदे की पहली धारा के संशोधनों के बारे में कहता हूँ। इस प्रकार के चार संशोधन हैं। कुछ में कहा गया है, कि "कमकर और किसान-राज्य" की जगह "जाँगर चलानेवालों का राज्य" रख देना चाहिए। दूसरे कहते हैं, कि उसमें "और बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता" "कमकरों और किसानों के राज्य" के साथ जोड़ देना चाहिए। तीसरे प्रकार के संशोधनों में कहा गया है कि "कमकरों और किसानों के राज्य" की जगह "स०स०स०र० की भूमि में बसनेवाली सभी जातियों और राष्ट्रों का राज्य" रखना चाहिए। चौथे प्रकार के संशोधनों में कहा गया है कि "किसान" की जगह "कोल्ख़ोज़ी या समाजवादी कृषि के जाँगर चलानेवाले" रखना चाहिए।

क्या इन संशोधनों को स्वीकृत करना चाहिए? मेरी राय में नहीं स्वीकृत करना चाहिए। विधान-मसविदा की पहली धारा क्या कहती है? वह बतलाती है कि सोवियत् समाज किन किन श्रेणियों से मिल कर बना है। क्या हम मार्क्सवादी, विधान में जिन श्रेणियों से मिल कर हमारा समाज बना है, उनकी उपेक्षा कर सकते हैं? नहीं, हम नहीं उपेक्षा कर सकते।

हम जानते हैं कि सोवियत्-समाज दो श्रेणियों से मिल कर वना है—एक कमकर श्रेणी और एक किसान श्रेणी। और इसी वात को विधान-मसविदे की पहली धारा वतलाती है। यह पहली धारा हमारे समाज की श्रेणी-संवंधी वनावट को सूचित करती है। प्रश्न हो सकता है, कि वुद्धिजीवी कार्यकर्ताओं को फिर क्यों छोड़ दिया गया? वुद्धिजीवी समुदाय कभी एक श्रेणी न था, और न कभी वह एक श्रेणी हो सकता है। वह हमेशा एक ऐसा स्तर था और अव भी है जो कि समाज की सभी श्रेणियों से ले कर अपने सदस्य वनाता है। पुराने ज़माने में वुद्धिजीवी समुदाय अमीरों, मध्यम वर्ग और कुछ कुछ किसानों और वहुत ही कम कमकरों में से अपने सदस्यों की भर्ती करता था। हमारे सोवियत् के ज़माने में वुद्धिजीवी समूह के प्रायः सभी सदस्य कमकरों और किसानों में से भर्ती किये जाते हैं। चाहे जैसे भी वह अपने सदस्यों की भर्ती करता हो, चाहे जैसी भी उसकी शकल हो, वह ज़रूर एक स्तर है, श्रेणी नहीं।

क्या ऐसी स्थिति के कारण वुद्धिजीवी कार्यकर्त्ताओं के अधिकारों पर प्रहार होता है? विलकुल नहीं। विधान-मसविदे की प्रथम धारा सोवियत्-समाज के नाना स्तरों के अधिकार की वात नहीं करती। वह सिर्फ समाज की श्रेणी-संबंधी वनावट वतलाती है। सोवियत्-समाज के नाना स्तरों—जिनमें वुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता भी शामिल हैं—के अधिकारों को विधान-मसविदे के दसवें और ग्यारहवें परिच्छेदों में मुख्यतया कहा गया है। उन परिच्छेदों से सावित है कि कमकर, किसान और वुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता देश के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में विलकुल समान अधिकार रखते हैं। इसलिए वुद्धिजीवी कार्यकर्त्ताओं के अधिकारों के ऊपर प्रहार का प्रश्न ही नहीं होता।

स०स०स०र० में रहनेवाली जातियों और राष्ट्रों के वारे में भी वही वात कही जा सकती है। विधान-मसविदे के दूसरे परिच्छेद में कहा गया है, कि स०स०स०र० समान अधिकारोंवाली जातियों का एक स्वतंत्र संघ है।

क्या यह अच्छा होगा, कि इस सूत्र को विधान-मसविदे की पहली धारा--जो कि सोवियत् समाज की जातिक बनावट की बात नहीं करती, बल्कि उसकी श्रेणी-संबंधी बनावट को कहती है--में दोहराया जाय? निश्चय ही नहीं दोहराना चाहिए। स०स०स०र० के राष्ट्रों और जातियों के अधिकारों को विधान-मसविदे के दूसरे, दसवें और ग्यारहवें परिच्छेदों में कहा ही जा चुका है। उन परिच्छेदों से स्पष्ट है, कि स०स०स०र० के राष्ट्र और जातियाँ देश के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में समान अधिकार रखती हैं। इसलिए जातीय अधिकारों पर प्रहार का सवाल ही नहीं उठता।

यह भी ठीक नहीं होगा, कि 'किसान' की जगह 'कोल्ख़ोज़ी' या 'समाजवादी कृषि का जाँगर चलानेवाला' रक्खा जाय। पहली बात यह है, कि कोल्ख़ोज़ियों के अतिरिक्त अभी किसानों में ग़ैर-कोल्ख़ोज़ी १० लाख के करीब किसान-घर हैं। उनके बारे में क्या करना होगा? क्या इस संशोधन के पेश करनेवाले चाहते हैं कि उनका नाम ही किताब से काट दिया जाय? यह बुद्धिमानी नहीं होगी। दूसरी बात। चूँकि बहुसंख्यक किसान **कोल्ख़ोज़ी** हैं, इसका यह मतलब नहीं निकलता, कि अब वह किसान ही नहीं हैं? और उनके पास, अपना घर, थोड़ा पिछवाड़े का खेत आदि है ही नहीं। तीसरी बात। ऐसा स्वीकार करने पर तो "कमकर" की जगह भी हमें "समाजवादी जाँगर चलानेवाला" बनाना पड़ेगा। जिसके बारे में कि संशोधनकर्त्ता न जाने क्यों चुप हैं? अन्तिम बात। क्या कमकर-श्रेणी और किसान-श्रेणी लुप्त हो चुकी है? अगर लुप्त नहीं हुई है, तो क्या यह अच्छा होगा कि उनके स्थापित नाम को कोष से उड़ा दिया जाय? वास्तविक बात यह है कि संशोधन पेश करनेवाले के दिमाग़ में वर्तमान समाज नहीं है। वह भविष्य समाज का ख़याल कर रहा है, जब कि श्रेणियाँ नहीं रह जायँगी; और कमकर तथा किसान साम्यवादी समाज के जाँगर चलानेवालों के रूप में परिणत हो जायँगे।

इसीलिए ऐसे संशोधन पेश करनेवाले बहुत आगे उड़ रहे हैं। लेकिन विधान बनाते वक़्त भविष्य से न आरंभ करके वर्तमान—जो कि इस वक़्त अस्तित्व में आ चुका है—से आरंभ करना चाहिए। विधान को बहुत आगे न दौड़ना है, न दौड़ाना चाहिए।

(२) उसके बाद विधान-मसविदे की सत्रहवीं धारा पर एक संशोधन है। इस संशोधन में कहा गया है; कि सत्रहवीं धारा, जिसमें कि संघ-रिपब्लिकों को स०स०स०र० से स्वतंत्रतापूर्वक अलग होने का अधिकार दिया गया है, उसे बिलकुल हटा दिया जाय। मैं समझता हूँ, यह प्रस्ताव उचित नहीं है। इसलिए कांग्रेस को इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। स०स०स०र० समान अधिकारवाले संघ-रिपब्लिकों का स्वेच्छा-संघ है, विधान से इस धारा—जो कि स०स०स०र० से स्वतंत्रतापूर्वक अलग होने का अधिकार प्रदान करता है—को निकाल देना इस संघ के स्वेच्छापूर्वक होने की विशेषता के विरुद्ध जाता है। क्या हमें ऐसा कदम उठाना चाहिए? मैं समझता हूँ, हम ऐसा क़दम उठा नहीं सकते, न उठाना चाहिए। कहा जाता है, कि स०स०स०र० में एक भी रिपब्लिक नहीं है, जो कि स०स०स०र० से अलग होना चाहता हो; इसलिए धारा १७ का कोई क्रियात्मक उपयोग नहीं। निश्चय यह ठीक है कि एक भी ऐसी रिपब्लिक नहीं है, जो कि स०स०स०र० से अलग होना चाहता हो, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम स०स०स०र० से संघ-रिपब्लिकों के स्वतंत्रतापूर्वक अलग होने के अधिकार के लिए विधान में जगह न दें। स०स०स०र० में एक भी ऐसा संघ-रिपब्लिक नहीं है, जो कि दूसरे संघ-रिपब्लिक पर अत्याचार करना चाहता हो, लेकिन इसका मतलब हर्गिज़ नहीं कि हम स०स०स०र० के विधान से उस धारा को निकाल दें, जो कि संघ-रिपब्लिकों के अधिकारों की समानता बतलाती है।

(३) एक प्रस्ताव है, कि विधान-मसविदे के दूसरे परिच्छेद में एक नई धारा निम्न अर्थ की जोड़ दी जाय—"उपयुक्त आर्थिक और सांस्कृतिक

विकास के तल पर पहुँचने के बाद स्वायत्त सोवियत्-समाजवादी रिपब्लिकों को संघ-सोवियत्-समाजवादी रिपब्लिकों के रूप में परिणत किया जा सकता है।" क्या इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जाय? मेरे विचार में इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। यह ग़लत प्रस्ताव है। अपने अभिप्राय ही में नहीं; बल्कि इसलिए कि यह शर्त पेश करता है। आर्थिक और सांस्कृतिक परिपक्वता पर ज़ोर देकर स्वायत्त-रिपब्लिकों को संघ-रिपब्लिकों की श्रेणी में परिणत करने के लिए कारण के तौर पर ज़ोर नहीं दिया जा सकता। और न ही आर्थिक या सामाजिक पिछड़ेपन को स्वायत्त-रिपब्लिकों की सूची में किसी एक रिपब्लिक को छोड़ रखने के लिए कारण माना जा सकता है। यह मार्क्सवादी, लेनिन्वादी दृष्टि नहीं है। उदाहरणार्थ तातार-रिपब्लिक स्वायत्त-रिपब्लिक ही बनी है, जब कि कज़ाक-रिपब्लिक संघ-रिपब्लिक बन गई है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सांस्कृतिक और आर्थिक विकास की दृष्टि से देखने पर कज़ाक रिपब्लिक तातार रिपब्लिक से अधिक ऊँची है। बात बिलकल उलटी है। यही बात वोल्गा जर्मन स्वायत्त रिपब्लिक और किर्गिज संघ-रिपब्लिक के बारे में भी कही जा सकती है। इन दोनों में पहली दूसरी की अपेक्षा सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में अधिक आगे है; यद्यपि वह स्वायत्त-रिपब्लिक ही रह गई है। स्वायत्त-रिपब्लिकों को संघ-रिपब्लिकों के रूप में परिणत करने के कारण क्या हैं?

ऐसे तीन कारण हैं—

अव्वल ऐसे रिपब्लिक को सीमान्त रिपब्लिक—ऐसी रिपब्लिक जो कि चारों तरफ़ से स०स०स०र० की भूमि से घिरी न हो—होना चाहिए। क्यों? क्योंकि संघ-रिपब्लिकों को स०स०स०र० से अलग होने का अधिकार है। जब एक रिपब्लिक संघ-रिपब्लिक हो जाती है, तो न्यायतः उसे इस स०स०स०र० से अपने अलग होने के प्रश्न को उठाने के योग्य होना चाहिए। लेकिन ऐसा प्रश्न वही रिपब्लिक उठा सकती है, जो

कि किसी विदेशी राज्य की सीमा पर हो। और इसलिए चारों तरफ़ स०स०स०र० की भूमि से घिरी न हो। निश्चय हमारे रिपब्लिकों में से एक भी स०स०स०र० से अलग होने के प्रश्न को नहीं उठायेंगी, लेकिन संघ-रिपब्लिकों को स०स०स०र० से अलग होने का अधिकार दिया हुआ है। इसलिए ऐसा प्रबंध होना चाहिए, कि यह अधिकार अर्थशून्य रद्दी का टुकड़ा न बन जाय। उदाहरणार्थ बश्किर-रिपब्लिक या तातार-रिपब्लिक को ले लीजिए। मान लीजिए, कि यह स्वायत्त-रिपब्लिक संघ-रिपब्लिकों की श्रेणी में परिणत कर दी गई, तो क्या वस्तुतः और सचमुच वे स०स०स०र० से अलग होने के प्रश्न को उठा सकती हैं? नहीं, नहीं उठा सकतीं। क्यों? क्योंकि वे चारों ओर से सोवियत् प्रजातंत्रों और ज़िलों से घिरी हुई हैं। और स०स०स०र० से यदि अलग हों, तो उनको कहीं जाने का रास्ता नहीं (हँसी और हर्षध्वनि)। इसलिए यह अनुचित होगा कि ऐसी रिपब्लिकों को संघ-रिपब्लिकों के रूप में परिणत कर दिया जाय।

दूसरे, जो जातियाँ किसी सोवियत्-रिपब्लिक को अपना नाम देती हैं, उन्हें उस रिपब्लिक के भीतर कम या अधिक ठोस बहुमत में होना चाहिए। उदाहरणार्थ **क्रिमिया** स्वायत्त-रिपब्लिक को ले लीजिए। यह एक सीमान्त रिपब्लिक है, लेकिन क्रिमिया के तातार उस रिपब्लिक के बहुमत नहीं हैं, उलटे वे अल्पमत हैं; इसलिए यह अनुचित और युक्ति-विरुद्ध होगा कि **क्रिमिया** रिपब्लिक को संघ-रिपब्लिकों की श्रेणी में बदल दिया जाय।

तीसरे, रिपब्लिक की जन-संख्या बहुत ही कम न होनी चाहिए। उसकी जन-संख्या, कहिए, कम से कम १० लाख से छोटी नहीं होनी चाहिए। क्यों? क्योंकि यह समझना ग़लत होगा, कि कोई छोटी सी रिपब्लिक जिसकी जन-संख्या बहुत थोड़ी है और सेना बहुत छोटी है--एक स्वतंत्र राज्य के तौर पर अपने अस्तित्व को क़ायम रख सकती है। इसमें सन्देह की गुंजायश ही नहीं कि साम्राज्यवादी दरिन्दे तुरन्त ही उसे हड़प कर जायँगे।

मेरी राय में जब तक कि ये तीन कारण मौजूद न हों, वर्तमान ऐतिहासिक क्षण में यह ग़लती होगी, यदि किसी एक स्वायत्त-रिपब्लिक को संघ-रिपब्लिकों की श्रेणी में परिणत करने का प्रश्न उठाया जाय।

(४) प्रस्ताव किया गया है, कि २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८ और २९ धाराओं से प्रदेशों और ज़िलों के रूप में संघ-रिपब्लिकों के प्रबंध-संबंधी प्रादेशिक विभाग की सविस्तर गणना को निकाल दिया जाय। मेरी समझ में यह प्रस्ताव भी स्वीकार करने योग्य नहीं। स०स०स०र० में कुछ लोग ऐसे हैं, जो हमेशा इसके लिए बहुत उत्सुक और तैयार हैं कि बिना थके प्रदेश और ज़िले फिर बनाये जायँ और इस प्रकार हमारे काम में अनिश्चयात्मकता और भ्रम पैदा करें। विधान-मसविदा ऐसे लोगों पर बन्धन लगाता है। और यह बहुत अच्छा है। क्योंकि इस ओर कितनी ही अन्य बातों के विषय में हमें निश्चयात्मकता के वातावरण की आवश्यकता है। हमें स्थिरता और स्पष्टता चाहिए।

(५) पाँचवाँ संशोधन धारा ३३ के संबंध में है। इसमें दो भवनों का बनाना बेकार समझा गया है; और प्रस्ताव किया गया है कि जातिक-सोवियत् को हटा दिया जाय। मेरी राय में यह संशोधन भी ग़लत है। यदि स०स०स०र० एक-जातिक राज्य होता, तो दो भवनों की अपेक्षा एक भवन का होना बेहतर होता। लेकिन स०स०स०र० एक-जातिक राज्य नहीं है। स०स०स०र०, जैसा कि हम जानते हैं, एक बहुजातिक राज्य है। हमारे पास एक सर्वोच्च संस्था है, जिसमें जातिकता का ध्यान न करके स०स०स०र० के सभी जाँगर चलानेवालों के सम्मिलित स्वार्थों का प्रतिनिधित्व है। यह है संघ की सभा। लेकिन सम्मिलित स्वार्थों के अतिरिक्त स०स०स०र० की जातियों के अपने विशेष और निश्चित स्वार्थ हैं—जो कि उनकी निश्चित जातिक विशेषता से संबंध रखते हैं। क्या इस विशेष स्वार्थ की उपेक्षा कर देनी चाहिए? नहीं, नहीं करनी चाहिए। क्या हमें एक विशेष सर्वोच्च संस्था की आवश्यकता है, जो कि स्पष्टतया इन विशेष स्वार्थों को सूचित

करे ? निस्सन्देह हमें ज़रूरत है। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसी संस्था के विना स०स०स०र० जैसे बहुजातिक राज्य का प्रबंध करना असंभव होगा। ऐसी संस्था है यह द्वितीय भवन स०स०स०र० की जातिक-सभा।

यूरोपीय और अमेरिकन राज्यों के पार्लियामेंट-संवंधी इतिहास का उदाहरण दे कर बतलाया गया है, कि उन देशों में दोहरे भवन की प्रथा ने सिर्फ अभावात्मक परिणाम ही पैदा किये हैं; और द्वितीय भवन आमतौर से प्रतिक्रिया के केन्द्र के रूप में बिगड़ जाता और प्रगति के रास्ते में रुकावट डालता है। यह सब सच है, लेकिन यह इस वजह से है, कि उन देशों में दोनों भवनों के बीच समानता नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं द्वितीय भवन को प्रायः पहले भवन से अधिक अधिकार दिये गये हैं, और हमेशा द्वितीय भवन का निर्माण जनसत्ता-विरोधी ढंग से होता है। अकसर इनके सदस्य ऊपर से नियुक्त किये जाते हैं। निस्सन्देह ही यह दोष लुप्त हो जाते हैं जब कि दोनों भवनों में समानता स्थापित की गई हो; और जब कि द्वितीय भवन भी प्रथम की तरह ही जनसत्ताकीय रीति से स्थापित हुआ हो।

(६) और भी। विधान-मसविदे में एक बात ज़ोड़ने के लिए कही गई है—दोनों भवनों के सदस्यों की संख्या बरावर होनी चाहिए। मेरी राय में इस प्रस्ताव को स्वीकृत किया जा सकता है। मेरे विचार में इसका राजनैतिक लाभ स्पष्ट है। क्योंकि यह दोनों भवनों की समानता पर ज़ोर देता है।

(७) इसके बाद विधान-मसविदे में यह जोड़ने का प्रस्ताव आया है कि जातिक-सभा के सदस्यों को भी संघ-सभा के सदस्यों की तरह साक्षात् निर्वाचन द्वारा चुना जाय। मैं समझता हूँ, इस प्रस्ताव को भी स्वीकृत कर लेना चाहिए। यह सच है कि इसके कारण चुनावों में कुछ दफ़्तरी असुविधाएँ होंगी, लेकिन दूसरी ओर इसका राजनैतिक लाभ भी बहुत ज़्यादा है, क्योंकि यह जातिक सभा (सोवियत्) के सन्मान को बढ़ा देगा।

(८) इसके वाद ४० वीं धारा में जोड़ने के लिए यह प्रस्ताव किया

गया है, कि महासोवियत् के प्रेसीदिउम् को अस्थायी क़ानून बनाने का अधिकार दिया जाय। मैं समझता हूँ, कि यह प्रस्ताव ग़लत है और कांग्रेस को इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। हमें अब ऐसी परिस्थिति का ख़ात्मा कर देना चाहिए, जहाँ कि एक नहीं, कई संस्थाएँ क़ानून बनायें। ऐसी परि-स्थिति इस सिद्धान्त के विरुद्ध है कि क़ानून स्थायी होने चाहिए। और हमें इस वक्त क़ानूनों की स्थायित्व की सबसे अधिक आवश्यकता है। स०स० स०र० में क़ानून बनाने का अधिकार सिर्फ एक ही संस्था——स०स०स०र० की महासभा——को होना चाहिए।

(९) और भी, विधान-मसविदे की ४८वीं धारा में यह जोड़ने का प्रस्ताव किया गया है, कि स०स०स०र० की महासभा (सुप्रीम कौंसिल) के प्रेसीदिउम् का अध्यक्ष स०स०स०र० के महासभा द्वारा निर्वाचित नहीं होना चाहिए, बल्कि देश की सम्पूर्ण जनता द्वारा। मेरी राय में यह प्रस्ताव ग़लत है। क्योंकि यह हमारे विधान की स्प्रिट के विरुद्ध जाता है। हमारे विधान के सिद्धान्त के अनुसार स०स०स०र० का एक ऐसा व्यक्ति प्रेसिडेंट नहीं होना चाहिए; जिसे कि सारी जनता, महासभा से अलग चुने; और वह महासभा के विरुद्ध अपने को रख सके। स०स०स०र० का प्रेसीडेंट सहकारी है, महासभा का प्रेसीदिउम् है, साथ ही महासभा के प्रेसीदिउम् का अध्यक्ष है, जो कि सारी जनता द्वारा न निर्वाचित होकर महासभा द्वारा निर्वा-चित हुआ है; और महासभा के सामने उत्तरदायी है। इतिहास के तजर्बे ने बतलाया है कि सर्वोच्च संस्थाओं का इस प्रकार का ढाँचा अत्यन्त प्रजा-सत्ताक है; और यह अनभिलषित घटनाओं से देश को बचाता है।

(१०) इसके बाद एक संशोधन धारा ४८ पर है। इसमें कहा गया है कि स०स०स०र० की महासभा के प्रेसीदिउम् के उपाध्यक्षों की संख्या को बढ़ा कर ग्यारह——प्रत्येक संघ-रिपब्लिक से, एक कर दिया जाय। मैं समझता हूँ कि इस संशोधन को स्वीकृत किया जा सकता है, क्योंकि यह स०स०स०र० के महासभा का सम्मान और बढ़ा देगा।

(११) इसके बाद ७७ धारा पर एक संशोधन है, जिसमें कहा गया है कि एक नये अखिल जन-कमीसर—सैनिक उद्योग-संबंधी जन-कमीसर—को संगठित किया जाय। मैं समझता हूँ कि इस प्रस्ताव को भी उसी तरह स्वीकार कर लेना चाहिए (हर्षध्वनि); क्योंकि अब समय आ गया है कि हम अपने सैनिक उद्योग को अलग कर के जन-कमीसर का उचित रूप प्रदान करें। मुझे मालूम होता है कि ऐसा करने से हमारे देश की सैनिक-शक्ति का विकास होगा।

(१२) फिर है, एक संशोधन विधान-मसविदे की १२४ वीं धारा पर। इसमें कहा गया है कि धार्मिक पूजा के अनुष्ठान का निषेध कर दिया जाय। मैं समझता हूँ कि इस संशोधन को अस्वीकृत कर दिया जाय, क्योंकि यह हमारे विधान की स्प्रिट के विरुद्ध जाता है।

(१३) अन्तिम संशोधन जो बहुत कुछ वास्तविक रूप का है, और विधान-मसविदे की १३५वीं धारा से संबंध रखता है, इसमें कहा गया है, कि धर्म के पुरोहितों, भूतपूर्व सफेद-वर्गियों, पहले के सभी धनी, और वे व्यक्ति जो कि समाज के लिए लाभदायक किसी पेशे में नहीं लगे हैं, उन्हें मताधिकार नहीं देना चाहिए, या ऐसा होने पर भी इस श्रेणी के लोगों के मताधिकार को परिसीमित कर के सिर्फ निर्वाचन करने का अधिकार देना चाहिए, निर्वाचित होने का नहीं। मैं समझता हूँ कि इस संशोधन को अस्वीकृत कर देना चाहिए। सोवियत्-सरकार ने काम न करनेवाले तथा चूसनेवाले वर्ग को हमेशा के लिए मताधिकार से वंचित नहीं किया, बल्कि अस्थायी तौर से, थोड़े समय तक के लिए वंचित किया था। ऐसा एक समय था, जब यह श्रेणी जनता के ख़िलाफ़ खुल कर लड़ाई कर रही थी, सोवियत्-कानूनों का विरोध कर रही थी। उस विरोध का जवाब सोवियत्-सरकार की ओर से था कि उन्हें मताधिकार के अधिकार से वंचित कर दिया जाय। लेकिन तब से अब तक कम समय नहीं बीता है। इस समय के भीतर हम चूसनेवाली श्रेणियों को उठा देने में कामयाब हुए हैं; और सोवि-

यत्-सर्कार एक अप्रतिहत शक्ति बन गई है। क्या हमारे लिए अब समय नहीं आ गया है, कि उस क़ानून को बदला जाय? मैं समझता हूँ, समय आ गया है। कहा जाता है कि यह ख़तरनाक बात है। क्योंकि इससे सोवियत्-सरकार के विरोधी लोग—पहले के कुछ सफ़ेद वर्गी, कुलक, पुरोहित आदि—देश की महान् संस्था में आ घुसेंगे। लेकिन यहाँ डरने को क्या है? अगर तुम भेड़ियों से डरते हो तो जंगल से अलग रहो! (हँसी और उच्च हर्षध्वनि) पहली बात तो यह है कि सभी भूतपूर्व कुलक, सफ़ेद वर्गीय, या पुरोहित सोवियत्-सरकार के विरोधी नहीं हैं। दूसरी बात यह है, कि यदि किसी जगह के लोग विरोधी व्यक्तियों को चुनते हैं तो यह प्रगट करेगा, कि हमारा प्रचार-कार्य बहुत बुरी तौर से संगठित हुआ था; और हम ऐसे अपमान के मूर्ख पात्र होंगे। अगर हमारा प्रचार-कार्य बोल्शेविक ढंग से संचालित होगा, तो लोग विरोधी व्यक्तियों को अपनी महान् संस्था में आने नहीं देंगे। इसका मतलब है, कि हमें काम करना चाहिए, घिघियाना नहीं चाहिए (उच्च हर्षध्वनि)। हमें काम करना चाहिए, और इसके लिए प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए कि सरकारी हुक्म से हर एक चीज़ बनी-बनाई हमारे सामने आ जायगी। बहुत पहले १९१९ में लेनिन् ने कहा था—कि वह समय दूर नहीं है जब कि सोवियत्-सरकार इसे लाभदायक समझेगी कि वह बिना प्रतिबन्ध के सार्वजनिक मताधिकार का आरंभ करे। कृपया ख़याल कीजिए, "बिना किसी प्रतिबंध" इस वाक्य पर! उसने इस बात को ऐसे समय में कहा था, जब कि विदेशी सेना का नाजायज़ हमला अभी बन्द नहीं हुआ था; और जब हमारा उद्योग और कृषि बहुत ही शोचनीय दशा में थी। तब से १७ वर्ष बीत गये। साथियो, क्या यह समय नहीं है, कि हम लेनिन् के वचन को पूरा करें। मैं समझता हूँ, समय आ गया है।

१९१९ में अपने "रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल) के प्रोग्राम का मसविदा" में उसने यह कहा था—मुझे इसे पढ़ने की आज्ञा दीजिए।

"रूसी कम्युनिस्ट पार्टी को जाँगर चलानेवाली जनता के सामने स्पष्ट कर देना चाहिए, जिसमें कि अस्थायी ऐतिहासिक आवश्यकताओं को ग़लती से साधारण के तौर पर न मान लें। नागरिकों के एक भाग को मताधिकार से वंचित करना सोवियत्-प्रजातंत्र में मताधिकार से वंचित नागरिकों की एक निश्चित श्रेणी को जीवन भर के लिए नहीं है; जैसा कि अधिकांश पूँजीवादी जनसत्ताक प्रजातंत्रों में हुआ है। बल्कि इसका संबंध सिर्फ चूसनेवालों से है। सिर्फ उनसे है, जो अपनी चोषक की स्थिति को क़ायम रखने के लिए, पूँजीपतिक संबंध को अक्षुण्ण रखने के लिए समाजवादी सोवियत्-प्रजातंत्र के मौलिक क़ानूनों को तोड़ने में तत्पर हैं। इसीलिए सोवियत्-प्रजातंत्र में हर एक दिन जो कि समाजवाद के मज़बूत करने में लग रहा है, वह एक ओर बचे-खुचे चूषकों या पूँजीपतिक संबंध की संभावना को कम करता जा रहा है। और इस प्रकार स्वयं मताधिकार से वंचित पुरुषों के प्रतिशतक को कम कर रहा है। रूस में इस वक्त ऐसे लोग मुश्किल से दो या तीन प्रतिशत हैं। दूसरी ओर अदूर भविष्य में विदेशी हमलों के बन्द होने और पहले के मालिकों की सम्पत्ति के ज़ब्त होने का काम पूरा हो जाने पर, कुछ नियमों के साथ ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी, जब कि श्रमजीवी राज्य-शक्ति चूषकों के विरोध को दबाने के लिए कोई दूसरा तरीका चुनेगी और **बिना किसी निर्बन्ध** के सार्वजनिक मताधिकार प्रदान करेगी" (लेनिन्-ग्रन्थ-संग्रह, भाग २४, पृष्ठ ९४, रूसी संस्करण) मैं समझता हूँ, यह स्पष्ट है।

स०स०स०र० के विधान के मसविदे के संशोधनों और संवर्द्धनों की यह स्थिति है।

६—स०स०स०र० के नये विधान का महत्त्व

देश के कोने कोने में करीब पाँच महीने तक जो वाद-विवाद हुआ है, उसके परिणामों को देखने से यह माना जा सकता है कि वर्तमान कांग्रेस-

विधान-मसविदे को स्वीकार कर लेगी (उच्च हर्षध्वनि और करतल ध्वनि, सभी खड़े)।

चन्द दिनों में सोवियत्-संघ के पास एक नया, सविस्तर समाजवादी-जनसत्ताकता के सिद्धान्तों पर अवलंबित समाजवादी विधान होगा।

यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ होगा, जिसमें कि सरल, और संक्षिप्त शब्दों में प्राय: रोज़ाना टिप्पणी के ढंग में स०स०स०र० में समाजवाद के विजय की घटनाएँ, पूँजीवादियों की ग़ुलामी से स०स०स०र० के जाँगर चलानेवालों के मुक्त होने की घटनाएँ, स०स०स०र० में पूर्ण और परस्पर अविरोधी जन-सत्ताकता के विजय की घटनाएँ दर्ज हैं।

यह एक ऐसा दस्तावेज़ होगा, जो कि उस घटना को सिद्ध करेगा, जिसका कि स्वप्न पूँजीवादी देशों के लाखों ईमानदार आदमी देखते थे और अब भी देख रहे हैं। जो कि स०स०स०र० में प्राप्त किया जा चुका है (उच्च हर्षध्वनि)। यह एक ऐसा दस्तावेज़ होगा, जो कि इस बात को सिद्ध करेगा, कि जो बात स०स०स०र० में प्राप्त की जा चुकी है दूसरे देशों में भी उसका प्राप्त करना बिलकुल संभव है (उच्च हर्षध्वनि)।

इससे यह मालूम होगा कि स०स०स०र० के नये विधान का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व कितना अधिक है।

आज, जब कि फ़ासिज़्म की भयंकर लहर श्रमिक-श्रेणी के समाजवादी आन्दोलन को टुकड़े टुकड़े कर रही है, और सभ्य जगत् के श्रेष्ठ पुरुषों के जनसत्ताक प्रयत्नों को विफल कर रही है; स०स०स०र० का नया विधान फ़ासिज़्म के विरुद्ध-समाजवाद और जनसत्ताकता अटूट हैं—इसे घोषित करते हुए एक जबर्दस्त विरोधी आवाज़ होगी (हर्षध्वनि)। स०स०स०र० का नया विधान उन सभी लोगों की नैतिक सहायता और वास्तविक मदद का काम करेगा, जो कि आज फ़ासिस्ट बर्बरों से लड़ रहे हैं (उच्च हर्ष-ध्वनि)।

इस से भी अधिक महत्त्व स०स०स०र० के नये विधान का है, स०स०

स०र० की जनता के लिए। जब कि स०स०स०र० का विधान पूँजीवादी देशों के लिए एक कार्य के प्रोग्राम का महत्त्व रखेगा। स०स०स०र० की जनता के लिए, उनके जद्दोजहद के सारांश, मानवता की मुक्ति के मैदान में उनके विजयों के सारांश का परिचायक है। युद्ध और भूख-अकाल की पीड़ा का जो लम्बा मार्ग हमने तय किया, उसके बाद यह आनन्द और ख़ुशी का समय है, जब कि हम अपने लिए ऐसा विधान पा रहे हैं, जो कि हमारी विजय के फलों का परिचायक है। यह जानने में आनंद और ख़ुशी होती है कि किस लिए हमारे लोग लड़े और किस तरह सारे संसार के इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण इस विजय को प्राप्त किया। यह जानकर आनंद और ख़ुशी होती है, कि हमारे लोगों का ख़ून, जो उतनी अधिकता से बहा, वह व्यर्थ नहीं गया। उसने सुन्दर फल पैदा किए (लंबी हर्षध्वनि)। यह हमारी कमकर-श्रेणी, हमारी किसान-श्रेणी हमारी बुद्धिजीवी-कमकर-श्रेणी को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करता है। यह उन्हें आगे बढ़ाता है, और उनमें उचित अभिमान का खयाल लाता है। यह हममें अपनी शक्ति पर विश्वास को बढ़ाता है; और साम्यवाद की नवीन विजयों के लिए फिर से जद्दोजहद करने के लिए हमें प्रेरित करता है (ज़ोर की करतलध्वनि और हर्षध्वनि)।

१७—सोवियत्-विधान

संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक की ८वीं असाधारण सोवियत् कांग्रेस स्वीकृत करती है—कि स०स०स०र० का विधान (मौलिक क़ानून)-मसविदा कांग्रेस के मसविदा बनानेवाले कमीशन द्वारा जैसा पेश किया गया है, उसे स्वीकृत किया गया।

मास्को, क्रेम्लिन् — कांग्रेस प्रेसीदिउम्।

दिसंबर ५, १९३६

सोवियत्-विधान

परिच्छेद (१)

समाज-संगठन—

धारा (१) संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक (स०स०स०र०) कमकरों और किसानों का समाजवादी राज्य है।

धारा (२) स०स०स०र० के राजनैतिक आधार हैं, जाँगर चलानेवालों के सदस्यों (डिपुटी) की सोवियतें, जो कि ज़मींदारों और पूँजीपतियों की शक्ति को उठा देने तथा श्रमजीवियों के अधिनायकत्व की सफलता के परिणाम स्वरूप विकसित और मज़बूत हुईं।

धारा (३) स०स०स०र० का सभी अधिकार शहर और गाँव के जाँगर चलानेवालों—जिनके प्रतिनिधि-स्वरूप जाँगर चलानेवाले प्रतिनिधियों की सोवियतें हैं—के हाथ में हैं।

धारा (४) स०स०स०र० का आर्थिक आधार है समाजवादी अर्थनीति का सिद्धान्त और उपज के हथियारों और साधनों पर समाजवादी स्वामित्व

——जो कि पूँजीवादी अर्थनीति की प्रथा को उठा देने, उपज के हथियारों और साधनों के वैयक्तिक स्वामित्व को हटा देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के चूसे जाने को बन्द कर देने के परिणामस्वरूप दृढ़तापूर्वक स्थापित है।

धारा (५) स०स०स०र० में समाजवादी सम्पत्ति या तो राज्य की सम्पत्ति (सारी जनता के अधिकार में) के रूप में है या सहयोगी और सामूहिक खेती की सम्पत्ति (पृथक् कोल्ख़ोज़ों की सम्पत्ति और सहयोग-समितियों की सम्पत्ति) के रूप में है।

धारा (६) राज्य की सम्पत्ति——भूमि, खनिज-पदार्थ, जल, जंगल, मिल, फैक्टरी, खानें, रेलवे, पानी और हवा के यातायात की संस्थाएँ, बैंक, गमनागमन के साधन, राज्य द्वारा संगठित बड़े बड़े कृषि-संबंधी उद्योग (सोव्ख़ोज़, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन आदि) तथा सभी म्युनिसिपलिटियों की चीज़ें और नगरों तथा उद्योग-संबंधी स्थानों की सभी मुख्य रहने लायक घरों की सम्पत्तियाँ सारी जनता के अधिकार में हैं।

धारा (७) कोल्ख़ोज़ों और सहयोगी संस्थाओं की समाजवादी सार्वजनिक सम्पत्तियाँ हैं कोल्ख़ोज़ों और सहयोगी संस्थाओं की सभी सार्वजनिक उद्योग तथा उनके पशु और औज़ार; कोल्ख़ोज़ों और सहयोग-समितियों द्वारा उत्पादित या निर्मित उपज और उनके सार्वजनिक ढाँचे।

कृषि के अर्तेल् के क़ानून के अनुसार कोल्ख़ोज़ के हर एक घर की सम्पत्ति होंगे——अपने कोल्ख़ोज़ के सार्वजनिक कोल्ख़ोज़ी उद्योग से प्राप्त आय के अतिरिक्त वैयक्तिक उपयोग के लिए घर से लगा हुआ भूमि का एक टुकड़ा और खेत के ऊपर बनी कोई सहायक चीज़, घर, पशु और मुर्गी और छोटे छोटे कृषि के औज़ार।

धारा (८) कोल्ख़ोज़ों को अपने अधिकार की भूमि स्वतंत्र उपयोग के लिए अपरिमित समय अर्थात् सदा के लिए प्राप्त है।

धारा (९) समाजवाद के आर्थिक सिद्धान्त——जो कि स०स०स०र० की अर्थनीति का सर्वाधिक रूप हैं——के साथ साथ अपने वैयक्तिक श्रम पर

अवलंबित तथा दूसरे के श्रम को चूसे विना वैयक्तिक किसानों और हाथ के कारीगरों की छोटी छोटी वैयक्तिक सम्पत्ति को क़ानून स्वीकार करता है।

धारा (१०) निम्न प्रकार की वैयक्तिक सम्पत्तियों पर नागरिकों का अधिकार क़ानून द्वारा रक्षित है—श्रम की आय, वचत की आय, रहने के घर, और उसकी सहायक गृहस्थी की सम्पत्ति, घर का असवाव, वर्तन भाँड़ा, और वैयक्तिक उपयोग और आराम की चीज़ें तथा नागरिकों की वैयक्तिक सम्पत्ति का उत्तराधिकार।

धारा (११) राष्ट्रीय अर्थनीति की राजकीय योजना। सार्वजनिक धन के वढ़ाने, जाँगर चलानेवालों की आर्थिक और सांस्कृतिक अवस्था को निरन्तर उन्नत करने और स०स०स०र० की स्वतंत्रता तथा उसकी रक्षा के साधनों (सैनिक शक्ति) को मजवूत करने के लिए स०स०स०र० के आर्थिक जीवन का निर्द्धारण और पथ-प्रदर्शन करना है।

धारा (१२) "जो काम नहीं करता, वह खा भी नहीं सकेगा" के सिद्धान्त के अनुसार स०स०स०र० में हर एक उपयुक्त शरीरवाले नागरिक के लिए काम करना आवश्यक और सन्मान की चीज़ है।

स०स०स०र० में समाजवाद का सिद्धान्त। "हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार, हर एक को किये काम के अनुसार"—माना गया है।

परिच्छेद (२)

राज्य-सङ्गठन—

धारा (१३) संघ-सोवियत् साम्यवादी रिपब्लिक एक संयुक्त राज्य है, जो कि समान अधिकार रखनेवाली निम्न सोवियत् समाजवादी रिपब्लिकों के स्वेच्छापूर्वक सम्मिलन के आधार पर वना है। उक्त रिपब्लिक हैं—

१—रूसी-सोवियत्-फेडरेटेड् (संयुक्त)-समाजवादी-रिपब्लिक (स०स०स०र०)

२—उक्रइन् सोवियत् समाजवादी ,,

३—बेलो-रूसी	स०	स०	र०
४—आज़ुर्बाइजान्	,,	,,	,,
५—गुर्जी ,,	,,	,,	,,
६—अर्मनी ,,	,,	,,	,,
७—तुर्कमान	,,	,,	,,
८—उज़्बेक ,,	,,	,,	,,
९—ताजिक ,,	,,	,,	,,
१०—कज़ाक ,,	,,	,,	,,
११—किर्गिज़ ,,	,,	,,	,,

धारा (१४) स०स०स०र० के प्रतिनिधि और उसकी सर्वोच्च शक्ति-संस्थाओं और राज्य-प्रबंध-संस्थाओं के अधिकार हैं—

(क) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए संघ का प्रतिनिधि भेजना। दूसरे राज्यों के साथ संधि करना।

(ख) शान्ति और युद्ध के प्रश्न।

(ग) स०स०स०र० में नये प्रजातंत्रों को सम्मिलित करना।

(घ) स०स०स०र० के विधान के पालन करने का निरीक्षण करना और इसकी ज़िम्मेवारी लेना कि संघ-प्रजातंत्रों के विधान स०स०स०र० के विधान के अनुकूल हैं।

(ङ) संघ-प्रजातंत्रों की आपस की सीमाओं के हेर-फेर को स्वीकार करना।

(च) संघ-प्रजातंत्रों के भीतर नये स्वायत्त प्रजातंत्र, प्रान्त या नये प्रान्तों और इलाकों के निर्माण को स्वीकार करना।

(छ) स०स०स०र० की सेना को संगठित करना और स०स०स०र० की सभी सैनिक शक्तियों का संचालन करना।

(ज) राज्य के स्वामित्व के आधार पर विदेशों से व्यापार करना।

(झ) राज्य की सुरक्षा के क़ायम रखने का प्रबंध करना।

(ञ) स०स०स०र० की जातीय आर्थिक योजनाओं को निश्चित करना।

(ट) स०स०स०र० के एकीभूत राजकीय आय-व्यय के लेखे (वजट) को स्वीकार करना तथा उन टैक्सों और मालगुज़ारियों को स्वीकार करना जो कि संघ-प्रजातंत्र और स्थानीय वजट का अंग वनती हैं।

(ठ) सारे संघ के लिए विशेप महत्त्व रखनेवाले वैंकों, औद्योगिक और कृपि-संवंधी संस्थाओं तथा कारख़ानों और व्यापारी संस्थाओं का प्रवन्ध करना।

(ड) यातायात और सामान ढोने की चीज़ों का इंतज़ाम करना।

(ढ) सिक्के और ऋण की प्रक्रिया का संचालन करना।

(ण) राजकीय वीमा संस्थाओं का संगठन करना।

(त) क़र्ज़ लेना-देना।

(थ) खेत का वन्दोवस्त तथा खनिज पदार्थों, जंगलों और जलाशयों के इस्तेमाल के वारे में मूल सिद्धान्तों को निर्धारित करना।

(द) शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में मौलिक सिद्धान्तों को निर्धारित करना।

(ध) राष्ट्रीय सम्पत्ति के वहीखाते के लिए एक सा क़ायदा संगठित करना।

(न) श्रम-संवंधी क़ानूनों के वारे में सिद्धान्तों का स्थापन करना।

(प) दीवानी नियमों तथा दीवानी कचहरियों की कार्रवाई एवं फ़ौजदारी और दीवानी क़ानूनों पर लागू होनेवाले विधानों का वनाना।

(फ) संघ की नागरिकता पर लागू होनेवाले क़ानून तथा विदेशियों के अधिकारों पर लागू होनेवाले कानूनों का वनाना।

(व) सारे संघ में क्षमादान संवंधी व्यवस्थाओं को जारी करना।

ये अधिकार हैं, जिन्हें विधान ने स०स०स०र० को प्रदान किया है; और उन्हें उसकी पार्लियामेंट—जिसे महासोवियत् कहते हैं—इस्तेमाल करती है। महासोवियत् दो भवनों में विभक्त है—एक है संघ-सोवियत् और दूसरा जातिक-सोवियत्।

धारा (१५) स०स०स०र० के विधान की १४वीं धारा में उल्लिखित नियमों को छोड़ कर बाक़ी बातों में संघ-प्रजातंत्र पूर्णरूपेण स्वतंत्र है। इन निर्बन्धों के बाहर प्रत्येक संघ-प्रजातंत्र स्वतंत्ररूपेण अपने राज्याधिकार का उपयोग करता है। स०स०स०र० संघ-प्रजातंत्रों की पूर्ण स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा करता है।

धारा (१६) हर एक संघ-प्रजातंत्र (संघ-रिपब्लिक्) का अपना निजी विधान है; जो कि उक्त प्रजातंत्र के विशेषरूप के अनुसार स०स०स०र० के विधान के पूर्णतया अनुकूल बनाया गया है।

धारा (१७) प्रत्येक संघ-रिपब्लिक स्वतंत्रतापूर्वक स०स०स०र० से अलग होने का अधिकार अपने हाथ में रखती है।

धारा (१८) संघ-रिपब्लिक की भूमि में उसकी सम्मति के बिना हेर-फेर नहीं हो सकता।

धारा (१९) स०स०स०र० के कानून सभी संघ-रिपब्लिकों की भूमि में समान अधिकार रखते हैं।

धारा (२०) यदि संघ के क़ानून तथा संघ-रिपब्लिक के क़ानून में विरोध हो तो अखिल संघ-कानून मान्य होगा।

धारा (२१) स०स०स०र० के सभी नागरिकों के लिए एक संघ-नागरिकता स्थापित की गई है।

संघ-रिपब्लिक का हर एक नागरिक स०स०स०र० का नागरिक है।

धारा (२२) रूसी स०फ०स०र० के निम्न विभाग हैं—

(क) प्रदेश

१—**अजोफ़्**-कालासागर

२—सुदूर-पूर्व
३—पश्चिमी सिबेरिया
४—क्रास्नोयार्स्क
५—उत्तर काकेशस्

(ख) ज़िले

१—वोरोनेज्
२—पूर्व-सिबेरिया
३—गोर्की
४—पश्चिमी ज़िला
७—इवानोवो
८—कालिनिन्
९—किरोफ़्
१०—कुइविशेफ़्
११—कुर्स्क
१२—लेनिन्ग्राद्
१३—मास्को
१४—ओम्स्क
१५—ओरेन्बुर्ग
१६—सरातोफ़्
१७—स्वेर्द्लोव्स्क
१८—उत्तरी ज़िला
१९—स्तालिन्ग्राद्
२०—चेल्याबिन्स्क
२१—यारोस्लाव्स्क

(ग) स्वायत्त सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—(स्व०स०स०र०)

१—तातार . . . . (स्व०स०स०र०)
२—बश्किर् . . . . ,,
३—दागिस्तान . . . . ,,
४—बुर्यत्मंगोल . . . . . . ,,
५—कर्बादिनो-वल्कारिन् . . . . ,,
६—कल्मुक् . . . . ,,
७—**करेलिया** . . . . ,,
८—कोमी . . . . ,,
९—क्रिमिया. . . . . ,,
१०—मारी . . . . ,,
११—मोर्दोविया . . . . ,,
१२—वोल्गा-जर्मन . . . . . . ,,
१३—उत्तरी ओसेतिया . . . . . ,,
१४—उद्मुर्त्त . . . . ,,
१५—चेचेन्इन्गुश् . . . . . . ,,
१६—चुवाश् . . . . ,,
१७—याकूत् . . . . ,,

(घ) स्वायत्त ज़िले

१—अदीगेइ
२—यहूदी
३—कराचइ
४—**ओइरोत्**
५—खकस्
६—चेर्केस्

धारा (२३) उक्रइन् सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक के निम्न विभाग हैं—

(क) ज़िले

१—**विन्नित्सा**

२—**द्नियेप्रोपेत्रोव्स्क**

३—**दोनेत्स्ज़**

४—कियेफ़्

५—ओदेसा

६—**खर्कोफ़्**

७—**चेर्निगोफ़्**

(ख) स्वायत्त-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक

१—**मोल्दाविया**

धारा (२४) **आज़ुर्बाइजान्** सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक में सम्मिलित हैं—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१—**नख़िचेवन्**

(ख) स्वायत्त ज़िला

१—नगुर्नो कराबख्

धारा (२५) गुर्जी (जॉर्जिया) स०स०र० में सम्मिलित हैं—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१—**अब्ख़ाजिया**

२—अजार

(ख) स्वायत्त ज़िला

१—दक्षिणी **ओसेतिया**

धारा (२६) उज़बेक् स०स०र० में सम्मिलित हैं—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१—**कराकल्पक्**

धारा (२७) ताजिक स०स०र० में सम्मिलित है—

(क) स्वायत्त ज़िला

१—गोर्नोविदख़्शां

धारा (२८) कजाक स०स०र० के विभाग हैं—

(क) ज़िले

१—अत्त्युबिन्स्क

२—अल्मा-अता

३—पूर्व कज़ाकस्तान

४—पश्चिम कज़ाकस्तान

५—करागन्दा

६—कुस्तनई

७—उत्तर कज़ाकस्तान

८—दक्षिण कज़ाकस्तान

धारा (२९) निम्न सोवियत् समाजवादी रिपब्लिकों में स्वायत्त रिपब्लिक प्रदेश और ज़िले नहीं हैं—

१—अर्मनी . . . . (स०स०र०)
२—वेलो रूसी . . . . ,,
३—तुर्कमान् . . . . ,,
४—किर्गिज़ . . . . ,,

परिच्छेद (३)

स०स०स०र० की राज्यशक्ति की सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (३०) स०स०स०र० की राज्यशक्ति की सर्वोच्च संस्था है, स०स०स०र० की महासोवियत्।

धारा (३१) स०स०स०र० की महासोवियत् उन सभी अधिकारों का उपयोग करती है, जो कि विधान की १४वीं धारा के अनुसार

स०स०स०र० को दिये गये हैं; जहाँ तक कि वे अधिकार विधान के अनुसार स०स०स०र० की उन संस्थाओं के अधिकार में सम्मिलित नहीं हैं जो कि स०स०स०र० की महासोवियत् के सामने उत्तरदायी हैं। अर्थात् स०स०स०र० की महासोवियत् का **प्रेसीदिउम्** महासोवियत् के जन-कमीसरों की कौंसिल और महासोवियत् के जन-कमिसरियत्।

धारा (३२) स०स०स०र० के क़ानून बनाने के अधिकार का उपयोग सिर्फ़ स०स०स०र० की महासोवियत् को है।

धारा (३३) स०स०स०र० की महासोवियत् दो भवनों में विभक्त है—संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्।

धारा (३४) संघ-सोवियत् के लिये प्रतिनिधि प्रति तीन लाख जन-संख्या पर एक सदस्य (डिपुटी) के आधार पर बने निर्वाचनक्षेत्र के अनुसार स०स०स०र० के नागरिक चुनते हैं।

धारा (३५) जातिक-सोवियत् को संघ-रिपब्लिक, स्वायत्त रिपब्लिक, स्वायत्त ज़िले और जातिक-क्षेत्र के अनुसार तथा सदस्यों की निम्न संख्या के अनुसार स०स०स०र० के नागरिक चुनते हैं।

(१)	प्रति संघ-रिपब्लिक . . .	(स०स०र०)	२५
(२)	,, स्वायत्त ,, . . .	(स्व०स०स०र०)	११
(३)	,, स्वायत्त-ज़िला . . .		५
(४)	जातिक क्षेत्र		१

धारा (३६) स०स०स०र० की महासोवियत् का चुनाव चार वर्षों के लिए होता है।

धारा (३७) स०स०स०र० की महासोवियत् के दोनों भवन—संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्—के अधिकार बराबर हैं।

धारा (३८) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् क़ानून-निर्माण आरंभ करने में बराबर अधिकार रखती हैं।

धारा (३९) कोई भी क़ानून स्वीकृत समझा जायगा, यदि वह

स०स०स०र० की महासोवियत् के दोनों भवनों द्वारा प्रत्येक में मामूली बहुमत के साथ पास किया गया हो।

धारा (४०) स०स०स०र० की महासोवियत् द्वारा स्वीकृत कानून स०स०स०र० की महासोवियत् के **प्रेसीदिउम्** के अध्यक्ष और मंत्री के हस्ताक्षरों के साथ संघ-रिपब्लिकों की भाषाओं में प्रकाशित हुआ करेगा।

धारा (४१) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् के अधिवेशन एक ही समय आरंभ और समाप्त होंगे।

धारा (४२) संघ-सोवियत् अपने लिए एक अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष चुनेगी।

धारा (४३) जातिक-सोवियत् अपने लिए एक अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष चुनेगी।

धारा (४४) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् के अध्यक्ष लोग अपने अपने भवनों के अधिवेशनों का सभापतित्व करेंगे और उनकी कार्यवाहियों के ज़िम्मेवार होंगे।

धारा (४५) स०स०स०र० के महासोवियत् के दोनों भवनों के सम्मिलित अधिवेशन का सभापतित्व संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् के अध्यक्ष वारी वारी से करेंगे।

धारा (४६) स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशनों को हर साल दो बार स०स०स०र० के महासोवियत् का प्रेसीदिउम् (मंत्रि-मंडल) बुलायेगा।

स०स०स०र० की महासोवियत् का अध्यक्ष अपने विचारानुसार या किसी एक संघ-प्रजातंत्र की माँग के अनुसार विशेष अधिवेशन बुलायेगा।

धारा (४७) यदि संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् में मत-भेद हो, तो वह प्रश्न एक बराबर संख्याओं में चुने सुलह-कमीशन के पास तय करने के लिए भेजा जायगा। यदि सुलह-कमीशन उभय पक्ष द्वारा स्वीकरणीय निर्णय पर नहीं पहुँचता अथवा उसका निर्णय दोनों भवनों में से एक को

नापसन्द होता है, तो वह प्रश्न फिर दूसरी बार दोनों भवनों के सामने विचार के लिए पेश होगा। यदि दोनों भवन उभय-स्वीकृत निश्चय पर नहीं पहुँचे तो स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् स०स०स०र० की महासोवियत् को तोड़ देगा और नये चुनाव का प्रबंध करेगा।

धारा (४८) स०स०स०र० की महासोवियत् दोनों भवनों के सम्मिलित अधिवेशन में स०स०स०र० की महासोवियत् का **प्रेसीदिउम्** (मन्त्रि-मंडल) चुनेगी। जिसमें स०स०स०र० की सुप्रीम सोवियत् के **प्रेसीदिउम्** का एक अध्यक्ष ११ उपाध्यक्ष १ मंत्री और २४ सदस्य होंगे।

स०स०स०र० के महासोवियत् का प्रेसीदिउम् अपने हर काम के लिए स०स०स०र० के महासोवियत् के सामने जिम्मेवार है।

धारा (४९) स०सं०स०र० के महासोवियत् के **प्रेसीदिउम्** का काम है—

(क) स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशनों को बुलाना।

(ख) स०स०स०र० के मौजूदा क़ानूनों की व्याख्या करना और खरीता प्रकाशित करना।

(ग) स०स०स०र० के विधान की ४७वीं धारा के अनुसार स०स०स०र० की महासोवियत् को तोड़ना और नये चुनाव को नियत करना।

(घ) अपने निर्णय के अनुसार या किसी एक संघ-प्रजातंत्र की माँग के अनुसार सार्वजनिक वोट का प्रबंध करना।

(ङ) स०स०स०र० के जन-कमीसर-कौंसिल तथा संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और हुक्मों को रोक देना, यदि वह क़ानून के अनुकूल न हों।

(च) स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशनों के बीच के समय में वह स०स०स०र० के जन-कमीसरों को स०स०स०र० के जन-कमीसर कौंसिल के अध्यक्ष की सिफ़ारिश के अनुसार

बर्ख़ास्त या बहाल कर सकता है; यदि पीछे स०स०स०र० की महासोवियत् को स्वीकार हो।

(छ) स०स०स०र० के पदकों और सन्मान-जनक पदवियों को देना।

(ज) क्षमा करने के अधिकार का उपयोग करना।

(झ) स०स०स०र० सेना के उच्च सेना-नायकों को बहाल-बर्ख़ास्त करना।

(ञ) स०स०स०र० की महासोवियत् के अधिवेशनों के बीच के समय में यदि स०स०स०र० पर सशस्त्र हमला हो, या जब कभी हमलावरों के हमले से पारस्परिक रक्षा के संबंध में अन्तर्राष्ट्रीय सुलहनामों के पूरा करने की आवश्यकता हो, उस समय युद्ध की घोषणा करना।

(ट) पूर्ण या आंशिकरूप से सेनाओं को युद्ध-क्षेत्र में भेजना।

(ठ) अन्तर्राष्ट्रीय सुलहनामों को स्वीकृत करना।

(ड) विदेशी राज्यों में स०स०स०र० के प्रतिनिधि (दूतों) को बहाल और बर्ख़ास्त करना।

(ढ) विदेशी राज्यों द्वारा अपने यहाँ भेजे गये दूत-प्रतिनिधियों को लौटा मँगाने के पत्रों और प्रमाणपत्रों को लेना।

धारा (५०) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् अपने अपने भवन के सदस्यों के (निर्वाचन की) प्रामाणिकता की परीक्षा के लिए अलग अलग प्रमाण-कमीशन निर्वाचित करेंगी।

प्रमाण-कमीशनों की सिफारिश पर भवन निश्चित करेंगे कि किसी सदस्य के चुनाव को अनुचित करार दें या उचित।

धारा (५१) स०स०स०र० की महासोवियत् जब ज़रूरत समझेगी, किसी विषय के अन्वेषण और निरीक्षण के लिए कमीशन नियुक्त कर सकती है।

सभी संस्थाओं और अधिकारियों का कर्तव्य है कि माँगे जाने पर वे

इन कमीशनों के सामने आवश्यक सामग्री और काग़ज़-पत्र पेश करें।

धारा (५२) स०स०स०र० की महासोवियत् के किसी सदस्य को स०स०स०र० की महासोवियत् की सम्मति बिना पकड़ा या उस पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। जिस समय स०स०स०र० की महासोवियत् का अधिवेशन नहीं है उस समय स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् की सम्मति के बिना वैसा नहीं किया जा सकता।

धारा (५३) स०स०स०र० की महासोवियत् के अधिकार की अवधि तक या अवधि की समाप्ति के पहले यदि महासोवियत् तोड़ दी गई हो, तो स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् तब तक अधिकारारूढ़ रहेगा, जब तक कि नई चुनी हुई स०स०स०र० की महासोवियत् एक नये प्रेसीदिउम् को बना न लेगी।

धारा (५४) महासोवियत् की अवधि बीत जाने या समय से पहले तोड़ देने पर **प्रेसीदिउम्** निर्वाचन का दिन निश्चित करेगा; जो कि मीयाद के अन्तिम दिन या महासोवियत् के टूटने के दिन से दो महीने से अधिक नहीं होगा।

धारा (५५) नई चुनी हुई महासोवियत् के अधिवेशन को प्रेसीदिउम् निर्वाचन-दिन के बाद एक महीने के भीतर बुलायेगा।

धारा (५६) महासोवियत् दोनों भवनों की सम्मिलित बैठक में स०स०स०र० की सरकार—स०स०स०र० जन-कमीसर-कौंसिल को नियुक्त करेगी।

परिच्छेद (४)

सङ्घ-रिपब्लिक की राज्यशक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (५७) संघ-रिपब्लिक की राज्यशक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च संस्था है संघ-रिपब्लिक की महासोवियत्।

धारा (५८) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् को उसके नागरिक चार वर्ष के लिए चुनते हैं।

प्रतिनिधियों और वोटरों की संख्या का तारतम्य संघ-रिपब्लिकों के विधानों के अनुसार तय होगा।

धारा (५९) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् ही उक्त रिपब्लिक की क़ानून बनानेवाली संस्था है।

धारा (६०) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् का कार्य है—

(क) रिपब्लिक का विधान वनाना, और स०स०स०र० के विधान की सोलहवीं धारा के अनुसार उसमें संशोधन करना।

(ख) अपने अधीन के स्वायत्त-रिपब्लिकों के विधानों को स्वीकार करना तथा उनकी सीमा निर्द्धारित करना।

(ग) रिपब्लिक की राष्ट्रीय आर्थिक योजना तथा आय-व्यय (वजट) का स्वीकार करना।

(घ) संघ-रिपब्लिक की अदालतों द्वारा दंड पाये नागरिकों के अपराध को माफ़ करने या छोड़ देने के अधिकार का उपयोग करना।

धारा (६१) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् अपना प्रेसीदिउम् चुनेगी, जिसमें एक अध्यक्ष, अनेक उपाध्यक्ष, एक मंत्री तथा अनेक सदस्य होंगे।

संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् के **प्रेसीदिउम्** के अधिकार संघ-सोवियत् के विधान में दिये हुए हैं।

धारा (६२) संघ-सोवियत् की महासोवियत् अपने अधिवेशनों के संचालन के लिए एक अध्यक्ष और अनेक उपाध्यक्ष निर्वाचित करेगी।

धारा (६३) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् संघ-सोवियत् की गवर्नमेंट—संघ-सोवियत् की जन-कमीसर-कौंसिल को नियुक्त करेगी।

परिच्छेद (५)

स०स०स०र० के राज्यप्रबंध की संस्थाएँ--

धारा (६४) स०स०स०र०की राज्यशक्ति की सर्वोच्च कार्यकारिणी और प्रबंध-कारिणी संस्था है स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल।

धारा (६५) स०स०स०र०की जन-कमीसर-कौंसिल स०स०स०र० के महासोवियत् के सामने उत्तरदायी है; और महासोवियत् के अधिवेशनों के बीचवाले समय में स०स०स०र० की महासोवियत् के **प्रेसीदिउम्** के सामने उत्तरदायी और जिम्मेवार है।

धारा (६६) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल प्रचलित कानूनों का अनुसरण करके अपने निर्णय और आज्ञाएँ निकालेगी और उन्हें कार्य-रूप में परिणत होने की देख-भाल करेगी।

धारा (६७) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णय और आज्ञाएँ स०स०स०र० की सम्पूर्ण भूमि के भीतर अवश्य मान्य हैं।

धारा (६८) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल का कार्य है--

(क) स०स०स०र० की संघ-रिपब्लिक जन-कमीसरी और अखिल-संघ और अपने अधीन की दूसरी आर्थिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के कार्य का संगठन और संचालन करेगी।

(ख) राष्ट्रीय-आर्थिक-योजना (विभाग) राजकीय आय-व्यय को काम में लाने के लिए तथा सिक्के और साख को मज़बूत करने के लिए कार्रवाई करेगा।

(ग) सार्वजनिक व्यवस्था को कायम रखने के लिए, राजकीय स्वार्थों की रक्षा के लिए और नागरिकों के अधिकारों की हिफ़ाज़त के लिए कार्रवाई करेगा।

(घ) विदेशी राज्यों के साथ संबंध के क्षेत्र में साधारण नियमन का काम करेगा।

(ङ) प्रतिवर्ष सैनिक सेवा के लिए बुलाये जानेवाले नागरिकों की संख्या निश्चित करेगा और देश की सेना के साधारण संगठन और विकास का संचालन करेगा।

(च) जब आवश्यकता होगी, तो आर्थिक, सांस्कृतिक और सेना-संबंधी विकास से संबंध रखनेवाली बातों के लिए स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल की मातहत समिति या केन्द्रीय बोर्ड नियुक्त करेगा।

धारा (६९) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल स०स०स०र० के अधिकार की प्रबंध और अर्थ-संबंधी शाखाओं के बारे में यह अधिकार रखती है, कि वह संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं को रोक दे और स०स०स०र० के जन-कमीसरों की आज्ञाओं और हिदायतों को मंसूख कर दे।

धारा (७०) स०स०स०र० की महासोवियत् निम्न व्यक्तियों की स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल बनायेगी—

(१) अध्यक्ष स०स०स०र० **जन-कमीसर**-कौंसिल
(२) अनेक उपाध्यक्ष स०स०स०र० ज० क० कौं०
(३) अध्यक्ष ,, राजकीय-योजना-कमीसर
(४) ,, सोवियत्-नियंत्रण-कमीसर
(५) स०स०स०र० के जन-कमीसर लोग
(६) अध्यक्ष कृषि-संबंधी-पशु-समिति
(७) ,, कला-समिति
(८) ,, उच्च-शिक्षा-समिति

धारा (७१) स०स०स०र० की गवर्नमेंट या स०स०स०र० का कोई **जन-कमीसर** स०स०स०र० की महासोवियत् के किसी सदस्य द्वारा पूछे जाने पर तत्संबंधी उत्तर भवन में ३ दिन के

भीतर मौखिक या लिखित देगा।

धारा (७२) स०स०स०र० के जन-कमीसर स०स०स०र० के अधिकार के भीतर आनेवाले राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करेंगे।

धारा (७३) स०स०स०र० के जन-कमीसर अपने अपने जन-कमीसरी के अधिकार के भीतर प्रचलित कानूनों और स०स०स०र० की **जन-कमीसर**-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं के अनुसार या उनके आधार पर आज्ञा या हिदायत देंगे और उनके कार्यरूप में परिणत होने की देख भाल करेंगे।

धारा (७४) स०स०स०र० के जन-कमीसर दो प्रकार के हैं—एक अखिल-संघ-कमीसर और दूसरे संघ-रिपब्लिक-कमीसर।

धारा (७५) अखिल-संघ-जन-**कमीसरियाँ** प्रत्यक्ष या अपने द्वारा नियुक्त संस्थाओं द्वारा स०स०स०र० की तमाम भूमि में अपने ज़िम्मे के राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करेंगी।

धारा (७६) संघ-रिपब्लिक-जन-कमीसरियाँ वैसे ही नामवाले संघ-रिपब्लिक की जन-**कमीसरियों** द्वारा आमतौर से अपने ज़िम्मे के राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करेंगी। वे एक निश्चित और परिमित संख्या के कारबार का प्रत्यक्षरूप से प्रबंध करेंगी। निश्चित और परिमित कारबारों की सूची स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् बनायेगा।

धारा (७७) निम्न जन-कमीसर अखिल-संघ-जन-कमीसर (मंत्री) कहे जाते हैं—

(१) सेना
(२) वैदेशिक नीति
(३) ,, व्यापार
(४) रेलवे

(५) यातायात का प्रबन्ध
(६) जल-वाहन
(७) भारी उद्योग
(८) सेना-संबंधी-उद्योग

धारा (७८) निम्न जन-कमीसर संघ-रिपब्लिक जनकमीसर कहे जाते हैं—

(१) खाद्य-उद्योग
(२) हलका उद्योग
(३) काष्ठ-उद्योग
(४) कृषि-उद्योग
(५) राजकीय अन्न और पशु संबंधी खेती
(६) कोष (अर्थ)
(७) आंतरिक व्यापार
(८) आन्तरिक नीति
(९) न्याय
(१०) सार्वजनिक स्वास्थ्य

परिच्छेद (६)

संघ-रिपब्लिक के राजकीय प्रबंध की संस्थाएँ—

धारा (७९) संघ-रिपब्लिक की राज्यशक्ति की सर्वोच्च कार्यकारिणी और प्रबंधकारिणी संस्था है संघ-रिपब्लिक जन-कमीसर-कौंसिल।

धारा (८०) संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल संघ-रिपब्लिक के सामने जिम्मेवार और जवाबदेह है। संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् के अधिवेशनों के बीच के समय में वह अपनी संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के सामने जिम्मेवार और जवाबदेह होगी।

धारा (८१) संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिक में प्रचलित कानूनों और स०स०स०र० के जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं के अनुसार तथा आधार पर अपने निर्णय और आज्ञाएँ निकालेगी; और उनके कार्यरूप में परिणत होने की देख-भाल करेगी।

धारा (८२) संघ-रिपब्लिक की **जन-कमीसर**-कौंसिल को अधिकार है कि वह स्वायत्त-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं को रोक दे और अपने अन्दर के प्रदेशों, ज़िलों, और स्वायत्त ज़िलों के जाँगर चलानेवाले डिपुटियों की सोवियत् की कार्यकारिणी समिति के निर्णयों और आज्ञाओं को मंसूख कर दे।

धारा (८३) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् निम्न व्यक्तियों की जन-कमीसर कौंसिल बनायेगी।

१—अध्यक्ष संघ-रिपब्लिक जन-कमीसर-कौंसिल
२—अनेक उपाध्यक्ष ,, ,, ,,
३—अध्यक्ष राजकीय योजना कमीशन
४—खाद्य-उद्योग जन-कमीसर (मंत्री)
५—हलका ,, ,,
६—काष्ठ ,, ,,
७—कृषि ,, ,,
८—राजकीय अन्न और पशु-संबंधी खेती
९—कोष (अर्थ)
१०—आन्तरिक व्यापार
११— ,, नीति
१२—न्याय
१३—सार्वजनिक स्वास्थ्य
१४—शिक्षा

धारा (९७) जा० डि० सो० अपने मातहत की प्रबंध-संस्थाओं के कार्यों का संचालन करती हैं, सार्वजनिक व्यवस्था कायम रखने की जिम्मेवारी लेती है, कानूनों और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की देख-भाल करती है, स्थानीय आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति का संचालन करती है; और स्थानीय आय-व्यय का निर्णय करती है।

धारा (९८) जा० डि० सो० स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिक के कानूनों द्वारा प्राप्त अधिकारों की सीमा के भीतर निर्णय और आज्ञा निकालती है।

धारा (९९) जा० डि० सो० की कार्यकारिणी और प्रबंधकारिणी संस्था है अपने द्वारा चुनी कार्यकारिणी समिति; जो निम्न सदस्यों पर निर्भर है—

(१) अध्यक्ष
(२) अनेक उपाध्यक्ष
(३) मंत्री
(४) अनेक सदस्य

धारा (१००) संघ-रिपब्लिक के विधानानुसार छोटे स्थानों में दीहाती जा० डि० सो० की कार्यकारिणी और प्रबंधकारिणी संस्था निम्न सदस्यों से मिल कर चुने हुए सदस्यों से बनती है।

(१) अध्यक्ष
(२) एक उपाध्यक्ष
(३) एक मंत्री

धारा (१०१) जा० डि० सो० की कार्यकारिणी अपने चुननेवाली जा० डि० सो० और उच्च जा० डि० सो० की कार्यकारिणी के सामने सीधे जवाबदेह है।

परिच्छेद (९)

महान्यायाधिकारी और न्यायालय—

धारा (१०२) स०स०स०र० में स०स०स०र० का महान्यायालय, संघ-रिपब्लिकों के महान्यायालय, प्रदेश, ज़िला, स्वायत्त-रिपब्लिक, स्वायत्त ज़िलों और क्षेत्रों के न्यायालय तथा स०स०स०र० के महासोवियत् के निश्चयानुसार स्थापित स०स०स०र० के विशेष न्यायालय और जन-न्यायालय न्याय का प्रबंध करते हैं।

धारा (१०३) सभी मुक़दमों का फ़ैसला जनता के असेसरों की मदद से होता है, सिवाय उन मुक़दमों के जिनके लिए क़ानून ने विशेष नियम बना रखे हैं।

धारा (१०४) स०स०स०र० का महान्यायालय सर्वोच्च न्याय-संस्था है। स०स०स०र० का महान्यायालय स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिकों की न्याय-संस्थाओं की न्यायसंबंधी कार्रवाइयों की देख-भाल का ज़िम्मेवार है।

धारा (१०५) स०स०स०र० का महान्यायालय तथा स०स०स०र० के विशेष न्यायालय स०स०स०र० के महासोवियत् द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०६) संघ-रिपब्लिक के महान्यायालय संघ-रिपब्लिकों की महासोवियतों द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०७) स्वायत्त-रिपब्लिकों के महान्यायालय स्वायत्त-रिपब्लिकों द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०८) प्रदेश, जिला, स्वायत्त ज़िला-और क्षेत्र के न्यायालय प्रदेश, ज़िला या क्षेत्र की जा० डि० सो० द्वारा या स्वायत्त ज़िले की जा० डि० सो० द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०९) जनता-न्यायालय को हलके के नागरिक, सार्वजनिक, प्रत्यक्ष, समान निर्वाचनाधिकार और गुप्त पुर्जी के सिद्धान्तानुसार तीन वर्ष के लिए चुनते हैं।

धारा (११०) न्यायालय का कारबार संघ-रिपब्लिक स्वायत्त-रिपब्लिक या स्वायत्त-ज़िले की भाषा में होगा। जो व्यक्ति उस भाषा को

नहीं जानते, उनके लिए दुभाषिया द्वारा मुक़दमे के हर पहलू की जानकारी का प्रबंध तथा न्यायालय में अपनी भाषा में बोलने का अधिकार है।

धारा (१११) स०स०स०र० के हर न्यायालय में मुक़दमे की सुनवाई खुली अदालत में होगी, यदि क़ानून ने उस श्रेणी के मुक़दमे के लिए कोई दूसरा नियम न बना रक्खा हो। अपराधी को सफ़ाई पेश करने का पूरा अधिकार है।

धारा (११२) न्यायाध्यक्ष स्वतंत्र हैं; उनपर सिर्फ क़ानून की पाबन्दी है।

धारा (११३) स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी को स०स०स०र० के सभी जन-कमीसरों तथा उनके अधीन संस्थाओं, सभी अधिकारियों और नागरिकों द्वारा क़ानूनों की सख़्त पाबन्दी की देख-भाल का सर्वोपरि अधिकार है।

धारा (११४) स०स०स०र० की महासोवियत् स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी को सात वर्ष के लिए नियुक्त करती है।

धारा (११५) संघ-रिपब्लिकों, प्रदेशों, ज़िलों तथा स्वायत्त रिपब्लिकों और स्वायत्त ज़िलों के न्यायाधिकारियों को स०स०स०र० का महान्यायाधिकारी पाँच वर्ष के लिए नियुक्त करता है।

धारा (११६) क्षेत्र, इलाक़ा और नगर के न्यायाधिकारियों को संघ-रिपब्लिक के न्यायाधिकारी स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी की स्वीकृति के अनुसार ५ वर्ष के लिए नियुक्त करते हैं।

धारा (११७) न्यायाधिकारी अपने कर्तव्यपालन में सभी तरह की स्थानीय राजकीय संस्थाओं से स्वतंत्र हैं; और वे केवल स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी के अधीन हैं।

परिच्छेद (१०)

नागरिकों के मौलिक अधिकार और कर्तव्य—

धारा (११८) स०स०स०र० के नागरिकों को काम पाने का अधिकार है—अर्थात् उनके काम मिलने और परिमाण और गुण के अनुसार काम का वेतन देने का अधिकार राज्य ने अपने ज़िम्मे लिया है।

राष्ट्रीय, अर्थ-सम्बन्धी समाजवादी संस्थाओं, समाजवादी समाज की उपजाऊ शक्तियों की निरन्तर वृद्धि, आर्थिक उपद्रवों (मन्दी आदि) की संभावना के दूर हो जाने और बेकारी के उठ जाने के कारण हर एक के लिए काम पाने का अधिकार सुरक्षित है।

धारा (११९) स०स०स०र० के नागरिकों को अधिकार है, छुट्टी और विश्राम का।

प्रायः सभी कमकरों को प्रतिदिन सात ही घंटा काम करने, कमकरों और आफ़िस आदि में काम करनेवालों को वेतन सहित वार्षिक छुट्टियों के प्रबंध और जाँगर चलानेवालों के ठहरने के लिए सब जगह सेनिटोरियम, विश्राम-गृह और क्लबों का इन्तज़ाम, छुट्टी और विश्राम का अधिकार सुरक्षित है।

धारा (१२०) स०स०स०र० के नागरिकों को बुढ़ापे, बीमारी और काम करने की योग्यता न रहने पर पर्वरिश पाने का अधिकार है।

कमकरों तथा दूसरे आफ़िस आदि में काम करनेवालों का राज्य के ख़र्च पर सामाजिक बीमे के भारी विकास, जाँगर चलानेवालों की निःशुल्क चिकित्सा और जाँगर चलानेवालों के ठहरने के लिए स्वास्थ्य-निवासों का चारों ओर जाल बिछा कर यह अधिकार सुरक्षित है।

धारा (१२१) स०स०स०र० के नागरिकों को अधिकार है, शिक्षा पाने का। सार्वजनिक अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा, प्रारंभिक से उच्च शिक्षा तक की निःशुल्क शिक्षा, उच्च शिक्षण-संस्थाओं में प्रायः सभी विद्यार्थियों को राज्य की ओर से छात्रवृत्ति का प्रबन्ध, स्कूलों में मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम स्वीकृत कर; और फ़ैक्टरियों, सोव्ख़ोज़ों, मैशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों तथा कोल्ख़ोज़ों में जाँगर चलानेवालों की औद्योगिक टेकनिकल और

कृषि-संबंधी निःशुल्क शिक्षा को संगठित कर यह अधिकार सुरक्षित किया हुआ है।

धारा (१२२) स०स०स०र० में स्त्रियों को आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के हर एक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अधिकार हैं।

स्त्रियों को पुरुषों के बराबर काम करने, काम का वेतन, छुट्टी और विश्राम पाने; (बेकारी के ख़िलाफ़) सामाजिक बीमा और शिक्षा का प्रबंध करके, तथा राज्य की ओर से माँ और बच्चे के स्वार्थ की रक्षा, वेतन के साथ प्रसूता की छुट्टी और प्रसूतिगृहों, बच्चाख़ानों और किंडरगार्टनों की सर्वत्र स्थापना कर के, स्त्रियों को इस अधिकार से लाभ उठाने की संभावना सुरक्षित की हुई है।

धारा (१२३) राष्ट्र और जाति का कुछ भी न ख़याल करके आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के हर एक क्षेत्र में स०स०स०र० के नागरिकों के अधिकारों की समानता अटल नियम हैं।

इन अधिकारों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी तरह भी निर्बन्ध करना, अथवा इसके विरोध में जाति और रंग का ख़याल कर के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूप से नागरिकों के विशेष अधिकार की स्थापना, और रंग तथा जाति संबंधी भेद-भाव या घृणा और अपमान का प्रचार करना क़ानून से दंडनीय हैं।

धारा (१२४) नागरिकों की मानसिक स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए स०स०स०र० में धर्म का राज्य से और स्कूल का धर्म से कोई संबंध नहीं है। सभी नागरिकों को धार्मिक उपासना की स्वतंत्रता और धर्म-विरोधी प्रचार की स्वतंत्रता है।

धारा (१२५) जाँगर चलानेवालों के स्वार्थों के अनुकूल होने से तथा समाजवादी प्रथा को मज़बूत करने के लिए स०स०स०र० के सभी नागरिकों को क़ानूनन् निम्न अधिकार प्राप्त हैं—

(क) भाषण की स्वतंत्रता
(ख) प्रेस की स्वतंत्रता
(ग) सम्मेलन और सार्वजनिक सभा करने की स्वतंत्रता
(घ) सड़कों में जलूस और प्रदर्शनों की स्वतंत्रता

जाँगर चलानेवालों और उनकी संस्थाओं के अधिकार में छापे की मशीनों, काग़ज़ के गोदामों, सार्वजनिक इमारतों, सड़कों, यातायात के साधनों तथा इस अधिकार को उपयोग में लाने के लिए उपयोगी अन्य चीज़ों को उनके हाथ में देकर नागरिकों के ये अधिकार सुरक्षित किये हुए हैं।

धारा (१२६) जाँगर चलानेवालों के स्वार्थों के अनुकूल होने और साधारण जनता की राजनीतिक कर्मशीलता तथा संगठन-संबंधी प्रतिभा को विकसित करने के लिए स०स०स०र० के नागरिक निम्न सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा अपने को संगठित करने का अधिकार रखते हैं—

(१) मज़दूर-सभा
(२) सहयोग-समिति
(३) तरुण-संगठन
(४) खेल और सैनिक संगठन
(५) सांस्कृतिक सभा
(६) टेक्निकल (यंत्र-विज्ञान) सभा
(७) वैज्ञानिक सभा
और,
(८) सोवियत्-संघ कम्युनिस्ट (बोल्शेविक) पार्टी—जो कि साम्यवादी प्रथा के दृढ़ और विकसित करने के लिए जद्दोजहद में जाँगर चलानेवालों की अगुवा है और जो जाँगर चलानेवालों की सभी सार्वजनिक और राजकीय संस्थाओं के नेतृत्व के सार का प्रतिनिधित्व करती है—में श्रमिक-श्रेणी के समूह और जाँगर चलानेवालों के अन्य स्तरों की राजनैतिक चेतना रखनेवाले और अत्यन्त क्रियाशील नागरिकों को

धारा (१३९) डिपुटियों के चुनाव साक्षात्‌रूप से होंगे—सभी जाँगर चलानेवाली सोवियतें, दीहाती और नागरिक जा० डि० सो० से लेकर स०स०स०र० के महासोवियत् तक नागरिकों द्वारा साक्षात् वोट से चुनी जायँगी।

धारा (१४०) डिपुटियों के चुनाव में वोट गुप्त देना होगा।

धारा (१४१) चुनाव के लिए उम्मेदवार निर्वाचिन-क्षेत्र के अनुसार नामज़द किये जायँगे।

उम्मेदवारों को नामज़द करने का अधिकार सार्वजनिक संस्थाओं और जाँगर चलानेवालों की सभाओं—कम्युनिस्ट पार्टी की संस्थाओं, मज़दूर-सभाओं, सहयोग-समितियों, तरुण-संघों और सांस्कृतिक-सभाओं—को है।

धारा (१४२) हर एक डिपुटी (सदस्य) का कर्तव्य है, कि वह अपने काम तथा जा० डि० सो० के काम से निर्वाचकों को सूचित करे। तथा वह किसी समय क़ानून द्वारा स्थापित तरीके से अपने निर्वाचकों के बहुमत के निर्णय पर सदस्यता से हटा दिया जायगा।

परिच्छेद (१२)

राज्य-चिह्न-ध्वज राजधानी—

धारा (१४३) स०स०स०र० का राज्य-चिह्न है, सूर्य की किरणों में चित्रित भूगोल के ऊपर रक्खा एक हँसुआ और एक हथौड़ा, जिसको संघ-रिपब्लिकों की भाषाओं में—"सब देशों के जाँगर चलानेवालो! एक हो जाओ!" के लेख के साथ गेहूँ की बालें घेरे हुई हैं। चिह्न के ऊपर एक पँचकोना तारा है।

धारा (१४४) स०स०स०र० का राज्य-ध्वज है—लाल कपड़े पर डंडे के साथवाले ऊपरी कोने में सोने में अंकित हँसुआ और हथौड़ा तथा उनके ऊपर एक पँचकोना सुनहरी किनारीवाला लाल तारा। ध्वज की लंबाई चौड़ाई से दूनी है।

धारा (१४५) स०स०स०र० की राजधानी मास्को नगर है

परिच्छेद (१३)

विधान के संशोधन की प्रक्रिया—

धारा (१४६) स०स०स०र० के विधान का संशोधन स०स०स०र० की महासोवियत् के निर्णय द्वारा ही हो सकता है; शर्त यह है कि संशोधन के पक्ष में हर एक भवन में कम से कम $\frac{2}{3}$ का बहुमत उसके पक्ष में हो।

१८—महासोवियत् का चुनाव

१२ दिसम्बर (१९३७ ई०) से पहले भी सोवियत् के कितने ही चुनाव हुए थे, लेकिन उनमें यह विशेषता नहीं थी। सोवियत्-शासन की स्थापना के बाद यह पहला समय था, जब कि नये विधान के अनुसार १८ वर्ष से अधिक उम्रवाले सभी स्त्री-पुरुषों को वोट देने और सदस्यता के लिए खड़े होने का अधिकार मिला। पहले पुराने धनी, ज़मींदार, पुरोहित और उनके वंशज वोट के अधिकार से वंचित रखे गये थे। लेकिन नये विधान ने उन्हें भी समान अधिकार दे दिया। पहले हाथ उठा कर या खुले तौर से वोट लिया जाता था, जिससे बहुत से लोग भय और संकोच से भी वोट देते थे। अबकी बार चुनाव की पर्ची के साथ एक एक लिफ़ाफ़ा मिला था और वोट के स्थान ऐसी एकान्त जगह रखे गए थे, जहाँ बिना किसी को दिखाये वोटर पर्ची पर निशान कर सकता था। अबकी बार पहले पहल छिपी पर्ची द्वारा वोट दिया था।

वोट का अधिकार पाकर भूतपूर्व राजा-बाबुओं को कितनी प्रसन्नता हुई, इसका मैं एक उदाहरण देता हूँ। मैंने अपने एक परिचित बड़े ऊँचे दर्जे के पुराने रईस से वोट देने के दूसरे दिन पूछा—"आपकी तबीयत इन दिनों अच्छी नहीं थी, आप तो शायद वोट देने नहीं गये होंगे?"

उन्हों ने बड़े आह्लाद के साथ कहा—"नहीं, मैं गया था। थोड़ा बीमार हो गया था तो क्या?"

उनके चेहरे पर जिस प्रकार प्रसन्नता की किरणें फूट निकली थीं, और वह जिस प्रकार उल्लास के साथ बात कर रहे थे, उससे मालूम होता था, कि २० वर्ष तक नागरिकता के अधिकार से वंचित इस श्रेणी को नये विधान से कितनी प्रसन्नता हुई है।

पार्लियामेंट के सभासद-नामज़द करने के लिए कोई मज़दूर-संघ, सान-संघ अथवा इसी प्रकार की कोई दूसरी संस्था, अन्ततोगत्वा ई छोटी-मोटी सार्वजनिक सभा भी नाम पेश कर सकती है। ीवादी देशों में दो वोटर भी नाम पेश कर सकते हैं, इसलिएं
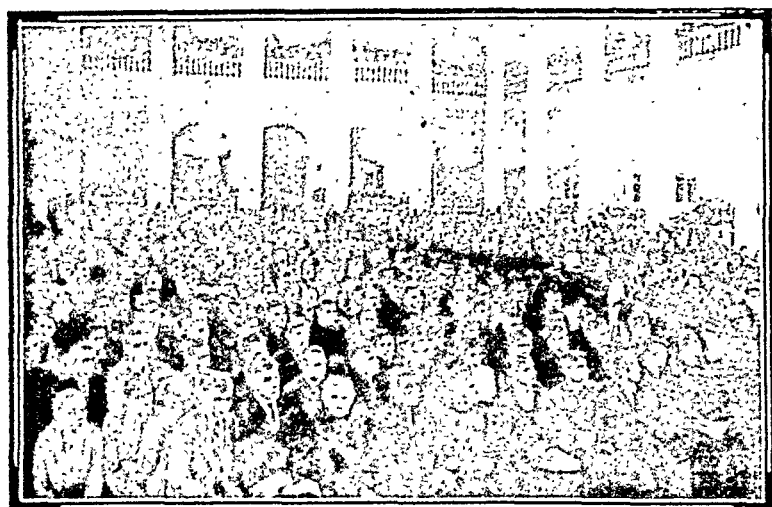
निर्वाचन की एक सभा

ोवियत्-पार्लियामेंट के सदस्य की नामज़दगी के लिए संस्था या सभा का स्तावक या अनुमोदक होना देखने में कड़ा नियम मालूम होगा; लेकिन गर हम परिस्थिति पर अच्छी तरह ग़ौर करेंगे, तो हमें वही उचित मालूम ोगा। पूँजीवादी देशों में उम्मेदवार के पास चुनाव में ख़र्च करने के लिए पयों का तोड़ा है, मोटरें हैं और कार्यकर्त्ताओं को वह भाड़े पर रख सकता । सोवियत्-प्रजातंत्र में वड़े से वड़े व्यक्ति के पास भी ख़र्च करने के लिए पये नहीं हैं, न मोटरें हैं, न भाड़े के आदमियों के मिलने की गुंजायश है। ह अपनी गाँठ से ख़र्च करके एक नोटिस भी नहीं छपवा सकता। वह ुद किसी फैक्टरी, आफ़िस, स्कूल या सेना में काम करता है; और वहाँ से नमाने हर किसी को जिस किसी वक़्त छुट्टी नहीं मिल सकती। चुनाव

के लिए विज्ञापन छपवाना, सभाओं का प्रबन्ध करना, जहाँ-तहाँ दौड़-धूप करना, रेडियो, समाचार-पत्र, जलूस का प्रबन्ध करना ये सब ज़िम्मेवारी व्यक्ति के ऊपर न होकर समाज के ऊपर पड़ती हैं; इसलिए जैसे-कैसे भी दो आदमियों के कह देने पर नामज़द कर देना कभी उचित नहीं हो सकता। नामज़द करने का अधिकार संस्था या सभा को होना चाहिए; क्योंकि उन्हीं के ऊपर चुनाव का सब खर्च और मिहनत पड़नेवाली है।

वोट दिये जा रहे हैं

सोवियत्-चुनाव के बारे में यह भी आक्षेप किया जाता है; कि वहाँ प्रतिद्वन्दी को खड़ा होने का मौक़ा नहीं दिया जाता। एक चुनाव-क्षेत्र में एक ही आदमी नामज़द होता है, लेकिन इसमें सोवियत्-विधान का कोई दोष नहीं। उसमें कोई ऐसा नियम नहीं है; कि विरोध में खड़े होन का किसी को अधिकार नहीं। पार्लियामेंट के दोनों घरों को मिला कर ११४३ मेम्बर होते हैं। इनमें किसी जगह कोई विरोध में खड़ा नहीं हुआ, तो इसका मतलब यह नहीं कि उसपर ज़ोर या दबाव दिया गया। कम्युनिस्ट पार्टी ने देश की इतनी सेवाएँ की है, और कर रही है, कि उसका सारी जनता पर बहुत जबर्दस्त प्रभाव है। कोई भी विरोध में खड़ा होनेवाला यह अच्छी तरह

जानता है कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर और पार्टी द्वारा अनुमोदित जो ग़ैर-मेंबर पार्लियामेंट के लिए खड़े हुए हैं, उनके विरोध में सफलता प्राप्त करना असंभव है। हिन्दुस्तान का ही उदाहरण ले लीजिए। पिछले चुनाव में कांग्रेस को जिन प्रान्तों में वहुत अधिकता के साथ कामयावी हुई, वहाँ चुनाव के वक़्त भी कितने मेंवरों के खिलाफ़ कोई खड़ा नहीं हुआ; और पुर्ननिर्वाचन के वक़्त तो साधारण निर्वाचन-क्षेत्रों में कांग्रेस का मुक़ाविला करने के लिए किसी की हिम्मत नहीं हुई। जव ज़मींदारों और उपाधि-धारियों ने देख लिया, कि लाख लाख,दो दो लाख रुपये खर्च करने पर भी साधारण क्षेत्र के लोग कांग्रेस के मुक़ावले में सफल नहीं हुए, तो अव ज़मानत ज़व्त करवाने कौन जाय? हिन्दुस्तान के वहुत से चुनाव-क्षेत्र धर्म और जाति के नाम पर अलग कर के रक्खे हुए हैं। वड़े वड़े धनी और ज़मींदारों के लिए भी कितनी ही जगहें सुरक्षित रखी हुई हैं। इसके अतिरिक्त सभी श्रेणियों के आदमियों पर कांग्रेस का उतना प्रभाव नहीं है जितना सोवियत्-प्रजातंत्र में कम्युनिस्ट-पार्टी का।

कम्युनिस्ट-पार्टी को समझने में वाज़ वक़्त लोग ग़लती कर बैठते हैं। वह समझते हैं कि १८ करोड़ की जनता में १५–१६ लाख कम्युनिस्ट-पार्टी के मेम्वर हैं, और वही ज़ोर-जवर्दस्ती से सारी जनता की नाक में नकेल डाल कर जिधर चाहते हैं, उधर घुमाते हैं। सोवियत्-प्रजातंत्र में कम्युनिस्ट-पार्टी के मेंवर और साधारण कम्युनिस्ट (साम्यवादी) की संख्या में फर्क है, लेकिन जहाँ तक कम्युनिज़्म (साम्यवाद) का संवंध है, उसका न मानने-वाला सारे देश में शायद ही कोई मिले। १८ करोड़ की जन-संख्या में अवोध वालकों को छोड़ कर कितने आदमी हैं जो साम्यवादी नहीं हैं? साम्यवादी तो सभी हैं, हाँ साम्यवादी दल (कम्युनिस्ट पार्टी) का सदस्य वहुत छान-वीन कर वनाया जाता है। देखा जाता है कि वह साम्यवाद के सिद्धान्तों को काफ़ी समझता है, उसमें काम करने की योग्यता है, वह ईमानदार है, और पार्टी के आदर्श के लिए स्वार्थ-त्याग कर सकता है, हर तरह की

कठिनाइयाँ झल सकता है, हर प्रकार के प्रलोभनों से अपने को ऊपर उठा सकता है। ऐसा ही आदमी वर्षों की शिक्षा और परीक्षा के बाद पार्टी का मेम्बर बनाया जाता है। मेम्बर होने पर उसकी ज़िम्मेवारी बहुत बढ़ जाती है। उसके काम की मात्रा भी अधिक होती है। ज़रा सी ग़लती पर साधारण आदमी की अपेक्षा उसके लिए दंड भी कड़ा है। साम्यवादी दल के १५-१६ लाख मेम्बर सारी १८ करोड़ साम्यवादी जनता के नायक हैं। सभी जनता सिपाही है और वह उनके पथ-प्रदर्शक अफ़सर।

यही कारण है जिससे कि साम्यवादी दल का सोवियत्-जनता पर इतना प्रभाव है। यह प्रभाव ही कारण है कि साम्यवादी दल द्वारा प्रस्तुत किये उम्मेदवारों का विरोध करने के लिए कोई खड़ा नहीं हुआ। यदि कोई विरोधी खड़ा नहीं होता, तो यह नहीं कहा जा सकता, कि चुनाव जनसत्ताक नहीं है। आज हिन्दुस्तान से मुसलमानों के पृथक्-निर्वाचन को हटा दीजिए, बड़े बड़े स्वार्थों की सीटें उठा दीजिए; तो देखिएगा, सौ में ९० सीटों पर कांग्रेस का विरोध करनेवाला कोई न उठेगा। यदि सभी बालिग़ स्त्री-पुरुषों को वोट देने का अधिकार मिल गया हो, तो ९० फ़ी सदी कांग्रेसियों को निर्विरोध निर्वाचित होने पर विधान को, जन-सत्ताक नहीं है—नहीं कह सकते। इससे तो यही सिद्ध होगा कि कांग्रेस बहुत सर्वजनप्रिय संस्था है। यदि कोई विरोध करने के लिए खड़ा नहीं होता, तो उसे धर-पकड़ कर कैसे खड़ा किया जा सकता है!

इतना होने पर भी सोवियत्-विधान ने यह नियम रखा है कि किसी भी निर्वाचित सदस्य को निर्वाचकों का बहुमत, जब चाहे तब अपने भेजे मेम्बर को हटा सकता है और उसकी जगह नया सदस्य भेज सकता है। साथ ही यह भी बात रखी गई है कि हर एक सदस्य को उस इलाके के वोटरों का बहुमत ज़रूर मिलना चाहिए। यदि गिनने पर वोट आधे से कम आते हैं, तो उसे सदस्य नहीं समझा जाता और इसीलिए निर्विरोध को बिना वोट के चुने जाने का नियम वहाँ स्वीकार नहीं किया गया है।

सोवियत्-विधान स्पष्ट देखना चाहता है कि पार्लियामेंट का सदस्य वही हो, जिसको निर्वाचकों के बहुमत ने दिल से चुना है।

सोवियत्-चुनाव के बारे में जनसत्ता के नाम पर जो आक्षेप होते हैं, उन पर अगर ग़ौर करें, तो दोष या गुण जो वहाँ हैं, वह सम्पत्ति पर व्यक्ति के अधिकार उठ जाने के कारण हैं। यह निश्चय ही है कि किसी भी साम्य-वादी देश में, जहाँ कि स्थावर-जंगम सभी सम्पत्ति का मालिक राष्ट्र है, व्यक्ति को मनमाना ख़र्च करने के लिए रुपया नहीं मिलेगा। रुपया न होने पर जैसा-तैसा आदमी विरोध करने के लिए खड़ा कैसे होगा? आपको अगर आक्षेप करना ही है, तो बेहतर है, यही कहें कि व्यक्तिगत सम्पत्ति के बिना जनसत्ता असंभव है। सवाल हो जाता है, क्या समाजवाद जनसत्तावाद का विरोधी है? और यह कौन अक़्ल का अंधा कह सकता है? समाजवाद व्यक्ति की अपेक्षा समाज के अधिकार को ऊँचा मानता है; और जन-सत्तावाद भी बहुमत के अधिकार को मान कर उसी तत्व को स्वीकार करता है।

यदि हम सोवियत्-पार्लियामेंट के सदस्यों को देखें, तो मालूम होगा कि उनमें देश के कोने कोने के व्यक्ति चुने गये हैं; सभी भाषा-भाषी जातियों के आदमी वहाँ मौजूद हैं। उनमें कुछ स्त्री-पुरुष तो ऐसे हैं, जो रूसी भाषा समझ नहीं सकते और उनके लिए अधिवेशन में खास टेली-फोन का इन्तज़ाम किया गया है जिसके द्वारा भिन्न भाषा के व्याख्यान का अनुवाद तत्काल उनके कानों में पहुँचाया जाता है। यदि स्त्री-पुरुष के ख़याल से देखें, तो वहाँ स्त्रियों की संख्या कई सौ है। यदि व्यवसाय की दृष्टि से देखें, तो जहाँ एक ओर उनमें बड़े बड़े एकेडेमीशियन, प्रोफ़ेसर, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक, सेना-नायक हैं, तो दूसरी ओर सैकड़ों की तादाद में कारख़ानों, खानों, पंचायती-खेतों और पशुशालाओं में काम करनेवाले सैकड़ों मज़दूर और किसान हैं। जिस पार्लियामेंट में हर व्यवसाय, हर जाति के इतने प्रतिनिधि किसी धन या कुल के बल पर नहीं,

सिर्फ अपनी योग्यता के बल पर पहुँचे हों, वह यदि जनसत्ताक नहीं है, तो और जनसत्ताक हो ही कहाँ सकती है!

*** ***

निर्वाचन के वक़्त बड़ी धूम-धाम से देश के कोने कोने में प्रचार किया गया था। रेडियो यंत्रों का इस्तेमाल हुआ था। लाखों की संख्या में छपनेवाले अख़बारों में लेख लिखे गये। उम्मेदवारों के फोटो के साथ बड़े बड़े जलूस निकाले गये। ट्रामवे और मोटर-बसों में रंग-बिरंगी रोशनियों और साइन-बोर्डों से प्रचार किया गया। लेनिन्ग्राद् में तो मैंने देखा, कुछ बड़ी इमारतों पर उम्मेदवारों के १०—१० हाथ ऊँचे चित्र लगे हुए हैं। उम्मेदवार तथा दूसरे जन-नायक सभाओं में व्याख्यान देते थे। उनके व्याख्यान के बोलते फ़िल्म तैयार करके चौकों और खुली जगहों पर दिखलाये जाते थे। चुनाव के तीन-चार दिन पहले से तो लेनिन्ग्राद् में हर पचास गज़ पर शब्द-प्रसारक यंत्र लगा दिये गये थे। और मास्को तथा दूसरी जगहों में होते उस वक़्त के व्याख्यानों को ब्राडकास्ट किया जाता था। सारा नगर इस ब्राडकास्ट से शब्दायमान हो रहा था।

प्रश्न हो सकता है कि जब ११४३ सीटों पर कोई विरोध करनेवाला नहीं था, तो इतने तूफ़ानी प्रचार की आवश्यकता क्या? हम कह चुके हैं कि वहाँ विरोधी न होने मात्र से कोई मेंबर चुना नहीं जा सकता। उसके लिए बहुमत का वोट अवश्य मिलना चाहिए और चुपके पर्चियों के डालने का प्रबंध होने से कोई भी आदमी पर्ची को बिना चिह्नित किये या बेक़ायदा बक्स में डाल कर अथवा पर्ची को पाकेट में रख खाली लिफ़ाफ़े को डाल कर अपना वोट ख़राब कर सकता है। इस प्रकार पार्टी की तरफ़ से नामज़द होने पर भी जनता की उदासीनता या अज्ञान से कोई आदमी चुनाव में हार सकता है। इसीलिए लोगों को समझाने की वहाँ उतनी ही आवश्य-

कता थी जितनी पूँजीवादी देशों में विरोधी के खड़े होने पर होती है।

***   ***

निर्वाचन-दिन (१२ दिसम्बर १९३७) का विज्ञापन

चुनाव ने लोगों में कितना उत्साह पैदा किया, इसके यहाँ हम कुछ

उदाहरण देते हैं—रूस की गंगा वोलगा के ऊँचे किनारे पर **उग्लिच्** कस्बे के पास पुराने **पक्रोव्स्क** मठ की सफ़ेद दीवारें खड़ी हैं। वीस ही वर्ष हुए जब यह मठ एक बड़ी ज़मींदारी का मालिक था। उसके पास कई गाँव थे, जिनमें २५९६ मर्द उसकी बेगार करनेवाले थे। स्त्रियों और बच्चों की गिनती ही नहीं। मठ के खेतों पर सारे जीवन भर ये किसान काम करते थे। वह मठ के असामी कहे जाते थे।

शताब्दियों से कुछ निठल्ली काला चोगा पहननेवाली मोटी तोंदें (साधु) इन किसानों के ख़ून और पसीने के बल पर मौज उड़ा रही थीं। श्रद्धालुओं के अज्ञान से फ़ायदा उठा कर उनको मरने के बाद स्वर्ग का प्रलोभन दे कर ठगा जाता था। वोलगा माई के बालुओं की पवित्र प्रसादी बना कर लोगों के दुःख-विपत्ति के हरण का ढोंग रचा जाता था।

सोवियत्-शासन के स्थापित होने पर धनिकों और ज़मींदारों के साथ साधु कही जानेवाली यह काले जामें में लिपटी तोंदें भी न जाने कहाँ विलीन हो गईं। नई सरकार ने मठ के मकानों को वृद्ध-आश्रम के रूप में परिणत कर दिया। आज वहाँ ३०० बूढ़े-बूढ़ियाँ बेफ़िक्र हो, शान्ति के साथ अपना अन्तिम जीवन बिता रही हैं। उनके भोजन-छाजन, दवा-दारू और मनोविनोद का सारा प्रबंध सरकार करती है।

देश के और लोगों की तरह इन ३०० वृद्धों को भी सोवियत् नागरिकता का अधिकार है। उन्हों ने भी चुनाव में भाग लिया। इन्हीं ३०० वृद्धों में दो अपनी अवस्था के कारण सब से विशेष स्थान रखते हैं। **तीख़ोन् माख़ीमोविच्** (माख़िम् का पुत्र) **तोरुसिच् चिरुल्निकोफ़्** की अवस्था १२१ साल की है; और पावेल **कुज़मिच् मर्कोलोफ़्** की १२३ साल।

तीख़ोन् चिरुल्निकोफ़् ने कहा—"मैं १८१७ में पैदा हुआ था। थोड़े ही दिनों में इस पृथ्वी पर रहते मुझे १२१ वर्ष हो जायँगे। मेरे गाँव का नाम था **अलेख़ेयव्का** जो कि वोरोनेश् के इलाक़े में है। सोसना नदी बड़ी सुन्दर है। उसकी धार चौड़ी है। जगह लंबी-चौड़ी है। गाँव और मीलों

तक फैली भूमि एक धनी, कौंट शेरेमेतेफ़् की सम्पत्ति थी। हमने कभी कौंट को नहीं देखा। उनके पटवारी, गुमाश्ता और मैनेजर हम पर शासन करते थे और बड़ी कठोरता के साथ शासन करते थे। घोड़ों की तरह सिर्फ हम ज़मींदार के लिए काम करते करते मरते थे। दूसरे प्रकार के जीवन को हम जानते न थे। आजकल सब को पढ़ने के लिए मौक़ा मिलता है, मेरा पड़पोता इंजीनियर है। लेकिन हमें कभी नहीं पढ़ाया गया। मालिकों को केवल हमारे हाथ-पैरों की ज़रूरत थी। जो भी हो, गाँव में कोई स्कूल न था। वे हमें कोड़ों से सिखलाते थे। मुझे मालूम नहीं कौन से साल। शायद किसी ज़ार के मरने के बाद। चाहे **अलेखन्देर्** होगा या दूसरा। उस वक़्त किसान ज़मींदारों के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए। मैं तब १०–१२ साल का लड़का था। वे पलटन बुला लाये। उन्होंने स्त्री-पुरुष सभी किसानों को बटोर लिया; और सब को हाँक कर वे गाँव के बाहर कोड़ा लगाने के लिए ले गये। कुछ ने जान बचाने की कोशिश की लेकिन भागने में सफल बहुत कम हुए। मैं नदी की ओर भागा और झाड़ियों की ओट में छिप गया। मैं वहाँ से सब देख रहा था। बहुत से कोड़ों की मार से वहीं मर गये। कोई जर्नैल पलटन लेकर आया था। वह घोड़ा गाड़ी पर था। वह लम्बा पतला आदमी था। उन दिनों लोग साँस लेने में भी डरते थे। वह सभी चीज़ से डरते थे। उस डरने की तुम कल्पना नहीं कर सकते।"

सम्वाददाता लिखता है—इतना कहने के बाद बूढ़ा ज़रा देर के लिए चुप हो गया। इसके बाद उसका चेहरा चमक उठा और उसने कहना शुरू किया—आजकल हर एक आदमी स्वतंत्रतापूर्वक साँस लेता है, स्वच्छन्दतापूर्वक रहता है, आज जीवन वास्तविक है। मनुष्य का जीवन है। तुम समझते ही हो कि हम बूढ़ों से क्या काम निकलेगा, तो भी सोवियत् सरकार हमें भोजन देती है, कपड़ा देती है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह सब कहाँ से आता है। मत समझो, चूँकि मैं बूढ़ा हूँ, इसलिए कुछ नहीं जानता। मैं सब जानता हूँ। मैं स्तालिन् को भी जानता हूँ। वह हमारे

देश का प्रथम पुरुष है। उसकी बुद्धिमत्ता के कारण लोगों ने उसे अपना नेता बनाया।

पावल **मर्केलोफ़्, निजनीनोवोग्राद्** (वर्तमान गोर्की) इलाक़े के **सेर्गच** गाँव का निवासी है। वह धीरे धीरे बोलता है। हरएक शब्द के बीच में दृष्टि को दूर किसी जगह स्थिर करके ठहरते हुए बोलता है—"मैं तिप्लोये का हूँ। एक बड़ा गाँव है। हम पीतर् **मिख़ाइलोविच्, फ़िलातोफ़्** के असामी थे। लोगों के लिए बड़ा कठिन जीवन था। अन्त न होनेवाला दुःख। कोड़ा और बेंत।

"दादा! क्या वे तुमको मारते थे?"

"हाँ, मारते थे।"

"किस लिए?"

"सभी चीज़ के लिए। फाटक तक नहीं पहुँचा—मारो! फाटक से आगे चला गया—मारो! दोषी हो चाहे निर्दोष, छोटी सी भी भूल के लिए। आजकल बिलकुल दूसरी ही बात है। लेकिन उन दिनों अदालत नहीं थी। गाँव का मालिक ही संपूर्ण अदालत था। वही फैसला करता था कि हमको अस्तबल में कोड़े लगाना चाहिए या खलिहान में। मुझे याद है, एक बार कटाई के वक़्त उन्होंने मुझे कोड़े लगवाये थे। घर के बड़े ने चार औरतों के साथ खेत काटने के लिए मुझे भेजा था, औरतें सभी गर्भिणी थीं। जल्दी ही उनको बच्चा होने वाला था। न वह झुक सकती थीं, न एक डंडी हाथ से उठा सकती थीं। एक औरत ने उसी समय वहीं खेत में बच्चा जना।

"सूर्य अस्त होनेवाला था। कटाई का अभी आरंभ नहीं हो पाया था। कारिन्दा आग-बबूला हो गया, जब कि उसने यह देखा। उसने ठोकर मारी और मैं मुँह के बल गिर पड़ा। मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था। उठ कर मैंने उसका कोट पकड़ लिया। वह मुझे खींच कर ज़मींदार के महल में ले गया। और फिर एक दर्जन या दो दर्जन न जाने कितने कोड़े लगाये।

"दूसरी बार मैं एक पीपे के कारण पीटा गया। मैं एक पानी का पीपा काटनेवालों के लिए ले जा रहा था। वह एक खन्दक में गिर गया। पीपा एक तरफ़ खिसक गया, अभागा! इसलिए मुझे कोड़े लगे। मैं ही अकेला नहीं था, सभी को कोड़े लगे। कोड़ों की मार के कारण दो गर्भिणी औरतें मेरी आँखों के सामने मर गईं। और भी बहुत से लोग पीटे गये। और सिर्फ़ हमारे ही गाँव में नहीं, हमारे पड़ोसी गाँव के किसानों की तो और शामत आ गई थी। उनके साथ तो खरीदे दास जैसा बर्ताव होता था। लोगों ने धैर्य छोड़ दिया। उन्होंने खेत में खड़े गेहूँ को जला दिया, और गाँव के चौकीदार को पीटा उसका फल हमें बड़ी क्रूरता के साथ भोगना पड़ा।

"आह मेरे प्यारो! क्या तुम सोचते हो, कि उन दिनों सिर्फ पीटने ही की आफ़त लोगों पर थी? उनको पीटा जाता था, जबर्दस्ती फ़ौज में भर्ती किया जाता था, और शरीफ़ों की मनमानी का शिकार होना पड़ता था। एक दिन मैं खेत में निकाई कर रहा था। उस वक्त मैं करीब २० वर्ष का था। ज़मींदार खेत देखने आया। उसने मुझे देख कर कहा—देखो उस मोटकड़े को! अब उसकी शादी का समय आ गया है। वह उसी वक़्त मुझे पकड़ कर मालिक के घर पर ले गया। वह एक दुलहिन लाये। हमारे गाँव में एक कुबड़ी लड़की थी, बस वही थी। उसे वे सीधे खेतों में से पकड़ लाये थे। मेरे ऊपर मानो बिजली गिर गई। मेरा पिता दौड़ा दौड़ा आया, और मालिक के पैरों में पड़ गया। उसने किसी तरह गिड़-गिड़ा कर आरजू मिन्नत कर के मुझे छुड़ाया। मालिक का वह विश्वासपात्र चरवाहा था। इसीलिए मालिक ने उसकी बात मानी। नहीं तो वह मुझे उस कुबड़ी के साथ ब्याह चुके थे। सब चीज़ मालिक के हाथ में थी। कोई आदमी अपनी स्वतंत्र इच्छा से ब्याह करने की हिम्मत नहीं रखता था।

"कभी कभी वह हमको ढोरों की तरह बेच देते थे। तिप्लोई के मालिक ने असामियों के साथ अपनी ज़मीन को किसी राजकुमार के हाथ

बेच दिया, और उसने राजकुमार वोल्कोन्स्की के हाथ में।

"लेकिन सब से कठिन था .फौज की नौकरी का सहना। वह किसी भी अवस्था के आदमी को पकड़ ले जाते थे। सब कुछ मालिक की ख़ुशी पर था। २५ साल के लिए। फौजी नौकरी गुलामी से भी बदतर थी। बहुत कम जीते लौटते थे। मुझे दो तितोफ़् भाइयों की याद है। किसी कारण से मालिक उनसे नाराज़ हो गया। और दोनों को फौज़ में भेज दिया। फिर वहाँ दूसरा एक फ्योदोर था। उसका निजी नाम मुझे याद नहीं। वह जवान नहीं था। वह खेत काट रहा था। उसी वक़्त मालिक की नज़र उसपर पड़ी। उसको उसका ढंग नहीं पसन्द आया। जो भी हो, जब वह घर आया, तो उसी वक़्त उसे पकड़ ले गये। उसे खाने भर की भी फुर्सत न दी गई; न चीज़ों को सँभालने का मौक़ा। वह फिर नहीं लौटा।

"और कभी यदि कोई लौट कर आया भी तो वह किसी काम के लायक न रह कर। वह बूढ़ा देह-जाँगर से थक कर अपने परिवार पर बोझ बन कर। एक बात को मैं कभी न भूलूँगा। मैं उस वक़्त **लिस्कोफ़्** में था। एक बड़ी दयनीय सूरत का प्राणी मुझे दिखलाया गया। कह रहे थे, यह तुम्हारे गाँव का आदमी है। लेकिन कोई ठीक से नहीं बतला सकता था कि वह कौन है। मैंने उसपर नज़र डाली और देखा, कि वह अब मनुष्य नहीं रह गया था। उसके बाल सफ़ेद थे, पैर नंगे, जिनसे ख़ून बह रहा था। उसके कपड़े चिथड़े चिथड़े हो गये थे। और बीमार भी था। मैं उसे अपने साथ घर ले चला। रास्ते में मालूम हुआ कि वह सिपाही रहा है। उसकी उम्र ७० वर्ष की थी। ४० वर्ष की उम्र में उसे पकड़ कर पलटन में ले गये थे। कहीं दूरदेश में २३ वर्ष तक नौकरी बजानी पड़ी और वहाँ से सारा रास्ता पैदल चल कर हमारे इलाक़े में पहुँचा। वह बराबर खोजता रहा लेकिन उसको अपने गाँव का पता नहीं मिला। .फौज की नौकरी ने उसकी स्मरण शक्ति को ख़तम कर दिया था।

"मैं उसे **तिप्लोये** ले आया। उसके संबंधी उसे नहीं पहचानते थे।

उसकी औरत और लड़के कितने ही साल पहले भूख और सर्दी से मर चुके थे। एक बूढ़ी औरत ने कहा—इसके कुर्ते को हटा तो दो, अगर पैदा होने का चिह्न उसके दाहने कंधे पर हो, तो वह हमारे घर का है। लोगों ने उसके फटे कुर्ते को हटा दिया और वहाँ पैदायश का चिह्न मिला। "**वन्युश्का**" कह कर बूढ़ी औरत रो पड़ी।

"यह थी उन दिनों तुम्हारे लिए फ़ौज की नौकरी। ऐसी ही ज़िन्दगी उन ज़मींदारों के मातहत हम बिताते थे। जब किसानों को ज़मींदारों की दासता से मुक्त किया गया, तब भी हमारी अवस्था में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। उन्होंने न हमें खेत दिया, न घोड़े। लोग वोल्गा में नावों पर कुलीगीरी करने चले गये।

"मेरी नज़र कमज़ोर होती जा रही है। आँखों ने काफ़ी समय काम दिया, यह मैं ज़रूर कहूँगा। कानों से अच्छी तरह मुझे सुनाई भी नहीं देता। लेकिन चीज़ों को मैं ख़ूब अच्छी तरह पहचानता हूँ। अब जीवन अच्छा है। इससे बेहतर नहीं हो सकता। पहले यह कैसा था? नरक! सिर्फ चन्द लोगों के लिए अच्छा और हज़ारों के लिए बदतर! और अब? सभी जाँगर चलानेवाले सुख से रहते हैं। यह ठीक कहा गया है, तुमने अपने हिस्से के काम को पूरा किया है, अब जनता की सरकार बुढ़ापे में तुम्हारा प्रबन्ध करेगी।

"मैंने बड़े आनन्द के साथ जनता की सरकार को अपना वोट दिया। और मैं हृदय से आदर करता हूँ जनता के पिता योसेफ़् विसारियोनोविच् स्तालिन् को।"

***   ***

२४ नवम्बर को **लेनिन्ग्राद्** की सड़क पर जाते हुए मैंने देखा, स्त्री-पुरुषों का एक बड़ा जलूस आ रहा है। **कलिनिन्** का चित्र तथा दूसरे घोषणा-वाक्य हैं। आदमियों की संख्या १००० से ज़्यादा होगी। स्त्री-पुरुष

दोनों मिश्रितरूप से चल रहे थे। स्त्रियाँ पुरुषों के साथ फ़ौजी सिपाहियों की भाँति क़दम मिला कर चल रही थीं।

*** ***

तात्याना फ़्योदोरोवा पार्लियामेंट के लिए मास्को से चुने जानेवाले उम्मेदवारों में से एक थी। २१ वर्ष की यह तरुणी मास्को शहर के अन्दर तीसरी भूगर्भी रेलवे-लाइन में खुदाई का काम करनेवाले स्त्री-पुरुष श्रमिकों की एक ब्रिगेड (दल) की नेता है। जितनी वह फावड़ा चलाने में तेज़ है, उतनी ही कलम और ज़बान के उपयोग में भी। प्रथम श्रेणी के वायुयान संचालक का प्रमाण-पत्र भी उसे मिला हुआ है। वह अपनी डायरी म लिखती है——

(१) "छठे हल्के के वोटरों की सभा थी। मैं ज़रा देर से पहुँची। यातायात-विभाग के जन-मंत्री-क्लब-घर में सैकड़ों आदमी आ चुके थे। मैंने बड़ी दिलचस्पी के साथ व्याख्यानों को सुना जिनमें अभिमान और उत्साह दोनों की मात्रा भरी थी। मुझे याद आते हैं, एक स्त्री के शब्द। यह शब्द उसके हृदय के अन्तस्तल से निकले थे——'स्तालिन् हमारा सब कुछ है। वह हमारा नाज़ (अभिमान) है, वह हमारा चातुर्य है, हमारा जीवन है। स्तालिन् का नाम श्रमजीवियों के सुख की बाह्य प्रतिमा बन गया है।'

"साथी स्तालिन् के प्रेम का भाव हम सब को एक कर देता है। जब उसका नाम उच्चरित होता है, तो तालियों से सारा हाल गूँज उठता है। सभी सभाओं में जहाँ जहाँ इन दिनों मैं गई, यही देखा। जब मैं और सारे कमकर खड़े हो कर वक्ता के लिए ताली बजाते हैं, तो मालूम होता है, कि दीवारें हट गईं और सम्पूर्ण देश में सुखी, शक्तिशाली जनता और स्तालिन् मार्च कर रहे हैं। स्तालिन् अपनी सादी और पिता की जैसी मन्द मुसकान के साथ हमारे आगे चल रहा है।

मंच से एक स्त्री आती है और मेरे कानों में कहती है——'तवारिश्,

फ़्योदोरोवा, मेरे जीवन में यह पहला समय है, जब कि मैंने किसी सभा म भाषण दिया।'

'तुम्हारा भाषण बड़ा सुन्दर रहा'—हाथ मिलाते हुए मैंने उससे कहा।

इस चुनाव के प्रचार के कारण लाखों नये आदमी राजनैतिक हलचल में खिच आये। मुझे रोज़ रोज़ इसे देखने का मौका मिल रहा है।

कुछ घरू औरतें सभा समाप्त होने के बाद मुझे चारों ओर घेर कर खड़ी हो गईं। उन्होंने मुझ से कहा—'हम अपने देपुतात् (सदस्य) को और अच्छी तरह जानना चाहती हैं'।

हममें दोस्ताना बातचीत शुरू हुई। मेरे नये परिचितों ने आग्रह किया कि मैं संगीत-नाटक को देखकर जाऊँ। मैंने हँसते हुए कहा—'वोटरों की आज्ञा मेरे लिए कानून है।'

संगीत-नाटक बड़ा सुन्दर था। वहाँ कलाकार और जनता में कोई भेद-भाव न था। सभी एक सुखी परिवार से मालूम होते थे।

(२) मैंने समझा, आज सवेरे छुट्टी रहेगी; लेकिन उसी वक्त टेलीफ़ोन खनखन करने लगा। कान लगा कर सुना—'तवारिश् फ़्योदोरोवा, ८४ नंबर के स्कूल में हम तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

मैं उस सुन्दर स्कूल-भवन में पहुँची। यह पिछले तीन साल के भीतर मास्को में बने २९५ स्कूलों में से एक है। मुझे याद आने लगा। मास्को कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री ख्रुश्चेफ़् ने एक बार एक सभा में कहा था—'पुराने ज़माने में हर साल दो या तीन स्कूल ही बन पाते थे।' मैं प्रकाश से देदीप्यमान एक विशाल मनोविनोद-हाल में पहुँची। विद्यार्थियों ने कान बहरा कर देने वाले 'हुरा' के घोष से मेरा स्वागत किया। वे ताली बजाने लगे और धरती पर पैरों को धमधमाने लगे। मुझे उन्हें शान्त करने के लिए प्यूनिर्का (बालचरी) जीवन के कुछ वर्षों के अनुभव कहने पड़े। मैंने अपने उन दिनों के बारे में उनसे कहा। उन्हें बीते अब भी बहुत समय

नहीं गुज़रा। लड़कों ने बड़ी दिलचस्पी से सुना। मैंने कहा—'अच्छा, दूसरी क्या बात मैं तुम से कहूँ।' मेरे ऊपर प्रश्नों की बौछार होने लगी।

'भूगर्भी रेल के बारे में कहो। बेइंजन के विमान (ग्लाइडिन) के बारे में कहो।'

'तुमने **स्तालिन्** को देखा है?'

'विमान-संचालक बनने के लिए कितना बड़ा होने की ज़रूरत है?'

मैंने सब की जिज्ञासा को पूरा किया। मैंने उनसे कहा—'महान् क्रान्ति के बीसवें वार्षिकोत्सव के कुछ दिन पहले हमारे तरुण-साम्यवादी-संघ का ब्रिगेड कितने ही दिनों तक अपने काम से नहीं हटा, जब तक कि हमने योजना के मुताबिक अपने काम को समाप्त नहीं कर लिया। मैंने उनसे कहा—जब पहले पहल उड़ते हवाई जहाज़ से पराचूट (मुँहबन्द छाता) के सहारे मैं कूदी। कूद जाने के बाद मेरा डर भाग गया, और मैं इतनी प्रसन्न हुई कि गीत गाने लगी। लेकिन लड़को, अब मैं तुम से कुछ पूछना चाहती हूँ? ज़रा अपनी नोटबुकें दिखलाओ तो!'

एक बड़ी छल्ली मेरे सामने लाई गई। सभी नोटबुकें साफ़ और ठीक से रखी गई थीं। मैंने कहा—"कमज़ोर विद्यार्थियों की कुछ नोटबुकें मुझे दिखाओ तो।'

चारों ओर कानाफूसी होने लगी। तो भी हिम्मत कर के एक शरमीला लड़का मेरे सामने पेश किया गया—'चाची तान्या, (तात्याना) यह है! यह तीसरे दर्जे का विद्यार्थी बड़ा नटखट और बड़ा ही फूहड़ लड़का है।'

एक बड़ा ही मीठा-कथा-संलाप शुरू हुआ। लड़के ने 'बालचर का वचन' दिया कि मैं मन लगा कर पढ़ूँगा और ठीक चाल से चलूँगा। स्कूल छोड़ने से पहले हम लोगों ने मिलकर गाना गाया।

(३) मुझे कभी विश्वास नहीं था कि मेरे इतने दोस्त हैं। बीसों पत्र हर रोज़ आ रहे हैं। उनमें कितने ही मास्को, लेनिन्ग्राद् से ही नहीं, बल्कि सुदूर ताश्कन्द और बाकू से आ रहे हैं। कितने ही **कोल्खोजों** से आ रहे

हैं और कितने ही सीमान्त चौकियों से। ऐसे पत्र भी डाकख़ाने की कृपा से मुझे मिल जाते हैं जिन पर इतना ही लिखा रहता है—'मास्को, तान्या **फ्योदोरोवा**'। मुझे इस सचाई का ठीक तौर से पता अब मालूम हो रहा है कि हमारे देश में किसी मनुष्य को सूनापन का भान होना बड़े अचरज की बात है। साथी बधाइयाँ भेजते हैं। वह अपनी जीवनी, अपनी पढ़ाई, अपने काम और अपनी सफलताओं के बारे में कहते हैं। मैं अपने नये दोस्तों में से अधिकांश को उत्तर देती हूँ। लेकिन दुर्भाग्य से हर एक पत्र का उत्तर देना मेरी शक्ति से बाहर की बात है। देश के सभी भागों से आये ये पत्र मेरे लिए बड़े आनन्द के विषय हैं।

(४) नब्बेवें हल्के की सभा थी। खुली जगह में हज़ार से अधिक आदमी जमा थे। कितने ही श्रोता अपने बच्चों के साथ आये थे। एक खुली लारी भाषण-मंच का काम दे रही थी। लोग उसे घेरे खड़े थे। चुनाव-समिति के एक सभासद ने मुझ से कहा—'यह देखो, यहाँ कितने ही घरघुसू आये हुए हैं।' उन्होंने यह कहते हुए लारी के पास खड़े कुछ बूढ़ों की ओर इशारा कर के फिर कहा—'किसी सभा में इनको खींच लाना आज तक संभव नहीं हुआ था।'

एक पताका पर लिखा था—'हम सब तवारिश् फ्योदोरोवा और तवारिश् बुल्गानिन् को वोट देंगे।'

मैं कितनी ही बार इन वाक्यों को पढ़ चुकी हूँ, तो भी यह मेरे दिल में सदा एक लहर पैदा करते हैं। मैं सोचती हूँ—क्या सचमुच ही मैं ऐसे महान् सन्मान की पात्री हूँ ? जो विश्वास मेरे प्रति किया गया है, क्या मैं उसके साथ न्याय कर सकूँगी। मेरे दिमाग़ में देश-प्रेम के कितने ही शब्द आये, लेकिन शब्दों की ज़रूरत नहीं, कार्य की ज़रूरत है। जो भाव मुझे अपने में डुबा रहे हैं, उनकी सत्यता मुझे अपने कार्यों से दिखलानी होगी।

एक प्रसन्न सजीव श्रोतृमंडली ध्वजा-पताका तवारिश् स्तालिन् तथा पार्टी और सरकार के कितने ही नेताओं के चित्र बड़े जलूस के साथ जब

निकलते हैं, तो वह एक बड़ा त्योहार सा मालूम होता है। वही भाव वक्ताओं के भाषणों में भी दिखाई देता है। मुझे और शायद सभी उपस्थित मनुष्यों को यह नहीं मालूम होता कि हम किसी राजनैतिक सभा में हैं। जान पड़ता है, जैसे स्नेही बन्धुओं की बैठक लगी है। मैं ऐसी अविस्मरणीय उत्साहवर्द्धक बैठकों में उपस्थित हो रही हूँ।

(५) मुझे अपने चंदवक (shaft या ज़मीन के नीचे गहराई में उतरने के लिए खुदा हुआ कुआँ) में जाने की बड़ी इच्छा हो रही है। कितने दिनों से खुदाई में मैं उपस्थित न हो सकी, लेकिन चुनाव संबंधी कामों की इतनी भीड है कि उसके लिए ज़रा भी समय निकालना मुश्किल है।

"अच्छा तान्या, मालूम होता है, तुम हम सब को भूल गई!"—हँसते हुए मेरे साथी कमकर मिलने पर कहते हैं। चंदवक का काम समाप्त होने जा रहा है। १२ दिसंबर तक भूगर्भी रेलवे की पक्रोव्स्की लाइन पर गाड़ी दौड़ने लगेगी। लाइन पर आख़िरी हाथ फेरा जा रहा है। हमें सभी काम पूर्ण और निर्दोष रीति से करना है।

मेरे साथी कमकर शिकायत कर रहे हैं—'अब ज़रा ज़रा कहीं कही समाप्त करना रह गया है। अपना कर्तब दिखलाने के लिए कौन सी बात रह गई है?'—दोस्तो, धीरज धरो, अभी तीसरी लाइन बाकी है। उसमें करने के लिए बहुत काम मिलेगा। हमारे तरुण-साम्यवादी-संघ के ब्रिगेड को अपना कर्तव्य दिखलाने के लिए वहाँ बहुत मौक़ा मिलेगा।

* * *   * * *

प्रसिद्ध उपन्यासकार **मिख़ाइल् शोलोख़ोफ़्** सोवियत् पार्लियामेंट के लिए एक उम्मेदवार था। नवोचेर्कास्क शहर के वोटरों की सभा थी। आसपास के कितने ही कोल्ख़ोज़ों के कसाक भी आये हुए थे। ओर्जोनीकिद्ज़े-हाल लोगों से खचाखच भरा था। दो हज़ार से ऊपर आदमी प्रसिद्ध उप-

न्यासकार के भाषण सुनने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। वक्ता के हाल में प्रवेश करते लोगों ने ज़ोर से करतल-ध्वनि की।

रोस्तोफ़् नगर के गोर्की नाट्यशाला के कलाकार **प्ल्यात्** ने 'शान्त-दोन्' के लेखक के जीवन पर प्रकाश डाला। **शोलोख़ोफ़्** मंच पर आया। ज़ोर की ताली पिटी। उपन्यासकार ने कहना शुरू किया—

साथियो, सोवियत् पार्लियामेंट के भाषणों से—जो कि समाचारपत्रों में छप रहे हैं—एक अभिमान का भाव प्रतिध्वनित होता है। किसका अभिमान? यही कि जनता ने उनके ऊपर इतना विश्वास किया (हर्ष-ध्वनि)। मुझे भी वह अभिमान का भाव विह्वल कर रहा है। मेरे लिए इस अभिमान में कुछ व्यक्तिगत विशेष भाव भी मिश्रित हो गया है। सो क्यों? क्योंकि मैं दोन् के एक निर्वाचन-क्षेत्र से खड़ा हुआ हूँ। दोन् के तट पर मैं पैदा हुआ। दोन् ने मुझे पाला पोसा। यहीं मैंने शिक्षा पाई। यहीं मैं जवान और लेखक हुआ और यहीं मैं अपनी महान् कम्युनिस्ट पार्टी का मेंबर बना। मैं अपनी महान् तथा अनुपम शक्तिशाली पितृभूमि का भक्त हूँ। मैं यह भी अभिमान के साथ कहता हूँ कि मैं अपनी जन्मदातृ दोन्-भूमि का भक्त हूँ (हर्षध्वनि)।

साथियो, इस पुराने नगर ने पितृभूमि के प्रेमभरे कितने ही भाषण सुने हैं। गृहयुद्ध के दिनों में पितृभूमि के प्रेम के बारे में बहुत कहा गया था। दूसरों के साथ साथ (क्रान्ति-विरोधी) जेनरल **क्रास्नोफ़्** और उसी तरह दूसरे राजनैतिक गिरगिट देश-प्रेम की बात करते थे; और साथ ही जर्मनों को दोन् पर चढ़ाई करने की दावत देते थे। पीछे वे मित्रों—अंग्रेज़ों और फ़्रांसीसियों—को बुलाने लगे। एक तरफ़ वह देश-प्रेम की बात करते थे; और दूसरी तरफ़ कसाकों के ख़ून को बेच रहे थे। सोवियत् सरकार के विरुद्ध लड़ने के लिए जो हथियार उन्हें मिलते थे, उनके बदले में रूसी जनता को बन्धक रख रहे थे।

इतिहास लोगों को उनके वचन से नहीं बल्कि उनके काम से परखता

है। इतिहास जानना चाहता है कि आदमी कितनी मात्रा में अपने देश से प्रेम करता है और उस प्रेम का वास्तविक मूल्य क्या है ? देश का सच्चा प्रेम वड़ी वुरी तरह से **क्रास्नोफ़्** और दूसरे वतनफ़रोश वदमाशों द्वारा रौंदा जा रहा था। उन्होंने धोखा देकर कसाक कमकरों को वेवकूफ़ वनाया और क्रान्ति-विरोधी युद्ध में खींच लिया।

आज सोवियत्-संघ के करोड़ों आदमी देश के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं। वह अपने ख़ून से अपनी मातृभूमि की सीमाओं की रक्षा के लिए तैयार हैं। जिसने हमें माता की तरह पाल पोस कर तैयार किया, उस स्वदेश से प्रेम करना हमारा पवित्र कर्तव्य है।

१७ करोड़ कमकरों के लिए हमारा देश प्रिय है। इन १७ करोड़ों में कुछ घृणास्पद राजनैतिक वेश्याएँ——सभी **त्रोत्स्की, ज़िनोव्येफ़्** और **बुख़ारिन्** के अनुयायी हैं, जिन्होंने अपने आप ही को नहीं वेचा, वल्कि वे पितृ-भूमि को भी बेचना चाहते हैं। ऐसों के लिए आश्चर्य नहीं होता, बल्कि ऐसी घृणा होती है कि जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। मनुष्य-जाति के इतिहास में जाति-द्रोह और राष्ट्र के प्रति विश्वासघात——सब से वड़ा पाप समझा गया है।

कसाक जाति——जिसने अमीरों के ख़िलाफ़ विद्रोह करनेवाले रज़िन् और पुगाचेफ़् जैसे वीरों को पैदा किया——क्रान्ति के दिनों में उसे (सफ़ेद) जेनरलों ने बेवकूफ़ बनाया। और कमकर रूसी जनता को भाई का ख़ून वहाने के लिए तैयार किया। जब कसाकों को अपनी ग़लती मालूम हुई, तो वे सफ़ेदों से अलग हो गये।

आज बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में, हमारे युग के प्रतिभावान् महा पुरुष साथी **स्तालिन्** के नेतृत्व में, वह एक शान्त और सुखमय जीवन का निर्माण कर रहे हैं। १९१८ ई० में बवेरिया (जर्मनी) के सवारों ने अपने घोड़ों को दोन् नदी का पानी पिलाया। जर्मन सिपाहियों के बूटों ने दोन् की धरती को रौंदा। क्रास्नोफ़् विदेशी बन्दूकों के भरोसे पर तरुण सोवि-

यत्-सरकार का गला घोंटना चाहता था। वे क्रान्ति के मार्ग को रोक देना चाहते थे। वे महान् रूसी जनता—जो कि एक नये जीवन का निर्माण कर रही थी—के रास्ते को रूँधना चाहते थे। १९ वर्ष हो गये। आज फिर पूर्व और पश्चिम से फ़ासिस्ट गुंडे हम पर प्रहार करना चाहते हैं। ऐसे कड़े शब्द के इस्तेमाल के लिए मैं माफ़ी माँगता हूँ। निश्चय ही यह शब्द सुभाषित नहीं कहा जा सकता। लेकिन जब कोई इन पशुओं के बारे में बोलता है, तो ऐसे शब्दों का रोकना मुश्किल हो जाता है। इससे भी कड़े शब्द को इस्तेमाल किया जा सकता है; लेकिन मैं एक लेखक हूँ, इसलिए उसकी शान के वह शायाँ नहीं।

बोल्शेविक पार्टी के प्रयत्न से संपूर्ण नानाजातिक कमकर जनता की कोशिश से हमने अपने गरीब देश को सम्पत्तिशाली बना दिया है। हमने विशाल नयी फैक्टरियाँ खोलीं। हमने बड़े पैमाने पर पंचायती समाजवादी कृषि का निर्माण किया। हम अपनी आर्थिक प्रभुता को प्रतिदिन बढ़ा रहे हैं। आज उन सभी जातियों—जो कि परमुंडे फलाहार करना चाहती हैं—के लिए हम ललचाऊ कौर हैं। वह फिर उक्रइन् को हम से छीनने का स्वप्न देख रहे हैं। वह फिर दोन् की भूमि को जर्मन जूतों के लोह की नालों से रौंदना चाहते हैं। साथियो, जैसा कि तुम जानते हो, यह कुछ नहीं होने पायेगा। (हर्षध्वनि)

यह कुछ नहीं होने पायेगा। जैसा कि तुम्हें हाल में दिये **क्लिमेन्त वोरोशिलोफ़्** के भाषण से मालूम होगा। लाल-सेना आत्मरक्षा के लिए संगठित की गई है। लेकिन अगर हमारे ऊपर हमला होगा, तो लाल-सेना अपने को संसार की सब से ज़बर्दस्त हमला करनेवाली फ़ौज साबित करेगी। (हर्षध्वनि)

साथियो, मैं जानता हूँ। अगर एक समय जनरल क्रास्नोफ़् और दूसरे देश-द्रोहियों की सम्मति से जर्मन घोड़ों ने दोन् नदी का पानी पिया, तो अब उन्हें फिर कभी हमारे सोवियत् दोन् का पानी पीने का अवसर न मिलेगा।

बल्कि इससे बिलकुल उलटी बात होगी। अगर हम पर हमला हुआ, अगर फ़ासिस्टों के साथ सशस्त्र द्वन्द्व हुआ तो कसाक लाल-सेना के दोन् वाले घोड़े राइन (जर्मनी की पश्चिमी सीमा पर अवस्थित नदी) का पानी पियेंगे। सोवियत् राज्य के इतने वर्षों में दोन् कसाक क्या से क्या बन गये। गाँवों में ही नहीं, बल्कि हर एक घर के लड़के हाई स्कूलों में पढ़ रहे हैं। कसाक कोल्ख़ोज़ी किसान अब अपने पुत्र के लिए इतने से सन्तुष्ट नहीं होता, वह अपने बच्चों को इंजीनियर, लाल-सेना के सेनानायक, कृषि-विशेषज्ञ, डाक्टर और प्रोफ़ेसर बना देखना चाहते हैं। एक नई सोवियत् कसाक शिक्षित श्रेणी प्रगट हो रही है। दोन् की कायापलट हो रही है। यह अभी ही एक नई दोन् बन गई है। हम बड़े साहस और विश्वास के साथ भव्यतर भविष्य की ओर बढ़ते जा रहे हैं। (हर्षध्वनि)

चिरंजीव बोल्शेविकों की कम्युनिस्ट पार्टी! (हर्षध्वनि) चिरंजीव हमारा महान् राष्ट्र और दोन् के कमकर कसाक! (हर्षध्वनि)

चिरंजीव वह जिसका नाम हम अपने हृदयों में रखते हैं, चिरंजीव साथी **स्तालिन्**! (गर्जनापूर्ण हर्षध्वनि और हुरा का नारा।)

*** ***

चुनाव के संबंध में दुनिया के एक षष्ठांश में फैले सारे सोवियत् प्रजातंत्र में सभाएँ हुई थीं। नवम्बर और दिसंबर की सर्दी और उस पर उत्तरी ध्रुव के पास वाले प्रदेशों की सर्दी! सत्तरवें अक्षांश से भी और उत्तर **लेनेत्सु गाँव** (दुरिन्सकोये प्रान्त) में एक ऐसी सभा हो रही थी। गाँव के सभी २१६ वोटर सभा में उपस्थित थे। **किरिल् यम्किन्** ने—जो कि सोवियत् पार्लियामेंट की जातियों की सोवियत् के लिए तैमूर निर्वाचन-क्षेत्र से खड़ा हुआ था—कहा—

"मुझे जातिक-भवन के लिए अपने ज़िले के कमकरों ने जो उम्मेदवार चुना है, उसके लिए मेरे हर्ष की सीमा नहीं। मैं बारहसिंघों के तंबू

के भीतर पैदा हुआ था। वहीं मैंने अपना बचपन बिताया। पहले वर्षों में धनी किसानों (कुलक) के लिए काम करता था। मेहनत सख्त थी और जीवन में कोई रस न था।.......सोवियत् सरकार ने हमें सुख और शांति प्रदान की। मैं अब जानता हूँ कि मैं सिर्फ अपने लिए काम नहीं कर रहा हूँ, बल्कि अपनी भव्य पितृभूमि की भलाई के लिए कर रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ नये जीवन को। मैं देख रहा हूँ, कैसे पहले की उत्पीड़ित तैमूर की जनता पुनरुज्जीवित हुई है। हमारा प्रिय नेता साथी स्तालिन् चाहता है कि हमारा जीवन और भी सुखमय हो; और भी आनंद-पूर्ण और सम्पत्ति-शाली हो। मैं हर वक्त तैयार हूँ, उस हुक्म को बजा लाने के लिए; जो बोल्-शेविक पार्टी या हमारा नेता साथी स्तालिन् दे। मैं निर्मम हो कमकरों के और भी अधिक सुखमय जीवन के लिए लड़ने को तैयार हूँ। मैं लेनिन्-स्तालिन् के झंडे को ऊँचा रखूँगा और जनता उसके चौगिर्द आ घेरेगी। चिरंजीव जनता का महान् नेता साथी स्तालिन्!"

खतङ् गाँव की सभा में भी एक राय से **यम्किन्** को वोट देने के पक्ष में प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव में कहा गया था—"साथी **यम्किन्** हमारे ज़िले का सब से अच्छा आदमी है। वह तुन्द्रा का प्रमुख पुरुष है। वह वह मनुष्य है जिसे हमारी पार्टी और महान् नेता साथी स्तालिन् ने निर्मित किया है।"

***   ***

निरक्षर कवि सुलेमान स्ताल्स्की को पार्लियामेंट का उम्मेदवार खड़ा किया गया था। वोट के दिन से चन्द ही रोज़ पहले उसका देहान्त हो गया। उसने अपने वोटरों को निम्नलिखित कविता अर्पित की थी—

मेरे जन ने कहा सोवियत्—
हेतु खड़ा हो जाऊँ।
पुण्य-देश का प्रिय सपूत मैं,
अतिशय आदर पाऊँ॥

मोदमग्न हो गया वहा,
संगीतमध्य मुद मेरा।
वय झुका सकेगी कटि क्या,
जव सम्मानों ने घेरा॥

बाजी वदता हूँ, गायक,
यह कहाँ मान पायेगा।
इस जन्मभूमि में ही यह,
सम्मान दिया जायेगा॥

पर सुयश गान गाऊँगा,
मैं उसका सुख से दिन-दिन।
जो मार्ग प्रकाशित करता,
जो राह बताता स्तालिन्॥

मिल खेतों में खानों में,
सागर, बहती सरिता पर।
तुम मेरे सहचर स्तालिन्,
घन में पथरीली भू पर॥

जन मुक्त हुए चलते हैं,
जग-रवि के पीछे दिन दिन।
जय जय करने को है वह
मेरा पावक-ध्वज स्तालिन्॥

धन-शासन से बिलगाया,
कुहरे पर पानी फेरा।
पथ में शुचि सुमन पड़े हैं,
ऐसा है स्तालिन् मेरा॥

१६—निर्वाचन-दिन

(१२ दिसंबर १९३७)

महीनों से जिसके लिए तैयारी की गई थी; आख़िर वह १२ दिसंबर आ ही गया। उस दिन सोवियत् के सभी शहर, कस्बे, गाँव ही नहीं, समुद्रों और नदियों में चलते पोत भी ध्वज, पताका और चित्रों से अलंकृत किये गये थे। रात को दीपमाला जल रही थी। राष्ट्रीय-लांछन (हँसुवा, हथौड़ा, तारा) रंग बिरंगे विद्युत् प्रदीपों से रंजित किया गया था। सोवियत् भूमि पूर्व-पच्छिम इतनी विस्तृत है कि जिस समय ब्लादिवोस्तोक् में सुबह ६ बजे वोट पड़ना शुरू हुआ तो मास्को में ११ बजे रात हो रही थी; और लोग सोने की तैयारी कर रहे थे। दोनों के समय में सिर्फ १७ घंटे का अन्तर है। पहला वोटर जो ४७ वें निर्वाचन स्थान में वोट देने आया, वह था प्रशान्त महासागर नौ-सेना का सहायक कमांडर **कुज़्नेत्सोफ़्**।

सिबेरिया की उन दूरदराज़ जगहों में जहाँ कि नदियों के जम जाने और रास्तों के बर्फ़ के नीचे दब जाने से आना जाना बन्द हो गया था, हवाई जहाज़ों ने वोट की पर्ची आदि ले आने ले जाने का काम किया। कम्चत्स्का के गाँवों और नगरों में चुनाव-संबंधी काग़ज़ों को पहुँचाने के लिए कितने ही दिनों तक बहुत से हवाई जहाज़ लगे हुए थे। बर्फ़ के कारण उतरने के मैदान ख़राब हो गये थे। बादल और हिम-वर्षा के कारण रास्ते का देखना आसान काम न था। विमान-संचालकों में ध्रुव-प्रदेश का प्रसिद्ध उड़ाका वोवेच्किन् था। **याकुत्स्क** नगर सिबेरिया के अत्यन्त शीतल नगरों में है। विमान-संचालक वेरेज़िन् अपने जहाज़ के साथ उड़ कर ७ दिसंबर ही को वहाँ पहुँच गया था।

*** ***

(१) १२ दिसंबर लेनिन्ग्राद् के सारे कमकरों के लिए एक ऐतिहासिक दिन था। एक महोत्सव का दिन था। उस दिन लाखों वोटर अपनी पर्चियों को ही बक्स में डालने को नहीं लाये, बल्कि साथ ही बोल्शेविक पार्टी और उसके महान् नेता स्तालिन् के प्रति अपना प्रेम और भक्ति भी लेकर आये थे।

ठीक ६ बजे **स्वेर्द्लोफ़्** निर्वाचन-क्षेत्र के ३४वें निर्वाचन-स्थान के अध्यक्ष **अन्तोनोफ़्** ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा--"ग्रज़्दानियन् (नागरिक) निर्वाचको, अब आप वोट देना आरंभ कर सकते हैं। इस निर्वाचन-क्षेत्र की पर्ची पर **कालिनिन्** (सोवियत्-प्रेसीडेंट) और **सेलेज़्नियेफ़्** (प्रसिद्ध पनडुब्बी-नौसैनिक) के नाम छपे थे। ३ बजे तक २२४६ वोटरों में से १६४५ वोट दे चुके थे।

(२) स्मोल्नी-निर्वाचन-क्षेत्र के १०५ वें निर्वाचन-स्थान में वोट विशेष परिस्थिति में लेना था। इस स्थान में प्रसूतिका अस्पताल में प्रसूता या आसन्नप्रसवा स्त्रियों के वोट देने के लिए विशेष प्रकार से प्रबन्ध किया गया था। पहले पर्दे से हर कमरे को ६–६ हिस्सों में विभक्त कर दिया गया था। हर एक स्त्री की खाट को भी उसी तरह विभक्त कर दिया गया था, जिसमें कि एक दूसरे को वोट के बारे में पता न लग सके। ११॥ बजे वोटिंग आरंभ हुई। निरीक्षक-समिति के दो मेम्बर बक्स को अध्यक्ष के सन्मुख बीमार की चारपाई के पास ले आये और उसने पहले से चिह्न की हुई लिफ़ाफ़े में बन्द पर्ची को उसमें डाल दिया।

(३) लेनिन्ग्राद् की नाट्यशालाओं ने इस ऐतिहासिक दिन के लिए ख़ास प्रोग्राम रक्खे थे। नाटक आरंभ होने से पहले कलाकारों ने कविता पाठ किया और कितनों ही ने सोवियत्-विधान की विभिन्न धाराओं पर व्याख्यान दिया। सिनेमा-घर भी दर्शकों से ठसाठस भरे हुए थे। फ़िल्म आरंभ होने से पहले कितने ही तरुण कवियों ने अपनी नई कविताएँ पढ़ कर सुनाईं।

*** ***

ओदेसा—

(१) ओदेसा काला-सागर के पश्चिमोत्तर तट पर अवस्थित एक बड़ा बन्दरगाह है। आज सवेरे ५ बजे ही से सड़कें लोगों से भर गई थीं। वोटिंग आरंभ होने से बहुत पहले ही कितने लोग निर्वाचन-स्थान पर पहुँच गये थे। हर एक आदमी सब से पहले अपनी पर्ची को बैलेट-बक्स में डालना चाहता था। लेनिन्-चुनाव-क्षेत्र के ४१वें निर्वाचन-स्थान में जिस व्यक्ति ने पहला वोट दिया, वह थी ७२ साल की अंधी बुढ़िया रोस्या **मलमुद्**। १९१८ में वह **कियेफ़्** शहर के पास एक छोटे से गाँव में रहती थी। एक दिन डाकू उसके घर में घुस आये और उसके लड़के का पता ज़बर्दस्ती पूछना चाहते थे। बुढ़िया ने नहीं बतलाया और उन्होंने उसकी आँखें फोड़ दीं। बुढ़िया कह रही थी—'मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है कि मैं अपने ज़िले के योग्यतम उम्मेदवार **खेनकिन्** और **चेर्नित्सा** को वोट दे रही हूँ।'

९० वर्ष की बुढ़िया **सोफ़िया माख़ीमोव्ना** (माख़िम् की लड़की) **पोनोमरेवा** अपने निर्वाचन-स्थान में वोट देने गई। उसके बुढ़ापे को देख कर कार भेजी गई, लेकिन उसने उस पर चढ़ने से इनकार कर दिया। वह पैदल ही चल कर पहुँची।

(२) निर्वाचन-दिन **ओदेसा** में बड़े समारोह के साथ मनाया गया था। गायक, वादक, नर्तक, वक्ता, अभिनेता तथा दूसरे कलाकार सड़कों, चौकों, और चौराहों में अपने गुण को प्रदर्शित कर रहे थे। बोलते फ़िल्म सड़कों की दीवारों पर दिखलाये जा रहे थे। लाउड-स्पीकर से सारे शहर में संगीत ध्वनि सुनाई पड़ती थी।

कृषि-विज्ञान में क्रान्ति पैदा करनेवाला **बीजसंस्कार** (Vernalization) का आचार्य **अकदमिक लिसेन्को, नोवोउक्रइन्का** के निर्वाचन-क्षेत्र से संघ-सोवियत् की सदस्यता के लिए खड़ा हुआ था। दूर दूर के गाँवों के

कोल्खोज़ी किसान रात रहते ही जाग उठे थे; और हर एक चाहता था कि बैलेट-बक्स पर पहले वही पहुँचे।

***   ***

१२ दिसंबर को निर्वाचन का प्रबंध बड़े विशाल पैमाने पर किया गया था। हर एक कस्बे, शहर, गाँव में दौड़ती ट्रेनों, चलते जहाज़ों, पनडुब्बियों, अस्पतालों, सभी जगहों पर वोट देने का प्रबंध हुआ था। वोटरों में पैदल, मोटर, तथा दूसरी साधारण सवारियों के अलावा कितने ही स्कीइस (बर्फ़ पर फिसलने का लकड़ी का जूता) पर आये थे, कितने ही घोड़ों पर, कितने ही बारहसिंघों और ऊँटों पर, कितने ही बैलगाड़ियों पर। उनमें थे कमकर, कोल्खोज़ी किसान, विद्यार्थी, लाल सैनिक, घर की औरतें, वैज्ञानिक, कलाकार, बूढ़े और जवान। नगरों में तीर के निशान से निर्वाचन-स्थान की ओर संकेत किया गया था। निर्वाचन-घर बिजली की रोशनी तथा दूसरी तरह से खूब सजाये गये थे! ऐसे निर्वाचन-स्थानों की संख्या थी डेढ़ लाख। निर्वाचन-स्थानों पर बच्चे वाली माँओं के सुभीते के लिए अस्थायी बच्चेखाने बनाये गये थे। बूढ़ों और बीमारों के लिए सवारी का प्रबन्ध किया गया था।

***   ***

मास्को—

क्रेमलिन् की घड़ी ने ६ बजाया। उसी समय मास्को नगर के १३०० निर्वाचन-स्थानों के दरवाज़े खोल दिये गये। हर एक निर्वाचन-स्थान पर सैकड़ों आदमी पहले से ही आ कर इन्तज़ार कर रहे थे। कोई कोई बहादुर तो रात के तीन बजे ही से आकर धरना दिये हुये थे। बोगुस्लाव्स्की वोटर मोलोतोफ़ निर्वाचन-क्षेत्र के ९३वें स्थान पर ३ बजे से भी पहले पहुँचा था। अध्यक्ष ने पूछा—'इतना सवेरे क्यों? तुम्हें ३ घंटे से ज्यादा इंतजार करना पड़ेगा।'

'तीन घंटा! इससे क्या! मैं तो इस सुखमय दिन की महीनों से प्रतीक्षा कर रहा था। मैं ही अकेला नहीं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र में वोटरों की विशेष तौर से भीड़ लगी हुई थी। स्तालिन् को वोट देने के लिए सारा देश तैयार था लेकिन यह सौभाग्य मास्को के स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र को ही प्राप्त हुआ। स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र के वोटर अनुभव कर रहे थे, कि सारे देश की आँखें उनकी ओर लगी हुई हैं। जो लोग निर्वाचन-स्थान पर ज़रा देर से पहुँचे वे इस के लिए अपने पड़ोसी से क्षमा माँगते थे। वोट देने का समय ६ बजे सुबह से मध्य-रात्रि तक था। इस निर्वाचन-क्षेत्र के ७५वें निर्वाचन-स्थान में सौ सैकड़े वोटरों ने अपना वोट दे दिया था। दूसरे निर्वाचन-क्षेत्रों में भी यही बात थी।

*** ***

गोर्की—

गोर्की नगर के हर एक निर्वाचन-स्थान में दरवाज़ा खुलने से पहले ही ढाई सौ से ४०० तक आदमी इंतज़ार में खड़े थे। ५४ वर्ष का कमकर **अलेख़ेइ गुरेयेफ़्** पहला आदमी था, जिसने ८१ वें निर्वाचन-स्थान में सर्व प्रथम वोट दिया। उसने कहा—'३८ साल से मैं स्वर्मोवो में काम कर रहा हूँ। मेरे सामने ही शहर बढ़ा और मेरी आँखों के देखते देखते इसकी कायापलट हो गई। आज यह एक स्वच्छ सम्मार्जित नगर है।'

*** ***

तुर्कमानिया—

उस दिन तुर्कमानिया के मेघ-रहित आकाश में सूरज बड़ी चमक-दमक के साथ उगा था। **अश्काबाद** की सड़कें रंग-बिरंगी पोशाक पहने स्त्री-पुरुषों से भरी थीं। किरोफ़्-कोल्ख़ोज़ के चरवाहों के दो परिवार अपनी चरागाहों से ऊँटों पर चढ़ कर गाँव को लौटे। सखत, मुरादोफ़् और अता-

कारा चरवाहों ने कहा—'हम अपने मित्र साथी **अन्द्रेयेफ़्** को वोट देंगे और फिर जल्दी लौट जायँगे। दूसरे चरवाहे बड़े भारी गल्लों को चरा रहे हैं और कराकेर में हमारे लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वहाँ तक पहुँचने में बड़ा समय लगता है, हमें तुरन्त पीछे लौटना है; जिसमें कि वह भी आकर वोट दे सकें।'

*** ***

सोवियत् के अन्तिम उत्तर वाले निर्वाचन-स्थान रुदोल्फ़्-द्वीप में ६३ वोटरों ने वोट दिया। विमान-संचालक लेवानेव्स्की—जो उत्तरी ध्रुव-प्रदेश में कहीं गुम हो गया था—की खोज में निकली मुहिम के सरदार तथा सोवियत्-संघ-वीर शेवेलोफ़् ने ठीक ६ बजे निर्वाचन-घर का द्वार खोला। वोट के समाप्त होने पर द्वीप-वासियों ने प्रदर्शन किया और देश के सम्मान में हुरा का नारा और बन्दूक का फैर किया गया, जिससे ध्रुव-प्रदेश की दीर्घ रात्रि की वह शान्ति भंग हो गई।

*** ***

सख़ालिन्—

सख़ालिन् द्वीप के बहुत से रास्तों को बर्फ़ ने बन्द कर दिया था; और दूर के वोटरों को निर्वाचन-स्थान पर पहुँचने में बड़ी दिक्कत होने वाली थी। रास्ते की बर्फ़ साफ़ करने का प्रबंध बड़े संगठित रूप से किया गया था; और वोटरों को लाने के लिए मोटरों का इन्तज़ाम था।

उत्तरी सिबेरिया में कितने ही वोटरों को ३० से ६० मील तक चल कर अम्दर्या के निर्वाचन-स्थान में पहुँचना पड़ा। नेन्स् के रहनेवालों का एक समुदाय तो कुत्तों के स्लेज (बेपहियों की गाड़ी) में ६० मील चल कर आया था।

*** ***

सद्को, मलिगिन् और सिदोफ़् नामक वर्फ़ काटनेवाले जहाज़ों के आरोहियों ने उत्तरी अक्षांश के ७८ डिग्री १० मिनट स्थान में वोट दिया। जाड़े के कारण उत्तरी महासमुद्र के पानी के साथ जम कर ये जहाज़ रुके हुए थे। सद्को जहाज़ को उन्होंने अपना निर्वाचन-स्थान वनाया।

*** ***

द्नियेप्रोपेत्रोव्स्क नगर के ६३ वें निर्वाचन-स्थान में फ़ैक्टरी स्कूल के एक विद्यार्थी **ग्रिगोरी प्रुद्निकोफ़्** ने वोट दिया। उसने वड़े अभिमान से कहा—"कैसा संयोग है, आज ही मेरा जन्म-दिन है और आज ही मैं १८ वर्ष का हुआ।' ८० वर्ष के करीव के दो वूढ़े—वूढ़ी उसी निर्वाचन-स्थान पर मोटर द्वारा लाये गये थे। उन्होंने कहा—'साथी स्तालिन् को अनेक धन्यवाद! जो हमारे जैसे वूढ़ों के लिए इतना ख़याल और सन्मान करते हैं।'

कियेफ़् नगर के १२०वें निर्वाचन-स्थान में ७३ वर्ष की वूढ़ी लोपातिना ३ वजे रात ही को पहुँची, कि जिसमें पहला वोट उसीका हो; लेकिन वहाँ उसने एक तरुण कमकर विज़ुकोव्स्की को पहले ही से डटा पाया। थोड़ी विनती करने पर तरुण ने आयु का ख़याल किया और वूढ़ी औरत को सर्व-प्रथम वोट देने का अवसर दिया।

गाँवों के लिए तो चुनाव मेला-त्योहार वन गया था। **किर्गिज़िया** प्रजातन्त्र के **काराकोल्** ज़िले में **कज़ल् चेल्येक्-कोल्ख़ोज़्** है। वहाँ चुनाव के दिन कितनी ही जोड़ियाँ मौज में आकर नाच रही थीं। वग़ल के एक कमरे में किसानों की मंडली ग्रामीण गायक **तुज़े तुर्गम्वयेफ़्** का गान सुन रही थी। सव से पहले वोट देनेवाली थी एक किर्ग़िज़ औरत **सेइख़ान् अलीयेवा**। उसने कहा—'हमने दरिद्री तम्वू और ख़ानावदोशों का जीवन छोड़ दिया और सुखपूर्ण नये जीवन का आरंभ किया है। अपने उम्मेद-वारों के लिए वोट क्या देना है, अपने सुख और शान्ति के लिए वोट देना।'

दोन् तटवर्ती कसाक् गाँव में उस दिन वड़ा ज़ोर था। कसाक् स्त्री-पुरुष एक दूसरे से होड़ लगाये हुए थे, कि कौन पहले अपने देश के पुत्र फ़ोल्-स्किल्कोफ़् और प्रसिद्ध कसाक लेखक मिखाइल शोलोखोफ़् को वोट देगा। सारे गाँव में गाने की ध्वनि सुनाई देती थी—

मृदु समीर धीरे से वहती,
उपवन के वृक्षों में हो।
क्या आश्चर्य मौज में यदि हम,
इस सुखमय उत्सव-दिन में।

अस्पतालों और प्रसूति-गृहों में बीमारों के लिए वोट का विशेष प्रकार से प्रवन्ध किया गया था। इर्कुत्स्क (वैकाल झील के तट पर सिवेरिया में) के एक प्रसूति-गृह में रहती अन्तोनिना रुदुख़ ने कहा—'मेरे जीवन का यह सवसे वड़ा आनन्दमय दिन है। मैंने आज ही एक कन्या प्रसव की और आज ही मैंने अपना वोट महासोवियत् के योग्य उम्मेदवारों को दिया। मेरी कन्या के जीवन का कितना सुखमय भविष्य है! उसका जन्म-दिन होगा एक अविस्मरणीय त्योहार का दिन।'

*** ***

जिस वक्त चुनाव के लिए घोर प्रचार हो रहा था, उसी वक्त दिसम्वर की पहली तारीख़ से १० दिन के लिए सभी फ़ैक्टरियों, और कारख़ानों, में अधिक मात्रा में चीज़ें तैयार करने के लिए ज़वर्दस्त होड़ लगी हुई थी। दोन्-वास की कोयले की खानों में ११ दिसंवर को २,३२,१६५ टन कोयला निकला था जो कि योजना से १ सैकड़ा ज़्यादा था। १२ दिसंवर को वहाँ २,४६,७०३ टन कोयला निकाला गया अर्थात् योजना से ७·६ सैकड़ा ज़्यादा। अलग अलग खानों के लेने पर तो कितनों ने अपने हिस्से के कामको वहुत ज़्यादा मात्रा में पूरा किया। इलिच् की खान ने योजना से ४५·४ सैकड़ा ज़्यादा कोयला निकाला। शास्ती-कोल्-ट्रस्ट ने १३·७ सैकड़ा ज़्यादा।

व्यक्तियों को लेने पर कितने ही खनकों ने अपने हिस्से को कई गुने के रूप में पूरा किया। **ओर्जोनीकिद्ज़े-ट्रस्ट** के एक खनक **सोलोगुब्** ने चार सहायकों की मदद से ४० गुना अधिक कोयला निकाला। उसी खान में एक दूसरे खनक कोब्नोफ़् ने एक सहायक की मदद से २२ गुना से भी अधिक अपने काम को पूरा किया।

मास्को के हँसुआ-हथौड़ा-लोहे के कारख़ाने ने उपज के लिए कई नये रेकार्ड क़ायम किये। एरकिन् ने प्रति वर्गमीतर गर्माने के तल पर ६॥ टन .फौलाद तैयार की; और प्रूज़ीनिन् ने ६·१ टन। बिजली के भट्ठे पर काम करते मोरोज़ोफ़् ने २२ टन .फौलाद तैयार किया, हालाँ कि योजना के मुताबिक १२ टन हीं काफ़ी था।

मग्नीतोगोर्स्क के स्तालिन्-लोह-फ़ौलाद-कारख़ाने में प्रथम खुले भटठे ने २६७० टन की जगह ३०१६ टन .फौलाद तैयार किया। .फौलाद के कमकर कोलेसोफ़् ने ६·३७ टन और कोलोद्यज्नी ने ६·०८ टन फ़ौलाद प्रति-वर्गमीतर तैयार की। दोन्बास के एक लोहे के कारख़ाने में अमोसोफ़् ने ११·३ टन फ़ौलाद तैयार की; हालाँ कि उस भट्ठे की ताक़त ७·७ टन ही तक मानी जाती थी। उसी दिन (१२ दिसंबर) ४ नम्बर के पिघलाऊ भट्ठे ने अपने साल के प्रोग्राम को ही पूरा नहीं किया, बल्कि उससे १३००० टन अधिक लोहा दिया। गोर्की प्रान्त की पचास मिलों, कारख़ानों और औद्योगिक-सहयोग-समितियों ने १२ दिसंबर को ही साल का प्रोग्राम ख़तम कर दिया।

करेलिया की लकड़ी काटनेवाली प्रसिद्ध महिला कोस्तिना ने अपने पिता के साथ कटाई करते हुए उस दिन अपने हिस्से के काम को ८ गुना से भी ज़्यादा पूरा किया। रेलवे में भी नये रेकार्ड स्थापित हुए। दक्षिण दोनेस् रेलवे के एक इंजन-ड्राइवर मत्वेयेंको ने एक भारी ट्रेन को २६ किलो-मीतर की जगह ६२·२ किलोमीतर घंटे की चाल से दौड़ाया।

***   ***

उपज में ही नहीं, विभाजन में भी १२ दिसंबर को कितनी ही दुकानों और भंडारों ने पहले के रेकार्ड तोड़ दिये। १० दिसंबर को प्रथम **गस्त्रोनोम्**-भंडार ने ३ लाख रूवल की जगह ३,४६,००० रूवल का सामान वेचा। ११ दिसंबर को उसने ४,४२,००० रूवल का सामान वेचा। १२ दिसंबर को भंडार से पता लगाने पर मालूम हुआ कि पिछले दो दिनों की विक्री के लिए उसने अच्छे किस्म के १६५ टन माल मँगवाये थे, जिनमें नफ़ीस भोजन, केक, मिश्री, फल थे। उन दो दिनों में डेढ़ लाख खरीदें हुईं। डिलेवरी विभाग ने ३५ हज़ार की जगह ८५ हज़ार रूवल की चीज़ें ग्राहकों के पास भेजीं। शम्पेन तथा दूसरी अच्छी जाति की शराव की वहुत माँग थी। १,३०,००० से अधिक नारंगियाँ फल-विभाग से वेची गईं थीं। मास्को के भोजन-भंडारों के विक्रयाध्यक्ष **गुत्कोफ़्** के कथनानुसार ११ दिसंबर को २२ सैकड़ा और १२ दिसंबर को मामूल से ३२ सैकड़ा ज़्यादा विक्री हुई। सड़कों और चौरस्तों की पगडंडियों पर खड़ी दुकान्चियों में भी उस दिन वड़े ज़ोर की विक्री हुई थी।

गोरी—

स्तालिन् की जन्म-नगरी गोरी में चुनाव के दिन निर्वाचन-गृह वड़ी अच्छी तरह सजाया गया था। युवक युवतियाँ चारों ओर टहल रही थीं। स्कूल के विद्यार्थी और वालचर फाटक पर खड़े हुए हसरत भरी निगाह से वोट के लिए जानेवाले, नर-नारियों की ओर देख रहे थे। वेचारे अभी १८ वर्ष के नहीं हो सके थे। नौजवान ज़्यादातर उन जगहों पर भीड़ लगाये हुए थे, जहाँ पर भिन्न भिन्न प्रकार के जय-शब्द, साइन-वोर्ड और स्तालिन् के चित्र टँगे थे।

गुर्जी (जार्जिया) के **कर्तालिनिया** के इस छोटे से पहाड़ी शहर में स्तालिन् का चित्र लोगों के दिल में अद्भुत् भाव पैदा करता था। स्तालिन् यहीं पैदा हुआ था, इसी गोरी में वड़ा हुआ और यहीं उसने शिक्षा

पाई। यहाँ की हर एक चीज़ उसके यौवन की स्मृतियों से संबंध रखती है। कृषि-शिक्षणालय-भवन—जहाँ कि नगर का तीसरा निर्वाचन स्थान है—के दरवाज़े पर एक तख़्ती लगी हुई है; जिसपर लिखा है—"यहीं भूत-पूर्व मिश्नरी स्कूल में महान् स्तालिन् ने १ सितंबर सन् १८८८ से १ जुलाई १८९४ तक शिक्षा पाई थी।"

जिन कमरों में नगर-निवासी और कोल्ख़ोज़ी किसान वोट दे रहे हैं, उन्हीं की बग़ल में दो कमरे हैं। इन्हीमें बैठकर वह तरुण पढ़ा करता था जो कि अब सोवियत् जनता का शिक्षक और मार्ग-दर्शक है। आजकल शिक्षणालय का पुस्तकालय इन्हीं कमरों में है। स्तालिन् के सम्बन्ध की कितनी ही चीज़ों की इन कमरों में आजकल प्रदर्शिनी की गई है। दीवारों पर योसेफ़् विसारियोनोविच् के विद्यार्थी जीवन से संबंध रखनेवाले हस्तलेख और फोटोग्राफ़ टँगे हुए हैं। उसकी बग़ल में एक दूसरा क्लास-रूम है, जिसमें एक देवदार की शाखा को गाड़ कर फूल, खिलौने तथा जलते हुए प्रदीपों से सजाया गया है। माँ-बाप जब वोट देने के लिए जाते हैं, तो अपने बच्चों को यहीं खेलने के लिए छोड़ जाते हैं।

सोवियत् जनता के ज्येष्ठ प्रतिनिधि के नाम के साथ गोरी की हर एक चीज़ सम्बद्ध है। स्तख़ानोवी कोल्ख़ोज़ी औरत सद्गश्विली और पार्टी के मेम्बर यग्नतश्विली को वोट देते वक्त गोरी का हर एक कोल्ख़ोज़ी किसान और कमकर समझ रहा था कि वह पार्टी के आदर्श के लिए और स्तालिन् के आदर्श के लिए वोट दे रहा है।

जिस घर में स्तालिन् पैदा हुआ, उसमें अब म्युज़ियम है। उस के पास के निर्वाचन-स्थान में ६ बजे सवेरे से पहले ही से वागवुस्तानी कोल्ख़ोज़ के वोटरों ने भीड़ लगा रखी थी। एक बढ़ी औरत निर्वाचन-स्थान में आई और उसने अध्यक्ष से कहा कि उसका ९० वर्ष का अन्धा पति वोट देने के लिए आने की ज़िद कर रहा है। उसके लिए मोटर भेजी गई। गुलिश्विली नामक एक स्त्री ने बड़े गंभीर स्वर में अध्यक्ष से कहा—

"मेनशेविकों ने मेरे बेटे को मार डाला था, और मैं अंधी हो गई लेकिन अन्धापन मुझे अपने कर्तव्य पालन से नहीं रोक सकता।"

उसी निर्वाचन-स्थान में मेलीयेज् सकायेफ् नामक कोल्खोज़ी किसान बड़े सवेरे पहुँचा। वह अपने गाँव नादरवाज़ेवी से एक दिन पहले ही चला था। वहीं से अपने वोट का प्रमाण-पत्र भी लेता आया था। शहर में पहुँचने पर सब से पहले वह निर्वाचन-स्थान में वोट देने गया। किसान की उम्र ८० वर्ष की थी। गेशुती गाँव के अध्यापक तथा निर्वाचन-कमीशन के सदस्य ग्रीगोरी ग्लुर्ज़िद्ज़े ने कहा—"देखिए, नौजवान कितना आनंद मना रहे हैं। सुनिए उनके गीतों को और ज़रा देखिए तो उनके नाच को। अगर हम पहले की पीढ़ियों ने पहाड़ को हिला दिया तो ये सुखी नौजवान क्या कर डालेंगे, यह सोच कर कितना आनन्द आता है।"

महान् नेता की जन्म-नगरी पर निरभ्र आकाश में तारे खिले हुए थे। पर्वत की मन्द हवा से मिश्रित हो कर कर्तलिनियों के मर्दाने संगीत की ध्वनि सुनने में बड़ी मधुर मालूम होती थी। वोटर कभी के अपना कर्तव्य पालन कर चुके थे; लेकिन उनका उत्सव जारी था। पहाड़ के ऊँचे भाग पर स्तालिन् का विशाल चित्र बिजली द्वारा प्रकाशित किया गया था। उसे दूर से देखने पर मालूम होता था कि एक पहाड़ी बाज़ अपनी जन्मभूमि के ऊपर चक्कर काट रहा है।

२०—निर्वाचन-फल

मास्को के स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र का निर्वाचन-कमीशन १२ दिसंवर की आधी रात के बाद निर्वाचन-फल निकालने में तत्पर हुआ। महा सोवियत् के प्रथम सदस्य तवारिश् स्तालिन् यहीं से खड़े हुए थे। कमीशन के मेंबर लोग वोटों के गिनने में व्यस्त थे। जब कमीशन के चेयरमैन विनोग्रादोफ़् ने परिणाम सुनाया और 'तवारिश् स्तालिन् स०स०स०र० की महासोवियत् के सदस्य चुने गये'—घोषित किया तो लोगों ने देर तक नारे लगाये। चेयरमैन ने कहा—तवारिश् स्तालिन् का महासोवियत् का सदस्य चुना जाना सिर्फ हमारे स्तालिन् ज़िले के वोटरों के भाव को ही प्रकाशित करना नहीं बल्कि यह सारी लाल राजधानी (मास्को) नहीं, नहीं, हमारी सारी बहुकरोड़ी जनता के अभिप्राय का प्रकाशित करना है।

गुप्त पुर्जियों में यद्यपि चिह्न भर कर देना ही ज़रूरी था, लेकिन कितने ही वोटर अपने हृदय के उद्गार लिखने से बाज़ न आये। उनमें से कुछ के नमूने सुनिए—

"अपने प्रिय स्तालिन् के लिए मैं वोट दे रहा हूँ।"

'बड़े हर्ष के साथ मैं साथी स्तालिन् की उम्मेदवारी के लिए वोट दे रहा हूँ।'

'प्रिय साथी स्तालिन्, हम—जनता और उसके शिक्षित समाज—पर विश्वास करने के लिए आपको धन्यवाद। हम कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे। तुम्हारे आदेशानुसार और सोवियत्संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की **केन्द्रीय** कमेटी के आदेशानुसार हम सभी कठिनाइयों को पार करेंगे; और साम्यवाद के निर्माण में आनेवाली सभी बाधाओं को दूर फेंक देंगे।'

१२ दिसंवर को निर्वाचन और उसका परिणाम सोवियत्-इतिहास में

हमेशा के लिए स्मरणीय बात रहेगी। इस निर्वाचन ने साबित कर दिया कि जो पार्टी सोवियत्-भूमि का नेतृत्व कर रही है, वह जनता की कितनी विश्वास-पात्र है। कुल वोटरों की संख्या थी ९,३६,३९,४७८ जिनमें ९,०३,१९,३४६ अर्थात् ९६·५ सैकड़ा लोग वोट देने गये। इसकी आप

देश तथा निर्वाचन सन्	जन-संख्या	वोटर-संख्या	जन-संख्या प्रतिशत	वोट दिया	प्रतिशत वोटर
पोलैंड १९३५	३,३४,००,०००	१,६२,८२,३४७	४८·८	७५,७६,६८६	४६·६
जापान १९३७	६,९२,५१,२६५	१,४६,१८,२९८	२१·१	१,०२,०४,१२७	६९·९
इंग्लैंड १९३५	४,४९,३७,४४४	३,०५,६२,७७४	६८·१	२,२०,०१,८३७	७१·९
जर्मनी १९३२	६,२४,१०,६००	४,४३,७३,७००	७१·२	३,५७,५९,१००	८०·६
यु० रा० अमेरिका (प्रेसिडेंट) १९३६	१२,८४,२९,०००	५,५०,००,०००	४२·८	४,५८,१२,१५५	८३·३
फ्रांस १९३६	४,१९,०५,९६८	१,१७,६८,४९१	२८·२	९९,३८,०५८	८३·९
स०स०स०र० १२ दि० १९३७	१६,९०,००,०००	९,३६,३९,४७८	५५·४	९,०३,१९,३४६	९६·५

२०—निर्वाचन-फल

मास्को के स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र का निर्वाचन-कमीशन १२ दिसंवर की आधी रात के बाद निर्वाचन-फल निकालने में तत्पर हुआ। महा सोवियत् के प्रथम सदस्य तवारिश् स्तालिन् यहीं से खड़े हुए थे। कमीशन के मेंबर लोग वोटों के गिनने में व्यस्त थे। जब कमीशन के चेयरमैन विनोग्रादोफ़् ने परिणाम सुनाया और 'तवारिश् स्तालिन् स०स०स०र० की महासोवियत् के सदस्य चुने गये'—घोषित किया तो लोगों ने देर तक नारे लगाये। चेयरमैन ने कहा—तवारिश् स्तालिन् का महासोवियत् का सदस्य चुना जाना सिर्फ हमारे स्तालिन् ज़िले के वोटरों के भाव को ही प्रकाशित करना नहीं बल्कि यह सारी लाल राजधानी (मास्को) नहीं, नहीं, हमारी सारी बहुकरोड़ी जनता के अभिप्राय का प्रकाशित करना है।

गुप्त पुर्जियों में यद्यपि चिह्न भर कर देना ही ज़रूरी था, लेकिन कितने ही वोटर अपने हृदय के उद्‌गार लिखने से बाज़ न आये। उनमें से कुछ के नमूने सुनिए—

"अपने प्रिय स्तालिन् के लिए मैं वोट दे रहा हूँ।"

'बड़े हर्ष के साथ मैं साथी स्तालिन् की उम्मेदवारी के लिए वोट दे रहा हूँ।'

'प्रिय साथी स्तालिन्, हम—जनता और उसके शिक्षित समाज—पर विश्वास करने के लिए आपको धन्यवाद। हम कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे। तुम्हारे आदेशानुसार और सोवियत्‌संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की **केन्द्रीय** कमेटी के आदेशानुसार हम सभी कठिनाइयों को पार करेंगे; और साम्यवाद के निर्माण में आनेवाली सभी बाधाओं को दूर फेंक देंगे।'

१२ दिसंबर को निर्वाचन और उसका परिणाम सोवियत्-इतिहास में

हमेशा के लिए स्मरणीय बात रहेगी। इस निर्वाचन ने साबित कर दिया कि जो पार्टी सोवियत्-भूमि का नेतृत्व कर रही है, वह जनता की कितनी विश्वास-पात्र है। कुल वोटरों की संख्या थी ९,३६,३९,४७८ जिनमें ९,०३,१९,३४६ अर्थात् ९६·५ सैकड़ा लोग वोट देने गये। इसकी आप

देश तथा निर्वाचन सन्	जन-संख्या	वोटर-संख्या	जन-संख्या प्रतिशत	वोट दिया	प्रतिशत वोटर
पोलैंड १९३५	३,३४,००,०००	१,६२,८२,३४७	४८·८	७५,७६,६८६	४६·६
जापान १९३७	६,९२,५१,२६५	१,४६,१८,२९८	२१·१	१,०२,०४,१२७	६९·९
इंग्लैंड १९३५	४,४९,३७,४४४	३,०५,६२,७७४	६८·१	२,२०,०१,८३७	७१·९
जर्मनी १९३२	६,२४,१०,६००	४,४३,७३,७००	७१·२	३,५७,५९,१००	८०·६
यु० रा० अमेरिका (प्रेसिडेंट) १९३६	१२,८४,२९,०००	५,५०,००,०००	४२·८	४,५८,१२,१५५	८३·३
फ्रांस १९३६	४,१९,०५,९६८	१,१७,६८,४९१	२८·२	९९,३८,०५८	८३·९
स०स०स०र० १२ दि० १९३७	१६,९०,००,०००	९,३६,३९,४७८	५५·४	९,०३,१९,३४६	९६·५

दुनिया के और चुनावों से मुकाबला कीजिए तब आपको सोवियत् चुनाव की विशेषता मालूम होगी—

इंगलैंड में जो अनुदार-दल शासन कर रहा है, उसे ५३·६ सैकड़े ही वोट मिले थे। युक्त राष्ट्र अमेरिका में १९३६ के प्रेसिडेंट के चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी को कुल वोट का ६०·५ सैकड़ा मिला था; लेकिन सोवियत् चुनाव में शासक पार्टी को १०० सैकड़ा वोट मिले।

सोवियत् चुनाव के बारे में व्याख्यान देते हुए स्तालिन् ने कहा था—'हमारे यहाँ न पूँजीपति हैं, न ज़मींदार। इसीलिए धनवालों का निर्धनों पर कोई दबाव नहीं। हमारे यहाँ कमकरों किसानों और बुद्धिजीवियों के सहयोग की अवस्था में चुनाव होते हैं। परस्पर विश्वास की अवस्था में या मैं कहूँ परस्पर की मित्रता की अवस्था में। क्योंकि हमारे यहाँ न पूँजीपति हैं; न ज़मींदार हैं, न शोषण है। और यथार्थतः यहाँ कोई ऐसा नहीं है, जो लोगों पर उनकी इच्छा के विरुद्ध दबाव डाल सके। इसीलिए हमारे चुनाव ही संसार में दरअसल स्वतंत्र और प्रजासत्तात्मक चुनाव हैं।'

वोट के अधिकार देने में दूसरे देशों ने कई तरह की बाधाएँ डाल रक्खी हैं। सोवियत् के नये विधान में न स्त्री-पुरुष का भेद है, न जाति का, न धर्म का, न शिक्षा संबंधी योग्यता का, न सम्पत्ति का, न सामाजिक स्थिति का। वहाँ सिर्फ १८ वर्ष की अवस्था से ज़्यादा होना चाहिए, बस, इतना ही बस है। लेकिन दूसरे देशों में क्या हालत है? जर्मनी में २० वर्ष के ऊपर के ही आदमी वोट दे सकते हैं और उन में भी वे ही जो 'आर्य' हैं। इंगलैंड में २१ वर्ष के बाद वोट का अधिकार मिलता है। फ़्रांस में भी २१ साल के बाद; लेकिन सिर्फ मर्दों को, औरतों को नहीं।

वोट की योग्यता के लिए इतना कम निर्बन्ध होने पर भी जर्मनी, अमेरिका और इंगलैंड की अपेक्षा सोवियत् में प्रतिशत कम होने का कारण यह है, कि इंगलैंड और जर्मनी में बच्चों और तरुणों की संख्या प्रतिशतक बहुत कम है। उन देशों में लड़कों की पैदाइश ख़ास कर के युद्ध के

बाद बहुत कम हो गई है। १९१० में जर्मनी में २० वर्ष के कम के बच्चे और तरुण २,५१,६०,००० (अर्थात् ४३·५ प्रतिशतक) थे और १९३३ में १,८०,३७,००० (२८·८ सैकड़ा) लेकिन सोवियत् में बच्चों की पैदाइश ज़्यादा है।

***   ***

प्रजातंत्र	वोटर	वोट दिया	प्रति शत
स०स०स०र०	९,३६,३९,४७८	९,०३,१९,३४६	९६·५
१—रूसी संयुक्त स०स०र०	६,०३,५१,६५६	५,८२,५७,२४५	९६·५
२—उक्रइन् स०स०र०	१,७५,३०,७५१	१,७०,९८,१००	९७·५
३—बेलोरूसी स०स०र०	३०,०७,३४२	२९,२६,७७१	९७·३
४—आजुर्बाइजान् स०स०र०	१६,४८,३५३	१५,७४,७९२	९५·५
५—गुर्जी स०स०र०	१९,४०,५४७	१८,६१,१७५	९५·९
६—अर्मनी स०स०र०	६,२०,२२०	५,९०,६४१	९५·२
७—तुर्कमानिया स०स०र०	६,५२,५१५	६,२१,८४७	९५·३
८—उज़बेक् स०स०र०	३५,४८,४४१	३३,१६,४८१	९३·५
९—ताजिक स०स०र०	७,५१,७९८	७,१०,८७१	९४·६
१०—कज़ाक् स०स०र०	२७,८८,१४७	२६,१६,७७६	९३·९
११—किर्गिज़ स०स०र०	७,९६,४०८	७,४४,६४७	९३·१

मास्को नगर के वोटरों में से ९९·१३ प्रति सैकड़ा ने वोट दिया। मास्को प्रान्त में ९८ सैकड़ा। मिन्स्क नगर में वोट देनेवाले ९९·६ प्रति शत थे। लेनिनग्राद् में ९६·३, बाकू ९५·५, तिफलिस् (तृविलिसी) ९५·६ सैकड़ा।

महासोवियत् (**सोवियत्-पार्लियामेण्ट**) के दोनों भवनों (संघ-भवन और जातिक-भवन) में कुल मिलाकर ११४३ सदस्य हैं जिनमें ८५५

कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबर और २८८ ग़ैर मेंबर हैं। सदस्यों (देपुतात् या डिपुटी) में १८४ औरतें हैं और ६५६ मर्द।

सोवियत्-संघ में उपर्युक्त ११ सोवियत्-सोशलिस्ट-रिपब्लिक (संघ-प्रजातंत्र) हैं; जिन्हें स्वतंत्रता है कि जब चाहें तब संघ से अलग हो जायँ। रूसी, उज़बेक, यहूदी, आर्मेनियन, नेनेत्स आदि १७५ जातियाँ और कबीले सोवियत्-संघ के नागरिक हैं।

३३हज़ार सभाओं में किसानों और मज़दूरों, लाल-सैनिकों और प्रोफ़ेसरों ने स्तालिन् की उम्मेदवारी का प्रस्ताव पास किया था। पर्चियों में लोगों ने लिखा था—मैं अपना वोट ही नहीं दे रहा हूँ बल्कि ज़रूरत पड़ने पर साथी स्तालिन् के लिए अपना जीवन भी दे दूँगा।

मंत्रि-मंडल के एक सदस्य के लिए डाली गई एक पर्ची में लिखा था—'मेरे प्रिय साथी **मिकोयान्**! मैं तुम्हें अपना वोट बड़ी ख़ुशी के साथ दे रहा हूँ।' दूसरीं में लिखा था—"प्रतिक्रिया के सालों में ज़ारशाही के वर्षों में गृहयुद्ध के कठिन समयों में तुम कमकरों की आजादी के लिए लड़े, और आज हमारे सुख और बेहतर ज़िन्दगी के लिए अपना युद्ध जारी रखे हुए हो। महान् स्तालिन् के नज़दीकी सहकारी बोल्शेविक मिकोयान्! मैं तुम्हें अपना वोट ही नहीं दूँगा, बल्कि जीवन भी। चिरंजीव हमारा नेता पिता और गुरु योसेफ़् स्तालिन्। चिरंजीव हमारा प्यारा **मिकोयान्**।"

मार्शल **वोरोशिलोफ़्** (युद्धमंत्री) की सर्वप्रियता इसी से सिद्ध है कि **मिन्स्क** नगर—जहाँ से वह खड़ा हुआ था—के वोटरों में ९९·६ सैकड़े ने जाकर उसे वोट दिया।

ख़ारकोफ़् में तरुण वोटरों की संख्या सब से ज़्यादा थी, यह तरुणों की नगरी समझी जाती है। नगर की जन-संख्या के तीन चौथाई व्यक्ति क्रान्ति के बाद पैदा हुए और वहाँ के कारख़ानों में से $\frac{९}{१०}$ पिछले इतने ही दिनों में बने हैं। वहाँ के विश्वविद्यालय के छात्रावासों के विद्यार्थियों में दो मत हो गया था। एक ने प्रस्ताव किया कि जल्दी सो जाना चाहिए, कि जिसमें

"मेरा हृदय सारी सोवियत् जनता के लिए सन्मान और प्रेम से भर गया है; उस सोवियत् जनता के लिए जिसने कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबर और ग़ैर-मेम्बर उम्मेदवारों—जो कि देश के सर्वोत्तम व्यक्ति हैं—को चुन कर अपने राजनैतिक सुविचार का उत्तम परिचय दिया है। मेरा दिल, सोवियत् जनता की अग्रसेना महान् कम्युनिस्ट पार्टी और उसके यशस्वी नेता के प्रेम से भर गया है। मैं अपने जीवन और कार्य से यह सिद्ध करने की कोशिश करूँगी। मैं सोवियत् बच्चों और नौजवानों की माँ जैसी हितचिन्तन के लिए कितनी अधिक कृतज्ञ हूँ। इस हितचिन्तन के लिए मैंने सदा कृतज्ञता का अनुभव किया है और आज भी अपने दैनिक जीवन के कामों में कर रही हूँ।"

(२) मास्को के मशीन बनानेवाले एक कारख़ाने का एक बड़ा तेज़ कमकर गोरोफ़् सदस्य चुने जाने के बारे में अपनी कृतज्ञता निम्न शब्दों में प्रकट करता है—

"निर्वाचन के परिणाम ने मेरे दिल में ज़बर्दस्त उल्लास पैदा कर दिया है; और यशस्वी बोल्शेविक पार्टी तथा सारी पितृभूमि के लिए मेरे दिल में अभिमान भर दिया है। इसने हमारे राष्ट्र की राजनैतिक और नैतिक एकता का परिचय दे दिया। **लेनिन्** निर्वाचन-क्षेत्र के वोटरों ने सोवियत्-शक्ति की सर्वोच्च संस्था के लिए मुझे सदस्य चुना। सारे निर्वाचन के प्रचार के समय मैंने कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर और गैर-मेम्बर उम्मेदवारों में जनता का ज़बर्दस्त विश्वास देखा। कल मैंने सुदूर **व्लादिवोस्तोक्** तथा **गोर्की, लेनिन्ग्राद्** और **मास्को** से पचासों बधाई के तार पाये।

"जनता का विश्वासपात्र होने से बढ़कर जीवन में कोई आनंद नहीं। जो सन्मान मुझे प्रदान किया गया है, मैं कैसे अपने को उसके योग्य सिद्ध कर सकूँगा? महासोवियत् के लिए चुना जाना, जनता और ख़ास कर अपने निर्वाचकों के प्रति मेरे सिर पर एक बड़ा दायित्व है। वह मुझ

से आशा रखेंगे कि मैं अपने को श्रेष्ठ कमकर और राजनीतिज्ञ सिद्ध करूँ। स्तालिन् के परामर्शानुसार वह अपने भेजे गए सदस्यों से ज़रूर यह माँग करेंगे कि वह लेनिन् की तरह विचार में साफ़ और निश्चित, जनता के शत्रुओं के प्रति निर्दय, सच्चे और इन्साफ़-पसन्द राजनीतिज्ञ हों। एक सदस्य के तौर पर जनता को सदा प्यार करना मेरा ध्येय है। यही आदर्श है जिसकी प्राप्ति के लिए मैं निरन्तर प्रयत्न करूँगा।

"आज मैं उपज के एक नये रेकार्ड की स्थापना में लगा हूँ। ६ दिसम्बर को मैंने अपना काम ४५·८२ गुना किया था। मैं चाहता हूँ कि वहुत जल्द अपने उस रेकार्ड को मात करूँ। कारख़ाने के डाइरेक्टर की आज्ञा के अनुसार इंजीनियरों और यंत्रप्रवीणों का एक दल वनाया गया है, जो मेरे वताये अनुसार तीसरे नंवर की सारी वर्कशाप के लिए एक योजना वनाएँगे। मेरा इस वक्त सव से पहला काम है कि अगले महीनों में मेरा वर्कशाप प्रोग्राम को दूना पूरा करे।

"इस समस्या को हल करके हम लोग स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन (उपज को कई गुना वढ़ाने का आन्दोलन) को और आगे वढ़ाने में सफल होंगे और हमारे सभी कमकर काम की उपज को कई गुना वढ़ाने में कामयाव होंगे। यह राष्ट्र के लिए वहुत ही महत्त्वपूर्ण काम है; जैसा कि तवारिश् मोलोतोफ़् ने संकेत किया है—श्रम की उपज को वढ़ाना हमारे सामने सव से वड़ा प्रश्न है। पूँजीवाद और साम्यवाद के युद्ध का अन्तिम फ़ैसला इसी समस्या के हल करने पर निर्भर है।"

(३) प्रसिद्ध वैमानिक सोवियत्-संघ-वीर वर्द्दुकोफ़् ने अपने वोटरों को इस प्रकार धन्यवाद दिया—

"निर्वाचकों ने अपना इतना जवर्दस्त विश्वास प्रकट किया है, वह मेरे लिए सिर्फ़ सन्मान की ही वात नहीं, वल्कि एक भारी जिम्मेवारी भी है। मैं महान् स्तालिन् के इस वाक्य की सचाई और वुद्धिमत्ता को दिल से मानता हूँ; कि वोटरों और सदस्य का संवंध चुनाव के वाद ही ख़तम नहीं हो जाता।

स्तालिनीय· विधान—जो कि हमारे युग का सब से बड़ा विधान है—साफ़ शब्दों में कहता है कि जिस सदस्य ने अपने को अपने निर्वाचकों के विश्वास का पात्र नहीं सिद्ध किया, उसको सोवियत् से अवश्य लौटा लेना चाहिए।

"हमारे देश में सदस्य का नाम दिखावा भर नहीं है और न सजावट की चीज़ है। बल्कि सर्वप्रथम वह है सन्मान-पूर्वक मशक्कत करना तथा गंभीर बोल्शेविक सिद्धान्त के अनुसार निरन्तर उद्योगपरायण रहना, लेनिन् और स्तालिन् के आदर्श के लिए असीम लगन रखना। मैं जोर के साथ अपने निर्वाचकों—जिन्होंने कि मुझे महासोवियत् में अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा है—से कहूँगा कि वह ध्यान से देखते रहें कि मैंने कहाँ तक अपने को उनके विश्वास के योग्य सिद्ध किया और नियम पूर्वक मुझ से मेरे काम के बारे में जवाब-तलब करते रहें। और जब कभी मैं कोई भूल या ग़लती करूँ तो मुझे ख़बरदार करें। भूलिए नहीं, मेरे काम का अच्छा भला होना बहुत कुछ निर्भर करता है, आपके ऊपर। वह निर्भर करता है इस बात पर कि जनता की चतुराई और अनुभव से मुझे कितनी सहायता मिलती है।

"मैंने सारे उत्तरीय ध्रुव प्रदेश में स्तालिनीय मार्ग से हुई उस महान् उड़ान में भाग लिया था। मैंने स्तालिन् की आज्ञा से उस अत्यन्त कठिन उड़ान में भी भाग लिया जो सोवियत्-भमि से उत्तरी ध्रुव होकर युक्त राष्ट्र अमेरिका को हुई थी।

"अपने एक एक शब्द की जिम्मेवारी लेते हुए मैं घोषित करता हूँ कि अपनी समृद्धिशाली पितृभूमि में मैं उस स्तालिनीय मार्ग से—जो कि हमारे देश में साम्यवाद का महानिर्माण कर रहा है—एक जौ भर भी बिना इधर उधर हुए उसी तरह लगन से काम करूँगा, जैसे कि उस उड़ान के समय मैंने किया था। और यदि इस आदरणीय आदर्श के लिए मुझे प्राण भी देना हो तो मैं ज़रा भी हिचकिचाये बिना ख़ुशी से वैसा करूँगा।

"स०सं०स०र० की महान् सोवियत् का चुनाव हुआ है सोवियत् जनता की इच्छा से। इस सोवियत् का सदस्य होना बहुत भारी सन्मान है। ऐसा सन्मान जो मुझे अत्यन्त सन्तोष प्रदान करता है साथ ही सोवियत् का सदस्य होना एक बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। मैं उस ज़िम्मेवारी को स्तालिन् के बताये रास्ते से पूरा करूँगा।"

२१—महासोवियत् के कुछ सदस्य

द्युकानोफ़्—वह छोटे छोटे शब्दों में बड़ी सादगी के साथ किन्तु स्पष्ट बोलता है। उसके सारे शरीर से शान्ति और स्थिरता टपकती है। दिखावा उसमें छू तक नहीं गया है। ज़रा सा सिर एक तरफ़ झुकाये वह नगर की पार्टी कमेटी की कार्य-कारिणी के मेम्बरों की बात बड़े ध्यान से सुनता है; और वाद के समय उनका नेतृत्व और पथ-प्रदर्शन करता है; सब से आवश्यक अंश को झट से समझ कर काम करने लायक तरीक़े से बातों को संक्षिप्त कर देता है।

मीरोन् द्युकानोफ़् जब कोयलों की खान में एक खनक था, तब भी अपने साथी कमकरों की बातों को इसी तरह ध्यान तथा एकाग्रता से सुनता था। जब वह **इर्मिनो** खान (दोन्-बास्) के स्तालिन् चंदवक (Shaft) में कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन करता था, और जिस समय कि महत्त्वशाली स्तख़ानोफ़् आन्दोलन का जन्म हुआ, उस समय भी वह इसी तरह अपने साथियों की बातों को ध्यान से सुनता था। वह लोगों को सिखलाता है और दोहरी शक्ति से उनसे बहुत सी बातें सीखता है। वह अब भी सीधा सादा त्यागी पक्का बोल्शेविक है। अब भी वही **द्युकानोफ़्** है जिसने **अलेख़ेइ स्तख़ानोफ़्** को परख लिया और उसको सिखाया; उसके हृदय में बोल्शेविकों की ज्वाला जगा दी। मालूम होता है कि जैसे इस बात को युग बीत गये। इस बीच में छोटी-बड़ी अनेक समस्याएँ उसके सामने आईं। अभी दो ही वर्ष हुए, कि वह सर्वप्रथम **क्रेमलिन्** में आया और स्तालिन् ने उसकी बात को बड़े ध्यान से तथा उसे उत्साहित करते हुए सुना। द्युकानोफ़् ने कहा—"पहले हम ख़ुद ही कोयला काटते थे और ख़ुद ही ख़ाली जगह में थूनी लगाते थे; लेकिन अब हम ने काम को बाँट दिया है।"

साथी स्तालिन् बोल् उठे—"यही है सफलता की कुंजी!"

द्युकानोफ़् से पूछा गया—अपने नये ढंग के अनुसार जितनी मात्रा में वह कोयला निकाल रहे हैं, क्या उसको खान के ऊपर पहुँचाया ज़ा सकता है? ज़रा देर के लिए द्युकानोफ़् ठहर गया फिर उसने आहिस्ते से शान्ति पूर्वक कहा—"यह बिलकुल सम्भव है। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि यह सम्भव है।"

(घट्ठे पड़े हाथों को मेज की छोर पर रखे) ठिगना और गठीले वदन का द्युकानोफ़् स्तालिन् के सामने तिर्छे खड़ा था। स्तालिन् बड़े ग़ौर से सुन रहा था। यद्यपि द्युकानोफ़् की बात रुक रुक कर होती थी, वह उस खनक के संजीदे तथा जहाँ तहाँ कोयले की नीली धूल के दाग़ पड़े चेहरे की परीक्षा कर रहा था। स्तालिन् खड़ा हो गया और उसके साथ क्रेमलिन् के हाल में बैठी सारी जनता। इस बोल्शेविक—जिसने कि अलेक्सेइ स्तख़ानोफ़् को सिखा कर तैयार किया—के लिए प्रशंसासूचक नारे लगाने लगी। तवारिश् मोलोतोफ़् ने कहा—"कम्युनिस्ट द्युकानोफ़् ऐसे लोग ही स्तख़ानोफ़् आन्दोलन के सच्चे सूत्रधार हैं।"

मिरोन् द्युकानोफ़् (डिपुटी)

द्युकानोफ़् के अब तक के किये कामों ने उसे तैयार किया कि वह खान की खुदाई से चंदवक की कम्युनिस्ट पार्टी में आये। और वहाँ से नगरवाली

पार्टी का नेता बने। इन्हीं कामों ने उसमें वह योग्यता पैदा की कि उस का गौरव जनता की दृष्टि में बढ़ गया। लोगों का वह विश्वासपात्र बना और आज वह स०स०स०र० के महासोवियत् का सदस्य चुना गया। चुकानोफ़् में अपनी पार्टी के लिए बड़ी लगन है। जनता के शत्रुओं से वह अत्यन्त घृणा करता है। उसके काम में बोल्शेविक आग है। उसमें ज्ञान और संस्कृति की प्राप्ति के लिए न बुझनेवाली प्यास है।

वर्षों गुज़र गये, जब कि लेनिन् अपना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख 'होड़ को कैसे संगठित करना चाहिए?' लिख रहा था, उसी समय एक खेतिहर मज़दूर अपना गाँव **तरोयेरोज़् देस्त्वेन्स्कोये** को छोड़ कर मैदान में आया। वह पुराने घृणा के योग्य जीवन—जिसने उसके जैसे हज़ारों आदमियों के जीवन को पीस दिया, निर्जीव बना दिया—के ख़िलाफ़ लड़ने को निकला। क्रान्ति के युद्ध के समय वह वोल्गा प्रदेश में लड़ा। **चारित्सिन्** के प्रसिद्ध युद्ध में उसने भाग लिया। सफ़ेद **देश-द्रोहियों** के जेल की भयंकर साँसत को भी उसने सहा और चुपके से वहाँ से निकल कर फिर क्रान्ति के पक्ष में हथियार ले कूद पड़ा। ज़ार, ज़मींदार, और पूँजीपतियों के लिए उसकी घृणा ने उसमें वह साहस पैदा कर दिया था, कि वह दिलोजान से पुरानी रूढ़ियों, पुराने जीवन, पुरानी परिस्थिति को उखाड़ फेंकने के लिए कटिबद्ध हो गया था।

गृह-युद्ध समाप्त हो गया और अब साम्यवादियों को नव-निर्माण में लगना पड़ा।

उसका भाई तेरेन्ती पहले ही से कोयले की खान में काम करता था। वह चुकानोफ़् को अपने साथ इरमिनो खान में ले गया। यह १९२४ की बात है। पिंजड़ा मज़दूरों को लेकर बड़े वेग से चंदवक के पेंदी की ओर चला। चारों तरफ़ घुप अँधेरा था। पानी का 'टप टप' स्पष्ट सुनाई देता था। मीरोन् सिकुड़ कर अपने भाई से सट गया—'डर गया बचवा!'

'हाँ, ज़रूर डर गया था।'

तेरेन्ती अपने छोटे भाई को एक गलियारे में ले गया। चिराग़ की धीमी रोशनी में कोयले के काले स्तर को दिखलाकर उसने मीरोन् के हाथ में एक सूमा देकर कोयला खोदने की कला की बारहखड़ी आरंभ करवाई। पुराने खनक ने काले चमकीले कोयले के बारे में बड़े प्रेम से कहा—'यह जीवनदाता है!'

मीरोन् बड़े ध्यान से देख रहा था कि कैसे उसका भाई कोयले पर टूट रहा है।

३ सप्ताह बाद बड़े ने अपने छोटे भाई की तारीफ़ की—"तेरे पास खनकों जैसा मज़बूत और सधा हाथ है मीरोन्! हम तुझे पक्का खनक बनायेंगे।"

यह बात सच्ची निकली किन्तु उसको अपनी निरक्षरता के लिए बड़ी चिन्ता रहने लगी। वह सोचता था, कि उसमें और भी बड़ी बातों की योग्यता है, लेकिन निरक्षरता का अन्धकार उसे खान, देश और संसार तक पहुँचने देने में बाधक है।

द्युकानोफ़् ने इस कठिनाई का कैसे सामना किया, यह भी उसके चरित्र-बल की दृढ़ता को प्रकट करता है। उसे अपने छोटे से पुत्र—जो उस समय दूसरे दर्जे में पढ़ रहा था—से अक्षर सीखने में ज़रा भी लाज नहीं आई। यही नहीं, वह अपने लड़के के साथ स्कूल में जाने लगा। लड़का अगली जमात में बैठता था और बाप पीछे की जमात में। अपनी स्वाभाविक गंभीरता और सूक्ष्म चिन्तन के साथ द्युकानोफ़् अध्यापक की बातों को सुनता था और दूसरे बच्चों के साथ अपने पाठ को दोहराता था। द्युकानोफ़् लड़कों के चले जाने पर भी पीछे रह जाता था। अध्यापक उससे काग़ज़ के अक्षर कटवाता था और उन्हें मेज़ पर बिखेर देता था। फिर मीरोन् उन अक्षरों को जोड़ कर शब्द और वाक्य बनाता था।

जिस काम में वह एक बार हाथ लगाता उसे बिना पूरा किये दम नहीं लेता था। इसी तरह उसने कोयला काटने की मशीन की बारीकियों

को भी सीखा और उसकी पढ़ाई को ख़तम कर शिक्षित-खनक का प्रमाण-पत्र पाया।

जितना ही अधिक वह पढ़ता उतनी ही अधिक अध्ययन की चाह उसमें बढ़ती गई।

द्युकानोफ़् के पड़ोस में कम्युनिस्ट पार्टी का मेंबर एक इंजीनियर **पावेल् रसोख़िन्** रहता था। दोनों में परिचय हो गया। और फिर अकसर दोनों में गर्मागरम बहस छिड़ जाती। इंजीनियर ने कहा—"अब मीरोन् द्युका-नोफ़् को पार्टी का मेंबर बनना चाहिए।" लेकिन मिरोन् कहता था—"अभी मुझमें वैसी योग्यता नहीं आई है।" इंजीनियर उत्तेजित होकर कहता —"प्रकृति पहले ही से ठोक पीट कर तैयार बोल्शेविक नहीं पैदा करती, उनके लिए सब से ज़्यादा सख़्त और अति विचित्र स्कूल है पार्टी। वह शिक्षा दीक्षा दे कर के उन्हें पक्का बनाती है।"

रसोख़िन् का कहना ठीक था; इसे मीरोन् ने भी पार्टी में दाख़िल होने के बाद अनुभव किया।

मीरोन् ने जो कुछ पहले सीखा और जो कुछ पार्टी ने ज्ञान के प्रति उत्साह सिखलाया, उन्हें वह अपने पास रखना पसन्द नहीं करता था। वह अपने साथ खान के भीतर काम करनेवाले मज़दूरों और पास में रहनेवाले पड़ोसियों में भी वही उत्साह ज्ञान के लिए प्यास पैदा करने की कोशिश करता था। थोड़े ही दिनों में उसके प्रभाव में आकर उसका बड़ा भाई भी पार्टी का मेंबर हो गया।

खान के उदर में पहुँचकर वह खनकों को खोदने की मशीन के इस्ते-माल का ढंग बतलाता था। वहीं उसने नीली आँखों वाले एक लड़के को देख कर परख लिया कि इस पतले से कमकर में नई चीज़ पैदा करने की प्रतिभा है। लड़का खान में उसके साथ काम करता था और गाँव में उसके पड़ोस में रहता था। यही लड़का था **अलेख़ेइ स्तख़ानोफ़्**! बोल्शेविक् द्युकानोफ़् अलेख़ेइ के साथ खनकों की लालटेन ले पृथ्वी के उस अन्धकार-

पूर्ण उदर में उतरा और उस ऐतिहासिक रात (१९३५) को उस नौजवान के पथ को प्रकाशित कर दिया।

स्तख़ानोफ़् कोयला काटने में किसी से पीछे नहीं था। वह खोदने की मशीन को भी अच्छी तरह चलाना जानता था। उस वक्त तक कोयले की खानों में कायदा यह था कि एक आदमी खुद ही खनता था और कोयले के निकाल देने पर जिसमें ऊपर के बोझे से ज़मीन बैठ न जाय, लकड़ी की थूनी लगाता था। इस थूनी के लगाने का काम भी वही आदमी करता था। स्तख़ानोफ़् ने सोचा—मशीन से खोदने में थोड़े समय में हम कोयला तो काफ़ी निकाल लेते हैं; लेकिन थूनी लगाने में समय अधिक लगता है। उसने सोचा, अगर थूनी लगाने का काम दूसरे को दे दिया जाय तो खुदाई में जल्दी होगी। इस युक्ति से उस रात स्तख़ानोफ़् कई गुना अधिक कोयला खोदने में सफल हुआ। अब स्तख़ानोफ़् ने अपने गुरु से भी अधिक कोयला निकाल कर रख दिया।

३ दिन बाद द्युकानोफ़् ने स्तख़ानोफ़् के रेकार्ड को तोड़ दिया। इस की ख़बर खान के दूसरे हिस्सों में और फिर खान के बाहर बड़ी तेज़ी से फैली और शीघ्र ही स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन सारे देश में जंगल की आग की तरह फैल गया।

कुछ ही समय बाद नगर की कम्युनिस्ट पार्टी की कमेटी ने अपने वार्षिक अधिवेशन में द्युकानोफ़् को मंत्री बनाने का प्रस्ताव पेश किया। द्युकानोफ़् के लिए यह बड़ी भारी ज़िम्मेवारी की बात थी; लेकिन वह ज़िम्मेवारी से डरा नहीं। उसने कहा—"साथियो, क्या तुम समझते हो कि मैं इसे निबाह सकूँगा? क्या आप इतनी तेज़ी से मुझे ऊपर उठा कर जल्दी नहीं कर रहे हैं? नीचे के कोयले के गढ़े से मुझे आप इतना ऊपर चढ़ा रहे हैं। तो भी यदि आप का मुझ पर विश्वास है तो पार्टी ने जो काम मुझे सौंपा है, उसे पूरा करने के लिए मैं कोई कसर नहीं उठा रखूँगा।"

मंत्री बनते ही उसने वही तत्परता, वही नया रास्ता निकालने के लिए

उद्योग और समाजवाद के लिए वही श्रद्धा और प्रेम दिखलाना शुरू किया। उसने ढिलमिल-यक़ीन कमज़ोर आदमियों को हटा कर योग्य प्रतिभाशाली जवानों को आगे बढ़ाना शुरू किया।

वह हर रोज़ खानों में पहुँचता था और पता लगाता था कि कौन टुकड़ी काम में पीछे पड़ रही है।

कोयला सेर्‌गो शहर का सर्वस्व है। चाहे नये स्कूल बनाना हो या नई नाट्यशाला खोलनी हो या ट्रामवे की लाइन निकालनी हो या स्वाध्याय-केन्द्र स्थापित करना हो, हर जगह खर्च का प्रबन्ध कोयले की उपज बढ़ा कर ही हो सकता है।

एक खान को १६०० टन कोयला रोज़ निकालना चाहिए था लेकिन निकलता था १३०० टन। बैठकों में प्रस्ताव पर प्रस्ताव लाये जाते थे लेकिन कोई लाभ नहीं। च्युकानोफ़् ने प्रस्तावों को एक तरफ़ रखा, बैठक को मुल्तवी कर दिया और मैनेजर के साथ खान के भीतर गया। देखा मशीन से काम करने का सारा प्रबन्ध ठीक है, लेकिन फिर कौन सी रोक? च्युकानोफ़् ने फिर खनक का कपड़ा पहना, हाथ में लालटेन ली और फिर चला गढ़े की ओर। पेट के बल तथा निहुर कर सारी खान उसने छान डाली। दूसरे दिन फिर वह उसी तरह गया। कहाँ क्या दोष है, इसे उसने नोट कर लिया। फिर उसने खनकों से बात करनी शुरू की। उन्होंने दिल खोल कर सारी बातें बतलाईं। उसने उनको बढ़ावा देना नहीं चाहा बल्कि उनसे राय माँगी, कि कैसे खान के काम को सुचारु रूप से चलाया जाय? जो कुछ उसने देखा और जो कुछ सुना, उन सब को लेकर उसने अपनी एक योजना तैयार की और जब वह योजना कोयले की खानों के प्रबन्धकों और इंजीनियरों के सामने रखी गई तो च्युकानोफ़् की निरीक्षण की सूक्ष्मता और वैज्ञानिक प्रक्रिया की शुद्धता को देख कर सब ने एक राय से उसे मान लिया। चन्द ही दिनों बाद खान अपने हिस्से के काम ही को पूरा न करने लगी, बल्कि नियम पूर्वक उससे भी अधिक क़ोयला देने लगी। च्युका-

नोफ़् दोबारा ख़ान देखने गया, और खनकों को सफलता की कुंजी बतलाने लगा। फिर उसने उस खान के चतुर खनकों को आसपास की सुस्त खानों में बाँट दिया और इस प्रकार सेरगो नगर अपने काम में आदर्श बन गया; और स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन के जन्म-स्थान बनने का उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

द्युकानोफ़् को अब भी वैसी ही ज्ञान की ज़बर्दस्त प्यास लगी रहती है। जनता और पार्टी ने उस पर जो विश्वास प्रकट किया, उसे सन्मानित किया, उससे बल्कि उसकी प्यास और बढ़ गई। नई पुस्तकों के पढ़ने में उसे बड़ा आनंद आता है। खान या पार्टी कमेटी की बैठक से जब वह रात को घर लौटता है, तो अपने उसी लड़के---जिसके साथ उसने स्कूल जाना शुरू किया था और जो अब दसवीं श्रेणी में पढ़ता है---के साथ बैठ जाता है। वह पुश्किन् के मधुर पद्यों को उच्चस्वर से पढ़ने लगता है और उसका लड़का अपने बाप के अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध करता है। नगर की पार्टी का सेक्रे-टरी बोल्शेविक् द्युकानोफ़् इसमें ज़रा भी शरम महसूस नहीं करता। मिथ्याभिमान और अहम्मन्यता उसके लिए कोसों दूर की चीज़ें हैं।

*** ***

दर्या निकितिच्ना फ़दूचेंको

मोश्चेनोये गाँव तीन प्रान्तों--ओदेसा, कियेफ़् और विन्नित्सा तथा मोल्दाविया स्वतंत्र-सोवियत्-रिपब्लिक की सीमा पर बसा हुआ है; और इसीलिए सब की आँखें उसके ऊपर रहती हैं। इसे भी मानना पड़ेगा कि मोश्चेनोये के स्तालिन्-कोल्ख़ोज़ के चारों हज़ार घर इस जवाबदेही को समझते हैं। उनका हमेशा प्रयत्न रहता है कि उनका कोल्ख़ोज़ आस-पास के प्रदेशों के लिए आदर्श बना रहे।

दर्या इसी कोल्ख़ोज़ के एक ब्रिगेड की प्रसिद्ध नेता है और हाल ही में उदेसा देहाती-निर्वाचन-क्षेत्र से उसे पार्लियामेंट में प्रतिनिधि

चुना गया है। वह पुराने दिन भी याद हैं जब कि मोश्चेनोये के चारों ओर की भूमि खनन्को नामक एक बड़े ज़मींदार की ज़मींदारी थी। ख़नन्को चतुर्थ दूमा (ज़ारशाही पार्लियामेंट) का सदस्य था। वह धन कुबेर था और साथ ही फुलवारी लगाने की उसे सनक सी थी। उसके पास २०५० देसीयातिन (१ देसी०=२॥ एकड़) ज़मीन थी। स्थानीय कुलकों के हाथ में भी सैकड़ों देसीयातिन् थे। और मोश्चेनोये के गरीब किसानों के पास सिर्फ चार सौ देसीयातिन अर्थात् आदमी पीछे $\frac{1}{8}$ देसीयातिन्।

गरीबी किसे कहते हैं, दर्या इसे बचपन ही से जानती थी। लेकिन वह उससे डरनेवाली न थी। उसके चारों ओर दरिद्रता ही का बसेरा था। उसका परिवार, उसके पड़ोसी, और प्रायः सभी ग्रामवासी दरिद्रता ही में जी रहे थे। ८ वर्ष की उम्र में बारहों मास भूखा रहनेवाले अपने बाप के घर को छोड़कर उसे पेट भरने के लिए नहीं जीने के लिए काम करने जाना पड़ा। घर में ८ बच्चे थे। दर्या चौथी थी। ३ बड़े लड़के धनी किसानों के यहाँ मज़दूरी करते थे। गाँव में दर्या के भाग की सराहना हो रही थी—"छोटकी दर्या बड़ी ख़ुश-किस्मत है। खनन्को के महल में उसे फूल सजाने का काम मिला है।"

ख़ुशकिस्मत! किस को मालूम था कि इस छोटी कन्या को कितनी बार आँसुओं से अपनी आँखों को लाल करना पड़ा। कितनी बार मालिक के काम में ज़रा सी भूल हो जाने पर उसे बुरी तरह से पीटा गया। किसी वक्त गुच्छा मालिक की ख्वाहिश के अनुसार नहीं बना था, या किसी समय माला ठीक से नहीं गुथी गई, कभी फूलों को ठीक समय पर नहीं सींचा गया; और बच्चे पर छड़ी पर छड़ी! दर्द से वह सिकुड़ जाती। सामने उसे रोने की भी आज्ञा न थी। अँधेरे में छिप कर अपने दिल के भीतर ही उसे सिसकना पड़ता था। आवाज़ हुई नहीं कि आँसुओं को पोंछ कर मुँह की सिकुड़नों को दूर कर मालकिन के सामने आना पड़ता था। उस वक्त कौन जानता था,

कि यही दर्या एक दिन संसार के सब से बड़े राज्य की पार्लियामेंट की सदस्या चुनी जायगी?

अपने ८ व्यक्तियों के परिवार के लिए दर्या के पिता **निकिता स्लोबोद्यानुक्** के पास २ देसीयातिन् खेत था, एक घोड़ा था। गर्मियों में एक गाय भी हो जाती थी, जिसे जाड़ों में चारे के अभाव से बेच दिया जाता था।

दर्या को अब भी एक घटना की धीमी सी याद बनी हुई है। एक हल और बुआई के पाँचे के लिए निकिता को अपने खेत में से आधा देसीयातिन् बेचने पर मजबूर होना पड़ा। पीछे एक अकाल वाले साल में उस हल और पाँचे को भी बेच देना पड़ा। कर्ज़ में घोड़ा भी लग गया। उसी वक़्त दर्या को ज़मींदार खनन्को के पास मज़दूरी करने के लिए भेजना पड़ा। उस दिन से माँ-बाप का प्रेम किसे कहते हैं, इसे उसने नहीं जाना। किसी ने उसे बेटी नहीं कहा। किसी ने उसे बच्चा कर के नहीं देखा। वह 'मजूरिन' थी! 'सुस्त काहिल'! 'मूर्ख'! 'गोबर भरे दिमाग की' उसके मालिकों के पास उसे पुकारने के लिए दूसरे शब्द न थे। लम्बे वर्ष बीत गये।

तब से ३० वर्ष गुज़र गये। दर्या अपने भूत के बहुत से भाग को भूल गई। जो याद भी है, वह भी बहुत धुँधला सा। लेकिन अभी हाल के कुछ वर्षों की कितनी ही स्मरणीय घटनाएँ उसे ख़ूब याद हैं। अर्तेल् और पंचायती खेती का कैसे संगठन हुआ, कैसे उसमें उन्नति हुई; इस संबंध की छोटी छोटी बातें भी उसे याद हैं। और ऐसा होने के लिए कारण हैं। दर्या फेद्चेंको के लिए, उसके सभी ग्रामवासी नर-नारियों के लिए कोल्ख़ोज़ की कल्पना के साथ साथ एक नये जीवन का आरंभ हुआ।

स्तालिन्-कोल्ख़ोज़ को स्थापित हुए अभी सात ही साल ख़तम हुए हैं, लेकिन इतने ही में गाँव की जो आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति हुई है, उसका पहले स्वप्न भी देखना मुश्किल था। १९३१ का मोश्चेनोये १९३७ में क्या से क्या हो गया, इसके लिए नीचे के नकशे को देखिए—

	१९३१	१९३७
जुते खेत	४२३·५ हेक्तर	२,१०० हेक्तर
गेहूँ के खेत	१९९	७०७
चुकन्दर के खेत	७८	२९५

१ हेक्तर=२·४७ या प्रायः २॥ एकड़ का होता है।

उपज	१९३१	१९३७
गेहूँ की खेती	१ टन प्रति हेक्तर	२·१६ टन प्रति हेक्तर
चुकन्दर की फसल ..	१२·१ टन प्रति हेक्तर	२७·६ टन प्रति हेक्तर
प्रति किसान काम के दिन ..	११३	१९०
कोल्ख़ोज़ की आय ..	३७,००० रूबल	६,५०,००० रूबल
प्रतिदिन का वेतन (नाज) ..	१·४ किलोग्राम	५·२ किलोग्राम
प्रतिदिन का वेतन (नक़द) ..	६५ कोपेक्	२ रूबल

इसके देखने से मालूम होगा कि १९३१ में जहाँ एक दिन का वेतन था प्रायः २ सेर नाज और चार आना पैसा; वहाँ १९३७ में हो गया प्रायः ७ सेर नाज और १४ आना पैसा।

पिछले सात वर्षों में स्तालिन्-कोल्ख़ोज़ ने खेती में जबर्दस्त उन्नति की है। गेहूँ की उपज में ग्यारह गुना और चुकन्दर में १० गुना की तरक्की हुई है। इतना ही नहीं इस कोल्ख़ोज़ की पशुशाला बड़ी जबर्दस्त है। एक विभाग में २७५ अच्छी नस्ल की गायें हैं। दूसरे विभाग में सफ़ेद अंग्रेज़ी सूअर २५० पोसे गये हैं। तीसरे में ऊँची नस्ल की मुर्गियों का एक बहुत भारी मुर्ग़ीख़ाना है। पशुओं और मुर्ग़ियों से कोल्ख़ोज़ की आमदनी बहुत बढ़ गई है। हर एक किसान को एक एक दो दो पशु और कितनी ही

मुर्गियाँ भी व्यक्तिगत तौर से पालने को मिली हैं, जिन की नस्ल की शुद्धता की ज़िम्मेवारी कोल्खोज़ पर है। पशुओं की वृद्धि से खेतों के लिए आवश्यक खाद की मात्रा भी वहुत अधिक बढ़ गई है।

१९३१ में लोगों के काम के दिन ३७००० थे लेकिन १९३७ में उन्हों ने १,३७,००० दिन काम किये, इस प्रकार दिन का वेतन ही इन ७ वर्षों में चौगुना पँचगुना नहीं हुआ वल्कि काम के दिन भी ६–७ गुना हो गये। प्रत्येक किसान की आमदनी ७० सैकड़ा वढ़ी और साथ ही १९३१ में जहाँ ढाई एकड़ खेती के लिए ८८ दिन के काम की ज़रूरत थी, वहाँ १९३७ में ६५ दिन ही लगे। क्रान्ति (१९१७) से पहले किसानों की जो अवस्था थी, उससे आज का मुकावला ही नहीं किया जा सकता।

१९२९ में जव स्तालिन्-कोल्खोज़ की स्थापना हुई, तो दर्या सव से पहले उसमें शामिल हुई। उसके ग्रामवासियों में से अधिकांश कोल्खोज़ को वड़े सन्देह की दृष्टि से देखते थे। जो उसमें शामिल हुए थे वह भी काम करने के लिए नहीं। दर्या को किसी भी काम करने से हिचकिचाहट नहीं थी। उन मेहनत के कामों से भी वह मुँह नहीं फेरती थी, जिनमें लगने के लिए मर्द भी हिम्मत नहीं करते थे। उस साल जाड़े का आरंभ हो चुका था। कोल्खोज़ के पशुओं के पानी पीने का कोई इंतज़ाम न था। पशुशाला के वाड़े में एक कुएँ की ज़रूरत थी। पंचायत में मर्द लोग ख़ूव इस पर वादविवाद करते थे, लेकिन कोई उसके खोदने के लिए तत्परता नहीं दिखलाता था। दर्या से प्यासे पशुओं की तकलीफ़ देखी नहीं गई। पशुओं की देख-भाल का काम उस वक्त उसी को मिला था। उसने तय किया कि वह खुद उस काम को करेगी। सर्दी के मारे ज़मीन जम कर पत्थर सी हो गई थी। और उसका अपना शरीर भी काँप रहा था। दर्या ने फावड़ा उठाया और लगातार २ दिन तक खोदती रही। मर्दों को लज्जित होना पड़ा। तीसरे दिन ५ मर्दों ने दर्या की जगह ली और १० दिन में कुआँ तैयार हो गया।

बुनाई के दूसरे मौसम में दर्या खेत पर काम करनेवाले प्रथम ब्रिगेड में ली गई। एक साल बाद वह तूफ़ानी कमकर (अपने हिस्से से भी कई गुना काम करनेवाला व्यक्ति) बन गई। और उसको कई बार काम के लिए इनाम मिले। अपने अच्छे काम के लिए २० औरतों की टोली की वह नेता चुनी गई। जुताई और निराई में मर्द भी कितनी ही बार उसके साथ चलने की हिम्मत नहीं रखते थे। गाँव की औरतों में तो दर्या ने रूह फूँक दी थी। सभी उसीकी तरह अपने काम में तत्परता दिखलाती थीं। पहले जो औरतें और लड़कियाँ घर के काम का बहाना बना कर काम से जी चुराती थीं; वह भी खेतों में दौड़ने लगीं। कुछ ही दिनों में काम करने में औरतों ने अपने को मर्दों के बराबर सिद्ध कर दिया। १९३४ में दर्या की टोली ने प्रति बीघा १५० मन (प्रति हेक्तर १८ टन) चुकन्दर पैदा किया। उस समय तक ओदेसा में चुकन्दर की यह सब से बड़ी उपज थी और तारीफ़ यह कि उस साल सूखा सा पड़ गया था। इस उपज से दर्या की कीर्ति मोश्-चेनोये से बाहर फैलने लगी। बुग् नदी की सारी उपत्यका में उसका नाम फैल गया।

अब दर्या को कोल्ख़ोज़ ने एक पूरे ब्रिगेड का नेता बनाया और उसके जिम्मे १२०० बीघा (४०० हेक्तर) खेत लगा दिया, ठीक उतना ही खेत जितने से कि ज़मींदारी राज्य के समय सारे गाँव के किसान जीते थे।

सातवीं अखिल सोवियत् कांग्रेस में दर्या ओदेसा प्रान्त की प्रतिनिधि चुनी गई और यह पहला समय था, जब कि वह मास्को गई।

२८ जनवरी १९३५ की वह स्मरणीय संध्या थी जब कि वह मानो स्वप्न में हज़ारों विद्युत्-प्रदीपों से प्रकाशित कोलाहल पूर्ण राजधानी की सड़क पर चल रही थी। वह भी स्वप्न ही सा था जब कि वह क्रेमलिन् में प्रविष्ट हुई। विशाल चमकते हुए बिजली के फानूसों के प्रकाश में क्रेमलिन् का प्रासाद उसे बचपन की चिरविस्मृत किसी कहानी का स्वर्ग सा मालूम होता था। यहाँ क्रेमलिन् की देहली पर एक बार उसके सामने अपना सारा

भूत जीवन झलक उठा। कांग्रेस में दर्या स०स०स०र० की केन्द्रीय प्रबंध-कारिणी समिति की सदस्या चुनी गई। कोल्खोज़ी तूफ़ानी कमकरों की जो दूसरी कांग्रेस हुई थी, उसमें भी वह ओदेसा प्रान्त की प्रतिनिधि चुनी गई थी और स्तालिन् तथा मंत्रिमंडल के प्रमुख व्यक्तियों के साथ उसने कांग्रेस के संचालन का काम किया। दर्या कांग्रेस के उस पहले दिन को कभी नहीं भूल सकती, जब कि **स्तालिन्, वोरोशिलोफ़्** और **मोलोतोफ़्** ने उसका बड़ा जोरदार स्वागत किया। हर एक ने बड़े जोश के साथ उससे हाथ मिलाया। उस दिन दर्या को अपना आँसू रोकना मुश्किल हो गया था और स्तालिन् के हँसमुख चेहरे से निकले प्रश्न के उत्तर में उसने लड़खड़ाती ज़बान से कहा--"आप जानते हैं, मैंने अपनी सारी जवानी ज़ारशाही के नीचे बिताई।....... एक खेतिहर मज़दूर, एक पददलित किसान औरत......आपका कृपापूर्ण व्यवहार मेरे हृदय के अन्तस्तल तक इतना पहुँच गया है कि मैं कुछ नहीं कह सकती।"

स्तालिन् ने उसे शान्त किया और अपनी बग़ल की कुर्सी पर बैठाया।

१९३५ में दर्या के ब्रिगेड ने प्रति हेक्तर २·७ टन गेहूँ पैदा किया, बल्कि १० हेक्तर लेने पर औसत ३·७ टन तक पहुँच गई थी। इसके अतिरिक्त चुकन्दर प्रति हेक्तर २१·८ टन। इस सफलता के लिए उसे लेनिन्-पदक (सोवियत् का सब से ऊँचा पुरस्कार) मिला। १९२४ में उसने प्रति हेक्तर २·८ टन गेहूँ और २३·८ टन चुकन्दर पैदा किये। १९३७ में उसने और उपज बढ़ाई, और उस साल प्रति हेक्तर २·५ टन गेहूँ तथा ३० टन चुकन्दर।

दर्या का गाँव ३ प्रान्तों और १ प्रजातंत्र के बीच में पड़ता है, यह हम कह चुके हैं। दर्या को जिन तरीकों से ये सफलताएँ मिली थीं, उनके प्रचार का बहुत अच्छा मौक़ा था। वह अपने ब्रिगेड के आदमियों को लेकर आस-पास के पिछड़े हुए गाँवों में चली जाती थी और उन्हें काम का ढंग सिखलाती थी। उसने अपने तजर्बे से खेती के जो गुर प्राप्त किये थे, उन्हें वह दूसरों

तक पहुँचाना अपना कर्तव्य समझती थी। यही उसके काम का प्रभाव था, जिसके कारण १२ दिसंबर १९३७ को लोगों ने उसे अपना प्रतिनिधि बना कर सोवियत् पार्लियामेंट (संघ सोवियत्) में भेजा।

आज **दर्या निकितिच्ना, क्रेम्लिन्** में सोवियत् संसार के भाग्य-विधाताओं की पंक्ति में बैठती है। लेकिन अब उसमें वह हिचकिचाहट नहीं है और न क्रेमलिन् के विशाल प्रासाद उसपर वैसा रोब डाल सकते हैं जैसा कि उन्होंने ३ साल पहले, पहले पहल आने के वक़्त डाला था।

***　　　***

कोर्नेइचुक्—

उक्रइन् के तरुण नाट्यकार अलेखांद्र **कोर्नेइचुक** के नाटकों को सोवियत् के करोड़ों आदमियों ने देखा है। कितने ही सालों से उसके दो नाटक—'बेड़े का ध्वंस'—'प्लेटोन् क्रेचिट्' वर्षों से सोवियत् जनता के प्रीति-भाजन बने हैं। उसकी इसी सफलता के लिए **ज्वेनीगराद्** निर्वाचन-क्षेत्र (कियेफ़् प्रान्त) ने उसे पार्लियामेंट में अपनी तरफ़ से भेजा है।

कोर्नेइचुक का बाल्य महायुद्ध और गृहयुद्ध के समय में बीता। **उक्रइन्** प्रजातंत्र के एक छोटे से स्टेशन **क्रिस्तिनोफ़्का** के एक रेलवे मज़दूर के घर उसका जन्म हुआ था।

१९१८ में जर्मनों ने उक्रइन् पर क़ब्ज़ा किया और उनके अत्याचार का बालक कोर्नेइचुक के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा। जर्मन देश को लूट रहे थे। अनाज, ढोर, फल, मूल जो कुछ भी सामने आया सब छीन कर ट्रेन में लाद लाद जर्मनी भेजा जा रहा था। लोग अन्न-बिना भूखों मर रहे थे। चौदह वर्ष के **अलेखांद्र** के दिल में इन विदेशी लुटेरों के प्रति बड़ी घृणा पैदा हो गई। अलेखांद्र को एक घटना अब भी याद है। उसका कुत्ता पल्मा अजनबी को देख कर भूंक पड़ा था। इस पर जर्मन सिपाहियों ने कुत्ते को मार दिया।

वह कुत्ते को तड़पता देख रहा था और अपने आँसुओं को भी नहीं रोक सकता था।

वह स्कूल के तेज़ लड़कों में था; और हर तरह की किताबों के पढ़ने का बड़ा शौकीन था। गर्मी की छुट्टियों में वह रेलवे में गाड़ियों की मरम्मत का काम करता था। उसी समय वह तरुण-साम्यवादी-संघ का सदस्य था और उसके संगठन में उसने बड़ी योग्यता का परिचय दिया। १६२३ में संघ ने उसे पढ़ने के लिए कियेफ़् भेजा। उसने खूब दिल लगा कर अध्ययन किया। उसे उस समय लिखने का शौक हुआ। उसने इसके लिए बहुत समय दिया। १६२५ में लेनिन् की वर्षी के नज़दीक आते समय उस ने उस महान् नेता की मृत्यु के बारे में एक कहानी लिखी। यह उसकी पहली कहानी थी। उसने उसे धड़कते दिल से एक पत्र में भेज दिया। कई दिन उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। आखिर २१ जनवरी को उसके सहपाठियों ने सूचित किया कि कोर्नेइचुक नामक किसी व्यक्ति ने लेनिन् के जीवन पर एक बड़ी दिलचस्प कहानी लिखी है। उनको गुमान भी नहीं हो सकता था कि उस कहानी का लेखक यही उनका सहपाठी है। कुछ महीनों पीछे कियेफ़् के कमकर-तरुण-थियेटर में एक अज्ञात नाट्यकार के 'देहली पर' नामक नाटक का अभिनय हुआ। दर्शक-मंडली ने पहली ही रात उसकी बड़ी दाद दी।

१६३० में उक्रइन् के तरुण-साम्यवादी-संघ ने कोर्नेइचुक को ओदेसा के सिनेमा के कारखाने में काम करने को भेजा। यहीं उसने अपना पहला ऐतिहासिक नाटक 'बेड़े का ध्वंस' लिखा। अब उसकी प्रसिद्धि सारे देश में हो गई। यह नाटक गृह-युद्ध की एक घटना को ले कर है। उस समय क्रान्तिकारी नौ-सैनिकों ने दुश्मन के हाथ न पड़ने देने के लिए जंगी बेड़े को अपने हाथों से ग़र्क़ कर दिया। कोर्नेइचुक ने इस घटना की जानकारी के लिए बहुत समय लगाया। वह कितने ही उन लाल नौ-सैनिकों से मिला, जिन्होंने उस ऐतिहासिक घटना में भाग लिया था। नाटक का खाका तैयार हो गया था,

लेकिन अभी उपसंहार और कुछ और बातें नहीं मिल रही थीं। इत्तिफाक से एक दिन एक बूढ़े मल्लाह ने कोर्नेइचुक् से कहा—नाव डुबाने से पहले कैसे नाविकों ने जहाज़ को खूब धो धा कर इसलिए साफ़ किया कि जिसमें समुद्र देव को एक स्वच्छ जहाज़ की भेंट चढ़ायें। इस बात ने कोर्नेइचुक् को अन्तः प्रेरणा दी और वह समझ सका कि वे नाविक क्रान्ति-यज्ञ में इस समिधा को एक बड़े भाव के साथ डाल रहे थे। इस नाटक को रंग-मंच पर बड़ी सफलता मिली; और लेखक को नाट्यकार प्रतियोगिता में दूसरे नंबर का पारितोषिक मिला। कोर्नेइचुक का दूसरा नाटक "प्लेटोन् क्रेचिट्" आधुनिक सोवियत् जीवन से संबंध रखता है और सोवियत् जनता को बहुत प्रिय है। तीसरे नाट्य-महोत्सव (१९३५) में खेले गये नाटकों में से यह एक था। १९३६ में पार्टी और गवर्नमेंट के नेताओं ने उक्रइन् के नाट्यकारों का अभिनन्दन किया था। उसमें कोर्नेइचुक भी मौजूद था। कोर्नेइचुक लिखता है—"मैं सभापति-मंच की ओर बढ़ा। मुझे अपना परिचय देने का मौक़ा दिये बिना ही कगानोविच् ने मुझे साथी स्तालिन् के सामने पेश किया। हमने हाथ मिलाया और तवारिश् स्तालिन् ने अपनी स्वाभाविक मुस्कुराहट के साथ मुझसे कहा—'मैंने तुम्हारे बारे में सुना है।' मेरे दिल पर इसका इतना असर हुआ कि मैं उसका कोई समुचित उत्तर न दे सका।

कोर्नेइचुक् का सब से नया नाटक है 'सत्य'। यह महान् साम्यवादी क्रान्ति की घटनाओं से संबंध रखता है। लेखक ने लिखा है—"अपने नये नाटक में मैं दिखलाना चाहता हूँ कि कैसे मेरी जन्मभूमि के कमकरों ने लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी के नेतृत्व में सत्य को पाया; और श्रम-जीवियों के अधिनायकत्व का निर्माण किया।"

*** ***

पार्लियामेंट की एक सदस्या लिखती हैं—

"**स्लोवोत्स्काया** (भूतपूर्व व्यत्का और वर्तमान कीरोफ़् प्रान्त) के छोटे से गाँव में मैं पैदा हुई थी। सोवियत् में कितनी जल्दी नगरों, ग्रामों की कायापलट हो रही है, इसका उदाहरण एक मेरा गाँव भी है। ७ वर्ष पहले मैं एक छोटी सी वर्कशाप में समूर तैयार करने के काम में दाख़िल हुई। वहाँ २०० कमकर थे। आजकल वहाँ पर स०स०स०र० की सब से बड़ी समूर तैयार करने वाली फैक्टरी है। मकानों की ३ बड़ी बड़ी कतारें चली गई हैं। इस वक्त वहाँ ६००० कमकर काम करते हैं।

क्रुप्स्काया (पृ० १३४)

पहले स्लोवोत्स्काया के नजदीक छोटी छोटी पन्द्रह चमड़ा सिझाने की कोठियाँ थीं। अब सब को एक कर के वहाँ एक बहुत ज़बर्दस्त चमड़े की फैक्टरी तैयार हुई है। उस में ४००० कमकर काम करते हैं। पास वाली शराव की भट्ठी को वढ़ाकर बड़े कारख़ाने का रूप दिया जा रहा है। १० वर्ष पहले गाँव की आबादी १२,००० थी और अव २५,००० है। अब वह छोटा सा शहर है। हमारे शहर के कमकरों की आर्थिक अवस्था प्रत्येक साल उन्नत होती जा रही है। इसी साल हमारे कारख़ाने में एक सांस्कृतिक

भवन बनाया गया है। इसके हाल में ७०० आदमी बैठ सकते हैं। और उसके साथ में ८ विश्राम और अध्ययन के कमरे, ३ किन्डरगार्टन और बच्चे-ख़ाने के कमरे, (जिनमें ४०० बच्चों का इंतज़ाम है) एक बृहद् क्रीड़ा-क्षेत्र, एक नाव खेने की जगह, बनी हैं। हमारे कमकरों में बहुत ही कम अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित हैं।

हमारे कारख़ानों में काम करनेवाले सैकड़ों व्यक्ति—जो आर्थिक सुख और अधिकार से वंचित रखे गये थे—अब बड़े बड़े पदों पर पहुँच गये हैं। सोवियत्-सरकार की कृपा से उनको सीखने का ऐसा अवसर मिला कि उन की प्रसिद्धि उनके नगर और जिले से पार हो कर दूर तक फैल गई है।

मेरे माँ-बाप तभी मर गये, जब कि मैं ८ वर्ष की थी। मेरे घर-द्वार कुछ नहीं था। एक कुलक के लड़कों के खेलाने का काम मुझको मिला। वह जीवन बिलकुल सूखा और घोर अपमान का था। भूखी चीथड़ोंवाली मुझ जैसी छोटी सी अनाथ लड़की के लिए और क्या आशा हो सकती थी! लेकिन सोवियत्-शासन ने मुझे उस भयंकर दरिद्रता और परतंत्रता से मुक्त किया। मैंने फ़ैक्टरी में काम करना शुरू किया और मेरा जीवन कुछ से कुछ बन गया। काम करते वक़्त मैं रात की पाठशालाओं में अपने काम के विषय में विशेष ज्ञान सीखती रही। अब भी मैं पढ़ रही हूँ। सोवियत्-शासन और जनता ने जो मेरा उपकार किया है, उसने मुझे सिखलाया कि मैं अपने देश के ऋण को सामग्री की उपज बढ़ा कर दूर करूँ। मैं एक तूफानी कमकर थी। फिर १९३२ में एक ब्रिगेड की नायक बनाई गई। हलके-उद्योग-विभाग के मंत्री ने सब से अच्छे काम करनेवाले ब्रिगेड को एक झंडा देना तय किया था; और हमारे ब्रिगेड ने इतना अच्छा काम किया कि वह झंडा हमको मिला। अपने काम में हमने श्रम बचाने वाले कई तरीके निकाले और अपने माल को बढ़िया बनाया। समूर की सिलाई में जो छाँट होती है, उसमें भी हमने कमी कर दी। मैंने काटनेवाले दर्जी को नया तरीका बतलाया जिससे कि सिलाई का समय आधा हो

गया। अपनी फ़ैक्टरी में पहले-पहल मैंने स्तखानोफ़्-आन्दोलन का सूत्रपात किया। हम बराबर अपने प्रोग्राम से दुगुना माल तैयार कर रहे हैं।

वायु-सैनिका रमगिना (डिपुटी)

पिछले साल मैं अपने कारखाने की सब से बड़ी वर्कशाप—दर्जीखाना, जिसमें कि सफ़ेद कपड़ा, जोड़ा और सिया जाता है—की सहायक मैनेजर

बनाई गई; और उसीके बाद मैंने सुना कि मेरे ज़िले के कमकर मुझे पार्लियामेंट का उम्मेदवार खड़ा कर रहे हैं।

अपने बचपन के वर्षों में मुझे स्वप्न में भी ख़याल नहीं आया था कि मैं कभी राजधानी देखूँगी; और आज मैं यहाँ मास्को में हूँ। और सो भी स०स०स०र० की पार्लियामेंट के मेम्बर के तौर पर। यहाँ सरकारी मंत्रियों, महान् क्रान्तिकारियों और वैज्ञानिकों के साथ बैठ कर मुझे भी राजनैतिक समस्याओं के निर्णय करने का अधिकार होगा।

पार्लियामेंट के सदस्य के तौर पर मैंने अपने सामने काम रखा है कि उद्योग-धंधे की जिस समूर शाखा को भली प्रकार जानती हूँ, मैं उसकी उन्नति के लिए पूरा ज़ोर लगाऊँ। यह बड़ा ही आवश्यक काम है। पहले जब कमकरों की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी, तो समूर (कीमती बालवाले चमड़े) के कोट या पोशाक के ख़रीदने के लिए पैसा किसके पास था? लेकिन अब हालत दूसरी हो गई है। अच्छे समूर की पोशाक की बड़ी माँग है। हमें हर कीमत के भिन्न भिन्न समूरों को कमकरों के लिए तैयार करना है। समूर के उद्योग के संबंध में ऐसी वैज्ञानिक खोज के लिए मैं मनोयोग दे रही हूँ कि जिसमें चमड़े की सिझाई और रँगाई बेहतर हो। यद्यपि अभी ही हमने इस क्षेत्र में विदेशी कम्पनियों को मात करना शुरू किया है, लेकिन मैं चाहती हूँ कि इस सम्बन्ध की और समस्याएँ हल की जायँ, जिसमें समूर का उद्योग बड़े ज़ोर से बढ़े।

***　　　　***

बोल्कोवा एक स्ताख़ानोवी कमकर स्त्री जो चेर्नोरिचेन्स्क रसायन फ़ैक्टरी में काम करती है, और संघ-सोवियत् की सदस्या चुनी गई है, अपने वोटरों को धन्यवाद देते हुए कहती है——

"सिर्फ उसी देश में——जहाँ पर कि शासन की बागडोर किसानों और मज़दूरों के हाथ में है, जहाँ पर कि साम्यवादी समाज का निर्माण हुआ है,

जहाँ पर कि सभी समाजवादी निर्माण का नेतृत्व वोल्शेविक पार्टी और उसके महान् नेता और शिक्षक तवारिश् स्तालिन् के हाथ में है—वहीं यह संभव है, कि एक स्त्री जो हाल तक घर की नौकरानी थी, वह राष्ट्र की सर्वोच्च पार्लियामेंट की सदस्या चुनी जाय।

मैं खूब अनुभव करती हूँ कि निर्वाचकों ने मेरे कंधे पर कितना भारी बोझ रख दिया है। लेकिन मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं अपनी सारी शक्ति, सारा जीवन, सोवियत्-जनता और लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी को दूँगी।"

* * * * * *

एक तातार (पहले मुसलमान) अध्यापिका **नर्यन् तुमातोवा** ने अपने उद्‌गार इस प्रकार प्रकट किये—

"मैंने अपनी जन्मभूमि के श्रेष्ठ पुत्र और कन्या को वोट दिया। मैंने वोट दिया कम्युनिस्ट पार्टी के लिए, विधान के महान् निर्माता तवारिश् स्तालिन् के लिए। दूसरा मैं कर ही कैसे सकती थी! एक निरक्षर कमकर की लड़की मेरी जैसी तातार-स्त्री को जिस सोवियत्-शासन ने नागरिकता का महान् अधिकार दिया, जिसने मुझे उच्च-शिक्षा पाने का अवसर दिया। मैं अध्यापिका हूँ। त्यांचीतमक् गाँव के हाई-स्कूल में अपनी तातार भाषा में मैं कैमेस्ट्री और वायालोजी पढ़ाती हूँ। मेरे सभी शिष्य साम्यवाद के ध्यय के लिए सजग योद्धा होंगे।"

* * * * * *

तात्याना विकुलिना कोल्खोजी किसान स्त्री पार्लियामेंट की सदस्या है। अपने जीवन के बारे में वह कहती है—

"मैं एक खेतिहर-मजूरिन थी और उसपर भी पिछड़ी हुई जाति करेलिया की। मुझे कहाँ यह गुमान हो सकता था, कि स्वतंत्र-करेली जनता मझ जातिक-सोवियत् (पार्लियामेंट) की सदस्या चुनेगी। मुझे कहाँ यह

कल्पना हो सकती थी, कि एक गरीब किसान—सो भी ज़ारशाही के शासित एक उपनिवेश में—जैसा कि क्रान्ति के पहले करेलिया थी—शिक्षित और सुख-सम्पन्न बनेगी। और मेरे लड़के शिक्षा पायेंगे। यह कहाँ मैं सोच सकती थी, कि नागरिकता के अधिकार से वंचित एक स्त्री—जिसको गाँव के पंच चुनने में भी वोट का अख़्तियार नहीं था—पार्लियामेंट की मेम्बर चुनी जायगी"!

*** ***

मरिया देम्चेंको ने चुकन्दर की खेती में स्ताख़ानोफ़्-आन्दोलन आरंभ किया था। यह सब से पहली किसान थी जिसने एक एकड़ में २० टन (१ बीघे में २८९ मन) चुकन्दर पैदा किया था। उसका अनुकरण कर के कितने ब्रिगेड नेताओं ने उसके ढंग पर खेती कर के प्रति एकड़, ४० से ६० टन तक (फ़ी बीघा १००० मन से अधिक) चुकन्दर पैदा किया। मरिया के साथ ही सोवियत् जनता ने उसके बतलाए रास्ते पर चलने वाले तात्याना, दादिकिना, **तेज़िक्वयेवा** इत्यादि को पार्लियामेंट का मेम्बर चुना।

दोरिसा नम्मसरयवा एक गरीब अपढ़ **बुर्यत्** मंगोल लड़की थी। वह कोल्ख़ोज़ में शामिल हुई। वहीं उसने लिखना-पढ़ना सीखा। अपने काम में उसने बड़ी तत्परता और ज़ोर दिखलाया। इसपर पशुपालन-कला के विशेष अध्ययन के लिए उसे भेज दिया गया। पिछले चार वर्षों से वह एक पशुशाला और दुग्धशाला (डेरी-फ़ार्म) में मैनेजर है; और उसके प्रबन्ध और उन्नति में उसने कमाल किया है। इसके लिए उसे सरकारी पदक मिला है। आज बुर्यत् जनता की ओर से वह पार्लियामेंट की मेंबर है।

*** ***

उज़्बेकस्तान उजबेक लोगों का प्रजातंत्र है। हिन्दुस्तान में तो उज़्बेक कहने ही से लोगों को हँसी आती है; लेकिन आज उज़्बेकस्तान

प्रजातंत्र शिक्षा और धन सभी में बहुत आगे बढ़ा हुआ है। इस्लाम ने जो पर्दा और धार्मिक कट्टरता उनमें पैदा की थी, उसका अब नाम तक नहीं है। उज़्बेक जनता ने सोवियत् पार्लियामेंट में ४५ सदस्य (संघ-सोवियत् में २० और जातिक-सोवियत् में २५) भेजे हैं। कगानोविच् (रेलवे मंत्री) और यूसुफोव जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों के अतिरिक्त उनमें **उस्मान बरकयेफ़्, अलन्ज़र खुदीयेफ़्, शरीफ़ बोबो खमरयेफ़्, पाशा महमूदो गुलज़ार, अरती-कोवा**—जैसे कोल्खोज़ के स्त्री पुरुष हैं। भेड़िहर यूसुफ़ खसानोफ़्, मिस्त्री एम्सचोफ़्, अध्यापिका अइमनिसा मीर अहमदोवा भी उज़्बेकस्तान से चुने गये पार्लियामेंट के सदस्य हैं।

कोसिओर के साथ उज़्बेक् डिपुटी स्त्रियाँ

अहमेजान् इब्राहीमोफ़् उज़्बेकस्तान से चुने गये पार्लियामेंट के सदस्य ने मास्को में एक प्रेस-प्रतिनिधि को अपना वक्तव्य दिया—

महासोवियत् के उद्घाटनाधिवेशन की पहली शाम को देर तक मुझे

नींद ही नहीं आई। मैं बार बार उठकर होटल के जँगले से **क्रेम्लिन्** के लाल (**पद्मराग**) जटित तारों को देखता रहा। क्रेम्लिन् राजधानी का हृदय है और ये तारे उसी हृदय की प्रतिमा हैं। हमारे देश के सभी कमकरों का ध्यान क्रेम्लिन् की ओर है।

पहले अधिवेशन के लिए जब मैं मास्को आ रहा था, तो मेरी नज़र के सामने अपना पुराना जीवन फिरने लगा। मुझे याद हुआ, कैसे मैं लाल-सेना का एक सिपाही था और कैसे मैं सोवियत्-शासन के लिए दुश्मनों—अमीरों और मुल्लाओं से लड़ा। लेनिन् और पार्टी के नाम मेरे होंठों पर थे। जब मैं दुश्मन से मुकाबला करने युद्ध-क्षेत्र में गया, पार्टी और जनता के साथ मैंने साम्यवाद का निर्माण किया। कितना मुझे आनन्द आता है, जब मैं देखता हूँ कि हमारा जीवन इतना सुखमय हो गया है।

सदस्य हाल में पहुँच गये हैं। प्रतीक्षा के मिनट बड़े आहिस्ते आहिस्ते गुज़र रहे हैं। लोग तवारिश् स्तालिन को देखने के लिए उतावले हो रहे हैं। वह अपने निकटतम सहयोगियों के साथ भीतर आते हैं। सदस्य खड़े होते हैं। ताली बजाते हैं और हुरा का नारा लगाते हैं। मेरे मन में एक अनिर्वचनीय आनन्द उत्पन्न होता है। सारी दर्शक-मंडली आनन्दविभोर है।

जनता की मित्रता एक ज़बर्दस्त ताक़त है। सदस्यों—सोवियत् जनता के प्रतिनिधियों—ने नेता का अभिनन्दन कर के दिखला दिया कि जनता की मित्रता अचल है। जो कोई भी इस मित्रता के ख़िलाफ़ जाने की कोशिश करेगा; वह उस बड़ी चट्टान से टकरा कर रेज़ा रेज़ा होकर गिर जायगा। मैंने पार्टी के झंडे के लिए जिया और काम किया और पार्टी के लिए, जनता के लिए, मैं जीता रहूँगा।

*** ***

आज़ुरबाइजान् से निर्वाचित सदस्या **चिम्नाज् अस्लानोवा** के उद्गार हैं—

"जिस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी, आखिर वह दिन आ गया। स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रथम अधिवेशन आरंभ हुआ। पूरे एक महीने हुए जब से कि मैंने सुना, कि मैं जातिक-सोवियत् की डिप्टी चुनी गई हूँ, तभी से मेरा मन मास्को में लगा था। मैं सोचती थी, कैसे मुझे काम करना चाहिए, कि जिन हज़ारों व्यक्तियों ने मुझे वोट दिया, वह अपने डिपुटी के काम से सन्तुष्ट हों। सिवाय इसके मैं और क्या कर सकती हूँ कि सिद्ध करूँ कि जनता के सुख और सन्तोष से बढ़ कर मेरे लिए कोई स्वार्थ नहीं। सोच रही थी—वहाँ मास्को में जाकर जब क्रेम्लिन् में हम सभी डिपुटी सारे देश के सन्मुख, स्तालिन् के सन्मुख एकत्रित होंगे तो मैं क्या कहूँगी।

बुलगानिन् (डिपुटी)

१२ जनवरी की शाम आई। मैं राजधानी में हूँ। मैं क्रेमलिन् गई। मास्को की सड़कें प्रसन्न और शब्दायमान हैं। लाल-मैदान अद्भुत है। क्रेम्लिन् के तारे बड़ी खूबसूरती से चमकते हैं।

मेरे निर्वाचकों की तसवीर दिमाग़ के सामने आई। वह हैं तेल के कमकर, कपड़े के कमकर, अध्यापक, विद्यार्थी, लाल-सेना के सिपाही और बाकू-गैरिसन (पल्टन) के अफ़सर। मुझे उन सभाओं की याद आई जिनमें उन्होंने मुझ से कहा था—'चिम्नाज़्, तू 'मातृ-भूमि की सच्ची बेटी

वनना। लेनिन् और स्तालिन् से सीखना कि कैसे जनता का प्रेम किया जाता है। बोल्शेविक-पथ से कभी नहीं हटना' मैंने अपने निर्वाचिकों को जवाव दिया—'मैं ईमानदारी और विश्वास के साथ वेहतर और कठिनतर काम करूँगी। मेरा जीवन, मेरा ख़ून, जनता का है। और अव यहाँ मैं **क्रेम्लिन्** में हूँ।' मैं कहती मालूम होती हूँ—भाइयो, वहनो, हम एक हैं। हम स्वतंत्र हैं। हम समान अधिकार रखते हैं। **उज़्बेक, कल्मुक् आज़ुर-बाइजान्, याक़ूत्**, महान् **रूसी** जाति—जिसने स०स०स०र० की सभी जातियों को साम्यवाद के पथ पर अग्रसर किया—के सगे भाई हैं। हम यहाँ क्यों हैं? क्योंकि लेनिन् और स्तालिन ने सोवियत्-संघ की सभी जातियों को मिलाकर एक परिवार वना दिया।
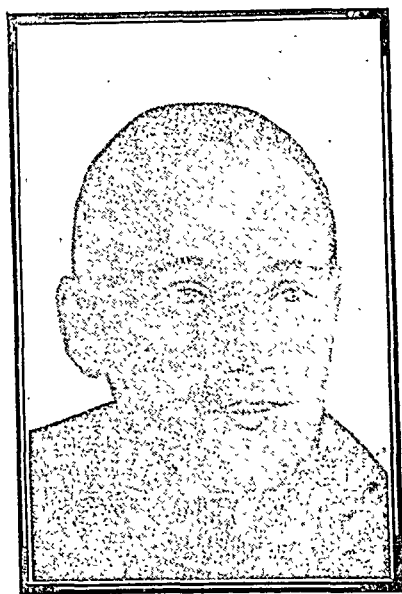
शोलोखोफ़् (डिपुटी) (पृ० २३६)

हम अधिवेशन के उद्घाटन की प्रतीक्षा कर रहे थे। एकाएक मैंने देखा, कि तवारिश् स्तालिन् अपने वक्स में प्रवेश कर रहे हैं। मेरा हृदय उछलने लगा। और जो ही शब्द पहले पहल मेरे दिमाग़ में आया, उसीको मैं चिल्ला उठी—'अभिनन्दन है तवारिश् स्तालिन्, तुम्हारा! मुक्त हुई स्त्रियों की तरफ़ से।'

यह मेरे ही शब्द नहीं हैं, बल्कि सोवियत्-संघ की सभी जातियों की स्त्रियों का यह जय-घोष है। जातिक-सोवियत् (पार्लियामेंट का एक भवन) ने अध्यक्ष का निर्वाचन किया। सब ने एक राय से न० म० **श्वेर्निक्** के लिए वोट दिया। वह अध्यक्ष के आसन पर आसीन होते हैं; और

उपाध्यक्ष चुनने की सूचना देते हैं। मैं देखती हूँ हमारे **आज़ुरबाइजान्** के प्रतिनिधियों में से एक तैमूर **याकूवोफ़्** उठते हैं। वह कहते हैं—"मैं **तवारिश् चिम्नाश् अस्लानोवा** का नाम जातिक-सोवियत् के उपाध्यक्ष के लिये पेश करता हूँ।"

'मैं! ऐसा सन्मान!'

याकूवोफ़् ने मेरी—**आज़ुरबाइजान्** की एक अध्यापिका की—अतिशयोक्तिपूर्ण तारीफ़ करनी शुरू की। वह मेरे हर्ष और संकोच दोनों का विषय थी। डिपुटियों ने मुझे चुना। हमारे **बेलोरूसी** साथी अ०म० **लवित्स्की** एक मत से उपाध्यक्ष चुने गये। क्या मुझे अपने आनन्द के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता है? मैं एक ही बात कहूँगी। मैं अन्तिम साँस तक कमकरों के सुख के लिए, जन्म-भूमि के लिए, पार्टी के लिए, लेनिन्-स्तालिन् के ध्येय के लिए लड़ूँगी।"

*** ***

लेवोनोवा मास्को की अध्यापिका सोवियत् पार्लियामेंट की एक सदस्या ने अपने भावों को इन शब्दों में प्रकट किया—

"स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन के उद्घाटन के दिन जब मैं **क्रेम्लिन्** की दीवारों की ओर जा रही थी, तो एक असाधारण हर्षोल्लास मेरे हृदय में उठ रहा था।

मैं अधिवेशन के उद्घाटन के समय से क़रीब एक घंटा पहले **स्यास्की** दरवाज़ों पर पहुँची। तो भी सदस्य और विशेष तौर से आमंत्रित अतिथि दरवाज़े में प्रवेश कर रहे थे। दरवाज़ों के सामने का आँगन लोगों से भरा हुआ था। वह सदस्यों का अभिनन्दन कर रहे थे। हँसते हुए बच्चे दौड़कर मेरे पास पहुँचे—'हो चाची लेवोनोवा!'

स्यास्की दरवाज़ों को छोड़कर मैं आगे बढ़ी। क्रेम्लिन् की गंभीर शांति, अधिवेशन की प्रथम बैठक के लिए जल्दी करते सदस्यों के क़दम की

आवाज़ से भंग हो रही थी। संगमर्मर का वड़ा हाल खचाखच भरा हुआ था। मेरी आँखें अनन्त कतारों में चक्कर काट रही थीं। यहाँ हैं राज-काज में, मेरे प्रिय साथी **ताजिकों** और **तुर्कमानों** की चमकीली पोशाक, **काके-शस्** की नाना जातियों से आये सदस्यों के काले कश्मीरे के जामे, **उक्रइन्** और **बेलोरूसिया** के कोल्ख़ोज़ी किसानों की भड़कीली पोशाक. . . . . . . ।

सब की आँखें घड़ी की तरफ़ हैं। सुई ४ के अंक के समीप और समीप खिसक रही है। इसी समय एक तूफ़ानी जन-रव टूट पड़ा और नाना भाषाओं में अभिनन्दन के नारे होने लगे। **तवारिश् स्तालिन्** पार्टी और गवर्न-मेंट के दूसरे नेताओं के साथ वक्सों में प्रविष्ट हुए। अपार आनन्द से मेरा मन प्रफुल्लित हो गया। मैं तवारिश् स्तालिन् की ओर टकटकी लगाये देखती रही। मैंने दिल से अनुभव किया, इस प्रतिभाशाली पुरुष के स्वभाव––महानता, और सादगी का।

एक बार फिर मेरा हृदय भावावेश में डूब गया, जब मैंने अकदमिक बाच् की आवाज़ को यंत्र से आते सुना। संघ-सोवियत् का वह वृद्धतम सदस्य अधिवेशन का उद्घाटन कर रहा था। हमारे देश––साम्यवाद के देश––की यह विशेषता है, एक वृद्ध वैज्ञानिक राष्ट्र के महान् पार्लियामेंट के ऐति-हासिक अधिवेशन का उद्घाटन कर रहा है। और एक वार फिर बड़े ज़ोर के साथ मेरे मन में अपनी पितृभूमि––जहाँ पार्टी और जनता विज्ञान की उन्नति के लिए सब कुछ कर रहे हैं, और जहाँ विज्ञान जनता की सेवा कर रहा है––के प्रति अभिमान का भाव जाग उठा।

२२—महासोवियत् का प्रथम अधिवेशन

(१) सोवियत् पार्लियामेंट का चुनाव हो जाने के एक महीने बाद १२ जनवरी को प्रथम अधिवेशन होने की घोषणा की गई। संघ-सोवियत् की बैठक उस दिन क्रेम्लिन् के भीतर अपने भवन में ४ बजे शाम को होनेवाली थी; और जातिक-सोवियत् का प्रथम अधिवेशन क्रेम्लिन् के भीतर अपने भवन में ८ बजे रात को होनेवाला था। १० तारीख़ तक आधे से अधिक डिपुटी मास्को पहुँच चुके थे।

जगह जगह निर्वाचकों ने सभा कर के अपने अपने प्रतिनिधियों को ख़ास तरह की हिदायतें दी थीं। लेनिन्ग्राद्-नगर के मास्को निर्वाचन-क्षेत्र के ८०० वोटरों ने जमा होकर अपने डिपुटी स्येतनिन् को यह आदेश दिया था—

"तवारिश् स्तालिन् से कहना कि हम लोगों का सारा प्रेम और सारी भक्ति, हम लोगों के सारे ख़याल और भावनाएँ, सम्पूर्ण राष्ट्र की महा-सोवियत् के डिपुटियों की ओर लगी हुई हैं। उनकी सभी राय और सभी आदेशों को हम क़ानून समझते हैं। भविष्य में भी हर बात में हम तवारिश् स्तालिन् का अनुगमन करने को तैयार हैं। और अगर ज़रूरत पड़ेगी तो दुश्मनों से अपने देश की रक्षा करने के लिए हम अपने ख़ून का अन्तिम विन्दु तक दे देंगे। हमें पूरा विश्वास है, कि तुम हमारे विचारों को प्रकट करोगे। और तुम लेनिन् और स्तालिन् की तरह के जन-सेवक वनोगे। हम तुमको कहते हैं कि **लेनिन्ग्राद्** के ज़बर्दस्त राजनैतिक और श्रमजीविक उत्साह को वहाँ जाकर कहोगे।"

(२) **वोदोप्यानोफ़्-कोल्ख़ोज़्** के किसानों ने अपने डिपुटी सोवियत्-संघ-वीर म० व० **वोदोप्यानोफ़्** के पास निम्नलिखित आदेश भेजा था—

"हमारे साथ के सम्पर्क को छोड़ना मत। अपनी सारी शक्ति लगा कर पितृभूमि की भलाई के लिए महा-सोवियत् में काम करो। समाजवादी उद्योग और कृषि की उन्नति के लिए काम करो। स०स०स०र० की राष्ट्रीय सैनिक शक्ति को मज़बूत करो। क्रान्ति-विरोधी गुंडों, **त्रोत्स्की** तथा **बुख़ारिन्** के अनुयायी भेदियों, वाधादायकों, ध्वंसकों तथा दूसरे जनता के दुश्मनों के बचे खुचे अंश को भी नष्ट कर दो। जैसे महान् स्तालिन् ने हमें शिक्षा दी है, उसी तरह काम करो। हर एक वात में स्तालिन् को अपना आदर्श रखो।"

(३) **क्रास्नीखोपेर-कोल्ख़ोज़्** के किसानों ने अपने डिपुटी सोवियत् संघ-वीर न०प० **कम्‌निन्** को आदेश दिया था ––

"जनता के चुने हुए प्रतिनिधि के रूप में सोवियत्-जनता की और भी अधिक समृद्धि के लिए लड़ने का सम्मान-पूर्ण काम तुम्हें मिला है। हम तुम्हारे साथ निकट संवंध रखेंगे और तुम्हारे काम में हर तरह से सहायता करेंगे। हम तुमसे पितृभूमि की भलाई के लिए सचाई और लगन के साथ काम करने की आशा रखते हैं। लाल राजधानी में लोगों को कहना कि हम वसन्त की बुआई के लिए पूर्णतया तैयार हैं।"

(४) **चुसोवया** ज़िले (स्वेर्द्लोफ़् प्रान्त) के अध्यापकों ने अपने डिपुटी म० अ० अर्त्युशिन् को हिदायत की––

"वह इसके लिए कोशिश करें कि चुसोवया शहर में लड़कों के लिए १० नये स्कूल, सयानों के लिए १ स्कूल, १ सांस्कृतिक-प्रासाद, और १ वालचर-प्रासाद बनवाया जाय।"

(५) ध्रुव-कक्षावर्ती प्रदेश के **किरोव्स्क** फैक्टरी के पुराने कमकरों के एक समुदाय ने अपने डिपुटी क०ई० दुशेनोफ़् के पास लिख कर भेजा––

"स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन में भाग लेते वक़्त हमारी प्रिय पितृभूमि की सैनिकशक्ति को और भी मज़बूत करने का प्रश्न उठाना। हमारा देश ऐसा दुर्धर्ष दुर्ग होना चाहिए कि वह उन्हें पीस डालने

के लिए समर्थ हो जो कि हमारे सुखमय जीवन को छीनना चाहते हैं या हमारे शान्तिपूर्ण निर्माण में बाधा डालते हैं। हम को विश्वास है कि इस ध्रुव-कक्षीय प्रदेश को देश के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र के रूप में परिणत करने में तुम अपनी सारी शक्ति लगाकर काम करोगे। हमारे मित्र और पिता तवारिश् स्तालिन् को कहो, कि कोला प्रायद्वीप के लोग कितने प्रसन्न, समृद्ध और संस्कृतिपूर्ण जीवन बिता रहे हैं।"

(६) एक जगह के वोटरों ने अपने प्रतिनिधि को सन्देश भेजा—

"स०स०स०र० की महासोवियत् के अधिवेशन की कार्रवाई की ओर करोड़ों आदमियों का ध्यान लगा हुआ है। सारी दुनिया एक बार देखेगी कि लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी के नायकत्व में एक हुए हम लोग दुर्जेय हैं; और वह देश भी दुर्जेय है, जिसकी पार्लियामेंट स०स०स०र० की महासोवियत् जैसी है।"

(७) **अन्ना फ़्योदोरोव्ना स्मिर्नोवा** एक कारख़ाने की कमकरिन तथा महासोवियत् की डिपुटी ने मास्को को प्रस्थान करने से पहले एक सम्वाददाता से कहा—

"हाल में मुझे मेरे निर्वाचकों ने ५६ पत्र भेजे हैं। उनके भेजनेवालों में प्रोफ़ेसर, कमकर, कमकरिन तथा घर में काम करनेवाली औरतें हैं। इन पत्रों में मुझे चुनाव की सफलता के लिए सिर्फ बधाई ही नहीं दी गई है, उनमें से अधिकांश हमारे रोज़बरोज़ की ज़िन्दगी से संबंध रखनेवाली समस्याओं का जिक्र करते हैं। वह त्रुटियों पर नुक़ताचीनी करते हैं और उनके दूर करने के लिए ज़ोर देते हैं। मैंने उनकी सभी बातों को ध्यान में रखा है और आवश्यकता के अनुसार कार्रवाई करूँगी। **किरोफ़्** ज़िले में नये मकानों के बनाने का काम बड़े ज़ोर-शोर से चल रहा है। अधिवेशन से लौटकर मैं निरन्तर घर बनाने के काम में जाया करूँगी और उसकी देखभाल करती रहूँगी। स्कूल, किंडरगार्टन और बच्चाख़ानों के काम पर भी मैं बराबर ध्यान रखूँगी। पार्टी और सरकार के प्रति कृतज्ञता से

मेरा हृदय भरा हुआ है, जो कि उन्होंने मेरे जैसी एक भूतपूर्व घर की नौकरानी को ऐसे पद पर पहुँचाया।"

मास्को में जाकर स्मिर्नोवा लेनिन्-समाधि, लेनिन्-म्यूज़ियम, मेत्रो (भूगर्भी रेल) आदि को देखना चाहती है।

(८) अकद्मिक् (एकडेमीशियन्)[१] ग० फ० प्रोज्कूरा ने पार्लियामेंट के अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए जाते वक़्त लिखा—

"स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशन का आनेवाला दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण होगा। हम सभी सोवियत् नागरिक—ख़ास करके महा-सोवियत् के हम डिपुटी लोग—जिनके ऊपर कि जनता ने इतना बड़ा विश्वास किया है—एक ऐसे बड़े अभिमान और दायित्व को अनुभव कर रहे हैं, जिसे शब्दों में प्रकट करना मुश्किल है। महासोवियत् का काम तृतीय-पंचवार्षिक-योजना के प्रथम वर्ष के साथ शुरू हो रहा है। हमारी सोवियत् भूमि नये साम्यवादी विजयों की ओर बड़े विश्वास के साथ बढ़ रही है। हर एक डिपुटी हमारे साम्यवादी राष्ट्र को विकसित और सुदृढ़ करने के काम के लिए जवाबदेह है। ऊँचे दर्जे की टेकनिकल शिक्षा-संस्थाओं के एक कमकर और एक एकडेमीशियन के तौर पर मैं अपने सामने काम रख रहा हूँ—ऊँचे दर्जे के टेकनिकल स्कूलों और उसमें होनेवाले वैज्ञानिक कार्य को इस रूप में आगे बढ़ाया जाय कि वह हमारी औद्योगिक आवश्यकताओं में सहायक हो। हमारे टेकनिकल स्कूलों को औद्योगिक समस्याओं को हल करने में जितना चाहिए उतनी मात्रा में उनका उपयोग नहीं हो रहा है।

"महासोवियत् का अधिवेशन होने जा रहा है। इसलिए हम सब अपनी

---

[१] स०स०स०र० के विज्ञान एकेडेमी की सदस्यता चोटी के विद्वानों को ही प्राप्त होती है। ऐसे सदस्यों की संख्या सारे देश में १०० से भी कम है। सदस्य को एकडेमीशियन (रूसी अकद्मिक) कहते हैं।

आत्मपरीक्षा कर रहे हैं। १२ जनवरी १९३८ के महत्त्वपूर्ण दिन पर हम को क्या कर दिखाना है? हर एक आदमी अपने काम के परिणाम को तौल रहा है। मैंने अपने लिए दो खास काम चुन रखे हैं। खर्कोफ़् की दोनों मशीन-निर्माण तथा वायुयान-अन्वेषण-शालाओं में अव्वल दर्जे की दो प्रयोगशालाओं का बनाना।

"सोवियत्-सरकार और बोल्शेविक-पार्टी को ही इसका सारा श्रेय है। उसने हमारे अन्वेषण कार्य के लिए सब प्रकार का सुभीता प्रचुर परिमाण में दे रखा है।"

(९) एक दूसरे एकडेमीशियन अ० अ० **बोगोमोलेत्स**—जो कि पार्लियामेंट के एक डिपुटी हैं—का कहना है—

"स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन के लिए प्रस्थान करते समय मुझे बड़ा आनंद आ रहा है। यह इतिहास में एक स्मरणीय अधिवेशन होगा। यह स०स०स०र० की सारी जनता का एक राय होकर साम्यवाद के निर्माण को प्रदर्शित कर रहा है। यह सारे संसार को दिखायेगा कि यथार्थ जनसत्ता क्या है? यह सिद्ध करेगा कि हमारे महान् संघ की सारी जनता का कम्युनिस्ट-पार्टी और हमारे प्रिय नेता तवारिश् स्तालिन् में अपरिमित विश्वास है।"

*** ***

मास्को में आज सभी ११४३ डिपुटी उपस्थित हैं। उनमें से अधिकांश मास्को होटल की हाल ही में तैयार हुई विशाल इमारत में, ठहरे हैं। ये डिपुटी किस तरह के नर-नारी हैं, इसके लिए जगह जगह खड़ा नागरिकों का झुंड आपस में बात कर रहा है। उनकी शकल देखने से यद्यपि उनमें गोरे लंबे रूसी, ठिगने लेकिन चौरस छातीवाले मंगोल, भूरे रंगवाले ताजिक। पोशाक सब की न्यारी न्यारी। उनमें कितने ही ऐसे प्रसिद्ध स्तखानोवी कमकर और किसान हैं जिनको अपने काम के लिए सरकार

ने पदकों से अलंकृत किया है। उनमें कितने ही संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अकदमिक् हैं। कितने ही कलाकार स्त्री-पुरुष हैं, जिनका नाम कला-जगत् में बड़े गौरव से लिया जाता है। उनमें कितने ही चित्रकार हैं, जिनकी तूलिका ने सोवियत् भूमि का यश दूर दूर तक फैलाया है। उनमें कितने ही संसार में अपनी कीर्ति से अमर होनेवाले लेखक हैं। कितने ही उद्भट वैमानिक, सोवियत्-संघ-वीर हैं जिनकी हवाई उड़ान को सोवियत् से उत्तरी ध्रुव के रास्ते अमेरिका तक पहुँचने के कर्तब को देख कर सारी दुनिया चकित हो गई। ये थे वह डिपुटी जो उस दिन मास्को होटल और नगर की सड़कों पर देखे जाते थे।
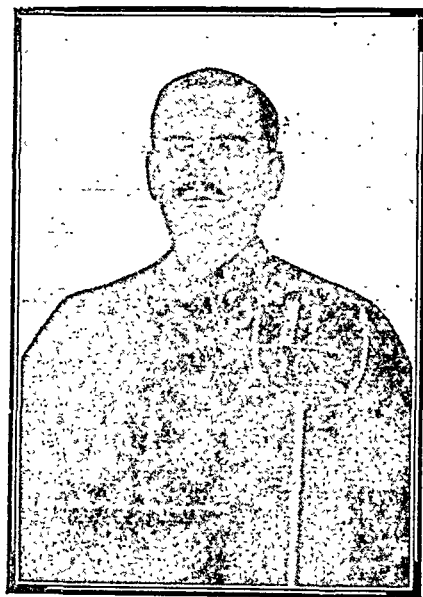
अन्द्रेयेफ़् (सोवियत्-स्पीकर)

***   ***

संघ-सोवियत् के अधिवेशन में **श्वेदर्वाकोफ़्** ने जब कहा—हमारे भवन का एक सदस्य १९ वर्षीया **सख़ारोवा** संसार के पार्लियामेंटों की सब से अल्पवयस्क डिपुटी तथा फ़ैक्टरी की डाइरेक्टर हैं, तो लोगों ने बड़े जोश के साथ तालियाँ बजाईं। लोगों के जोश का ठिकाना नहीं था, जब उसी वक्ता ने महान् **स्तख़ानोवी** स्वयं **स्तख़ानोफ़्** का नाम भवन के सदस्य के तौरपर लिया। **क्रिवोनोस्, ओग्नेफ़्** जैसे प्रसिद्ध कमकर (जो अपनी फ़ैक्टरी के

मैनेजर तथा औद्योगिक एकेडेमी के विद्यार्थी हैं) गुदोफ़्—जिसने नई युक्तियों को निकाल कर फ़ैक्टरी में अपने काम को ९० गुना अधिक पूरा किया—के नामों को सुनकर सभा पागल हो मिनटों ताली बजा रही थी। वहाँ कोन्स्तन्तिन वोरेन् मौजूद था, जिसने खेत काटने-दाँवने की एक ऐसी कंवाइन मशीन निकाली है जो ९५० आदमियों, १५० घोड़ों, ३७ भुस उड़ानेवाली मशीनों और २० घोड़े की दौरियों का काम अकेला करती है। वहाँ मौजूद थे ९ एकेडेमीशियन, ७ जगत्-प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर, जिनमें अकदमिक् वाच (फ़िज़िक्स का वैज्ञानिक) प्रोफ़ेसर बुर्देन्को (महान् चिकित्सक) मोस्क्विन् (महान् अभिनेता), अलेक्सेइ ताल्स्त्वा (महान् लेखक) सूत्रधार चित्रउरेली (नाट्य-कलाचार्य) थे।

अलेखेइ स्तख़ानोफ़् (पृ० २१९, ३३८, ४८४)

संघ-सोवियत्[1] के ५६९ मेंबरों में ४६१ पार्टी के सदस्य हैं। उस

---

[1] संघ-सोवियत् के ५६९ सदस्य निम्न जातियों से चुने गये हैं; यही सोवियत् की जातियाँ हैं—

की ३७ स्त्री-सदस्यों में २८ ऊँचे से ऊँचे राष्ट्रीय पदक प्राप्त कर चुकी हैं। सदस्यों में भिन्न भिन्न भाषाभाषी ३५ जातियों के व्यक्ति हैं और उनका ऐक्य-मत परस्पर स्नेहपूर्ण वर्ताव वतला रहा था कि सोवियत् की जनता परस्पर प्रेम-सूत्र में बँध कर फ़ौलाद के समान एक ठोस राष्ट्र बन गई है।

*** ***

जातिक-सोवियत् के प्रथम दिन की कार्रवाई

१२ जनवरी को क्रेमलिन् में जातिक-सोवियत का प्रथम अधिवेशन

१—रूसी	१४६	१७—उद्मुर्द	७
२—उक्रइनी	३४	१८—कोमी	८
३—बेलोरूसी	१५	१९—बुर्यत्	८
४—आज़ुर्बाइजानी	३४	२०—मारीयेस्	६
५—गुर्जी (जार्जियन्)	३३	२१—बश्किर	६
६—अर्मनी	३०	२२—याकूत्	६
७—तुर्कमान्	१७	२३—चेचन्स	५
८—उज़्बेक्	२६	२४—मर्दोव्	५
९—ताजिक	१६	२५—चेर्केदा	५
१०—कज़ाक	२४	२६—कर्बादिन्	४
११— किर्गिज़	१२	२७—चुवाश्	४
१२—तातार	१५	२८—नेन्स	४
१३—यहूदी	१५	२९—मोल्दाविन्	५
१४—जर्मन	९	३०—कराक़ल्पक्	४
१५—कल्मुक्	९	३१—अब्ख़ाज़ी	५
१६—ओसेतिन्	९	३२—करेली	४

अपने विशाल भवन में हुआ। ८ बजे सवेरे कार्रवाई शुरू होनेवाली थी लेकिन बहुत से सदस्य पहले ही से अपनी जगह पर बैठ चुके थे। जातिक-सोवियत् के ५७४ मेंबरों में ११० अर्थात् १९ सैकड़ा स्त्रियां थीं। लोग बड़े ग़ौर से इंतज़ार कर रहे थे। **भवन** की घड़ी जब ८ बजाने लगी, उसी समय **स्तालिन् मोलोतोफ़्, वोरोशिलोफ़्, कगानोविच्, कालिनिन् अन्द्रयेफ़् मीकोयान्, चुवार, कोसियोर्, येज़ोफ़्, यज़्दानोफ़्** के साथ गवर्नमेंट की बेंचों पर मौजूद हुए। देखने के साथ ही सदस्य अपनी जगहों पर खड़े हो गये और जनता के मित्र तथा महान् नेता का ज़बर्दस्त करतल ध्वनि और नारों के साथ अभिनन्दन किया। **'हुरा! स्तालिन्!** "**हुरा स्तालिन्!**' 'सुखपूर्ण यशस्वी जीवन के लिए!' हाल के चारों ओर जोशीले नारे लग रहे थे। प्रत्येक डिपुटी ने अपनी अपनी भाषा में अपने अन्तस्तल से हार्दिक भक्ति का प्रदर्शन किया।—'चिरंजीव हमारा प्यारा स्तालिन्!' के शब्दों को एक कंठ से निकाल कर सारे राष्ट्र की ओर से उन्होंने इस महान् राष्ट्रनिर्माता के लिये श्रद्धांजलि अर्पण की।

येज़ोफ़् (गृह-सचिव) (पृ० २१६)

प्रस्ताव १—डिपुटी ग० ई० पेत्रोव्स्की (उक्रइन्) ने भाषण-मंच पर खड़ा होकर प्रस्ताव किया कि जातिक-सोवियत् के वृद्धतम डिपुटी तथा कम्युनिस्ट-पार्टी के मेम्बर म० ग० श्खकया को अधिवेशन के उद्घाटन करने का काम सौंपा जाय। भवन ने करतल-ध्वनि से प्रस्ताव का अनु-

यज्दानोफ़् (लेनिन्ग्राद्-सोवियत्-प्रधान)

मोदन किया। **श्खकया** अध्यक्ष के आसन पर पहुँचे। उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया, जिसके कुछ वाक्य ये हैं—

"प्रिय साथियो, **स०स०स०र० की महासोवियत्** की जातिक-सोवियत् के सदस्यो, प्रथम अधिवेशन के उद्घाटन से पहले चुनाव के इतिहास पर एक सरसरी निगाह डालने के लिए आज्ञा दीजिए। ......सोवियत् जनता का परस्पर भ्रातृभाव और एकता तथा लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी के साथ उसकी घनिष्टता हमारी जन्मभूमि को दुर्जेय बनाती है। हम लोग ७

योजन लम्बे पगों के साथ सीधे बग़ैर ज़रा सा भी इधर उधर हुए पूर्ण साम्य-वाद की तरफ़ सारे स०स०स०र० में, सारे उसके ११ प्रजातंत्रों तथा अन्त-र्भुक्त स्वायत्त-जातिक भागों में पूर्ण साम्यवाद की तरफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं।

......हम लोग एक नये जीवन का निर्माण कर रहे हैं। साथियो, हम एक नई संस्कृति, एक नई सभ्यता—जो कि बाहर से जातीय और भीतर से साम्यवादी है—को रच रहे हैं। ज़ारशाही के ज़माने में जो जातियाँ अत्यन्त पिछड़ी हुई तथा अन्धकार पूर्ण अवस्था में थीं, अब वह स०स०स०र० की स्वतंत्र जनता के रूप में परिणत हो गई हैं। अपने पुराने चोले को जातिक बंधनों झगड़ों और परस्पर की लड़ाइयों—जो कि सदियों से उनके भीतर मौजूद थीं—को छोड़कर, अब साम्यवादी उद्योग, साम्यवादी कृषि को आपस के सहयोग के साथ बना रही है। सोवियत्-संघ में बसने वाले सभी लोग महान् **लेनिन्-स्तालिन्** पार्टी के अन्तर्राष्ट्रीय लाल झंडे के नीचे एकत्रित हुए हैं।

"उनकी सन्तान दोनों तरह से हमारे यशस्वी वीर लाल सेना के सैनिक के रूप में तथा हमारी जन्मभूमि की सीमाओं की प्रतिदिन रक्षा करते हुए सीमान्त-रक्षक सिपाही के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय फ़ासिस्ट दुश्मनों और उन के गुप्तचरों के रास्ते को रोके हुए हैं।......

"हृदय से धन्यवाद है सारी रूसी जनता को। बहुत धन्यवाद है विजयी श्रमिक-क्रान्ति के गहवारे लेनिन् की नगरी के कमकरों को। हमारी लाल राजधानी मास्को के कमकरों को हृदय से धन्यवाद। **इवानोवो** के जुलाहे नर-नारियों को, **दोन्बास्, बाकू, उराल, त्बिलिसी** के कमकरों को धन्यवाद ! और धन्यवाद है हमारे रेल के कमकरों को। नगर और गाँव की सभी श्रमिक जनता को—जो सार्वजनीन **स्तख़ानोफ़्**-आन्दोलन को बढ़ा रही है; और उसके ज़रिए संसार के एक छठे हिस्से पर साम्यवाद की विजय को दृढ़ कर रही है, धन्यवाद !.............

"इन थोड़े से शब्दों और इन अभिलाषाओं के साथ मैं स०स०स०र०

की महासोवियत् के जातिक-संघ के प्रथम अधिवेशन के उद्घाटन को घोषित करता हूँ।" (तूफ़ानी हर्षध्वनि)

*** ***

प्रस्ताव २—न० म० **श्वेर्निक्** सर्व-सम्मति से जातिक-सोवियत् के अध्यक्ष चुने गये।

प्रस्ताव ३–४—च० अ० **अस्लानोवा**, और अ० म० **लेवित्स्की** उपाध्यक्ष चुने गये।

प्रस्ताव ५—जातिक-सोवियत् ने अधिवेशन के कार्य-संचालन के लिए निम्न नियम स्वीकृत किये—(देखो, संघ सोवियत् प्रस्ताव ५)

प्रस्ताव ६—डिप्टी न० अ० **बुल्गानिन्** ने रूसी-सोवियत्-संयुक्त सोशलिस्ट-रिपब्लिक, कज़ाकस्तान, और बेलो रूसिया के सदस्यों की ओर से निम्न कार्य-विवरण प्रस्तावित किया जो कि सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ .... (देखो संघ-सोवियत् प्रस्ताव ६)

प्रस्ताव ७—जातिक-सोवियत् ने निश्चित किया कि ६ठे प्रस्ताव के ३,४,५,६,७ विषयों को जातिक-सोवियत् और संघ-सोवियत् की सम्मिलित बैठक में तय किया जाय।

प्रस्ताव ८—जातिक-सोवियत् के डिपुटियों के निर्वाचन के औचित्यानौचित्य की परीक्षा करने के लिए ११ व्यक्तियों का एक प्रमाणदायक-कमीशन चुना गया।

इसके वाद जातिक-सोवियत् ने अपने स्थायी कमीशनों की नियुक्ति पर विचार करना आरंभ किया—

प्रस्ताव ९—डिपुटी न० म० मर्चक ने अन्य कितने ही डिपुटियों की तरफ़ से एक कानूनी कमीशन की नियुक्ति का प्रस्ताव किया और जातिक-सोवियत् ने उसे स्वीकृत करते हुए १० व्यक्तियों का कानूनी कमीशन नियुक्त किया।

प्रस्ताव १०—अ० ई० **स्तेत्स्की** के प्रस्तावानुसार जातिक-सोवियत् ने एक बजट-कमीशन नियत किया जिसके लिए १३ व्यक्ति चुने गये—

प्रस्ताव ११—डिपुटी **ओ० ज० श्मित्** ने **मास्को, तातारिया** और लेनिन्ग्राद् के प्रतिनिधियों की तरफ़ से परराष्ट्र-विभाग-कमीशन नियुक्त करने के लिए प्रस्ताव किया और उसे स्वीकृत करते हुए १० व्यक्तियों का परराष्ट्र-विभाग-कमीशन नियुक्त हुआ।

इसके बाद जातिक-सोवियत् की पहली बैठक समाप्त हुई।

*** ***

संघ-सोवियत् के प्रथम दिन के अधिवेशन की कार्रवाई

क्रेमलिन् के दोनों पद्मराग-जटित लाल तारे बिजली से चमक रहे थे। **क्रेम्लिन्** सोवियत्-भूमि के मालिकों—**स०स०स०र०**—के महासोवियत् के सदस्यों—का स्वागत करने के लिए तैयार थी। **क्रेम्लिन्** प्रासाद का सफ़ेद संगमर्मर से बना चमकता विशाल हाल संघ-सोवियत् के सदस्यों से जल्दी ही भर गया।

४ बजने में १५ मिनट थे, जब कि दूसरे देशों के राजदूत और दूसरे प्रतिनिधि अपनी सीटों पर आकर बैठ गये। सोवियत् और दूसरे देशों के पत्र-प्रतिनिधि अपनी अपनी जगहों पर पहले ही जम चुके थे।

४ बजे (शाम) को एकबएक तूफ़ानी नारे लगने लगे। सब की नज़र उन आसनों की तरफ़ लगी थी, जिनपर **तवारिश् स्तालिन्, कालिनिन्, मोलोतोफ़्, वोरोशिलोफ़् कगानोविच्, अन्द्रेयेफ़्, मिकोयान्, चुवार्, कोसियोर्, यज़्दानोफ़्, येज़ोफ़्, लितविनोफ़्, पेत्रोव्स्की, श्वेर्निक्, ख़ुश्चेफ़् बुल्गानिन्, दिमित्रोफ़्** और दूसरे नेता दिखलाई पड़े। सदस्यों ने खड़े होकर **योसेफ़् विसारियोनोविच् स्तालिन्** और उनके सहकारियों का बड़े जोश

के साथ स्वागत किया। अनेक भाषाओं में ऊँचे नारे लगने लगे। 'हुरा' 'वाशा', 'जिन्दावाद', 'चिरंजीव तवारिश् स्तालिन्' कितने ही मिनटों तक ये नारे जारी रहे।

प्रस्ताव १—डिपुटी ख़ुशचेफ़् ने प्रस्ताव किया कि भवन के वृद्धतम डिपुटी अकदमिक बाच् संघ-सोवियत् के प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन करें। भवन ने संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक के लिए किये गये प्रस्ताव को हर्ष-ध्वनि के साथ स्वीकृत किया।

डिपुटी वाच् अध्यक्ष की मेज़ पर गये। उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया, जिसके कुछ वाक्य इस प्रकार हैं—

"साथियो, हमारे देश के ९ करोड़ निर्वाचिकों की इच्छा के अनुसार स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन के उदघाटन और संचालन का सन्माननीय और दायित्वपूर्ण कर्तव्य महान् स्तालिनीय विधान के अनुसार मेरे ऊपर पड़ा है। (ज़ोर की हर्षध्वनि)

"स्तालिनीय विधान मनुष्य-जाति के इतिहास में एक नये महान् युग—उपज के साधनों और औज़ारों के सामूहिक स्वामित्व और उपभोग के सिद्धान्त पर एक साम्यवादी समाज के युग—की सूचना देता है।.....

"साथियो, २० वर्ष वीत गये। जब से कि महान् अक्तूबरी साम्यवादी क्रान्ति ने हमें ले आकर उस जगह पहुँचा दिया; जहाँ कि हमने समाजवादी समाज की इमारत की मज़बूत आधारशिला ही नहीं रखी, बल्कि हमने करीव करीव सारी इमारत को बनाकर तैयार कर दिया है। यह बात परीक्षा पर ठीक उतरती है; यदि हम सभी सर्वमान्य राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कार्य-क्षेत्रों में प्राप्त अपनी सफलताओं को देखें। लेकिन अभी हमारे सामने बहुत दुरूह और कठिन काम है, इस इमारत को मुकम्मल और सुसज्जित करने का...........

"साथियो, हमारी सफलताएँ वड़ी हैं; लेकिन हमको अपने दुश्मनों—पूँजीवादी घिरावे—को नहीं भूलना चाहिए। दुश्मन हमारी सफलताओं

में पूँजीवादी प्रथा—जिसकी कि वह हिफ़ाज़त करना चाहते हैं—के लिए सब से बड़ा ख़तरा समझते हैं। अगर पिछले चन्द सालों में हमारे ऊपर हमला नहीं हुआ, तो इसकी वजह थी; हमारी ज़बर्दस्त लाल सेना[1], जिस से कि वह डरते थे और समझते थे कि यदि हम चढ़ाई करेंगे, तो नाश की घड़ी को न्योता देंगे। (देर तक तूफ़ानी हर्षध्वनि)

ताजिकिस्तान के डिपुटी

और साथियो, अपनी यांत्रिक साधन - सम्पन्नता तथा सैनिक तैयारी में, इसमें शक नहीं कि, हमारी लाल-सेना सर्वोत्तम है। साथ ही इसमें भी सन्देह नहीं कि जन्मभूमि के प्रेम के लिए वह अद्वितीय है।

पूँजीवादी देशों में सेना के लिए रँगरूट चुने जाते हैं, उस कमकर जनता में से, जो कि पूँजीवादी वर्ग की शत्रु है। इसीलिए उन सेनाओं में कड़े डंडों के ज़रिये विनय (डिसिप्लिन) स्थापित की जाती है।

---

[1] १९३६ में सोवियत्-सरकार ने जितना ख़र्च सेना पर किया वह दो तीन साल पहले के ख़र्च से ६ गुना ज़्यादा था। १९३७ का ख़र्च १९३६ से ३५ सैकड़ा ज़्यादा था; और रुपयों में हिसाब करने पर १० अरब ३० करोड़ होता है।

हमारी लाल सेना--जो कि कमकर जनता का लोहू और ख़ून है—तहेदिल से अपार भक्ति के साथ जनता के नये सुखमय जीवन के निर्माण के एक उद्देश्य में तत्पर है। हम लोग हर तरह से शान्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। सिर्फ इसीलिए नहीं कि पूर्णतया निरपराध जनता का काटना हमारे लिए बड़ा ही घृणित और नीच कर्म है; बल्कि इसलिए भी कि लड़ाई हमारे साम्यवादी निर्माण के काम के वेग को रोक देगी। हम शान्ति चाहते हैं; लेकिन अगर हमारे ऊपर हमला हुआ तो हम अपनी साम्यवादी जन्मभूमि की रक्षा के लिए एक आदमी की तरह उठ खड़े होंगे और फिर शत्रुओं के लिए सर्वनाश! (देर तक तूफ़ानी करतल-ध्वनि सब खड़े होकर 'चिरंजीव हमारी लाल सेना!' 'हुरा!')........

अकदमिक् बाच (डिपुटी)

साथियो, मैं घोषित करता हूँ कि संघ-सोवियत् का प्रथम अधिवेशन उद्घाटित हुआ।

प्रस्ताव २--४ बज कर २५ मिनट पर डिपुटी **बाच्** ने अधिवेशन का उद्घाटन किया। फिर डिपुटी ई० ई० **सिदोरोफ़्** (मास्को सोवियत् के अध्यक्ष) ने **मास्को**, **लेनिन्ग्राद्** और **कियेफ़्** के डिपुटियों के समूह की ओर से प्रस्ताव किया कि **लेनिन्-स्तालिन्** पार्टी के ध्येय के लिए, हमारी साम्यवादी जन्मभूमि की श्रमिक जनता के लिए ज़बर्दस्त लड़नेवाले संघ-सोवियत् के डिपुटी पोलिटिकल ब्यूरो के मेम्बर, सोवियत्-संघ के साम्यवादी-दल
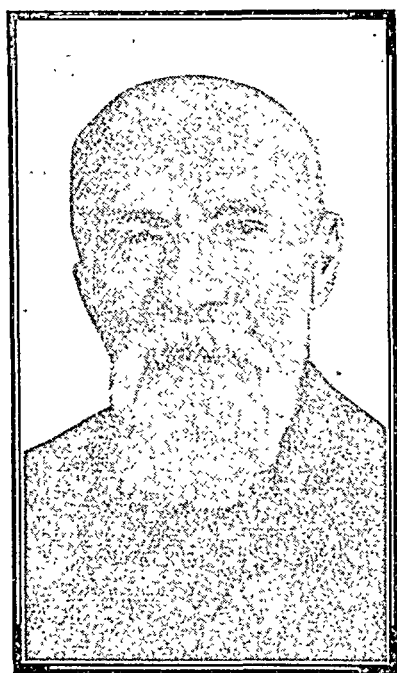
की केन्द्रीय-समिति के मंत्री अन्द्रेइ अन्द्रयेविच् अन्द्रेयेफ़् संघ-सोवियत् के अध्यक्ष (स्पीकर) वनाये जायँ। भवन ने ज़वर्दस्त हर्षध्वनि के साथ प्रस्ताव का अनुमोदन किया। डिपुटी वाच् ने प्रस्ताव पर वोट लिया।

साथी अन्द्रेयेफ़् सर्वसम्मति से संघ-सोवियत् के अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया।

प्रस्ताव ३—डिपुटी येतुशेन्को मंच पर खड़े हुए। ओदेसा, कियेफ़्, और मिन्स्क के सदस्यों की ओर से उन्होंने डिपुटी त्रौफिम् देनिसोविच् लिसेंको का नाम उपाध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया। उन्होंने कहा— लिसेंको खरकोफ़् प्रान्त के एक किसान के लड़के हैं। पार्टी के मेम्वर नहीं हैं लेकिन अकदमिक हैं। इस वक्त वह ओदेसा के पशु-प्रसवन और निर्वाचन के वैज्ञानिक अन्वेपणालय के प्रधान हैं। कृषि-विज्ञान के विकास-संवंधी अपने काम में लिसेंको डार्विन, तिमियाजेफ़् और मिचुरिन् के पक्के शिष्य हैं। उन्होंने वीजों के संस्कार (वेर्नलाइज़ेशन=फ़सल को समय से पहले पैदा करने की विधि), कपास के वीजों और आलू के वैज्ञानिक निर्वाचन की समस्याओं को वड़ी सफलता के साथ हल किया हैं। उनका नाम हमारे देश के पंचायती खेतिहरों में चारों ओर प्रसिद्ध है। लिसेंको के वैज्ञानिक कार्य ने साम्यवादी खेतों की उपज को वढ़ाने में वहुत अधिक क्रियात्मक सहायता की हैं। साम्यवादी जन्मभूमि की सेवाओं तथा अपनी उच्चकोटि की वैज्ञानिक खोजों के लिए अकदमिक लिसेंको को लेनिन्-पदक मिला है।

अध्यक्ष ने वोट लिया और सर्वसम्मति से लिसेंको उपाध्यक्ष चुने गये।

प्रस्ताव ४—डिपुटी युसुपोफ़् ने उज़्वेक, कज़ाक् प्रजातंत्रों, मास्को नगर, तथा मास्को प्रान्त के प्रतिनिधियों की तरफ़ से प्रस्ताव किया कि डिपुटी सुल्तान् सेगिजवयेफ़् (उज़्वेक् सोवियत् साम्यवादी रिपब्लिक) उपाध्यक्ष चुने जायँ। उन्होंने कहा—कि तवारिश् सेगिजवयेफ़् उज़्वेक स०स०र० के मंत्रिमंडल के अध्यक्ष हैं। साम्यवाद की निर्माण-संवंधी लड़ाई

के महान् शिक्षणालय को इन्होंने सफलतापूर्वक पास किया है। कज़ाक-स्तान और दूसरे प्रजातंत्र, उन्हें अच्छी तरह जानते हैं।

सर्वसम्मति से **सेगिज़्बयेफ़्** उपाध्यक्ष चुने गये।

प्रस्ताव ५—डिपुटी आलेमासोफ़् के प्रस्तावानुसार संघसोवियत् ने अधिवेशन के कार्य-संचालन के लिए निम्न नियम स्वीकृत किये—

१—संघ-सोवियत् की बैठक ११ वजे सवेरे से ३ बजे शाम तक हुआ करेगी।

२—संघ-सोवियत् के अधिवेशन के कार्य-विवरण प्रश्नों के रिपोर्टर वही होंगे जिन्हें संघसोवियत् के अध्यक्ष ने मंजूर किया है।

३—संघ-सोवियत् के कोई भी ५० डिपुटी मिलकर अपना सहायक रिपोर्टर भेज सकते हैं।

४—रिपोर्टरों को रिपोर्ट देने के लिए एक घंटा समय दिया जायगा। और अन्तिम आलोचना के लिए ३० मिनट। सहायक रिपोर्टरों को अपनी सहायक रिपोर्ट सुनाने के लिए ३० मिनट और अन्तिम आलोचना के लिए १५ मिनट दिये जायेंगे।

५—वक्ताओं को पहले बोलने के लिए २० मिनट और दूसरी बार बोलने के लिए ५ मिनट मिलेगा।

६—वैयक्तिक वक्तव्य और जिज्ञासा-सम्बन्धी प्रश्नों को लिखकर देना चाहिए। उसे संघ-सोवियत् के अध्यक्ष उसी वक्त पढ़ देंगे या बैठक के ख़तम होने के समय यह विषय पर निर्भर है।

७—दिन की सूची में जो प्रश्न नहीं आये हैं उन्हें लिखकर देना चाहिए। संघ-सोवियत् के अध्यक्ष तुरन्त उसे पढ़ देंगे।

८—सुझाव के लिए ५ मिनट बोलने का अधिकार होगा। वोट लेने के कारण पर बात करने के लिए ३ मिनट की आज्ञा होगी।

प्रस्ताव ६—डिपुटी अ० अ० **ज़्दानोफ़्** के लेनिन्ग्राद्, मास्को, कियेफ़्,

त्विलसी के प्रतिनिधियों की ओर से प्रस्ताव करने पर निम्न कार्य-विवरण स्वीकृत किया गया—

१—संघ-सोवियत् के प्रमाणदायक-कमीशन का निर्वाचन।

२—संघ-सोवियत् के लिए स्थायी-कमीशन नियुक्त करना।

३—स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति तथा जन-कमीसर-समिति के द्वारा स्वीकृत निश्चयों के संबंध में स०स०स०र० के विधान की कुछ धाराओं में संशोधन और सम्बर्द्धन ले आना।

४—स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रेसीदिउम् (मंत्रि-मंडल) का चुनाव—

(क) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के अध्यक्ष का चुनाव।

(ख) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के उपाध्यक्ष का चुनाव।

(ग) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के मंत्री का चुनाव।

(घ) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के सदस्यों का चुनाव।

५—स०स०स०र० की गवर्नमेंट—स०स०स०र० के जन-कमीसर (मंत्री) की कौंसिल—का बनाना।

६—स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी (प्रोक्यूरेटर) की नियुक्ति।

७—डिपुटियों के अपने कर्तव्य के पूरा करने के संबंध में किये गये वादों का देना।

प्रस्ताव ७—संघ-सोवियत् ने निश्चित किया कि छठे प्रस्ताव के ३,४,५,६,७ विषयों को संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् की सम्मिलित वैठक में तय किया जाय।

प्रस्ताव ८—संघ-सोवियत् के डिपुटियों के निर्वाचन के औचित्या-नौचित्य की परीक्षा करने के लिए निम्न व्यक्तियों का एक प्रमाणदायक कमीशन चुना गया।

(१) अध्यक्ष—अ० स० **श्चदर्वाकोफ़्**।

(२) सदस्य—अ० म० **अलेमासोफ़्**, फ० व० **शगीमर्दानोफ़्**, **आइत बाइ खुदाइबर्गेनोफ़्**, क० ई० **निकोलयेवा**, अ० ए० **कोर्नेइच्क्**, म० द० **द्युकानोफ़्**, न० हि० **सुगोन्यका**, **कुलज़न् उनेगलियेफ़्**, ग० अ० **अरुत्युन्न-यान्** और **तैमूर इमाम कुली ओब्लीकुलीयेफ़्**।

इसके बाद संघ-सोवियत् की पहली बैठक समाप्त हुई।

***   ***

संघ-सोवियत् के सामने एक स्थायी बजट कमीशन का प्रस्ताव पेश करते हुए डिपुटी द० स० **कोरोत्चेन्को** ने कहा—

"हमारी साम्यवादी अर्थनीति में बजट अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण चीज़ है। बजट हमारे देश के सारे आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालता है। बजट सोवियत्-सरकार की राष्ट्रीय आय निश्चित करता है; हमारी जनता के लाभ के लिए, साम्यवादी समाज के विकास के लाभ के लिए, कोल्-ख़ोज़् और सोव्ख़ोज़् (सरकारी खेती) के विकास और दृढ़ करने के लिए। बजेट निश्चित करता है, व्यय को जो रहने के घरों, स्कूलों, अस्पतालों के निर्माण में ख़र्च होगा, जो म्युनिसिपलिटी पर ख़र्च होगा, जो हमारे संघ की विशाल कमकर जनता की आर्थिक भलाई तथा सांस्कृतिक उन्नति के बढ़ाने में खर्च होगा। बजेट निश्चित करता है, संघ-सरकार के उन ख़र्चों को, जो कि हमारी साम्यवादी जन्मभूमि की रक्षा और दृढ़ता के लिए आवश्यक सैनिक शक्ति पर ख़र्च होता है, जो हमारी बहादुर लाल-सेना की ताक़त को मज़बूत करने के लिए ख़र्च होता है। (हर्षध्वनि)

"हमारे साम्यवादी राज्य के हाथों में बजेट अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण काम है,

जो कि हमारे देश में साम्यवादी निर्माण की दृढ़ता के काम में, कमकर जनता की आर्थिक भलाई, और सांस्कृतिक उन्नति के काम में अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण चीज़ है। आज वर्तमान समय में तो साम्यवादी (कम्युनिस्ट) समाज को कामयाबी के साथ निर्माण करने के काम में और भी महत्त्व रखता है। संघ-राज्य के बजट के प्रश्नों पर स०स०स०र० की महासोवियत् को बड़े ध्यान से विचार करना चाहिए।

"बजेट के हर एक अंश, आय-व्यय, दोनों बातों पर बड़ी बारीकी के साथ विचार करने, बजट के सभी अंगों के कार्य-रूप में परणित करने के लिए बाक़ायदा अंकुश की व्यवस्था करने के लिए महासोवियत् के अधि-वेशन द्वारा स्वीकृति लेने के लिए जो बजेट पेश होगा, उसपर ग़ौर करने के लिए मैं **उक्रइन्, मास्को नगर, मास्को प्रान्त** और **कज़ाकस्तान** के मेम्बरों की ओर से प्रस्ताव करता हूँ कि संघ-सोवियत् एक स्थायी बजट-कमीशन नियुक्त करे।

*** ***

डिपुटी ल० प० **बेरिया** ने परराष्ट्र-विभाग के स्थायी कमीशन की नियुक्ति के लिए प्रस्ताव करते हुए कहा—सोवियत् संघ की वैदेशिक नीति निर्भर करती है, साम्यवादी निर्माण के लाभ के ऊपर तथा पूँजीवादी राज्यों से घिरे हमारे देश की परिस्थिति के ऊपर। साथी स्तालिन् ने कहा है—'हमारी वैदेशिक नीति स्पष्ट है। हम शान्ति को कायम रखना चाहते हैं। ....हम शान्ति के लिए हैं। और हम शान्ति के ज़बर्दस्त हामी हैं। लेकिन हम धमकियों से डरनेवाले नहीं हैं। और तैयार हैं, लड़ाई के लिए छेड़खानी करनेवालों को थप्पड़ की जगह घूसा मारने के लिए।'

"साथी स्तालिन् के कहे हुए ये शब्द सारी सोवियत् जनता की इच्छा और विचारों को प्रकट करते हैं।.........

"वर्तमान् समय में जब कि हमारे देश में हर एक आदमी को शान्ति-

पूर्ण काम और सुख-सन्तोषमय जीवन पाना निश्चित है, उनकी सांस्कृतिक और आर्थिक उन्नति का विकास निश्चित है; पूँजीवादी देशों में फ़ासिस्ट राज्यों के मालिक, लोगों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़का रहे हैं—और मुट्ठी भर साम्राज्यवादियों की भलाई के लिए लोगों को युद्ध की भीषण अग्नि में झोंक रहे हैं।

"ऐसे समय में महान् कहे जानेवाले पूँजीवादी राष्ट्र छोटी जातियों को अपना दास बना रहे हैं—हमारे देश में, सोवियत्-भूमि में, सभी जातियों की अपनी जातीय आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि सुनिश्चित है। संघ-सोवियत् की जातियाँ अखंड मित्रता के साथ एक महान् परिवार बन गई हैं।

"हमारी वैदेशिक नीति को दृढ़ करती है हमारी लाल सेना की दुर्धर्ष शक्ति (तूफ़ानी हर्षध्वनि। सब खड़े हो जाते हैं और नारे लगाने लगते हैं, 'हुरा, साथी **वोरोशिलोफ़्**')। हमारी लाल-सेना सोवियत्-जनता के साथ ख़ून के सम्बन्ध से बँधी हुई है, और उसके अपार प्रेम की भाजन है। . . . .

"हमारी वैदेशिक नीति, उस सोवियत् जनता की नैतिक और राजनैतिक एकता पर अवलंबित है, जो कि लेनिन्-स्तालिन् पार्टी को घेर कर एक बनी हैं। सोवियत्-भूमि के सभी लोग अपने प्रिय नेता महान् स्तालिन् के चारों ओर खड़े हो एक बने हैं (देर तक तूफ़ानी हर्षध्वनि)। (सभी खड़े होकर नारा लगाते हैं। 'चिरंजीव प्यारे साथी स्तालिन्', 'हुरा साथी स्तालिन्!' स्तालिन् के लिए नारा कई मिनट तक लगता रहा)।

"हमारा देश जो एक जबर्दस्त साम्यवादी शक्ति बन गया है, उसके लिए हम किसके कृतज्ञ हैं? संसार में सबसे बलिष्ठ हमारी किसान-मज़दूरों की लाल-सेना है, उसके लिए हम किस के ऋणी हैं? सोवियत्-संघ की जातियाँ जो आपस में घनिष्ट मित्रता के सूत्र से बद्ध हैं, उसके लिए हम किसके ऋणी हैं? इन सबके लिए सोवियत्-संघ के लोग ऋणी हैं

लेनिन्-स्तालिन् पार्टी की नीति के, ऋणी हैं महान् स्तालिन् के बुद्धिमत्ता-पूर्ण नेतृत्व के! (तवारिश् स्तालिन् के सन्मान में ज़बर्दस्त हर्ष-ध्वनि)

"हमारे देश में साम्यवाद की विजय, सोवियत्-राष्ट्र की दिन पर दिन बढ़ती शक्ति के कारण फ़ासिस्ट लड़ाई सुलगानेवालों के हम अधिकाधिक घोर घृणा और क्रोध के पात्र बनते जा रहे हैं। हमें एक क्षण के लिए भी साथी स्तालिन् की बुद्धिमत्तापूर्ण सम्मति को भूलना नहीं चाहिए कि सोवियत्-संघ को घेरनेवाले पूँजीवादी राज्य हमारे ऊपर हमला करने के मौक़े की प्रतीक्षा में हैं। वह जैसे भी हो तैसे हमें चूर्ण करना चाहते हैं। हमारी शक्ति को निर्बल बनाना चाहते हैं।

"वैदेशिक नीति के प्रश्न के महत्त्व को देखते हुए............. मैं प्रस्ताव करता हूँ कि संघ-सोवियत् अपना एक स्थायी परराष्ट्र-कमीशन नियुक्त करे।"

२३—औद्योगिक प्रगति

सोवियत्-भूमि में उसके उद्योग-धंधों की जो उन्नति हुई है, वह संसार के इतिहास में अभूतपूर्व है। देश के उद्योगीकरण को एक तरह से उन्होंने ख़ाली हाथ शुरू किया था। मुल्क के पहले के स्थापित कारख़ाने प्रायः बन्द हो चुके थे। ३ वर्ष के ख़ूनी गृह-युद्ध ने रेलों, जहाज़ों, स्टीमरों को प्रायः बिलकुल ही नष्ट कर दिया था। यंत्र और मेकेनिकल इंजीनियरिंग की विद्या अभी रूसी लोगों को छू भर ही गई थी। नये कारख़ानों के खोलने और बाहर से मशीनों के मँगाने के लिए पैसे की ज़रूरत थी। देश में न पैसा था, न बाहर का कोई देश एक पैसा भी ऋण देने के लिए तैयार था। ज़ारशाही ने इतने रुपये इंगलैंड, अमेरिका आदि से उधार लिये थे, कि उनके सूद तक का भी देना नवजात सोवियत्-शासन के लिए असंभव था। तीन वर्ष के महायुद्ध को चलाने के लिए ज़ारशाही ने इन कर्ज़ों का अधिक भाग लिया था। कर्ज़ की ज़िम्मेवारी से इन्कार कर देने के सिवा सोवियत् सरकार को कोई चारा न था। तीन वर्ष तक इंगलैंड, फ़्रांस, जापान ने रूस के गृहयुद्ध में पैसा और गोला-बारूद तथा कभी कभी फ़ौजें भी देकर क्रान्तिविरोधियों की मदद कीं। उसमें तो वे विफल हुए, लेकिन अब भी सोवियत्-शासन को उन्होंने न स्वीकार किया था, न राजदूतों का परस्पर परिवर्तन किया था।

यह हालत थी जब कि सोवियत्-सरकार ने देश का उद्योगीकरण आरंभ किया।

उसके पास लकड़ी का अटूट् ख़जाना था। उसके पास बाकू का तेल और पेट्रोल था। अपना पेट काटकर वह कुछ गेहूँ भी बचा सकते थे। ये ही तीन चीज़ें थीं, जिनकी मदद से सोवियत् के कर्णधारों ने देश में नये

नये कल-कारख़ानों को स्थापित करना शुरू किया। वह उन चीज़ों को जर्मनी, अमेरिका जैसे देशों के पास भेजते थे और बदल कर नई मशीनें ख़रीदते थे। जैसे गाँवों में किसान जौ-गेहूँ देकर साग-भाजी बेचनेवालों या छोटे दूकानदारों से चीज़ें बदलते हैं, ठीक इसी तरह यह काम जारी हुआ। न्यूयार्क में प्रासादों का एक बड़ा भारी मुहल्ला ज़ार की सम्पत्ति थी। अमेरिकावालों ने उसे अपने क़र्ज़ में कुर्क कर लिया। बाज़ार में एक पैसे की भी साख न रहने से व्यापारी को जैसी दिक़्क़तें पड़ती हैं, सोवियत्-सरकार को भी वैसी ही दिक़्क़तें उठानी पड़ती थीं।

उन्होंने बड़े उत्साह, बड़े त्याग और बड़ी होशियारी के साथ अपना काम किया। १९२० तक ज़ारशाही रूसी साम्राज्य का बहुत सा हिस्सा सोवियत्-शासन के हाथ में आ गया था। लेकिन काकेशस्-और दूसरे कुछ भागों में अब भी क्रान्ति-विरोधियों का कब्ज़ा था। लेनिन् ने इस अवस्था में भी उद्योग-धंधा, कल-कारख़ाने और सोवियत् के उद्योग को अपने पाँव पर खड़ा करने की कोशिश की। व्यापार, व्यक्तियों के हाथ से राष्ट्र के हाथ में आ गया था। मकान आदि के स्वामित्व में भी कितनी ही दूर तक समाजवाद की स्थापना हो चुकी थी, लेकिन मुल्क का आर्थिक ढाँचा इतना ख़राब हो गया था, कि लेनिन् को अपनी समाजवादी नीति को कुछ ढीला करना पड़ा। और नवीन आर्थिक नीति (न-आ-नी) का निश्चय करना पड़ा; जिसमें कितने ही क्षेत्रों में जहाँ समाजवाद आगे बढ़ चुका था, वहाँ से उसे पीछे हटना पड़ा। लेनिन् ने कहा—न-आ-नी द्वारा पीछे हटना वस्तुतः पीछे जाने के लिए नहीं है; बल्कि सारी शक्ति लगाकर और आगे कूदने के लिए। न-आ-नी को देख कर पूँजीवादी घरों में घीके चिराग़ जलने लगे। उन्होंने समझा, रूस में समाजवाद का तजर्बा नाकामयाब साबित हुआ।

न-आ-नी को उद्घोषित किये दो वर्ष भी नहीं हुए थे, कि २२ जनवरी १९२४ को लेनिन् का देहान्त हो गया। देश का उद्योग-धंधा अभी उस अवस्था से भी बहुत पीछे था, जहाँ कि ज़ारशाही रूस १९१३ ई० में

था। पार्टी और देश का नेतृत्व जनता के सब से नज़दीक और सब से अधिक प्रिय स्तालिन् के सिर पर आया। उसने देखा, कि देश का कल्याण उद्योग-धंधों को आगे बढ़ाये बिना नहीं हो सकता। कल-कारख़ानों को बिना बढ़ाये और मज़बूत किये समाजवाद की नींव देश में दृढ़ नहीं हो सकती। न-आ-नी ने हमें थोड़ा सा साँस लेने का मौक़ा दिया है। अगर वह देर तक रह गई, तो समाजवाद को बहुत नुकसान होगा।

उस वक़्त सोवियत् में तीन दल थे। बुख़ारिन् के नेतृत्व में नरम दल कह रहा था—हमने बहुत जल्दी की है, इस तरह देश को शीघ्र बदलने में बहुत हानि होने की संभावना है। लोग हर रोज़ की कठिनाइयों को ज़्यादा दिनों तक बर्दाश्त नहीं करेंगे। अच्छा यही है कि रेलों, जहाज़ों, बड़े बड़े कारख़ानों आदि को समाज के हाथ में रख कर बाक़ी व्यक्तियों के हाथ में छोड़ देना चाहिए; और समझा बुझाकर लोगों को समाजवाद के लिए तैयार करना चाहिए।

स्तालिन्—जो पार्टी के बहुमत का अगुवा था—का कहना था। हमारी गति तीव्र होनी चाहिए। रूस में शीघ्र से शीघ्र हमें समाजवाद की नींव दृढ़ कर देनी चाहिए; और इसके लिए संसार भर में साम्यवादी क्रान्ति के लिए प्रयत्न और प्रतीक्षा की जगह यही अच्छा है कि हम अपने देश को उद्योग-प्रधान करके पक्का समाजवादी बना दें।

गर्मदलीय कहे जानेवाले त्रोत्स्की और उसके अनुयायी कहते थे—समाजवाद सिर्फ़ एक मुल्क में स्थापित नहीं हो सकता। उसके लिए सारे संसार में समाजवादी क्रान्ति होनी चाहिए। इसलिए हमारी शक्ति का सब से अधिक अंश संसार में जल्दी से जल्दी क्रान्ति कराने में ख़र्च होना चाहिए। देश में उद्योग-धंधे बढ़ें, लेकिन प्रधानता हमें संसार-व्यापी क्रान्ति को ही देनी चाहिए; और उसीके लिए अपने श्रम, समय और धन का अधिक व्यय करना चाहिए।

स्तालिन् परिस्थिति को बड़ी पैनी दृष्टि से देख रहा था। वह

समझता था कि पूँजीवादी देश चार वर्ष के महायुद्ध के कारण थक गये हैं। अपनी आर्थिक और सामरिक शक्ति को फिर से मजबूत करने के लिए उन्हें कुछ समय चाहिए। संसार-व्यापी क्रान्ति इतनी सरल नहीं है कि रूस अपनी शक्ति से उसे सफल कर दे। क्रान्ति की सफलता हर एक देश में अधिकतर निर्भर करती है वहाँ के लोगों के ऊपर। फिर उस क्रान्ति के ऊपर भरोसा कर के अपनी गति को धीमी कर देना बुद्धिमत्ता का काम नहीं होगा। हमारा कर्तव्य है. अपने देश का उद्योगीकरण कर समाजवाद को मज़बूत करना।

दाहने और वाएँ दोनों ओर से विरोधों के रहते स्तालिन् ने १९२४ के आरंभ से देश के कल-कारखानों को वढ़ाने का काम शुरू किया। रूस की जनता और साम्यवादी दल उसके साथ था। पूँजी पास में न थी, उधार भी मिलने वाला न था, लेकिन ३२ करोड़ हाथ काम करने के लिए तैयार थे। धरती के भीतर अपरिमित प्राकृतिक और खनिज सम्पत्ति मौजूद थी। स्तालिन् ने कमकरों के दिल में नव-निर्माण के लिए उत्साह फूँका और पेट्रोल, गेहूँ, और लकड़ी से बदल कर आई मशीनों के द्वारा पुराने कारखानों को फिर से खड़ा करने, नष्ट और परित्यक्त रेल-लाइनों के फिर से चलने का काम आरंभ हुआ। तीन वर्ष वीतते बीतते १९२७ में सोवियत् का उद्योगधंधा वहाँ पहुँच गया, जहाँ कि महायुद्ध से पहले (१९१३) वह था।

जैसी वेसरो-सामानी से काम शुरू किया गया था, और दृढ़ता, त्याग और लगन के कारण जितनी सफलता इन तीनों वर्षों में हुई, उससे स्तालिन् और साम्यवादी दल का उत्साह और वढ़ा। अव तक छिटफुट कारखानों को खड़ा करने या सुधारने का काम हुआ था। स्तालिन् ने सोचा, छिटफुट काम करने की जगह अच्छा होगा कि सारे देश की आवश्यकताओं और संभावनाओं को देखकर उद्योगीकरण की देश-व्यापी योजना तैयार की जाय; और देश-व्यापी उत्साह के साथ उसे सफल वनाया जाय। उसने

देखा, कि हमारा देश उन उद्योगों में बहुत पिछड़ा हुआ है जो कि सभी उद्योगों की जड़ है। उदाहरणार्थ—सोवियत्, हवाई जहाज़ों को खुद नहीं बना सकती थी। मोटरें, लारियाँ, रेलें, इंजन और कपड़े आदि तैयार करने वाली मशीनों के बनानेवाली मशीनें उसे बाहर से मँगानी पड़ती हैं। सोवियत् देश चारों ओर से पूँजीवादी देशों से घिरा हुआ है। ये देश जानते हैं कि अगर सोवियत् दूसरे देशों में क्रान्ति मचाने का खयाल छोड़ भी दे, तो भी यदि अपने देश में सफलता पूर्वक लोगों को सुख और सन्तोष का जीवन देने में सफल हुई, तो इसका फल उनके देश के श्रमजीवियों पर जो पड़ेगा, वह पूँजीवादी शासन के लिए सब से अधिक खतरनाक सावित होगा। निश्चय ही पूँजीवादी ज़्यादा दिन तक सोवियत्-शक्ति को उन्नति के पथ पर अग्रसर होते या देर तक तमाशा नहीं देख सकते। यदि आगे चलकर सोवियत् को अपने शत्रुओं से लड़ना पड़ा, और उस वक्त पूँजीवादी देशों ने युद्ध की आवश्यक सामग्रियों—हवाई जहाज़, टैंक, मोटर आदि—को देना बन्द कर दिया, तो सोवियत् का गला घुट जायगा।

इन विचारों और इन परिस्थितियों में प्रथम पंच-वार्षिक योजना का जन्म हुआ।

दो पंचवार्षिक योजनाएँ सफलता पूर्वक समाप्त हो चुकी हैं। तीसरी पंच-वार्षिक योजना १९३८ से आरंभ हुई है। इन योजनाओं के बारे में हमने अन्यत्र लिखा है। इसलिए उसे यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं। इन पंचवार्षिक योजनाओं ने सोवियत् जनता के जीवन में उससे कम परिवर्तन नहीं किया है, जैसा कि क्रान्ति के कारण हुआ।

सोवियत् की आर्थिक नीति समाजवाद के आधार पर है। वहाँ मनुष्य का श्रम असल चीज़ है। चीज़ों की उपज में श्रम ही सब कुछ करता है। नफे का खयाल आते ही उपज विष के रूप में परिणत हो जाती है। मशीनें थोड़े समय और थोड़े परिश्रम में मनुष्य-जीवन की उपयोगी चीज़ें बहुत परिमाण में दे सकती हैं। इससे तो मनुष्य का जीवन अधिक सुखमय होना

चाहिए; लेकिन दुनिया में हम देखते क्या हैं? एक पुतलीघर का कर्घा तैयार होता है और ५० जुलाहे भूखों मरने लगते हैं। एक चावल की मिल तैयार होती है, और हज़ारों चावल कूट कर जीनेवाली औरतों को फ़ाक़ा छोड़कर कोई रास्ता नहीं रह जाता। एक टैक्सी या लारी आती है, तो सैकड़ों एक्के-ताँगेवाले बेकार हो जाते हैं। कुछ लोग इतनी बेकारियों, इतनी भुखमरियों को देखकर सारा दोष मशीन के ऊपर मढ़ देते हैं, और कहने लगते हैं---मशीन ही को संसार से विदा कर देना चाहिये। वे लोग उसी नादान बन्दर की तरह हैं, जो मक्खी उड़ाने के लिये नाक काट बैठा। समाजवाद बतलाता है, मशीन ख़राब चीज़ नहीं है, ख़राब है नफे का ख़याल। यदि मशीन व्यक्तिगत नफ़े के ख़याल से अलग करके समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये काम में लाई जाय, तो ये सारे दोष उत्पन्न ही न होंगे। कपड़े की मशीन इस लिए होनी चाहिए कि सारी जनता को पर्याप्त परिमाण में कपड़ा मुहय्या करे। अगर बीस जुलाहों के काम को मशीन के ज़रिये दो आदमी कर सकते हैं, तो १८ आदमियों को बेकार डालने की जगह यह अच्छा है, कि उस काम के घंटे को बाँट कर हर एक को ५४–५४ मिनट का काम दिया जाय और फ़ुर्सत के वक़्त को खेल, कूद, मनोरंजन में बिताने के लिए सब को मौक़ा दिया जाय। आज मशीनें बेकारी का कारण बन रही हैं। नफ़े का ख़याल छोड़ देने पर वह मनुष्य को नून-तेल, लकड़ी की फ़िक्र से आसानी से मुक्त कर उसके जीवन को अधिक संस्कृत, अधिक आनन्दित और अधिक निश्चिन्त बना सकती हैं।

पूँजीवादी देशों में जहाँ मशीनें नफे के लिए इस्तेमाल की जाती हैं, क्या हालत है? हर एक अपने माल को बेचने के लिए बाज़ार ढूँढ़ता है। इसीलिए दूसरे मुल्कों को परतंत्र बनाता है। फिर दूसरा पूँजीवादी देश बाज़ार ढूँढ़ने के लिए संसार में निकलता है। वह देखता है, वह पिछड़ कर आया। तब पहले के दखलकारों को वह बेदखल करने की सोचता है। और यह है भयंकर युद्धों का कारण।

एक आदमी कारख़ाना खोलता है, उसको नफ़ा होता है। पड़ोसी को भी उसे देखकर कारख़ाना खोलने का लोभ होता है। दोनों माल तैयार करते हैं। गाहक उनके नपे-तुले हैं। इधर मशीनों में नये नये सुधार होते हैं जिससे माल की उपज और भी बढ़ जाती है। माल-गोदामों में माल के भर जाने पर कारख़ानेवाले क़ीमत घटाने में एक दूसरे से बाज़ी मारना चाहते हैं; तो भी ग्राहकों की आवश्यकता या सामर्थ्य से अधिक माल रखा हुआ है। अब माल की क़ीमत भयंकर तौर से गिर जाती है। संसार में मन्दी छा जाती है। हज़ारों करोड़पतियों के दिवाले निकलते हैं। पैसों की महँगी के कारण किसानों का ख़ून-पसीने एक किया हुआ गेहूँ का भाव भी गिर जाता है। झोपड़ी से ले कर महल तक हाहाकार मच जाता है। अब कारख़ानेवाले छः दिन की जगह तीन दिन काम कराने लगते हैं। छः हज़ार मज़दूरों में से तीन हज़ार को जवाब दे देते हैं। दिवाले से कुछ बच जाते हैं। अब माल की उपज में बहुत कमी कर देने से गोदाम में भरा हुआ माल धीरे धीरे खपने लगा। उसके ख़तम होने पर बाज़ार में फिर माल की माँग बढ़ी। ३००० से फिर ५००० मज़दूर किये गये। तीन दिन की जगह फिर हफ़्ते में छः दिन काम होने लगा। कुछ दिन तक तो माँग ने माल खींचा, लेकिन उपज की चाल तेज़ है। ८—६ वर्ष बीते। फिर गोदामों में माल भर गया, फिर. दर गिराने में कारख़ानेवाले एक दूसरे का गला काटने लगे। फिर मन्दी, फिर सत्यानाश!

समाजवादी अर्थ-नीति में मन्दी का डर नहीं। क्योंकि वहाँ चीज़े नफ़े के लिए नहीं पैदा की जातीं; और इसीलिए बाज़ारों की तलाश में दूसरों से लड़ने की भी आवश्यकता नहीं।

*** ***

१६२६ में पूँजीवादियों के प्रताप से भयंकर मन्दी आई। तीन चार साल तक उसकी भयंकरता बढ़ती गई। उसके बाद बाज़ार में चीज़ों की कुछ

माँग वढ़ी, दाम वढ़ा और कारख़ानेवाले भविष्य को कुछ आशापूर्ण दृष्टि से देखने लगे। लेकिन १९३७ का अन्त भी नहीं होने पाया कि फिर मन्दी के काले वादल पूँजीवादी देशों पर दौड़ने लगे। युक्त राष्ट्र अमेरिका संसार का सव से बड़ा पूँजीपति देश है। १९३७ की अंतिम तिमाही से वहाँ मन्दी के पूर्व-लक्षण दिखलाई देने लगे। कारख़ानेवाले वहुत से मज़दूरों को जवाव देने लगे। कोयला, तेल, लोहा आदि सभी चीज़ों की उपज को काम के दिनों और हाथों को घटा कर कम करने लगे। दिसम्वर (१९३७) के आरंभ में वहाँ के लोहे के कारख़ाने अपनी सामर्थ्य का २७·५ सैकड़ा ही काम करते थे। एक साल पहले वे ही कारख़ाने ७४ सैकड़ा काम करते थे। कपड़े के कारख़ानेवालों ने २५ सैकड़ा उपज कम करने का पिछले दिसंवर में ही निश्चय कर लिया। उसी समय नकली रेशम के कारख़ानों ने अपनी उपज को ८५ सैकड़ा से ६५ सैकड़ा कर देना तय कर लिया।

सोवियत् के उद्योग-धंधे से मुक़ावला करने पर मालूम होगा कि वहाँ उपज के घटाने की कौन कहे, वह वढ़ती ही जा रही है। पिछले साल की अपेक्षा १९३६ में कारख़ानों ने २४ सैकड़ा माल ज़्यादा तैयार किया। १९३७ में यह और आगे वढ़ा और १९३७ की अपेक्षा इस साल (१९३८) १५·३ सैकड़ा वढ़ाने की योजना है।

*** ***

सोवियत् की औद्योगिक उन्नति के दिग्दर्शन के लिए उसके कुछ कारख़ानों से हम पाठकों का परिचय कराते हैं—

मरीइन्स्क-सेलूलाइड—काग़ज़-कारख़ाना।—

मरीइन्स्क में सेलूलाइड और काग़ज़ की मिलों के साथ साथ विजली का पावर-हाउस भी है। पावर-हाउस में १२,००० किलोवाट की ताक़त है। काग़ज़ की मिल २८,००० टन सालाना काग़ज़ देगी। ये कारख़ाने इसी जनवरी महीने में तैयार हुए हैं।

लाल-तीतन-रबर-फैक्टरी मास्को—पचास साल पहले १८८७ में पहले पहल यह कारख़ाना बना था। तब से इन ५० वर्षों में कितना भारी परिवर्तन हो गया है ?

१९३७ में इस फैक्टरी ने १४ करोड़ ७ लाख २ हज़ार रूबल (प्रायः साढ़े छै करोड़ रुपये) का माल तैयार किया। इस साल अपने हिस्से की योजना को १०५·७६ सैकड़ा पूरा किया। उसने ३ क़रोड़ १६ लाख जोड़े रबर के जूते और ५ लाख ४५ हज़ार दस्ताने बनाये। १९३६ से मुक़ाबला करने पर १९३७ में ३६ सैकड़ा माल अधिक तैयार हुआ।

१८८७ में जब यह कारख़ाना खोला गया था, तब वह छोटी सी दस्तकारी की दूकान थी; जिसमें ६० मज़दूर काम करते थे। आज इसमें काम करनेवाले लोगों की संख्या १२ हज़ार है। १८९१ में हर रोज़ ३० जोड़े रबर के जूते यहाँ बनते थे। उस समय कमकरों को साढ़े ग्यारह घंटा काम करना पड़ता था और तनख्वाह बहुत कम थी। आठ और दस वर्ष के लड़के इसमें पीसे जाते थे। आज कोई लड़का काम करनेवाला नहीं है। किसी कमकर को सात घंटा से अधिक काम नहीं करना पड़ता। हाथ से करने का काम भी बहुत कुछ मशीन से किया जाता है।

लाल-तीतन् ने १९३६ से नकली रबर का इस्तेमाल शुरू किया है; और मशीन से जूते का ढालना और फिर दबा कर उसमें सीवन आदि पैदा कर देना उसी साल से शुरू हुआ है। पहले इस कारख़ाने में असली रबर इस्तेमाल होता था। सोवियत् देश में कोई भी स्थान इतना गर्म नहीं है कि जहाँ रबर का वृक्ष लग सके, इसी लिए बाहर से माल मँगाने को कम करने तथा स्वावलंबी बनने के लिए वहाँ वैज्ञानिक नक़ली रबर का व्यवहार बहुत अधिक किया जाता है। लाल-तीतन् अब सिर्फ २० सैकड़ा ही विदेशी रबर खर्च करता है।

स्तख़ानोफ़् आन्दोलन ने यहाँ की जाँगर की उपज शक्ति बहुत बढ़ा दी है। कमकरों में ७० सैकड़ा तूफ़ानी कमकर और **स्तख़ानोवी** है।

पिछली दो पंचवार्षिक योजनाओं ने जहाँ कारख़ाने को बहुत आगे बढ़ाया है, वहाँ उसने बहुत से कमकरों को ऊँचे अधिकारों पर पहुँचाया है। ग्यारह साल पहले स्त्रोकिना प्रयोगशाला में एक साधारण कमकर थी। छुट्टी के समय में उसने पढ़ा। काल्लेज से ग्रेजुएट हुई और अब रबर जोड़ने के विभाग की अध्यक्ष है। नज़रोवा १९२९ में इस कारख़ाने में आई। कारख़ाने से सम्बद्ध विद्यालय में ख़ाली समय में उसने पढ़ा, फिर कारख़ाने ने उसे विश्वविद्यालय में भेज दिया। वहाँ से इंजीनियरी की डिग्री लेकर वह भी अब एक अध्यक्ष है।

कारख़ाने के कमकरों के लिये कई संस्थाएँ हैं। एक **टेकनीशियन** (यंत्रशिल्पी) भवन, दो क्लब-घर, एक कमकर-तैयारी-स्कूल, एक साधारण शिक्षण और टेक्निकल स्कूल, एक विदेशी-भाषा-पाठशाला, दो पुस्तकालय, नौ किन्डरगार्टेन और बहुत सी दूसरी संगीत, नाट्यशाला आदि संस्थाएँ हैं। इसके हज़ारों कमकर अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए छुट्टी के वक़्त पढ़ते हैं।

१९३८ से यह कारख़ाना सिर्फ नकली रबर इस्तेमाल करेगा। इस साल की उपज को पिछले साल से २७ सैकड़ा आगे बढ़ाना है।

*** ***

जकोरोज्ये-फौलाद-कारख़ाना—उक्रइन् में यूरोप का यह सब से बड़ा लोहे का भट्ठा है। पिछले जनवरी (१९३८) महीने से इसमें काम शुरू हुआ है। अब भी कारख़ाने का कुछ हिस्सा पूरा तय्यार नहीं है। उसके निर्माण में २० हज़ार कमकर लगे हुए हैं।

यह एक भट्ठा प्रति दिन १६ हज़ार टन लोहा तैयार करेगा, जिसे कि क्रान्ति के पहलेवाले २० भट्ठे तैयार करते थे। यह एक नये प्रकार का धौंकनेवाला भट्ठा है; १३०० घन मीटर की गुंजाइश है।

१९३१ में जो भट्ठे बनाये गये थे, उनका परिमाण ९३० घन मीटर

भट्ठे के हज़ारों टन लोहे, कोयले और दूसरे पदार्थों के साथ दहकते हुए भट्ठे से जो गैसें निकलेंगी, वही इस चद्दर बनानेवाली मिल को संचालित करेंगी। उसके लिए अलग ईंधन की ज़रूरत न होगी। इस प्रकार इस बड़े कारख़ाने में यह ध्यान रखा गया है कि कोई गैस, कोई पुर्ज़ा, कोई लोहा बेकार न जाने पाये। दूसरी बड़ी शाखा इस कारख़ाने की है, मिगे के सिद्धान्त के अनुसार बिजली के कितने ही बहुत भारी भट्ठे लोहे की मिश्रित धातुओं को तैयार करेंगी। **ज़ाकोरोज़्स्ताल** निस्सन्देह एक असाधारण कारख़ाना है। यहाँ पुर्ज़ों की फ़ौलादी वर्कशाप में बहुत भारी ताक़त वाले बिजली के भट्ठे हैं, जिनके सब काम मशीन से होते हैं। कार्बोन् फ़ौलाद और फ़ौलाद मिश्रित धातुओं—जो कि पुरज़ों और औज़ारों के बनाने में काम आती हैं—के बनाने का यूरोप में यह सब से बड़ा केन्द्र है। फ़ौलाद-मिश्रित धातु-निर्माण-विभाग तो ख़ुद एक बड़ा भारी कारख़ाना है; और यूरोप में इतना बड़ा कारख़ाना दूसरा कोई नहीं है। नया भट्ठा, पतली फ़ौलादी चद्दर कारख़ाने से मिल कर **ज़ाकोरोज़्स्ताल्** को उच्चकोटि के फ़ौलाद पैदा करनेवाले दुनिया के कारख़ानों में अव्वल स्थान दिलावेगा।

*** ***

किरोफ़्-फ़ैक्टरी (लेनिन्ग्राद्)—६ जनवरी सन् १६१८ में स्तालिन् की अध्यक्षता में जनता-कमीसरों की कौंसिल ने प्रस्ताव स्वीकृत किया कि पुतिलोफ़् फ़ैक्टरी को राष्ट्रीय बना दिया जाय। उसमें कहा गया था—"कार्पोरेशन की सभी सम्पत्ति के साथ पुतिलोफ़्-फ़ैक्टरी रूसी प्रजातंत्र की मिलकियत होती है।" स० म० किरोफ़् के शब्दों में "पितर्बुर्ग के कमकरों की यशस्वी क्रान्तिकारिणी परंपरा ही लेनिन्ग्राद् में पुरानी चीज़ रह गई है। बाकी सभी चीज़ें नई हो गई हैं।" १२८ साल पहले जहाँ पूँजीवादी पुतिलोफ़् फ़ैक्टरी खड़ी थी, वहाँ अब भीमकाय **किरोफ़् प्लान्ट (कारख़ाना)** खड़ा है। १६३७ में इस कारख़ाने ने १६१३ की अपेक्षा सोलह गुना माल

अधिक तैयार किया था।

पुतिलोफ़् फ़ैक्टरी को क्रान्ति के आरंभिक दिनों में राष्ट्रीय बनाना कोई आकस्मिक बात न थी। इस कारख़ाने के कमकर बहुत पहले से क्रान्तिकारी होते आये थे। पहली हड़ताल यहाँ १८७१ में हुई थी; और मार्क्सवादियों का संगठन १८८० में आरंभ हुआ था। १८९४ में यहाँ के कमकरों ने 'श्रमिक-श्रेणी-स्वतंत्रता-युद्ध-संघ' स्थापित किया। लेनिन् ने पुतिलोफ़् के साम्यवादी संगठन का पथ-प्रदर्शन किया था। जनवरी १९०५ की क्रान्ति इसी फ़ैक्टरी से आरंभ हुई थी। १९१२–१४ में यहाँ के कमकरों ने हड़तालों पर हड़तालें कीं। फ़रवरी १९१७ की घटना—जिसने ज़ार को उसके ताज से वंचित किया—पुतिलोफ़् के श्रमिकों की हड़ताल से आरंभ हुई थीं। लेनिन् के आगमन के वाद यह फ़ैक्टरी बोल्शेविक केन्द्र बन गई।

यहाँ के कमकर सब से पहले थे, जिन्होंने पूँजीपतियों के हाथ से फ़ैक्टरी को छीन लिया। पुतिलोफ़् के दस हज़ार से ज़्यादा कमकर गृहयुद्ध में कोल्चक्-यूदेनिच् और दूसरे क्रान्ति-विरोधियों से लड़े। लेनिन् के नाम से संगठित सशस्त्र-रेलवे-ट्रेन में भरती हो ग़ज़ा के नायकत्व में सभी युद्धक्षेत्रों में शामिल हुए—उसमें इस फ़ैक्टरी के मज़दूर ज़्यादा थे। इनमें से सैकड़ों वीर की तरह युद्धक्षेत्र में काम आये। कितने ही सोवियत् नेताओं को तैयार करने का श्रेय इस फ़ैक्टरी को है। उनमें म० ई० कालेनिन् (सोवियत् राष्ट्रपति) और न० ई० येजोफ़् (गृह-सचिव) भी हैं।

जिस वक़्त फ़ैक्टरी को राष्ट्रीय बनाया गया, उस वक़्त यह मुफ़्त की वला थी। लड़ाई के ज़माने में साधारण समय से तिगुने और चौगुने मज़दूर काम पर लगाये गये थे। मशीन और पुर्ज़े घिस और टूट गये थे। केरेन्स्की के जेनरलों ने कमकरों को मज़ा चखाने के लिए और भी इस फ़ैक्टरी को ख़राब कर दिया। कोयला और धातु क़रीब क़रीब ख़तम हो चुकी थी। जितने ही महीने बीतते थे, उतने ही मकान ख़तरनाक़ और बेकार होते जाते थे। कारबार अव्यवस्थित हो गया था। बीसियों रेलवे इंजन हाते

में वेकार हो कर पड़े हुए थे। खुले भट्ठे और दवाने की मिल नष्ट हो चुकी थीं। केन्द्रीय गर्म करने का प्रवन्ध काम नहीं कर रहा था। उसके वदले वर्कशाप में छोटे छोटे चूल्हे थे। कारखाने में लाई रेलवे लाइन टूट-टाट गई थी। १२००० के करीब कमकर वेकार हो गये थे।

राष्ट्रीकरण के वाद पुतिलोफ़् के श्रमिक वड़ी तत्परता के साथ नष्ट-प्राय कारखाने को पुनः संगठित करने में लग गये। उन्होंने इसके लिए ईंधन और धातु जमा किया। वे शान्ति पूर्वक काम आरंभ करना चाहते थे। उसी समय गृह-युद्ध आरंभ हो गया। अधिकांश कमकर युद्ध के मैदान की ओर चले गये। कारखाने के लिए ईंधन और धातु एवं कमकरों के लिए रोटी के अभाव से फ़ैक्टरी में कोई कार्य हो नहीं सकता था। जो कमकर पीछे बच गये थे, विशेष कर पुतिलोफ़् की औरतें भूखी रहने पर भी छुट्टी के दिन में बड़े स्वार्थ-त्याग के साथ इंजनों और सशस्त्र ट्रेनों की मरम्मत किया करती थीं। जिस वक़्त युदेनिच् पेत्रोग्राद् की ओर वढ़ता आ रहा था, उस वक़्त वे भूत की तरह काम करती थीं। जुलाई १९२२ तक कार-ख़ाना एक तरह सूना हो गया था। वहाँ सिर्फ़ १५८८ कमकर और ४२० आफ़िस में काम करनेवाले रह गये थे।

१९२० में गृह-युद्ध ख़तम हुआ, लेकिन पुतिलोफ़् को दो साल और इन्तज़ार करना पड़ा। १९२२ के अन्त में खुले मुँह का भट्ठा पहले पहल चलाया गया। १९२३ में पहले पहिल इंजन और गाड़ियाँ बनकर निकलीं।

वोल्ख़ोफ़् के पहले स्टेशन के लिए इस कारख़ाने ने २७० टन फौलाद का ढाँचा दिया। सोवियत् पुतिलोफ़्-वर्क्स के बने पहले चार ट्रैक्टर १ मई १९२४ को लेनिन्ग्राद् के ऊरित्स्की चौक में प्रदर्शित किये गये थे। आज पुतिलोफ़् ट्रैक्टर-फ़ैक्टरी के एक लाख ट्रैक्टर सोवियत्-संघ के कोल्ख़ोज़ों में काम कर रहे हैं। इनमें आधे सुधरे हुए ट्रैक्टर हैं। नये ढंग के सुधरे ट्रैक्टर १९३४ से यहाँ वनने लगे।

पहली पंच-वार्षिक योजना में इस फ़ैक्टरी की उपज चौगुनी हो गई।

५॥ करोड़ रूबल कारख़ाने के पुनः निर्माण में ख़र्च किये गये। ३००० किलोवाट की ताक़त की पहली टर्बाइन (जिसके चक्के के पंखों पर पानी गिरने से तेजी से घूम कर बिजली पैदा करता है) सर्व प्रथम १ मई सन् १९३१ को बनी। १९३४ के करीब पुतिलोफ़् का नाम बदलकर किरोफ़् हो गया। १९३७ में किरोफ़् कारख़ाने से बनी टर्बाइनें सोवियत्-संघ के ११० विद्युत् स्टेशनों में बिजली तैयार कर रही थीं।

द्वितीय पंच-वार्षिक योजना के समय कारख़ाने का और विस्तार हुआ। सारी प्रथम पंच-वार्षिक योजना में जितना माल इसने तैयार किया था, उतना १९३७ के सिर्फ एक साल में तैयार किया।

१९२४–२५ की अपेक्षा इस कारख़ाने ने १९३७ में १९ गुना अधिक माल तैयार किया।

कारख़ाने के २७ हज़ार कमकरों का जीवन एकदम दूसरा हो गया है। पहले कारख़ाने के आसपास ५९ शराबख़ाने, १२ गिर्जे और बहुत सी सरायें थीं। अब उनकी जगह पर किरोफ़् के कमकरों के लिए ऊँचे प्रासाद जैसे एपार्टमेंट घर बन गये हैं। बीस स्कूल हैं। लेनिन्ग्राद् का सब से बड़ा विक्रय-भंडार (डिपार्टमेंट स्टोर) यहीं है। गोर्की सांस्कृतिक-भवन की विशाल इमारत भी यहीं पर है। सिनेमा, थियेटर, बग़ीचे कितने ही हैं। पहले की धूल उड़ती कच्ची सड़क की जगह पर एक विस्तृत पक्की सड़क बनी है।

१९३७ में सरकार के ख़र्च से १९५२ आदमी सेनीटोरियम में भेजे गये; और हज़ारों अपनी छुट्टी में काला सागर के तटवर्ती स्वास्थ्यप्रद प्रदेशों में स्वास्थ्य सुधारने गये।

१९३७ में कमकरों के ५०० लड़के बालचर-कैम्प में दूर भेजे गये। दूसरे लड़कों ने गर्मियों को विश्राम-गृहों और सेनीटोरियम में बिताया। कारख़ाने में बहुत से बच्चेख़ाने और किंडरगार्टन हैं। ४५० विद्यार्थियों के लिए एक कला-विद्यालय है।

सिर्फ़ कारख़ाने के ट्रेड यूनियन् (मज़दूर-संघ) ने ही १९३७ में २५ लाख रूबल क्लब, शिक्षा, खेल और मनोविनोद पर खर्च किये।

कमकरों में से काफ़ी संख्या स्वाध्याय में लगी है। ४०६५ कमकर और आफ़िस कार्यकर्ता कालेजों, टेकनिकल स्कूलों, कमकर-तैयारी-स्कूलों में पढ़ रहे हैं। ६५०० व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और तरुण कम्युनिस्ट-संघ के स्कूलों और अध्ययन-केन्द्रों में राजनैतिक शिक्षा पा रहे हैं। १५०० कमकर सयानों के स्कूल में पढ़ते हैं। ६०० मज़दूर-संघ के आन्दोलन का अध्ययन करते हैं।

इस साल (१९३८) में कारख़ाने के राष्ट्रीय होने का बीसवाँ वार्षिकोत्सव था। इसने कमकरों में स्तख़ानोव-आन्दोलन की बड़ी लहर पैदा कर दी। प्रति दिन उपज के परिमाण को ऊँचा ऊँचा बढ़ते देखा जा रहा है। कई सौ कमकर स्तख़ानोवी हैं; और उन्होंने अपने हिस्से का काम अधिक परिमाण में पूरा किया। इस प्रकार पुतिलोफ़् की क्रान्तिकारी परंपरा अब भी सजीव रूप में है।

*** ***

दियासलाई के कारख़ाने—महायुद्ध से पहले रूस में ११५ दियासलाई बनाने की छोटी छोटी फ़ैक्टरियाँ थीं। क्रान्ति के बाद दियासलाई का उद्योग फिर से संगठित किया गया। सभी काम मशीन से होने लगा तथा फ़ैक्टरियों की संख्या अधिक न रख कर थोड़ी किन्तु बड़ी फ़ैक्टरियाँ कायम की गईं। उदाहरणार्थ—

वर्ष	चलने वाली फ़ैक्टरी	स्वसंचालितमशीन फ़ैक्टरी	उपज (डिबिया)
१९१४	१५५	२	४ अरब ५० करोड़
१९३५	२३	९३	१० अरब ८४ करोड़ २० लाख

१९३५ में दियासलाई बनाने में सोवियत्-संघ का नंबर अव्वल रहा, जैसा कि निम्न उल्लेख से मालूम होगा—

स०स०स०र०	११	अरब	(डिबिया)
यु० रा० अमेरिका	८	,,	,,
चीन	६	,,	,,
जापान	४	,,	,,
स्वीडेन	२	,,	,,

विदेश में दियासलाई भेजने में स०स०स०र० का नंबर दूसरा है। अव्वल नंबर है स्वीडेन का।

स०स०स०र० के दियासलाई के कारख़ाने देश में चारों ओर फैले हुए हैं। वह बड़ी अच्छी तरह संगठित हैं, और नई से नई मशीनों से सुसज्जित हैं। तीली के लिए सबसे अच्छी लकड़ी इस्तेमाल की जाती है। वेलोरूसिया, लेनिन्ग्राद् और पश्चिमी रूस में बड़े बड़े कारख़ाने हैं।

*** ***

सोवियत् चाय—चाय का उद्योग सोवियत् में एक नई चीज़ है। यद्यपि चाय की खेती काकेशस् में ४० वर्ष पहले आरंभ की गई थी। लेकिन १९३० के क़रीब तक २९४५ एकड़ तक ही वह पहुँची थी। वार्षिक उपज ५॥ सौ टन होती थी। तीन छोटी छोटी फ़ैक्टरियाँ थीं, जिनमें हर एक सौ-सवा सौ टन प्रतिवर्ष चाय तैयार करती थीं।

१९२५ के अंत में 'चाइ गुर्ज़िया' (जार्जिया की चाय) के नाम से संस्था संगठित की गई। तब से चाय का उद्योग बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ा। १९३६ में जार्जिया की चाय ९४,२५० एकड़ में थी। इनमें ६९,५६० एकड़ कोल्ख़ोज़ ने तैयार किये। ७० हज़ार से ज़्यादा किसान-घर चाय की खेती में लगे हुए हैं। **'चाइ गुर्जिया'** सोव्ख़ोज़ (सरकारी खेती) अकेला १८,४७५ एकड़ बग़ीचों का मालिक है। उसके पास नई से नई मशीनोंवाली ३२

फैक्टरियाँ हैं। १६३६ में इन फैक्टरियों ने १६२॥ करोड़ किलो (सेर से कुछ अधिक) हरी पत्तियाँ और ४७॥ लाख किलो तैयार की हुई पत्तियाँ बाज़ार में रखीं।

इस प्रकार १० वर्षों के भीतर चाय के बग़ीचे ३० गुना बढ़ गये हैं और उपज ४० गुना। चाय के बारे में जो वैज्ञानिक खोज सोवियत् विज्ञान-वेत्ताओं ने की है, उसके कारण १६३६ में उपज १६३२ की अपेक्षा ढाई-गुना अधिक बढ़ गई है। किसी किसी जगह पर एक एकड़ में ६० मन तक पत्ती निकली है।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है, कि जिन वर्षों में पूँजीवादी देशों ने बाज़ार की मन्दी से डर कर अपने अपने यहाँ चाय की उपज को बहुत कम किया है; उसी समय सोवियत् ने अपने यहाँ उपज को कई गुना बढ़ाया है।

परिमाण में ही सोवियत् चाय नहीं बढ़ी, बल्कि गुण में भी उसने ख़ास स्थान प्राप्त किया है। लन्दन के चाय के विशेषज्ञों ने इसे विदेश की चुनी हुई चायों के मुक़ाबले में रखा है। **डाक्टर हेरल्डमान** प्रसिद्ध चाय के विशेषज्ञ कितनी ही बार जार्जिया आये हैं। और उनकी राय में जार्जिया की चाय संसार की सब से अच्छी चाय है। वह दार्जिलिंग से मुक़ाबला कर सकती है। रासायनिक पदार्थ किस चाय में किस परिमाण में है, वह यहाँ दिया जाता है—

स्थान		निचोड़	टैनिन्	काफेइन्	नेत्रजन्
दार्जिलिंग	..	४५·७८	१३·७६	३·५६	४·०२
गुर्जी (उच्च)	..	४४·०५	१४·५३	३·००	५·११
चीनी (उच्च)	..	३८·८१	१२·७४	२·६६	४·२६
गुर्जी (मध्यम)	..	३३·७०	१२·१३	२·८३	४·७४
चीनी (मध्यम)	..	३२·७४	११·६७	३·०२	४·२६

१६३७ में ३६ फ़ैक्टरियाँ हो गईं और उनसे २ करोड़ ६३ लाख ७१

हज़ार किलो हरी चाय निकली। जिसमें ६३ लाख किलो उच्च प्रकार की चाय है।

***   ***

सिनेमा-फ़िल्म—सिनेमा उद्योग सोवियत् में बड़े ज़ोर से बढ़ा है। यहाँ के फ़िल्म ही संसार में बहुत ऊँचा दर्जा ही नहीं रखते हैं बल्कि उनके तैयार करने के लिए देश के भिन्न भिन्न भागों में बहुत से स्टुडियो तैयार हुए हैं, जिनमें, कला, शिक्षा, टेक्निक्, सार्वजनिक विज्ञान, समाचार संबंधी फ़िल्म तैयार होते हैं।

१—समाचार संबंधी फ़िल्म मास्को, लेनिन्ग्राद्, रोस्तोफ़्, कियेफ़् तथा सोवियत् की और और जगहों पर अवस्थित शाखाओं में तैयार किये जाते हैं।

२—सोवियत् फ़िल्म को विदेश में भेजने के लिए एक अलग संस्था (**सोयूजिन्तोर्ग्किनो, मास्को**) बनी हुई है। कुछ फ़िल्म स्टुडियो के नाम इस प्रकार हैं—

३—मास्को कला-फ़िल्म (मोस्-फ़िल्म)

४—लेनिन्ग्राद् कला-फ़िल्म (लेन्-फ़िल्म)

५—मास्को शिशु-फ़िल्म (सोयुज़-देत्-फ़िल्म)

६—मास्को सजीव कार्टून (सोयेज़्-मुल्त्-फ़िल्म)

७—यल्ता-कला फ़िल्म

८—मास्को-दोहरौनी-फ़ैक्टरी

९—लेनिन्ग्राद्-दोहरौनी-फ़ैक्टरी

१०—मास्को वैज्ञानिक शिक्षा-देशरक्षा और टेक्निक् संबंधी फ़िल्म (मोस्तेच् फ़िल्म)

११—लेनिन्ग्राद् (लेन्-तिज़्-फ़िल्म)

१२—नोवो सिविर्स्क (लेन्-तिज़्-फ़िल्म)

१३—मास्को लैन्टर्न्स-स्लाइड फ़ैक्टरी

१४—श्वोस्त्का-फ़िल्म-फ़ैक्टरी

१५—येरेस्लाब्ल्-फ़िल्म फ़ैक्टरी

१६—लेनिन्ग्राद् रोयन्तगेन् फ़िल्म फ़ैक्टरी

१७—कज़ान् फ़ोटो रसायन फ़ैक्टरी

१८—लेनिन्ग्राद् फ़िल्म-यंत्र फ़ैक्टरी (लेन्-फ़िन्-आर)

१९—ओदेसा फ़िल्म यंत्र फ़ैक्टरी (किन्-अस्)

२०—कुईविशेफ़् यंत्र फ़ैक्टरी (किन्-अस्)

२१—मास्को किन्-अस्० परीक्षण फ़ैक्टरी

२२—मास्को फ़िल्म फ़ैक्टरी यंत्र-उत्पादक वर्कशाप

२३—अखिल संघ-फ़िल्म-वितरण एजेंसी

२४—अखिल संघ फ़िल्म उद्योग-योजना-एजेंसी

२५—औद्योगिक गृह-निर्माण ट्रस्ट

२६—कज़ान कम्पनी गृह-निर्माण ट्रस्ट

२७—**सोयूज्-किनो-तियात्र** एजेंसी (लेनिन्ग्राद् और मास्को के बहुत से सिनेमा-घरों की संचालिका संस्था)।

२८—अखिल संघ सिनेमा इंस्टीट्यूट (वगइक)

२९—लेनिन्ग्राद् सिनेमा इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट (लइकइ)

३०—सिनेमा फ़ोटोग्राफी रिसर्च इंस्टीट्यूट् (नइकफइ)

३१—मास्को-सिनेमा-गृह

३२—लेनिन्ग्राद् सिनेमा-गृह

सोवियत् की भिन्न भिन्न जातियों के लिए अपनी भाषा में फ़िल्म बनाने के लिए अलग स्टुडियो हैं। यथा—

१—उक्रइन् फ़िल्म स्तुदियो (कियेफ़्)

२—बेलोरूसी फ़िल्म स्तुदियो (मिन्स्क)

३—गुर्जी फ़िल्म स्तुदियो (त्विलिसि)

४—अर्मनी फिल्म स्तुदियो (येरवान्)

५—आज़ुर्बाइजान् फ़िल्म स्तुदियो (बाकू)
६—उज़्बेकस्तान फ़िल्म स्तुदियो (ताशकन्द)
७—तुर्कमानस्तान फ़िल्म स्तुदियो (अश्काबाद)
८—ताजिकिस्तान फ़िल्म स्तुदियो (स्तालिनाबाद)

*** ***

सोवियत्-मशीन निर्यात्—सोवियत् में जब पहले पहल नये कारख़ाने स्थापित हुए तो पश्चिमी विशेषज्ञ समझते थे, कि रूसी लोग टिकाऊ और बारीक मशीनें नहीं बना सकते। लेकिन क्रान्ति के बाद और ख़ासकर पिछले १० वर्षों में उन्होंने बड़ी सफलता के साथ बारीक से बारीक मशीनें बनाई हैं। तो भी जिन लोगों को सोवियत् मशीनों को देखने का सौभाग्य नहीं हुआ, वह सन्देह ही में थे। लेकिन अब जब सोवियत् मशीनें बाहर के बाज़ारों में आने लगीं, तो लोगों की पिछली धारणा दूर हो गई।

२७ देश आजकल सोवियत् मशीनें ख़रीद रहे हैं। और १२० प्रकार की मशीनें सोवियत् से बनकर बाहर जाती हैं।

कृषि-संबंधी मशीनों का विशेष रूप से निर्यात होता है। १९२४ ही में सोवियत् की बनी जोतने, सिराने, दाँवने की मशीनें ईरान में पहुँची। उसके बाद तुर्की में भी। १९३१ से नाना प्रकार की कृषि-संबंधी मशीनें लिथु-आनियाँ आदि बाल्तिक देशों और पीछे हालैंड, डेनमार्क, बेल्जियम, यूनान, फ़िलिस्तीन में भी पहुँचीं। १९३७ में सोवियत् की कृषि-संबंधी मशीनें रूमानियाँ आदि देशों ने भी लेना शुरू किया। नार्वे, मिस्र और साइप्रस, द्वीप में भी नमूने पहुँच चुके हैं। मंगोल-जन-प्रजातंत्र, तुआ-जन-प्रजातंत्र और पश्चिमी चीन भी कई वर्षों से खेती की मशीनें ख़रीद रहे हैं। १९३७ ई० में २० हज़ार कृषि-संबंधी मशीनें बाहर भेजी गई। ट्रैक्टर तथा दूसरी मशीनें लत्विया, फ़िनलैंड, हालैंड, ईरान, तुर्की और यूनान के खेतों में चल रही हैं। १९३७ में तुर्की और इस्तोनिया में होनेवाली प्रदर्शिनियों में सोवियत् मशीनों

ने बड़ी प्रशंसा पाई है। खेती की मशीनों के अतिरिक्त बहुत से बारीक यंत्र भी पूर्व और पश्चिम के देशों में, जिनमें इंगलैंड और हालैंड भी शामिल हैं, भेजे जा रहे हैं। सोवियत् की बनी हुई सिलाई की मशीन बहुत से देशों में सर्वप्रिय हुई है। ये मशीनें पूर्व ही में नहीं बल्कि पश्चिम के इंगलैंड, फ़्रांस जैसे देशों में भी जा रही हैं। प्रेस की मशीनें भी अब सोवियत् से बाहर जानी शुरू हुई हैं।

बिजली की छोटी बड़ी मशीनें, बल्ब आदि भी निर्यात की चीज़ों में हैं। **कुइबिशोफ़्** का कारख़ाना बाहर भेजने के लिए १५ से १००० वाट तक के बल्ब तैयार कर रहा है। रेडियो स्टेशनों के बल्ब, नाप के औज़ार भी बाहर जा रहे हैं।

ट्रैक्टर, खुली लारी, स०स०स०र० के निर्यात के विशेष भाग हैं। यह दिलचस्प बात है कि पहला ट्रैक्टर रूस में विदेश से आया था। सोवियत् शासन में भी १९३१ तक बाहर से ट्रैक्टर मँगाये जाते रहे। १९३२ से सोवियत् फ़ैक्टरियों ने बड़े अधिक परिमाण में ट्रैक्टर बनाने शुरू किये। १९३५ के अन्त तक कई विदेशी व्यापारी सोवियत् ट्रैक्टर में दिलचस्पी लेने लगे। पहला ट्रैक्टर हालैंड में बिका था। यह ख़र्कोफ़ की ट्रैक्टर फ़ैक्टरी में बना था। अब सोवियत् के बने ट्रैक्टर एस्थोनिया, लत्विया, रूमानिया, तुर्की, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और मंगोलिया में बड़े ज़ोर से जा रहे हैं। नार्वे, इंगलैंड, डेनमार्क और ज़ेकोस्लावाकिया से भी नमूनों की माँग आई हैं। १९३६ की अपेक्षा १९३७ में चौगुने ट्रैक्टर बाहर भेजे गये। सोवियत् लारी की विदेशों में बड़ी माँग है। वह पास के बाल्तिक देशों ही में नहीं जा रही हैं, बल्कि तुर्की, मंगोलिया, चीन, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, इराक, सिरिया, रूमानिया, हालैंड और नार्वे तक की सड़कों में दौड़ रही हैं। ३ टन वाली लारियों के बाहर भेजने में संसार में सोवियत् का नंबर दूसरा है। अव्वल स्थान युक्तराष्ट्र अमेरिका का है। १९३७ के पहले ९ महीनों में १९३६ के सारे साल की अपेक्षा १५४ सैकड़ा मोटर और लारियाँ

बाहर गईं। मंगोलिया, चीन, और तुआ-जन-प्रजातंत्र सोवियत् से लारियाँ और फ़ायर-इंजन ख़रीद रहा है। १९३७ में पहली बार मास्को के स्तालिन्-मोटर-कारख़ाने में बनी ज़इस् १०१ मोटरकार मंगोलिया भेजी गई। इनके बारे में आसट्रिया, जेकोस्लावाकिया, बूल्गारिया और भारत से भी पूछ ताछ हुई है।

*** ***

बीमा—बीमा करना सोवियत्-संघ में सरकार के अधीन है। इसके लिए गोस्स्त्राख या राज्य-बीमा-विभाग १९२१ में स्थापित हुआ। यह, जीवन ही नहीं, बल्कि कोल्ख़ोज़् तथा सरकारी विभागों की सम्पत्ति, मकान माल, फ़सल, पशु आदि सब का बीमा करता है। सारे सोवियत्-संघ में जगह जगह इसकी शाखायें हैं। ३१ दिसंबर १९३५ को इसके पास २८५ करोड़ की सम्पत्ति थी, और साल में प्रीमियम् की आमदनी १ अरब २८ करोड़ ७७ लाख ३० हज़ार रूबल हुई।

स०स०स०र० से बाहर या भीतर जानेवाला सभी माल गोस्स्त्राख़ के पास बीमा किया जाता है। इंगलैंड, जर्मनी और दूसरे देशों में इसके एजेंट रहते हैं। ३१ दिसंबर १९३५ का लेखा इस प्रकार है—

पावना	रूबल
नक़द बैंक में	७५,४६,७२,५४८·४७
माल और लगानी	१,७६,६३,३३,०४४·९७
शेयर	१५,४०,६६१·५०
स्थावर जंगम सम्पत्ति	५८,३४,८९०·०८
क़र्ज़	१२,६८,२५९·६९
क़र्ज़दार	४,२९,१६,११४·६७
अगवड़ ख़र्च	१८,४६,४७,७३७·५२
शाखाओं में	९,१५,६२,३६०·९८
	२,८४,८७,७५,६१७·८८

देना	रूबल
पूँजी	१००००००००
संरक्षित	२५००००००
विशेष संरक्षित फ़ंड	६८,१२,२१,३४८·१२
रोकथाम फ़ंड	१४,६०,७६,६४१·२१
आफ़िस कार्यकर्त्ताओं के लिये फ़ंड ..	२०,१३,६२६·०५
दूसरे फ़ंड	८,३७,७०६·५६
प्रीमियम् संरक्षित	८६,२२,६१,३१२·६६
माँग संरक्षित	१,६३,६६,६४७·६२
क़र्ज़दार	६४,८३,०६६·११
क़र्ज़दार खाता	६,३२,५८,५१७·२२
(शाखा) लाभ	७२,७७,२०,७४५·६७
	२,८४,८७,७५,६१७·८८

२४—साम्यवादी होड़

समाजवाद के सिद्धान्तों का समझना उन लोगों के लिए भी आसान नहीं है; जिन लोगों को कि उससे सब से ज़्यादा फ़ायदा होनेवाला है। अगर कमकर लोग इसको समझते तो इंगलैंड—जहाँ हर एक बालिग़ स्त्री-पुरुष को वोट देने का अख़्तियार है——कभी का समाजवादी हो गया होता और एक एक बार ३०–३० लाख आदमी भूखे न मरते फिरते। सहस्राब्दियों से मनुष्य ने, कृत्रिम ही सही, ऐसा वातावरण अपने चारों ओर बना रखा है, कि न वह अपनी भलाई को दूर तक समझ सकता है, न साफ़ देख सकता है। खानदान, शादी-ब्याह, जातपाँत लगातार बदलते जा रहे हैं। एक आदमी के ५० वर्ष के जीवन में भी इतना परिवर्तन देखा जाता है, कि यदि वह उसपर विचार करे तो उसे बड़ा आश्चर्य होगा। तो भी उन्हीं क्षणभंगुर सामाजिक नियमों को प्रलय तक अमर रखने के यत्न में मनुष्य अपने वास्तविक हित को भूल जाता है। अपने और अपनी सैकड़ों पीढ़ियों को नरक का जीवन भले ही बिताना पड़े, लेकिन सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का उसमें साहस नहीं। इसीलिए समाजवाद के सिद्धान्तों को मानने में उसे डर लगता है।

सोवियत्-भूमि में समाजवाद के सिद्धान्त की विजय ७ नवम्बर १९१७ को ही हो गई थी। लेकिन १५ करोड़ जनता उसके जीवन, उसकी सामाजिक रूढ़ियाँ ७ नवंबर की आधी रात तक समाजवाद के साँचे में नहीं ढाली जा सकती थीं। इसके लिए उन्हें बड़ी जद्दो-जहद करनी पड़ी। उनका रास्ता नाक के सामने सीधा नहीं; बल्कि नदी के मार्ग की तरह टेढ़ा मेढ़ा था। नदी को एक बार पूर्व की तरफ़ जाते देख. आदमी सन्तुष्ट हो—'हाँ, यह समुद्र को जायगी', फिर वह उसे उत्तर की ओर घूमता देखे और

घबड़ा जाय 'यह तो उलटे जा रही है'। नदी की तात्कालिक गति को देख-कर कम-समझ आदमी भले ही चिन्ता में पड़ जाय लेकिन समझदार जानता है कि पानी हमेशा नीचे की ओर जाता है। निम्नतम स्थान में वह ज़रूर जाकर रहेगा। बीच के टेढ़े मेढ़े रास्ते से घबड़ाने की ज़रूरत नहीं। रूस में समाजवादी क्रान्ति के लिए भी ठीक ऐसी ही बात है। उसे जीवित मनुष्य-समाज से काम पड़ा था; जिसका मानस-तल धरातल से भी ज्यादा सम-विषम है। धार्मिक भावनाएँ, सामाजिक रूढ़ियाँ, सिद्धान्त को ठीक से न समझना भविष्य को शंकित निगाह से देखना आदि कारणों से क्रान्ति का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा ज़रूर रहा है। लेकिन उसका रुख़ हमेशा समाजवाद की ओर—सम्पत्ति व्यक्ति की नहीं, समाज की, उपज के साधनों का मालिक समाज, व्यक्ति नहीं, हर एक व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए बराबर का अवसर—रहा है। पहले शासन को मुट्ठी भर आदमियों के हाथ से निकाल कर किसानों और कमकरों के हाथ में किया गया, फिर कल-कारख़ानों को समाज की सम्पत्ति बनाया गया। फिर खेती का समाजीकरण हुआ।

सम्पत्ति का तो इस प्रकार समाजीकरण हुआ, लेकिन सम्पत्ति और श्रम दोनों मिलकर मनुष्य के जीवन को सुखदायक बनाते हैं। सिर्फ जीने भर के लिए साधारण श्रम भी काफ़ी है। लेकिन समृद्ध जीवन के लिए जीवन-सामग्रियाँ अधिक आवश्यक होती हैं; और उनके पैदा करने के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। समाजवाद की स्थापना से पहले काम करने, न करने में आदमी बेपरवाई बरत सकता है, क्योंकि वहाँ नफ़ा-नुक-सान सिर्फ एक व्यक्ति का है; लेकिन समाजवाद में श्रम में ढीलाढालापन छूत की बीमारी है; और उसका बुरा असर सारे समाज पर पड़ता है। इसीलिए श्रम को दिल लगाकर करना समाजवादी समाज के लिए अत्यन्त आवश्यक है। ऐसी आदत पैदा करने के लिए सोवियत् शासन को बहुत प्रयत्न करना पड़ा है। बहुत से नये तजर्बे करने पड़े हैं। पूर्ण समृद्ध जीवन

अब वहाँ श्रम पर निर्भर करता है। कमकरों और बुद्धिजीवियों के वेतन में जो भेद देखा जाता है, उसका हटाना अब श्रम को उन्नत करने पर निर्भर है। समाजवाद (जिस में हर एक से उसकी योग्यता के मुताबिक काम लेना और हर एक को उसके काम के मुताबिक वेतन देना) से साम्यवाद (हर एक से उसकी योग्यता के मुताबिक काम लेना और हर एक को उसकी आवश्यकता के मुताबिक जीवन-सामग्री देना) तक तभी पहुँचा जा सकता है जब कि श्रम अच्छी तरह संगठित यंत्र-परिचालित और बुद्धि-पूर्वक चलकर उपज को बहुत ऊँचा बढ़ा दे।

जाँगर (श्रम) जितना ही अधिक उपजोऊ होगा उतना ही समाज साम्यवाद के पास पहुँचेगा। सामूहिक श्रम में आलस्य और वैयक्तिक स्वार्थ के कारण ढिलाई ज़्यादा आ सकती है; इसलिए सोवियत् नेताओं को श्रम का महत्त्व लोगों के सामने रखना पड़ा। जो व्यक्ति अपने जाँगर को जितनी ही लगन और मिहनत से चलाता है, उसका सम्मान वैसे ही बढ़ाया जाता है। पहले इस तरह से लगन लगाकर काम करने वालों को तूफ़ानी कमकर या **उदार्निक** कहते थे। ढाई साल पहले स्तख़ानोफ़् ने शारीरिक मिहनत के साथ साथ दिमाग़ी ताक़त लगाकर उपज को कई गुना बढ़ाया, उस समय से श्रम की उपज को बढ़ानेवाले प्रयत्न को स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन कहा जाता है; और उसमें सम्मिलित होनेवाले कमकरों को 'स्तख़ानोवी'।

साम्यवाद की दृष्टि से देखने पर स्तालिन् का काम मार्क्स और लेनिन् से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। वास्तविक समाजवादी समाज निर्माण करने में स्तालिन् ने अपने में अप्रतिम प्रतिभा का परिचय दिया। जिस वक़्त उसे स्तख़ानोफ़् की सफलता मालूम हुई, ख़बर मिलते ही उसने **स्तख़ानोफ़्** का बड़े जोश के साथ स्वागत किया; और उसे जनता के सामने सोवियत् के एक महान् वीर के तौर पर उपस्थित किया। आज स्तख़ानोवी कमकर सोवियत्-जनता के सब से प्रिय, सब से अधिक सम्माननीय व्यक्ति हैं। यदि

सोवियत् के ११४३ डिपुटियों की ओर देखें तो उनमें सैकड़ों स्तख़ानोवी नर-नारी मिलेंगे। यदि सोवियत् के कारख़ानों को देखें, तो उसमें हज़ारों स्तख़ानोवी डाइरेक्टर, मैनेजर, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष मिलेंगे। यदि सोवियत् के पंचायती और सरकारी खेतों को देखें, तो वहाँ भी बड़े बड़े पदों पर स्तख़ानोवी नर-नारियों ही को पायेंगे।

हम इस आन्दोलन को अच्छी तरह हृदयंगत करने के लिए यहाँ कुछ उदाहरण देते हैं—

(१) १२ दिसंबर १६३७ को नये विधान के अनुसार सोवियत् पार्लियामेंट के साधारण निर्वाचन के उपलक्ष्य में १० दिन **स्तख़ानोवी** होड़ सारे प्रजातंत्र में चली थी। इस होड़ में सारे देश के कारख़ानों और कमकरों ने भाग लिया था। गोर्की-मोटर-कारख़ाने को योजना के अनुसार प्रतिदिन ५१४ मोटरकार और लारियाँ तैयार करके निकालनी थीं, लेकिन उसने ५७० तैयार कीं। मास्को का मोटर-कारख़ाना अपने हिस्से को १०० सैकड़े पूरा करता रहा।

उराल के कुबिशेफ़् कारख़ाने के खुले भट्ठे ने १४ दिसम्बर को १३० टन फ़ौलाद तैयार किया। योजना के मुताबिक उसे ६५ टन देना था।

लेनिन्ग्राद् की **शोरोखोद्**-जूता-फ़ैक्टरी ने १६३७ की योजना को १६ दिन पहले (१२ दिसंबर) को पूरा कर दिया। उसने इस साल १८२४ लाख रूबल का माल तैयार किया। साल के अन्त तक २०५ लाख जोड़े जूते वह दे रही है।

मास्को के स्तालिन्-ज़िले के **स्तख़ानोवियों** ने १० दिन की होड़ में बड़ी लगन के साथ हिस्सा लिया। जहाँ दिसम्बर से पहले इस ज़िले के कारख़ाने अपनी वार्षिक योजना का १८·३ प्रतिमास पूरा कर के १७७ लाख रूबल का माल तैयार करते थे, वहाँ होड़ के १० दिनों में अपनी वार्षिक योजना का ३६·१ काम पूरा किया; और ३ करोड़ ७३ लाख १६ हज़ार रूबल का माल तैयार किया। कुइविशेफ़् के बिजली के कारख़ाने ने इन १० दिनों में

साल की योजना का ३६·८ सैकड़ा पूरा किया। **लेब्से-कारख़ाने** ने अपने साल के प्रोग्राम को ३० नवंबर तक ही पूरा कर दिया था। इस १० दिन की होड़ में साल के प्रोग्राम का ६६·२ सैकड़ा और पूरा किया। इस कार-ख़ाने के १८० कमकरों ने १२ दिसंबर को अपने दिन के काम को ३।। गुना से पौने १२ गुना तक किया।

कशिरा उद्योग-संघ ने अपनी पूरी योजना इन १० दिनों में ही पूरी की। इसके ४ स्तख़ानोवी कमकरों ने १० गुना काम किया। किरोव कपड़े का कारख़ाना (इवानोवो)—जो कुछ दिनों से अपनी योजना पूरा करने में पिछड़ रहा था—होड़ में उसने अपना काम पूरा किया; और १० दिनों में १५ लाख गज़ कपड़ा तैयार किया। १२ दिसम्बर को ख़ास तौर से ज़बर्दस्त होड़ रही। उस दिन कितने ही ब्रिगेडों (२०० कमकरों का दल) ने सवा गुना काम किया। **बाकू की स्तालिन्-तैल-शोधनी**—जो कि स०स०स०र० का सबसे बड़ा मिट्टी के तेल सफ़ा करने का कारख़ाना है—ने होड़ में बहुत ज़ोर के साथ भाग लिया। उसने साल की योजना ढाई हफ़्ता पहले पूरी कर दी; और ८० हज़ार टन गेसोलिन-केरासिन, लिगोरिन्, तथा ४५।। हज़ार टन लुब्रिकेटिंग तेल योजना से ऊपर दिया।

(२) १२ दिसंबर को दोन्बास् के कोयले की खानवालों ने—जो कि इधर कुछ दिनों से अपनी योजना पूरी करने में पिछड़े हुए थे—उसे पूरा किया और उस दिन २।। लाख टन कोयला निकाला। उपज में यह वृद्धि एकदम नहीं हुई है बल्कि धीरे धीरे। इसलिए इसे स्थायी समझना चाहिए—

१० दिसम्बर	२,२६,३००	टन कोयला
११ ,, ...	२,३२,१६५	,, ,,
१२ ,, ...	२,४६,७०३	,, ,,

१२ दिसंबर को अपनी योजना से ७·६ सैकड़ा अधिक कोयला निकाला गया। **दोन्बास्** की २९० खानों में २१४ ने १२ दिसंबर को योजना से

अधिक कोयला दिया। **अर्तेम्** खान के २००० खनकों ने १२ दिसंबर को अपने हिस्से से तिगुना और चौगुना कोयला खोद कर दिया। **शोलोगुब्** कमकर ने चार सहायकों के साथ ४० गुना कोयला तैयार किया। उसी खान में कोब्लेफ ने एक सहायक के साथ २२ गुना काम किया।

(३) **ओर्जोनीकिद्ज़े**-मशीन-**निर्माणालय (मास्को)** के प्रसिद्ध स्तख़ानोवी कमकर **इवान् गुदोफ़्** ने अपने ७ घंटे के काम में ११५२ पुर्जों को तैयार किया; और इस प्रकार ४५८२ सैकड़ा अपना काम पूरा किया। उस ७ घंटे में उसने १०८८ रूबल और ८८ कोपेक कमाये। उसका शिष्य नेस्तेरोफ़् भी गुरु से पीछे नहीं रहा। उसने २ दिसम्बर को अपने काम का २५२८ सैकड़ा पूरा किया। दूसरे शिष्य अलाविन ने २०७० सैकड़ा काम किया। ३ दिसंबर को उस कारख़ाने के २ और स्तख़ानोवियों ने दस गुना काम किया।

निज़्नेद्नियेप्रोब्स्क् (उक्रइन्) के एक मशीन के कारख़ाने में—जिसके लिए कि एक अंगरेज़ी कंपनी ने २३१ चक्का प्रतिदिन (७ घंटा) की गारन्टी की थी—४ दिसंबर को **स्तख़ानोवी जरुविन** और उसके ब्रिगेड ने ४५७ पहिया, और ६ दिसंबर को ४६० तथा ७ दिसंबर को ४८० पहिये बनाये; और इस प्रकार संसार के रेकार्ड को तोड़ा।

दिसंबर के पहले ५ दिनों में **करागन्दा** की कोयले की खानों ने ६२,८६७ टन की जगह ६४,६३८ टन पैदा किया। **वोरोशिलोफ़्-ग्राद् (उक्रइन्)** के इंजन के कारख़ाने ने दिसंबर के पहले ५ दिनों में ५ से ६ इंजन तक तैयार किये; और ६ से १० दिसंबर के ५ दिनों में १५ रेलवे इंजन बनाये।

(४) दिसंबर में स्वर्मोवो-कारख़ाना गोर्की के कमकर बोल्दीरेफ़ ने जिसने कि पिछले महीने १२॥ गुना काम किया था, ३॥ दिनों के २६ घंटों में ३३८ घंटों का काम किया। इन २६ घंटों के काम से उसने ८०० रूबल कमाये।

शाख़्ती के फ़्रुंज़े कोयले की खान के एक खनक उशाकोफ़् ने २१

दिसंबर को १३० वर्ग मीतर कोयला काटकर १६ गुना काम किया; और एक दिन में २७६ रूबल कमाये।

(५) **क्रमातोर्स्क** के मशीन बनाने के कारख़ाने के एक कमकर **कोलेस्निकोफ़्** ने २८ दिसंबर को ५ घंटे में सवा सात गुना काम किया। वहीं के दूसरे कमकर **कोवालेफ़्** ने ६०७ सैकड़ा काम उतने ही समय में किया। एक दूसरे कमकर **ज़ुकोफ़्** ने ६ गुना किया। उस दिन पहली **शिफ़्ट** में कारख़ाने के ५६ कमकरों ने नया रेकार्ड स्थापित किया; और २१३ स्तख़ानोवियों ने दूना काम किया।

मग्नीतोगोर्स्क के लोह-फ़ौलाद-कारख़ाने के खुले चूल्हे वाले वर्कशाप नं० २ के कमकरों ने २७ दिसंबर को साल का काम पूरा कर दिया। इस साल उन्होंने ७ लाख टन फ़ौलाद बनाया। २७ दिसंबर को वहाँ के तार बनानेवाले वर्कशाप ने अपने प्रोग्राम से १२५ टन अधिक तार बनाया। **सोकोलोफ़्** के ब्रिगेड ने ६८७ टन की जगह ८२४ टन लोहे का तार बनाया। २७ दिसंबर को मोलोतोफ़्-मोटरकार-कारख़ाने के कमकर **गह्मेत्दिनोफ़्** ने २६०० की जगह पर ६००० पुर्ज़ों को तैयार किया। दूसरे कमकर **वन्नी-कोफ़्** ने २८ दिसंबर को ५९ स्टीयरिंग पहिये मोटर में लगाये। योजना २८ पहिये की थी। देश के चीनी के कारख़ानों ने—जो कि १९३७ में ३ महीने काम करते रहे—२५ दिसंबर तक १९ लाख ११ हज़ार २५० टन चीनी तैयार कर दी थी। पिछले साल इतने समय में १५ लाख ४० हज़ार ३ सौ टन चीनी तैयार हुई थी।

(६) **दोनबास् के स्तालिन् चंदवक**—जहाँ कि स्तख़ानोफ़् आन्दोलन का जन्म हुआ—के कमकरों ने दिसंबर में १५४७ टन कोयला निकाला। यह योजना से १८·४ सैकड़ा अधिक है।

मारीउपोल के **इलिच्** लोहे के कारख़ाने के १० कमकरों ने भट्ठों की ताक़त से अधिक फ़ौलाद तैयार किया। लाज़िन ने १३·५ टन प्रतिवर्ग-मीतर उष्णतल और नेदेल्को तथा **त्युल्याकोफ़्** में से हर एक ने ११ टन से

दिसंबर को १३० वर्ग मीतर कोयला काटकर १६ गुना काम किया; और एक दिन में २७६ रूबल कमाये।

(५) **क्रमातोर्स्क** के मशीन बनाने के कारख़ाने के एक कमकर **कोलेस्निकोफ़्** ने २८ दिसंबर को ५ घंटे में सवा सात गुना काम किया। वहीं के दूसरे कमकर **कोवालेफ़्** ने ६०७ सैकड़ा काम उतने ही समय में किया। एक दूसरे कमकर **ज़्कोफ़्** ने ६ गुना किया। उस दिन पहली **शिफ़्ट** में कारख़ाने के ५६ कमकरों ने नया रेकार्ड स्थापित किया; और २१३ स्तख़ानोवियों ने दूना काम किया।

मग्नीतोगोर्स्क के लोह-फ़ौलाद-कारख़ाने के खुले चूल्हे वाले वर्कशाप नं० २ के कमकरों ने २७ दिसंबर को साल का काम पूरा कर दिया। इस साल उन्होंने ७ लाख टन फ़ौलाद बनाया। २७ दिसंवर को वहाँ के तार बनानेवाले वर्कशाप ने अपने प्रोग्राम से १२५ टन अधिक तार बनाया। **सोकोलोफ़्** के ब्रिगेड ने ६८७ टन की जगह ८२४ टन लोहे का तार बनाया। २७ दिसंवर को मोलोतोफ़्-मोटरकार-कारख़ाने के कमकर **गहमेत्दिनोफ़्** ने २६०० की जगह पर ६००० पुर्ज़ों को तैयार किया। दूसरे कमकर **वन्नी-कोफ़्** ने २८ दिसंबर को ५९ स्टीयरिंग पहिये मोटर में लगाये। योजना २८ पहिये की थी। देश के चीनी के कारख़ानों ने—जो कि १९३७ में ३ महीने काम करते रहे—२५ दिसंबर तक १९ लाख ११ हज़ार २५० टन चीनी तैयार कर दी थी। पिछले साल इतने समय में १५ लाख ४० हज़ार ३ सौ टन चीनी तैयार हुई थी।

(६) **दोनबास् के स्तालिन् चंदवक**—जहाँ कि स्तख़ानोफ़् आन्दोलन का जन्म हुआ—के कमकरों ने दिसंबर में १५४७ टन कोयला निकाला। यह योजना से १८·४ सैकड़ा अधिक है।

मारीउपोल के **इलिच्** लोहे के कारख़ाने के १० कमकरों ने भट्ठों की ताक़त से अधिक फ़ौलाद तैयार किया। लाज़िन ने १३·५ टन प्रतिवर्ग-मीतर उष्णतल और नेदेल्को तथा **त्युल्याकोफ़्** में से हर एक ने ११ टन से

अधिक कोयला दिया। **अर्तेम्** खान के २००० खनकों ने १२ दिसंबर को अपने हिस्से से तिगुना और चौगुना कोयला खोद कर दिया। **शोलेगुब्** कमकर ने चार सहायकों के साथ ४० गुना कोयला तैयार किया। उसी खान में कोब्लेफ ने एक सहायक के साथ २२ गुना काम किया।

(३) **ओर्जोनीकिद्ज़े-मशीन-निर्माणालय (मास्को)** के प्रसिद्ध स्तख़ानोवी कमकर **इवान् गुदोफ़्** ने अपने ७ घंटे के काम में ११५२ पुर्ज़ों को तैयार किया; और इस प्रकार ४५८२ सैकड़ा अपना काम पूरा किया। उस ७ घंटे में उसने १०८८ रूबल और ८८ कोपेक कमाये। उसका शिष्य नेस्तेरोफ़् भी गुरु से पीछे नहीं रहा। उसने २ दिसम्बर को अपने काम का २५२८ सैकड़ा पूरा किया। दूसरे शिष्य अलाविन ने २०७० सैकड़ा काम किया। ३ दिसंबर को उस कारख़ाने के २ और स्तख़ानोवियों ने दस गुना काम किया।

निज्नेद्नियेप्रोब्स्क् (उक्रइन्) के एक मशीन के कारख़ाने में—जिसके लिए कि एक अंगरेज़ी कंपनी ने २३१ चक्का प्रतिदिन (७ घंटा) की गारन्टी की थी—४ दिसंबर को **स्तख़ानोवी ज़रुविन** और उसके ब्रिगेड ने ४५७ पहिया, और ६ दिसंबर को ४६० तथा ७ दिसंबर को ४८० पहिये बनाये; और इस प्रकार संसार के रेकार्ड को तोड़ा।

दिसंबर के पहले ५ दिनों में **करागन्दा** की कोयले की खानों ने ६२,८६७ टन की जगह ६४,६३८ टन पैदा किया। **वोरोशिलोफ़्-ग्राद् (उक्रइन्)** के इंजन के कारख़ाने ने दिसंबर के पहले ५ दिनों में ५ से ६ इंजन तक तैयार किये; और ६ से १० दिसंबर के ५ दिनों में १५ रेलवे इंजन बनाये।

(४) दिसंबर में स्वर्मोवो-कारख़ाना गोर्की के कमकर बोल्दीरेफ़ ने जिसने कि पिछले महीने १२॥ गुना काम किया था, ३॥ दिनों के २६ घटों में ३३८ घंटों का काम किया। इन २६ घंटों के काम से उसने ८०० रूबल कमाये।

शाख़्ती के फ़्रुंज़े कोयले की खान के एक खनक उशाकोफ़् ने २१

दिसंबर के दूसरे दिनों की बिक्री से १६० लाख यह ज़्यादा है। दिसंबर ३० और ३१ को भोजन के सब से बड़े भंडार **गस्त्रोनोम्** नं० १ ने ५ हज़ार बोतल **शम्पेन**, २००० टोकरे फल, २००० बक्स नीबू, १५०० बक्स नारंगी, ३ लारी सेब १०००० बक्स देवदार वृक्षों की सजावट के सामान तथा बहुत भारी तादाद में ताज़ी और सूखी मछलियाँ, चटनी, मुरब्बा, बिसकुट आदि चीज़ें बेचीं।

(७) तृतीय पंच-वार्षिक योजना पहली जनवरी १६३८ से आरंभ हुई है। नये निर्वाचन के अनुसार महासोवियत् का अधिवेशन १२ जनवरी को हुआ। इन दोनों बातों के उपलक्ष्य में सोवियत् कमकरों ने इस जनवरी के महीन को स्तख़ानोवी होड़ का महीना घोषित कर दिया।

इस होड़ में स्तालिन्-विद्युत्-टर्बाइन-कारख़ाना (**ख़र्कोफ़्**) के १००० कमकर दुगुना से ज़्यादा काम कर रहे थे। इस कारख़ाने की ७२ वर्कशाप **स्तख़ानोवी** है; और उसकी कोशिश है कि सारा कारख़ाना स्तख़ानोवी हो जाय। उसी शहर के दूसरे कारख़ाने कोमिन्तर्न के एक विभाग ने १ शिफ़्ट में २४६ सैकड़ा काम किया और दूसरे विभाग ने १६६ सैकड़ा। **द्नीयेप्रो-पेत्रोव्स्क** नगर की **जेर्जिन्स्की** लोह-वर्कशाप ने जनवरी के पहले ६ दिनों में योजना से १२६ टन अधिक लोहा पैदा किया। ६ जनवरी को वर्कशाप नं० २ ने योजना से ७२ टन अधिक लोहा तैयार किया। उसी नगर के दूसरे कारख़ाने **लीव्न्केख़्त** ने अपने छोटे खुले भट्ठे की वर्कशाप से पहले ५ दिनों में काम को १२४·२ सैकड़ा किया और ६ जनवरी को १४४ सैकड़ा।

क्रमातोर्स्क नगर के **ओर्जोनी-किद्ज़े** कारख़ाने के ज़र्या नामक कमकर ने १२६६ सैकड़ा काम पूरा किया। ७ जनवरी को उसे भी मात कर **लेसित्स्की** एक तरुण साम्यवादी ने १६५२ सैकड़ा काम किया। उसी दिन वर्कशाप के ६३ **स्तख़ानोवियों** ने ड्योढ़ा काम किया।

कालिनिन् के सभी कपड़े के कारख़ाने जनवरी के पहले ५ दिनों में योजना से अधिक काम कर रहे थे। **कालिनिन्** बुनाई मिल ने ४·८ सैकड़ा

अधिक पैदा किया। **ओर्जोनीकिद्ज़ेग्राद्** नगर के लाल प्रोफिन्टर्न कारख़ाने के ६२६० कमकर बराबर अपने काम को योजना से १।। गुना से ३ गुना तक करते रहे। ३० दिसंबर को वढ़ई ब्रिगेड ने ४ गुना काम किया, ब्वायलर-ब्रिगेड ने ३ गुना और मशीनी-हथौड़ा ब्रिगेड ने ६।। गुना से ज़्यादा काम किया।

लाल-पताका-कारख़ाना (लेनिन्ग्राद्) के **स्तख़ानोवी** मिस्त्री **पश्श-कोफ़्** ने ३१ दिसंबर को ५ घंटा ३५ मिनट में अपनी योजना का १६८ गुना काम पूरा किया। उस दिन उसने ११८२ रूबल कमाया और फ़ैक्टरी में उसके सम्मान में एक बड़ी सभा करके उसे बधाई दी गई।

ख़र्कोफ़् जूता कारख़ाना नं० ५ के ११५ कमकर—जो पहले अपने प्रोग्राम को पूरा नहीं किया करते थे—अब उससे अधिक कर रहे हैं।

उसी शहर के हँसुआ-हथौड़ा-कारख़ाने में १ जनवरी १९३८ को **स्तख़ानोवी** कमकरों की संख्या २३०० थी, जिनमें से ८१९ दुगुना काम करते हैं। एक साल पहले १ जनवरी १९३७ को वहाँ १५४९ ही स्तख़ानोवी थे।

स्वेर्दलोव्स्क प्रान्त की **सेरेदोविना** सोने की खान के कमकरों ने साल में ६५·५ सैकड़ा अधिक काम किया।

ख़र्कोफ़् प्रान्त के कारख़ानों के कमकरों ने १९३७ में जो सुधार सुझाये थे, उनके काम में लाने से कारख़ानों को २ करोड़ रूबल की बचत हुई। १९३७ के पहले ६ महीनों में ७०५६ सुधार संबंधी सुझाव पेश किये गये थे। कोतेल्निकोफ़् कमकर ने बिजली के कारख़ानों के संबंध में ३० सुझाव पेश किये थे। पिश्मा (स्वेर्दलोफ़् प्रान्त के) के ताँबा-बिजली-कारख़ाने में १७० सुझाव पेश हुए थे; जिनके कारण एक साल में १,६१,००० रूबल की बचत हुई।

स्तख़ानोव आन्दोलन चीज़ों की उपज में ही काम नहीं कर रहा है, वल्कि वितरण में भी कमकर वैसा ही जोश दिखा रहे हैं। मास्को के भंडारों ने नव वर्ष के उपलक्ष्य में ३१ दिसंबर को ५२१ लाख रूबल का माल बेचा।

अधिक पैदा किया। **ओर्जोनीकिद्ज़ेग्राद्** नगर के लाल प्रोफिन्टर्न कारख़ाने के ६२६० कमकर बराबर अपने काम को योजना से १॥ गुना से ३ गुना तक करते रहे। ३० दिसंबर को बढ़ई ब्रिगेड ने ४ गुना काम किया, ब्वायलर-ब्रिगेड ने ३ गुना और मशीनी-हथौड़ा ब्रिगेड ने ६॥ गुना से ज़्यादा काम किया।

लाल-पताका-कारख़ाना (लेनिन्ग्राद्) के **स्तख़ानोवी** मिस्त्री **पश्श-कोफ़्** ने ३१ दिसंबर को ५ घंटा ३५ मिनट में अपनी योजना का १६८ गुना काम पूरा किया। उस दिन उसने ११८२ रूबल कमाया और फ़ैक्टरी में उसके सम्मान में एक बड़ी सभा करके उसे बधाई दी गई।

ख़र्कोफ़् जूता कारख़ाना नं० ५ के ११५ कमकर—जो पहले अपने प्रोग्राम को पूरा नहीं किया करते थे—अब उससे अधिक कर रहे हैं।

उसी शहर के हँसुआ-हथौड़ा-कारख़ाने में १ जनवरी १६३८ को **स्तख़ानोवी** कमकरों की संख्या २३०० थी, जिनमें से ८१६ दुगुना काम करते हैं। एक साल पहले १ जनवरी १६३७ को वहाँ १५४६ ही स्तख़ानोवी थे।

स्वेर्दलोव्स्क प्रान्त की **सेरेदोविना** सोने की खान के कमकरों ने साल में ६५·५ सैकड़ा अधिक काम किया।

ख़र्कोफ़् प्रान्त के कारख़ानों के कमकरों ने १६३७ में जो सुधार सुझाये थे, उनके काम में लाने से कारख़ानों को २ करोड़ रूबल की बचत हुई। १६३७ के पहले ६ महीनों में ७०५६ सुधार संबंधी सुझाव पेश किये गये थे। कोतेल्निकोफ़् कमकर ने बिजली के कारख़ानों के संबंध में ३० सुझाव पेश किये थे। पिश्मा (स्वेर्दलोफ़् प्रान्त के) के ताँबा-बिजली-कारख़ाने में १७० सुझाव पेश हुए थे; जिनके कारण एक साल में १,६१,००० रूबल की बचत हुई।

स्तख़ानोव आन्दोलन चीज़ों की उपज में ही काम नहीं कर रहा है, बल्कि वितरण में भी कमकर वैसा ही जोश दिखा रहे हैं। मास्को के भंडारों ने नव वर्ष के उपलक्ष्य में ३१ दिसंबर को ५२१ लाख रूबल का माल बेचा।

दिसंबर के दूसरे दिनों की बिक्री से १६० लाख यह ज़्यादा है। दिसंबर ३० और ३१ को भोजन के सब से बड़े भंडार **गस्त्रोनोम्** नं० १ ने ५ हज़ार बोतल **शम्पेन**, २००० टोकरे फल, २००० बक्स नीबू, १५०० बक्स नारंगी, ३ लारी सेब १०००० बक्स देवदार वृक्षों की सजावट के सामान तथा बहुत भारी तादाद में ताज़ी और सूखी मछलियाँ, चटनी, मुरब्बा, बिसकुट आदि चीज़ें बेचीं।

(७) तृतीय पंच-वार्षिक योजना पहली जनवरी १६३८ से आरंभ हुई है। नये निर्वाचन के अनुसार महासोवियत् का अधिवेशन १२ जनवरी को हुआ। इन दोनों बातों के उपलक्ष्य में सोवियत् कमकरों ने इस जनवरी के महीन को स्तखानोवी होड़ का महीना घोषित कर दिया।

इस होड़ में स्तालिन्-विद्युत्-टर्बाइन-कारख़ाना (**ख़र्कोफ़्**) के १००० कमकर दुगुना से ज़्यादा काम कर रहे थे। इस कारख़ाने की ७२ वर्कशाप **स्तख़ानोवी** है; और उसकी कोशिश है कि सारा कारख़ाना स्तख़ानोवी हो जाय। उसी शहर के दूसरे कारख़ाने कोमिन्तर्न के एक विभाग ने १ शिफ़्ट में २४६ सैकड़ा काम किया और दूसरे विभाग ने १६६ सैकड़ा। **द्नीयेप्रो-पेत्रोब्स्क** नगर की **ज़ेर्जिन्स्की** लोह-वर्कशाप ने जनवरी के पहले ६ दिनों में योजना से १२६ टन अधिक लोहा पैदा किया। ६ जनवरी को वर्कशाप नं० २ ने योजना से ७२ टन अधिक लोहा तैयार किया। उसी नगर के दूसरे कारख़ाने **लीव्न्केख़्त** ने अपने छोटे खुले भट्ठे की वर्कशाप से पहले ५ दिनों में काम को १.२४·२ सैकड़ा किया और ६ जनवरी को १४४ सैकड़ा।

क्रमातोर्स्क नगर के **ओर्जोनी-किद्ज़े** कारख़ाने के ज़र्या नामक कमकर ने १२६६ सैकड़ा काम पूरा किया। ७ जनवरी को उसे भी मात कर **लेसित्स्की** एक तरुण साम्यवादी ने १६५२ सैकड़ा काम किया। उसी दिन वर्कशाप के ६३ **स्तख़ानोवियों** ने ड्योढ़ा काम किया।

कालिनिन् के सभी कपड़े के कारख़ाने जनवरी के पहले ५ दिनों में योजना से अधिक काम कर रहे थे। **कालिनिन्** बुनाई मिल ने ४·८ सैकड़ा

अधिक काम किया। **यज़्दानोफ़्** मिल की बहुत सी **स्तख़ानोवी** स्त्री जुलाहों ने २५ सैकड़ा अधिक और एक ने ३३ सैकड़ा अधिक काम किया।

ओर्जोनीकिद्ज़े की लाल **प्रोफ़िन्तर्न कोयले की** खान में दो तरुण साम्य-वादी **रैब्को** और **मिशानोफ़्** आपस में होड़ लगाये हुए थे, उन्होंने सारे जन-वरी महीने का काम ५ तारीख़ को ही ख़तम कर दिया। यह स्तख़ानोवी खनक अब अपना ढंग अपने साथियों को सिखा रहे हैं।

*** ***

(१) **चेल्याबिन्स्क के ट्रैक्टर**-कारख़ाने के बढ़ई **सुरकोफ़्** ने साधारण निर्वाचन की खुशी में की गई सभा में प्रस्ताव किया कि १९३८ के सारे साल को **स्तख़ानोवी** होड़ का साल बना दिया जाय। उसने प्रतिज्ञा की, कि मैं बराबर दूना काम करता रहूँगा।

(२) अक्तूबर कोल्ख़ोज़् (**कालिनिन् प्रान्त**) की स्त्रियों के ब्रिगेड के नायक गुवानोवा ने प्रतिज्ञा की—"पिछले दो साल तक लगातार मेरे ब्रिगेड ने प्रति एकड़ ४०० किलोग्राम (प्रायः १० मन) सन पैदा किया। अगले साल हम **मोल्याकोफ़्** के तजर्बे को इस्तेमाल करेंगी और सन की उपज को और बढ़ायेंगे।......हमारी कारेली जाति ज़ारशाही के ज़माने में दलित और परतंत्र समझी जाती थी। आज स०स०स०र० की जनता के परिवार में हमें समानता का अधिकार है। हम इस बात को ख़ूब समझते हैं.............।"

(३) **इलिच्**-कोल्ख़ोज़् (**स्मोसन्स्क प्रान्त**) ने प्रतिज्ञा-पत्र लिखा—"हमारा जीवन अब आनन्दमय है। हम जानते हैं कि हमारा कल आज से भी बेहतर होगा। युद्ध के सर्वनाश से स्वतंत्र हुए हमें १६ वर्ष हो गये। इन वर्षों में हमने शान्ति के वातावरण में अपने जीवन का नव-निर्माण किया।"

....

(४) **स्तख़ानोफ़्**-आन्दोलन की जड़ पकड़ने के साथ साथ उपज

बढ़ती जा रही है। दोन्बास् स०स०स०र० की एक बहुत महत्त्वपूर्ण कोयले की खान है। सितंबर १९३७ में इसके कोयले का प्रतिदिन का औसत १९७ हज़ार टन था। दिसंबर में वह २३० हज़ार टन हो गया। एक दिन तो २४० हज़ार टन तक पहुँचा था।

दो महीना पहले **दोन्बास्** के १५००० खनक दूना काम करते थे, लेकिन जनवरी के आरंभ में इस श्रेणी के मज़दूरों की संख्या ३०००० हो गई। हज़ारों **स्तख़ानोवी मैनेजर** आदि के दायित्वपूर्ण पद पर पहुँच गये हैं। कितने ही साधारण **स्तख़ानोवी** कमकर पढ़कर इंजीनियर के पद पर पहुँचे हैं। इस प्रकार किताबी और क्रियात्मक दोनों ज्ञानों के मिल जाने से यहाँ की खानों में नये जीवन का संचार हुआ है।

कोयले की उपज में यह वृद्धि बहुत महत्त्वपूर्ण है। पिछले ४ सालों से पार्टी और गवर्नमेंट की कोशिश थी कि दोन्वास् के खानों के कोयले की उपज को १,३०,००० टन रोज़ से ऊपर बढ़ाया जाय। इसी के लिए खान का हर एक काम मशीन से करने का प्रबंध किया गया। कोयले की देश को बहुत ज़रूरत है। हज़ारों नई फ़ैक्टरियाँ, पावरहाउस, नये औद्योगिक नगर और सैकड़ों मील की नई रेलवे ये सब कोयला माँगती हैं। १९३६ तक दोन्वास् की खानें पिछड़ी हुई थीं। २० ट्रस्टों में सिर्फ़ १ योजना के करीब रहने की कोशिश कर रहा था। मैनेजर अधिकतर ऐसे आदमी थे, जो ख़ुद सुस्त थे और काम को आगे बढ़ने देना नहीं चाहते थे।

जब से **ल० म० कगानोविच्** भारी-उद्योग का मंत्री बना, तब से अवस्था बदल गई। उसने मौके पर पहुँच कर बारीकी से उन कारणों की जाँच की, जिनसे खानें पीछे पड़ी हुई थीं। उन कारणों में थे—खानों का कुप्रबन्ध, यातायात के इन्तज़ाम में ढीलापन, दुर्घटनाएँ। उसने इन दोषों को हटाने के लिए बड़ी तत्परता दिखलाई। उसने इंजीनियर और **यंत्रशिल्पी, फ़ोरमैन्** और कमकर सबसे पूछताछ की। उसके इस काम में

पार्टी की बैठक (फ़रवरी-मार्च १९३७) में स्तालिन् के इस वाक्य ने पथ-प्रदर्शन किया—

"नेतृत्व का असली मतलब है—

१—अव्वल समस्या का उचित हल ढूँढ़ना। लेकिन समस्या का उचित हल ढूँढ़ना तब तक असंभव है, जबतक जनता—जो कि हमारे नेतृत्व के फल को अपने सिर पर अनुभव करती है—के तजर्बों को ध्यान में न लाया जाय।

२—दूसरे ठीक हल के उपयोग को संगठित करना, जो कि जनता की सीधी मदद के बिना नहीं किया जा सकता।

३—तीसरे इस हल की सफलता को कसौटी पर कसने का संगठन करना और यह भी जनता की साक्षात् सहायता के बिना नहीं हो सकता।"

(५) मास्को के प्रसिद्ध स्तख़ानोवी कमकर गुदोफ़ के ढंग को गोर्की के कमकर गनोखिन् ने इस्तेमाल किया और वह ३½ घंटा में १५३६ सैकड़ा काम करने में समर्थ हुआ। पहले वह २५० से २७० सैकड़ा तक अपने काम को पूरा कर सकता था। खर्कोफ़ के हँसुआ-हथौड़ा इंजीनियरी कारख़ाने के मिस्त्री **लित्विश्को** ने १ जनवरी को १०–१२ सैकड़ा पूरा किया। पिछले साल वह नियम से पँचगुना काम करता था; और कितनी ही बार अठगुना नवगुना करने में भी सफल हुआ।

जेर्जिन्स्की-लोह-फ़ौलाद-कारख़ाना (द्नीये प्रोपेत्रोव्स्क) में ३५७ स्तख़ानोवी मामूली मज़दूर सहायक फ़ोरमैन तथा और ऊँचे पदों पर नियुक्त किये गये हैं। **ग० ई० इवानोव्स्की**—जो सोवियत् पार्लियामेंट का डिपुटी है, और पहले एक धौंकू भट्ठे का मुखिया था—अब क्रिवोइरोग् लोह-फ़ौलाद कारख़ाने का डाइरेक्टर बनाया गया है। लेविन जो पहले एक धौंकू भट्ठा-विभाग का सहायक मुखिया था, अब उसी कारख़ाने का प्रधान इंजीनियर बनाया गया है।

(६) **मोलोतोफ़् मोटर-कारख़ाना**—गोर्की का रँगाई विभाग ५

महीने से अपने ऊँचे काम के कारण लाल-पताका (सरकारी इनाम) को रखनेवाला है। वह बराबर अपने काम को योजना से अधिक पूरा करता जा रहा है। १९३७ की योजना को उसने समय से बहुत पहले पूरा किया। यह सब सफलता स्तख़ानोव-आन्दोलन के कारण है। श्रेष्ठ स्तख़ानोवियों में से कितने ही मैनेजर आदि के पद पर नियुक्त हुए हैं। इस विभाग के ३६० **स्तख़ानोवी** बराबर दूना और तिगुना काम कर रहे हैं। कई **शयोद्लेस्नी** और **कोरोलेफ़्** जैसे दस गुना और उससे अधिक काम करनेवाले कमकर भी हैं।

दोनेत्स्क कारख़ाने के स्तख़ानोवी और तूफ़ानी-कमकर छुट्टी के समय में पढ़कर अपनी योग्यता बढ़ा रहे थे। उनमें से कितने ही इंजीनियर और मैनेजर बनाये गये हैं। १९३७ में दोनेत्स्क औद्योगिक **इंस्टीटचूट से** ३५४ इंजीनियर की डिग्री पाकर निकले हैं। जनवरी १९३८ में १०६ कमकर शाम को उक्त इंस्टीटचूट में पढ़ते थे।

(७) ताशकंद में रेलवे इंजन का इंजीनियर **वासिलीयस्चो** एक प्रसिद्ध **स्तख़ानोवी** हैं। चुनाव में वह जातिक-सोवियत् का डिपुटी चुना गया है। वह **उज्बेकिस्तान** स०स०र० की केंद्रीय प्रबंध-समिति का उपाध्यक्ष भी है।

२५—कोल्ख़ोज़

(पंचायती खेती)

समाजवाद सम्पत्ति का स्वामित्व समाज के हाथ में देता है। वह सम्पत्ति चाहे औद्योगिक हो, चाहे कृषि-संबंधी हो। इस प्रकार समाजवादियों को यह पहले ही मालूम है कि खेती का भी समाजीकरण होना ज़रूरी है। क्रान्ति का वेग यद्यपि बहुत तीव्र होता है। वह उस तूफ़ान की तरह है, जिसके सामने बड़े बड़े वृक्ष फूँक से तिनके की तरह उड़ते हैं। तो भी मनुष्य के समाज का संगठन इतना पेचीदा है कि एक दिन में उसे ठीक नहीं किया जा सकता। इसीलिए क्रान्ति के विजयी होने के बाद भी ११ साल तक इन्तज़ार करना पड़ा, तब जोरशोर के साथ खेती को पंचायती बनाने का भारी प्रोग्राम कार्य रूप में परिणत किया जाने लगा।

महान् साम्यवादी क्रान्ति ने प्रथम वर्ष ही में खेती पर ज़मींदारों का प्रभुत्व ख़तम कर दिया, जिसके कारण किसान सिर ऊपर उठाकर चलने में समर्थ हुए, लेकिन सोवियत् के कर्णधारों के सामने तो पहले ३ साल का भयंकर गृह-युद्ध था। उसके बाद उद्योग-धंधे को फिर से निर्माण करने का सवाल था। १९२७ तक उनका सारा ध्यान इसी ओर रहा।

हाँ, एक बात ज़रूर हुई थी। क्रान्ति के समय ज़मींदारों की बड़ी बड़ी ज़मींदारियाँ जो ज़ब्त की गई थीं, उनमें बड़े बड़े फ़ार्म (खेत) थे। नई सरकार ने बहुत से खेतों को किसानों को दे दिया। लेकिन कुछ खेतों को सरकारी खेत के रूप में परिणत कर दिया। इन्हें आजकल सोफ़्-खोज (सोवियत् के खेत) कहते हैं। सोफ़खोज़ के बारे में हम अलग लिखेंगे। यहाँ संक्षेप में इतना ही समझना चाहिए कि सोफ़्खोज़ एक प्रकार से अनाज

की फ़ैक्टरी है। जिसका हरएक कार्यकर्ता वैसा ही कमकर है, जैसा सरकार के किसी और कारख़ाने का कमकर।

सोफ़खोजों के अतिरिक्त कितनी ही जगहों पर कुछ आदर्शवादी साम्यवादियों ने साम्यवादी खेती (कम्यून) भी स्थापित की; और सोवियत् सरकार की हर तरह से मदद होने के कारण सफलता पूर्वक उन्हें चलाया। लेकिन जब तक (१९२७ ई० में) देश का उद्योग-धंधा युद्ध के पहले की हालत में नहीं पहुँच गया, तब तक गाँवों के जीवन को समाजवादी बनाने की ओर ध्यान नहीं गया।

व्यक्तिगत खेती के रहते उद्योगधंधे का समाजीकरण करके आगे बढ़ना बहुत जोखिम का काम था। क्योंकि कारख़ानों के मज़दूरों को रोटी देनेवाले तो आख़िर ये ही किसान थे। उन्हें अकेले जीवन से प्रेम होने से अकेले भूखे मरने में भी उतनी चिन्ता नहीं थी। उनके धार्मिक तथा दूसरे मूढ़विश्वास हैजा, चेचक, महामारी के समय की तरह दुष्काल के समय में ढाढ़स बँधा सकते थे। लेकिन शहर के कारख़ानों के समाजवादी कमकर उनसे अधिक जानने और समझने वाले थे। वे हर बात को भाग्य पर नहीं छोड़ सकते थे। अब असल समस्या थी—जिस प्रकार कारख़ानों के मजदूरों, मशीनों, कच्चे माल आदि का इन्तज़ाम करके हम उपज का एक परिमाण निश्चित कर सकते हैं, क्या अनाज के बारे में भी हम वैसी ही निश्चिन्तता प्राप्त कर सकते हैं? ऐसी निश्चिन्तता प्राप्त करने के लिए हमें खेती में भी विज्ञान की सहायता लेनी पड़ेगी। जहाँ पानी नहीं है, वहाँ दैव का भरोसा छोड़कर सिंचाई का प्रबन्ध करना होगा, नहरें और कल के कुएँ बनाने होंगे। खेतों की स्वाभाविक शक्ति तथा सेर-दो सेर गोबर आदि की खाद से काम नहीं चलेगा। वहाँ वैज्ञानिक खाद निट्रेट और फोस्फेट का उपयोग करना पड़ेगा। चार अंगुल ज़मीन खुरचनेवाले हलों से बेड़ा पार नहीं होगा। इसके लिए हमें ट्रैक्टर की ज़रूरत होगी, जो हाथ हाथ गहरी ज़मीन खोद कर सभी तरह की अवांछनीय घासों को

खोदकर निकाल दे और नरम भूमि में पौधे की जड़ एक एक फ़ुट, डेढ़ डेढ़ फ़ुट भीतर घुस सके। इस प्रकार छोटे मोटे सूखे—जिसका प्रभाव पाँच-सात इंच धर्ती सुखाने तक ही पड़ सकता है—से भी पौदों को सूखने से बचाया जा सके। किसान बाबाआदम के ज़माने से चले आते हैं। कृषिविज्ञान ही पर अवलंबित न रहें। बल्कि कृषि की हर प्रकार की बीमारियों, हर प्रकार की आपदाओं का संगठित रूप से मुकाबला करें। जिस प्रकार जन-गणना से काम करनेवालों की संख्या निश्चित मालूम है, और यह भी मालूम है, कि उतने मुँहों को कितने गेहूँ, कितने मांस, कितने मक्खन की ज़रूरत होगी। **सोवख़ोज़ों** का प्रबंध सरकार के हाथ में था। और उनके बारे में वह निश्चित थी लेकिन सोफख़ोज़ इतने काफ़ी नहीं थे कि उनकी उपज से सारी मज़दूर जनता की भूख की आवश्यकता पूरी हो सके। वैयक्तिक किसानों की आमदनी का कोई निश्चय नहीं था। कभी सूखा पड़ जाता था, कभी बाढ़ आ जाती थी, कभी टिड्डियाँ खेत चर जाती थीं। कभी खुद ही आलस के मारे या स्वार्थियों की बात में आकर किसान बहुत से खेत को पर्ती छोड़ देता था, यह निश्चिन्तता की अवस्था वांछनीय न थी।

आर्थिक प्रश्न के साथ साथ एक और भी ख़याल था, जिसने खेती को पंचायती करने के लिए जननायकों को प्रेरित किया। जब तक किसान अपने घर द्वारा, अपने हल बैल, और अपने दस अंगुल के खेत को अलग संसार बनाये हुए हैं, तब तक उनकी सांस्कृतिक उन्नति नहीं हो सकती; नगर और गाँव का नागरिक और ग्रामीण का भेद नहीं मिट सकता। दोनों के दृष्टिकोण में बराबर अन्तर रहेगा। बाहर के विस्तृत जगत् का पूरा ज्ञान न होने के कारण किसान बराबर कूप-मंडूक रहेगा। क्रान्ति के महान् उद्देश्य को वह समझ नहीं सकेगा। समाजवाद के विश्वहित के महान् आदर्श को बूझ नहीं सकेगा। ज़रा सी बात के लिए उसकी अज्ञानता का फ़ायदा उठाकर स्वार्थी क्रान्तिविरोधी लोग उसे जाति के नाम पर,

धर्म के नाम पर, संस्कृति के नाम पर, आचार-विचार के नाम पर उत्तेजित कर सकेंगे।

किसानों का अज्ञान, व्यक्तिगत स्वार्थ से चिपटे रहना, आदि बातें राष्ट्र के भीतरी ख़तरे ही का कारण नहीं बन सकती हैं, बल्कि जिन पूँजीवादी शत्रुओं से सोवियत् भूमि घिरी है, उन्हें भी सोवियत् के किसान प्रहार करने के लिए मर्मस्थल से रहेंगे।

गाँवों में एक और भी सोवियत-शक्ति के लिए ख़तरे की चीज़ मौजूद थी, अधिकांश किसान अपनी अयोग्यता और आलस्य से अनाज कम पैदा करके शहरवालों को भूखा रख सकते थे। लेकिन गाँवों में ऐसी श्रेणी मौजूद थी, जिसने विनष्ट ज़मींदारों का स्थान ग्रहण किया था। जहाँ तक गाँव के आर्थिक जीवन का संबंध था, ज़मींदारों के रहते समय इस धनिक किसान या कुलक श्रेणी का अत्याचार षड्यंत्र और दूसरों के चूसने की नीति उतनी स्पष्ट न थी। ज़मींदारों के अत्याचार के कारण कुलक भी कितनी ही बार ग़रीब किसानों का साथ देते थे। लेकिन अब ज़मींदारों के हट जाने पर कुलकों का स्वार्थ स्पष्ट दिखाई देने लगा। देश के आर्थिक जीवन के सब कोनों में समाजवाद को पहुँचते देख कर उनको घबराहट हुई और वह चाहते थे कि उनके रास्ते में समाजवाद रोड़ा न अटकाने पाये। गाँवों में ६० फ़ीसदी ग़रीब किसान थे, जिनके पास बहुत कम ज़मीन थी। जोतने-बोने का साधन भी बहुत थोड़ा था। कुलक लोगों के पास ज़्यादा ज़मीन थी। वह गाँव के ग़रीब किसानों को मज़दूरी पर रख सकते थे। उनकी आय अधिक थी इसलिए किसी को कर्ज़ देकर, किसी को मज़दूरी पर रखकर, किसी को खिला-पिलाकर, किसी पर और छोटा मोटा अहसान करके उन पर अपना प्रभाव डाल सकते थे; और सोवियत् सरकार की समाजवादी नीति में बाधा डाल सकते थे।

यह अवस्था थी जब कि सोवियत् के नेता स्तालिन का ध्यान गाँवों की ओर गया। १९२८ में कोल्ख़ोज़् की योजना पर गर्मागर्म बहस हुई।

लोगों ने पक्ष-विपक्ष में कहा। अन्त में पार्टी और सरकार ने कोल्ख़ोज़् की नीति को स्वीकार किया।

नियम यह रखा गया था कि समझा बुझाकर पंचायती खेती और वैज्ञानिक सहायता के लाभों को दिखला कर लोगों को कोल्ख़ोज़् में आने के लिए आर्कषित किया जाय। पहले साल (१९२९) के लिए जितनी खेती को पंचायती करना था, उसका परिमाण कम रखा गया था। उसके साथ यही ख़याल काम कर रहा था कि जो थोड़े से लोग पहली बार आयेंगे, उन्हें यंत्रों की मदद मिलेगी। वैज्ञानिक खाद का इस्तेमाल होगा और संगठित सामूहिक श्रम को जोश और लगन के साथ इस्तेमाल करने का मौक़ा मिलेगा। इस प्रकार कोल्ख़ोज़् में आये हुए लोग प्रत्यक्ष नफ़े को देख कर सन्तुष्ट होंगे। उनके जीवन को बेहतर देख कर पड़ोस के लोग अधिक आर्कषित होंगे और वह धीरे धीरे कोल्ख़ोज़् में सम्मिलित होंगे। धीरे धीरे कोल्ख़ोज़ में आने से एक और फ़ायदा रहेगा कि सोवियत् सरकार ट्रैक्टर तथा दूसरे कृषि-संबंधी यंत्रों के बनानेवाले कारख़ानों को स्थापित कर सकेगी। जितनी ही मशीनें अधिक उत्पन्न होंगी, उसी के अनुसार यदि कोल्ख़ोज़् के आदमियों की संख्या बढ़ेगी, तो उन्हें कोल्ख़ोज़् से फ़ायदा ही फ़ायदा दिखलाई पड़ेगा।

कोल्ख़ोज़् के संगठन का काम १९२८ में ही शुरू हुआ था, उस वक़्त एक तरफ़ कोल्ख़ोज़् के पक्षपाती पक्ष में प्रचार कर रहे थे। दूसरी ओर कुलक और पुरोहित उसके विरोध में लगे हुए थे। कोल्ख़ोज़् की सफलता पर कुलकों को गरीबों का ख़ून चूस कर मोटे होने का मौक़ा नहीं मिलेगा। और कोल्ख़ोज़ी जीवन से किसानों को ज़्यादा प्रकाश मिलेगा। फिर सूखा पड़ने पर पुरोहितों से वह पूजा करवाना नहीं पसन्द करेंगे। हर शादी-ग़मी पर पुरोहितों द्वारा भाग्य के लिए सिफ़ारिश नहीं करवायेंगे। कोल्-ख़ोज़् की स्थापना के विरोध में पुरोहित वर्ग कितना तैयार था, वह एक ईश्वर की तरफ़ से भेजे पत्र—जिसे उक्रइन् के ईसाई पुरोहितों ने १९३०

में लोगों में प्रचारित किया था—के इस वाक्य से मालूम होगा—

"मैं तुम्हारा स्वामी ईश्वर तुमसे कहता हूँ। यह समय ऐसा आ गया है, जब कि शैतान तुम्हें अपने जाल में फँसाना चाहता है। जो इस कोल्ख़ोज़् के प्रलोभन में नहीं पड़ेगा, वह बच जायगा। मैं कोल्ख़ोज़ी किसानों को चन्द दिनों में बरबाद कर दूँगा, और उन्हें भी बर्बाद कर दूँगा जो अपनी छाती पर क्रास नहीं पहनते।"

क्रास पहनना हर एक रूसी ईसाई के लिए उतना ही ज़रूरी था जैसा कि एक हिन्दुस्तानी ब्राह्मण के लिये जनेऊ।

१९२८ में तो कोल्ख़ोज़् का प्रचार धीरे धीरे होता रहा, लेकिन उसकी सफलता को देख कर कार्यकर्त्ताओं को और उत्साह हुआ। उन्होंने जल्दी से काम लेना शुरू किया और चाहा कि शीघ्र से शीघ्र सभी किसानों को कोल्ख़ोज़् में भर्ती कर लिया जाय इसके कारण कोल्ख़ोज़ियों की तादाद तो बढ़ गई, लेकिन उनके श्रम का संगठन नहीं हो सका। यद्यपि नियम में कहा गया था कि खेती को पंचायती बनाना चाहिए, साम्यवादी बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेकिन लोगों ने जोश के मारे गाय भेड़ ही नहीं, मुर्ग़ी आदि को भी पंचायती बना डाला। यदि कोल्ख़ोज़् में आते के साथ वह जीवन किसानों को प्राप्त होता जो आज आठ-नौ वर्ष बाद है, तो कोई हर्ज़ नहीं था। लेकिन वहाँ तो हर चीज़ का आरंभ था। कोल्ख़ोज़ी जीवन के पूरा संगठित होने में अभी वर्षों की देरी थी; लेकिन उत्साही कार्यकर्त्ता उसी दिन किसानों के छोटे मोटे खाने पीने के अवलंब को भी उनके पास रखने देना नहीं चाहते थे।

हर गाँव में कुलक मौजूद थे। उनका स्वार्थ उन्हें मजबूर करता था कि कोल्ख़ोज़् में शामिल न हों, और जहाँ तक हो सके, उसकी सफलता में बाधा डालें। उधर किसानों में जल्दी के कारण जो तकलीफ़ हुई उससे कुछ असन्तोष हो चला था। कुलकों ने उसपर आग में घी छोड़ने का काम किया। कोल्ख़ोज़् वाले आख़िर तुम्हारी गाय को छीन ले जायेंगे। बैल

तुम्हारे खूँटे से खुल जायेंगे। सुअर तुम्हारे नहीं रहेंगे। अच्छा है, तुम लोग अक़्ल से काम लो, जोई राम सोई राम। मारो, जो बिक सके, उस का पैसा बनाओ, नहीं तो अपनी कमाई अपने पेट में तो जायेगी! कुलकों ने ख़ुद अपना उदाहरण रखा। कुलकों के पास खेत ज़्यादा थे। सरकार ज़्यादा खेतवालों पर ज़्यादा टैक्स लगाती थी। उनसे ज़्यादा अनाज वसूल करती थी। ख़र्च के लिए ज़्यादा मांस तलब करती थी। कुलकों ने आधे, $\frac{2}{3}$ खेत अपने पर्ती छोड़ दिये। 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'। न ज़्यादा खेत बोयेंगे, न ज़्यादा अनाज सरकार को देना पड़ेगा। बैल गाय भी ज़्यादा रखकर सरकार से क्यों लुटवाया जाय!

मंत्र चल गया। चाहे ख़रीदार हो या न हो। चाहे सब ख़र्च हो सके, या थोड़ा; लेकिन लगे लोग अंधा-धुंध जानवरों को मार मार कर घरों में माँस का ढेर लगाने। पीतर को देखकर पावल ने वैसा ही किया और पावल से वान्या ने सीखा। बहुत जल्द जंगल की आग की तरह से यह बीमारी सारी सोवियत् भूमि में फैल गई। आधे से अधिक बैल, गाय, सुअर, भेड़, बकरी कुछ ही महीनों में ख़तम कर दिये गये। उसके बाद दूध, मक्खन और मांस का अकाल पड़ा। हाँ, उधर जब अधिकारी इस भयंकर कांड को रोक नहीं सकते थे, तो उनकी असमर्थता को देखकर कोल्ख़ोज़् में आये किसानों में बग़ावत सी फैल गई। लोग ठेकों में रखे अनाज को ख़ुद तौल कर और कभी कभी अपने हिस्से से अधिक भी घर ले गये। कोल्-ख़ोज़् की गोशाला और घुड़सारों में दाख़िल गाय बैलों और घोड़ों को भी निकाल ले गये। एक बार मालूम होने लगा कि कोल्ख़ोज़् प्रथा का अब हमेशा के लिए ख़ातमा हो गया।

इस अव्यवस्था की ख़बर सरकार, कम्युनिस्ट पार्टी और उसके सूक्ष्म-दर्शी नेता स्तालिन् को मालूम होते देर न लगी। कहाँ भूल हुई, इसे भी वे तुरन्त समझ गये। २ मार्च १९३० को जल्दीबाज़ों को फटकारते हुए स्तालिन् ने अपना मशहूर लेख "कामयाबी की चकाचौंध में" लिखा।

इसका असर भी ऐसा ही हुआ। स्तालिन् ने कहा—जल्दी करना बुरा था। और अब उसका उपाय यही है कि जो कोल्खोज़ में नहीं रहना चाहें उन्हें लौट जाने देना चाहिए। यद्यपि इस लेख के फल-स्वरूप आधी कोल्-खोज़ी चिड़ियाँ फुर हो गईं, लेकिन जो बचे रहे, उनको अधिक संगठित कर के काम करने का मौक़ा मिला।

कुलकों की दुष्टता का प्याला लबरेज़ हो गया था। उन्होंने लोगों को बहका कर और खुद भी जो इतना पशु-संहार किया—जिसकी कि पूर्ति करने में वर्षों लगेंगे—और इतनी अव्यवस्था फैलाई, उसके लिए कुछ करना ज़रूरी था। सरकार ने कुलकों के ख़िलाफ़ वैसा ही कानून बना दिया, जैसा कि क्रान्ति के आरंभ के समय ज़मींदारों के ख़िलाफ़ बना था। गाँव की सोवियत् को अधिकार था कि कुलकों का पता लगाकर नाम घोषित करें और उनकी संपत्ति को ज़ब्त कर उन्हें दूर भेजने के लिए पुलिस के हवाले करें।

गाँव की सोवियत् बैठी, सभी बालिग़ नर-नारी जमा हुए। एक धनी किसान का नाम लिया गया। पेत्रोफ़् कुलक है। वह दूसरों के जाँगर से खेती कराता है। वह अधिक भूमि जोतता है। वह कर्ज़ पर रुपया देता है। वह सोवियत् शासन को दिल से नहीं चाहता। दूसरे ने अनुमोदन किया। सर्व सम्मति से घोषित हुआ, पेत्रोफ़् कुलक है। कभी कभी किसी कुलक के लिए कुछ खींचातानी भी होनी शुरू हुई। कुलक ने गाँव के कुछ आदमियों का उपकार किया था, या उनसे विवाह-शादी का संबंध था, या उसके कुछ हित मित्र परिवार के परिवार को दूर देश भेजने में मोह का अनुभव करते थे। ऐसे लोगों ने चाहा कि उक्त गृह कुलक न घोषित किया जाय, छोटा वैयक्तिक किसान मान लिया जाय। लेकिन दो चार आदमी सभा के मुँह को बन्द कैसे कर सकते थे! दूसरे ने उठकर कहा—इसको पावल ने एक फटा कोट दे दिया था। इसीलिए यह झूठ बोल रहा है। दूसरे ने कहा—कभी कभी वह इसे बोतल में शामिल कर लेता है, इसलिए

प्याले के दोस्त का पक्ष ले रहा है। आख़िर कुलक छिपा थोड़े ही रह सकता है। **ग्राम**-सोवियत् ने गाँव के ५–१० जितने कुलक हुए, उनको घोषित कर दिया। ज़िले या इलाक़े के सोवियत् के पास मलिशिया (हथियार बंद पुलीस) भेजने के लिए ख़बर भेज दी। ५–५, ६–६ आदमियों की कमेटी वना कर एक एक कुलक के माल असबाब, ढोर-डंगर का चार्ज लेने के लिए भेज दिया।

एक टोली कुलक पेत्रोफ् के घर चली। गाँव के बूढ़े बच्चे तमाशबीन भी कुछ साथ हो लिये। शायद **पेत्रोफ़्** को पहले से भी कुछ ख़बर लग गई थी। घर के भीतर चीज़ें वड़ी सावधानी के साथ चुनी जा रही थीं। पेत्रोफ़् की स्त्री ने अपने धराऊँ वस्त्रों का वक्स खोला था। एक के ऊपर एक चार-चार, पाँच-पाँच घाघरे और चार-चार, पाँच-पाँच कोट पहने जा रहे थे। टोली पहुँच गई। "तवारिश पेत्रोफ्! ग्राम सोवियत् ने हमें आपकी चीज़ों को सँभालने के लिए भेजा है। आप अपने बदन के कपड़े तथा एक दो और, नक़द हो सो नक़द और रास्ते में ले जाने लायक थोड़ा सा बिस्तरा वर्तन लेकर वाकी सब चीज़ों को हमारे हवाले कर दीजिए। **मलीशिया** के सिपाही आ रहे हैं। वे आपको हमारे गाँव से दूर ऐसी जगह ले जायेंगे, जहाँ से फिर आप हम पर शनि-दृष्टि नहीं डाल सकेंगे और वहाँ आपको जीने खाने के लिए काम भी मिलेगा।"

पेत्रोफ़् को हफ़्तों पहले से इन बातों की कुछ कुछ ख़बर थी, इसलिए धक्का कुछ सह्य हुआ।

कमेटी वैठ गई। एक आदमी कलम दवात लेकर तैयार हो गया। एक आदमी बोलने लगा।

मर्दों की कमीज (पुरानी) ५
मर्दों का कोट (पुराना) ३
" " (नया) २
औरतों की कमीज़ (पुरानी) ४

औरतों की कमीज़ (नई) ३
रंगीन रूमाल (रेशमी) ३
" " (सूती) २

....

लोहे के ट्रंक ४
लकड़ी के बक्स (बड़े) २
" " (छोटे) २

....

बैल ५
घोड़े ४
गायें ६
सुअर १०
भेड़ें २५

....

मकान (दस कमरे दोतल्ला) १
गोशाला १
घुड़साल १
सुअर की खुआर १

....

पेत्रोफ़् की सब चीज़ों को कमेटी ने सँभाल लिया। बूढ़ा मिश्का बोल उठा—"अरे, पेत्रोव्स्का (पेत्रोफ़् की स्त्री) ने तो ५ लहँगे और ४ कमीज़ें एक के ऊपर एक पहन ली हैं! और इतना बर्तन बिस्तरा बाँध रखा है कि दो गाड़ियाँ तो इन्हें ही लादने को चाहिए।"

पंचों का ख़याल इधर नहीं गया था। उन्होंने देखा, सचमुच कुलक का लालच अभी भी उतना ही तेज है। निकितिना पंच स्त्री से कहा गया कि देखो, "किसी स्त्री के बदन पर दो से अधिक कपड़े नहीं होने चाहिए

और आदमी पीछे मन भर से अधिक बोझा नहीं होना चाहिए"। बेचारे पेत्रोफ् के परिवार को यदि पहले यह मालूम होता, तो समय काफ़ी मिलता, यह सोचने के लिए कि किस चीज़ को ले चलें और किस चीज़ को छोड़ें। मलीशिया पहुँच गई थी। पंचों का हुक्म हुआ—"घर से बाहर निकलो। ताला बन्द करेंगे।" पंच अन्द्रेई ने बाहर निकलते हुए कहा—"कोल्खोज़् के कार्यालय के लिए यह मकान अच्छा होगा।"

पेत्रोफ़् उनकी अधेड़ औरत, दो जवान लड़के, एक जवान लड़की, दो छोटे छोटे बच्चे, एक बहू आठों व्यक्ति घर से बाहर निकले। साथ जाने वाला सामान और कुछ बर्तन भांड़े निकाल कर द्वार पर रखे थे। न जाने कितनी पीढ़ियाँ पेत्रोफ् की इस गाँव में बीती थीं। उनके पूर्वजों के न जाने कितने शव यहाँ के कब्रिस्तान में सोये पड़े थे। इस गाँव में जन्म से ही कितने उनके मित्र थे। सब को छोड़ कर एक अनजाने देश में उन्हें जाना था। जहाँ उन्हें कोई परिचित नहीं मिलेगा। जहाँ उन्हें जंगल की लकड़ियाँ काटनी पड़ेंगी, या पथरीली ज़मीन में नहरें खोदनी पड़ेंगी। ये सब ख़याल कर के पेत्रोफ् का दिल भर आया। घर के लोगों में से कितने सिसकियाँ भर रहे थे। पेत्रोफ् ने अपने को रोकने की कोशिश की, लेकिन गाँव के परिचितों से विदा होते वक़्त उनका गला भर आया।

गाँव वालों को कुछ अफ़सोस तो हो रहा था। पंच भी इस करुणापूर्ण दृश्य से कम प्रभावित न थे। लेकिन वह यह भी जानते थे कि पेत्रोफ़् ने ही गोशाला के प्रबंधक वान्या को माघ पूस के जाड़ों के दिनों में सिखलाया था—"गौशाल में बालू बिछा दो। बैलों को रात में गर्म रहेगा।" रात को बालू ठंडा हो गया। माघ पूस का जाड़ा हड्डी तक को बर्फ़ बना देनेवाला। सवेरे वान्या ने देखा, एक भी बैल खड़ा नहीं हो सकता। ५० में से ५ बैल जीते बचे। उनको यह भी मालूम था कि पेत्रोफ़् ही ने गाँव के कितने किसानों को भड़का दिया था, और जब वह ठेक से ज़बर्दस्ती अपना अनाज उठा लेने के लिए पहुँचे, तो कम्युनिस्ट **दावीदोफ़्** उन्हें समझाने आया।

उसने कहा "मत समझो, सोवियत् शक्ति खतम हो गई है। पीछे तुम्हें पछताना पड़ेगा। थोड़ा ठहरो। एक वर्ष में कोल्खोज़ी जीवन का लाभ तुम्हें मालूम होगा। कुलकों की बात में न आओ।" क्रोध में पागल हुए आदमियों ने अपने हित की बात न समझी। दावीदोफ़् को अपनी समझ में उन्होंने मार ही डाला था। एक पर एक न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ पेत्रोफ् और गांव के दूसरे कुलकों के भड़काने से हुई थीं। जिन्हें याद करते ही लोगों की करुणा दूर हो जाती थी। पंचों ने हाथ मिला विदाई देते हुए कहा—"साथी पेत्रोफ्, आशा है, तुम वहाँ अच्छी तरह काम करोगे। और दो तीन वर्ष बाद अपने हृदय-परिवर्तन को दिखलाओगे। फिर बहुत संभव है, सरकार तुम्हें अपने गाँव में आने की इजाज़त दे देगी।"

पेत्रोफ़् और उनके जैसे कितने ही कुलक परिवार गाँव से निकले। उन के साथ १० हथियार बन्द मलीशिया के जवान थे। कुछ घोड़े-गाड़ियों पर सामान लदा हुआ था। छोटे बच्चे भी उनपर बैठे हुए थे। कुछ ही देर में यह काफिला गाँव वालों की आँख से ओझल हो गया।

पेत्रोफ़ों के कपड़े-लत्ते गाँव के ग़रीबों में बाँट दिये गये।

अब गाँव में रह गये थे, कोल्खोज़ी किसान, और थोड़े से डेढ़ चावल की अलग खिचड़ी पकानेवाले छोटे छोटे किसान।

* * *   * * *

कोल्खोज़् का संगठन—कोल्खोज़् क्या है? सहयोग-समिति या पंचायत द्वारा खेती। आस पास के किसान इसी में फ़ायदा समझ कर स्वेच्छा-पूर्वक एकत्रित होते हैं। वह एक समिति क़ायम करते हैं। जिसके नियम बने हुए हैं। फिर पदाधिकारियों का चुनाव करते हैं। एक अध्यक्ष होता है, एक खेतों का प्रबंधक होता है, एक बहीखाता रखनेवाला होता है। सौ सौ डेढ़ डेढ़ सौ काम करनेवाले स्त्री-पुरुषों की सम्मिलित या अलग अलग टोली पर एक एक ब्रिगेडियर चुना जाता है। अपने अपने ब्रिगेड या टोली

की देखभाल करना इसका काम है। फिर रसोइया, लड़कों की देख भाल के लिए दाई चुनी जाती हैं। लोहार, बढ़ई, धोबी, गाय, सुअर, घोड़े, मुर्गियों के अलग अलग रखवाले चुने जाते हैं। ब्रिगेड को भी आठ आठ, दस दस की छोटी छोटी टुकड़ियों या लिंक या गोल में बाँटा जाता है। गोल के भी सरदार या सरदारिनें होती हैं। हाँ, ब्रिगेडियर और गोल के सरदार में इतना फ़र्क है कि जहाँ निरीक्षण के काम की अधिकता के कारण ब्रिगेडियर ख़ुद काम नहीं कर सकता, वहाँ गोल का सरदार ख़ुद भी कुदाल लेकर साथियों के साथ खेत में जुटा हुआ है, और काम के मुताबिक उसे तनख़्वाह मिलती है। कोल्ख़ोज़् के अधिकारियों में निश्चित तनख़्वाह पाने वाले हैं—अध्यक्ष, प्रबंधक, बही-खाता-रखनेवाला और ब्रिगेडियर। उसके एक दिन के वास्ते डेढ़ दिन की मज़दूरी मिलती है।

कोल्ख़ोज़ों के संचालन के पहले नियम २ मार्च १९३० में बने थे। ५ साल के तजर्बे के बाद फिर सारी सोवियत् के कोल्ख़ोज़ों के प्रतिनिधियों की मास्को में बैठक हुई और १७ मार्च १९३५ को नया विधान बना। कोल्-ख़ोज़् जीवन और उसके काम का कुछ परिचय हमें उस आदेश-पत्र से मालूम होगा, जिसे कि स्तारोसेल्ये कोल्ख़ोज़् के किसानों ने अपने प्रतिनिधि मारिया देम्‌थेन्को को मास्को जाते वक़्त दिया था—

"हमने तुम्हें—अपने सर्वोत्तम उदार्निक् (तूफ़ानी कमकर) को द्वितीय कोल्ख़ोज़् उदार्निक् कांग्रेस के लिए प्रतिनिधि चुना है। तुमने इस के लिए जान लड़ाकर काम किया, इसलिए तुम हमारे विश्वास के पात्र हुए। कोल्ख़ोज़् के ८०० से अधिक मेंबरों ने तुम्हें वोट दिया और ९ उम्मेद-वारों में से तुम निर्वाचित हुईं।

"१—मास्को में जा कर हमारे कोल्ख़ोज़ की तरफ़ से यह फूलों का गुच्छा लेनिन् की समाधि पर रखना।

"२—साथी स्तालिन् को हमारा प्रेम और सन्मान कहना। और हमारी सफलताओं के बारे में भी कहना—पिछले वर्ष १३·६ सेन्तनेर

(१ सेन्तनेर=२२० पौंड=२ मन २६ सेर २ छटांक) प्रति हेक्तर (१ हेक्तर=२·४७११ एकड़ यानी १ एकड़ में कोई १५ मन से अधिक गेहूँ) गेहूँ, पतला गेहूँ ८·८ सेन्तनेर, जौ ११·८, ओट ११·१, पैदा किया। और मारिया, तुम्हारे विभाग में प्रति हेक्तर, ४६० सेन्तनेर चुकन्दर। हमने ८०० सेन्तनेर अनाज सरकार को बेचा। और इसके अलावा अपने हिस्से का जो अनाज देना था, उसे भी सरकार को दिया। हमने अपने कोल्खोज़ियों को प्रतिदिन के काम के बदले में ३ किलोग्राम (१ किलोग्राम =२·२०४६ पौंड=१ सेर) अनाज और पैसा भी दिया। राज को जितने बछड़े देने थे, उनसे सवाया दिया। जितने बछड़े तैयार करने थे, उनसे ड्योढ़े तैयार किये। चुकन्दर की खेती के लिए हमने ३०० हेक्तर की गहरी जुताई की। हमने बीजों के जमने की परीक्षा की और देखा कि हमारे जौ ९२ सैकड़ा और ओट ९७ सैकड़ा जमते हैं। हमारे ढोर अच्छी अवस्था में हैं और उनकी निगहबानी के लिए हमने अपने सब से अच्छे आदमी नियुक्त कर रखे हैं। हमारी सब मशीनरी मरम्मत कर के ठीक तौर से रखी हैं। हमने अपने खेतों में २००० टन साधारण खाद डाली है। १८० सेन्तनेर सुपर फोस्फेट और २४० सेन्तनेर राख डाली है। हमारे यहाँ कृषियंत्र का एक स्वाध्याय-केन्द्र है और २ राजनीति अध्ययन के, जिनमें कोल्खोज़् के उत्साही कार्यकर्त्ता अपना ज्ञान बढ़ाते हैं। औरतों के लिए भी २ राजनैतिक स्वाध्याय-केन्द्र हैं।

"३—जनता के युद्ध-मंत्री (**वोरोशिलोफ़्**) से कहो कि हम अपनी महान् जन्मभूमि की रक्षा के लिए तब तक तैयार हैं, जब तक कि हमारे शरीर में एक बूँद खून रहेगा।

"४—कांग्रेस में आये हुए दूसरे प्रतिनिधियों का हमारे नाम से अभिनंदन करना और उनसे कहना कि हमारे लिए यह आसान काम नहीं था, जो कि कोल्खोज़ों में अव्वल नंबर होने का हमें सौभाग्य मिला; क्योंकि समाजवादी कृषि की होड़ में अकेला हमारा ही कोल्खोज़् नहीं था।

"५—उनसे यह भी कहो कि हम तवतक दम नहीं लेंगे, जवतक कि हमारे ज़िले में एक भी पिछड़ा हुआ कोल्ख़ोज़् है। हमें तभी सन्तोष होगा, जब हम देखेंगे कि सम्पूर्ण सोवियत्-संघ पर समृद्ध कोल्ख़ोज़् फैले हुए हैं। हम प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि चेल्युस्किन् कोल्ख़ोज़् को अपने बरावर पर लाने के लिए उसकी मंदद करेंगे।

"६—मास्को की फ़ैक्टरियों में जाना और कमकरों को हमारा अभिनंदन देना। उनसे कहना कि हम श्रमजीवियों से घनिष्ट संवंध स्थापित करना चाहते हैं। मास्को के श्रमजीवियों और वुद्धिजीवियों से कहना कि वह हमारे इस प्रयत्न में और भी मदद दें; जिसमें कि गाँव संस्कृत हो जायँ और इस विषय में गाँव और नगर का भेद दूर हो जाय। उनसे कहना कि हम अपनी प्रयोगशाला में वीजों के जमने की परीक्षा १५ फ़रवरी तक ख़तम कर देंगे और यह भी कि किसान और मज़दूर संवाददाताओं और पार्लियामेंट के सभासदों की मदद से हम अपने व्रिगेडों का लेखा लेंगे कि वह वसन्त की जुताई के लिए कितने तैयार हैं। हमने निश्चय किया है, कि ८ काम के दिनों में वसन्त की जुताई खतम कर देंगे और ३ दिन में चुकन्दर की जुताई। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि मशीन को और ठीक से इस्तेमाल करेंगे। सुपर फोस्फेट तैयार करेंगे। तेज़ ज़हर तैयार कर कीड़ों और फ़स्ल के दूसरे दुश्मनों को मारेंगे। अपनी प्रयोगशाला के ज़रिये हर एक कोल्ख़ोज़ी किसान को कृषि के गुर बतलायेंगे और सभी व्रिगेडियर और गोल-सरदार से प्रार्थना करेंगे कि वह प्रयोगशाला के काम में क्रियात्मक रूप से भाग लें। हम व्रिगेडियरों और गोल-सरदारों के टेकनिकल ज्ञान की परीक्षा करवायेंगे। चुकन्दर को २–३ दिन में जोतना, ४ से ५ दिन में घने की छँटाई करना ख़तम करेंगे। सब मिला कर ४ बार हम चुकन्दर को जोतेंगे। हम चुकन्दर की छँटाई ऐसी करेंगे कि हर एक हेक्तर में १ लाख १० हज़ार कन्द हों। प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उस साम्यवादी होड़ में पूरा भाग लेंगे जो कि कृषि-सचिव के पताका और उक्रइन् की

केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति की पताका को जीतने के लिए होगी। दूसरे कोलख़ोज़ों को भी ज़ोर देंगे कि वे भी ऐसा करें। हम पेत्रोव्स्की-कोल्-ख़ोज़् (कार्मन्स्की ज़िला) और वुद्योन्नि-कोल्ख़ोज़् को साम्यवादी होड़ के लिए ललकारते हैं, और साम्यवादीपत्र-कोल्ख़ोज़् (ओल्शंको जिला) की ललकार को स्वीकार करते हैं; और इसके लिए 'प्रोलेतर्स्की प्राब्दा' समाचार-पत्र तथा जिले के समाचार-पत्र को इस होड़ का निर्णायक मानते हैं।

"७—हमारे कोल्ख़ोज़् के नाम से चुकन्दर पैदा करनेवाले ज़िलों के कोल्ख़ोज़ों के प्रतिनिधियों को न्योता देना कि यदि हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें, तो ७ नवम्बर (लाल क्रान्ति का दिन) के उत्सव में वह हमारे यहाँ आयें।

"८—नये नियमों के बारे में होने वाली बहस में क्रियात्मक रूप से भाग लेना।

"९—दूसरे आगे बढ़े हुए कोल्ख़ोज़ों के तजर्बे को नोट कर के ले आना, जिसमें कि हम उनके तजर्बों से फ़ायदा उठा सकें।"

मरिया देम्चेंको इस आदेश-पत्र को लेकर फ़रवरी १९३५ को मास्को गई। कोल्ख़ोज़् वाले इतने ही से सन्तुष्ट नहीं थे। वे कांग्रेस की कार्यवाही को अपने रेडियो पर बड़े ध्यान से सुनते थे। वह रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट होती थी। इसके अतिरिक्त वह अपने सब से तेज़ घोड़ों को प्रतिदिन पेत्रो-व्स्की इसलिए भेजते थे, कि छपने के साथ ताज़े अख़बार गाँव में लाये जायँ।

मरिया देम्चेंको ने चुकन्दर पैदा करने में बड़ी सफलता प्राप्त की थी। उस साल उसने प्रति हेक्तर ४६९ सेन्तनेर पैदा किया था। स्तालिन् ने उससे कहा—यदि पिछले साल तुमने प्रति हेक्तर ४६९ सेन्तनेर पैदा किया, तो वचन दो कि इस साल ५०० सेन्तनेर पैदा करोगी।"

मरिया थोड़ी देर तक सोचने लगी और फिर बोल उठी—"बहुत अच्छा, ५०० सेन्तनेर, मैं वचन देती हूँ।"

जब मरिया देम्चेंको लौटकर आई तो एक तरफ़ कांग्रेस की सफ-

लता की ख़बर सुनकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन दूसरी ओर सारे गाँव को यह भी चिन्ता हुई कि हमें इस साल प्रति हेक्तर (४ बीघे) ५०० सेन्तनेर (प्रायः १३०० मन) चुकन्दर पैदा करना पड़ेगा।

मरिया ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

हर एक कोल्खोज़ में एक प्रयोगशाला या लेबोरेटरी होती है; जिसका काम है, कोल्ख़ोज़् की उपज बढ़ाने में भाग लेना, तथा मिट्टी और हानिकारक कीड़ों आदि की समस्या को हल करना। कृषि और पशुपालन के ज्ञान को व्याख्यानों, स्वाध्याय-केन्द्रों, प्रदर्शनों और जलूसों द्वारा बढ़ाना। ट्रैक्टर-ड्राइवर, यंत्रशिल्पी (मिस्त्री) और आविष्कारकों के विशेष अध्ययन का प्रबंध करना। अकाल, पौदों की बीमारी और हानिकारक घासों के दूर करने का उपाय सोचना, खेती-संबंधी होड़ का संचालन करना, बूढ़े चतुर किसानों के अनुभवों को एकत्रित और नियमबद्ध करना। बीज, मिट्टी, खाद और कृषि की उपज की परीक्षा करना, मौसम और फ़सल का लेखा रखना, फ़सल और पशुओं की हर एक अवस्था का हिसाब रखना, मौसम की ख़राबी या टिड्डी आदि के ख़तरे से लोगों को सजग करना। काम या बीज में ख़राबी पाने पर प्रबंध-समिति को इसकी सूचना देना, सब से अच्छे काम करने वाले ब्रिगेडों के तजर्बों को रेखा-चित्र तथा दूसरे प्रकार से दूसरों के ज्ञानगोचर करना। कोल्ख़ोज़् के किसानों की छोटी छोटी मंडलियों को आस पास के श्रेष्ठ कोल्खोज़ों को देखने के लिए प्रबंध करना। कोल्ख़ोज़ की भूमि की मिट्टी को उसकी रासायनिक बनावट और आकार को लेख और नक़शे के रूप में अंकित करना तथा किस खेत के लिए कौन फ़सल या खाद उपयुक्त है, इसका निश्चय करना। घास-भूसे की विशेष तौर से रासायनिक परीक्षा करके उनको अधिक पुष्टिकारक बनाना तथा उनकी कमी बेशी का इन्तज़ाम सोचना। ढोरों के खिलाने के ढंग और नस्ल अच्छी बनाने के तरीक़े पर ग़ौर करना। ढोरों की बीमारी को देखते रहना, प्रत्येक गाय के दूध और मक्खन के गुण और परिमाण का नाप रखना।

मशीनों के टूट-फूट की परीक्षा करना जिसमें कि आगे ग़लतियाँ कम हों। नई मशीनों के इस्तेमाल का ढंग सीखना।

प्रयोगशाला के लिए हर एक कोलखोज़् में दो-तीन या अधिक कमरे होते हैं। एक खास प्रवन्धक रहता है। सब लोग उसके काम में सहायता करते हैं। प्रवन्धक अपने विषय का काफ़ी ज्ञान रखता है।

ढोरों की ताक़त या दूध पर खुराक़ का क्या असर होता है, तथा उन की रक्षा ठीक से होती है या नहीं, इस काम में गाँव के छोटे लड़के भी मदद देते हैं। एक एक लड़के को एक एक गाय पर निगाह रखने का काम दे दिया जाता है। वह रोज़ खेलने की तरह शाम-सवेरे अपनी अपनी गाय को भी देखने जाता है। मोटी, दुवली देखकर गायों के ऊपर नियुक्त आदमी से पूछ ताछ करता है—"आज कल हमारी गाय दुवली होती जा रही है। दूध नहीं देती" आदि की खबर वह प्रयोगशाला में पहुँचाता है। और वड़ी चिन्ता के साथ कोई उपाय जानना चाहता है। किसी लड़के की गाय ने दूध में या स्वास्थ्य में बड़ी तरक़्क़ी की तो लड़के को इनाम मिलता है।

चूहे तथा खेती को नुकसान करने वाले और जानवरों के मारने पर सरकार की तरफ़ से इनाम मुकर्रर है। प्रति चूहा २ या ३ पैसा पड़ता है। यह काम भी लड़कों के ही हाथ में है। वह पानी ढो ढो कर विलों में डालते हैं या धुआँ सुलगाते हैं। जब चूहा भागता है तो डंडे से वहीं खतम कर देते हैं। उनके लिए खेल का खेल और पैसे का पैसा। पौदों को खा जानेवाले पतिंगों को मारने पर भी इनाम मिलता है। यह इनाम तौल कर तोले के हिसाब से मिलता है। एक एक गाँव में मन मन भर मरे भुनगे और पतिंगे इस प्रकार जमा हो जाते हैं।

* * *   * * *

ग्राम-सोवियत्—सोवियत् का अर्थ है पंचायत या शासन करनेवाली पंचायत। सोवियत्-संघ का सारा शासन सोवियत् या पंचायत द्वारा शासित

होता है। हर एक गाँव के १८ वर्ष के ऊपर के नर-नारी अपने गाँव के शासन को चलाने के लिए पंच चुनते हैं। पंचों की संख्या गाँव के छोटे बड़े होने पर निर्भर है। पंच आपस में एक को अध्यक्ष चुनते हैं, दूसरे को मंत्री, तीसरे को हिसाव रखनेवाला। इसी तरह कार्यकारिणी के दूसरे पदाधिकारी चुने जाते हैं।

उदाहरणार्थ कोमिन्तर्न-कोल्ख़ोज़् की सोवियत् के ५७ मेंवर हैं। इन के अतिरिक्त १२ उम्मेदवार भी इसलिए चुने गये हैं, कि कोई जगह ख़ाली होने पर उनमें से लिये जायँगे। इन ६९ व्यक्तियों में २८ औरतें हैं। इन मेंवरों को कई विभागों में बाँटा गया है।

विभाग	पंच	स्वयंसेवक
कृषि और खेत	९	११
पशुपालन	९	१४
व्यापार	७	१०
शिक्षा और संस्कृति ..	७	१३
रोशनी, सफ़ाई	७	१२
अर्थ	७	१३
यातायात	७	१३
सड़क	७	१०
ग्राम-रक्षा	९	१४
क्रान्तिकारी कानून (न्याय) ..	६	१२
स्वास्थ्य	७	१०

स्वयं-सेवक पंचायत के सदस्य नहीं हैं। इसको देखने से मालूम होगा कि ग्राम-सोवियत् सूक्ष्म रूप में सारे देश की सोवियत् का प्रतिरूप है।

याद रखना चाहिए कि हर कोल्ख़ोज़्-गाँव में ग्राम-सोवियत् और कोल्ख़ोज़्-प्रबंधक-समिति दो अलग अलग चीजें हैं। सोवियत् का मुख्य काम शासन करना है; और समिति का काम है खेती का संचालन करना। सोवि-

ग्राम-सोवियत् के पदाधिकारियों में अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष दो ही वैतनिक हैं, वाकी सब अवैतनिक। न्याय-विभाग गाँव के फ़ौजदारी-दीवानी (व्यक्तिगत सम्पत्ति के न रहने से एक तरह दीवानी मुकदमों का अभाव सा है। सिर्फ माँ वाप की चीज़ें और मकान लड़के को मिलता है और उसी के लेन देन के संबंध में कोई झगड़ा हो सकता है) मुक़दमों को देखता है। हर एक मुक़दमे के लिए ३ पंच मुकर्रर होते हैं; जो एक साथ वैठ कर मुक़दमे को सुनते और उसका फ़ैसला करते हैं। भारी मुक़दमे ऊपर की अदालतों में चले जाते हैं।

***　　　　　　　　***

कोल्ख़ोज़्-प्रथा ने सोवियत्-संघ के गाँवों के जीवन और आकार-प्रकार में भारी परिवर्तन किया है। खेती के काम के लिए वने हुए मकानों पर २५,८०९ लाख रूवल १९३३ में ख़र्च किये गये। और १९३६ में उसी काम पर ४३,४१८ लाख ख़र्च हुए। स्कूल, अस्पताल, सांस्कृतिक-भवन, वाचनालय, क्रीड़ा-क्षेत्र, प्रसूति-गृह, स्नानागार की इमारतें वहाँ वन रही हैं। द्वितीय पंच-वार्षिक-योजना में गाँवों के स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या १,६८,३४,००० से २,३१,१४,००० हो गई। नाट्यशाला और सर्कस १८,३५२ की जगह ५७,०४० हो गये। चलते फिरते और स्थायी सिनेमों की संख्या १८,२४० से ५६,५२० हो गई। १९३३ में स्थायी वच्चाख़ाने ३,५१,००० थे और १९३७ में ७,१३,८०० हो गये। क्लव, सांस्कृतिक-भवन, वाचनालय आदि ३१,७३१ से ५७,५६६ हो गये। अस्पतालों में १,५१,६०० चारपाइयों की जगह १,८३,३०० हो गईं। प्रसूतिगृहों की चारपाइयाँ २४,८६१ से २५,८६५ हो गईं। स्मरण रखना चाहिए कि यह अन्तर सिर्फ़ पिछले चार वर्षों ही में हुआ है।

वहुत से कोल्ख़ोज़ी गाँवों में टेलीफ़ोन और डाकख़ाने हैं। रेडियो से ख़ाली गाँव का तो मिलना मुश्किल है। कोल्ख़ोज़् वाले सरकार के अलावा

ख़ुद भी स्कूल, अस्पताल के ऊपर ख़र्च करते हैं। १९२९ में उन्होंने १० करोड़ रूबल ख़र्च किये थे और पिछले साल (१९३७ में) २ अरब १२ करोड़ ३१ लाख। सोवियत् गाँवों के बारे में स्तालिन् ने कहा—"हमारे गाँवों की शकल और भी बदल गई है। पुराना गाँव—जिसमें केन्द्रीय
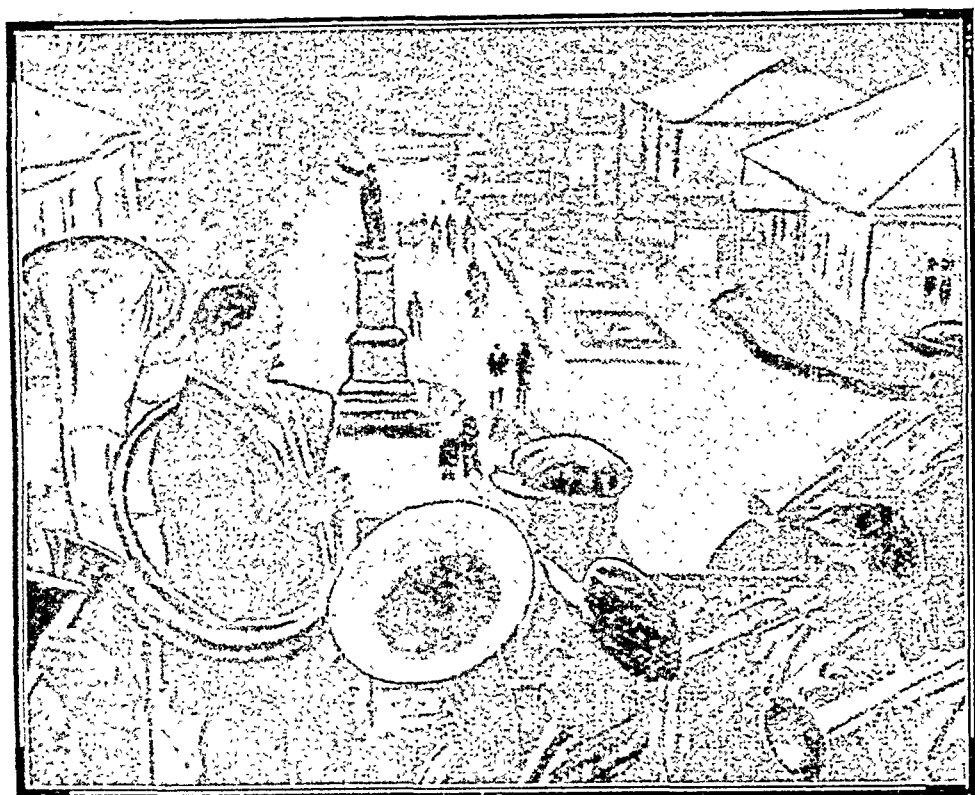
एक कोलखोजी बाजा

स्थान पर गाँव का गिर्जा, और उसकी बग़ल में पुलीस, पुरोहित और कुलक के सबसे अच्छे घर और फिर खंडहर, और फूस की झोपड़ियों वाले किसानों के घर—अब लुप्त होता जा रहा है। उसकी जगह अब नया गाँव ले रहा है, जिसमें सार्वजनिक भवन, क्लब, रेडियो, सिनेमा, स्कूल, पुस्तकालय, बच्चाख़ाना, ट्रैक्टर, कंबाइन और मोटरें देख पड़ती हैं।"

बहुत से कोल्ख़ोज़ी गाँव इतने स्वच्छ और समुन्नत हैं, कि उनका मुक़ाबला ज़ारशाही के कितने ही शहर भी नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ **किर्सानोफ़्** जिले (वोरोनेज़् प्रान्त) के लेनिन्-कोल्ख़ोज़् को ले लीजिए। यह कोल्ख़ोज़ अपने काम में बहुत आगे बढ़ा हुआ है। इसके स्तख़ानोवी सदस्यों में ४ को सरकारी पदक प्राप्त हैं। यहाँ बिजली पैदा करने के लिए अपना पावर-स्टेशन है। मोटरख़ाना और उसकी मरम्मत के लिए वर्कशाप है। अश्वपालन और शूकरपालन का अच्छे पैमाने पर इंतिज़ाम है। लकड़ी चीरने का कारख़ाना. और चटनी-अँचार की फ़ैक्टरी है। मोची और दर्जी के काम की दूकानें हैं। ग्राम पंचायत के दोतल्ले सुन्दर घर हैं। एक क्लब है, जिसमें एक सिनेमा-हाल है। एक हाई स्कूल है। एक वयस्कों के लिए स्कूल है। कई बच्चाख़ाने हैं। एक पुस्तकालय और वाचनालय है। एक रेडियो का स्टेशन है जिससे ख़बर भेजी भी जा सकती है। एक हजामतख़ाना है। भोजनागार और अतिथि आश्रम भी है। एक प्रसूतागृह, एक सांस्कृतिक उद्यान और एक बड़ा सा क्रीड़ा-क्षेत्र है।

***   ***

यहाँ हम कुछ कोल्ख़ोज़ी गाँवों का विशेष विवरण देते हैं, जिससे पाठकों को मालूम होगा कि सोवियत् गाँवों में क्या हो रहा है।

(१) **कालिनिन्-कोल्ख़ोज़् (मास्को प्रान्त,)**——इसके १६५ सदस्य हैं। १९३७ में आमदनी २० लाख रूबल हुई थी; जिसमें से २लाख रूबल को गाँव ने घर बनाने के लिए अलग रख दिया। वे एक बड़ा प्रासाद बनाना चाहते हैं, जिसमें ग्राम-सोवियत्, कोल्ख़ोज़्-प्रबंध-समिति, क्लब और पुस्तकालय के अलग अलग मकान होंगे। एक बहुत भारी हाल होगा, और इसके अतिरिक्त जाड़े में साग-भाजी बोने के लिए काँच का एक गर्म घर भी होगा।

हाल में पाँती से बने कुटीरों को देख कर यह समझना मुशकिल है, कि २० साल पहले इस गाँव की क्या हालत थी। अगर आप किसी बूढ़े से पूछें,

तो मालूम होगा, उस वक़्त ९० घर थे। ४१२ एकड़ ज़मीन थी, जिसमें १४७ एकड़ तो ३ कुलकों के हाथ में थी। गाँव की सराय और लकड़ीखाना भी कुलकों के हाथ में थे। ५० परिवारों के पास कोई खेत न था। उनके अधिकांश व्यक्ति नौकरी की तलाश में शहर में घूमते थे। आधे से अधिक व्यक्ति निरक्षर थे, और बाकी लोगों का भी ज्ञान क ख से अधिक नहीं था।

आज गाँव में एक भी निरक्षर ही नहीं है, बल्कि गाँव के पुस्तकालय में आप गोर्की, पुश्किन्, नेक्रासोफ़्, रोम्याँ रोलाँ, फ़ौल्ट्ट वांगेर, विक्टर ह्यूगो, जैक् लण्डन, थ्योडोर, ड्राइसेर आदि लेखकों के ग्रन्थ पायेंगे। गाँव में एक नाटक-मंडली और संगीत-मंडली है।

कोल्खोज़् मुख्यतया तरकारी की खेती करता है, और कृषि-विज्ञान के तरीकों और नई मशीनों की मदद से ४०० एकड़ में ८ लाख रुपये (प्रति एकड़ २०००) प्रति वर्ष पैदा करने में सफल हुआ है। जाड़े के दिनों में गर्म घरों में तरकारी की फ़सल होती है। अधिकांश भूमि ४ महीने के लिए सफ़ेद बर्फ़ के नीचे दब जाती है। इसके लिए कोल्खोज़् ने ऊन साफ़ करने का कारखाना बना रखा है। जाड़े के दिनों में किसान उसमें काम करते हैं। १९३६ में शूकर-पालन का काम भी शुरू किया गया, और १९३७ के अन्त में वहाँ ५५ सुअर हो गये।

पिछले साल कोल्खोज़् के किसानों को प्रति कार्य-दिन के लिए २० रूबल और ६५ कोपेक (९ रुपये से ऊपर) नक़द और २५ किलोग्राम् (प्रायः २५ सेर) तरकारी मिली। इतने अधिक परिमाण में उत्पन्न तरकारी को क्या किया जाय, यह भी प्रश्न उनके सामने आया। बुखानोफ़्-परिवार—जिसमें पति-पत्नी ने मिल कर पिछले साल ४८३ कार्य-दिन काम किया—को कोल्खोज़् से १० हज़ार रूबल (४,५०० रु० से अधिक) नक़द और १२००० किलोग्राम (३०० मन) तरकारी आलू मिले। इसके अतिरिक्त उनके पास हैं वैयक्तिक पिछवाड़े के खेत, एक गाय, सुअर और मुर्गी

की भी आमदनी हुई। दो साल पहले तक बुख़ानोफ़् की टुटही मड़ैआ चली आती थी, अब उसकी जगह नया पक्का बड़ा सा मकान है, जिसमें कई कमरे हैं। नई नई कुर्सियाँ और मेजें रक्खी हुई हैं।

(२) **चपायेफ़्का-कोल्ख़ोज़्** (**उक्रइन्, योल्तावा प्रान्त**)—क्रान्ति के पहले इस गाँव का नाम था, '**बोगुसास्लोबोद्का** और यह एक पोलिश बड़े ज़मींदार **बोगुज़ा** की सम्पत्ति थी। उस वक्त यहाँ के किसानों की जो दयनीय अवस्था थी, उसे अब भी सीमा पार कर चन्द ही मीलों पर पोलैंड के गाँवों में देखा जा सकता है। लोगों ने पुराने अत्याचारों को स्मरण कर जमींदार का नाम गाँव के साथ रखना नहीं चाहा, इसलिए लाल-क्रान्ति के बहादुर सेनानायक **चपायेफ़्** का नाम अपने गाँव के लिये दिया।

पिछले साल १९३६ की अपेक्षा कोल्ख़ोज़ की आमदनी में बहुत बढ़ती हुई। प्रति कार्य-दिन के वेतन में मिलनेवाला अनाज दूना हो गया। नक़द रुपया भी अधिक मिला। और इसके सिवा अपनी गाय, सुअर, मुर्ग़ी की आमदनी तथा पिछवाड़े के खेत की आमदनी। चपायेफ़्का के किसानों की आमदनी का अन्दाज़ उनकी ख़रीदों से आप लगा सकते हैं—५ व्यक्ति (बच्चों को लेकर) का प्रिस्तूया एक साधारण किसान-परिवार है। उसने १९३७ में १३१२ कार्य-दिन कमाये। हज़ारों रूबल उन्होंने कपड़े पर ख़र्च किये। लड़की और दो पुत्रों के सिर्फ़ जूते और मोज़े पर १६२० रूबल खर्च हुए। याद रखना चाहिए कि क्रान्ति से पहले यहाँ के किसान छाल या रस्सी के घर के बने चप्पल पहना करते थे।

उसी गाँव के दूसरे कोल्ख़ोज़ी लोहार ज़खरकुजेल्नी को ले लीजिए। उसके घर में भी ५ व्यक्ति हैं। पिछले जाड़े में उन्होंने ५ जोड़े बूट, २ ओवरकोट और ३ सूट (पहनने का सारा कपड़ा) ख़रीदे। इसके अतिरिक्त एक नया पलंग, कुछ कुर्सियाँ, एक आलमारी, तथा कुछ घर के काम की चीज़ें ख़रीदीं।

लोगों के भोजन में गेहूँ का आटा, माँस, मक्खन, अंडा, मलाई, दूध,

शहद, फल और तरकारियाँ हैं। साथ ही शहर की मिठाइयाँ, मिश्री, हल्वा, टिन की मछली भी गाँव के भंडार में खूब बिक रही हैं। इन की बिक्री कितनी तेज़ी से बढ़ी है, इसे आप वहाँ के भंडार की निम्न चीज़ों की बिक्री से समझ सकेंगे—

	१९३५	१९३६	१९३७
चीनी और मिश्री - - -	२१,०४० रू०	८३,५९१ रू०	१,२६,३९२ रू०
बिस्कुट कहवा आदि - -	२५,४८४ ,,	३६,५७० ,,	६३,५६० ,,
मकरौनी सेंवई आदि - -	३,६९८ ,,	३१,०७० ,,	३२,०६४ ,,
सूखी और टिन की मछली	१०,३९३ ,,	१५,८६४ ,,	१७,७७५ ,,

भंडार में शराब भी बिकती है। १९३७ में उसकी बिक्री १९३६ की अपेक्षा १८ सैकड़ा १९३५ की अपेक्षा ६८ सैकड़ा अधिक हुई। साथ ही हल्के दर्जे की कड़ी शराब वोद्का की बिक्री कम हुई। ऊँची किस्म के तम्बाकू और सिगरेट की बिक्री १९३५ में १७,७२८ रूबल थी। १९३७ में वह ३६,१०५ हो गई। पिछले साल पहले की अपेक्षा गाँव वालों ने धोने का साबुन ड्योढ़ा और खुशबू तथा खुशबूदार साबुन दुगुना खरीदा।

कोल्खोज़् की नाट्यशाला में १००० आदमियों के बैठने की जगह है। पिछले साल दिसम्बर में ६ बार फ़िल्म दिखलाये गये हैं। गाँव की नाटक-मंडली ने पिछले दिसम्बर में ४ नाटक खेले और कितनी ही बार गाँव के संगीत-समाज ने संगीत-बैठक की।

चपायेफ़्का के पास एक अच्छा क्रीड़ा-क्षेत्र है, जिसमें ५००० आदमियों के बैठने का इंतज़ाम है। फुटबाल, वोलीबाल, टेनिस आदि की टोलियाँ हैं। जाड़ों के दिनों में जब क्रीडाक्षेत्र बर्फ़ से ढँक जाता है, तो लोग स्केटिंग करते हैं। यहाँ के सभी १०६० घरों में रेडियो और बिजली की रोशनी है।

क्रान्ति के पहले चपायेफ़्का के १०६० घरों में ४५४ के पास ज़मीन नहीं थी। ३०२ के पास जोतने के लिए घोड़े नहीं थे।

(२) बढ़े-चलो-कोल्खोज़्—(दिमित्रोफ़् ज़िला, मास्को प्रान्त)

इस कोल्ख़ोज़् की प्रयोगशाला के प्रवंधक सिदोरोफ़् ने अपने कोल्ख़ोज़ के बारे में कहा—"हम को इसका अभिमान है, कि मास्को प्रान्त में हमने जाड़े के गेहूँ को प्रति एकड़ ६० बुशल (१८ मन) पैदा किया।"

इस कोल्ख़ोज़् के किसानों को प्रति कार्य-दिन के लिए ३१ किलोग्राम (३१ सेर) अनाज, तरकारी आदि तथा ३ रूवल (१।) मिला। गाँव के १३० आदमियों ने ३४००० कार्य-दिन काम किये। कुछ सदस्यों के काम तो ५०० से ६०० कार्य-दिन के हुए। ६० वर्ष के बूढ़े द्रोस्दोफ़् ने ५०० कार्य-दिन और उस की स्त्री ने २०० कार्य-दिन काम किये। इनको इतना अनाज मिला, कि उसको ले जाने के लिए ४० घोड़ा गाड़ियों की ज़रूरत पड़ी। इसके अतिरिक्त २१०० रूबल नक़द और तिस पर घर के बगीचे की आमदनी और गाय, मुर्ग़ी, सुअर ऊपर से।

१९३८ के लिए गाँववालों की योजना है, १२ सैकड़ा उपज बढ़ाने की। जाड़े से ही लोगों ने खाद जमा करना शुरू कर दिया है। गोबर के अतिरिक्त रसायनिक खाद ख़रीदी गई है। मास्को की कृषि-एकेडेमी के एक वैज्ञानिक ने जाड़ों में एक कृषि-कक्षा खोली, जिसमें ३० सदस्य पढ़ रहे थे। ४० सदस्य राजनैतिक और दूसरी कक्षाओं में शामिल हैं। गाँव से दो मील पर मास्को को जानेवाले बिजली के खंभे हैं। सिदोरोफ़् ने कहा —"हम उस तार से अपने गाँव को मिलाने जा रहे हैं। फिर हर एक रहने के घर तथा पशुशाला और दूसरे मकानों में भी बिजली की रोशनी होगी। दाँवने की मशीन भी हम बिजली से चलायेंगे।"

गाँव की योजनाओं में अब की साल एक सुअरख़ाना बनवाना है। एक अनाज सुखाने का मकान और एक अनाज रखने की ठेक। सिदोरोफ़् ने कहा—"वे दिन गये जब किसान तमाम जाड़े चूल्हे के गिर्द बैठे रहते थे। जाड़े में भी अब हमें काम करना है।"

सिदोरोफ़् अब की बार सोवियत् पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया है।

*** ***

सोवियत् की खेती में जहाँ किसान, इंजीनियर, मशीन तथा वैज्ञानिक मदद दे रहे हैं, वहाँ अखबारों का हिस्सा भी इसके विषय में कम नहीं है। जहाँ 'प्राव्दा' और 'इज़्वेस्तिया' जैसे सोवियत् की राजधानी से निकलनेवाले अखबार हैं, और २०–२० लाख की तादाद में छपकर सारे देश में जाते हैं। बहुत से संघ-प्रजातंत्र की राजधानी तथा प्रान्त और ज़िले के केन्द्र से निकलनेवाले अखबार भी हैं। किसानों का सब से बड़ा अखबार "क्रेस्त्यंस्काया गज़ेता" है, जिसकी ग्राहक-संख्या ३० लाख से भी ऊपर है और सोवियत् के दैनिक समाचार-पत्रों में इससे अधिक ग्राहक-संख्या किसी की नहीं है। शायद दुनिया में अमेरिका का ही कोई अखबार मुक़ाबला करे तो करे। बड़े बड़े कोल्खोज़् खुद अपना अखबार निकालते हैं। जो खबरें रेडियो से आती हैं, उन्हें दीवार पर लिख दिया जाता है। ऐसे दीवार समाचार-पत्रों का वहाँ बहुत अधिक प्रचार है। कोई गाँव नहीं, जहाँ दीवार समाचार-पत्र न हों। इन दीवार समाचार-पत्रों में गाँव की आर्थिक, खेती संबंधी तथा दूसरी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं। किस ब्रिगेड ने सबसे अधिक निराई की है, किस कोल्खोज़ी ने ज़मीन खोदने में आज कमाल किया है—यह भी उसमें लिख दिया जाता है। यहाँ तक कि खेत पर काम करते वक़्त भी दीवार समाचार-पत्र पढ़ने को मिलता है। (यहाँ चाय आदि गर्म करने के लिए छोटी कोठरी की दीवार या साथ आई लारी के किनारे का पटरा कागज़ का काम देता है।) बुनाई का मौसम आरंभ होने से कुछ समय पहले (हमारे यहाँ के क्वार की तरह का महीना) अखबार-वाले किस तरह से कृषकों की सहायता करते हैं, और सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी किस तरह भाग लेती हैं, इसे जानने के लिए मास्को के एक दैनिक पत्र से हम एक उद्धरण देते हैं—

स०स०स०र० के मंत्रिमंडल और स०स० कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति अगले मौसम में बोने की तैयारी की रिपोर्टों को देखकर समझती है, कि काम बिलकुल असन्तोषजनक है। ट्रैक्टर की मरम्मत,

पेट्रोल का संग्रह, बीज के संचय करने का प्रबंध, बीज की सफ़ाई, और साधारण बीज से चुने हुए बीजों का परिवर्तन जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और जल्दी किये जानेवाले काम में वक़्त पर न पूरा होने का भारी ख़तरा हो गया है।

स्थानीय अधिकारियों की बेपरवाई और सुस्ती के कारण दक्षिणी प्रदेशों (**रोस्तोफ़् प्रान्त, क्रास्नोदोर इलाक़ा, स्तालिन्ग्राद् प्रान्त, क्रिमिया स्वायत्त-प्रजातंत्र** और दूसरे) में वसन्त के बोने की तैयारी अत्यन्त धीमी गति से हो रही है। और दक्षिण में बुआई का समय सिर पर आ पहुँचा है।

२० दिसंबर १९३७ तक ट्रैक्टर की मरम्मत का काम सारे स०स०स०र० में सिर्फ़ १३ सैकड़ा हो पाया है। **चेचन-इंगुश स्वायत्त-प्रजातंत्र** (३ सैकड़ा) **गुर्जी संघ-प्रजातंत्र** (६ सैकड़ा), **रोस्तोफ़्-प्रान्त** (११ सैकड़ा), **ताजिक संघ-प्रजातंत्र** (७ सैकड़ा), में ख़ास तौर से अक्षम्य सुस्ती देखी जा रही है। ट्रैक्टरों की मरम्मत जो हुई है, वह भी अच्छी तरह नहीं की गई है।

सारे स०स०स०र० में १५ दिसंबर १९३७ तक बीज जमा करने का काम सिर्फ़ ७६ सैकड़ा हुआ है। और बीज साफ़ करने का काम तो और भी कम, १८ सैकड़ा हुआ है। इनमें अधिक पीछे रहनेवालों में ये जगहे हैं— **ओर्जोनीकिद्जे** इलाक़ा, (बीज-संग्रह ६८ सैकड़ा और बीज-शोधन १० सैकड़ा) स्तालिन्ग्राद् प्रान्त (बीज-संग्रह ८७ सैकड़ा, बीज-शोधन १८ सैकड़ा)। बहुत जगह बीज-संग्रह करते वक़्त लोगों ने अलाय-बलाय बीज डाल दिया है।

कोल्ख़ोज़ों के बीज का साधारण अनाज के बदले चुने हुए बीज चुने बीज-संग्रहालय और राजकीय 'अनाज-क्रेता ट्रस्ट' से बदलने का काम अभी आरंभ तक नहीं हुआ है।

मंत्रिमंडल और पार्टी की केन्द्रीय समिति इस बात को अक्षम्य अपराध समझती है। बोने का समय हमारे सिर पर आ पहुँचा है। ऐसे समय में भी

कितने ही मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन, मशीन-ट्रैक्टर-वर्कशाप और स्थानीय भूम्य-धिकारी अग्रणी कार्य-प्रबंधकों के विना काम कर रहे हैं।

स्थानीय समाचार-पत्रों ने वसन्त की वुआई की तैयारी का ज़िक्र वड़े असन्तोषजनक तरीक़े से किया है। समाचार-पत्र उन असली अपराधियों का भंडाफोड़ नहीं कर रहे हैं, जिनके कारण कि ट्रैक्टर की मरम्मत, वीज-संग्रह और वीज-शोधन के काम में ढिलाई हो रही है। और कोल्खोज़ी तथा सोव्-खोज़ी किसानों में वसन्त की वुनाई के संवंध में साम्यवादी होड़ को संगठित करने में दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं।

मंत्रिमंडल और पार्टी केन्द्रीय समिति ने संघ और स्वायत्त प्रजातंत्रों के मंत्रिमंडलों को, इलाकों, प्रान्तों और ज़िलों की कार्यकारिणी समितियों तथा उनकी जातीय पार्टियों; और इलाक़ा, ज़िले और प्रान्त की पार्टी समितियों को हिदायत की है, कि ऊपर के दोषों को तुरंत दूर करें, और निम्न-लिखित वातों का अनुसरण करें—

१—दक्षिणी ज़िलों में ३ दिन के भीतर और उत्तरी ज़िलों में ५ से ७ दिन के भीतर वहाँ की प्रान्तीय पार्टी कमेटी के ब्यूरो और प्रान्तीय कार्य-कारिणी के सचिवमंडल, की सम्मिलित वैठक कर के वसन्त की वुआई की तैयारी पर विचार करें; और ज़िला की पार्टी कमेटियों के मंत्रियों, ज़िला के सोवियत् कार्यकारिणी के अध्यक्षों, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों के डाइरेक्टरों की मीटिंग करें और उसमें वहुत पिछड़े ज़िलों की कार्यकारिणी के मुख्य कार्यकर्त्ताओं की रिपोर्ट सुनें, कि क्यों वुआई की तैयारी में देर हो रही है। उन्हें वीज-संग्रह तथा वीज-शोधन और ट्रैक्टर मरम्मत आदि को जल्दी करने के लिए रास्ता वतलायें।......

२—ट्रैक्टर मरम्मत और वीज को वोने के लिए तैयार करने के काम की मात्रा और योग्यता का दैनिक प्रोग्राम वनायें। और ज़रूरत हो तो ख़राव तरह से मरम्मत करनेवाले या ख़राव तरह से वीज को वोने के लिए तैयार करनेवाले अपराधी व्यक्तियों को सज़ा देने से वाज़ न आयें।

३—५ से १३ जनवरी (१९३८) के बीच में सभी कोल्ख़ोज़ों के बीज-संग्रह के अच्छे बुरेपन की पूर्णतया जाँच कर लेनी चाहिए।

४—जहाँ आवश्यक हो, वहाँ के लिए इंजीनियरों और मिस्त्रियों की अध्यक्षता में शहर के कारख़ानों के योग्य कमकरों के ब्रिगेड् को बुलाया जाय और उन्हें उन मशीन-ट्रैक्टर-वर्कशापों में भेजा जाय, जिनमें ट्रैक्टर मरम्मत के काम की पूर्ति समय पर होने की संभावना नहीं है।

५—दक्षिणी जिलों में १५ जनवरी तक और उत्तरी जिलों में २० जनवरी तक मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों और उनकी वर्कशापों तथा ज़िला के भूमि-विभागों में जो जगहें ख़ाली हैं, उन्हें अनुभवी कार्यकर्त्ताओं से पूरा करना चाहिए; और इसकी सूचना २० जनवरी तक मंत्रिमंडल और पार्टी केन्द्रीय समिति के पास आ जानी चाहिए।

६—वसन्त की बुआई की ख़ूब तैयारी करने के लिए सोव्ख़ोज़ों और कोल्ख़ोज़ों में ज़बर्दस्त होड़ कराना तथा रोज़-बरोज़ उसे विस्तृत क्षेत्र में संचालित करना चाहिए।

७—वसन्त की बुआई की तैयारी और होड़ की प्रगतियों के बारे में रोज़-बरोज़ और अच्छे ढंग से रिपोर्ट छापना समाचार-पत्रों का कर्तव्य है।
...............”

*** ***

कम्युनिस्ट-पार्टी—कोल्ख़ोज़ों का संबंध गाँवों से है। गाँव के जीवन को कोल्ख़ोज़ों ने कितना परिवर्तित कर दिया है, यह ऊपर के वर्णन से मालूम होगा। लेकिन सभी देशों के किसानों की तरह सोवियत् के किसान भी बहुत पुराणवादी थे। नई चीज़ के लिए साहस करने की अपेक्षा बाप-दादों के रास्ते पर भूखे रह कर तिलतिल करके मरने में उन्हें ज़्यादा सन्तोष था। सोवियत् के ग्रामीण समाज के मन और शरीर में जिसने इतना भारी परिवर्तन कराया, वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। कम्यु-

निस्ट पार्टी वैसे भी नगर और उद्योग धन्धे सभी के नवनिर्माण की प्राण है। गाँवों में उसने क्या किया, इसका भी ज़िक्र कर देना ज़रूरी है।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेंवर होने के लिए, कितनी कसौटियों से गुज़रना पड़ता है, इसे हम अन्यत्र कह चुके हैं। शारीरिक और मानसिक तौर से उसे अधिक योग्य वनना पड़ता है। दूसरी तरफ़ जोखिम और ख़तरे के काम में निर्भीक होकर कूदना पड़ता है; और उसपर वेतन भी अपेक्षाकृत कम लेना पड़ता है। कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्वर होना है, एक ख़तरा, कष्ट और तपस्या का जीवन विताना। और इसपर ज़रा सी ग़लती हो जाय तो पार्टी से निकालकर उसकी सारी तपस्या वेकार कर दी जाती है। निश्चय ही इन परीक्षाओं में पास होकर जो आयेगा, उसमें काम की क्षमता अधिक होगी, वह जनता का अधिक विश्वास-पात्र होगा। जिस तरह शासन के लिए गाँव से लेकर सारी सोवियत्-भूमि तक की सोवियत् स्थापित है। जिस तरह खेती के लिए गाँवों में सोव्ख़ोज़् और कोल्ख़ोज़् तथा शहरों में मज़दूर-संघ, लेखक-संघ आदि स्थापित हैं, उसी तरह गाँवों और शहरों में सभी जगह कम्युनिस्ट पार्टी या उनके मेम्बर पाये जाते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्वरों की संख्या १६–१७ लाख से ज़्यादा नहीं है। गाँवों में तो पार्टी मेम्वरों की संख्या और भी कम है। उदाहरणार्थ **स्तारोसेल्ये-कोल्ख़ोज़्** के १२०० परिवारों में सिर्फ़ १ पार्टी मेम्वर है। **वुद्योन्नि कोल्ख़ोज़्** (ओदेसा जिला) के ५५ परिवारों में १ और इलिच-कुल्ख़ोज़् (उक्रइन्) के १०४ परिवारों में ३ पार्टी मेम्वर हैं। लेकिन स्तारोसेल्ये के १२०० परिवारों में सब से अधिक प्रभावशाली व्यक्ति कम्युनिस्ट देरिवस् है। वहाँ कोई भी महत्वपूर्ण काम नहीं है, जिसमें देरिवस् से न पूछा जाता हो। महत्त्व-पूर्ण क्या, साधारण कामों में भी देरिवस् की पूछ होती है। अच्छे काम के लिए इनाम देते हैं, किसको कितना इनाम देना चाहिए, किसका काम सवसे अच्छा है और किसका उससे कम तो देरिवस् उसमें ज़रूर वुलाये जायेंगे। देरिवस् प्रवंध-कारिणी का सदस्य नहीं है, वह सिर्फ़ सांस्कृतिक विभाग का

प्रबंधक है। तब भी उसे बुलाया जायगा। लोग जानते हैं, कि देरिबस् को कोई प्रलोभन, कोई मित्रता-बंधुता का भाव अपनी तरफ़ खींच नहीं सकता। वह हमेशा उधर ही रहेगा, जिधर न्याय है। इसके साथ लोग यह भी जानते हैं कि देरिबस् का ज्ञान उनसे बहुत ज़्यादा है। लोगों को मालूम है, कि देरिबस् कोल्ख़ोज़् के संगठन के आरंभ में पार्टी की ओर से जब स्तारोसेल्ये में भेजा गया, तभी से वह कितनी लगन से काम कर रहा है। वह आधी रात को उठ पड़ता और अस्तवल में जाकर देखता कि उस वक़्त के ड्यूटीवाले कमकर वहाँ मौजूद हैं या नहीं। घोड़ों के नीचे घास बिछी हुई है या नहीं। जब सर्दी बढ़ गई, और पाला पड़ने का डर हुआ तो **देरिबस्** ख़ुद घास को उठाकर चुक़न्दर के खेतों में पहुँचता और लोगों को भी ले जाकर धुआँ जला कर पाला नहीं पड़ने देता। बहाना बनानेवाले हलवाहे के हाथ से परिहत छीनकर ६ घंटे लगातार हल चला देरिबस् ने दिखलाया कि एक आदमी कितना काम कर सकता है।

स्तारोसेल्ये में देरिवस् की जो स्थिति और प्रभाव है, वही स्थिति और प्रभाव सोवियत्-भूमि में कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल) की है।

सदस्यों की संख्या कम होने से हर गाँव में कम्युनिस्ट पार्टी न होकर; बल्कि ज़िले ज़िले में पार्टी का संगठन किया गया है। ज़िला पार्टी के अधिकांश सदस्य देरिबस् की तरह भिन्न भिन्न सोव्ख़ोज़ों, कोल्ख़ोज़ों आदि में काम करते हैं। ज़िला पार्टी के सेक्रेटरी बराबर कोल्ख़ोज़ों में दौरा करते रहते हैं। ख़ुद खेतों में जाते हैं और लोगों को काम के लिए परामर्श देते तथा त्रुटि होने पर सुधारने के लिए हिदायत करते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत्-संघ का दिमाग़ है। इसीलिए संख्या थोड़ी होने पर भी उसका प्रभाव अधिक है।

गाँवों में कम्युनिस्ट पार्टी के सभासदों के वाद कुछ मेम्बरी के उम्मेदवार होते हैं। उनकी भी संख्या मेम्बरों की तरह ही कम है। कुछ सालों की परीक्षा के वाद वे मेम्वर बनाये जाते हैं। उम्मेदवारों के वाद

सहानुभूति रखनेवालों का नंबर आता है। इनकी तादाद कुछ अधिक ज़रूर होती है, लेकिन उनके प्रवेश में भी छानवीन की जाती है।

फिर तरुण-साम्यवादी-संघ या **कोम्सोमोल्** है। कोम्सोमोल् में १६ वर्ष से ऊपरवाले नर-नारी दाख़िल होते हैं। स्तारोसेल्ये में जहाँ १ पार्टी मेम्वर है, वहाँ **कोम्सोमोल्** के मेम्बर २९ हैं। **कोम्सोमोल्** एक तरह पार्टी के मेम्बरों की पाठशाला है।

२६—कोल्खोज़्-क़ानून

(कृषि-सम्बन्धी सहयोग के आदर्श नियम)

१७ फ़रवरी १९३५ को द्वितीय अखिल-संघ-कोल्खोज़्-उर्दानिक-कांग्रेस ने यह नियम बनाये; जिनको सोवियत् सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने भी स्वीकार किया।

(१) उद्देश्य और कार्य

१—......ज़िला........गाँव के जाँगर चलानेवाले किसान स्वेच्छा से कृषि संबंधी सहयोग में सम्मिलित होते हैं जिसमें कि वे उपज के साधनों तथा सबके संगठित श्रम के द्वारा कोल्खोज़्—समाजवादीय अर्थनीति को कुलकों तथा जाँगर चलानेवालों के लुटेरों और शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए कोल्खोज़् का निर्माण करना, तथा दरिद्रता और अज्ञान पर पूर्ण विजय प्राप्त करना, छोटी और वैयक्तिक खेती के पिछड़ेपन को हटाना, श्रम की उपज को बहुत ऊँचा बढ़ाकर कोल्खोज़् के किसानों के लिए बेहतर जीवन प्रदान करना सीखें।

कोल्खोज़् का मार्ग समाजवाद का मार्ग है; और सिर्फ़ वही जाँगर चलानेवाले किसानों के लिए अकेला ठीक मार्ग है। सहयोग (अर्तेल) के सदस्य निम्न बातों की ज़िम्मेवारी लेते हैं—अपने अर्तेल को मज़बूत करना, सच्चाई से काम करना, किये काम के अनुसार कोल्खोज़् की आमदनी को बाँटना, सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करना, कोल्खोज़् की सम्पत्ति की रक्षा करना, ट्रैक्टर और मशीन को ठीक से सँभालना, घोड़ों की ठीक से निगहवानी करना, किसान-मज़दूर सरकार ने जो काम उन्हें सौंपा है,

उसे पूरा कर अपने कोल्ख़ोज़् को बोल्शेविक कोल्ख़ोज़् और कोल्ख़ोज़ी किसानों को समृद्ध बनाना।

(२) भूमि

२—सहयोग के सदस्यों के खेतों को अलग करनेवाली जो पहले मेड़ें थीं, वह तोड़ दी जायेंगी और सभी खेत एक महान् क्षेत्र के रूप में परिणत कर दिया जायगा, और सहयोग उसे सामूहिक रूप से काम में लायेगा।

सहयोग के अधिकार की भूमि सारी जनता की राजकीय सम्पत्ति है। किसान-मज़दूर सरकार के क़ानून के अनुसार वह हमेशा के लिए सहयोग को दे दी जाती है लेकिन सहयोग न तो उसे ख़रीद बेच सकता है, न लगान पर दे सकता है। हर एक सहयोग को ज़िला की सोवियत् कार्यकारिणी समितियाँ गवर्नमेंट की ओर से दायमी बन्दोबस्त का प्रमाणपत्र देंगी; जिसमें सहयोग की भूमि का परिमाण और निश्चित सीमा दर्ज रहेगी। एक बार सहयोग के भीतर जितनी भूमि आ गई, उसे कम नहीं किया जा सकता। हाँ, पर्ती ज़मीन या स्वतंत्र क़िसानों की अधिक ज़मीन से उसे बढ़ाया ज़रूर जा सकता है; और वह इस तरह से बढ़ाया जायगा, उसके बढ़ाने में यह ख़याल रखा जायगा कि बीच में किसी दूसरे की जमीन न आ जाय।

समाजवादी भूमि में से एक छोटा सा टुकड़ा—जो कि घर से लगा होगा—हर एक कोल्ख़ोज़ी घर को वैयक्तिक रूप से इस्तेमाल करने के लिए दिया जायगा।

हर घर के वैयक्तिक इस्तेमाल के लिए मिली यह भूमि $\frac{1}{4}$ हेक्तर या $\frac{1}{2}$ हेक्तर और किन्हीं किन्हीं ज़िलों में १ हेक्तर तक (जितनी भूमि में घर है, उसे छोड़ कर) होगी। इस परिमाण को उस इलाके या ज़िले की अवस्था को देखकर स०स०स०र० के कृषि-विभाग के आदेशानुसार संघ-प्रजातंत्र का कृषि-विभाग निश्चित करेगा।

३—लगातार चली गई, सहयोग की भूमि को कभी भी कम नहीं

किया जा सकता। सहयोग के छोड़नेवाले सदस्यों को सहयोग के अधिकार की भूमि में से कुछ भी देना मना है। जो लोग सहयोग से अलग होंगे, उन्हें राज्य की ग़ैर-आबाद ज़मीन से भूमि मिल सकती है। सहयोग की भूमि को फ़सल की बारी के अनुसार अनेक खेतों में बाँटा जायगा। फसल के बारी वाले खेतों में से एक भाग एक ब्रिगेड के लिए सदा के वास्ते दिया जायगा और वह फ़सल की बारी के सम्पूर्ण काल में उसे इस्तेमाल करेगा।

बहुत ज़्यादा ढोर पालनेवाले कोल्खोज़ों में अगर वहाँ काफ़ी ज़मीन है और उसकी आवश्यकता है, तो एक निश्चित भूभाग फ़ार्म (पशुशाला) के साथ जोड़ दिया जायगा और उस फ़ार्म के ढोरों के चारे के लिए वह खेत के तौर पर इस्तेमाल होगा।

(३) उपज के साधन

४—जुताई के काम करनेवाले पशु, खेती के औज़ार (हल, बोने, काटने, दाँवने, आदि की मशीन), बीज-भंडार, समाजीकृत पशुओं के लिए आवश्यक परिमाण में चारा, सहयोग के काम तथा कृषि-संबंधी उपज के पैदा करने के लिए जितने कामकाजों की ज़रूरत है, उनके लिए आवश्यक घर—ये सब समाज की सम्पत्ति होंगी, व्यक्ति की नहीं।

कोल्ख़ोज़् परिवार के रहने का घर उसके व्यक्तिगत पशु और मुर्ग़ियाँ, एवं इन व्यक्तिगत पशुओं के रखने के लिए जिन घरों की आवश्यकता होगी, उनका समाजीकरण नहीं होगा। वे कोल्ख़ोज़् परिवार के व्यक्तिगत अधिकार में रहेंगे।

कृषि-संबंधी औज़ारों के समाजीकरण के साथ साथ परिवार के अपने खेत में काम करने के लिए आवश्यक छोटे छोटे औज़ारों का समाजीकरण नहीं होगा।

आवश्यकता होने पर सहयोग-प्रबंधक-समिति कोल्ख़ोज़् के सदस्यों के वैयक्तिक तौर से इस्तेमाल करने के लिए समाजीकृत खेत जोतनेवाले

जानवरों में से अनेक घोड़े किराये पर दे सकती है।

सहयोग मिश्रित (कई जातियों के)-पशुपालन (फ़ार्म) का प्रबंध करेगा; और जहाँ पर बहुत अधिक संख्या में पशु हैं, वहाँ अनेक विशेष जाति की पशुशालाओं का प्रबंध करेगा।

५—अनाज, कपास, चुकन्दर, सन, पटसन, आलू और तरकारी एवं चाय और तंबाकू पैदा करनेवाले ज़िलों के कोल्ख़ोज़ों के हर एक घर को अधिकार है कि एक गाय, एक या दो बछड़ा, अपने छौनों के साथ एक सुअर या यदि कोल्ख़ोज़्-प्रबंधकारिणी अधिकार दे, तो अपने छौनों के साथ दो सुअर, १० तक भेड़ और बकरी, जितना चाहें उतनी मुर्ग़ी, ख़रगोश और शहद की मक्खियों की २० मक्खीदानी रक्खे।

कृषि-प्रधान ज़िलों में जहाँ पशुपालन भी उन्नत है—हर एक कोल्-ख़ोज़ी घर को अधिकार है, कि वह बछड़ों के अतिरिक्त २ या ३ गायें, अपने छौनों के साथ २ या ३ सुअर, २० से २५ तक भेड़ बकरी, जितना चाहें उतनी मुर्ग़ी और ख़रगोश, और २० तक शहद की मक्खियों की मक्खी-दानियाँ रक्खें। ऐसे ज़िलों में निम्न स्थान शामिल हैं—ख़ानाबदोश ज़िलों से दूरवाले कजाकस्तान के कृषि प्रधान ज़िले, बेलोरूसिया के योलेसीमे ज़िले, उक्रइन् के चेर्नीगोफ़् और कियेफ़् ज़िले, पश्चिमी सिबेरिया प्रान्त के वर्बिस्की की पथरीली भूमि तथा सिस्-अल्ताई ज़िले, ओम्स्क प्रान्त के इशिम् और तोबोल्स्क समुदायवाले ज़िले, बशकिरिया की ऊँची भूमि, पूर्वी सिबेरिया का पूरबवाला भाग, सुदूरपूर्व-प्रदेश के कृषि-प्रधान ज़िले, उत्तर-प्रदेश के वोलोग्दा और खोल्योगुरि समूहवाले ज़िले।

उन ज़िलों में, जहाँ कि स्थायी तौर से या आधी ख़ानाबदोशी की हालत में पशुपालन का रवाज है, जहाँ पर कि खेती कम महत्त्व रखती है, और पशुपालन लोगों का मुख्य व्यवसाय है—वहाँ कोल्ख़ोज़् के हर एक घर को अधिकार है कि बछड़ों के अतिरिक्त ४ या ५ गायें, ३० से ४० तक भेड़-बकरियाँ, अपने छौनों के साथ २ या ३ सुअर, जितना चाहें उतनी मुर्ग़ियाँ

और खरगोश, शहद की मक्खियों की २० मक्खीदानी रखें। इस प्रकार के ज़िले ये हैं—खानाबदोशी के पास के ज़िले कज़ाकस्तानवाले पशुपालन-प्रधान ज़िले, **तुर्कमानिस्तान, ताजिकिस्तान** कराकल्पका, **किर्गिज़िस्तान** ओइरोतिया, खकसिया, पश्चिमी-बुर्यत् मंगोलिया, कल्मुक-स्वायत्त-ज़िला, **दागिस्तान** स्वायत्त-प्रजातंत्र की ऊँची भूमि, **चेचेनो-इंगुशिया, कर्बादनो-बल्गारिया**, उत्तरी **काकेशस्** के ओसेती और कराचयेफ़् स्वायत्त-ज़िले और आज़ुर्वाइजान्, अर्मनी, गुर्जी संघ-प्रजातंत्रों की ऊँची भूमियाँ।

जिन ज़िलों में खानाबदोशी पशुपालन-प्रधान व्यवसाय है, खेती जहाँ बिलकुल नाम मात्र है, और सर्वत्र पशुपालन ही गृहस्थी का काम है, उन ज़िलों में कोल्खोज़ी प्रत्येक घर को अधिकार है, कि वह बछड़ों के साथ ८ से १० तक गायें, १०० से १५० तक भेड़ बकरियाँ, जितनी चाहें उतनी मुर्ग़ियाँ, १० तक घोड़े, ५ से ८ तक ऊँट रक्खें। ऐसे ज़िले हैं—कज़ाकस्तान के खाना-बदोशी ज़िले, बुर्यत्-मंगोलिया के खानाबदोशी ज़िले और **नागाइस्क** ज़िला।

(४) सहयोग का कामकाज और उसका प्रबन्ध

६—सहयोग को उन योजनाओं के मुताबिक़ अपने **कोल्खोज़्** का प्रबन्ध करना होगा, जिन्हें कि किसान-मज़दूर-राज्य की संस्थाओं ने कृषि की उपज के बारे में निश्चित किया है; और राज्य की ओर से सहयोग के लिए जो जवाबदेहियाँ हैं।

सहयोग को निम्न बातों को पूर्णतया पालन करने की ज़िम्मेवारी लेनी पड़ेगी। कोल्खोज़् की विशेष अवस्था और स्थानीय वातावरण को नज़र में रख कर तैयार की गई बुनाई, गर्मी की जुताई, पाँतियों के भीतर खेती करने, खेत काटने, दाँवने, पलिहर जोतने की योजना और पशुपालन के विकास के संबंध में राजकीय योजना को पूरा करना।

सहयोग की प्रबंधकारिणी और उसके सभी सभासदों का कर्तव्य होगा—

(क) उचित फ़सल की बारी का अनुसरण कर, गहरी जुताई और हानिकारक घासों को निकाल कर परती और जुतहड़ ज़मीन को ठीक तरह से इस्तेमाल करने तथा बढ़ाने के ज़रिए, एवं अधिक दामवाली फ़स्लों के समय पर सावधानी के साथ खेती करना, कपास के समय पर देख-भाल, पंचायती और व्यक्तिगत दोनों तरह के पशुओं की खाद से तथा धातुज खाद से खेत को ज़रखेज़ बनाना; हानिकारक कीड़ों को नाश करना; बिना नुक़सान किये सावधानी के साथ फ़सल काटना; सिंचाई की नहर-नालियों की रक्षा और सफ़ाई; जंगल की हिफ़ाज़त करना; रक्षित जंगलों का लगाना, स्थानीय कृषि-विभाग द्वारा निश्चित किये तथा कृषि-शास्त्रीय नियमों का सख़्ती के साथ पालन करना;

(ख) बोने के लिए उत्तम बीज का चुनना, उनको सावधानी के साथ साफ़ करना, चोरी और ख़राब होने से उनकी हिफ़ाज़त करना, उन्हें शुद्ध और हवा-रोशनीवाले घरों में रखना, चुने हुए बीज द्वारा बोये जानेवाले खेतों के क्षेत्र को बढ़ाना;

(ग) वैज्ञानिक ढंग से भूमि को कोल्ख़ोज़् के खेतों में लाकर, उपेक्षित और ग़ैर-आबाद ज़मीन को सुधार और जोत कर सहयोग के अधिकार में आई सभी भूमि को इस्तेमाल कर जुतहड़ को और बढ़ाना;

(घ) सहयोग के अधिकारवाले सभी जुताई के पशु, सभी सम्पत्ति, कृषि-संबंधी हथियार, बीज और दूसरे उपज के साधनों को सहयोग के काम के लिए पूरी तौर से इस्तेमाल करना और जिन ट्रैक्टर, मोटर, दँवाई की मशीन, काटने की **कंबाइन** और दूसरी मशीनें जिन्हें कि मज़दूर-किसान-सरकार ने मशीन-

ट्रैक्टर-स्टेशनों की मार्फ़त कोल्ख़ोज़् की सहायता के लिए दिया है, उनका पूर्णतया इस्तेमाल करना। **कोल्ख़ोज़्** के पशुओं और औज़ारों को अच्छी अवस्था में रखने के ख़याल से समाजीकृत पशुओं और औज़ारों को ठीक प्रकार से देख रेख करने का इन्तज़ाम करना;

(ङ) पशुपालन—और जहाँ संभव है वहाँ अश्वपालन—को संगठित करना, पशुपालन की जगहों में पशुओं की संख्या और उनकी नसल और उपज को बढ़ाना, एक गाय या छोटा पशु पाल कर ईमानदारी के साथ काम करनेवाले सहयोग के सदस्यों को सहायता करना, कोल्ख़ोज़् की पशुशाला के पशुओं के लिए ही नहीं; ब्लिक व्यक्तियों के अधीन भी जो पशु हैं, उनकी भी नसल सुधारने के लिए अच्छी जाति के साँड़ों का इस्तेमाल करना; पशु-शास्त्र और पशु-चिकित्सा संबंधी निश्चित नियमों का पालन करना;

(च) चारे की उपज को बढ़ाना, गोचर-भूमि और तृण-भूमि को उन्नत करना, सहयोग के जो सदस्य ईमानदारी के साथ समाजवादी कारबार में काम कर रहे हैं, उनकी सहायता करना, और कार्य-दिन के बदले में जहाँ संभव है, वहाँ कोल्ख़ोज़् की गोचर-भूमि को उन्हें चराने देना और जहाँ संभव है, वहाँ वैयक्तिक पशुओं के लिए उन्हें चारा देना;

(छ) स्थानीय प्राकृतिक अवस्था के अनुसार कृषि की उपज से सम्बन्ध रखनेवाले दूसरे व्यवसायों को विकसित करना, भिन्न भिन्न ज़िलों में मौजूद दस्तकारी को तरक़्क़ी देना, पुराने पोखरों को साफ़ करना और हिफ़ाज़त से रखना, तथा नये पोखरों को बनाना और मछली-पालन की उन्नति करना;

(ज) पंचायती तौर पर पशुशालाओं और सार्वजनिक गृहों के निर्माण के लिए इंतज़ाम करना;

(झ) सहयोग के सभासदों का व्यावसायिक ज्ञान बढ़ाना और कोल्-ख़ोज़ी किसानों को सहायता देकर उन्हें ब्रिगेडियर, ट्रैक्टर-ड्राइवर **कंबाइन-कमकर**, मोटर-ड्राइवर, पशुचिकित्सासहायक, अश्वपाल, **शूकरपाल**, पशुपाल, भेड़पाल, चरवाहा और प्रयोग-शालाकमकर बनने के लिए शिक्षित करना;

(ञ) सहयोग के सदस्यों के सांस्कृतिक धरातल को ऊँचा करना, उन्हें समाचार-पत्रों, पुस्तकों, रेडियो और सिनेमा से परिचित कराना, क्लबों, पुस्तकालयों और वाचनालयों की स्थापना करना, स्नानागारों और हज्जाम-दूकानों को स्थापित करना, खेत के केम्प को शुद्ध और रोशनी से युक्त बनाना, गाँव की सड़कों को अच्छी हालत में रखना तथा उनके किनारे नाना प्रकार के वृक्षों—विशेषतया फलदार वृक्षों—को लगाना और कोल्ख़ोज़ी किसानों को उनके घरों को सुधारने तथा सुंदर बनाने में सहायता करना;

(ट) स्त्रियों को कोल्ख़ोज़् के उत्पादन के काम तथा सामाजिक जीवन की ओर आकर्षित करने के लिए योग्य और अनुभवी कोल्ख़ोज़ी स्त्रियों को नेतृत्व के पद पर पहुँचाना; और जहाँ तक संभव है, वहाँ तक बच्चाख़ाना, किन्डरगार्टन तथा दूसरे उपायों द्वारा उन्हें घरेलू काम से मुक्त करना।

(५) सदस्यता

७—सहयोग में नये मेम्बर वे ही चुने जायेंगे, जिनको प्रबंध-कारिणी ने सहयोग की साधारण सभा में पेश कर मंजूरी ले ली है।

सभी जाँगर चलानेवाले नर-नारी—जो १६ वर्ष की अवस्था को पहुँच

गये हैं—सहयोग के सदस्य बन सकते हैं।

कुलक तथा जो लोग निर्वाचकता के अधिकार से वंचित हैं, वे सहयोग में शामिल नहीं किये जा सकते। इस नियम को निम्न प्रकार के व्यक्तियों के बारे में अपवाद समझा जा सकता है—

(क) निर्वाचकता के अधिकार से वंचित पुरुषों की ऐसी सन्तान, जो कि कितने ही साल से समाज के लिए उपयोगी काम में लगी हुई हैं, और समझकर काम करनेवाली हैं;

(ख) पहले के कुलक तथा सोवियत् और कोल्खोज् के विरुद्ध काम करने के लिए निर्वासित कर दिये गये परिवारों के आदमी, जिन्होंने अपने नये निवास-स्थान में ३ वर्ष से अधिक तक ईमानदारी से काम करके और सोवियत् सरकार की योजनाओं का समर्थन करके अपने को सुधारा है।

वे स्वतंत्र किसान जिन्होंने कि सहयोग में सम्मिलित होने से पूर्व दो साल के भीतर अपना घोड़ा बेच दिया है, और जिनके पास बीज नहीं है, वह तभी सहयोग में सम्मिलित किये जा सकते हैं, जब कि वे स्वीकार करें कि अपने अगले ६ वर्ष की कमाई में से घोड़े और बीज का दाम चुका देंगे।

८—सहयोग से कोई सदस्य तभी निकाला जा सकता है, जब कि ऐसा प्रस्ताव सहयोग के कम से कम $\frac{२}{३}$ सदस्योंवाली साधारण सभा में स्वीकृत हुआ हो। सहयोग के सदस्यों की साधारण सभा की कार्यवाही लिखते समय यह स्पष्ट लिखना होगा, कि कोल्खोज् के कितने सदस्य वहाँ उपस्थित थे, और कितनों ने निकाल बाहर करने के प्रस्ताव का समर्थन किया। सहयोग के सभासद् द्वारा ज़िला-सोवियत्-कार्यकारिणी-समिति के पास उक्त फ़ैसले की अपील करने पर उसका अंतिम फ़ैसला ज़िला-सोवियत्-कार्यकारिणी-समिति के विभागाध्यक्ष, सहयोग-प्रबंधकारिणी के अध्यक्ष की उपस्थिति में करेंगे।

(६) सहयोग का कोष

९—जो कोई सहयोग में शामिल होना चाहता है, उसे अपनी जोत के अनुसार प्रतिघर (परिवार) २० से ४० रूबल तक प्रवेश-शुल्क देना होगा। यह प्रवेश-शुल्क सहयोग के न बँटनेवाले कोष में जमा होगा।

१०—कोल्ख़ोज़् के सदस्यों की समाजीकृत (पंचायती) सम्पत्ति (जुताई के पशु, खेती के औज़ार, खेती के मकान आदि) के मूल्य का $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ तक सहयोग के न बँटनेवाले कोष में जमा होगा। अधिक जोत वालों से अधिक सैकड़ा मूल्य लेकर न बँटनेवाली पूँजी में शामिल किया जायगा। संपत्ति का बाकी बचा हिस्सा सदस्य के नाम सहयोग के शेयर (हिस्सेदारी) के रूप में शामिल किया जायेगा।

प्रबंध-समिति सहयोग छोड़नेवाले सदस्य का अन्तिम हिसाब तैयार करेगी, और उनके शेयर के नक़द दाम को लौटा देगी। छोड़नेवालों को अपने पहले के खेतों के बदले में सहयोग की भूमि की सीमा के बाहर जगह मिलेगी। आमतौर से हिसाब-किताब सरकारी वर्ष के अन्त में किया जायगा।

११—फ़सल की आमदनी और पशुशाला की उपज से जो कुछ मिलेगा, उसका उपयोग सहयोग निम्न प्रकार से करेगा—

(क) राज्य को दिये जानेवाले अनाज तथा बीज के क़र्ज़े को अदा करना, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन को उसके काम के लिए कानून के अनुसार लिखे हुए इक़रारनामे के मुताबिक़ पैसा देना, उधार ख़रीदे हुए माल की शर्तों को पूरा करना;

(ख) बोने के लिए बीज और पशुओं के लिए चारे का भाग साल भर पहले से अलग कर देना, और वार्षिक आवश्यकता के १० से १५ सैकड़े तक अधिक बीज और चारा आगे बुरी फ़सल या अपर्याप्त चारा होने के वक़्त काम में लाने के लिए साल साल नया सुरक्षित रखना।

(ग) साधारण सभा के निश्चयानुसार एक फ़ंड क़ायम करना, जो कि अंग-भंग हो गये सदस्यों, बूढ़ों, चन्द दिनों के लिए शरीर से अयोग्य, लाल सेना के आदमियों के कष्ट में पड़े हुए परिवारों की सहायता और बच्चा-ख़ाना, तथा किंडरगार्टन के चलाने में ख़र्च होगा। इस फ़ंड में सारे कोल्ख़ोज़् की आमदनी का दो सैकड़ा से ज़्यादा नहीं दिया जा सकता।

(घ) सहयोग के सदस्यों की साधारण सभा के निश्चयानुसार उपज का एक हिस्सा सरकार के हाथ या खुले बाज़ार में बेचने के लिए अलग रख देना।

(ङ) सहयोग की फ़सल तथा पशुशाला की उपज का बचा हिस्सा कार्य-दिन की संख्या के अनुसार सहयोग के सदस्यों में बाँट दिया जायगा।

१२—सहयोग को जो नक़द आमदनी होगी, उसे वह निम्न प्रकार से ख़र्च करेगा—

(क) क़ानून के अनुसार निश्चित पैसा राज्य को टैक्स के रूप में देना और बीमे की फ़ीस अदा करना;

(ख) उत्पादन के लिए चलते हुए काम की आवश्यकता—कृषि संबंधी औज़ारों की तात्कालिक मरम्मत, पशु-चिकित्सा संबंधी सेवा, हानिकारक घासों और कीड़ों को नष्ट करना आदि पर ज़रूरी ख़र्च करना;

(ग) सहयोग के प्रबंध और कार्य संबंधी ख़र्चों को चलाने के लिए सारी नक़द आमदनी के दो सैकड़े तक को अलग कर देना;

(घ) ब्रिगेडियर तथा दूसरे कार्यकर्त्ताओं की शिक्षा, बच्चाख़ाने का प्रबंध, रेडियो लगाने आदि सांस्कृतिक कामों के लिए फ़ंड का अलग कर देना;

(ङ) कृषि-संबंधी औज़ारों तथा पशुओं के ख़रीदने के लिए, मकान

बनाने के सामान, मकान बनाने के काम में बाहर से बुला कर लगाये गये कमकरों की तनख़्वाह देने और कृषि-बैंक को लंबी मुद्दत के क़र्ज़ के तात्कालिक देने को अदा करने के लिए सहयोग के न बँटनेवाले फ़ंड में पैसा रक्खेगा। यह पैसा सहयोग की नक़द आमदनी का १० सैकड़े से कम नहीं और २० सैकड़े से अधिक नहीं होगा।

(च) सहयोग की बाक़ी बची हुई सारी नक़द आमदनी सदस्यों में उनके कार्य-दिन के अनुसार बाँट दी जायगी।

आमदनी को पाने के दिन ही सहयोग की बही में लिख देना होगा।

सहयोग-प्रबंधक-समिति अपनी आमदनी और ख़र्च का एक वार्षिक तख़मीना तैयार करेगी; लेकिन उसके अनुसार तभी काम होगा, जब कि सहयोग के सदस्यों की एक साधारण सभा ने उसे स्वीकार कर लिया हो।

प्रबंधक-समिति तख़मीने में दी हुई मदों पर ही ख़र्च कर सकती है। प्रबंधक-समिति को अधिकार नहीं है कि वार्षिक तख़मीने की एक मद के पैसे को दूसरी मद में ख़र्च करे। एक मद से दूसरी मद में ख़र्च करने के लिए प्रबंधक-समिति को साधारण सभा से आज्ञा लेनी होगी।

सहयोग अपने नक़द रुपये को किसी बैंक या सेविंग बैंक के चलते-खाते में रखेगा। चलते-खाते से पैसा तभी निकाला जा सकता है, जब कि सहयोग की प्रबंधक समिति ने आज्ञा दी हो। आज्ञा उचित समझी जायगी यदि सहयोग के अध्यक्ष या कोषाध्यक्ष ने हस्ताक्षर कर दिया हो।

(७) संगठन, वेतन और श्रम के संबंध में

१३—सहयोग का सभी काम साधारण सभा में स्वीकृत अन्दरूनी नियम और क़ायदे के मुताबिक़ उसके मेम्बरों के निजी जाँगर से किया जायगा। बाहर से खेती का मज़दूर वही व्यक्ति रखा जायगा, जो विशेष ज्ञान और शिक्षा रखता है—जैसे कि कृषि विशेषज्ञ, इंजीनियर, मिस्त्री आदि।

ख़ास अवस्था में कुछ दिनों के लिए मज़दूरी पर किसी को तभी रखा जा सकता है, जब कि कोई ऐसा ज़रूरी काम हो, जिसे निश्चित समय के भीतर अपनी सारी शक्ति लगा कर भी सहयोग के सदस्यों की शक्ति नहीं कर सकती; या कोई मकान आदि निर्माण का काम हों।

१४——प्रबंध-समिति सहयोग के सदस्यों में से उत्पादन के काम के लिए अलग अलग ब्रिगेड नियुक्त करेगी।

खेत-ब्रिगेड, फ़सल की एक बारी से कम के लिए नहीं नियुक्त किया जायगा।

खेत-ब्रिगेड को फ़सल की बारी के समय के लिए फ़सल की बारी वाले खेत में से एक ख़ास हिस्सा मिलेगा।

कोल्ख़ोज़् की प्रबंध-कारिणी ख़ास परवाने के ज़रिए हर एक खेत-ब्रिगेड को सभी आवश्यक औज़ार, जुताई के जानवर और रहने के लिए मकान देगी।

पशुपालन-ब्रिगेड की नियुक्ति तीन साल से कम के लिए न होगी।

सहयोग की प्रबंध-कारिणी प्रत्येक पशुपालन-ब्रिगेड को पोसे-बढ़ाये जानेवाले जानवर, औज़ार, जुताई के जानवर और काम के लिए आवश्यक मशीनरी, तथा पशुओं के लिए ज़रूरी मकान देगी।

ब्रिगेडियर सहयोग के सदस्यों को काम बाँटेगा इसमें वह इस बात का ख़याल रखेगा कि हर एक सदस्य को उसकी सब से अधिक उपयोगिता के साथ इस्तेमाल किया जाय। वह किसी प्रकार का पक्षपात या भाईचारे का ख़याल न रखेगा। काम देने में वह हर एक कमकर के शारीरिक बल, अनुभव और दक्षता का पूरा ख़याल रखेगा। गर्भिणी या दूध-पिलानेवाली स्त्रियों को हल्का काम देगा। गर्भिणी स्त्रियों को बच्चा पैदा होने से १ मास पहले और पैदा होने के १ मास बाद काम से छुट्टी देगा; और इन दोनों महीनों के लिए आधे कार्य दिन के हिसाब से वेतन देगा।

१५——सहयोग में कृषि-संबंधी काम छोटे छोटे टुकड़ों में बाँट करके

किया जायगा।

सहयोग की प्रबंध-कारिणी कृषि-संबंधी काम के परिमाण का एक नाप तथा प्रति कार्यदिन के वेतन की दर तैयार करेगी; और कोल्खोज़् की साधारण सभा उसे स्वीकार करेगी।

काम के परिमाण का नाप निश्चय करते वक़्त हर एक प्रकार के कामों को देखना होगा कि एक जवाबदेही रखनेवाला कमकर उतने समय में कितना काम करता है। इसमें जुताई के जानवर, मशीन और खेत की मिट्टी का भी खयाल करना होगा। प्रत्येक क़िस्म का काम जैसे एक हेक्तर जोतना, एक हेक्तर बोना, एक हेक्तर कपास का रोपना, एक टन अनाज दाँवना, एक सेन्तनेर चुक़न्दर खोदना, एक हेक्तर सन निकालना, एक हेक्तर सन सींचना, एक लितर (लिटर=१·७५९८ पिंट=प्राय: १ सेर) दूध का दुहना आदि का मूल्य प्रति कार्यदिन में जोड़ते वक़्त यह ख़याल रखना होगा, कि उस काम के करने में कार्यकर्त्ता की चतुरता की कितनी आवश्यकता है; उसमें कितनी कठिनाई और दुरूहता है; और सहयोग के काम के लिए उसका महत्त्व कितना है। ब्रिगेडियर सहयोग के प्रत्येक मेम्बर को प्राय: (एक सप्ताह से कम पर नहीं) उसके सारे किये काम का परिमाण जोड़ेगा और निश्चित दर के अनुसार उक्त कोल्खोज़ी के किये हुए कार्य-दिनों की संख्या को श्रम-वही में दर्ज करेगा।

प्रति-मास प्रबंध-कारिणी सहयोग के सदस्यों की नाम-सूची उनके पिछले मास के किये हुए, कार्य-दिनों की संख्या के साथ टाँग देगी। प्रत्येक कोल्खोज़ी के वार्षिक काम और आमदनी के जोड़ को ब्रिगेडियर, सहयोग के अध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष को जाँचना होगा। सहयोग के प्रत्येक सदस्य ने जितने कार्य-दिन काम किये, उसकी सूची सर्व साधारण की जानकारी के लिए टाँग दी जायगी; और सहयोग की आय के बँटवारे के हिसाब को स्वीकार करने के लिए जिस दिन साधारण-सभा होगी, उस दिन से कम से कम दो सप्ताह पहले उक्त सूची टँग जानी चाहिए।

अगर एक खेत-ब्रिगेड अपने अच्छे काम के कारण अपने हिस्से के खेत में से कोल्ख़ोज़ की औसत फ़सल से अच्छी फ़सल पैदा करे, या अपने अच्छे काम के कारण पशुपालन-ब्रिगेड गौवों से अधिक दूध पैदा करे, पशुओं को ज़्यादा मोटा करे, और बछड़ों को न गँवावे; तो सहयोग की प्रबंध-कारिणी ब्रिगेड के सदस्यों को पारितोषिक देगी, जो कि उस ब्रिगेड के किये हुए तमाम कार्य-दिनों की संख्या का १० सैकड़ा तक होगा और ब्रिगेड के श्रेष्ठ उदर्निकों (तूफ़ानी कमकरों) को १५ सैकड़ा तक एवं ब्रिगेडियर तथा पशुशाला के प्रबंधक को २० सैकड़ा तक पारितोषिक मिलेगा।

यदि काम की ख़राबी के कारण खेत-ब्रिगेड अपने हिस्से के खेत से कोल्ख़ोज़् की औसत फ़सल से कम फ़सल पैदा करे, या अपने बुरे काम के कारण पशुपालन-ब्रिगेड गौवों से औसत से कम दूध पैदा करे, पशुओं की मुटाई को औसत से कम करे, और बछड़ों को औसत संख्या से अधिक गँवाए; तो सहयोग की प्रबंध-कारिणी उक्त ब्रिगेड के सब सदस्यों की आय में से १० सैकड़ा काट लेगी।

सहयोग की आमदनी को सदस्यों में बाँटते वक़्त हर एक सदस्य के किए हुए कार्यदिन की संख्या मात्र का ख़याल रखा जायगा।

१६—साल के भीतर किसी सदस्य को अगवड़ नक़द दिया जा सकता है; लेकिन वह रक़म उसके अपने काम से मिलनेवाली रक़म से आधी से अधिक नहीं होनी चाहिए।

अनाज-दँवाई के आरंभ के समय से सदस्यों को अगवड़ दी जा सकती है; लेकिन वह कोल्ख़ोज़् की भीतरी आवश्यकता के लिए दाँ कर अलग रखे हुए अनाज का १० से १५ सैकड़ा होना चाहिए। जिन सहयोगों में औद्योगिक फ़सल (कपास आदि) बोई जाती है, उनके सदस्यों को राज्य के लिए दी जानेवाली कपास, सन, पटसन, चुक़ंदर, चाय, तंबाकू इत्यादि को अदा किये बिना भी नक़द आमदनी बाँटी जा सकती है; लेकिन इस बाँटने में यह ध्यान रखना होगा कि वह जिस परिमाण में माल अदा किया

गया है, उसके अनुसार हो; प्रति सप्ताह एक बार से अधिक नहीं तथा अदा किये हुए माल के रूप में मिले पैसे के ६० सैकड़े तक ही हों।

१७––सहयोग के सभी सदस्य इस बात के लिए परस्पर प्रतिज्ञा-बद्ध होंगे कि वह कोल्ख़ोज़् की सम्पत्ति और कोल्ख़ोज़् की भूमि पर काम करने वाली सरकारी मशीन को बहुत सावधानी से रखेंगे, ईमानदारी से काम करेंगे, कोल्ख़ोज़ी क़ानून, साधारण-सभा के प्रस्ताव और प्रबंध-कारिणी के आदेशों के अनुसार चलेंगे; सहयोग के आंतरिक नियमों और उपनियमों का पालन करेंगे; प्रबंध-कारिणी और **ब्रिगेडियर** ने जो काम उनके जिम्मे लगाया है, उसको अक्षर अक्षर पूरा करेंगे; अपने सामाजिक कर्तव्य का पालन करेंगे; और श्रम-संबंधी विनय का ख़याल रखेंगे।

यदि कोई व्यक्ति सार्वजनिक सम्पत्ति को बेपरवाई या असावधानी से इस्तेमाल करेगा, बिना उचित कारण के काम से ग़ैरहाज़िर होगा, थोड़ा काम करेगा, या श्रम-संबंधी विनयों और नियमों की अवहेलना करेगा, तो प्रबंध-कारिणी ऐसे व्यक्ति को आन्तरिक नियम-उपनियमों के अनुसार दंड देगी; जो इस प्रकार होगा––जिस काम को बुरी तौर से किया, उसे बिना वेतन पाये फिर से करना होगा; साधारण सभा में उन्हें निन्दित, लज्जित या सतर्कित किया जायगा; उनका नाम काले बोर्ड पर लिख कर टाँगा जायगा; ५ कार्यदिन तक की आमदनी तक का जुर्माना किया जायगा; काम के पद से नीचे उतार दिया जायगा; कुछ समय के लिए काम से अलग कर दिया जायगा।

अगर सभी शिक्षा देने की तदबीरें और दंड बेकार साबित हुए, और सहयोग का सदस्य अपने को न सुधरनेवाला साबित करे; तो प्रबंध-कारिणी समिति उक्त सदस्य को सहयोग से बाहर करने के लिए साधारण-सभा में प्रस्ताव पास करायेगी। यह वहिःनिष्कासन कृषि-संबंधी सहयोग के आदर्श नियम धारा ८ के अनुसार होगा।

१८––सार्वजनिक कोल्ख़ोज़ी या राजकीय सम्पत्ति को हानि पहुँचाना

सहयोग की सम्पत्ति और पशुओं को तथा मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन की मशीनों को जानबूझ कर नुक़सान पहुँचाना—इन्हें कोल्ख़ोज़् के सामूहिक हित के प्रति द्रोह और जनता के शत्रुओं का पक्ष लेना समझा जायगा।

जो व्यक्ति कोल्ख़ोज़्-प्रथा की जड़ को इस प्रकार बुरी नीयत से खोदने के अपराध के अपराधी पाये जायँगे, सहयोग उन व्यक्तियों को मज़दूर-किसान-राज्य के क़ानून के अनुसार पूर्णतया कठोर दंड देने के लिए न्यायालय में भेजेगा।

(८) सहयोग का साधारण प्रबन्ध

१९—सहयोग के साधारण प्रबन्ध का काम सहयोग के सदस्यों की साधारण-सभा में होगा। बीच के समय में काम चलाने के लिए साधारण-सभा एक प्रबंध-कारिणी-समिति निर्वाचित करेगी।

२०—साधारण-सभा सहयोग के प्रबंध के लिए सर्वोपरि संस्था है। साधारण-सभा में निम्न काम होंगे—

(क) सहयोग के अध्यक्ष प्रबंध-कारिणी-समिति और आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का निर्वाचन, आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का विर्वाचन तबतक जायज़ नहीं समझा जायगा, जबतक कि ज़िला-सोवियत्-कार्य-कारिणी-समिति ने उसे मंजूर न कर लिया हो;

(ख) सहयोग में नये सदस्यों का लेना और पुराने सदस्यों को निकालना;

(ग) वार्षिक उपज की योजना, आय-व्यय का तख़मीना, नई इमारत बनाने की योजना, हर एक कार्यदिन के काम का मान और वेतन की दर निश्चित करना;

(घ) मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के साथ के इक़रारनामे को स्वीकार करना;

(ङ) प्रबंध-कारिणी की वार्षिक रिपोर्ट को स्वीकार करना। इस रिपोर्ट में निरीक्षक-समिति की राय तथा कृषि-संबंधी महत्त्व-पूर्ण कार्रवाइयों पर प्रबंध-कारिणी का विवेचन भी शामिल रहना चाहिए;

(च) हर प्रकार के फ़ंडों तथा नक़द और अनाज के रूप में प्रति कार्य-दिन के लिए दिये जानेवाले वेतन के परिमाणों को तय करना।

(छ) सहयोग के आन्तरिक नियमों-उपनियमों को स्वीकार करना।

ऊपर लिखी हुई उपधाराओं की जो बातें गिनाई गई हैं, उनके बारे में प्रबंध-कारिणी का निश्चय तब तक जायज़ नहीं समझा जायगा, जब तक कि सहयोग की साधारण-सभा ने उसे मंजूर नहीं कर लिया हो।

कुछ बातों के अपवाद के साथ सभी प्रश्नों के निर्णय के लिए सहयोग के आधे सभासदों की उपस्थिति साधारण सभा के लिए 'कोरम' है। अप-वाद की बातें ये हैं—

सहयोग की प्रबंध-कारिणी और अध्यक्ष का चुनाव, सहयोग की सद-स्यता से किसी को बाहर निकालना और भिन्न भिन्न प्रकार के फ़ंडों के परिमाण का निश्चय करना; इन प्रश्नों के निर्णय के लिए 'कोरम' २/३ है।

साधारण-सभा का निर्णय बहुमत से और खुले वोट द्वारा संपादित होगा।

२१—सहयोग के साधारण प्रबंध के लिए सहयोग की साधारण सभा अपने परिमाण के अनुसार ५ से ९ व्यक्तियों की एक प्रबंध-कारिणी समिति २ वर्ष के लिए चुनेगी।

सहयोग की प्रबंध-कारिणी समिति सहयोग के काम और उसके राज्य के प्रति ज़िम्मेवारियों को पूरा करने के लिए सहयोग के मेम्बरों की साधारण सभा के सामने जवाबदेह है।

२२—सहयोग की साधारण-सभा सहयोग और उसके ब्रिगेडों के काम के प्रतिदिन के पथ-प्रदर्शन तथा प्रबंध-कारिणी के निश्चयों के पूरा

करने के वास्ते दैनिक निरीक्षण का काम करने के लिए सहयोग की सहयोग के लिये एक अध्यक्ष चुनेगी। वही प्रबंध-कारिणी-समिति का भी अध्यक्ष होगा।

अध्यक्ष को लाज़िम है कि वह तात्कालिक बातों के विचार और आवश्यक निर्णय के लिए प्रतिमास कम से कम दो बार प्रबंध-कारिणी की बैठक बुलावे।

अध्यक्ष की सिफ़ारिश पर प्रबंध-कारिणी अपने सभासदों में से एक को उपाध्यक्ष चुनेगी।

उपाध्यक्ष को चेयरमैंन की बात हर काम में माननी होगी।

२३—ब्रिगेडियरों और पशुशाला-प्रबंधकों को प्रबंध-कारिणी कम से कम २ साल के लिए नियुक्त करेगी।

२४—सम्पत्ति और आय-व्यय का हिसाब रखने के लिए प्रबंध-कारिणी सहयोग के मेम्बरों में से या बाहर से एक वैतनिक 'मुनीम' रखेगी। मुनीम को सर्वमान्य तरीक़े के अनुसार हिसाब-किताब रखना होगा; और उसे प्रबंध-कारिणी समिति तथा अध्यक्ष के पूर्णतया आधीन रहना होगा।

मुनीम को अधिकार नहीं है कि अपने नाम से सहयोग के फ़ंड को ख़र्च करे या अगवड़ दे या जिन्स के रूप में प्रदान करे। यह अधिकार सहयोग की प्रबंध-कारिणी और अध्यक्ष को ही है। सहयोग के पैसे के सभी ख़र्च के काग़ज़ों को मुनीम और अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के हस्ताक्षर से जायज़ समझा जायगा।

२५—आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का कर्तव्य है कि वह प्रबंध-कारिणी की आर्थिक और पैसे से संबंध रखनेवाली कार्रवाइयों का निरीक्षण करे और देखे कि नक़द या जिन्स अनाज के रूप में आई आमदनी ठीक तौर से काग़ज़ में दर्ज हुई है या नहीं। वह यह भी देखे कि फ़ंड के ख़र्च में नियमों का पालन हो रहा है या नहीं, और सहयोग की सम्पत्ति अच्छी हालत में रखी जाती है या नहीं। सहयोग की संपत्ति और नक़द फ़ंड में चोरी

या धोखा तो नहीं किया जा रहा है। सहयोग राज्य के प्रति अपने दायित्व को कैसे पूरा कर रहा है। अपने क़र्ज़ों को अदा करने तथा अपने कर्ज़दारों से कर्ज़ वसूल करने में वह कैसे काम कर रहा है।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का यह भी कर्तव्य है कि वह सावधानता-पूर्वक सहयोग के अपने सदस्यों के साथ वाले हिसाब को देखे। यदि कोई धोखाबाज़ी हो, कार्यदिनों की गिन्ती में ग़लती हो, कार्यदिनों के वेतन को समय पर न दिया गया हो, और इसी तरह के और भी सहयोग और उसके सदस्यों के हित के ख़िलाफ़ होनेवाले जो काम हों उनको प्रकट कर दे।

आय-व्यय-निरीक्षक-समिति प्रतिवर्ष चार बार निरीक्षण करेगी। जब प्रबंध-कारिणी अपनी वार्षिक रिपोर्ट साधारण-सभा के सामने पेश करेगी उसी समय आय-व्यय-निरीक्षण-समिति भी अपने निरीक्षण-परिणाम को रखेगी। इसे साधारण-सभा प्रबंध-कारिणी की रिपोर्ट के सुनने के बाद ही सुनेगी। साधारण सभा आय-व्यय-निरीक्षण की रिपोर्ट को स्वीकार करेगी।

अपने कार्य में आय-व्यय-निरीक्षण-समिति सहयोग के मेम्बरों की साधारण सभा के अधीन होगी।

पिछले साल काम की मात्रा और बढ़ी है; और कुछ सोव्ख़ोज़ों में तो प्रति-कंवाइन ८७५ से १००० एकड़ काम हुआ है। इसके कारण जहाँ एक तरफ़ जल्दी खलिहान का काम ख़तम हुआ, वहाँ दूसरी तरफ़ कमकरों के घंटे की कमी के कारण उपज पर ख़र्च भी कम हुआ है।

१९३३ में सिम्फेरोपोल-सोव्ख़ोज् को अपने काम के लिए १०० कंवा-इन ३६ दिन तक चलानी पड़ी; १९३७ में उससे भी अधिक फ़सल के लिए ४२ कंबाइनों को सिर्फ़ १९ दिन काम करना पड़ा।

इस सोव्ख़ोज् में १९३३ में २२१ ट्रैक्टर काम करते थे; लेकिन १९३७ में उतनी जुताई सिर्फ़ ३१ ट्रैक्टर करने में समर्थ हुए। **क्रिबोइ-**सोव्ख़ोज् ने १९३६ में २२ कंबाइनों को २९ दिन तक चलाया था। १९३७ में उसे १० कंबाइनें १७ दिनों तक चलानी पड़ीं।

मशीनों में इस दक्षता के कारण हर एक कमकर का श्रम अधिक अनाज पैदा करने में समर्थ हुआ है। उदाहरणार्थ—कूवन्-सोव्ख़ोज् में प्रति कमकर १९३४ में ११·७ टन अनाज पैदा हुआ था; लेकिन १९३७ में वह ११६·७ टन हो गया। साल्स्क-सोव्ख़ोज् में भी इसी तरह १९३४ से १९३७ में १३·३ टन से १३३ टन हो गया।

१९३७ की फ़सल जैसी उत्तम हुई, वैसी ही पशुशालाओं की उपज भी बढ़ी। १९३३ की अपेक्षा १९३७ में पशुशालाओं ने दूना अधिक मांस दिया। प्रति गाय ४९·१ किलोग्राम (प्रायः १ मन ९ सेर) आमदनी हुई। १९३३ में २४ किलोग्राम ही हुई थी। इसी समय सुअर के मांस में पाँच गुने की वृद्धि हुई।

१९३८ में सोव्ख़ोज़ों ने उपज का नया प्रोग्राम रखा है; जिसमें वह पिछले साल से भी अधिक पैदा करना चाहते हैं। सोव्ख़ोज् के ३७० व्यक्तियों को अच्छे काम के लिए पदक मिले हैं। कंवाइन के २०० संचालकों और हज़ारों दूसरे कमकरों को भी सरकार ने सम्मानित किया है। हाल में सोव्ख़ोज़ों के ३६० कमकर प्रबंधक, सहायक-प्रवंधक, तथा दूसरे ऊँचे

पदों पर नियुक्त किये गये हैं; और वे अपने काम को बड़े उत्साह से कर रहे हैं।

****　　　****

ज़िम्मेवल्डि-सोव्ख़ोज़्—एक अमेरिकन यात्री ने—जो १९३५ में इस सोव्ख़ोज़् में गया था—इस प्रकार उसका वर्णन किया है—

जब मैं सोव्ख़ोज़् में घुस रहा था, तो मालूम होता था, मैं गाँव में नहीं, किसी शहर में जा रहा हूँ। सड़क के दोनों ओर आध मील तक वृक्ष लगे हुए हैं, जो उस वक़्त फूल रहे थे। एक वर्गमील का बग़ीचा, जिसमें चौड़ी रविश चारों ओर फैली हुई ज्यामिति की शक्लें, तारे, आदि बना रही थीं। इनके किनारे छँटी हुई हरियाली की ८–९ फ़ीट ऊँची टट्टी लगी हुई थी।

घास के हरे मैदानों पर कुछ खेलाड़ी फ़ुटबाल का अभ्यास कर रहे थे; कुछ टेनिस और वोलीबाल का। कहीं खुली हवा में कसरत का अखाड़ा था, कहीं खुली हवा में थियेटर। बैंड बजने की जगहें थीं और सिनेमा-घर भी। इन क्रीड़ा-क्षेत्रों में कहीं पर वयस्क स्त्री-पुरुष और कहीं पर बच्चे अनेकों प्रकार के खेल खेल रहे थे। तरुण जोड़ियाँ कहीं फ़ुटपाथ पर चल रही थीं, कहीं बेंचों पर बैठी थीं। लड़कियाँ अपने भड़कीले कपड़े में और युवक फलालैन की क़मीज़ों में थे। कहीं वे खुली जगह में गाँव की मंडली द्वारा खेले जानेवाले नाटक या संगीत के प्रदर्शन के लिए कुर्सियों पर बैठे थे। फ़ौवारों के नीचे तैरते हंसों के सामने बच्चे रोटी का टुकड़ा फेंक रहे थे।

यह वर्णन किसी शहर का नहीं है, न किसी राजा के क्रीड़ा-प्रासाद का है। यह एक गड़रियों का गाँव है। जितने लोग यहाँ हैं, सभी कमकर या उनके परिवार के आदमी हैं। हाँ, सच है, इस बग़ीचे को सोवियत् ने नहीं बनाया। इसे रूस के एक बड़े ज़मींदार-राजा ने बनाया था। राजा साहब स्विट्ज़रलैंड में हवा खाने गये थे। वहाँ एक सुन्दरी के प्रेम में फँस गये। विवाह का प्रस्ताव आने पर सुन्दरी ने कहा कि मैं तभी ब्याह करने

के लिए तैयार हूँ; जब कि मुझे मेरे बाप के महल और बाग़ के जैसा महल और बाग़ मिले। राजा साहब रूस लौट आये और यहाँ अपने असामियों को—जो पहले ही से पिसे जा रहे थे—और कोड़े लगाकर उन्हें यह स्वर्ग बनाने के लिए मजबूर किया।

लेकिन इस स्वर्ग को जिसने गड़ेरियों को दिया, वह सोवियत्-शासन ही था।

इन गड़ेरियों की शकल और स्वास्थ्य देखने से ही मालूम होता है, कि ये भोजन-छाज़न से आसूदा हैं। उनकी भोजनशाला में चले जाइए, वह गमलों में हरे हरे वृक्ष लगाकर सजाई हुई है। एक कोने में संगीत-वेदी है; जिस पर गायक और वादक खाने के वक़्त लोगों का मनोरंजन करते हैं।

कोई कोई कमकर अपने घर में खाते हैं। परिवार के छोटे वड़े होने के अनुसार हर एक को दो या तीन कमरे मिलते हैं। इसके अतिरिक्त हर एक कमकर को पिछवाड़े तरकारी का बग़ीचा मिला है; और गाय और सुअर रखने के लिए जगह भी। इसके लिए उन्हें मालगुज़ारी नहीं देनी पड़ती। सोव्ख़ोज़् साल में दो बार इन तरकारी के बग़ीचों को जोत देता है; और बीज तथा चारा दे देता है।

केन्द्र पर जो लोग रहते हैं, उनकी यह हालत है। लेकिन भेड़ चराने वाले—जिनके ज़िम्मे भेड़ का गल्ला है—चरागाह के पास बने हुए घरों में रहते हैं। घरों में उनके फ़र्क़ इतना ही है कि केन्द्रीय जगहों में रहनेवालों के मकान दो-दो तल्ले के हैं, यहाँ एक तल्ले छोटे।

सोव्ख़ोज़् में १३०० कमकरों के परिवार के सभी व्यक्तियों को मिलाने पर उनकी तादाद ४००० से ऊपर होगी। सोव्ख़ोज़् में अपना डाकख़ाना और तारघर है। दवाई की दूकान, विक्रय-भंडार, मिठाई बिस्कुट आदि का भंडार, धोबीख़ाना और स्नानागार हैं। यहाँ पाताल-फोड़ (आर्टिज़न) कुएँ हैं; जिनसे स्वच्छ स्वास्थ्य-वर्द्धक पानी मिलता है। अपना

अस्पताल है; जिसमें अनेक डाक्टर और नरसें हैं। छोटे बच्चों के लिए बच्चाखाना है। बड़े बच्चों के लिए स्कूल, वाचनालय, स्वाध्याय-केन्द्र आदि के साथ एक क्लब है। सोव्ख़ोज़् खुद अपना समाचार-पत्र छापता है। पत्र में सोव्ख़ोज़् की ख़बरें तथा रेडियो और तार द्वारा आनेवाली देशी विदेशी ख़बरें छपती हैं। यह पत्र सोव्ख़ोज़् के ही प्रेस में छपता है। डाक्टर की राय पर कमकरों के रहने के लिए अलग विश्राम-गृह बने हैं।

सोव्ख़ोज़् के चौक पर रेडियो के लाउड-स्पीकर लगे हुए हैं। वहीं प्रबंध-समिति-भवन के सामने लेनिन् की एक बड़ी मूर्ति स्थापित है। उत्सव के दिनों पर यहाँ प्रदर्शन होते हैं।

ज़िम्मेरवाल्ड में ट्राम को छोड़कर शहर की सभी सुविधायें मौजूद हैं। इसकी ६०,००० एकड़ की चरागाहों पर ५०,००० भेड़ें चरती हैं। पिछले साल १,२०,००० रूबल आमदनी का तख़मीना था, लेकिन आमदनी हुई ४,७६,००० रूबल।

*** ***

पशुपालन में विज्ञान

दक्षिण **उक्रइन्** में अस्कानिया-नोवा आज सोवियत् की एक प्रसिद्ध जगह है; और नाना प्रकार के पशुओं की जाति को उन्नत करने के लिए बड़े ऊँचे पैमाने पर दोग़ली नसल करने का काम हो रहा है। लाल-क्रान्ति के पहले यहाँ एक छोटे ज़मींदार की ज़मीन थी। सोवियत् ने यहाँ पर पशु-संकर-करण ऋतु-सह्य-करण-प्रतिष्ठान के नाम से एक संस्था स्थापित की है। आज इसके पास एक लाख एकड़ ज़मीन है। भिन्न भिन्न जातियों के २० हज़ार पशु हैं। बड़ी बड़ी प्रयोग-शालाएँ हैं। कई चोटी के वैज्ञानिक अन्य वैज्ञानिकों की एक बड़ी पलटन के साथ नये नये तज़र्बे कर रहे हैं; और उनसे अपने देश को लाभान्वित कर रहे हैं। ठंडे मुल्कों के जानवरों को गर्म मुल्कों में जीना मुश्किल होता है, उसी तरह गर्म मुल्कों के

जानवरों का जीना ठंडे मुल्कों में मुश्किल होता है। बहुत से जानवर गर्म मुल्कों से ठंडी जगहों पर पहुँचे हैं। जैसे हिमालय में पाँच-पाँच हज़ार फ़ीट की ऊँचाई तक भैंसें पहुँची हुई हैं। लेकिन ऐसे ऋतु-सह्य-करण को शताब्दियों में पूरा किया गया है। विज्ञान ने जैसे और क्षेत्रों में प्रकृति की धीमी गति को तेज़ करने में सफलता पाई है, उसी तरह इस क्षेत्र में भी वह सफल हो रहा है। ऋतु-सह्य करण का काम जो वैज्ञानिक ढंग से यहाँ हो रहा है, उसका प्रयोग १०—२० जानवरों पर नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर हो रहा है। दुनिया के नाना देशों के नाना प्रकार के जन्तु अस्कानियां-नोवा में रहते हैं। अरबी ज़ेबू तथा ग्नू (जंगली भेड़ा), कनाड़ा का **बिसेन** तथा दूसरे बहुत से जानवर स०स०स०र० के इस दक्षिणी भाग के ऋतु को सहन करने लगे हैं। यहाँ पर पेर्ज़ेवाल्स्क घोड़ों और चाप्मान् जेब्रों का बड़ा झुंड है। प्रायः सभी जानवर खुली जगह में घूमते हैं। सिर्फ़ उनके रहने के मैदानों को कँटीले तारों की बाढ़ से अलग कर दिया गया है। जाड़ों में उनके लिए गर्म जगह बनी हुई है।

अस्कानिया-नोवा में बहुत बड़ी तादाद में चिड़ियाँ भी रखी गई हैं। अफ़्रीका के गर्म जगह का रहनेवाला शुतुरमुर्ग़ यहाँ ख़ूब स्वस्थ रहता है। शुतुरमुर्ग़ों के सन्तति-प्रसव में प्राकृतिक ढंग तथा यंत्र की मदद—दोनों तरह से अंडे को सेवाया जाता है। आजकल अस्कानिया-नोवा के प्रयोगों ने घरू पशुओं की अच्छी नसल पैदा कर सोवियत् पशु-पालन को बहुत मदद दी है।

सुअर—मृत **अकदमिक म० फ० इवानोफ़** के संरक्षण में एक नई नसल सुअर की तैयार हुई है; जिसे उक्रइनी सफ़ेद पथरीली भू का सुअर कहते हैं। यह उक्रइन् के सफ़ेद मैदानी सुअर और बड़ी जाति के सफ़ेद अंग्रेज़ी सुअर के मेल से पैदा किया गया है। नई नसल में जहाँ उक्रइन् के सुअर की ऋतु-सहनशीलता आ गई है, वहाँ अंग्रेज़ी सुअर की भाँति वह अधिक बच्चे पैदा करता है। आजकल यहाँ हज़ारों उक्रइनी श्वेत पथरीली-भू-शूकर और लाखों उसके द्वारा संकर तैयार हुए हैं।

इस नई जाति के शूकर के तजर्वे ने वतलाया है कि जहाँ यह मांस और चर्वी के गुण तथा परिमाण में उक्त अंग्रेज़ी सुअर का मुक़ावला करता है, वहाँ सर्द आवहवा और अपनी प्राकृतिक परिस्थिति को अच्छी तरह सहन कर सकता है। पहला परिणाम इस नई नसल और साधारण सुअर के संकर से निम्न प्रकार मिला है। औसतन् एक सुअरी से एक वार १० वच्चे मिले हैं; और दो महीने के वाद हर एक वच्चे १४ से १५ किलोग्राम (१४–१५ सेर) के हो गये। इसके मुक़ावले में मामूली सुअरी के औसत ६–७ वच्चे हैं, और वच्चे वहुत छोटे होते हैं। वहुत वड़े हो जाने पर भी उनका वज़न १६ किलोग्राम से ज़्यादा नहीं होता, जव कि इस नई नस्ल का सुअर २०० किलोग्राम और उससे भी भारी होता है।

अकदमिक इवानोफ़् ने अस्कानिया-नोवा में रामवूलियेर नाम की एक नई भेड़ की नस्ल पैदा की है। इसमें संकर-करण और ऋतु-सह्यकरण दोनों का प्रयोग हुआ है। इस नई नस्ल का ऊन वहुत मुलायम होता है; और इससे अच्छी क़िस्म के ऊनी कपड़े वनते हैं। यह भेड़ों की नस्ल अच्छी ऊनवाली भेड़ों के सुधारने में वहुत काम करेगी। प्रतिष्ठान तथा दूसरे कोल्ख़ोज़ों में लाखों तक इसकी संख्या पहुँच गई है। सन्तति पैदा करने की संख्या इस प्रकार है—१०० भेड़ों से १४० वच्चे मिले। १ भेड़ से १३ किलोग्राम (१३ सेर) ऊन साल में मिला। साधारण भेड़ से सिर्फ़ ३ किलोग्राम मिलता है। कोल्ख़ोज़ों में इन भेड़ों की वड़ी माँग है और वैज्ञानिक तथा कोल्ख़ोज़् दोनों इस जाति की भेड़ों की संख्या वढ़ाने में लगे हुये हैं।

पहाड़ी मेरिनो एक दूसरी भेड़ की नस्ल अस्कानिया-नोवा में पैदा की गई है जो पहाड़ी वन सकती है। यह नस्ल वड़े महत्त्व की है। मेरिनो भेड़ पहाड़ी चरागाह के अयोग्य होती है। मेरिनो का ऊन वड़ा नरम होता है; लेकिन सोवियत् के हज़ारों मील के पहाड़ी चरागाहों में वह रह नहीं सकती। जंगली मूफ़लोन भेड़ें और मेरिनो के संकर से यह नस्ल पैदा की गई है। इस

संकर नस्ल का तजर्बा करने से मालूम हुआ है कि स्थानीय भेड़ों से यह ज़्यादा लाभदायक हैं। एक भेड़ साल में ६ किलोग्राम ऊन देती है, जो कि साधारण भेड़ से दूना है; और वज़न ७० किलोग्राम (७० सेर) तक जाता है।

ईरानी भेड़ का ऊन बहुत अच्छा होता है, लेकिन उसका प्रसव कम होता है। अस्कानिया-नोवा में रोमन भेड़ी और ईरानी भेड़ों से संयोग करा, एक नई नस्ल पैदा की गई है। पहले तजर्बे से देखा गया कि १०० भेड़ों ने १६० बच्चे दिये। यह उपज बहुत ज़्यादा है। उतनी संख्या की भेड़ों से ऊन भी दूना मिलता है।

बड़े सींगवाले जानवरों की भी संकर नस्ल की जा रही है। जर्मन नस्ल की लाल-गायें हिन्दुस्तानी और अरबी गायों से वैसे ही ढंग से तैयार
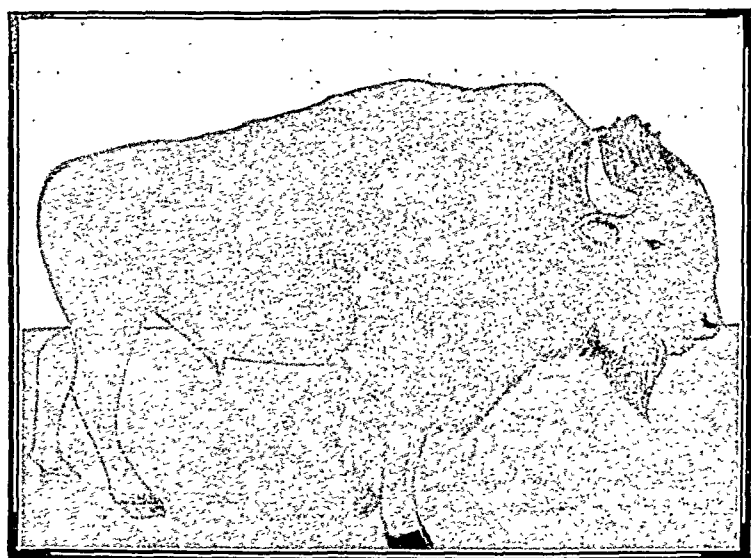
दोगला बिसन (अस्कनिया-नोवा)

की गई हैं; जैसे कि दक्षिणी एशिया और अफ़्रीका के कुछ हिस्सों की। अरबी गाय (ज़ेबू) बहुत कम दूध देती है; लेकिन उस दूध में घी ज़्यादा

होता है। मामूली गाय के दूध से ड्योढ़ा घी होता है। नई नस्ल जहाँ जर्मन गाय के अधिक दूध देने का स्वभाव रखती है, वहाँ ज़ेबू के घी अधिक होने के गुण को भी क़ायम रखती है। इसका फ़ायदा गोपालन के कार्य में कितना है, इसके कहने की आवश्यकता नहीं।

उक्रइन् की पहाड़ी गाय को **विसेन्** से संकर किया गया है; और परिणाम यह हुआ है कि नई नस्ल का मांस परिमाण और स्वाद दोनों में अधिक है।

दूध देनेवाली गाय को तिब्बती याक (चमरी) से संकर कराया गया है। याक सोवियत् में मंगोलिया, **किर्गिज़िया** और दूसरे प्रदेशों में मिलती है। इसके दूध में घी बहुत ज़्यादा होता है। जहाँ लाल जर्मन गाय के दूध में ३ से ४ सैकड़ा घी होता है; वहाँ इसमें ७ और ८ सैकड़ा। नई नस्ल जहाँ जर्मन गायों की तरह दूध अधिक देती है, वहाँ याक की तरह उसमें घी ज़्यादा है।

२८—पुराना और नया गाँव

एक सोवियत् लेखक ने इसका बड़ा अच्छा चित्रण किया है—

जब पहाड़ों की आड़ में सूरज छिप जाता है, तो काकेशस के गाँव जयूकोवो के बूढ़े कोल्खोज़् के पंचायत-भवन के बाहर जमा हो जाते हैं। इस गोधूलि की शान्ति में पेड़ के नीचे की उस घास पर बैठकर भिन्न भिन्न विषयों पर गप करना—उनके लिए एक नियम सा बन गया है।

उनके वार्तालाप का अधिक भाग भूत—पुराने जीवन की शुष्कता और अंधकार—के विषय में होता है। लेकिन कुछ ही देर बाद नवयुग के नये मनुष्य की ओर उनका ध्यान खिंच जाता है। अपने बारे में उनकी राय होती है। कैसा वह नीरस और अँधियारा जीवन था, जिसमें सुख और सन्तोष की एक भी चिनगारी कहीं दीख नहीं पड़ती थी। यह वह जीवन था, जिसे हमने बिताया और आज इस पेड़ के नीचे मालूम होता है, जैसे वृद्धि ने ख़ुद आकर अपनी कचहरी लगाई हो।

बूढ़े अपने बुढ़ापे के लिए उतना अफ़सोस नहीं करते, क्योंकि शरीर के लिए वह अवश्यंभावी है। हाँ, इसके लिए उन्हें दुःख ज़रूर होता है, कि उनके सारे वर्ष बेकार गये।

जिस वक़्त इस प्रकार वह बातचीत में मग्न रहते, उसी वक़्त गाँव की तरुण-तरुणियाँ आस-पास से गुज़रतीं। उनमें कोई कोई सुनने के लिए उनके पास आ बैठते। बूढ़े कह उठते—"पुराना जीवन हमें चुप रहने के लिए मजबूर करता है। हम अकेलेपन के कारण गूँगे बन गये थे। बुढ़ापे का ख़याल हमारे लिए ढाल था। लेकिन नये जीवन ने हमारी वाणी और श्रवण शक्ति को फिर लौटा दिया।"

ऐसे समय में कोई गाँव की गप आ पड़ती थी; और वार्तालाप आगे

बढ़ता। वे मानवता के गुण बखानने लगते। हमारे सोवियत्-संघ के इस स्वतंत्र और सुखमय जीवन का किसने निर्माण किया? स्वतंत्र साम्यवादी मनुष्य के हाथों ने।

फिर बहस छिड़ती है, साम्यवादी मनुष्य को कैसा होना चाहिए?

७७ वर्ष के बूढ़े **अवाजोफ़् याक़ूब** बोल उठे—"होना चाहिए **स्तालिन्** की तरह, **किरोफ़्** की तरह, **जेर्जिन्स्की** की तरह, **ओर्जोनिकिद्ज़े** की तरह।"

स्तालिन् का महान् नाम उनके लिए बड़ी श्रद्धा का विषय है। **जेर्जिन्स्की** और **ओर्जोनिकद्ज़े** क्रान्ति के इन महान् वीरों की स्मृति उन्हें बहुत प्रिय है। अपने प्यारे **सर्गेइ मिरोनोविच् किरोफ़्** के हत्यारों को वह कभी क्षमा नहीं कर सकते। जिस दिन फ़ासिस्ट गोली ने **किरोफ़्** की छाती को छेदा, वह उनके लिए बड़े शोक का दिन था। एक सवार गाँव में आया और उसने एक घर से दूसरे घर इस दुःखद समाचार को सुनाया। घोड़े की दाहिनी ओर से वह दरवाज़ों पर उतरता था। यह स्थानीय संकेत था, कि इस घर का कोई मरा है। सारा गाँव उस पुरुष की मृत्यु के लिए आँसू बहा रहा था। **किरोफ़्** यहाँ आग्नेय वीर के नाम से मशहूर था। क्रान्ति के दिनों में जब काकेशस सफ़ेद जनरलों के घोड़ों की टापों के नीचे रौंदा जा रहा था, और वे लाल-क्रान्ति की देन उस स्वतंत्रता से इन पर्वतवासियों को वंचित रखना चाहते थे, उस वक़्त यही आग्नेय आदमी था, जिसने इन पहाड़ियों में रूह फूँकी और दासता से हमेशा के लिए स्वतंत्र कर दिया।

८३ वर्ष के बूढ़े **सवन्चियेफ़् ज़क्रेई** ने कहा—"जाँगर चलानेवालों से प्रेम करना चाहिए और उनके शत्रुओं से भयंकर घृणा।"

६५ वर्ष के **तेजोकेल्मत** ने राय दी—"अगर तुम अच्छी तरह देखने की ताक़त रखते हो, सुनने की ताक़त रखते हो; छूने की ताक़त रखते हो, सूंघने की ताक़त रखते हो, चखने की ताक़त रखते हो; तो शत्रुओं के प्रति घृणा—यह भी तुम में होनी चाहिए। ऐसी अवस्था में घृणा छठी ज्ञानेन्द्रिय है।"

६७ साल के दादा **प्युवोकर्तोफ़् एल्द्जुको** बोले—"घृणा का मार्ग भी

अपने कलेजे के लिए करते हो। यही तुम्हारा वर्तमान है। यही तुम्हारा भविष्य है।"

बूढ़े लोग इसके लिए कितने ही उदाहरण देते हैं। कैसे कोल्ख़ोज़् का अमुक बहादुर, शत्रु और विनाशकों से सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करता है; कैसे वह दीमक, पानी, आँधी और बर्फ़ से उसे बचाता है। दर असल गाँवों में साम्यवादी सम्पत्ति की रक्षा लोगों का अनुल्लंघनीय पवित्र धर्म बन गया है।

"मनुष्य को विना पीछे देखे आगे बढ़ना चाहिए। उसे नई वस्तुओं को लेना और पैदा करना चाहिए।"

७० वर्ष के बूढ़े **अस्कद्** ने कहा—"हमारा वीर वह है, जो निरन्तर नई चीज़ें प्राप्त करता है। निरन्तर और ऊँचे बढ़ने के लिए साहस करता है; और हमेशा आदर्श के पीछे दौड़ता है।"

उनकी बात को पुष्ट करते हुए पाँच वर्ष जेठे **कन्वोत्** बोल उठे—"बेह-तर जीवन की ओर बढ़ने के लिए **बेकरारी**, अधिक जानने के लिए उताव-लापन ये हैं, जो आज के मनुष्य को सुन्दर बनाते हैं।"

७६ साल के पिता ने कहा—"व्यक्तिगत स्वार्थ को समाज के स्वार्थ के अधीन रहना चाहिए। पंचायती खेती एक बड़ा वैद्य है। यह सभी बीमारियों को दूर करती है। पंचायती खेती मनुष्य में मनुष्यता पैदा करती है।"

र्न्चेरी ने अपने तीन कोड़ी और १० सालों के तजर्बे का निचोड़ इस प्रकार कहा—"पंचायती खेती मनुष्य को उसकी मानसिक संकीर्णता, उसके मिथ्याभिमान को दूर करती है। यह मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन करती है।"

७० वर्ष के **माशा** ने अपनी अन्तिम सम्मति देते हुए कहा—'मनुष्य को शीशे की तरह साफ़, चश्मे के पानी की तरह शुद्ध होना चाहिए।"

२९—उन्नति का खुला मार्ग

सोवियत् भूमि में बहुत आदमियों के श्रम पर कुछ आदमियों को मोटा नहीं होना है; और न वहाँ कल की फ़िक्र के लिए धन जोड़ने की लोगों को धुन है। हर एक आदमी जिस काम के योग्य है, वह काम उसके लिए रखा हुआ है। बेकारी को कई साल हुए, जब उस भूमि से विदाई मिल चुकी। विद्या की तरफ़ लोगों की अपार रुचि है। यदि यह कहा जाय, कि सोवियत् का हर एक नागरिक अपने विद्यार्थी जीवन में है; तो कोई अत्युक्ति नहीं। प्रत्येक व्यक्ति अपने को अधिक उपयोगी बनाने के लिए अपना ज्ञान बढ़ा रहा है। अनेक रात्रि-पाठशालाएँ हैं; जिनमें हर विषय की पढ़ाई होती है। इन पाठशालाओं में जाकर अधेड़ और बूढ़े कमकर तक अपने विषय का ज्ञान आगे बढ़ा सकते हैं। वहाँ कोई आदमी अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं है। ड्राइवर चाहता है मेकेनिकल इंजीनियर होना, कंपौडर चाहता है डाक्टर होना, गाँव का अध्यापक चाहता है प्रोफ़ेसर होना और सब के लिए अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँचने के लिए बाधाओं का अभाव ही नहीं है, बल्कि उन्हें हर तरह से आगे बढ़ने के लिये उत्साह और प्रेरणा मिलती है।

क्लावदिया इलिन्स्काया—मास्को के मशीन बनाने के कारख़ाने में इलिन्स्काया एक टेक्नोलोजिस्ट (विशेषज्ञ) है। १९३८ के लिए उसका क्या प्रोग्राम है, इसके बारे में उसी के शब्दों में सुनिए—

पिछले वर्ष मैंने कितने ही खुशी भरे हुए दिन देखे, लेकिन सब से बढ़कर मेरे लिए खुशी का दिन ८ दिसंबर था। उसी दिन हमारे कारख़ाने के डाइरेक्टर की आज्ञा से मेरी जैसी २४ वर्ष की आयुवाली टेक्नोलोजिस्ट को इंजीनियरों और टेकनीशियन के दल में शामिल किया गया। इस

दल को काम मिला है, कि **इवान गुदोफ़्**, प्रसिद्ध स्तखानोवी कमकर की देखरेख में उसके अद्भुत उपज बढ़ाने के तरीक़े को सारे कारख़ाने में प्रचारित किया जाय। हमारे कार्यकर्त्ताओं के लिए यह बड़े सन्मान का काम है, कि उनका कारख़ाना स्तख़ानोवी कारख़ानों का एक नमूना बन जाय। मैं इस काम में बड़े ज़ोर के साथ भाग ले रही हूँ। मैं अपने ऊपर एक भारी ज़िम्मेवारी समझ रही हूँ।

१९३७ में मैंने अपने काम में बहुत उन्नति की है। मैंने अपने काम के बारे में **गोदोफ़्** से बहुत सीखा है; जब कि मैं उसे नया रेकार्ड स्थापित करने के लिए सहायता कर रही थी। एक मित्रतापूर्ण सामूहिक रूप से काम करने में बड़ा आनन्द आता है। वहाँ सभी एक दूसरे की सहायता करते हैं; और बेहतर नतीजे के लिए होड़ लगाते हैं। हमारे वह नौजवान कितने आश्चर्य में डालते हैं, जो कि हमारी आँखों के सामने बढ़ते जा रहे हैं, और अपने काम में बड़ा उत्साह दिखलाते हैं। अभी कल तक वह साधारण कमकर थे, आज वह स्तख़ोनोवी बन गये और कल वह फ़ोरमैन, ब्रिगेड के नायक या विशेषज्ञ बन जायेंगे।

हमारे वर्कशाप में **खोख़लोवा**, **क्रूग्लूसीना** और **तमातोवा** जैसी अद्भुत कमकर लड़कियाँ हैं। वे **स्तख़ानोवी** कमकरों की अगुआ हैं। उनकी और वर्कशाप के सभी कमकरों की सहायता करना, उनके श्रम की उपज को बढ़ाना, उनके काम को संगठित करना, ये बड़े ही सन्माननीय कर्तव्य हैं जिन्हें मैं कर रही हूँ और उसके लिए मुझे बड़ा अभिमान है।

पिछले साल मैंने बड़ी मिहनत से काम किया, लेकिन मुझे अच्छा विश्राम भी मिला। अक्तूबर में अपनी छुट्टी को मैंने काकेशस की मनोहर पार्वत्य-भूमि में बिताया। कितनी ही बार मैं नाटक देखने गई। दावतों में शामिल हुई, बहुत सी किताबें पढ़ीं। आजकल मैं प्रतिमास ७००से ८०० रूबल (३०० से ३५० रुपया) महीना कमा रही हूँ।

मुझे अपने परिवार की कुछ आनंददायक घटनाओं ने भी बहुत प्रसन्न

किया है। मेरा बड़ा भाई सीमान्त-रक्षक सैनिक है। हाल ही में अपने काम को सुचारु रूप से करने के लिए उसे सरकार की ओर से पदक प्राप्त हुआ है।

इस वक़्त मैं कुछ ऐसे पुर्ज़ों का डिज़ाइन बनाने में लगी हूँ, जिनके पूरा हो जाने पर हमारे कारख़ाने के सभी कमकर अपने हिस्से के काम को दुगुना और उससे भी अधिक कर सकेंगे।

इस वर्ष मेरे सामने और भी कितनी ही योजनाएँ हैं। शीघ्र ही मेरे जीवन की एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटनेवाली है। मैं कम्युनिस्ट-पार्टी की मेम्बर स्वीकृत होने जा रही हूँ। इसकी तैयारी के लिए मैंने कितने ही साल दिये। फिर मैं अपने विवाह की तैयारी कर रही हूँ। लेकिन वह मेरी पढ़ाई में बाधक नहीं होगा। मैं औद्योगिक एकेडेमी में दाख़िल होकर विदेशी भाषाएँ पढ़ना चाहती हूँ।

*** ***

नव वर्ष के आरंभ में **एलेना कोनोनेन्को** एक प्रसिद्ध संम्वाददात्री ने मास्को के जीवन का एक दिलचस्प चित्र खींचा है, जिसे हम यहाँ दे रहे हैं—

मास्को के मकानों में अनन्त प्रकार के लोग रहते हैं। हर एक दीवार की आड़ में रहनेवाला जीवन अपना ख़ास व्यक्तित्व रखता है। हर एक दरवाज़े की ओट में गृहस्थ के दुख-सुख हैं। एक परिवार में पुत्र के पैदा होने की ख़ुशी मनाई जा रही है, दूसरे में दादी को दफ़नाने की तैयारी हो रही है। तीसरे में सब से छोटी लड़की ने स्कूल जाना शुरू किया है। चौथे में पुत्र ने विश्वविद्यालय में प्रवेश किया है। लेकिन इनके अतिरिक्त और भी सुख-दुख हैं, जो हर घर में एक जैसे मालूम होते हैं। जो वलेरी स्कोलोफ़् के लिए वैसे ही है, जैसे केइज़िक् के लिए।

१—मैंने कई दरवाज़ों पर थपकी लगाई। एक जगह पूछा—'साथी,

कैसे हो ? पुराना वर्ष तो बीत चुका; मुझे साफ़ बतलाओ तो पिछले वर्ष ने तुम्हें क्या दिया ?"

दाविद् वोइस्त्राफ् के घर के भीतर से **वाइलिन्** की मधुर ध्वनि आ रही थी। प्रसिद्ध गायक का ६ वर्ष का पुत्र गरिक बजा रहा था। **दाविद्** ने मेरे प्रश्न का स्वागत अपनी मुस्कराहट से किया। वह नहीं समझ सका कि उसे क्या जवाब देना चाहिए। अचानक उसे हमारे प्रश्न का मुक़ाबला करना पड़ा। वह घर के भीतर पहनने का एक लंबा चोगा और स्लीपर पहने था। इस वक़्त वह उस गायक सा नहीं मालूम देता था, जिसे कि कंज़र्वेटरी (सर्वोच्च संगीत-शाला) के चमचमाते हाल में हम देखने के आदी हैं। प्यानो का मुख खुला था। संगीत लिपि उसपर पड़ी थी। **वाइलिन्** की चौकियों पर बहुत से वाइलिन् पड़े हुए थे। एक वाइलिन् प्यानो पर था। कई सोफ़ा के ऊपर थे। एक **वाइलिन्** किताब की आलमारी पर था। वोइस्त्राफ़् ने पिछले वर्ष की सब से आनन्द दायिनी घटना के बारे में कहा—"हाँ, सबसे बड़ी बात हुई अन्तर्राष्ट्रीय अखाड़े में सोवियत् वाइलिन्-वादकों की विजय। वह सोवियत् संगीत के लिए, जन्म-भूमि के लिए, अभिमान की बात थी।"

"........तुम पूछ रही हो, कि क्या मैं बेल्जियम की रानी—जो कि सोवियत् वादकों की निपुणता पर मुग्ध हुई थी—द्वारा दिये गये स्वागत में मौजूद था ? हाँ, मैं था। लेकिन ज़रा सुनो। कोल्खोज़ों के किसान मुझे क्या लिख रहे हैं। इवानोवो के पुतलीघरों के जुलाहे क्या लिख रहे हैं।........"

दाविद् वोइस्त्राफ़् ने एक वक्स खोला। वह विदेशी समाचार-पत्रों की कटिंग, नाना भाषाओं में लिखे वधाई के तारों से भरा था। "नहीं नहीं, ये नहीं !"

वह बड़ा उत्तेजित था। वह **इवानोवो** की कमकर स्त्री **सोबोलेवा** का पत्र ढूँढ़ रहा था। वह उसे मिल नहीं रहा था।

मैंने पूछा—"१६३८ के बारे में क्या चाहते हो ?"

"अधिक और बेहतर काम। जन्मभूमि के स्वतंत्र आकाश में रहना, साँस लेना बड़ा सुन्दर है। मुझे इस वर्ष बड़ा आनन्द आया जब कि मैंने पहले पहल **ब्राम् के सरगम** पर जैसे मैं चाहता था वैसे बजा पाया। इस पर मैं कई वर्षों से काम कर रहा था।" वह कहना शुरू करता अपने बारे में, लेकिन झट जन्म-भूमि पर पहुँच जाता। बोला—मैं और मेरी जन्मभूमि हम दो नहीं—एक हैं।

यह बात थी, जो सब घरों में मैंने एक सी सुनी।

२—हम पहले फ़ौलाद के कारख़ाने में काम करनेवाले मज़दूरों के एपार्टमेंट (नये तरह के महल जो मज़दूरों के रहने के लिए बने हैं) में दाख़िल हुए। गब्रील **स्विरिदोफ़्** अब औद्योगिक एकेडेमी का एक विद्यार्थी है। वह तरुण-साम्यवादी-संघ का भी मेम्बर है। गब्रील स्विरिदोफ़् पहले अशिक्षित कमकर था। पीछे वह एक खुले भट्ठे का फ़ोरमैन हो गया। अपने अच्छे काम के लिए उसे लेनिन्-पदक मिला। उसे और ज्ञान बढ़ाने की इच्छा हुई और इसी के लिए अब वह औद्योगिक एकेडेमी में पढ़ रहा है। उसे ६५० रूबल (३०० रुपये) मासिक छात्रवृत्ति मिलती है।

स्विरिदोफ़् इम्तहान की तैयारी कर रहा है। किताबों में डूबा है। कमरा ख़ूब साफ़ और सजाने में अच्छी सुरुचि प्रकट कर रहा था। अप्राणिज रसायन (Inorganic Chemistry)-शास्त्र सम्बन्धी नोट बुकों और प्रयोगशाला की पुस्तकों से उसकी मेज़ भरी हुई थी।

पिछले वर्ष की सब से महत्त्वपूर्ण घटना यह थी कि उसकी तरक़्क़ी एकेडेमी के दूसरे वर्ष में हुई। यह आसान काम नहीं था। उसे साल भर बड़ी मिहनत के साथ पढ़ना पड़ा। देश ने उसे पढ़ने के लिए भेजा था और उसे अपने अध्ययनकाल में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना है, जिससे कि वह आगे चलकर उस ऋण से उऋण हो सके।

स्विरिदोफ़् शब्दों में और मुस्कराहट में भी बड़ा कंजूस है।

"पिछले साल का निर्वाचन भी मेरे जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। ज़रा सोचो तो, मुझे अपने इच्छानुसार वोट देने का अवसर मिला। ज़रूर यह अद्भुत है।"

स्विरिदोफ़् मुस्कुरा उठा। उसकी मुस्कुराहट उसके छोटे से पुत्र स्लवा (श्रवा) के चेहरे पर फैल गई। **स्लवा** के लिए सब से महत्त्वपूर्ण घटना थी, कि अबकी बार पहले पहल उसने बर्फ़ पर स्केटिंग करने का मौक़ा पाया।

३—चित्रकार **इवान्** एक श्वेतकेश पुरुष है; लेकिन अब भी देखने में उसका चेहरा जवान सा मालूम होता है। उसने अपने १९३७ के काम के बारे में बतलाया—

"मेरे तीन चित्र प्रदर्शिनी में रखे जानेवाले हैं। 'विमान से हवाई बम का लटकाना', 'पहली छलाँग', 'पहला उतरना'। वह इस वक़्त 'लेना की उड़ान' नामक एक बड़े चित्र पर काम कर रहा है। उसने **माली** नाट्य-शाला में खेले जानेवाले 'इंस्पेक्टर-जेनरल' के सीन तैयार करने में भी बहुत काम किया है।"

चित्रकार इवान् का **एपार्टमेंट** अच्छा लंबा चौड़ा और चमकीला है। दीवारों पर क़ितने ही चित्र और पेंसिल-**अंकन** टँगे हुए हैं।

"मुझे उन्निद्रता सताती है। पहले जहाँ मैं रहता था, वह बड़े हल्ले गुल्ले की जगह थी। लेकिन यह जगह बिलकुल अनुकूल है।"

मैंने इवान् के पोते से पूछा—"और **बोलेग,** तुम तो बतलाओ ज़रा, पिछला साल कैसे बीता?"

"मैं बालचर बन गया और प्राणिशास्त्रीय परिषद् का मेम्बर भी। हमारे बालचर-भवन की छोटी साही जाड़े की ऋतु में सोने चली गई। अब जाड़ा बीतने पर जगेगी। हमारे ख़रगोश ने बच्चे जने हैं, छोटे छोटे बड़े सुन्दर हैं।............"

३—**गल्याजमीराईलोवा** के जीवन की सब से बड़ी घटना हुई, जो कि

वह रात्रि हाई-स्कूल में प्रविष्ट हुई; और उसने **पुश्किन्** की कविताओं के स्वाद लेने का मौक़ा पाया।

"पिछले साल मुझे बहुत बातें मिलीं। मैं कितनी ही सभाओं में गई। **लेफोर्तोवो** में मैं निर्वाचन-संबंधी एक बड़ी सभा में गई थी। मैं मन लगाकर ख़ूब पढ़ रही हूँ। मैं सोच रही हूँ फ़ैक्टरी में जाना। यहाँ कमरों की सफ़ाई और देखभाल करने मात्र से मैं सन्तुष्ट नहीं हूँ।"

४—**पीतर निकिफोरोविच् प्रोखोरोफ़्** एक मज़दूर ने कहा—"मेरे लिए सब से आनन्ददायक घटना यह हुई, कि मेरी लड़की कमकरों के हाई स्कूल में दाख़िल हुई। उसे छात्रवृत्ति मिल रही है। पीछे वह कालेज में जायगी। उसका रास्ता खुला हुआ है।"

५—हमने उस **एपार्टमेंट** का दरवाज़ा खोला, जिसमें लाल-क्रान्ति के बहादुर सेना-नायक **चपायेफ़्** के लड़के रहते हैं। एक भूरे बालोंवाला छोटा बच्चा हाल से निकल कर बाहर भागा। अपने जाड़े के भारी भरकम कपड़ों में वह एक छोटे से भालू जैसा मालूम होता था। यह **चपायेफ़्** का नाती **आर्थर** था।

चपायेफ़् की लड़की **क्लाउदिया वासीलेव्ना** ने हँसते हुए हमें कमरे के भीतर आने के लिए निमंत्रित किया। कमरा ख़ूब साफ़ सुथरा था। एक दीवार पर कितनी ही सुन्दर चीज़ें टँगी हुई थीं। कमरे में एक सुन्दर बनी हुई शतरंज की मेज़ थी। एक दीवार पर उसके बाप को दिया गया एक अभिनन्दनपत्र टँगा हुआ था। दूसरे कमरे में **चपायेफ़्** का फोटो लगा था।

क्लाउदिया २४ साल की है। शरीर से पतली और आँखें उसकी काली हैं। रोटी के उद्योगों के कालेज के दूसरे वर्ष में पढ़ रही है। चन्द ही दिनों में वह कम्युनिस्ट-पार्टी में दाख़िल होने के लिए अर्ज़ी देने जा रही है। यह उसके जीवन की सबसे बड़ी घटना हुई। सारे पिछले वर्ष वह काम में लगी रही। उसने बहुत सी पढ़ाई की, निर्वाचन-कमीशन की मेंबर बन कर काम किया। कमकरों और विद्यार्थियों ने कितनी ही बार सभाओं में

बुलाकर अपने पिता के बारे में बोलने के लिए उसे कहा। बालचरों की मुलाक़ात ने उसके दिल को अधिक द्रवित किया। वह **चपायेफ़् से** बहुत प्रेम करते हैं; और पुत्री के नाते उस प्रेम को क्लाउदिया के लिए बदल देते हैं।

चपायेफ़् का पुत्र **अर्कादि वासील्येफ़्** भी आजकल यहीं रहता है। वह एक हवाई-जहाज़ के संचालकों का कमांडर है। यह वर्ष उसके लिए बहुत सफल रहा। गृह-युद्ध के समय के विमान-संचालकों की निर्भीकता और बहादुरी के संबंध में उसने एक **सिनारियो** लिखा।

"१९३८ में मैं सोच रहा हूँ कि मैं कैसे अच्छी तरह अपने को एकेडेमी के लिए तैयार कर सकता हूँ? मेरे लिए यह **स्तख़ानोवी** काम का वर्ष होगा। और फिर मेरे सामने एक दूसरा स्वप्न है—मैं चाहता हूँ, एक किताब—**चापायेफ़्** लिखना।"

६—दूसरे एपार्टमेंट में एक तरुण गणितज्ञ कोल्या **दिमित्रियेफ़्** रहता है। रात के दस बज गये थे, जब मैं उसके यहाँ पहुँची। कोल्या गर्म नीले कम्बल से अपने को ढाँके चारपाई पर लेटा था। समय पर सो जाना यह उसकी माँ ही नहीं चाहती, बल्कि सरकार का भी उसके लिए यही हुक्म है। कोल्या अभी १२ वर्ष का है; लेकिन उसके गणित का ज्ञान बहुत ऊँचा है। जब वह ८ ही वर्ष का था, तभी अंकगणित, बीगजणित, ज्यामिति और त्रिकोणमिति के बड़े बड़े प्रश्न हल करता था। सरकार ने सारे **दिमित्रियेफ़्**-परिवार को तोबोल्स्क से बुला मँगाया। कोल्या को ५०० रूबल (२२० रुपये) महीना वृत्ति मिलती है। प्रोफ़ेसर लोग उसके घर पर पहुँचते हैं; और वह उच्च गणित और विदेशी भाषाएँ उनसे पढ़ता है। अपने ज्ञान में अभी ही वह कालेज की शिक्षा से आगे चला गया है। उसका पिछला साल अच्छी तरह बीता। उसने अध्ययन किया, खेल खेले और बन्दूक़ का निशाना लगाना सीखा। एपार्टमेंट में बड़ी खुशी है। इस साल कोल्या विश्वविद्यालय की ऊपरी कक्षा में प्रवेश करने जा रहा है।

७—१२ वर्ष का बान्या एक साधारण लड़का है। लेकिन उसकी भी ज़िन्दगी वैसी ही आनन्द-पूर्ण है, जैसी **कोल्या दिमित्रियेफ़्** की। हम उसके पिता **केइज़िक्** के एपार्टमेंट में घुसे। बान्या अपने जूते बदल रहा था। वह स्केटिंग में जाने की तैयारी कर रहा था। वान्या ने अपने पिछले वर्ष के बारे में कहा—

"मैंने पुस्तकें पढ़ीं। कितनी ही बार थियेटर देखने गया। सिनेमा और सर्कस भी बहुत देखे। गर्मियों को मैंने बालचर-कैम्प में **मोज़ाइस्क** नगर के पास बिताया। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण घटना हुई कि मैंने दौड़, कूद और गोला फेंकने की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। और भी महत्त्वपूर्ण घटना यह है कि उसे एक फ़ोटो-कैमरा पारितोषिक मिला।"

*** ***

इ० त० कुप्रियानोफ़्

सोवियत् शासन ने लोगों के जीवन में कितना उत्साह, कितना आनन्द भर दिया है, यह इस चौंसठ बरस के जवान विक्रेता के लेख से मालूम होता है—

"अपने लिए मुझे एक बात बिलकुल निश्चित है। अगर सोवियत्-शासन स्थापित न हुआ होता तो कभी का मेरा अस्तित्व ख़तम हो गया होता।

बहुत से लोग विश्वास नहीं करते; कि मैं ६४ वर्ष का हूँ और सचमुच मैं खुद भी अपने को बूढ़ा नहीं अनुभव करता। अपने जीने की महती इच्छा और इस उम्र में भी सुन्दर स्वास्थ्य के लिए मैं सोवियत्-शासन का ऋणी हूँ। मैं ११ वर्ष का बच्चा था, तभी से मजबूर करके दूकान में काम करने के लिए लगाया गया। चूक हो या न हो, मालिक और उनके सहायक मुझे पीटना अपना कर्तव्य समझते थे। उसी मार में मेरे कितने दाँत टूट गये। उनकी जगह अब मैंने सोने के लगाये हैं। उस समय हर रोज़ १५ घंटे खटना पड़ता था और अब ८ घंटे; और इसी में दोपहर के खाने का वक़्त भी शामिल

है। हर पाँच दिन के बाद एक दिन छुट्टी का है; और साधारण छुट्टियाँ इन के अतिरिक्त। साल में डेढ़ महीने की लम्बी छुट्टी जिसे मैं किसी स्वास्थ्य-प्रद प्रदेश में जा कर बिताता हूँ। इस पर भी अगर स्वास्थ्य अच्छा न हो तो क्या हो?

इसी **गस्त्रोनोम्** नं० १ के महाभंडार (बड़ी दूकान) में मैं उस वक़्त भी काम करता था, जब यह **येलिसेयेफ़्** बनिये की सम्पत्ति थी; और विदेशी शौक़ीनी चीज़ों के बेचने में मेरी बड़ी प्रसिद्धि थी। इन शौक़ की चीज़ों को ख़रीदने के लिए आते थे सेठ, साहूकार, राजा-बाबू—सभी कमकरों के जल्लाद। मैं इन्हीं के लिए बिना विश्राम के १५–१५ घंटा खटता था। कितनी ही बार नींद भी हराम थी। अपने बूते से बाहर के बोझ को ढकेलना पड़ता था। **सड़ाँद** आती हुई अँधेरी खोभार में मुझे सोना पड़ता था। मैं हमेशा काम को गाली देता था; और दूकानदार और ख़रीदार दोनों के लिए मेरे दिल में अपार घृणा थी। क्या उस समय इस तरह के जीवन को बिताते हुए मेरे पास समय और शक्ति बची रह सकती थी?—पैसे की बात छोड़ दीजिए—क्या मैं इस तरह किताबें पढ़ता, नाटक और सिनेमा देखने जाता, जैसा कि आज कल कर रहा हूँ? किसान-मज़दूर राज्य ने मुझे नया जीवन दिया। अब मैं मनुष्य के गौरव को समझता हूँ। अपने काम से प्रेम करता हूँ। अपने जीवन को पसन्द करता हूँ। मैं अपने प्रोग्राम को बराबर मात्रा से अधिक पूरा करता हूँ। मैं **स्तख़ानोवी** कमकर हूँ। मैं अपने भंडार के तरुण कमकरों को जहाँ किताबी ज्ञान पढ़ाता हूँ, वहाँ उन्हें यह भी सिखलाता हूँ, कि सौदा कैसे रखना-उठाना चाहिए। खाने की चीज़ों को कैसे काटना और कैसे चित्ताकर्षक तरीक़े से उन्हें काग़ज़ में लपेट कर देना चाहिए। काम मेरे लिए अब आनन्द का विषय है। मेरे बहुत से विद्यार्थी सफलता पूर्वक अपना काम कर रहे हैं। सारे भंडार के लोग मेरा सम्मान करते हैं; और मेरे काम का मूल्य समझते हैं। मैं ख़ुद भी अपने ज्ञान के बढ़ाने के लिए बाक़ायदा रात्रि-क्लासों में जाता हूँ।

हमारे देश में हर एक आदमी जवान है। यदि मेरी शक्ति क्षीण होगी, तो मैं जानता हूँ कि मेरा सुखमय जीवन सुरक्षित है। सरकार को उसका ख़याल है। लेकिन, अभी वह बहुत दूर की बात है। मेरे स्वास्थ्य की जो अवस्था है, उसको देखने से मुझे याद नहीं आता कि इस पृथ्वी पर रहते मेरे ३ कोड़ी से ज़्यादा वर्ष बीत गये। जवानी की तकलीफ़ें और चुभने वाली पीड़ाएँ वर्तमान जीवन के कारण भूल चुकी हैं।"

*** ***

यसायुसिम् मास्को के एक बड़े कारख़ाने (कगानोविच् State Ball-bearing Plant) के डाइरेक्टर हैं। उन्होंने अपने कारख़ाने के विशेष आदमियों के बारे में लिखते हुए कहा—

"यह लोग एक दूसरे से फ़र्क़ रखते हैं। लेकिन एक बात सब में समान पाई ज़ाती है—वह एक ऐसे देश में पैदा हुए, जहाँ २० साल पहले महान् साम्यवादी क्रान्ति ने पूंजीवाद को हराया।

१—इवान् ग्रीगोर्येविच् **दिमित्रियेफ़्** पुर्ज़े बनानेवाली वर्कशाप में दबाई मशीन का संचालक है। १९२६ में उसने एक फ़ैक्टरी के उम्मेदवार-स्कूल से पढ़ाई खतम की। पुर्ज़ा बनाने में वह कमाल करता है। वह साथी स्तालिन के उस कथन का उदाहरण है, जिसमें उन्होंने कहा—'कमकरों को अपना ज्ञान वहाँ तक बढ़ाना चाहिए कि वह इंजीनियर की जगह ले सकें।' उसमें क्रियात्मक तजर्बा जितने बड़े परिणाम में है, उतना ही उसका शास्त्रीय ज्ञान भी है। दिसंबर के पहले सप्ताह में जो होड़ लगी थी, उसमें उसने अपने काम का १० गुना किया था। उसे गाने का बड़ा शौक़ है। उसका स्वर बड़ा मधुर है। वह फ़ैक्टरी के संगीत-समाज में अध्ययन कर रहा है।

२—**एव्दोकिया बोगोमोलोवा** ने बड़ा आश्चर्यजनक रास्ता पार किया। दो ही सप्ताह हुए, वह रोलर-वर्कशाप की सुपरिंटेंडेंट बनाई गई

है। वह मास्को-सोवियत् (मास्को नगर की म्युनिसिपलिटी) की सदस्या है। लेकिन उसका आरंभिक जीवन इतना आसान न था। बचपन की वह बात उसे याद है; जब कि उसको बड़ी चाह थी, एक जोड़ा चमड़े का जूता पाने की ! इस साल उसने अपने विभाग में उपज के कई नये रेकार्ड स्थापित किये हैं।

३—क्रान्ति के पहले साथी **ज़ावद्स्की** के माँ-बाप किसी एक जगह नहीं रहते थे। उनका बाप लोहार था; और काम की तलाश में हमेशा घूमता रहता था। इसी लिए उसके सातों भाई रूस की भिन्न भिन्न जगहों में पैदा हुए। सात वर्ष की अवस्था में **ज़ावद्स्की** एक ज़मींदार का चरवाहा बना। इस तरह उसके जीवन का प्रारंभ हुआ। वह वहीं रह भी जाता। लेकिन महान् साम्यवादी क्रान्ति ने उसके लिए उन्नति का रास्ता खोल दिया। धीरे धीरे काम करता और पढ़ता आगे बढ़ा। १९२९ में उसने एक मशीन का आविष्कार किया, जिसके देखते ही सरकार ने उसे कमकर कालेज में भेज दिया। १९३२ से वह हमारी फ़ैक्टरी में काम कर रहा है। इस बीच में उसने अपने शास्त्रीय और प्रयोगात्मक ज्ञान को बहुत बढ़ाया है। हाल ही में उसने एक मशीन का आविष्कार किया है, जिससे पहले की मशीन से १३ गुना काम लिया जा सकता है।

* * *   * * *

पहले का आवारा अब पी-एच० डी० बनने जा रहा है। दिमित्रि **वोनिका** मास्को खनिज-कालेज का विद्यार्थी चन्द ही महीनों में डाक्टर बनने के लिए अपना निबंध पेश करने जा रहा है। उसने अपनी खोजों के आधार पर एक योजना तैयार की है, जिसको इस्तेमाल करने से **कुज़्वास्** की खान पूर्णरूपेण मशीन से चलनेवाली बन जायगी; और कामों को इस ढंग से संगठित किया जायगा कि खनक प्रतिदिन आज से तिगुना काम कर सकेंगे। हाँ, तिगुना। **वोनिका** की योजना शेख़चिल्ली का महल नहीं है। उसने

हर चीज़ पर बारीकी से सोचकर और छोटी छोटी बातों की भी गणना करके अपनी योजना तैयार की है। उसे विज्ञान की कितनी ही शास्त्रीय और प्रयोगात्मक शाखाओं के ज्ञान का उपयोग करके तैयार किया है।

वोनिका ने सब से पहले १९३० के शरद् में खनिज-कालेज के दरवाज़े में प्रवेश किया। उसके साथ बैठनेवालों में कितने ही परिपक्व-बुद्धि मुछन्दर थे। गलियारों में लाल-झंडे के पदक को छाती पर लटकाये कितने ही विद्यार्थी टहल रहे थे। उस समय प्रथम पंच-वार्षिक योजना के आरंभ के दिन थे। सरकार ने हज़ारों विद्यार्थियों को विशेष अध्ययन के लिए कालेज में भेजा था; और उनके लिए पाठ्य भी इतने कम समय का रखा गया था कि वह सीख कर जल्दी से जल्दी पंच-वार्षिक योजना के काम में योग देने लगें। विद्यार्थी बहुत दिल लगाकर परिश्रम से पढ़ते थे। वे समझते थे कि उन्होंने बहुत देर से पढ़ाई की ओर मुँह किया है। लेकिन तो भी नव-निर्माण के काम के लिए अपने को योग्य बनाने की धुन उनके सिर पर बड़े ज़ोर से सवार थी। पहले का आवारा वोनिका अपनी कक्षा में खड़ा होकर सुन रहा था। सामने के विद्यार्थी इतने बड़े थे कि वह लड़का पीछे बैठे बैठे अध्यापक को देख नहीं सकता था। एक समय था जब वोनिका आवारे लड़कों की एक बड़ी मंडली का नेता था। मंडली में उसे 'लाल मित्का' कहते थे। गृह-युद्ध खतम हो गया था। लेकिन सोवियत्-भूमि के कल्कारखाने ही नहीं खेती की व्यवस्था भी अस्त व्यस्त हो गई थी। लोगों को रोटी के लाले पड़ रहे थे; और कई लाख की तादाद में आवारे छोटे छोटे लड़के झुंड के झुंड बना कर विना टिकट रेलों पर या पैदल ही सैकड़ों हज़ारों मील तक फिरते रहते थे। मित्का भी मालगाड़ियों और दूसरी ट्रेनों में सारे सोवियत् देश का चक्कर काट चुका था। कितनी ही बार वह और उसके साथी मालगाड़ी के धुरों में चिपक कर एक जगह से सैकड़ों मील दूर पहुँच जाते थे। उस आवारापन की ज़िन्दगी में मित्का आवारों का बड़ा सरदार था।

१९२४ में लाल मित्का लुप्त हो गया; जब कि देश बड़े जोश के साथ अपनी आर्थिक अवस्था को सुधारने में कटिबद्ध हुआ। मित्का अब **दिमित्रि वोनिका** के रूप में प्रकट हुआ। सोवियत्-शासन ने उसके लिए काम और अध्ययन का रास्ता खोल दिया। वोनिका ने उससे फ़ायदा उठाने की ठानी।

काम के साथ साथ उसने पढ़ना जारी रखा और १९३० में वह कालेज में दाख़िल हुआ। इंजीनियर के नीले काग़ज़ और पुस्तकें उसकी प्रिय वस्तुएँ बन गईं। साधारण गणित के विना उच्च गणित के सिद्धान्तों को समझना बहुत मुश्किल था। यंत्र-विद्या और फ़िज़िक्स की बारीकियाँ और भौतिक पदार्थों की सहनशक्ति आदि विषय बहुत कठिन थे। लेकिन तरुण **वोनिका**—चलती हुई रेलवे ट्रेन की मालगाड़ी के धुरे से चिपकने की जिस तरह से हिम्मत रखता था—अब विज्ञान के सूक्ष्म विषयों में भी उसका वह साहस उसके साथ था। वह अपनी सारी शक्ति लगाकर किताबों के पीछे पड़ा था। घंटों वह शास्त्रीय सिद्धान्तों को अवगत करने में लगा रहता और घंटों प्रयोगशाला में प्रयोग करने में लगाता था। वोनिका ने अपना प्रयोगात्मक कार्य सब से पहले **शाख़्त-अन्थ्रसाइट-ट्रस्ट** की खान में किया। खान में काम करते हुए अपने साथियों की अपेक्षा वह अपने काम को अधिक गंभीरता और ज़्यादा विस्तार के साथ देखता था। उस वक़्त वह खान की मशीनों को ख़ास दिलचस्पी से अध्ययन कर रहा था। वहाँ मशीनें जब तब क्यों टूट जाती हैं, इसके कारण पर भी उसने ग़ौर किया। तरुण विद्यार्थी ने देखा, कि तजर्बा हलका होने पर भी वह खान को कुछ मदद कर सकता है।

पहले साल के प्रयोग को समाप्त कर लेने के बाद दूसरे साल कालेज में उसने एक खान में काम आनेवाली मशीन (winch) का मौलिक डिज़ाइन पेश किया। उसे विशेषज्ञों ने बहुत उत्तम श्रेणी का स्वीकार किया। वोनिका की बनाई वह **विंच** आज भी उस खान में तथा मास्को

की भूगर्भी रेलों की खुदाई में दिखाई पड़ती हैं।

दूसरा काम वोनिका ने किया, वह था खान के भीतर से कोयला लदी छोटी गाड़ियों को चंदवक के ऊपर आने पर वेग और धक्के से जो नुक़सान पहुँचता था, उसके लिए एक ख़ास यंत्र का आविष्कार करना।

वोनिका अब भी रात-दिन अपने गंभीर अध्ययन को जारी रखे था और साथ ही नये आविष्कारों की ओर भी उसका ध्यान लगा था। १९३४ में मास्को की चीनी दीवार नगर को प्रशस्त करने के लिए गिराई जा रही थी। वोनिका उसके पास से गुज़र रहा था। वोनिका ने सोचा, अगर ईंटों की छल्ली काटने के लिए बर्मा मशीन का इस्तेमाल हो, तो काम जल्दी हो सकता है। मास्को सोवियत् के अध्यक्ष **बुल्गानिन्** ने वोनिका के विचारों को स्वीकार किया; और ईंट के ढाँचे को गिराने के लिए बर्मा मशीन का सब से पहले सोवियत्-संघ में इस्तेमाल हुआ। वोनिका ने सोचा, कि कैसे नगरों की धूल और गैस को यांत्रिक तौर से हटाया जा सकता है? उसके लिए भी ख़ास तरीक़े आविष्कृत किये। उसके आविष्कार-संबंधी विचार सदा साहस-पूर्ण और मौलिक थे। अपने अध्ययन के वर्षों में उसने अपने कई आविष्कारों को पेटेंट कराया।

वोनिका अब डिग्री के लिए अपना निबन्ध तैयार कर रहा है। कालेज में १५०० दिनों के अध्ययन का अन्तिम परिणाम सामने आनेवाला है। इसके वाद वोनिका शुरू करेगा अपने प्रयोगात्मक कार्य को।

वोनिका सोच रहा है, भविष्य की उस खान की रूपरेखा के बारे में; जिसमें हर एक काम मशीन से होगा और मशीनें भी ख़ुद बख़ुद चलने वाली होंगी। बिजली के तारों का जाल और मशीनों के संचालन पर अधिकार रखने के लिए सूक्ष्म पुर्ज़े, घड़ियाँ और सिगनल होंगे। इस सबके साथ उसका यह भी विचार है, कि ज़मीन के भीतर के क़ाम तथा ऊपर के काम की उपज और श्रम को यंत्रों के उपयोग से वराबर किया जा सकता है। लोगों ने कहा कि भविष्य की उस सम्पूर्णतया यंत्र-नियंत्रित खान की योजना बनाने

की अपेक्षा अच्छा होगा कि वर्तमान की खानों में वह अपने विचारों और आविष्कारों को कार्यान्वित करे। वोनिका ने इसे स्वीकार किया है। और **कुज़्वास्** की क़िरोफ़्रोब खान—जिससे कि वह पहले ही से परिचित है—के एक भाग को वह तैयार करने जा रहा है। उसकी योजना के सफल होने पर एक दिन में तीन दिन का काम हो सकेगा।

*** ***

अलेक्सेइ हस्तारोत्सिन् मास्को के १७० नंबरवाले हाई-स्कूल में अध्यापक है। वह अपने पुराने स्वप्नों के पूरा होने की बात करते हुए लिखता है—

१९३८ का नया वर्ष मेरे—एक २४ वर्ष के नौजवान इतिहासाध्यापक के—लिए बड़े महत्त्वपूर्ण अध्याय को खोल रहा है। इस साल मैं ट्रेनिंग कालेज की सरकारी परीक्षा दूँगा और आशा है, प्रथम श्रेणी के साथ डिग्री प्राप्त करूँगा। इसके बाद मैं ग्रेजुएट के बाद की परीक्षा में उत्तीर्ण समझा जाऊँगा; और फिर इतिहास के डाक्टर की उपाधि के लिए मैं तैयारी करने जा रहा हूँ। कितने ही असंभव से जान पड़ते मेरे लड़कपन के स्वप्न बड़ी जल्दी वास्तविक हुए। जब मैं एक छोटा सा किसान का लड़का था, उस वक़्त मुझे इच्छा होती थी, कि पढ़ूँ और विद्वान् बनकर दूसरों को पढ़ाऊँ। गाँव के स्कूल की पढ़ाई ख़तम कर नगर के सतसाला स्कूल में पढ़ने के लिए मुझे हर रोज़ २० मील आना-जाना पड़ता था। मैंने सतसाला स्कूल और उसके बाद के ट्रेनिंग स्कूल की पढ़ाई समाप्त की। २० वर्ष की उम्र में मैं अध्यापक ही नहीं हो गया, बल्कि २५० विद्यार्थियों के एक स्कूल का हेडमास्टर भी बन गया।

लेकिन मैंने अपनी पढ़ाई बन्द नहीं की। तुरन्त ही शिक्षा-विभाग ने मुझे ट्रेनिंग कालेज में भेज दिया। वहाँ पढ़ते हुए स्कूल में मैं इतिहास पढ़ाया करता था। १९३७ में कई स्मरणीय घटनाएँ मेरे जीवन में घटीं। मैंने अपने सोवियत् स्कूलों को समुन्नत और सुदृढ़ होते देखा, और अपने आपको

भी मैंने बहुत विकसित किया। स्कूल के लिए हमें नया विशाल सुन्दर मकान मिला। "स०स०स०र० का इतिहास" पुस्तक लड़कों के पढ़ाने के लिए ख़ास तौर से बनी, जिसने अध्यापकों और विद्यार्थियों के काम में बहुत आसानी पैदा कर दी। मैं अपने विद्यार्थियों की उन्नति देख, बड़ा प्रसन्न होता हूँ। मैं इतिहास पढ़ाते वक़्त अपनी जन्मभूमि के प्रति शिष्यों में बड़ा प्रेम पैदा करता हूँ। इतिहास पढ़ने में वह बहुत आनन्द अनुभव करते हैं। विद्यार्थी मुझसे प्रेम करते हैं और हम एक दूसरे के ज़बर्दस्त दोस्त हैं। १९३७ में इतिहास के कई पाठ्य-क्रमों को मैंने पास किया और परीक्षा में मुझे "उत्तम" मार्क मिला। यद्यपि अपने काम और पढ़ाई में मुझे बहुत समय देना पड़ता था, तो भी सारे साल में १५ बार मैं नाटक ओपेरा और संगीत-अभिनयों में शामिल हुआ।

१९३७ में मेरा वेतन २५० रूबल मासिक था और अब ८०० रूबल (प्रायः ३७५ रुपये) है। एक अविवाहित के लिए यह वेतन बुरा नहीं है। मैंने अपने निजी इस्तेमाल के लिए ६० किताबें ख़रीदीं—शेक्सपियर, बैरन और दूसरे पुराने कवियों को मैं नियम-पूर्वक पढ़ता हूँ। नये साहित्य के बारे में तो कहना ही क्या! पिछली गर्मियों की छुट्टी मैंने अपने माँ-बाप के साथ बिताई। उससे पहले की काकेशस् की सुन्दर पर्वतमाला में बीती थी। इसके अलावा विशेषज्ञों के कितने ही इतिहास-संबंधी लेक्चर सुने।

अब भी मैं नौजवान हूँ। अब भी मेरा जीवन आनन्द-पूर्ण है। लेकिन मेरा भविष्य उससे भी अधिक आकर्षक है। परीक्षा के परिणाम के निकलते ही मैंने निश्चय किया है, विवाह कर डालने का।

बना जाता है। हमने सोचा था, ऐसा करने से हमें भाषा की अल्पज्ञता का परिचय देना नहीं पड़ेगा; लेकिन जब मुसाफ़िरख़ाने में भी इन्तुरिस्त के
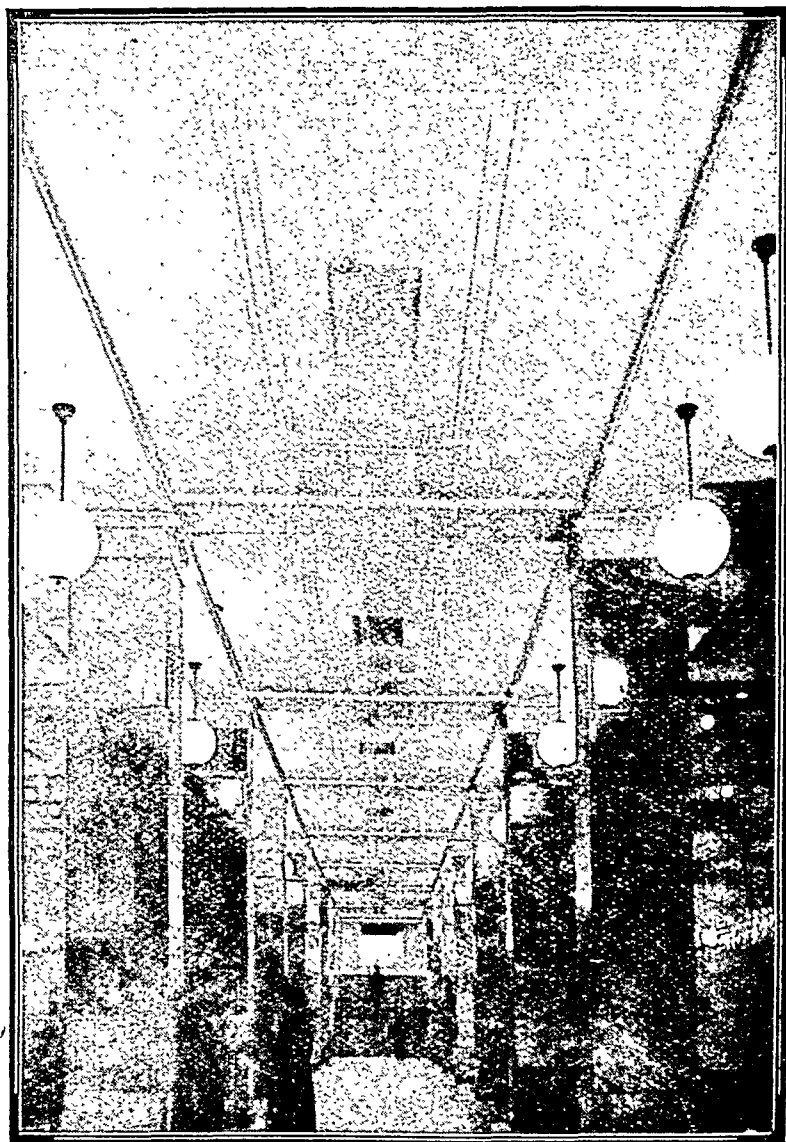
मेत्रो (भूगर्भी रेलवे) स्टेशन

किसी आदमी को नहीं पाया, तो लाचार एक भरिया (porter) को बुलाया और उससे नव-मास्को होटल पहुँचाने के लिए कहा। भूगर्भी रेलवे का स्टेशन मुसाफ़िरख़ाने के बिलकुल नज़दीक था। भरिया ने हमारा सामान उठाया और हम सुरंग के भीतर दाख़िल हो, प्लेटफ़ार्म पर जा पहुँचे। गाड़ी हर दो तीन मिनट पर आती रहती है। स्टेशन पर खड़े होते ही दरवाज़ा ख़ुद खुल जाता है। गाड़ी के भीतर भी बाहर स्टेशन जैसे बिजली के ज़ोरदार प्रदीपों के कारण सूरज का उजाला मालूम होता है। डब्बे बहुत साफ़, सीटें चौड़ी और अधिक आदमियों के खड़े होने के लिए बीच में काफ़ी जगह तथा हाथ से पकड़ने के लिए छत से लटकते चमड़े के तस्मे थे। डंडा और दूसरी चीज़ें चमचमाते पीतल की थीं। यद्यपि गाड़ी हर स्टेशन पर कुछ सेकेंड ही खड़ी होती हैं और आदमी को बड़ी फुर्ती से भीतर घुसना पड़ता है, लेकिन वैसे देखने से रेल की अपेक्षा भूगर्भी रेल की यात्रा ज़्यादा आरामदेह है। यह हिलती भी कम है। कई स्टेशनों को पार कर हम क्रेम्लिन् के पासवाले स्टेशन पर पहुँचे। गाड़ी से उतर कुछ सीढ़ियाँ ऊपर चढ़े, फिर चलती सीढ़ी मिली। चलती सीढ़ी हमारी आत्मपरीक्षा का स्थान है। लन्दन में भी हम इससे घबराते थे और मास्को में भी जब जब चढ़े, तब तब दिल में कैसा मालूम होता रहा। चलती सीढ़ी है क्या? लकड़ी की छोटी पट्टियों को जोड़ कर माला तैयार की गई है और वह सौ दो सौ फ़ीट ऊँचे एक लोहे के ढाँचे पर रख दी गई है। मशीन के ज़रिए यह माला नीचे से ऊपर स्वयं ज़ोर से खिसकती चली जाती है। मालूम होता है, वज्र की तरह स्थिर एक ओर की धरती के भीतर से दो हाथ चिपटी साँप की पीठ सरकती निकली आ रही है। और ऊपर जाकर उसी तरह एक निश्चल धरती में सरक कर वह लुप्त होती जा रही है। दोनों सिरों पर दो हाथ तक यह धरती से समतल है। और फिर बाद में ख़ुद सीढ़ी का रूप बनाती चलती है। सीढ़ी के दोनों तरफ़ ठोस और स्थिर बाँही है, लेकिन वहाँ भी हाथ रखने की जगह चल रही है। हमको सब से

ज़्यादा दिक़्क़त मालूम होती थी, स्थिर स्थल से अपने शरीर को चल सीढ़ी पर, तथा चल सीढ़ी से स्थिर स्थल पर पहुँचाने के वक़्त। मालूम होता था, गिर जायेंगे। सैकड़ों आदमियों के बीच इस तरह गिरना कोई इज़्ज़तदार आदमी पसन्द नहीं कर सकता। एक बार जहाँ सीढ़ी पर पहुँच गये, तहाँ
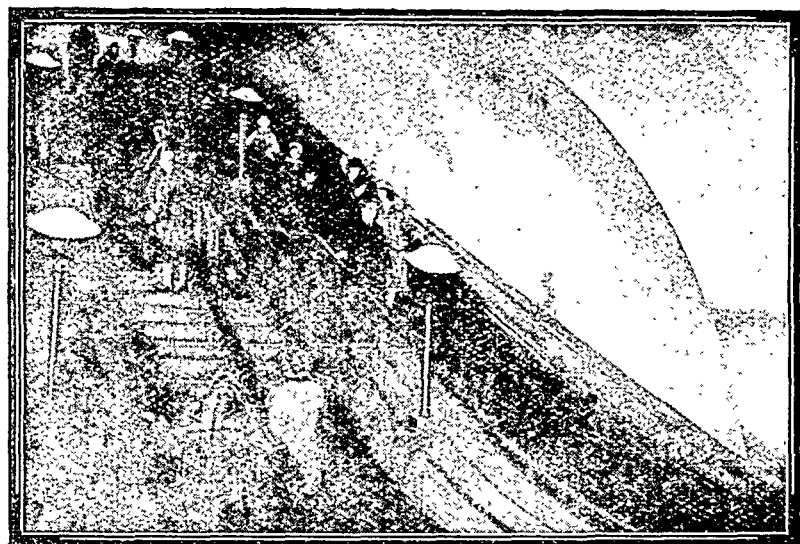
मेत्रो स्टेशन की सीढ़ी

हम भी बाघ हो सकते थे, तथा चलती सीढ़ियों पर तेज़ी से क़दम बढ़ाते हम खुद भी ऊपर चढ़ सकते थे, लेकिन आदि और अन्त के छोर पर हमारी नब्ज़ ढीली पड़ जाती थी।

भूगर्भी रेल-स्टेशन से निकल कर हम सड़क पर आये, और क्रेम्लिन् के बाहर लेनिन् की समाधि के सामनेवाले लाल-मैदान से होते मास्को नदी के पुल पर पहुँचे। मास्को नदी सब जगह जमी नहीं थी। इसीसे मालूम होता है कि **लेनिन्ग्राद्** से मास्को गर्म है। सड़क पर कहीं कहीं बर्फ़ थी। ज़्यादा बर्फ़ तो रहने भी नहीं पाती। हर वक़्त जोतनेवाली मोटर बर्फ़ को चूरा करती जाती है और उठानेवाली मशीन उठाकर दूसरी मोटर पर

भरती जाती है। बर्फ़ ज़्यादा दिन रह जाय, तो यही नहीं कि सड़क बहुत ऊँची हो जायेगी, बल्कि टायरों के दबाव से पहले तो वह नर्म होने की अवस्था में ऊँची नीची बन जायगी; और जब थोड़ी ही देर में सर्दी जमा कर उसे पत्थर बना देगी, तो उसपर से मोटरों का चलना सुगम नहीं होगा, इसीलिए बर्फ़ को रोज़ हटाया जाता है। इस काम में हज़ारों आदमी और सैकड़ों मोटरें व्यस्त रहती हैं। इस बदली के दिन में भी क्रेम्लिन् के दोनों शिखरों पर स्थापित विशुद्ध पद्मराग-मणि (लाल) के बने दोनों विशाल पँचकोने तारे चमचमा रहे थे। सोवियत् का यह लाल राष्ट्र-चिह्न दिन के प्रकाश में स्वयं चमकता रहता है, और रात को बड़ी तेज़ बिजली बत्ती उनके भीतर जला दी जाती है। तारे इतने ऊँचे पर लगे हैं कि मीलों से दिखलाई पड़ते हैं।

मास्को नदी पर यह नया पुल इसी साल बनकर तैयार हुआ है। अब भी एक तरफ़ के किनारे क़ी दीवार पूरी नहीं हुई थी। जाड़े की भीषण सर्दी में भी रात दिन काम हो रहा था। इसके लिए सीमेंट और पत्थर सब को भाप के ज़रिए गर्म रखा जाता है। कारीगर भी हाथ में चमड़े के दस्ताने पहने काम कर रहे थे। पहला पुल जो इससे कुछ ऊपर हटकर था, नीचा था। मास्को अब तीन समुद्रों का बन्दरगाह है। वोल्गा को एक बड़ी नहर द्वारा मास्को नदी से मिला दिया गया है। उसी तरह **बाल्तिक** समुद्र और उत्तर-समुद्र को भी नहर द्वारा मिलाया गया है। अब **कास्पियन्** सागर उत्तरसागर और **बाल्तिक** सागर के स्टीमर मास्को में पहुँच जाते हैं। वोल्गा नहर ने मास्को नदी के पानी को कई गुना बढ़ा दिया है। पुराने पुल के नीचे से स्टीमर पार नहीं हो सकते थे, इसीलिए ऊँचे पुल बनवाये जा रहे हैं।

भरिया को नव-मास्को होटल मालूम नहीं था, और हमें अपने ज्ञान पर बहुत अभिमान था। हमें स्मरण था, कि **क्रेम्लिन्** के पासवाले पुल को पार करते ही होटल की इमारत आ जाती है। यह ख़याल नहीं हो रहा था,

कि हम जिस पुल को समझ रहे थे, वह टूट-टाट कर न जाने कहाँ चला गया। सोच रहे होंगे, दो ही महीना पहले की तो बात है। लेकिन जानते हुए भी यह ख़याल नहीं आ रहा था; कि सोवियत् का दो महीना यूरोप का बीस बरस और हिन्दुस्तान का दो सौ बरस है। जब हम पुल पारकर इधर उधर देखते हुए कई गृह-पंक्तियाँ छोड़ गये, फिर भी होटल का पता नहीं लगा, तो अपनी अज्ञता स्वीकार कर हमने साथी को पता पूछने के लिए कहा। स्थान पाने में देर नहीं हुई। वह सिर्फ़ एक सड़क आगे था।
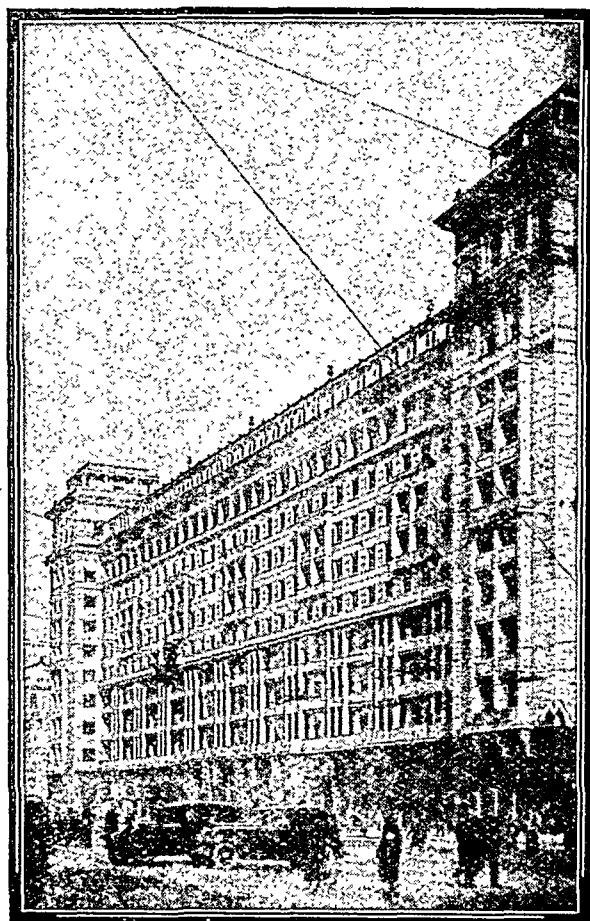
मास्को होटल

इन्तुरिस्त का आफ़िस भी होटल में है। लेनिन्ग्राद् से लाये काग़ज़ को हमने आफ़िस में दिया। रसीद से टिकट बना देना उन्होंने स्वीकार किया; लेकिन होटल में कोई कमरा ख़ाली

नहीं था। दो दिन पहले (१२ जनवरी) **महासोवियत्** (सोवियत्-पार्लियामेंट) का प्रथम अधिवेशन शुरू हुआ था, जिसके लिए ११४३ **देपुतात्** (सदस्य) ही नहीं, कोने कोने से बहुत से प्रतिष्ठित दर्शक मास्को पहुँचे हुए थे। और सभी होटल उनसे भर गये थे। कमरे का पाना एक बड़ी समस्या थी, और हम आज मास्को छोड़ नहीं सकते थे। क्योंकि पूछने पर बतलाया गया, कि अफ़ग़ान कौंसल सिर्फ़ मास्को ही में है (यद्यपि यह कहना ग़लत था, हमें पीछे मालूम हुआ कि ताशकन्द में भी अफ़ग़ान कौंसिल रहता है। अगर्चे उसके हटा लेने की बात हो रही है।) अफ़ग़ान कौंसल से पूछने पर मालूम हुआ, कि अब कौंसल ख़ाना बन्द हो चुका है, और वीज़ा के लिए कल आना चाहिए।

मास्को से रोज़ ताशकन्द के लिए डाकगाड़ी छूटती है; लेकिन उस
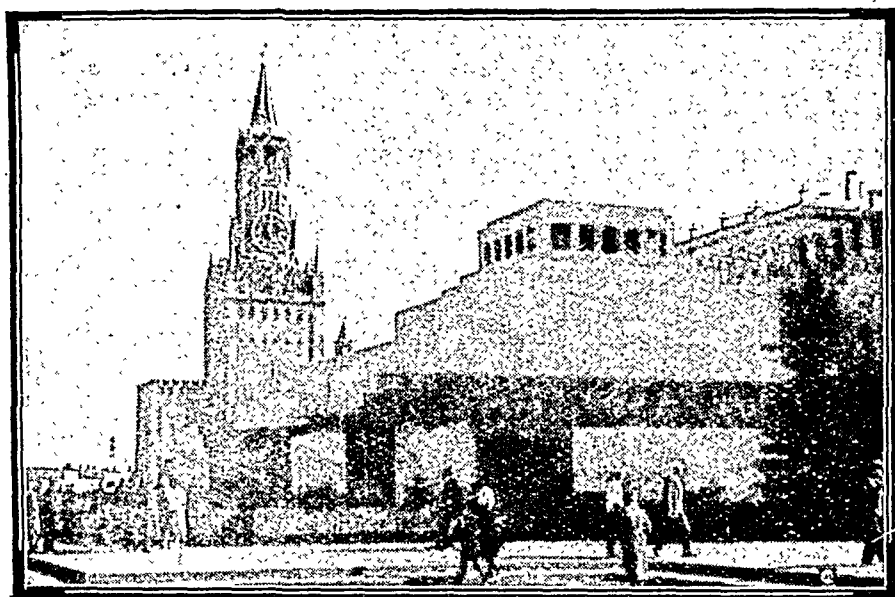
लेनिन् की समाधि

ट्रेन से ताशकन्द जाने पर हमें गाड़ी बदलनी पड़ती, इसलिए हम **स्तालिनाबाद** की डाक से जाना चाहते थे। उससे जाने पर तेर्मिज़् तक एक ही गाड़ी

से जा सकते थे। स्तालिनाबाद की डाक हफ़्ते में सिर्फ़ दो दिन छूटती है। संयोग से वह अगले दिन शनिश्चर को जानेवाली थी। आज कोई काम न होता देख हम लाल-मैदान और उसके आगे टहलने के लिए निकल पड़े। चाहते थे लेनिन् का दर्शन करना। देखा लेनिन् की समाधि—जिसके भीतर शीशे की **शवाधानी** में लेनिन् का शरीर रखा हुआ है—के सामने दर्शकों की दोहरी लम्बी पंक्ति है। पंक्ति इतनी दूर तक बन चुकी है कि जाते तो हमारा नंबर हज़ारवाँ भी न होता। समाधि का दरवाज़ा थोड़े समय के लिए खुलता है; और उस लंबी क़तार में एक के बाद एक चलते हम जब तक दरवाज़े तक भी न पहुँचते तब तक दरवाज़ा बन्द करने का समय हो जाता। इसलिए हमें दर्शन का लोभ संवरण करना पड़ा।

दो घंटे घूम घाम कर लौटे। अँधेरा कभी का हो चुका था। हमने फिर आफ़िस में कमरे के बारे में पूछा। जवाब मिला—एक यात्री कमरा छोड़ने की बात कर रहा था, लेकिन अब तक वह गया नहीं। यदि चला गया तो आपको कमरा मिल जायगा। मैंने पूछा, यदि न चला गया तब? "तो हम कमरा कहाँ से देंगे?" घंटा भर और कुर्सी पर बैठे। देखा, एक एक करके आफ़िस की सभी कर्मचारिणियाँ चली जा रही हैं। अन्त में एक महिला रह गई। उसने कहा—हमारे हाथ में कोई कमरा नहीं। अब रात के १४ घंटे कुर्सी पर बिताने की समस्या थी और कुर्सी भी आराम कुर्सी न थी। लाचार हो मैं खुद होटल के डिरेक्टर के पास गया। उन्होंने अपने सहायक को ताकीद की, और अन्त में जैसें तैसे करके साढ़े ८ बजे ७७० नंबर की कोठरी मिली। कोठरी छोटी थी, लेकिन ख़ैर मिल गई, इसी को ग़नीमत समझा।

१५ जनवरी को ११ बजे **इन्तुरिस्त** के आदमी के साथ अफ़ग़ान-कौंसल के पास गये। थोड़ी देर बैठने के बाद सेक्रेटरी आये। उनसे मैंने **तेर्मिज्**, काबुल, ख़ैबर के रास्ते अफ़ग़ानिस्तान पार होने का वीज़ा माँगा। उन्होंने कहा—'आज तो वीज़ा तैयार नहीं हो सकता और कल है इतवार की

छुट्टी; इसलिए परसों आइए।' मैंने कहा—'मेरे लिए आज की ट्रेन से सीट रिज़र्व हो गई है।' ख़ैर, कुछ और कहने-सुनने पर तीन बजे वीज़ा देना स्वीकार किया। फ़ीस के बारे में पूछने पर बतलाया कि उसकी ज़रूरत नहीं।

मास्को की दर्शनीय चीज़ों को दो साल पहले तथा पिछले नवम्बर में देख चुका था, तो भी समय काटने के लिए कोई हीला चाहिए। पूछनें पर होटल से कुछ दूर एक सिनेमा का पता लगा। वहाँ एक अच्छा फ़िल्म दिखाया जा रहा था। मास्कों का नक़शा मैंने साथ लिया और न्यु-थिएटर के उस सिनेमा की ओर चल पड़ा। नक़शे में रास्ता समझ लिया था, लेकिन नक़शा बेचारा भी तो दो बरस पहले छपा था। सोचा, नहर के किनारे नाक के सीधे चले जायेंगे; लेकिन वहाँ तो कितनी ही सड़कों और मकानों को गिरा कर नये मकान बनाये जा रहे थे। उनके लकड़ी के घेरों में रास्ता भूल जाना कोई आश्चर्य की बात न थी। मुश्किल यह थी, कि मेरे पास जो नक़शा था, वह रूसी अक्षरों में नहीं था; और जर्मन नक़शे में लिखा न्यु-थिएटर नाम मैं किसी को समझा न सकता था। ख़ैर, न्यु-थिएटर जिस गृह-श्रेणी में है, वह असाधारण ऊँची इमारत है। और उसके दूर से दिखाई देने की आशा थी, इसलिए मैं निराश नहीं हुआ। हाँ, डर यह था कि अगर कहीं पहले शो (**सियाँस**=**दृश्य**) का टिकट खतम हो गया, तो दूसरे शो के लिए मेरे पास समय नहीं है। पहुँचते पहुँचते समय हो चुका था। मेरे पास **इन्तुरिस्त** का दिया हुआ काग़ज़ था और सीट पहले से रिज़र्व हो चुकी थी, इसलिए टिकट मिलने में देर न हुई। जब सिनेमा-घर में पहुँचे, तो दरवाज़े पर कोई पथ-प्रदर्शिका न थी; और ईंजानिब जानते न थे, कि कौन दर-वाज़ा भीतर जाने का है और कौन बाहर आने का। एक दो दरवाज़ों को खोलना चाहा किंतु वह भीतर से बन्द मालूम हुए। फिर तीसरे को हाथ लगाया, तो वह खुल गया। भीतर अँधेरा था और यह भी पता न था कि हमारा टिकट किस क्लास का है, और जिस कुर्सी पर हम वैठने जा रहे थे,

वह किस क्लास की है। जाकर दरवाज़े के नज़दीकवाली कुर्सी पर बैठ गये। फ़िल्म अभी अभी शुरू हुआ था। पहले महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन का दृश्य दिखलाया गया था, जो अभी ३ दिन पहले गुज़रा था। फ़िल्म भी मूक नहीं, टॉकी था। और वह भी दो-तीन मिनट का नहीं, काफ़ी देर का। महासोवियत् के दोनों भवनों—जातीय-भवन और संघ-भवन—के सदस्यों को बैठे दिखलाया गया। फिर सदस्य एक दरवाज़े की तरफ़ ध्यान से ताकने लगे। फिर वहाँ से एक घनी काली मूँछों से ढँके मुँहवाले बन्द गले का कोट पहने प्रसन्न-बदन तेजस्वी पुरुष को भीतर प्रवेश करते देखा। प्रवेश करते के साथ सारे स्त्री-पुरुष सदस्य खड़े हो गये। सब मस्त हो दोनों हाथों से तालियाँ पीट रहे थे। और मुँह से "हुरा स्तालिन्, हुरा **स्तालिन्** हमारा प्यारा स्तालिन् चिरंजीवी हो" के नारे लगा रहे थे। और यह नारे सिर्फ़ रूसी भाषा में नहीं लग रहे थे, फ़ारसी भाषा भाषी 'स्तालिन् ज़िन्दाबाद' कह रहे थे। उज़बेक, तुर्कमान, मंगोल, जार्जियन, याकूत आदि सोवियत् के भीतर की सभी जातियों के प्रतिनिधि अपनी अपनी भाषाओं में नारे लगा रहे थे। कई मिनट तक इसी तरह करतल-ध्वनि और नारे लग रहे थे। सदस्यों की शकल-सूरत नाना प्रकार की थी। कोई मूँछ-दाढ़ी-विहीन गोल आँखों और तिर्छी उठी भौंहोंवाला था, कोई गौर वर्ण भूरी मूँछ-दाढ़ीवाला, कोई कोट पतलून पहने हुए था और कोई सिर पर चिपकी गोल टोपी और लम्बे चोग़े की कमर में रूमाल बाँधे। औरतें भी अपनी चित्र विचित्र पोशाक में थीं।

नारे के शान्त होने के बाद स्तालिन् और दूसरे नेता जब अपनी कुर्सी पर बैठ गये, तो संघ-भवन के वृद्धतम सदस्य **श्च्खाया** ने एक छोटे से भाषण द्वारा अधिवेशन का उद्घाटन किया।

महासोवियत् फ़िल्म के बाद असली फ़िल्म का आरंभ हुआ। फ़िल्म एक क्रान्तिकारी के संबंध का था, जिसका वर्णन हम किसी और जगह करेंगे। लौटकर होटल आये तो अफ़ग़ान वीज़ा बन कर चला आया था।

टिकट लेते वक़्त मालूम हुआ कि जिस स्तालिनाबाद ट्रेन से हमें जाना था, उसमें नरम तीसरा दर्जा नहीं है। उसी किराये में हम **वेगनलिट्** के डब्बे में दूसरे दर्जे में जा सकते हैं। लेकिन सोने आदि के लिए तीसरे दर्जे की अपेक्षा ६० रूबल अधिक लगेंगे। मैंने कड़े तीसरे दर्जे से जाने की इच्छा प्रकट की। ज़्यादातर इस ख़याल से कि **वेगनलिट्** डब्बे में जाने पर मुझे साधारण सोवियत् यात्रियों के साथ का आनन्द नहीं मिलेगा; लेकिन जवाब मिला कि यह परिवर्तन लेनिन्ग्राद् में हो सकता था, मजबूरन् दूसरा ही दर्जा स्वीकार करना पड़ा।

***   ***

हमारी ट्रेन **कज़ान्** स्टेशन से खुलनेवाली थी। मास्को में कई स्टेशन हैं; जो भिन्न भिन्न दिशाओं के यात्रियों के लिए निश्चित किये गये हैं। स्टेशन पर पहुँचे तो वहाँ तिल रखने की जगह न थी। अपना बिस्तरा-बक्स लिए लोग बैठे ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे। वोल्गा-उपत्यका और मध्य-एशिया में निवास करनेवाली सभी जातियों के मुख और वेषभूषा आप वहाँ देख सकते थे। थोड़ी थोड़ी देर पर शब्द-प्रसारक यंत्र से ट्रेन के आने जाने की सूचना दी जा रही थी। **इन्तुरिस्त** के एजेंट ने भीड़ में हमारी बहुत मदद की। ट्रेन प्लेटफ़ार्म पर खड़ी थी। **वेगनलिट्** के डब्बे की ख़ास शकल होती है। यह ट्रेन यूरोप के सभी राष्ट्रों की रेलों पर गुज़रती रहती है। हमारी सीट सातवें डब्बे के ९ नंबर की थी। ऊपर की दोनों सीटों के यात्री हम से भी आगे स्तालिनाबाद तक जानेवाले थे। १० वज कर ४५ मिनट पर गाड़ी छूटी। रात को सो गये।

सवेरे दिन होने पर देख रहे थे, कि हम ऊँची-नीची पहाड़ी ज़मीन से गुज़र रहे हैं। चारों ओर बर्फ़ है। समय समय पर हरे देवदारों और नंगे भोजपत्रों का जंगल भी आ जाता है। मकानों की छतें अधिकतर फूस की हैं, जो बर्फ़ से ढकी हैं। दीवार का बहुत थोड़ा सा हिस्सा बाहर दिखाई

पड़ता है।

ट्रेन के बीच में भोजन-गाड़ी थी। भोजन-परोसिका पहले मध्याह्न भोजन करनेवालों से पूछ कर गिन्ती कर गई। फिर मध्याह्न-भोजन तैयार है, इसकी भी सूचना देती गई। नाश्ता तो हमने अपने पास की रोटी, मक्खन, मांस और डब्बे के प्रबंधक द्वारा प्राप्त मीठी चाय से कर लिया था। दोपहर बाद भोजन करने गये। दोनों कमरे की मेजों पर स्त्री-पुरुष बैठे थे। हमारे बैठते ही भोजन-सूची सामने ला कर रख दी गई। वहाँ गव्यादन्या, शूकर आदि के मांस, सूप तथा दूसरी चीज़ें मौजूद थीं। हमने अपने अनुकूल चीज़ें चुन कर लाने के लिए कहा। हमारे सामने की दोनों कुर्सियों पर दो तुर्कमान बैठे हुए थे। उन्होंने भी खाने के लिए फ़र्मायिश की। खाने की तश्तरी के साथ काँटा-चम्मच भी आया। पहले उन्होंने चम्मच से खाने की कोशिश की, लेकिन भोजन तश्तरी से बाहर निकल जाता था। दो तीन बार प्रयत्न करने के बाद चम्मच फेंक उन्होंने हाथ ही से खाना शुरू कर दिया। एक दिन में काँटा-चम्मच से खाना थोड़े ही सीखा जा सकता है। उस वक़्त मुझे हँसी आ रही थी, बाहर नहीं, भीतर। और वह भी उनके लिए नहीं, अपने लिए। ११-१२ साल पहले की बात है, मैं मद्रास प्रान्त में रेल से जा रहा था, एक दिन भोजन-गाड़ी में खाने चला गया। बैरा ने तश्तरी में खाना और छुरी, काँटा-चम्मच ला रखा। काँटा-चम्मच कभी हाथ से पकड़ा तो था नहीं, जब बैरा ने देखा कि काम बन नहीं रहा है, तो उससे नहीं रहा गया। वह बोल उठा—छोड़ दीजिए, हाथ ही से खाइए। हम कोई साहबी पोशाक में नहीं थे, तो भी हमारे ऊपर घड़ों पानी पड़ गया। यहाँ इस गाड़ी में न कोई हँसनेवाला था, न ताना देनेवाला। छुरी काँटे से खानेवाले रूसी भी जानते हैं, कि उनके मध्य-एशिया के भाई हाथ से ही खाते हैं। और हाथ से खाने से कोई नीच नहीं हो जाता। ग़लती करते देख वह सिखला भी देते हैं। वहाँ हँसने और शरमिन्दा होने की कोई ज़रूरत नहीं। दोनों जवान महासोवियत् के अधिवेशन देखने

के लिए अपने कोल्ख़ोज़् से मास्को आये थे, और अब सोवियत् सदस्यों, स्तालिन् और क्रेमलिन् का दर्शन कर उनकी मनोहर और अभिमानपूर्ण स्मृति को लेकर अपने कोल्ख़ोज़् (पंचायती गाँव) को लौट रहे थे। भोजन-गाड़ी में खाने का औसत १८ रूबल (८)) पड़ता था।

*** ***

१७ जनवरी को सवेरे भी हम ऊँचे-नीचे पहाड़ी मैदान से चल रहे थे। इधर बर्फ़ थी तो सही, लेकिन तह उतनी मोटी न थी। गाँवों के मकान अधिकतर फूस की छत के थे। मकान छोटे छोटे किन्तु साफ़ और अच्छे ढंग से बने और बसे थे, और सभी मकान गर्म किये हुए थे। उनकी चिमनियों से धुआँ निकल रहा था। दोहरी शीशे की खिड़कियाँ लगी हुई थीं। जगह जगह गेहूँ के डंठे और घास गँजी पड़ी थी। कुछ गंजों पर हिफ़ाज़त के लिए छत बना दी गई थी। जाड़े के कारण नंगे वृक्ष जहाँ तहाँ थे, लेकिन जंगल कम दिखाई पड़ते थे। नदी-नाले सभी जमे हुए थे। गाँवों के कुओं पर पानी खींचने के लिए गड़ारियाँ लगाई गई थीं। रास्ता अधिकतर पूरब की ओर था। ट्रेन मास्को के समय से सवा तीन बजे **ओरेन्बुर्ग** में पहुँची। गाड़ी कुछ देर खड़ी हुई। उतर कर हमने स्टेशन से बाहर देखा। **ओरेन्बुर्ग** कई लाख आबादी का एक बड़ा शहर है। लाल-क्रान्ति के समय यह एक बड़े ही महत्त्व का स्थान था और यहाँ सफ़ेद और लाल सेनाओं की जमकर लड़ाई हुई थी। क्रान्ति के एक वीर सेना-नायक चपायेफ़् की यह कौशलभूमि रहा है। तातार, मंगोल, रूसी, सभी तरह के स्त्री-पुरुष दिखाई पड़ रहे थे। लोग स्वस्थ और सुदृढ़ शरीर के थे। कोई कोई अधेड़ तातारनियाँ अब भी पायजामा पहने हुई थीं। औरतों का पायजामा सचमुच ही बहुत बुरी पोशाक है। सोवियत् के उन देशों में जहाँ इसलाम था, पायजामा स्त्रियों के लिए एक धार्मिक पोशाक सा बन गया था; और नये शासन में मजहब की तरह यह भी बहुत जल्द उड़ा है। शहर में कारख़ानों की अगणित चिमनियाँ दिखाई

पड़ती हैं। उराल् नदी पास से बहती है।

१८ को १० बजे बाद हम कज़ाक़-सोवियत्-साम्यवादी-रिपब्लिक से गुज़र रहे थे। अक्त्यार्विस्क नगर रात ही को गुज़र चुका था। ज़मीन समतल मैदान सी दीख पड़ती थी। जंगल और वृक्ष का कहीं नाम न था। ६ बजे सुबह गाड़ी पहाड़ पर से जा रही थी। कज़ाक़ मंगोल मुख-मुद्रा रखनेवाली जाति है। उनके धर्म के वारे में इतना ही कहा जा सकता है कि मध्य-एशिया की और जातियों की भाँति ये भी कट्टर मुसलमान थे। गाँवों के मकान पहले की अपेक्षा और भी छोटे छोटे थे, और इनकी छतें मिट्टी की थीं। अराल समुद्र के कई सौ मील पीछे अक्त्यार्विस्क से ही मिट्टी की छतवाले मकान शुरू होते हैं; और लखनऊ के बाद यह मिट्टी की छत खपरैल में बदलती है। मानों मकान की दृष्टि से अक्त्यार्विस्क, ताशकन्द, समरकन्द, बुख़ारा, बलख़, काबुल, पेशावर, रावलपिंडी, अम्वाला, सहारनपुर, मुरादाबाद, लखनऊ एक ही महादेश के भाग हैं। यहाँ अव खेत बहुत दिखलाई नहीं पड़ते थे। मैदान में सर्दी के मारे पीली पड़ गई छोटी छोटी घासें दिखाई पड़ती थीं; जिनमें भेड़ें और दोकोहानी ऊँट चर रहे थे।

१२ बजे (मास्को समय) हम चेल्कर स्टेशन पर पहुँचे। यह एक बड़ा स्टेशन और ख़ासा शहर है। बहुत सी मिट्टी के तेल की टंकियाँ हैं। तेल की टंकियों का इतना ज़्यादा होना ज़रूरी है, क्योंकि मोटर, लारी के अतिरिक्त सरकारी और पंचायती खेतों के ट्रैक्टरों के लिए भी तो काफ़ी इसकी आवश्यकता है। शहर रेल की सड़क के दोनों ओर बसा है। सर्दी के लिए तो हम नहीं कह सकते क्योंकि हमारी गाड़ी गर्म की हुई थी; लेकिन आगे वर्फ़ पतली होती जा रही थी। रेल के दोनों तरफ़ कोई जानवर सड़क पर न आ जाय, इसके लिए लकड़ी के चाँचरों की बाढ़ लगी थी। मैदान आया लेकिन वह ऊँचा नीचा था। एक स्टेशन पर मालगाड़ी खड़ी थी, जिस पर २० खुली मोटर-लारियाँ और १ कटरपिलर (ढोलानुमा) ट्रैक्टर लदा हुआ था।

बड़े स्टेशनों पर रूसी भी काफ़ी थे, लेकिन अब हम एशिया में चल रहे थे। इसलिए यहाँ कज़ाकों की संख्या ही अधिक थी। कज़ाक़ स्टेशन-मास्टर, और कज़ाक़ लाल-सैनिक ही ज़्यादा दिखलाई पड़ते थे। एक जगह हमारे ऊपर से हवाई जहाज़ उड़ता जा रहा था। हवाई जहाज़ों के पथ-प्रदर्शन के लिए कहीं कहीं सैकड़ों फ़ीट ऊँचे लोहे के ढाँचे बने हुए हैं। ताशकन्द और मास्को के बीच नियमित रूप से हवाई डाक चलती है। पहले ताश-कन्द और काबुल के बीच भी हवाई डाक का प्रबंध था। लेकिन बच्चा सक्का के बाद वह बन्द हो गई।

आज (१९ जनवरी) मास्को से चले पाँचवा दिन था। हम सिर-दरिया की वादी में पहुँच गये थे। अराल समुद्र रात ही छूट चुका था। क़ज़लबोर्द में कहीं कहीं बर्फ़ की चित्ती दिखाई पड़ती थी। अब मालूम होता था कि हम रूस की सर्दी पार कर चुके हैं। स्टेशन के बाहर ऊँटों और घोड़ों की गाड़ियाँ खड़ी थीं। घोड़ागाड़ियाँ ही अधिक थीं। कज़लबोर्द अच्छा क़स्बा है। मकान अधिकतर एक तल के तथा मिट्टी की छतों के हैं। मैं इस समय की बात कह रहा हूँ। यद्यपि इन मकानों ने अपने सामने शता-ब्दियों को झूठा किया है; लेकिन अब इनके दिन इने गिने रह गये हैं। कुछ ही वर्षों बाद जब कोई दूसरा भारतीय इधर से गुज़रेगा, तो इन मिट्टी की छतों के छोटे छोटे मकानों की जगह ईंट, सीमेंट और लोहे के बने महल देखेगा। अभी भी ऐसे मकान जहाँ तहाँ उठ रहे हैं। रूस के देवदारों की लकड़ियाँ मालगाड़ियाँ ढो कर ला रही हैं।

सिर-दरिया की वादी पर्वत-विहीन है। दो दो हाथ ऊँचे नर्कट और सरकंडे मीलों चले गये हैं। आजकल यह सूख कर पीले पड़ गये हैं; लेकिन गर्मी में इनकी हरियाली बहुत सुहावनी मालूम पड़ती होगी। नर्कट और सरकंडों के अतिरिक्त एक और लंबी घास खड़ी है, जिसकी चटा-इयाँ जहाँ तहाँ दिखाई पड़ती थीं। नदी के दोनों तरफ़ मीलों विस्तृत भूमि आसानी से खेत के रूप में परिणत की जा सकती है। इनके लिए

जहाज़ के अड्डे पर दो विशाल लोहे के ढाँचे खड़े थे, जिनकी लाल रोशनी मीलों से दिखाई देती थी।

२० जनवरी को ९ बजे (मास्को समय) सवेरे हम छोटे छोटे पहाड़ों में चल रहे थे। सभी पहाड़ नंगे थे। शायद बरसात के दिनों में कुछ हरी घास उग आती हो। बाईं तरफ़ दूर ऊँचे पहाड़ थे, जिनपर सफ़ेद वर्फ़ पड़ी हुई थी। यही हमारे हिमालय का पश्चिमी छोर है। शायद समुद्र-तल से हम कुछ ऊँचे थे, इसी कारण जहाँ-तहाँ बर्फ़ दिखलाई पड़ती थी। १० बजे हम ज़ीज़क स्टेशन पर पहुँचे। यहाँ हाते में पचासों ट्रैक्टर—जिनमें कितने ही **कटरपिलर** तर्ज के भी थे—खड़े थे। लोग मरम्मत में लगे हुए थे। जुताई का समय आ गया था। इस लिए ट्रैक्टर—जो जाड़े भर गुदाम में रखे पड़े थे—अब काम के लिए तैयार किये जा रहे थे। ट्रैक्टरों के अतिरिक्त वहाँ कितनी ही खुली मोटर लारियाँ भी थीं। शायद काटने, दाँवने की कम्बाइन मशीनें भी हों, लेकिन अभी फ़स्ल कटने के लिए कई महीने हैं; इस लिए उन्हें गुदाम के भीतर रखा गया है। जो पंचायती गाँवों को भाड़े पर मशीन देते हैं, उन स्थानों को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन कहा जाता है। यहाँ के मकान बहुत साफ़-सुथरे हैं। ऐसे गाँव में आकर ख़ामख़ाह नुकताचीनी करनेवाला यूरोपीय यात्री भी नाक-भौंह नहीं सिकोड़ सकता। सिर-दरिया से आमू दरिया तक फैले देश—जिनमें कज़ाक़, तुर्कमान, उज-बेक और ताजिक जातियाँ बसती हैं—को सोवियत् सरकार ने कपास की खेती के लिए रिज़र्व कर दिया है। यहाँ के लोगों के खाने के लिए गेहूँ बाहर से आता है। जिस प्रदेश में हम चल रहे थे, वहाँ उज़बेक जाति बसती है। हिन्दुस्तान में उज़बेक नाम ही सुन कर लोग हँस देते हैं। मुमकिन है, वे पहले हद से ज़्यादा सीधे सादे रहे हों। लाल क्रान्ति के समय तक वह मध्य एशिया की सब से अधिक अशिक्षित जातियों में थे, लेकिन अब उज़बेक उजबक नहीं हैं। अब ४० वर्ष से कम उम्र के स्त्री-पुरुषों में कोई अनपढ़ ढूँढ़े भी नहीं मिलेगा। हज़ारों उज़बेक रेल और सेना के अफ़सर हैं।

जहाँ तहाँ दिखाई पड़ी। स्टेशन से बाहर अनगढ़ पाषाणों की लाट पर लेनिन् का बस्ट (ऊर्ध्व-देह) था, जो शहर की ओर बड़ी गंभीरता से देख रहा था। शहर काफ़ी लम्बा चौड़ा है। मालूम होता है, बिजली यहाँ बहुत सस्ती है, क्योंकि उस वक़्त भी सड़कों पर बत्तियाँ जलती छोड़ दी गई थीं। काबुल जैसे मीठे सफ़ेद अंगूर यहीं हमें खाने को मिले। ख़ूबानी, सेव, नासपाती भी स्टेशन की दुकान पर बिक रही थीं।

शाम को हम एक गाँव के स्टेशन पर पहुँचे। ख़याल आया, पहले यह देश मुसलमानों का था; देखें, आदमियों में कितने देखने में भी मुसलमान से जान पड़ते हैं। स्टेशन पर मैंने ८० उज़बेक गिने, जिनमें सिर्फ ३ दाढ़ीवाले थे, और उन तीनों में से भी सिर्फ़ एक दाढ़ी को शरियतवाली दाढ़ी कहा जा सकता है। औरतों में एक भी पर्दावाली न थी। अब भी बहुतों की पोशाक पोस्तीन या रुई भरे चोग़ों की थी। लेकिन यह शायद जाड़े के कारण हों। गर्मियों में ज़रूर अधिकांश लोग कोट-पतलून का ही व्यवहार करते होंगे। मध्य-एशिया के सभी स्टेशनों पर कुछ न कुछ रूसी स्त्री-पुरुष दिखलाई पड़े।

***   ***

आज (२१ जनवरी) मास्को से चले सातवाँ दिन था। और हम लगातार एक ही गाड़ी में आ रहे हैं। यद्यपि हमें आज ही उतर जाना है, लेकिन गाड़ी कल आठवें दिन अपने अन्तिम स्थान स्तालिनाबाद पहुँचेगी। ६ बजे सवेरे वे ही नंगे पर्वत हमारे आसपास थे। हाँ, बर्फ़ का कहीं पता न था। रात को हम **कगान** स्टेशन पार कर चुके थे। यहाँ से बुख़ारा कुछ ही दूर पर पड़ता है। इस वक़्त हम तुर्कमानियाँ सोवियत्-सोशलिस्त-रिपब्लिक की भूमि पर चल रहे थे, और जल्द ही हम फिर उज़बेक रिपब्लिक में दाख़िल होनेवाले थे। पहाड़ों के बीच में ज़मीन मैदान सी ही जान पड़ती थी। पशुओं के चरने के लिए काफ़ी घास थी। तुर्कमान लोग चेहरे में

मंगोल जैसे हैं। लेकिन क़द में ज़्यादा लम्बे-चौड़े। इनकी स्त्रियाँ—जिनमें से बहुतों ने अपनी पुरानी वेशभूषा को नहीं छोड़ा है—दस दस इंच ऊँची पाँच पाँच सेर की पिटारी सी पगड़ी सिर पर बाँधती हैं। शायद इस पोशाक से ही, इनमें बदसूरती बहुत ज़्यादा है। जिस जगह से हम गुजर रहे थे, वहाँ खेत कम हैं। एक स्टेशन पर देखा, पास में कुछ तुर्कमान-परिवार पहले से बनी मिट्टी की गोल दीवारों पर अपना काला तम्बू खड़ा कर रहे थे। उनके गदहे और भेड़ें आस पास चर रही थीं। मालूम होता है, अब भी इनमें कुछ ख़ानाबदोश हैं। ख़ानाबदोशों में भी बहुत से पंचायती पशुपालन करते हैं। कह नहीं सकता, ये परिवार पंचायती थे, या वैयक्तिक।

हमारी दाहिनी ओर दूर से **वक्षु गंगा** (आमू दरिया) जा रही थी। आगे लाल-सेना की एक छोटी चौकी मिली। सैनिकों के रहने का मकान दो-तल्ला और ईंट का बना हुआ है। सिपाहियों में अधिक रूसी मालूम पड़ते थे। आगे एक लम्बी सुरंग से हमारी रेल पार हुई। मालूम हुआ इसी सुरंग की रक्षा के लिए यह फ़ौजी चौकी थी। आख़िर हम सोवियत् की सीमा पर भी तो थे। यही वक्षु नदी सोवियत् भूमि को अफ़ग़ानिस्तान से अलग करती है। अफ़ग़ानिस्तान से क्या डर हो सकता है, लेकिन उसके बाद ही ब्रिटिश-अधिकृत भारत जो आ जाता है, जिसके कि सीमान्त पर अंग्रेज़ों ने एक बड़ी फ़ौज जमा कर रक्खी है।

छोटे छोटे कई स्टेशन आये। गाँव के मंगोल मुख-मुद्रा रखनेवाले लोगों में पुरानी पोशाक ज़्यादा थी। लेकिन ताजिक जो मुख-मुद्रा और भाषा में ईरानियों से ज़्यादा मिलते हैं, बल्कि शकल-सूरत और स्त्रियों के सिर की टोपी में काश्मीरियों जैसे जान पड़ते हैं, अधिक शिक्षित और होशियार हैं।

२॥ बजे (स्थानीय १२॥ बजे) हम **तेर्मिज्** स्टेशन पर पहुँचे। गाड़ी में यद्यपि हम उतने ज़्यादा परिचित नहीं बना पाये, जितने कि तीसरे दर्जे में सफ़र करने पर करते; लेकिन तो भी जो परिचित हुए, उनसे

विदाई ली। भरिया ने सामान नीचे उतारा। पता लगाने पर एक फ़ारसी भाषा-भाषी ताजिक मिल गये। उनके साथ जाकर स्टेशन में लगेज के बारे में पूछा। पार्सलघर में भी ढूँढ़ा लेकिन मालूम हुआ, हमारे बक्स इस ट्रेन से नहीं आये। पूछापाछी करने पर बतलाया गया, शायद कल या परसों आ जायेंगे। ताज़िक् सज्जन से हमने कोई रहने की जगह पूछी। उन्हों ने बतलाया, होटल शहर में हैं जो यहाँ से ५ किलोमीतर (प्रायः सवा तीन मील) है। उन्होंने कोल्ख़ोज़् नमूने के चायख़ाने में पहुँचाया। चाय माँगने पर एक तीन पाव की गोल चायदानी में हल्के हरे रंग का गर्म पानी और एक पाव भर दूध रखने लायक़ चीनी का प्याला सामने रख दिया गया। पानी को प्याले में डाल कर मुँह से लगाया, तो मालूम हुआ कि न उसमें नमक है, न चीनी। जैसे बुख़ार का काढ़ा दिया गया हो। समझने में मुझे देर न लगी, क्योंकि चीन और जापान में भी तो ऐसा ही काढ़ा मिलता है; लेकिन जापान में नन्हीं नन्हीं प्यालियाँ होती हैं। दो चार घूँट चाय पीनी पड़ती है। यहाँ एक बर्तन का बर्तन सामने रख दिया गया है। चायख़ाने में देखा, इसी तरह की चायदानियाँ पचासों की संख्या में कतार से सजाकर रखी हैं, और हर चायची को एक एक चायदानी भर कर प्याले के साथ नज़र की जा रही है। मैंने दो चार घूँट पीकर प्यास बुझाई। तन्दूर की एक रोटी चीनी के साथ खाकर क्षुधा शान्त की। सामान अब भी हमारे साथ था। हम फिर स्टेशन पर गये। पहला काम पासपोर्ट के झगड़े से निबटना था। पता लगाने पर मालूम हुआ कि पासपोर्ट आफ़िस भी शहर में है। स्टेशन ही से इन्द्रुस्को मुसाफ़िर के आने की ख़बर पासपोर्ट आफ़िस को दे दी गई। रसीद लेकर हमने अपना सामान लगेज-घर में रख दिया। स्टेशन से शहर को फ़िटेन और मोटर थोड़ी थोड़ी देर पर जाती रहती हैं। ख़ाली हाथ थे, जल्दी का कोई काम भी न था, इसलिए पैदल ही चल पड़े। सड़क गोल मोल पत्थरों की बनी है। बाईं तरफ़ कुछ पक्के घर भी बने और बन रहे हैं। कुछ बरसों में शहर स्टेशन तक

पहुँच जायगा; लेकिन अभी आसपास सभी खेत हैं, जिनकी एक बार जुताई हो चुकी है। तिर्मेज़ शहर में पंच-वार्षिक-योजनाओं ने उतनी काया पलट नहीं की है। अभी भी उसकी बहुत सी सड़कें कच्ची हैं। पानी बरस जाने पर उन पर बहुत कीचड़ उछलने लगता है। हाँ, सारे शहर (? क़स्बे) में बिजली की रोशनी है। अभी पानी का नलका भी नहीं है। और पाख़ानों का प्रबन्ध भी असन्तोषजनक है। मकान अधिकतर एकतल्ले हैं। यद्यपि अपनी श्रेणी के दूसरे एशियाई क़स्बों से तेर्मिज़् की इमारतें कहीं बढ़ चढ़कर हैं। अफ़्ग़ानिस्तान से जानेवाले सौदागरों के लिए तो यह स्वर्गपुर का एक खंड मालूम होता है, लेकिन जिसने रूस के अन्य शहरों और कस्बों को देखा है, उसके लिए तिर्मिज़ की अवस्था उतनी प्रशंसनीय नहीं होगी। ज़ारशाही के ज़माने में भी घुड़सवार और दूसरी फ़ौज यहाँ रहती थी। आजकल भी उस वक़्त की फ़ौजी छावनी के बहुत से घर मौजूद हैं। ऐसे एक घर पर लिखा था—१८९९ अर्थात् ३८ वर्ष पहले वह मकान बना था। इन पुराने मकानों में जिस प्रकार के सिपाही रहते थे, उनमें और आज के सोवियत् सिपाहियों में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। आज कल का हर एक सिपाही कम से कम सात-आठ साल स्कूल की शिक्षा पा चुका है। हर चार में से तीन सिपाही कल-मशीन की बातों को अच्छी तरह जानते हैं। तिर्मिज के ज़ारशाही ज़माने के सिपाहियों में जहाँ रूसी ही सब कुछ थे, वहाँ आज एशियाई और रूसी कन्धे से कन्धा मिलाये, मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार हैं। गोरे-काले का भाव अब कहानी की बात हो गई है। शहर के पूरब तरफ़ हवाई जहाज़ों का अड्डा है। उधर नई बनी हुई इमारतें ज़्यादा अच्छी हैं। तिर्मिज़ का जो चित्र मैंने यहाँ खींचा है; बहुत संभव है, अगले दो तीन वर्षों में ही वह सब लुप्त हो जाय और उसकी जगह लोहे और सीमेंट के बने बड़े बड़े महल, स्फाल्ट बिछी चौड़ी सड़कें और सिवरेज्-नहरों द्वारा शहर की गन्दगी की सफ़ाई का प्रबन्ध होकर तिर्मिज़् नया रूप धारण कर ले।

पासपोर्ट-आफ़िस में कर्मचारी एक रूसी महिला थीं। वह सिर्फ़ रूसी और उज़बेक भाषा जानती थीं। मेरा रूसी का ज्ञान अत्यन्त अल्प है, और सवा महीने बाद जब यह पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, तो वह ज्ञान भी बहुत सा विस्मृत होता जा रहा है; तो भी रूसी भाषा में काम चलाने में मुझे कोई दिक़्क़त न होती थी। महिला ने पासपोर्ट ले लिया। चूँकि, अभी मेरा सामान नहीं आया था; इसलिए सीमा पार करने का अभी कोई सवाल ही नहीं था। महिला का बर्ताव बहुत ही शिष्ट था। उन्होंने रहने के लिए सामनेवाला **गस्तिनित्सा** (होटल) बतला दिया। मैंने सोचा, ऐसी जगह रहूँ, जहाँ फ़ारसी जानने वाले भी मिलें, तो मुझे बोलने चालने का सुभीता रहेगा। पूछने पर उन्होंने **अफगान्स्की** सराय के लिए एक चिट लिख कर पता बतला दिया। अफ़्गान्स्की सराय शहर के एक कोने में अवस्थित हाटवाले बाड़े के अन्दर है। चौकीदार एक ताजिक वृद्ध है; जो क्रान्ति से पहले ही अफ़्गानिस्तान से आकर यहाँ बस गया था। अपनी उज़बेक औरत से उसके कुछ बच्चे भी हैं, जिनमें से एक लड़की स्कूल की अध्यापिका है। बूढ़ा अब भी वेषभूषा में कुछ पुराना जैसा मालूम होता है। लेकिन लड़की केशच्छिन्ना स्कर्ट-धारिणी यूरोपीय तरुणी के रूप में परिणत हो गई है। बूढ़े चौकीदार ने एक कोठरी में जगह दी। उसी कोठरी में पहले से ही एक पठान सौदागर आकर ठहरे थे। मुझे अब स्टेशन से सामान लाने की सूझी और एक फ़िटन कर वहाँ से सामान उठा लाया।

***   ***

पठान सहवासियों के लिए जो कुछ वह **तिर्मिज़** में देख रहे थे वह आश्चर्य की बात थी। हम तो मास्को, **लेनिन्ग्राद्** तथा रूस के दूसरे क़स्बों और शहरों से तुलना कर के **तिर्मिज़** को हेच समझ रहे थे, और वह इसकी तारीफ़ के पुल बाँध रहे थे। इन सौदागरों में कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने १५ साल पहले के **तिर्मिज़** को देखा था। एक सज्जन कह रहे थे—पाँच छः साल

पूर्व यहाँ रोटी बड़ी महँगी थी। अब तो बड़ी सस्ती है और जितनी चाहिए, उतनी मिल जाती है। गोश्त और मक्खन भी दुर्लभ थे और आज उनके लिए कुछ दाम ज्यादा जरूर देना पड़ता है, लेकिन वह बड़े सुलभ हैं। अफ़्ग़ानली सराय का मकान पहले मजारशरीफ़ (अफ़्ग़ानिस्तान) के एक मुल्ला की सम्पत्ति थी, और हमारे पठान साथियों के ख़याल में अब भी वही मुल्ला उसका मालिक है। मैंने पूछा भी—यदि मुल्ला मालिक है, तो सराय की मरम्मत क्यों नहीं की जा रही है? क्यों दीवार और दरवाजे टूटते फूटते जा रहे हैं? तिर्मिज़ की और इमारतों की मरम्मत की ओर से बहुत कुछ उपेक्षा देखकर मुझे तो शक हो रहा है कि शायद सरकार शहर को नये तौर से तामीर करना चाहती है; इसीलिए पुरानी इमारतों की मरम्मत पर बहुत धन और श्रम खर्च करना नहीं चाहती।

आज (२२ जनवरी) लेनिन् की मृत्यु-दिवस के उपलक्ष्य में छुट्टी थी। आफ़िसों और बड़े बड़े मकानों पर शोक-सूचक काले हाशिये के लाल झंडे लगे हुए थे। मैंने दोपहर बाद शहर के कुछ हिस्सों को विशेष तौर से देखना चाहा। जाते जाते एक स्कूल के पास से गुज़रा। इमारत दो-तल्ले की थी और ईंट-चूने की बनी थी। नीचे और ऊपर दोनों फ़र्श चौकोर ईंटों जैसे लकड़ी के थे। वैसे इमारत मजबूत, साफ़ और हवादार थी, लेकिन लकड़ियों पर विशेष कर फ़र्श की लकड़ियों पर वार्निश की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया था। मुझे यह भी खटक रहा था। क्योंकि मैंने लेनिन्ग्राद् के स्कूलों को देखा था। दरवाजा खोलकर भीतर गया। चौकीदार ने एक कक्षा में मुलाक़ात करवाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं इन्दुस् हूँ और स्कूल देखना चाहता हूँ, तो उन्होंने सादर कमरों को दिखलाना शुरू किया। छुट्टी के कारण आज छात्र नहीं थे। सिर्फ़ एक कमरे में कुछ माल्चिक् और देवोच्का (बालक और बालिका) बेंचों पर बैठे बातचीत कर रहे थे। यह एक प्राइमरी स्कूल था और सो भी सोवियत् के भीतर एक बहुत ही मामूली स्थिति का। लेकिन इस

की इमारत हमारे यहाँ के बहुत से हाई स्कूलों की इमारतों से भी बढ़ चढ़ कर थी। वृद्धा नीचे के कमरों को दिखलाकर ऊपर के कमरों को दिखाने ले चलीं। वहाँ मुझे फ़ोटो के कमरे में जाने पर एक उज़बेक अध्यापक मिले जो कुछ फ़ारसी भी जानते थे। पूछने पर मालूम हुआ कि वह भूगोल पढ़ाते हैं। वहाँ दो तीन लड़के लड़कियाँ बैठी हुई थीं, जिनका फ़ोटो एक लड़का अपने अध्यापक के परामर्शानुसार ले रहा था। अर्थात् प्राइमरी के लड़कों को फ़ोटो खींचना सीखने का भी वहाँ प्रबन्ध था। अभी चन्द ही मिनट मैं वहाँ ठहरा था कि दो प्योनिर्काओं का एक डेपुटेशन फ़ोटो के कमरे में दाख़िल हुआ। पूछा—आप इन्दुस हैं? मैंने कहा—हाँ! कहा—कुछ प्योनीर् और **प्योनिर्का** नीचे कमरे में जमा हैं, क्या आप हमें हिन्दुस्तान के बारे में कुछ सुना सकते हैं? मैंने कहा—सुनाने में कोई उज्र नहीं है लेकिन मुझे उतनी रूसी भाषा नहीं आती। कहा—हमारा एक सहपाठी ताजिक है, वह फ़ारसी से रूसी कर के हमें समझा देगा। लड़कियों की अवस्था १० वर्ष के आस पास होगी। टाल-मटोल करने की इच्छा की तो बात ही क्या, मुझे खुद आकांक्षा थी कि इन बालक-बालिकाओं को नज़दीक से देखने की। भला ऐसे सुअवसर को मैं कैसे अपने हाथ से दे सकता था। कमरे में २० के करीब बालक-बालिकाएँ होंगी। सोवियत्-भूमि में पाठशाला, विश्वविद्यालय, क्लब, पंचायत, पार्लियामेंट, कहीं भी स्त्री-पुरुष के लिए अलग संस्थाएँ नहीं हैं; और न स्त्रियाँ ऐसी कमज़ोर हैं कि उनके स्वत्वों की रक्षा के लिए विशेष रक्षा का आयोजन किया जाय। प्योनीर् और **प्योनिर्का** का भी संगठन एक है। आज तवारिश् लेनिन् के मृत्यु-दिवस को अच्छे ढंग से मनाने के लिए यह मंडली जमा हुई थी। कमरे में दाख़िल होने पर सभी अपनी अपनी जगहों पर बैठे रहे। यद्यपि एक अजनबी के देखने से दिल में जो कूतूहल हो रहा था, उसकी छाप उनके मुँह पर भी थी। छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त दो-तीन अध्यापिकाएँ भी एक ओर की बेंच पर बैठी थीं। दर्शक-मंडली में रूसी, ताजिक और उजबेक तीनों थे। रूसी और

उजबेकों की संख्या बराबर थी, ताजिक छात्र कम थे। एक दस वर्ष का ताजिक बालक स्वयं आ कर हमारे बग़ल की कुर्सी पर बैठ गया। विद्यार्थियों की तरफ़ से प्रश्नों की बौछार शुरू हुई और वह ताजिक बालक अपनी भाषा में उसका अनुवाद मेरे लिए करने लगा। वैसे फ़ारसी का ज्ञान भी मेरा बहुत गंभीर नहीं है, और फिर वह बोल रहा था ताज़िकिस्तान की फ़ारसी, जो ईरानियों के ख़याल में एक गँवारू फ़ारसी है—किताब को वह कितोबे कहता था। पिसरान को पिसरोने, इस प्रकार अनुवादक के कथन का आधा भाग हमारे पल्ले पड़ता था और हमारे कथन का आधा भाग उस के पल्ले। श्रोतृ-मंडली के पास तो यदि चौथाई भी पहुँच जाता हो तो ग़नीमत ही समझिए। पहले हमारी यात्रा किस रास्ते हुई, यह पूछा गया। एक बड़ा नक़शा दीवार पर टाँग दिया गया और जब हम ने कहा—क्वेटा, तेहरान, बाकू, मास्को, लेनिन्ग्राद् **ओरेन्बुर्ग**, ताशकन्द, समरकन्द, **तिर्मिज़;** तो भूगोल-अध्यापक ने लकड़ी से नक़शे पर वह सारे स्थान दिखला दिये। आगे के रास्ते के बारे में हम ने बतलाया—आमू-दरिया, मज़ारशरीफ़्, काबुल, पेशावर। फिर पूछा—हिन्दुस्तान में **प्योनीर्** और **प्योनिर्का** कैसे होते हैं। हम ने कहा—उन्हें हम लोग स्काउट कहते हैं। हमारे यहाँ हर एक बालक-बालिका को स्काउट बनने का मौक़ा नहीं मिलता।

"क्यों ?"

"क्यों कि बहुत से बच्चों के माँ बाप ग़रीब हैं। उन बच्चों को पढ़ने का मौक़ा कहाँ ? उन्हें तो पेट के लिए काम करना पड़ता है।"

"काम ? कितने घंटे ?"

"घंटों की गिनती नहीं। सूर्योदय से ले कर सूर्यास्त तक और बाद भी।"

"ओह ! इतना काम ! और कितनी उम्र के बच्चों के लिए ?"

'तुम्हारी उम्र के। और तुम से छोटी उम्र के बच्चों के लिए।"

"ओह ! तो इन्दुस् बच्चे बहुत तकलीफ़् में होंगे !"

एक लड़का बोल उठा—"आप के यहाँ **कापितलिस्त** (पूँजीपति)

हैं क्या ?"

हमने कहा—"हमारे यहाँ के सभी कल-कारखाने, धन-धरती, कापितलिस्तों के ही हाथ में है। क्या तुमने **कापतलिस्त** देखे हैं ?"

"नहीं।"

एक लड़की बोल उठी—"हाँ, देखा है, फ़िल्म में !"

एक लड़का पूछ बैठा—"युद्ध में तुम लाल-सेना के साथ हो या सफ़ेद सेना के ?"

मैंने कहा—"हमारे यहाँ अभी लाल और सफ़ेद सेना का युद्ध नहीं हो रहा है। वह हमारे देश से बहुत दूर चीन और स्पेन में हो रहा है।"

एक ९ वर्ष का रूसी लड़का **ताबड़तोड़** सवाल कर रहा था। हमारी बग़ल में एक बड़ी उम्र का उजबेक या तुर्कमान लड़का खड़ा था। उसने एक बार हमारे वाक्य के अनुवाद करने की धृष्टता कर दी। ताजिक लड़का लड़ पड़ा—"तुम ग़लत अनुवाद कर रहे हो'। मुझसे दोबारा वाक्य दोहरवाया गया और सचमुच उस लड़के का अनुवाद ग़लत साबित हुआ। इसके बाद लड़कों ने पूछा—'आपके पास अपने देश के सिक्के हैं ?

मैंने कहा—'अपने देश के तो नहीं, हाँ कुछ अंगरेज़ी सिक्के हैं।' फिर उन्होंने शिलिंग, पेंस के चाँदी ताँबे के सिक्के तथा १० शिलिंग वाले नोट लेकर देखे। अन्त में **इन्दुस्** प्रोफ़ेसोर को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

*** ***

१. कोल्खोज़्

कोल्ख़ोज़् देखने की हमारी बड़ी इच्छा थी। पूछने पर कुछ कोल्ख़ोज़ों के नाम मालूम हुए। सबसे नज़दीक तिर्मिज़ से बाहर स्टेशन जाने वाली सड़क की बाईं ओर ज़रा हटकर कोल्ख़ोज़् बेनुल्मलल् था। हम स्वयं अकेले पैदल चल कर वहाँ पहुँच गये। यह डेढ़ सौ उज़बेक घरों का गाँव पूछने पर कोल्ख़ोज़् के आफ़िस में पहुँचा दिया गया। आफ़िस के दर-

वाज़े पर बिजली लगी हुई थी और बाहर रेडियो का शब्द-प्रसारक यंत्र। दो मुस्तैद जवानों ने उजबेक भाषा में कुछ पूछा। फिर हमारी अज्ञता देख कर एक ने रूसी में बात की। लेकिन हम दोनों ही रूसी में इतने कच्चे थे कि एक दूसरे को समझाना कठिन था। आफ़िस की मेज़, कुर्सियों और बाहर की मिट्टी की दीवार और मिट्टी की छत को देख कर हमने स्कूल का रास्ता पूछा। आज (२२ जनवरी) स्कूल बन्द था। मकान मिट्टी का ही था लेकिन उसमें काफ़ी खिड़कियाँ और बेंचें थीं। दीवार में सफ़ेदी भी हुई थी। बच्चाख़ाने के बारे में पूछने पर बतलाया––"उसकी ज़रूरत खेत जोतने बोने और फ़सल काटने के वक़्त होती है। आजकल तो औरतों के लिये बाहर बहुत काम नहीं होता।" गाँव की एक तरफ़ देखा, कुछ हट्टे कट्टे जवान नहर की मरम्मत में जुटे हुए हैं। मकानों के पास और छतों पर कपास का सूखा डंठल ईंधन के लिए जमा किया हुआ था। गाँव के भीतर जाने पर अजनबी समझ कर दो आदमी मेरे पास आये। मेरी बात न समझ पाने पर वह मुझे एक अधेड़ पुरुष के पास ले गये। वह एक काम करनेवाली टोली का ब्रिगादीर (ब्रिगेडियर या नायक) था। भाषा की कठिनाई देखकर मैंने सिर्फ़ कोल्ख़ोज़् नमूना के बारे में पूछा, जिसका नाम मैं पहले सुन चुका था। मालूम हुआ, वह स्टेशन से ढाई तीन मील पर है। मैंने गाँव के पंचायती किसानों में एक बात ख़ास देखी। उनमें संकोच, शर्मीलापन और अपने को छोटा समझने का भाव बिलकुल नहीं था। वे बहुत ही अकृत्रिम किन्तु भद्रता के साथ हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ते थे।

***　　　***

२. कोल्ख़ोज़्-नमूना

२३ तारीख़ को भी तातील थी। यद्यपि हमारे बक्स कल ही मिल गये थे; लेकिन छुट्टी के कारण पासपोर्ट का काम नहीं हो सकता था। हमने आज कोल्ख़ोज़् नमूना देखना निश्चय किया। संयोग से स्टेशन पर उसी गाँव

का एक आदमी मिल गया। उसकी ज़बान फ़ारसी थी। स्टेशन के पास रेल पार कर हम कच्ची सड़क से आगे बढ़े। थोड़ी दूर पर हमें जुते हुए विशाल खेत मिलने लगे। यद्यपि ये खेत भी कोल्ख़ोज़्-नमूने के थे, लेकिन बस्ती अभी बहुत दूर थी। बीच में हमने पानी की छोटी छोटी नहरें (कूल) पार कीं। साथी ने बतलाया—'दस बारह बरस पहले यह सारी ज़मीन ग़ैर-आबाद थी। वक्षु गंगा की नहर ने इस ज़मीन को आबाद किया। सारे गाँव में सिर्फ़ कपास की खेती होती है। बात करते करते हम गाँव में पहुँच गये। एक ऊँची जगह पर कुछ घर हैं, जिनमें एक स्कूल के लिए, दूसरा मालगोदाम के लिए, तीसरा चौथा गायों और घोड़ों के लिए है।

पहले हमारा परिचय गाँव के अध्यापक से कराया गया। अध्यापक उजबेक थे, लेकिन वह फ़ारसी जानते थे। विद्यार्थी भोजन की छुट्टी में थे। इसलिए अध्यापक महाशय चाय पिलाने का आग्रह कर स्कूल के मकान के पीछे की ओर अपने रहने के कमरे में ले गये। मकान की दीवार और छत तो वैसी ही थी, जैसी लखनऊ ज़िले के देहाती मकानों की। हाँ, उसकी लिपाई अच्छी, तथा दरवाज़े खिड़कियाँ काँच की लगी थीं। भीतर कुर्सी मेज़ तथा आलमारी भी थीं। घर के भीतर दाख़िल होते ही बग़ल की कोठरी से एक भूरे बालोंवाली तथा लाल-गोल-चेहरेवाली मोटी-ताज़ी तरुणी निकल आई। उजबेक युवक ने पत्नी कहकर उसका परिचय कराया। मेम एशियाई की औरत हो, यह सोवियत् मध्य-एशिया में कोई आश्चर्य की बात नहीं समझी जाती। हाँ, यह कहा जा सकता है कि दो सौ घरों के इस छोटे से गाँव और इस कच्चे मिट्टी के मकान में ऐसे दम्पती! लेकिन सोवियत् की औरतें तितली नहीं बनतीं। तितली बनने का उन्हें अवसर ही कहाँ है? पति की कमाई पर तो स्त्री गुज़र नहीं करती। हर एक औरत अपनी रोज़ी आप कमाती है। मेम रखने से ख़र्च और फ़र्माइश अधिक बढ़ जायगी—यह ख़याल होता; तो यह उजबेक अध्यापक इस रूसी तरुणी से शादी करने की हिम्मत थोड़े ही करता। मेरे सामने

रूसी मिठाइयों की एक तश्तरी रख दी गई और साथ में कुछ तन्दूरी रोटियाँ। तरुणी चाय पकाने के लिए कोठरी के भीतर चली गई और मैं, अध्यापक तथा पहले के साथी महम्मदोफ़् मेज़ के किनारे बैठकर खाने और ग़प करने लगें। चायपानी और प्यालों के आ जाने पर आग्रह हुआ कुछ अंडों के आमलेट बनाने के लिए। मैं खाकर तो गया नहीं था और तीन चार मील चलने से भूख भी लग आई थी। ऊपर के मन से एकाध बार नहीं-नुहीं की, और फिर आग्रह को मान लिया। चाय-पान नहीं हुआ बल्कि यह तो भोजन ही हो गया। मालूम हुआ, स्कूल के यही दोनों पति-पत्नी अध्यापक हैं। चाय पीने के बाद हमें पहले क्लबघर की ओर ले गये। क्लबघर नया बन रहा है। ईंटों की दीवारें तैयार हो चुकी हैं। बढ़ई दरवाज़े और खिड़कियाँ बना रहे हैं; और छत डालने की तैयारी हो रही है। गाँव के क्लब से यह मतलब न समझिए कि एक दो छोटी सी अन्धेरी धुन्धेरी कोठरियाँ होंगी। वहाँ बीच में ५००–६०० आदमियों के बैठने लायक़ एक हाल है। आमने सामने वराण्डा और अग़ल-बग़ल में ५ बड़े बड़े कमरे। हॉल है प्रति सप्ताह आनेवाले चलते फिरते बोलते सिनेमा-फ़िल्मों तथा जब तब आनेवाली नाटक-मंडलियों के प्रदर्शन के लिए। यही हॉल राजनीतिक, सामाजिक सभाओं, नाच-गाने की पार्टियों के लिए भी इस्तेमाल होगा। अग़ल-बग़ल के कमरे पुस्तकालय, वाचनालय आदि के लिए इस्तेमाल होंगे। सोवियत्-निवासियों के क्लबघर मनुष्यों की शिक्षा और मनोरंजन की इतनी सामग्री जुटा देते हैं, कि मसजिद-गिरजे लोगों के मन से भी भूल जाते हैं।

क्लबघर से हम ग्राम-सोवियत् के कार्यालय में गये। दो तीन कमरे थे। एक कमरे में कुर्सी मेज़ और उज़्बेक-भाषा के कुछ अख़बार पड़े थे। एक आदमी कार्यालय में लिखापढ़ी का काम कर रहा था। एक जगह गाँव के कुछ बूढ़े रूई की ढेंढ़ी से पत्तियाँ हटा रहे थे। मध्य एशिया में सब जगह मिस्री रुई बोई जाती है, और एक फ़सल में आठ बार कपास चुनी जाती है। अन्तिम बार की चुनी रुई उतनी अच्छी नहीं होती। जो ढेर यहाँ लगा हुआ

था, वह अन्तिम वार की रुई का था। फिर हम अस्तवल में गए। एक लंबा घर था जिसके एक तरफ़ दीवार के सहारे घास डालने की पतली चबूतरी बनी थी। पीछे की दीवार की खूँटियों पर घोड़ों का साज़ और चारजामा टँगा था। साज़ और चारजामे में लगे सभी पीतल चमचम चमक रहे थे। ६० घोड़ों की घुड़साल होने पर भी गंध नहीं थी। घुड़साल में ही दो चबूतरे देखभाल करनेवाले के सोने के लिए बने थे। वहाँ की व्यवस्था किसी रिसाले की घुड़साल से भी अच्छी थी। घोड़े इस वक़्त बाहर गये हुए थे, इसलिए उन्हें हम देख नहीं सके। कोल्ख़ोज़् की गोशाला में १०० गायें हैं। गोशाला साफ़ सुथरी थी। गायें वहाँ मौजूद न थीं।

नई जिन्दगी

कोल्ख़ोज़् नमूना के पास ८०० एकड़ खेत है और २०० घर। पिछले साल इस कोल्ख़ोज़् ने आठ लाख रूबल की कपास बेची और तवारिश महम्मदोफ़् कह रहे थे, कि हर एक घर को उससे ५ हज़ार रूबल तक की आमदनी हुई। पंचायती खेत, घोड़े और गाय के अतिरिक्त हर एक घर को आधा आधा, चौथाई चौथाई एकड़ ज़मीन अलग मिली है। इनकी जुताई ट्रैक्टर से हो जाती है, और घरवाले इनमें ख़रबूज़े, तरबूज़, शाक सब्ज़ी उगाते हैं। घर पीछे एकाध गाय, दो चार भेड़ें, दो एक सुअर और १०–१५ मुर्ग़े-मुर्ग़ियाँ, निजी सम्पत्ति के रूप में हैं। कोल्ख़ोज़्-नमूना के स्त्री-पुरुषों और लड़के-लड़कियों के कपड़े और शरीर देखने से ही मालूम पड़ता था कि भूख और दरिद्रता को उन्होंने कोसों दूर भगा दिया है। इन्हीं उज़बेक लोगों की जाति के लाखों आदमी वक्षु-गंगा के इस पार अफ़ग़ानिस्तान में बसते हैं। उनकी दरिद्रता हमारे भारत के गाँवों के किसानों से भी यदि बदतर नहीं तो बराबर ज़रूर है। कुछ साल पहले कोल्ख़ोज़्-नमूना के निवासियों की भी यही हालत थी। लेकिन आज वहाँ दुबला पतला हड्डी-निकला अथवा फटे चीथड़ों और नंगे पैरवाला कोई आदमी

देखने में नहीं आता। यह ज़रूर है कि सभी के कपड़े उतने साफ़ नहीं हैं, और न शरीर को ख़ूब साफ़ सुथरा रखने की ओर सबका ध्यान है। लेकिन यह बात तो उच्च शिक्षा और संस्कृति से संबंध रखती है। इसके लिए यहाँ के प्रौढ़ आदमियों को मौक़ा नहीं मिला था। हाँ, नई सन्तान में ये बातें आ रही हैं। और जितने ही ज़्यादा आदमी लाल सैनिक, इंजीनियर, अध्यापक आदि होते जा रहे हैं, उतनी ही उनमें नागरिकता भी आती जा रही है।

कोल्ख़ोज़्-नमूना के पास खेतों या बाज़ार में माल ले जाने या ले आने के लिए अपनी मोटर लारियाँ हैं। ट्रैक्टरों की मरम्मत के लिए एक लोहार-ख़ाना है; जिसमें उस वक्त कोल्ख़ोज़् के एक मिस्त्री—जो जाति के रूसी थे—कोई पुरज़ा खरादने में लगे हुए थे। अस्तबल से थोड़ी दूर पर ट्रैक्टर से खेत जोता जा रहा था। जुताई खेत के किनारे से न शुरू कर के बीच से आरंभ हुई थी। ट्रैक्टर के पीछे लगे चार फाल बारह इंच गहरी धरती उलटते जा रहे थे। तवारिश महम्मदोफ़् के साथ जब मैं खेत में पहुँचा, तो उजबेक ड्राइवर ने ज़रा देर के लिए ट्रैक्टर खड़ा कर दिया। काम के हर्ज के ख़याल से मैं ख़ुद ही वहाँ से हट गया। कपास की सूखी लकड़ी घरों में जलाने के काम आती है। यह प्रदेश उतना सर्द नहीं है कि मकान रात-दिन गर्म करने की ज़रूरत हो। मुमकिन है, रात में घरों को गर्म रखा जाता हो। पूछने पर मालूम हुआ कि ट्रैक्टर प्रतिदिन २० एकड़ खेत जोतता है। आठ आठ घंटे पर ड्राइवर बदलते रहते हैं; और जुताई चौबीसो घंटे होती रहती है। जुताई का परिमाण बहुत कुछ उस की गहराई पर निर्भर है। जितनी ही ज़मीन ज़्यादा गहरी जोती जायगी, उतने ही कम एकड़ जोते जा सकेंगे।

स्कूल की बग़ल में ही एक सरतराशख़ाना है। मैंने हँसी से कहा—"यहाँ सर तराशे जाते हैं या बाल"? जवाब मिला—"बाल तराशने को ही हम सर तराशना कहते हैं।" पास ही पंचायत का चायख़ाना है। डेढ़

हाथ ऊँचा चबूतरा दीवारों के तीन तरफ़ बना हुआ है। उन्हीं पर कालीन विछी हुई है। चाय तो मैं पी चुका था। पर चायखाना देखने के लिए भीतर गया। देखा पाँच सात आदमी बैठे हैं। समावार में चाय का पानी खौल रहा है। कालीन पर दो तीन सितार पड़े हुए हैं। मुमकिन है, शाम की संगीत पार्टी की तैयारी हो रही हो। चायख़ाने की तरह सरतराशख़ाना भी पंचायती है। उसका नफ़ा नुक़सान सारे गाँव को है। सब देख कर जब हम लौटे, तो स्कूल में पढ़ाई शुरू हो चुकी थी। अध्यापक ने हमें स्कूल दिखाना चाहा। स्कूल का समय सबेरे ८ बजे से १२ बजे तक और दोपहर बाद २ बजे से ६ बजे तक है। इसी में कुछ खेल का समय भी रखा गया है। स्कूल की ही इमारत में रात को सयानों (स्त्री-पुरुषों) की पाठशाला लगती है। जिस वक्त मैं गया, उस वक्त गणित का पाठ चल रहा था। तीन चार बेंचों पर कक्षा के लड़के लड़कियाँ बैठी हुई थीं। अवस्था सात से दस साल की होगी। बेंचों के सामने लिखने के लिए डेस्क थे। लड़कियों को लड़कों से अलग नहीं बैठाया गया था। अध्यापक ने गुणा भाग के कई सवाल लड़कों से पूछे। विद्यार्थियों में कुछ ने बड़ी तेज़ी से हल किया। काले तख़्ते पर जाकर एक ने भद्दी ग़लती की, सारी छात्र-मंडली हँस पड़ी। यद्यपि इन छात्र-छात्राओं की पोशाक में नए पुराने फ़ैशन की खिचड़ी थी, लेकिन उनके तन्दुरुस्त लाल चेहरे को देखने से ही मालूम होता था, कि वे कैसा जीवन यापन कर रहे हैं। पाठशाला में कुल ८८ छात्र हैं, जिनमें ३५ लड़कियाँ हैं और ५३ लड़के।

चलते वक्त अध्यापक का पाँच वर्ष का लड़का कहीं बाहर से खेल कूद कर लौट कर आ रहा था। एशियाई बाप और यूरोपीय माँ के उस बच्चे का मुँह गुलाब की तरह लाल था। बाप ने मुझ से हाथ मिलाने के लिए कहा। लजाया तो ज़रूर, लेकिन उसने हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। सोवियत्-सरकार ने एक साल तक अपने डाकख़ाने की मुहरों तथा दूसरे उपायों से बालकों के मुख चूमने के विरोध में प्रचार किया था; और सचमुच

स्वस्थ बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिए अस्वस्थ व्यक्तियों के मुख से निकले लाखों कीटाणु ज़हर का काम देते हैं। तो भी मैं यह कहूँगा कि उस गुलाब से सुंदर शिशु के चूमने के लिए मेरा दिल ललचा रहा था।

गाँव के सभी मकान एक जगह नहीं हैं। कुछ मकान स्कूल के क़रीब हैं, और कुछ कितने ही फ़र्लांग हट कर। रोटी, वस्त्र और पठन-पाठन की समस्या हल हो चुकी है। सोवियत् सरकार को सब से पहले यही हल करना था। क्लब में ईंट और सीमेंट का काम शुरू हुआ है। अब आगे मकानों का नंबर आयेगा। बिजली और नल के प्रबन्ध होते समय गाँव का नवनिर्माण ज़रूर होगा। तब यह छिटफुट मकान एक जगह हो जायेंगे।

जिस वक्त हम गाँव को छोड़ रहे थे, उसी वक्त तिर्मिज से सैर करने के लिए एक मंडली आई हुई थी। वे मुझे इंदुस् (हिन्दुस्तानी) जान कर कुछ पूछना चाहते थे, लेकिन देर होने के ख़याल से उन्होंने आग्रह नहीं किया। मैं तवारिश मुहम्मदोफ़् के साथ स्टेशन की ओर चला। पहले आये रास्ते के वजाय मैंने उस रास्ते से जाने की इच्छा प्रकट की, जहाँ से मैं सुल्तानुस्सादात की पुरानी ज़ियारत देख सकूँ।

सूने देवालय

यह ज़ियारत कोल्ख़ोज़्-नमूना की सीमा के भीतर और रास्ते से कुछ हट कर है। १५–१६ साल पहले तक ज़ियारत में सैकड़ों मुल्ला और मुजाव़र रहते थे। हज़ारों यात्रियों के ठहरने के लिए घर और कोठरियाँ थीं। उसके बाद मज़हब की तरफ़ से लोगों की उदासीनता हुई; पूजा और चढ़ावे के अभाव से मुल्ले और मुजावर हटने लगे। कच्ची ईंटों और मिट्टी की दीवारों के मकान एक एक कर के गिरने लगे। कड़ी और किवाड़ की लकड़ियों को आस पास के लोग उठा ले गये। अब उन मकानों में से सभी धराशायी हो गये हैं। सिर्फ़ प्रधान ज़ियारत, जो कि पक्की ईंट की बनी है, अब भी खड़ी है। लेकिन कई साल बेमरम्मत रहने के कारण उसकी भी

दीवारें जहाँ तहाँ भसकने लगी हैं। गुम्बद की नीली ईंटों में से भी कितनी ही ईंटें खिसक कर नीचे गिर पड़ी हैं। वह समय नज़दीक था, जब कि गुम्वद भी धरती पर आ पड़ता; लेकिन यह कई सौ साल की पुरानी इमारत है। उजबेकिस्तान-प्रजातंत्र के पुरातत्व-विभाग का ख़याल इसकी ऐतिहासिकता की ओर गया, और अव सरकार की ओर से उसकी मरम्मत हो रही है। मुहम्मदोफ़् के साथ मैं जियारत के अन्दर दाखिल हुआ। आँगन और भिन्न भिन्न हुजरों के नीचे सैकड़ों क़ब्रें हैं। उनके ऊपर का चूना उड़ गया है और बहुतों की ईंटें भी अस्त व्यस्त हो रही हैं। मैंने वहुतेरा जानना चाहा कि हज़रत सुल्तानुस्सादात का मक़बरा कौन है, लेकिन मुहम्मदोफ़् साहव जिस किसी भी ऊँचे मक़बरे की ओर अँगुली उठाने को तैयार थे, वहाँ कोई दूसरा आमदमी नहीं था। मैंने पूछा––"इतने मुल्ले मुजावर जो पहले यहाँ रहते थे, क्या करते थे?"

जवाब मिला––"बेवकूफ़ श्रद्धालुओं की श्रद्धा से फ़ायदा उठाते थे। उनसे पैसे ऐंठते थे और बदले में किसी को लड़का नहीं, उसको लड़के के लिए तावीज़ देते थे; किसी का बच्चा बीमार है उसके बच्चे के लिये तावीज़ देते थे; किसी का गधा बीमार है, तो उसके गधे के सिर पर बाँधने के लिए तावीज़ तैयार कर दी जाती थी।" गधे की तावीज़ की बात सुनकर मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन मैंने मुहम्मदोफ़् से जिरह करना नहीं चाहा। मेरा भ्रम आप ही जाता रहा, जब मैंने मज़ारशरीफ़् में खुद अपनी आँखों गधे पर तावीज़ बँधी देखी। गधे पर ही नहीं बल्कि जिस मोटर-लारी पर मैं मज़ारशरीफ़् से काबुल पहुँचा; उसके भी सामने शीशे के ऊपर वाली लकड़ी पर चमड़े में वँधी दो तावीज़ें लटक रही थीं। शायद हमारे ड्राइवर का पूरा विश्वास था कि हिन्दूकुश की ताज़ी बर्फ़ से वच कर जो हम निकल पाये, वह उन्हीं तावीज़ों की बरक्कत थी।

मैंने पूछा––"मुल्ले कहाँ गये?"

मुहम्मदोफ़् ने कहा––"हमने उन्हें यहाँ से रवाना कर दिया।"

"कहाँ" ?

"दोज़ख़ में, और कहाँ ! उनका विहिश्त तो यहीं था, जहाँ हमारी मिहनत पर मौज उड़ा रहे थे। उनके लिए तो विहिश्त यहाँ था, और हमारे लिए मरने के बाद बतलाते थे।"

मैंने पूछा—"क्या आप लोगों को मज़हब की ज़रूरत नहीं पड़ती ?"

"हमें मज़हब की क्या ज़रूरत ? हम काम करना जानते हैं, हम पढ़ना जानते हैं, हम सुख से रहना जानते हैं, हमें और क्या चाहिए ? मुल्ला कहता था, सुअर हराम है। इतना स्वादिष्ट, इतना ताक़तवर खाना हमारे लिए वह हराम कह रहा था। वह कहता था, नाचना हराम है। हम जानते हैं कि युवक और युवतियों में नाचने से कितनी फ़ुर्ती आती है, और नाच मनोरंजन का कितना सुंदर साधन है।"

मैंने पूछा—"आख़िर कोल्ख़ोज़्-नमूना के ये सभी २०० घर कुछ साल पहले मुसलमान थे। क्या अब भी इन में कुछ लोग नमाज़ पढ़ते या रोज़ा रखते हैं ?"

"हाँ चार साल पहले कुछ रोज़ादार थे। लेकिन अब एक भी नहीं। युवक और युवतियों की हँसी के मारे, चाहने पर भी बूढ़े बूढ़ियों की हिम्मत नहीं पड़ती।"

३१—सोवियत्-सीमा पर

आज (२४ जनवरी) तिर्मिज़ में आये चौथा दिन था। पासपोर्ट आफ़िस खुला था। महिला ने कह रखा था, कि आज लिख पढ़कर पासपोर्ट लौटा दिया जायगा और हम १०–११ बजे तक शहर छोड़ सकेंगे। आफ़िस जाने पर मालूम हुआ कि हमारे निर्यात-वीज़ा में तिर्मिज़ लिखा है; लेकिन कहाँ जायेंगे, उस खाने में अफगानिस्तान लिखना भूल गये हैं। अतएव आगे जाने की इज़ाज़त नहीं मिल सकती; जब तक कि तार द्वारा लेनिनग्राद से पूछ न लिया जाय। हमने सोचा, यह वीज़ा की गड़बड़ी तेहरान से ही शुरू हुई है। वहाँ सवा महीना ठहरना पड़ा। लेनिनग्राद में इसी के लिए १२ दिन रुक जाना पड़ा; और यहाँ भी अब कुछ होने जा रहा है। अफ़ग़ान्स्की सराय कुछ टूटी फूटी सी थी। पाख़ाना भी गन्दा था और रहने की कोठरी भी चूहे-खटमलों की लीलाभूमि। अब मालूम नहीं कितने दिन और ठहरने पड़ें, इसलिए हम अपना सब सामान उठाकर होटल में चले आये। पासपोर्ट-आफ़िस की महिला ने होटल की अधिकारिणी को हमारे लिए संदेश भेज दिया था। आफ़िस और होटल आमने-सामने थे। इसलिए यहाँ पूछताछ करने में भी सुविधा थी। जिस वक्त हम अपना सामान लेने अफ़ग़ान्सकी सराय जा रहे थे, देखा—ताजिक और रूसी दो तरुणों की जोड़ी एक के कन्धे पर एक हाथ रखे जोर से गाना गाती आ रही है। आस पास के पचीसों नर-नारी टकटकी लगाये उनकी ओर देख रहे थे। मालूम हुआ बाज़ार के शराब ख़ाने में दोनों ने खूब वदका (उदक=शराब) पी हैं; और जब रंग आया, तब गलबहियाँ लगाये, तान छोड़ते वाहर निकल पड़े हैं। उनके पैर ही आगे पीछे नहीं पड़ रहे थ, वल्कि तान भी एक की पूरब जा रही थी, तो दूसरे की पश्चिम।

एक की आवाज़ धीमी थी तो दूसरे की कान फाड़ देनेवाली। लोगों के लिए यह बिना पैसे-कौड़ी का तमाशा था।

हाट का बाड़ा बहुत लम्बा-चौड़ा है। इसमें तीन-चार सरतराशख़ाने हैं। मुझे भी सर तरशवाना था इसलिए एक ताजिक सरतराश की कोठरी में गया। मशीन द्वारा उससे सारे बाल छोटे छोटे करवाये। और इसके लिए ३ रूबल (१।-)) सरतराशी देनी पड़ी। यह सरतराशख़ाना पंचायती नहीं है। इसकी आमदनी उस हज्जाम को होती है। सोवियत्-प्रजातंत्र में अब भी ऐसे कुछ काम हैं, जिनको कोई व्यक्ति स्वतंत्र कर सकता है। बूट पर पालिश करना भी ऐसे ही पेशों में है। हाँ, हर बूट पर पालिश करनेवाले, या हजामत बनानेवाले को सरकार से लैसेंस लेना पड़ेगा; जिसके लिए उसे विश्वास दिलाना पड़ेगा कि वह किसी दूसरे को नौकर रख कर उसकी मेहनत को अपने फ़ायदे का ज़रिया नहीं बनायेगा।

बाड़े के एक तरफ़ सवेरे ७–८ बजे से ही आलू, मूली, गोभी, चुकन्दर, अंडा, आदि को लेकर आस-पास के कोलख़ोज़ वाले स्त्री-पुरुष आते हैं; और उन्हें बेचकर पैसे से काम की चीज़ें ख़रीद कर लौट जाते हैं। सवेरे से दो-तीन बजे तक वह जगह एक हिन्दुस्तानी हाट सी मालूम होती है। रोटी, मक्खन, मांस, मिठाई आदि की सभी दूकानें सरकारी या पंचायती हैं; और वह मकानों के भीतर लगती हैं। एक जगह सवेरे से दोपहर तक पुरानी चीज़ें भी लोग लाकर बेचते हैं।

गस्तिनित्सा (होटल) के हमारे कमरे में दो सीटें थीं। एक पर ताजिकिस्तान में काम करनेवाले एक नौजवान रूसी इंजीनियर ठहरे थे; और दूसरी चारपाई हमें मिली। कोठरी ख़ूब साफ़ थी। नीचे कालीन का फ़र्श था। लोहे की चारपाई पर साफ़-सुथरा ओढ़ना-बिछौना पड़ा हुआ था। एक मेज़ और कुछ कुर्सियाँ भी थीं। कमरा गर्म करने के लिए दो कमरों के बीच में एक-एक लोहे की बुख़ारी (मुँह-बंद अंगीठी) थी; जिसमें लकड़ी बाहर से डाली जाती है। मुँह हाथ धोने का भी अच्छा

बन्दोबस्त था। होटल में २८—३० के करीब कमरे होंगे। यद्यपि कमरे एक ही आदमी के लायक़ हैं, लेकिन सारे **तिर्मिज़** में एक ही होटल है, और मुसाफ़िर अधिक आते रहते हैं, इसीलिए हर कमरे में दो दो आदमियों का इंतज़ाम किया गया है। दो तीन चारपाइयाँ गलियारे में भी पड़ी थीं। पाख़ाना उतना साफ़ नहीं है, और जबतक पाख़ाना बहाने वाले नलों का इंतज़ाम नहीं होता, तबतक अधिक कुछ किया भी नहीं जा सकता। होटल में रहने का किराया प्रतिदिन ५ रूबल (२≡)) था। खाने के लिए तिर्मिज़ में कोई अच्छा रेस्तोराँ (भोजन शाला) नहीं है। तिर्मिज़ का **पार्क-कुल्तर** (सांस्कृतिक-उद्यान) बहुत लंबा-चौड़ा है। लेकिन आजकल जाड़े के कारण (अथवा कोई मरम्मत का काम हो रहा था), फाटक बराबर बन्द रहता था। दौड़, कसरत और फ़ुटबाल आदि खेलों के लिए एक अलग लंबी चौड़ी व्यायामशाला है। उससे थोड़ी दूर पर एक सिनेमा-घर है। 'अक्तूबर में लेनिन' नामक फ़िल्म दिखाया जाता था। देखनेवालों की भीड़ यहाँ भी बहुत थी। इस फ़िल्म को लेनिन्ग्राद् में देख चुका था, इसलिए मुझे देखने की इच्छा भी न थी। **ऋेची** या बच्चाख़ाना देखने निकला। पता लगा, वह फ़ैक्टरी के पास है। यह एक लंबा-चौड़ा सफ़ेद मकान है। छत टीन की थी। वहाँ दो तीन रूसी औरतें थीं। देखने की इच्छा प्रकट करने पर मुझे भीतर जाने की इजाज़त मिल गई। चार पाँच कमरे थे। जिनमें कुछ में छोटी छोटी कई चारपाइयाँ पड़ी थीं। सफ़ेद चादर और साफ़ तकिया बिछौना मौजूद था। लेकिन जिस वक़्त मैं गया, उस वक़्त कोई बच्चा नहीं था। लौटते वक़्त मैंने क्लबघर का साइन-बोर्ड देखा। भीतर यहाँ भी कई कमरे थे। एक बड़ा हाल था, जिसमें २०० के क़रीब कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। दो युवक और एक युवती कुछ लिख रहे थे। मालूम हुआ, आज **'पुगाचोफ़्'** फ़िल्म दिखाया जानेवाला है, उसी के लिए विज्ञापन लिखे जा रहे हैं।

***　　　　***

२५ की शाम को मालूम हुआ कि तार का जवाब आ गया। उसी दिन लिखकर हमारा पासपोर्ट लौटा दिया गया। अब अगले दिन जाने के लिए हम निश्चिन्त हो चुके थे। **तिर्मिज** में मैंने सरकारी बैंक से दो पौंड का चेक भुनाया था। हमारे पास १५–२० रूबल ही रह गये थे। २२ रूबल (९॥=) तो होटल से वक्षु-गंगा के तट तक के ही लग जाते। फ़ोन से पूछने पर मालूम हुआ कि १४ रूबल मोटर-नौका के लगेंगे। इस प्रकार २० रूबल की हमें और ज़रूरत थी। हमारे पास २ पौंड से कम का चेक न था। उसे भुनाने पर ३६ रूबल फ़ज़ूल जाते। सोवियत्-सरकार अपने सिक्के और नोटों को देश से बाहर नहीं जाने देती। रूबल बचने का मतलब था, वह भी नाव के भाड़े में शामिल कर लिया जाता। इसके अलावा एक दिक़्क़त और थी। बैंक १० बजे खुलता था, और हम ९ बजे ही निकल जाना चाहते थे; जिसमें कि कस्टम-आफ़िसर की देखभाल में इतनी देर न हो जाय कि उस दिन की नाव ही हमें न मिल सके। हमारी घड़ी १३–१४ रुपये की थी। हम जानते थे कि उसका दाम यहाँ ९०–१०० रूबल से कम नहीं है; तो भी हम चाहते थे सिर्फ़ २० रूबल। हमने अपने साथी इंजीनियर से इसके बारे में कहा। उनके पास घड़ी न थी और दो तीन दिन साथ रहते रहते हम लोगों का परिचय भी अधिक हो गया था। जब मैंने उन्हें सिर्फ़ २० रूबल देने को कहा, तो वह आश्चर्य से कह रहे थे—'यह बहुत कम है।' मैंने कहा—'ज़्यादा के ख़र्च के लिए हमारे पास समय नहीं है।' तब भी वह समझ रहे थे, शायद भाषा अच्छी तरह न समझने के कारण मैं ग़लती कर रहा हूँ। उन्होंने १०–१० रूबल के २ नोट देते हुए फिर कहा—"क्या इतना ही?"

मैंने कहा—'हाँ!'

ऐसे भी हिसाब करने से मुझे मालूम था कि चेक भुनाने पर २ पौंड या २६।।) रुपये से हाथ धोना पड़ेगा और यहाँ १३-१४ की घड़ी जा रही है। अफ़ग़ानिस्तान में रेल-ओल है नहीं, कि घड़ी की ज़रूरत हो और हिन्दुस्तान

में फिर दूसरी घड़ी ले ली जायगी।

९ बजे फिटन पर सामान रखकर हम घाट की ओर चल पड़े। वक्षु-तट होटल से ४ मील से क्या कम होगा। कुछ दूर शहर में चले। बाईं तरफ़ बहुत दूर तक खाली जगह थी। नई बस्ती और हवाई जहाज़ के अड्डे के ऊँचे खंभे और ऊँचे मकान दिखलाई पड़ रहे थे। शहर ख़तम होने पर एक छोटा सा कोल्ख़ोज़् गाँव और जुते हुए खेत मिले। फिर मकान और रेल की लाइन। सिपाही ने फिटन को रोका और पास माँगा। पासपोर्ट देने पर कहा—'यह नहीं। पुलीस से लाया पास दिखलाओ।' मैंने कहा—'मेरे पास पुलीस का पास नहीं है। यही पासपोर्ट है। जिसपर अफ़ग़ानिस्तान जाने की इजाज़त लिखी हुई है।' सिपाही ने कहा—'पुलीस का पास नहीं है, तो नहीं जा सकते।' एक बार तो मुझे मालूम होने लगा कि अब शायद फिर पीछे लौटना होगा। लेकिन मैं हताश नहीं हुआ। चेहरे पर ज़रा भी विकलता का चिह्न न प्रकट करके मैंने फिर समझाना शुरू किया—'पुलीस का पास यहाँ के बाशिन्दों के लिए ज़रूरी है। मैं यहाँ का बाशिन्दा नहीं हूँ। मेरे लिए यह पासपोर्ट है और उस पर **तिर्मिज** से अफ़ग़ानिस्तान जाना लिखा हुआ है।' सिपाही भी कुछ निश्चय करने में असमर्थ हो बोला—'अच्छा, तो मैं **कन्त्रोलर** के आफ़िस में चल रहा हूँ, वहाँ चलिए।' हमारी जान में जान आई। और गाड़ीवाला हमें **कन्त्रोलर** के आफ़िस में ले गया, जो कि रेल लाइन पारकर कुछ और आगे था। कन्त्रोलर साहब एक रूसी सैनिक आफ़िसर मालूम होते थे। पासपोर्ट लेकर उन्होंने देर तक कितने ही रजिस्टर उलटे। अकारादि क्रम से लिखे हुए नामों को मिलाया और मुसाफ़िरों के सैकड़ों हस्ताक्षर, जो उनकी एक बही में चिपके हुए थे, को भी देखा भाला। शायद वहाँ मेरा नाम न था। फिर उन्होंने टेलीफ़ोन द्वारा तिर्मिज़ के आफ़िस से पूछा। आधा घंटा बाद मुहर करके हमारा पासपोर्ट लौटा दिया, और नदी के किनारे जाने की आज्ञा मिली। घाट आध मील और आगे था। थोड़ी दूर तक रास्ता बहुत ख़राब था।

५–५, ७–७ टन की लारियाँ भला इस कच्चे रास्ते पर कैसे चलती हैं; यही आश्चर्य होता था। एक जगह देखा कि एक कटर-पिलर ट्रैक्टर ऊभड़-खाभड़ रास्ते को बराबर कर रहा है। घाट पर अफ़ग़ानिस्तान से आई हज़ारों रुई की गाँठें पड़ी हुई थीं। उनके फटे बोरों को १०–१२ स्त्रियाँ जिनमें अधिकांश रूसी थीं—सी रही थीं। रुई, चमड़ा, अनाज, सूखे मेवे और ऊन अफ़ग़ानिस्तान से आते हैं, और बदले में सोवियत्-प्रजातंत्र चीनी, लोहा, कपड़ा, पेट्रोल और कितनी ही प्रकार की मशीनें भेजता है।

मोटर-बोट के खुलने में अभी ३-४ घंटे की देर थी। २ घंटे बाद सामान की जाँच शुरू हुई। हमारे दो बक्सों में एक में—जिसका वज़न १ मन से अधिक था—सिर्फ किताबें थीं, और दूसरे में आधा कपड़ा और आधी किताबें। कस्टम् अफ़सर ने किताबें देखनी शुरू कीं। उनमें कुछ चिट्ठियाँ, फ़ोटो—जिनमें कुछ रूस के संबंध की थीं और कुछ ईरान की—देखते ही वह निश्चय करने में असमर्थ हो गया कि किसको लेले और किसको जाने दे। आख़िर फिर उसी कन्त्रोलर को ख़बर दी गई और वह घाट पर आया। उसने प्रायः डेढ़ घंटे एक एक चीज़ को, काग़ज़ के छोटे छोटे टुकड़े तक को बारीकी से देखा। जो किताबें संस्कृत में थीं, उनके लिए तो कुछ नहीं कहा। फिर कुछ सोवियत् के अंगरेज़ी अख़बारों की कटिंग को देख कर कहा—'इन्हें हम जाने नहीं देंगे।' मैंने कहा—'मैं लेखक हूँ और अपनी सोवियत्-यात्रा पर एक पुस्तक लिखूँगा उसी के लिए मैं यह कटिंग जमा किये हूँ। आप जानते नहीं कि ये सब अख़बार सोवियत् से बाहर हज़ारों की तादाद में जाते हैं।' ख़ैर उसको लौटाया गया। फिर मास्को के नक़्शे को देख कर कहा—'इसे नहीं जाने देंगे।' मैंने कहा—'आप की **इन्तुरिस्त** (सोवियत्-यात्रा कंपनी) इसे छाप कर बाहर के देशों में बाँटती फिर रही है। यह ऐसी कोई गुप्त चीज़ नहीं।' फिर उसे भी लौटाया गया। तब मास्को और लेनिन्ग्राद् की इमारतों के चित्रों पर अड़ गये। वहाँ भी समझा-बुझाकर सफलता हुई। आख़िर में सोवियत् के राजनीतिक नेताओं के चित्रों का मामला आया। मैंने कहा—

'ये चित्र दुनिया में कहाँ नहीं मिलते ? आप इन चित्रों को रोक कर मेरी पुस्तक की सुंदरता को कम भर कर सकेंगे।' वह भी लौटाये गये। फिर गृह-सचिव **येज़ोफ़** के चित्र को उन्होंने दृढ़ता के साथ रोक लिया। मैंने कहा—'यह फ़ोटो नहीं है। 'मास्को न्यूज़्' अंग्रेज़ी साप्ताहिक में छपा है; और यह साप्ताहिक दुनिया के कोने कोने में जाता है।' हार मान कर उन्होंने उसे भी लौटाया। अन्त में **इन्तुरिस्त** के टिकट की रसीदें, होटलों और दुकानों के रूसी में लिखे कुछ विल, आदि रह गये थे। जिनके लिए उनका आग्रह देखकर मैं चुप रह गया। आख़िर भलेमानुस को हर जगह अपनी बात के लिए ज़िद्द भी तो करनी नहीं चाहिए। हाँ, एक और मज़े की बात हुई थी। मैं लेनिन्ग्राद् में संस्कृत की एक पुस्तक की प्रेस-कापी लिख रहा था। इसके लिए रूसी कापी (Exercise-book) इस्तेमाल की गई थी। महाकवि पुश्किन् की शताव्दी के उपलक्ष्य में उनके टाइटिल-पृष्ठों पर पुश्किन् की कविता या चित्र अथवा उसकी कविताओं के पात्रों के चित्र अंकित थे। दो कापियों के टाइटिल पर पुश्किन् की किसी कविता के कुछ पात्र—जो देखने में भारतीय या ईरानी राजा से मालूम होते थे—जंज़ीर और वेड़ी में बंधे चित्रित किये गये थे। कन्त्रोलर ने देखते के साथ ही इन दोनों कापियों के आवरण-पत्रों को फाड़ कर रख लिया। उन्होंने शायद समझा होगा, इन चित्रों को दिखाकर मैं हिन्दुस्तान में प्रचार करता फिरूँगा कि देखो—'बोल्शेविकों की काली करतूतें। वह इस प्रकार लोगों की साँसत करते हैं।'

जाँच ख़तम होने पर अफ़सर ने हँसते हुए हाथ मिलाया और नाव के छूटते वक़्त भी टोपी उतार कर विदाई दी।

३ वजे वाद मोटर रवाना हुई। वक्षु-गंगा—हाँ, दर असल कभी यह गंगा की ही तरह हिन्दुओं के लिए पवित्र नदी थी—काफ़ी चौड़ी नदी है। आजकल जाड़े के कारण ऊपरी पामीर के पहाड़ों की बर्फ़ कम पिघलती है, इसलिए धार उतनी गहरी और चौड़ी नहीं है, जितनी मई जून में होगी।

तो भी कम से कम चौड़ाई उतनी जरूर है, जितनी वनारस में गंगा की जाड़ों में हो जाती है। यहाँ वक्षु पूरव-पच्छिम-वाहिनी है। दूर पहाड़ों की काली श्रेणी दिखलाई पड़ती है, जिनके पिछले भाग में श्वेत हिम-मंडित वही पर्वतमाला है, जो काश्मीर, गढ़वाल, नैपाल होती आसाम तक पहुँच गई है। नदी के परले पार अफ़ग़ानिस्तान की भूमि है। वहाँ भी पहाड़ नदी से वहुत दूर हट कर है। वक्षु का पानी मटमैला, पीले रंग का है। धार में २–३ टापू आ गये हैं, इसीलिए मोटर-नौका को कुछ नीचे जाकर फिर अगली धार से ऊपर आना पड़ता है। जहाँ तहाँ अपनी जैसी ११–१२ और मोटर-नौकाएँ देखीं। हर एक नौका में ५००-६०० मन माल लादा जा सकता है। अपनी नाव में मैं अकेला मुसाफ़िर था। वाक़ी १२ हम्माल थे; जिन्होंने चीनी की टिकिया के वक्सों को नाव पर लादा था, और उन्हींको उतारने के लिए वह नदीपार जा रहे थे। इन हम्मालों में सिर्फ़ दो एशियाई थे, वाक़ी १० रूसी थे। अफ़ग़ानिस्तान की सीमा में पहुँचने पर इसके लिए पठान लोग वड़ी टीका टिप्पणी कर रहे थे। एक साहव––जो व्यापार के सिलसिले में कई वार कलकत्ता वंवई देख गये थे––कह रहे थे––'अरे यह सव रज़ील हैं। साहव थोड़े ही हैं। हिन्दुस्तान में भला कोई साहव दो मन पक्के का वक्स पीठ पर लाद कर इस तरह कुली का काम करेगा! और इस तरह नाव के पटरे पर चाय-रोटी गोश्त हाथ में दवाये, काले आदमी के साथ मज़ाक करते और थोग्री लगाते, खायेगा?' उनको क्या मालूम कि रूस ने किस आदर्श के पीछे पड़कर इस समानता को स्थापित किया है। वक्षु पार होते समय हमें मालूम होता था कि हम हिन्दुस्तान की सीमा में प्रविष्ट हो रहे हैं। इतिहास में पढ़ा था, कभी वक्षु गङ्गा हिंदुस्थान की राजनीतिक सीमा में थी; और सांस्कृतिक सीमा के भीतर तो वहुत सहस्राब्दियों तक रही। और वह कुछ अंश में अव भी है। एक घंटे में हमारी नाव दूसरे पार पहुँच गई।
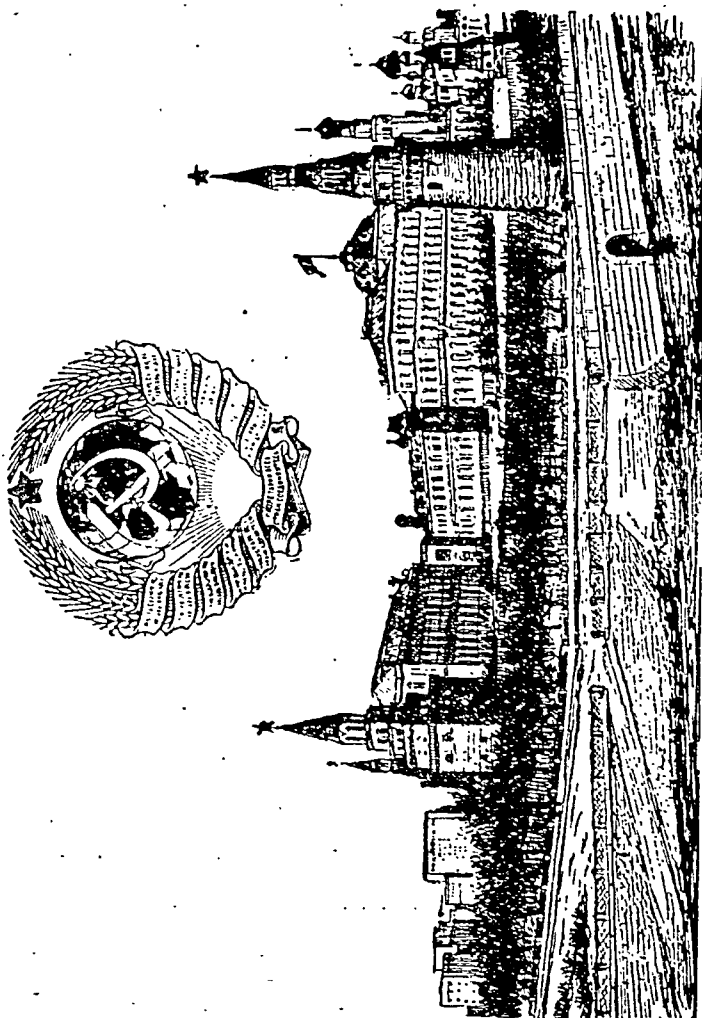
मास्को—क्रेम्लिन्

द्वितीय खंड

(अफ़ग़ानिस्तान में)

१—मज़ार-शरीफ़् को

हमारी मोटर-नौका वक्षु के बायें किनारे की तरफ़ आ रही थी। इस तरफ़ दूर तक सरकंडे का जंगल उगा हुआ था। दो तीन अफ़ग़ान सिपाही वन्दूक लिए किनारे पर टहल रहे थे। उनकी वर्दी ख़ाकी थी और सिर पर छज्जेदार टोपी। सर्दी का कनढक्कन टोपी के ऊपर बँधा हुआ था। उनके पटे रखे हुए वाल वतला रहे थे, कि अभी ये बीसवीं शताब्दी में नहीं पहुँचे हैं। वैसे दाढ़ी किसी सिपाही को न थी। नाव के किनारे पहुँचने पर एक वन्दूक-धारी सिपाही पटरा रखने की जगह पर खड़ा हो गया। नाव के बारहों हम्मालों ने पेटी उठा उठाकर किनारे पर रखना शुरू किया। हमारे लिए आज्ञा हुई—अफ़सर का हुक्म है कि अभी आप नाव ही पर रहें। हमारा पासपोर्ट अफ़सर के पास पहुँचा दिया गया था। एक घंटे तक नाव पर बैठे बैठे हम इन्तिज़ार करते रहे; और अफ़सर साहब का कोई पता न था। पल्टन के जवानों और अफ़सर के रहने के लिए किनारे पर सरकंडों की कुछ झोपड़ियाँ डाली हुई थीं। सरकंडा काट कर खाली की हुई लम्वी चौड़ी जगह में पचासों ऊँट वैठे थे। यह अफ़ग़ानिस्तान का माल लेकर किनारे पर आये थे; और तिर्मिज़ से आये माल की प्रतीक्षा कर रहे थे। अफ़सर साहव अपनी झोपड़ी से वाहर निकल आये, फिर सिपाही ने हमें वुलाया। एक मेज़ रख दी गई और तीन चार कुर्सियाँ पड़ गईं। घंटे भर नाव पर रहने के लिए मजवूर किया, इसके लिए चाहे हमें वुरा भले ही लगा हो, लेकिन उनका आगे का वर्ताव वहुत अच्छा था। सलामी देकर उन्होंने हाथ मिलाया और कुर्सी पर वैठने के लिए कहा। ख़ैर-व-आफ़ियत पूछी गई। इतने में हमारा सामान भी आ गया। वक्सों को हमने खोल दिया और मामूली तौर पर उन्होंने

हमारे दो चार सामान देखे। उनको विश्वास हो गया कि हमारे पास महसूल की कोई चीज़ नहीं है। तकलीफ़ देने के लिए क्षमा माँगते हुए वक्सों को वन्द कर देने के लिए कहा। इसी बीच हाकिम के हुक्म के मुताविक नौकर मीठी चाय ले आया। हम चाय पीते हुए आगे के प्रोग्राम पर वात करने लगे। अफ़सर ने पूछा—क्या आप इसी वक़्त जाना चाहते हैं ?

यद्यपि दिन आध-पौन घंटा ही रह गया था, लेकिन मैं वहाँ बैठने की जगह आगे चलना ही पसन्द करता था। मैंने कहा—बड़ी मिहरवानी होगी यदि इसी वक़्त आप जाने का प्रबन्ध कर दें।

वहाँ आये हुए आदमियों में से एक के पास दो घोड़े थे। पचास अफ़ग़ानी (साढ़े १२ रुपये) में यहाँ से अस्करख़ाना तक के लिए दो घोड़े किराये पर किये गये। अस्करख़ाना २४–२५ मील से ज़्यादा नहीं है; और उतनी दूर के लिए यह किराया कुछ ज़रूर ज़्यादा था। लेकिन जितनी आसानी से अच्छा इन्तज़ाम हो गया, मुझे वहाँ शिकायत की गुंजायश न थी। मेरा सामान एक घोड़े पर लाद दिया गया, दूसरा घोड़ा सवारी के लिए था। अफ़सर ने एक सिपाही को हमारे साथ यह कह कर कर दिया, कि अगली फ़ौजी चौकी से दो सशस्त्र सवार हमारे साथ कर दिये जायँ। इसी वक़्त उन्होंने **मजारशरीफ़्** टेलीफ़ोन कर दिया था कि एक ताँगा अस्करख़ाना भेज दिया जाय। रास्ते की फ़ौजी चौकियों में भी आने के साथ दो सवार साथ कर देने की आज्ञा दे दी गई थी।

'ख़ुदा हाफ़िज़' और हाथ मिलाने के बाद मैं अपने घोड़े पर सवार हुआ। रास्ता सरकंडे के घने जंगल में से था। आने जानेवाले ऊँटों और घोड़ों ने बीच से रास्ता बना लिया था। मज़ारशरीफ़् से वक्षु के किनारे तक मोटर भी आ सकती है, लेकिन अस्करख़ाने से इधर सड़क नहीं है, सिर्फ़ लीक पर आना पड़ता है। डेढ़ मील पहुँचते पहुँचते सूर्य डूब गया। फ़ौजी चौकी कोई ३ मील पर रही होगी। वहाँ जाते जाते अंधेरा हो गया। चौकी का कोई स्थायी मकान नहीं है। वही सरकंडे की झोपड़ी। ७–८ सिपाही और एक

हवलदार रहता है। साथ आनेवाले सिपाही ने अफ़सर का सन्देश दिया। हवलदार ने बड़े आग्रह से झोपड़ी के अन्दर बुलाकर चाय-रोटी का वन्दोबस्त किया। मेरे अनिच्छा प्रकट करने पर कहा—आगे रोटी नहीं मिलेगी। ख़ैर बिना दूध के मीठी चाय के कई प्याले पिये। तव तक मेरे साथ चलनेवाले दोनों सवार भी तैयार हो गये। चलते वक़्त ख़ूब अंधेरा हो गया था। आज कृष्ण पक्ष की १०मी होने से आकाश में चन्द्रमा की भी आशा न थी। इन्तज़ाम हुआ था कि रात ही रात मज़ारशरीफ़् चले चलें। सारा रास्ता जनशून्य बयाबाँ का है। पचास मील की दूरी में सिर्फ़ दो तीन जगह ही आदमियों के निवास हैं। इसलिए चोर-डाकू का डर बहुत है। यही बात थी, जिसके लिए हमें दो सवार मिले थे। दोनों सवार हाथ में बन्दूक़ लिए हमारे साथ चल रहे थे। कई मील तक हमारा रास्ता वक्षु (आमू दरिया) के कछार में नीचे की ओर था। नदीपार तिर्मिज़ में मीलों तक चली गई खंभों की पाँती पर विद्युत्-प्रदीप चमक रहे थे। हवाई जहाज़ के अड्डे के दीप-स्तंभ और भी प्रदीप्त हो रहे थे। दिल में ख़याल आता था, वह है उस पार स्वर्ग की भूमि जहाँ प्रदीप और प्रकाश ही चारों तरफ़ दिखाई देते हैं, जहाँ से दरिद्रता और अज्ञानता का अन्धकार हमेशा के लिए मिट चुका है, जहाँ के लोगों को कल की चिन्ता नहीं जलाती। वक्षु के इस पार खड़े हुए इन अफ़ग़ानों के लिए भी—जिन्हें कभी उस पार जाने का मौक़ा नहीं मिला—रात के अंधेरे में जलते मीलों लंबे चले गये ये प्रदीप-स्तंभ कम कुतूहल-जनक नहीं हैं।

अब हमारा रास्ता कछार से बाईं ओर हटने लगा। ज़मीन ऊँची-नीची थी। लेकिन पहाड़ नहीं थे। ऊँची-नीची ज़मीन की खोहों और नालों में अकसर रोमाञ्च हो जाता, यदि हमारे साथ वे दोनों बन्दूक़ धारी सवार न होते। पठानों का मुल्क यों ही हिन्दुस्तान में बदनाम है, और हम तो यहाँ कृष्णपक्ष की अंधियारी में इस बयाबाँ में चल रहे थे। वस्तुतः क्या अफ़ग़ानिस्तान ख़तरे से भरा मुल्क है? नहीं। यह ग़लत है। अगर ऐसा

होता, तो अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ों और सुनसान घाटियों में तमाम रात मोटरें कैसे चलती रहतीं ? लूट पाट की बात भारत की सरहद पर की स्वतंत्र जातियों के लिए ही ठीक है।

स्थान सुनसान था। कहीं गीदड़ या किसी दूसरे जानवर की भी आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। जब तब घोड़ों के मुँह फड़फड़ाने की आवाज़ ज़रूर आती। हमारे साथी कभी कभी कुछ बात कर लेते थे। यद्यपि दोनों सवार पठान थे और उनकी मातृ-भाषा थी पश्तो (पख़्तो) ; लेकिन वह बात करते थे फ़ारसी में। घोड़ेवाला आदमी उज़बेक था। कभी कभी दूर से ऊँट के काफ़िलों की घंटी सुनाई देती थी; और फिर पचीसों ऊँट ऊन, चमड़ा, कपास लादे हमारी बग़ल से गुज़रते थे। चले तो होंगे तीन चार घंटे ही लेकिन जब अस्करख़ाना पहुँचे, तो मालूम होता था, जैसे युग बीत गये। अस्करख़ाना अफ़ग़ानिस्तान में फ़ौजी छावनी को कहते हैं। एक ऊँची मिट्टी की दीवार का छोटा सा क़िला है। इसी में कुछ अफ़ग़ान फ़ौज रहती है। हमारे साथ के सवारों ने आवाज़ देकर दरवाज़ा खुलवाया। टेलीफ़ोन से ख़बर पहले ही आ चुकी थी, इसलिए जमादार साहब के बाहर आने में देर न हुई। अभी रात के ठहरने की बातचीत हो रही थी, उसी वक़्त मालूम हुआ, कि हमारे लिए ताँगा पहुँचा हुआ है। झट सामान ताँगे पर रखा गया और जमादार साहब ने दो नये सवार हमारे साथ कर दिये। १० बजने के क़रीब था, जब हम रवाना हुए। अंधेरी रात थी और ताँगे में कोई लालटेन भी न थी। सड़क कोई बाक़ायदा न थी। आस पास जगह जगह ऊँची नीची ज़मीन थी। कई जगह डर लगता था कि घोड़े कहीं बहक न जायँ। एक सवार हमारे आगे आगे घोड़ा दौड़ाए चल रहा था। हमारा ख़याल कभी वक्षु गंगा की ओर जाता था, और सोचते थे, यही चरागाह हैं, जिनकी खोज में हमारे पूर्वज चार साढ़े चार हज़ार वर्ष पूर्व अपने भेड़ों और गायों को लेकर इस पार आये थे। उनके भी वैसे ही काले बालों के तम्बू रहे होंगे, जैसे कि आजकल के कितने ही तुर्कमानों के।

इन्हीं की तरह ५–५ सेर की पिटारी जैसी पगड़ी वह आदिम आर्य रमणियाँ अपने पीले बालों के ऊपर बाँधती रही होंगी—यह संभव नहीं मालूम होता। क्योंकि आर्य कपास को जानते ही नहीं थे। बहुत कुछ संभव है, भेड़ की पोस्तीन ही उनकी पोशाक थी। इसी चौरस चरागाह में—जिससे हम आज इस अंधेरी रात में गुज़र रहे हैं—वह भी महीनों टिकते और भेड़-बकरियाँ चराते इधर से उधर आते जाते रहे होंगे। उस वक़्त के भेड़ियों और दूसरे हिंसक जंगली जानवरों से त्राण पाने के लिए उनके पास डंडे-पत्थर के सिवा और कोई साधन नहीं था। तलवार का होना भी बहुत कम ही संभव है; और धनुष वाण तो निश्चय ही उन्हें मालूम न था। हाँ, उनका पुष्ट गौर शरीर, दृढ़ मांसल भुजाएँ, लम्बा-चौड़ा क़द, पौरुष के पुंज थे। उस वक़्त अभी आर्यों का मुक़ाबला असुरों से नहीं हुआ था; और तुर्क, उजबेक, हज़ारा—वर्तमान मंगोल जातियाँ जो इस प्रदेश में बसती हैं—निश्चय ही आर्यों के इस भूमि में आने से दो ढाई हज़ार वर्ष बाद पहुँचीं। इस प्रकार वाह्लीक की यह भूमि मानुषिक संघर्ष और युद्ध की भूमि न रही होगी। यदि रही भी होगी, तो आर्यों के अपने ही भिन्न भिन्न क़बीलों के बीच। प्रकृति और वन्य पशु उस वक़्त भी उनकी गायों भेड़ों और परिवार वालों के दुश्मन रहे होंगे। बल्ख़ (वाह्लीक) से हिरात तक फैले हुए आर्यों में से ही एक क़बीला था जो हिन्दूकुश के दुर्गम तथा सदा बर्फ़ से आच्छादित दर्रों के दूसरे पार कपिशा, कुभा और स्वात की उपत्यकाओं में आया। इस वक़्त हमारे लिए ये रास्ते—ये दर्रे कठिन नहीं मालूम होते। इनके पार करने के लिए हमें पैदल और घोड़ों पर चलने की ज़रूरत नहीं, मोटरें बराबर चलती रहती हैं; लेकिन उन सीधे सादे आर्यों के लिए हमेशा हिम से आच्छादित रहनेवाली हिन्दूकुश पर्वत-माला सदियों तक पृथ्वी का अन्त या उदयाचल साबित होती रही होगी। उनके ख़याल में हिन्दूकुश से पूर्व-दक्षिण मनुष्यों की बस्ती नहीं थी। बहुत कुछ संभव है, काबुल (कुभा) की उपत्यका तक उस वक़्त मानव-बस्ती ही न रही हो। इसमें भी

सन्देह है कि हिन्दूकुश के दर्रे ने उन्हें काबुल की वादी में आने का रास्ता बतलाया। मुमकिन है, वह हिरात से कन्धार होते हुए काबुल पहुँचे हों। इसी रास्ते हिरात से काबुल वाली मोटरें आती-जाती हैं। हिन्दूकुश से बलख़ पहुँचा जा सकता है—यह ज्ञान काबुल में बस जाने के हज़ार वर्ष बाद हुआ होगा। जिस रास्ते का पता हमारे पूर्वजों को हज़ार हज़ार वर्षों के बाद लगा था, और उस पर भी जो काफ़िला पार करने की हिम्मत करता था, वह अच्छी तरह समझ लेता था, कि उनमें से अगर आधे भी पार हो जायँ, तो ग़नीमत है; उसी भयंकर रास्ते को हम चन्द दिनों में और काफ़ी आराम के साथ पार कर लेते हैं। हम अपने पूर्वजों की अज्ञता पर हँसेंगे, लेकिन क्या हमारे ज्ञान-भंडार की प्रथम नींव उन्हीं सीधे-सादे चरवाहों ने नहीं डाली थी? और यह तो निश्चय ही है कि काल के सामने ख़म ठोंक कर खड़े होने में जितनी वे हिम्मत रखते थे, उतनी हम में नहीं है।

हमारा ताँगा तीन घंटे और चला होगा और दो बजे के करीब वह एक उजाड़ बस्ती के भीतर घुसने लगा। ताँगेवाले ने कहा कि यहाँ की फ़ौजी चौकी पर हमें सवार बदलने हैं। यह चौकी भी मिट्टी के छोटे क़िले जैसी थी। दरवाज़ा खटखटाने पर वह देर से खोला गया। पूछने पर जमादार ने बतलाया कि उन्हें टेलीफ़ोन नहीं मिला और इस प्रकार वह आगे के लिए सवार नहीं दे सकते। सवार के बिना अकेले ताँगे पर जाना सोचने की भी बात न थी। आख़िर पास की सराय में ठहर जाने की बात पक्की हुई। आध घंटा आवाज़ देते और दरवाज़ा खटखटाते रहे, लेकिन वहाँ से कोई नहीं निकला। आख़िर दो बजे रात का समय भी तो इसके लिए नहीं है। फ़ौज के जमादार साहब बुलाये गये और उन्होंने भी चिल्लाना शुरू किया; तब एक धीमी सी आवाज़ आई कि सरायवान गाँव में अपने घर चला गया है। एक मुसाफिर ने आकर दरवाज़ा खोला और भीतर कच्ची ईंटों की मेहराब की छतवाली एक कोठरी में हमें जगह

मिली। बिस्तर बिछा कर वहीं सो गये। ताँगेवाले ने अपने दोनों घोड़ों के लिए घास-चारे का कहीं न कहीं से इंतज़ाम कर लिया।

सवेरे उठते वक़्त बाहर सूरज उग आया था। सभी घर कच्ची मिट्टी की छतों के थे; वैसे ही जैसे अराल-समुद्र से यहाँ तक हम देखते आ रहे थे। और जैसे कि हम यहाँ से लखनऊ तक देखेंगे। बहुत से घर गिर पड़ गये थे, जो बतला रहे थे कि गाँव बराबर अवनति की ओर जा रहा है। दो-चार ग्रास रोटी के खाये। एक-दो प्याला बिना दूध के मीठी चाय पी और हम ने शागिर्द गाँव से प्रस्थान किया। अब दिन का वक़्त था, इसलिए सवारों की कोई ज़रूरत न थी। रास्ता अब भी जन-वनस्पति-शून्य बयाबाँ से था। छोटी छोटी घासें मौजूद थीं जिनसे भेड़, बकरियों के चराने का सुभीता था। ज़मीन पथरीली या बालुकामयी नहीं है। कुआँ खोदने से पानी भी हर जगह निकल सकता है। अर्थात् ट्यूबवेल की सिंचाई और मनुष्यों का श्रम प्राप्त हो जाय, तो यह सारी ऊजड़ और चटियल ज़मीन हरे हरे खेतों और स्वादिष्ट मेवों के बड़े बड़े बाग़ों के रूप में परिणत हो सकती है। शागिर्द से मज़ारशरीफ़ पहुँचने में ढाई घंटे के क़रीब लगे होंगे। ताँगे के घोड़े काफ़ी मज़बूत थे। लेकिन हाल में पानी के बरस जाने से सड़क कुछ गीली हो गई थी; और कितनी जगह कीचड़ से बचकर निकलना होता था। सामने नीली पर्वत-श्रेणियाँ देखने में नज़दीक़ मालूम होती थीं, लेकिन जितने ही हम नज़दीक पहुँचते जाते थे, उतनी ही वे दूर हटती जाती थीं। **मज़ारशरीफ़्** की लम्बी-चौड़ी, बस्ती सामने दिखलाई पड़ने लगी। जान पड़ता था, वह पर्वत की जड़ में बसी हुई है। लेकिन ९ बजे जब हम वहाँ पहुँचे, तो पर्वत अब भी बहुत दूर था। बस्ती से बाहर सड़क के किनारे एक टिन की छत का मकान मिला। उसके आसपास दूर तक भूमि समतल बनाई गई थी। यह जानने में हमें दिक़्क़त नहीं हुई कि यह हवाई जहाज़ के उतरने का अड्डा है। मकान की बरसों से मरम्मत नहीं हुई। दीवारों को वर्षा के पानी से नुकसान हुआ है। मैदान भी बेमरम्मत है। पूछने पर मालूम हुआ कि अमानुल्ला के शासन काल तक ताशकन्द और
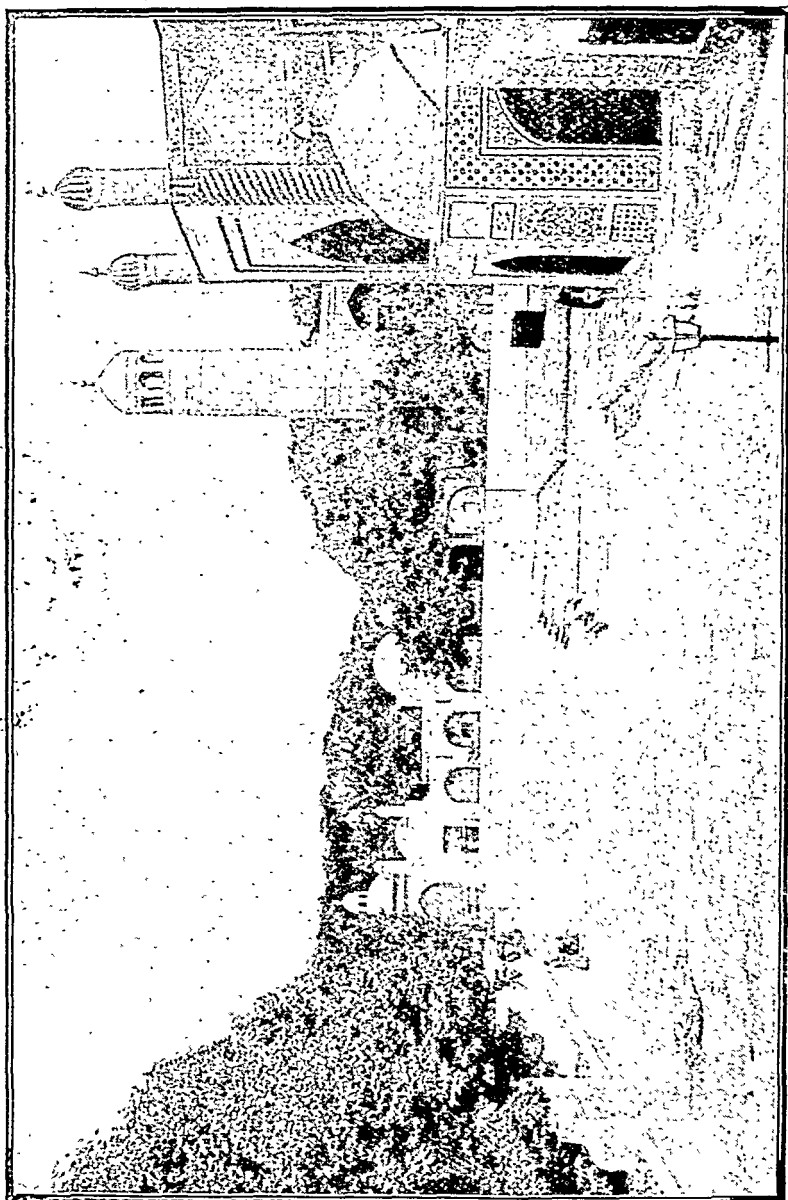
मजारशरीफ़् (अफगानिस्तान)

कावुल के वीच नियमित हवाई जहाज़ों का आना जाना होता था और उस वक़्त मज़ारशरीफ़् हवाई स्टेशन था। उसके वाद से हवाई-यातायात वन्द हो गया। आगे एक और मिट्टी का क़िला जैसा मिला उसके वाहर जानवरों का वाज़ार लगा हुआ था। ऊँट, घोड़े, भेड़ें सभी का सौदा हो रहा था। हमें शहर में घुसने से पहले नये अस्पताल की इमारत मिली। इमारत क़रीव क़रीव वनकर तैयार हो गई थी; लेकिन काम अभी शहर वाले मकान में ही हो रहा था। शहर की सड़कों को सीधा करने और सुधारने की कोशिश की गई है; ख़ास कर **वल्दिया** (म्युनिसिपलिटी) के सामने वाली सड़क पर। मज़ारशरीफ़् जिस मज़ार या **ज़ियारत** के लिए मशहूर है, उस के नीले नीले ऊँचे गुम्वद वहुत दूर से ही दिखाई देते हैं। अपनी प्रतिष्ठा और चमत्कार के लिए यह ज़ियारत सारे अफ़ग़ानिस्तान में, और क्रान्ति से पहले मध्य-एशिया में भी मशहूर थी। मनुष्य की ऐसी कोई कामना नहीं है, जिस की पूर्त्ति मज़ारशरीफ़् की ज़ियारत न करती हो। सरकार की ओर से विदेशी मुसाफ़िरों के रहने के लिए वल्दिया के पास एक अच्छा मेहमान-ख़ाना (होटल) वना हुआ है। होटल की इमारत नई है, और वादशाह नादिरशाह के शासन में वनी है। कमरों की दो क़तारें हैं, जिनके वीच में से गलियारा चला गया है। कोठरियाँ साफ़ और हवादार हैं। जाड़ों में भीतर से गर्म करने के लिए अंगीठी का भी इन्तज़ाम है। वहुत से कमरों के साथ गुसलख़ाना भी लगा हुआ है। लेकिन पाख़ाना एक तरफ़ है और उतना साफ नहीं है।

शहर में दाख़िल होने के वाद सवसे पहले हमें **गुम्रग्** में जाना पड़ा। वहीं होटल का आदमी मिल गया। उसने कहा—दोनों वक्स यहाँ छोड़ चलें, पीछे फ़ुरसत के वक़्त आकर दिखला लिया जायगा।

हम लोग मेहमानख़ाने गये। नाश्ते के वाद वाज़ार घूमने निकले। एक लम्वी सड़क है जो होटल के सामने से होकर सारे शहर को पार कर गई है। प्रधान वाज़ार और वड़ी वड़ी दुकानें इसी सड़क पर हैं। पुराना

बाज़ार भी कम आबाद नहीं है; और वह मिट्टी की मेहराबदार छतों के नीचे बहुत दूर तक बसा हुआ है। देखने में वह ईरान की पुरानी बाज़ारों सा मालूम होता है। ऐसी मेहराबी छतों के नीचे के बाज़ार सिन्धु की किनारे जामपुर (जिला डेराग़ाज़ीख़ां) आदि में भी देखने में आते हैं। यहाँ कोई गली मेवों की थी तो कोई गल्ले की। कोई जूतों की तो कोई कपड़ों की। किसी गली में पुरानी चीज़ें बिक रही थीं। माल ढोने वाले गधे, खच्चर- और ऊँट तहाँ जहाँ दिखाई देते थे। मेवे और क़ालीन यहाँ सस्ते मिलते हैं। सूखे तूत खाने में कन्द-जैसे जान पड़ते हैं। बादाम, पिश्ता, चिलगोज़ा और किशमिश को तो भुने चनों की तरह खाया जाता है। मांस अधिकतर दुम्बे का होता है। होटल में लौटकर हमने दोपहर का खाना खाया। प्रति- दिन कमरे का किराया ७ अफ़ग़ानी और दो वक़्त के भोजन और एक वक्त की चाय के लिए १० अफ़ग़ानी देना होता है अर्थात् सब मिला कर सवा चार रुपये रोज़। रूस और यूरोप के मुक़ाबिले में यह इन्तज़ाम बहुत सस्ता है, इसके कहने की आवश्यकता नहीं।

जिस वक़्त बाज़ार घूम कर हम होटल के सामने ताँगे से उतर रहे थे, उसी वक़्त अच्छी ख़ासी समतल सड़क पर हमारा पैर ग़लत पड़ गया और दाहिने पैर में मोच आ गई। दर्द इतना होने लगा कि मालम होता था— हड्डी जोड़ पर से उतर गई है। ऊँची नीची भूमि, चलती भूगर्भी रेलों, मोटरों और रेलगाड़ियों से उतरने में कहीं कुछ नहीं हुआ, और यहाँ बिल- कुल समतल भूमि में पैर की यह हालत। जान पड़ता था, अस्पताल जाना पड़ेगा। दर्द बड़े ज़ोर का था। खाना खाने के बाद थोड़ी देर हम लेट रहे। पैर में अब भी दर्द था। लेकिन सोचा, मज़ारशरीफ़ में रह कर करेंगे क्या, बलख़ देखकर चल देना ही अच्छा है।

बलख़ १२–१३ मील पर है और रास्ता ताँगे और मोटर का है; इस लिए सोचा, ताँगे पर बैठे बैठे आज ही बलख़ देख आना चाहिए। ताँगा किराया कर होटल के दोनों नौजवान ख़ानसामों के साथ एक बजे हम बलख़

के लिए रवाना हुए। सड़क कच्ची है, लेकिन वहुत ख़राव नहीं है। सड़क के दोनों तरफ़ खेत हैं। आमतौर से जनवरी और फ़रवरी के महीनों में यहाँ वर्फ़ पड़ जाया करती थी; लेकिन इस साल वर्फ़ अभी नहीं पड़ी। सर्दी भी कोई ज़्यादा नहीं। कुछ मील चले जाने पर तख़्ता-पुल का भारी क़िला मिला। दीवारें मिट्टी की हैं और यद्यपि कई सालों से पलटन यहाँ नहीं रहती; लेकिन अव भी छत और दीवारें सुरक्षित खड़ी हैं, जो वतला रही थीं कि वाह्लीक की भूमि में वर्षा कड़ी नहीं होती। दूर दूर पर हमें एक दो वस्तियाँ मिलीं। फिर हम प्राचीन वलख़ नगर के मीलों तक फैले ध्वंसा-वशेष में प्रविष्ट हुए। कहीं पर मिट्टी का ऊँचा स्तूप-सा मिलता था। और कहीं पर ऊँची गढ़ी-सी। वहुत जगह खेत हैं, जिनमें ठीकरे, ईंटों के टूकड़े, तथा कभी कभी पुराने सिक्के भी मिलते हैं। शहर के भीतर से अव भी पानी की एक नहर जाती है; लेकिन अव उससे सिर्फ़ खेतों की सिंचाई का काम लिया जाता है। सड़क के किनारे हज़रत अक्सा की क़ब्र है और सड़क से थोड़ा हटकर दाहिनी ओर हज़रत **रोज़ादार** का रौज़ा है। हज़रत रोज़ा-दार की क़ब्र के वारे में कितने ही चमत्कार वतलाये जाते हैं। हमारे साथ का ताजिक नौजवान कह रहा था—हज़रत रोज़ादार की छाया में जिस की क़ब्र वन गई, उसको दोज़ख़ की आग नहीं जलाती। कितनी ही दूर और जाने के वाद एक छोटा सा वाज़ार मिला, जिसके कुछ मकान हाल ही में आग से जल गये थे। मकानों की दीवारें अधिक तर ईंटों की हैं और ये ईंटें पुरानी इमारतों से खोदकर निकाली गई हैं। वाज़ार के वीच से वाईं ओर होकर हम वड़ी मसजिद के पास पहुँचे। यह मसजिद भी वहुत कुछ नष्ट हो चुकी है, किन्तु इसके दो एक विशाल गुम्वद अव भी क़ायम हैं। अफ़ग़ान सरकार ने इसकी थोड़ी सी मरम्मत भी कर दी है। मसजिद को एक वड़ी गोल चक्करदार सड़क से घेर दिया गया है; और वीच में वाग़ लगाया गया है। इस चक्कर से एक सड़क पश्चिम तरफ़ निकलती है। इसी सड़क पर नया वलख़ वसाया जा रहा है। वलख़ शहर का आवाद

होना कहाँ सम्भव है? हाँ, सड़क की दोनों ओर दो-ढाई दर्जन दुकानें बना दी गई हैं। दुकानें नये ढंग की तथा ईंटा-चूने से बनी हैं। दुकानदार अधिकतर यहूदी हैं और मज़ारशरीफ़् से लाकर यहाँ बसाये गये हैं। यहूदी बड़ी व्यापार-कुशल जाति है; इसीलिए शायद सरकार ने समझा है कि अच्छी अच्छी दुकानों के मज़ारशरीफ़् से बलख़ में आ जाने पर सम्भव है, यह मज़ारशरीफ़् का स्थान ले ले।

हमें यह मालूम था कि फ़्रेंच-पुरातत्त्वज्ञों ने अफ़ग़ानिस्तान के कुछ स्थानों की खुदाई की है। खुदाई के बारे में पूछने पर एक आदमी ने एक जगह बताई। भटकते भटकते हम ताँगे पर वहाँ पहुँचे। देखा, नीचे खोदते वक़्त मज़दूरों को मकान की एक नींव मिल गई। दीवार पौने दो गज़ मोटी थी, और ईंटें १ फ़ुट लंबी, १ फ़ुट चौड़ी और पौने २ इंच मोटी थीं। बलख़ को मादरेशहर (शहरों की माँ) कहते हैं, और इसमें शक़ नहीं कि यह संसार के बहुत पुराने शहरों में है। ईसा से ५००–६०० वर्ष पूर्व जब ईरान के **अख़ामनशी** सम्राटों का राज्य एशिया, यूरोप और अफ़्रीका—तीनों महाद्वीपों में फैला हुआ था, उस वक़्त यह एक महानगर था। किसी न किसी बड़े रूप में ईसा पूर्व १००० वर्ष में भी यह ज़रूर रहा होगा। सिकन्दर के बाद तो यह यूनानी राजाओं के मुख्य केन्द्रों में था। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में मिनान्दर (मिलिन्द) की यह राजधानियों में था। यूनानी शासन की समाप्ति के बाद फिर यह पार्थिव (ईरानी) सम्राटों के हाथों में चला गया। और तब से **सासानियों** के अन्तिम समय (६५२ ई०) तक यह ईरान के गवर्नर या सामन्त की राजधानी रहा। सातवीं सदी से यह अरबों के शासन में आया। उस वक़्त यहाँ कितने ही विशाल बौद्ध-मन्दिर और पारसी अग्नि-देवालय थे। जन-संख्या ही में बड़ा नहीं था, बल्कि यहाँ की सम्पत्ति भी असंख्य थी। चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और यूरोप के वाणिज्य का केन्द्र होने से इसकी समृद्धि अद्वितीय थी। अरब आये। उन्होंने सिर्फ़ राजनीतिक ही युद्ध नहीं किया, बल्कि धर्म के नाम पर तत्का-

लीन कला और संस्कृति के खिलाफ़ जहाद बोल दिया। न जाने कितने सौ बौद्ध-विहार और अग्नि-शालाएँ नष्ट की गईं। न जाने कितनी लाख पुस्तकें आग की भेट की गईं। न जाने कितने लाख स्वदेशी धर्म और संस्कृति के माननेवाले स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे, तलवार के घाट उतारे गये। न जाने कितने हज़ार घरों में हफ़्तों तक आग सुलगती रही। उस वक़्त यहाँ के रहनेवाले अधिक तर ताजिक थे। उनकी भाषा फ़ारसी है। आज भी उनकी कुछ संख्या इस प्रान्त में मिलती है, यद्यपि उनसे कहीं अधिक संख्या उजबेक लोगों की है। मध्य-एशिया में जिस जाति ने अरबों को सब से ज़्यादा परेशान किया, दो शताब्दियों तक अरबों के साथ जिसने लोहा लिया। एक एक करके कट गए, लेकिन सभ्य ताजिक ने अपने सिर को बर्बर अरबों की तलवार के सामने झुकने नहीं दिया; चाहे उनके गाँव जला दिये गये, शहर उजाड़ दिये गये, और अरबों के साथ मिलकर उनके धर्म में नव-दीक्षित तुर्कमान और उजबेकों ने भी कोई अत्याचार करना उठा नहीं रक्खा। एक एक अंगुल को भी आसानी से न छोड़ते, उन्हें पामीर और हिन्दूकुश के दुर्गम पहाड़ों में जान बचाने के लिए घुसना पड़ा। ऐसा भी समय आया, जब लाख लाख ताजिक अरबों के सामने मत्था झुकाने की अपेक्षा अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए स्वदेश छोड़ चीनी-तुर्किस्तान में चले गये। जिन अरबों का इन्होंने नाक में दम कर दिया था, उन्हींके लेखों से ताजिकों की निर्भीकता और वीरता की दाद मिलती है। आज भी सोवियत् और अफ़-ग़ान पामीर में यही जाति निवास करती है। सोवियत् ने तो इस जाति की भूमि को ताजिकिस्तान प्रजातंत्र के नाम से एक स्वतंत्र प्रजातंत्र उद्घोषित कर दिया है। यह सोवियत्-संघ के उन ११ प्रजातंत्रों में है, जिन्हें अधिकार है कि जब चाहें तब सोवियत्-संघ से अलग हो जायँ। ताजिकिस्तान में १३–१४ लाख की आबादी है। वहाँ पर शिक्षा और सरकारी दफ़्तर सभी जगह उनकी मातृभाषा, फ़ारसी भाषा अनिवार्य है। लाल-क्रान्ति के बाद पिछले २० वर्षों में साम्यवादी ताजिकों ने हर क्षेत्र में बहुत उन्नति की है।

क्रान्ति से पहले ताजिकिस्तानी फ़ारसी एक गँवारू ज़बान समझी जाती थी, और अब उसमें कितने ही दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र निकलते हैं। हर साल हज़ारों स्कूली और दूसरी किताबें छपती हैं। सैकड़ों बोलते फ़िल्म तैयार हुए हैं। कितने ही मौलिक नाटक लिखे और खेले गये हैं। ताजिक संगीत और चित्रकला बहुत आगे बढ़ी है। स्तालिनाबाद (ताज़िकिस्तान) से हर रोज़ ताजिक भाषा में संगीत, समाचार और व्याख्यानों का रेडियो पर ब्राडकास्ट होता है। ताजिक जाति ने हज़ारों लाल-सैनिक, लाल-अफ़सर, वैमानिक और इंजीनियर पैदा किये हैं। एक बार फिर ताजिकों को खुलकर संसार के रंग-मंच पर अपना जौहर दिखाने का मौका मिला है। यद्यपि जो बात सोवियत् ताजिकों के बारे में कही जा सकती है, वही बात अफ़ग़ानिस्तानी ताजिकों के बारे में नहीं कही जा सकती। अफ़ग़ानिस्तान में भी उनकी संख्या १२–१३ लाख से कम न होगी। शिक्षा और संस्कृति में भी वह अफ़ग़ानिस्तान की सभी जातियों से आगे बढ़े हुए हैं। वीरता में वह किसी से कम नहीं हैं। समय पहचानने में तो वे कमाल करते हैं। अमानुल्ला के ख़िलाफ़ अफ़ग़ानिस्तान में जब बग़ावत हुई, उस वक़्त मौक़े से फ़ायदा उठाकर बच्चा-सक्का बादशाह बन गया। बच्चासक्का ख़ुद ताजिक था।

बलख़ के अरबों द्वारा ध्वस्त किये जाने के प्रकरण में प्रसंगवश ताजिकों के बारे में हमें कुछ कहना पड़ा। आजकल बलख़ के प्रदेश में अधिकतर उजबेक लोग रहते हैं, और उससे पश्चिम हिरात और ईरान की सीमा तक तुर्कमान। भविष्य में अफ़ग़ानिस्तान के लिए ताजिक, उजबेक और तुर्कमान जातियाँ एक भारी समस्या हो जायेंगी; क्योंकि इन जातियों के सगे भाई-बन्धु कई लाख की तादाद में ताजिकिस्तान, उज़बेकिस्तान और तुर्कमानियाँ के स्वतंत्र प्रजातंत्रों के रूप में अफ़ग़ानिस्तान की सीमा पर संगठित हैं। वह आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक अवस्थाओं में बड़ी तेज़ी के साथ आगे बढ़ते जा रहे हैं। इसमें शक नहीं, अब

भी अफ़ग़ानिस्तान में उन्हें बतलाया जाता है—सोवियत् के भीतर रोटी का अकाल पड़ा हुआ है, हज़ारों आदमी भूखों मर रहे हैं, ज़रा ज़रा कसूर पर हज़ारों आदमियों को गोली से उड़ाया जा रहा है; सोवियत् अधिकारी क़ाफ़िर हैं, इसलाम और ख़ुदा के सख़्त दुश्मन हैं। इस तरह का भुलावा अभी कुछ काम भी करता जा रहा है; लेकिन सोवियत् के भीतर के ताजिक, उजवेक और तुर्कमानों की आर्थिक उन्नति ऐसी हल्की नहीं है कि जिसको बीसों बरसों तक लोगों से छिपाया जा सके। जिस वक़्त इन लोगों को मालूम हो जायगा कि उनके भाई-वन्द इतने सुख और आनन्द, इतने ज्ञान और कला की ज़िन्दगी विता रहे हैं; तो इसका असर उन पर हुए बिना नहीं रहेगा। अभी तो सोवियत्-सरकार भी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों के कारण अपनी सीमा को वन्द सी किये हुए है; लेकिन जिस वक़्त बाहरी खतरे का खयाल उठ जायगा, तो वह सीमा के पार बसनेवाले हज़ारों आदमियों को भीतर आने का मौक़ा देगी; जिसमें कि वह खुद आ कर देख लें कि सोवियत् -शासन की कृपा से उनके भाई-वन्द कहाँ से कहाँ पहुँच गये हैं। और तब सोवियत्-शासन के प्रति जहाँ एक तरफ़ उनके मन में सद्भाव पैदा होगा, वहाँ काबुल के शासकों के प्रति उनके दिल में दुर्भाव भी पैदा हुए बिना नहीं रहेगा। काबुल इन जातियों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नति में पूरा सहयोग देकर ही इनके भीतर आने वाली असन्तोष की लहर को रोक सकेगा।

अरबों ने एक बार बलख को नष्ट और बर्बाद किया सही, लेकिन अपने शासन के स्थापित हो जाने तथा अधिकांश जनता के मुसलमानी धर्म में दीक्षित हो जाने पर फिर उन्होंने बलख़ को वैसा ही सम्पन्न और समृद्धि-शाली बनाया। अरबों के शासन में भी बलख़ वाणिज्य-व्यवसाय तथा शिक्षा-सभ्यता का केन्द्र रहा। इसलाम के इतने बड़े बड़े पंडित और धर्मोपदेशक यहाँ पैदा हुए कि जिनकी वजह से इसे बलख़-शरीफ़ कहा जाने लगा। अभी ५०० वर्ष भी इस सुख और शान्ति को भोगने का अवसर नहीं मिला

था, कि एक बार फिर एक प्रचंड आग पूर्व-उत्तर से इसकी सीमा में दाखिल हुई। चंगेज़ की सेना वक्षु से पार उतरने लगी। पहले ही से बलख़ वालों ने चंगेज़ की तलवार की कहानी ज़रूर सुन रखी होगी, और शायद इसके रोकने के लिए मसजिदों और ज़ियारतों में महीनों दुआएँ पढ़ी जाती रही होंगी। शहर के दुर्ग को मज़बूत किया जाता रहा होगा। अरब, तुर्क, ताजिक और तुर्कमान सभी पवित्र इसलाम धर्म के माननेवाले इस ईमान् के दुश्मन से मुक़ाबिला करने की तैयारी करते रहे होंगे। लेकिन चंगेज़ वह तूफ़ान था, जिसके सामने न चीन ठहर सका, न रूस, न ख़लीफ़ा ठहर सके, न ईसाई धर्म-गुरु! बलख़वालों में बूता ही क्या था, तो भी उन्होंने लड़ाई में वीरता ज़रूर दिखलाई होगी, तभी तो चंगेज़ को बलख़ जीत लेने मात्र से ही सन्तोष नहीं हुआ। उसने बलख़ की ईंट से ईंट बजंवा दी। शहर में कतले-आम हुआ। महलों और मकानों को जलाकर राख कर दिया गया। मसजिदों और ज़ियारतों की उसने वही गति की, जैसी ५०० वर्ष पहले अरबों ने बौद्ध-विहारों और अग्निशालाओं की की थी। जिस तरह वह विहार और अग्निशालाएँ फिर बलख़ की भूमि पर खड़ी न हो सकीं, उसी प्रकार इन ज़ियारतों और मसज़िदों को भी फिर सिर उठाने का मौक़ा नहीं मिला। सात सदियों पहले बलख़ के दुर्ग और प्राकार महल और हवेलियाँ, मीनार और गुम्बद ईंटों और मिट्टी के ढेर बने; और वह आज भी उसी ढेर के रूप में हैं। शायद चंगेज़ ने अरबों को उनकी पहली क्रूरता का बदला दिया था। मंगोल बौद्धों में तो अब भी कहावत है कि धर्म-रक्षक महान् देवता महाकाल खुद ही चिङ्-हिर्-हान् (चंगेज़ ख़ां) के रूप में संसार में आया था। अरबों ने जो हज़ारों मठ और विहार ध्वस्त किये थे, लाखों निर्दोष भिक्षुओं की हत्या की थी, हज़ारों ग्रन्थागारों की ताल और भोजपत्र की पोथियों से जो हम्माम गर्म किये थे; उसी पाप का दंड देने के लिए महाकाल चंगेज़ ने मध्य-एशिया के अरबों और इसलाम-धर्मियों पर यह ज़ुल्म किया था। यह वही समय था, जब कि दिल्ली के हिन्दू सिंहासन को

रिक्त हुए एक पीढ़ी भी नहीं बीती थी।

बलख़ के खंडहरों की थोड़ी और खाक छानकर जिस वक़्त हम लौटने लगे और अभी खंडहर से बाहर भी नहीं हुए थे; कि एक छोटी सी नहर—जिसपर आड़ी लकड़ियों का पुल बना था—के पुल में घोड़े का एक पैर फँस गया और चर्र सी आवाज़ के साथ घोड़ा वहीं गिर गया। उस आतंक से हमें अपने पैर की चोट भूल गई और न जाने किस वक़्त कूद कर हम ज़मीन पर पहुँच गये। बड़ी मुश्किल से घोड़े का पैर लकड़ी की दरार में से निकाला गया। हड्डी को टो कर कुछ राहगीरों ने फतवा दिया कि वह टूट गई है। अफ़ग़ानिस्तान में ताँगे के घोड़े की बग़ल में एक और सहायक घोड़ा बँधा चलता है, जो थक जाने पर खींचनेवाले घोड़े की जगह पर जोत दिया जाता है। उस घोड़े को जोता गया और घायल घोड़े को पीछे से पकड़ कर धीरे धीरे चलाया जाने लगा। कुछ दूर बाद ताँगे वाला घोड़े को दौड़ाने लगा। यद्यपि शाम सिर पर आ गई थी, और हमें ९–१० मील जाना था; तो भी मैंने बारबार ताँगेवाले से कहा कि घायल घोड़े को इस तरह दौड़ाना अच्छा नहीं है। उसका कहना था—दौड़ने से गरमी आयेगी और घोड़े का पैर ठीक हो जायगा। ख़ैर कुछ दूर चलने के बाद यह तो निश्चय हो गया कि घोड़े की हड्डी नहीं टूटी है। अंधेरा होते वक़्त एक मोटर लॉरी पीछे से आती दीख पड़ी और ताँगे को छोड़ हम वहीं उसपर सवार हो गये। अंधेरा होते होते वलख़ पहुँच गये। दूसरे दिन जुमा (शुक्र) था, इसलिए दफ़्तरों में तातील थी; और हम काबुल के लिए रवाना न हो सके। पैर में अब भी हल्का दर्द था। पता लगाने पर मालूम हुआ कि डाक्टर हिंदू हैं। जाने पर कप्तान सी० जे० प्रभाकर बड़े प्रेम से मिले। मैं तो समझता था, हिन्दुस्तान से इतनी दूर वक्षु और सोवियत् सीमा के क़रीब आने की हिम्मत सिवा पंजाबी के किसको होगी, लेकिन वहाँ देखा कि एक कर्नाटकी रिटायर्ड आई० एम्० एस्० सुदूर दक्षिण हुब्ली (बम्बई प्रान्त) से आकर इतनी दूर पर बैठा हुआ है। कप्तान प्रभाकर को यहाँ आये २० मास हो गये। सर्दी

गर्मी तो किसी तरह बर्दाश्त कर लेते हैं, यद्यपि उनके जैसे बूढ़े के लिए वह भी बड़ी हिम्मत की बात है; लेकिन यहाँ उन्हें कोई उस तरह का संस्कृत-समाज नहीं मिलता। बोली-भाषा की भी उन्हें बहुत दिक़्क़त है। श्रीमती प्रभाकर को लेकर उनका लड़का जॉन एल० प्रभाकर कुछ मास पहले आया था; और अब वह लौटना चाहता था। लेकिन श्रीमती का मन इतना उकता गया है कि वह वहाँ से भागने के लिए तैयार हैं। जॉन मेरे साथ आना चाहते थे, लेकिन माँ के आग्रह के कारण नहीं आ सके। कप्तान प्रभाकर ने चाय पिलाई और मेरे पैर को देखकर दवा बतलाई। स्वदेश से इतनी दूर और इतने दिनों बाद एक भारतीय भाई को देखकर प्रसन्नता होनी ज़रूर ही थी।

मज़ारशरीफ़् से ३ क्रोर (=३ क्रोश, ६ मील) पर दीदादी है। यहाँ अफ़ग़ानी फ़ौजी छावनी है। इस जगह ४-५ हज़ार पलटन है। मज़ारशरीफ़् में बेतार का तार भी लगा हुआ है। हर एक अफ़ग़ानी प्रजा को २ साल की सैनिक शिक्षा अनिवार्य है; और इसमें अफ़ग़ानिस्तान में बसने वाली सभी जातियाँ—तुर्कमान, उजबेक, ताजिक, नूरस्तानी (लाल क़ाफ़िर), पठान और बिलोच शामिल हैं। बच्चा-सक्का की लड़ाई के बाद नई हुकूमत ने इधर के लोगों के हथियार ले लिये हैं, तो भी जानकारों का कहना है कि लोग बेहथियार नहीं हो गये हैं।

दो-ढाई साल से अफ़ग़ान-सरकार ने बहुत सा व्यापार अपने हाथ में ले लिया है। सूखे मेवे वह खुद ख़रीदती है और देश से बाहर खुद ही भेजती है। इसकी वजह से जो अफ़ग़ानी सौदागर ख़रीद फ़रोख़्त का काम करते थे, नाराज़ हो गये; और जब अफ़ग़ानी सरकार की एजेंसी पेशावर, कानपुर, कलकत्ता या और किसी हिंदुस्तानी शहर में खुदरा बेचनेवाले सौदागरों को भी सीधा माल बेचने लगी, तो हिन्दुस्तानी व्यापारी भी बिगड़ उठे। आज (११ मार्च) तीन ही चार दिन हुए कि कानपुर के मेवा-फ़रोशों की इसी प्रकार की एक हड़ताल का समाचार पत्रों में छपा है। मशीन, पेट्रोल, मिट्टी का तेल, चीनी, कपड़ा आदि सभी बाहर से आनेवाली

चीज़ें सरकार से नियुक्त अर्द्धसरकारी कम्पनियाँ मुल्क के भीतर मँगाती हैं; और वही ख़ुदरा फ़रोशों को देती हैं। इन कम्पनियों में दूसरे सौदागर भी शामिल हो सकते हैं, लेकिन उन्हें अफ़ग़ानी प्रजा होना चाहिए। आयात और निर्यात के व्यापार को सरकार अपने हाथ में लेकर चाहती है कि उस आमदनी से उद्योग-धंधे और कला-कौशल को बढ़ाया जाय। शाह नादिर का सब से पहले ध्यान सड़कों और बन्दों की तरफ़ गया था। उन्होंने पचीसों बड़े बड़े बन्द बँधवा कर नदी के पानी को जमा करा, उसे सिंचाई के उपयुक्त बनाया। कई मोटर की नई सड़कें निकालीं। काबुल के बाहर क़स्बों और शहरों को भी दर्शनीय बनाने की कोशिश नादिरशाह और उनके पुत्र वर्तमान अफ़्ग़ान-नरेश जाहिरशाह कर रहे हैं। हाल में कुछ ऊनी और सूती कपड़ों की मिलें भी खुली हैं। अफ़ग़ान सरकार को सामाजिक तथा शिक्षा संबंधी सुधार में बहुत फूँक फूँक कर पैर रखना पड़ रहा है।

वक्षु-तट से मज़ारशरीफ़् तक हमें सौ अफ़ग़ानी रुपये (२५ रुपये) देने पड़े थे; और यहाँ से काबुल तक ६० अफ़ग़ानी (१५ रुपये); और काबुल से पेशावर तक ५) पाँच रुपये; अर्थात् सोवियत् सीमा से पेशावर तक पहुँचने में ४६ रुपया भाड़ा देना पड़ा।

हमारे पास अफ़ग़ानी रुपये नहीं थे, इसलिए २९ जनवरी को पहले बैंक मिल्ली (राष्ट्रीय बैंक) से १० पौंड का चेक तुड़ाना था। उस वक़्त हमें नहीं मालूम था; कि ईरान की तरह यहाँ भी बाहर दर कुछ और भीतर दर कुछ और है। हमें साढ़े तीन अफ़गानी फी रुपये के हिसाब से मिला, यद्यपि बाज़ार में दर चार अफ़ग़ानी फ़ी रुपये हैं। हर रुपये पीछे दो आने का घाटा। इस प्रकार १६॥-) की चपत लगी। अफ़ग़ानिस्तान में कानूनी तौर पर अभी सिक्कों के बदलने में उतनी कड़ाई नहीं है, इसलिये यदि मालूम होता, तो मैं कहीं किसी और जगह से रुपये ले लेता। वहाँ से गुम्रग गये। अफ़सर ने मामूली तौर से बक्सों को देख लिया और उनपर राँगे की मुहर लगा दी। तार से काबुल के गुम्रग में सूचना देने की बात भी कही।

मोटर-लॉरी के बारे में पूछने पर मालूम हुआ कि आज कोई जानेवाली नहीं है। होटल की बग़ल में म्युनिसिपलिटी के तीन कमरों में मज़ारशरीफ़् का म्युज़ियम है। म्युज़ियम का कार्य अभी हाल ही में शुरू हुआ है; तो भी कुछ अच्छी चीज़ें जमा हो गई हैं। हज़ार से ऊपर यूनानी और कुषाण राजाओं के चाँदी, सोने, ताँबे के सिक्के हैं। इन सिक्कों में से अधिकांश यहाँ से ३ कोस दक्षिण शहरवान से मिले हैं। चूने के बने दो बोधिसत्व-शिर गान्धार-शिल्प के सुन्दर नमूने हैं। एक कमरे में अरबी-फ़ारसी की कुछ पुरानी हस्तलिखित पुस्तकें भी जमा की गई हैं; जिनमें सबसे पुराना हस्तलेख दूसरी सदी हिज्री (ईसा की आठवीं सदी) का है।

दोपहर का भोजन समाप्त कर लेने पर मालूम हुआ कि एक लॉरी जा रही है; और ६० अफ़ग़ानी पर ड्राइवर की बग़ल में जगह मिल रही है। हमारा काम सब हो चुका था, इसलिए हम जाने को तैयार हो गये।

२—काबुल को

दोपहर बाद २ बजे हमारी लॉरी रवाना हुई। शहर से बाहर पेट्रोल के लिए हमें थोड़ी देर ठहरना पड़ा। इधर ख़र्च होनेवाला सभी मिट्टी का तेल और पेट्रोल सोवियत् से आता है। मज़ारशरीफ़् के बाहर अगल-बगल में कितने ही मेवों के बाग़ हैं; किन्तु आजकल सभी के पत्ते झड़ गये हैं और दरख़्त सूखे से मालूम होते हैं। कितने ही चिनार के दरख़्त—जो गर्मी के दिनों में अपने हरे पत्तों और घनी छाया के कारण शोभाराशि से मालूम होते होंगे—इस वक़्त नंगे डरावने से मालूम होते हैं। मज़ारशरीफ़ अपने ख़रबूजों (सर्दे) के लिए बहुत मशहूर है; किन्तु हम ऐसे वक़्त में पहुँचे थे, जब कि सेब और अंगूर के सिवा सभी फल सिर्फ़ सूखे ही मिल सकते थे।

शहर से हम बाहर निकल आये। ज़मीन मैदानी थी, लेकिन खेत कम थे। सड़क की मरम्मत में कितने ही लोग लगे हुए थे। ईरान की सड़कों से तो मुक़ाबला नहीं किया जा सकता, लेकिन हिन्दूकुश से मज़ार शरीफ़् तक की सड़क काफ़ी अच्छी है। सूर्यास्त तक हम अभी खुली जगह में ही जा रहे थे। यहाँ का दृश्य बहुत कुछ तिब्बत से मिल रहा है। वैसे ही नंगे सूखे पहाड़, वैसा ही दूर तक फैला नंगा मैदान, और वैसे ही भेड़ों और बकरियों के चरने लायक़ छोटी छोटी घासें यहाँ भी थीं। सूर्यास्त बाद हम पहाड़ के भीतर घुसे और चलते ही चले गये। आगे रास्ता दर्रे का मिला। मज़ारशरीफ़ से चलते वक़्त से ही आसमान पर बादल मँडराने लगे थे। पहाड़ के भीतर घुसने पर कुछ कुछ बूँदें भी पड़ने लगीं। रात काली अंधेरी थी और उसमें रास्ता चक्कर क़ाट कर जा रहा था। चढ़ाई हल्की थी। दो तीन घंटा रात बीत जाने के बाद हम कोतल-ऐबक (ऐबक के डाँडे) को पार हुए। आगे ऐबक गाँव है। यहाँ नये ढंग की कुछ सरकारी इमारतें हैं।

सड़क के किनारे दोनों तरफ़ दर्शनीय दुकानों की पाँती है। यह सब अभी दो ही-तीन वर्ष के भीतर हुआ है। वाज़ार की एक गराज (मोटर-सराय) में घुसे। सराय तो इतनी नई है कि सारी आँगन की भूमि वरावर नहीं हो सकी। कोठरियाँ नई हैं, जिनमें सफ़ेदे की लकड़ी की खिड़कियाँ और दरवाज़े हैं। खिड़कियों में शीशे लगे हुए हैं। भीतर चटाई पड़ी थी। वाहर आँगन में कीचड़ उतना ज़्यादा न था; लेकिन मिट्टी इतनी चिपकने-वाली थी कि हमारे जूते ५–५ सेर के हो गये। सर्दी भी थी। एक कोठरी के भीतर घुसकर हम एक चटाई पर बैठ गये। हमारी लॉरी का ड्राइवर ज़रीफ़ ख़ान बड़ा ही अच्छा आदमी निकला। हमारी लॉरी वैसे तो माल की थी, लेकिन माल की अपेक्षा इसमें आदमी ज़्यादा भरे हुए थे। बाक़ी आदमी दूसरी कोठरियों में चले गये; लेकिन ज़रीफ़ ख़ान, उसका क्लीनर, एक भागीदार, एक दोस्त और हम ५ आदमी एक कोठरी में थे। कोठरी वैसे साफ़ थी। सबसे पहले आग जलाने के लिए कँटीली झाड़ी तथा दूसरी तरह की सूखी लकड़ी आई। आग जला दी गई और लोग चारों तरफ़ बैठ गये। फिर सरायवान् ने हर एक आदमी के लिए अलग अलग गोल चायदानी में चाय और एक एक चीनी मिट्टी का कटोरा भेजा। तीन तीन चीनी की चौकोर टिकियाँ भी साथ में आईं। कटोरे के बीच में तीनों टिकियों को ऊपर नीचे सजा दिया गया, और चायदानी से––जो कि थोड़ी देर तक सामने आग पर रखकर इतनी खौला दी गई थी कि टोटी से भाफ़ निकलने लगी थी––चीनी पर चाय की धार छोड़ी गई। चीनी गल कर नीचे गिर गई और चायपान शुरू हुआ। चाय में दूध की ज़रूरत नहीं। इसके वाद घी और प्याज के साथ बना चावल और साथ में मुर्ग़ का उबला मांस था। चावल के भीतर कुछ दुम्बे का गोश्त भी ढँका हुआ था। अफ़ग़ानिस्तान के मांस में हिन्दुस्तान के इतना मसाला नहीं पड़ता, तो भी ईरान और रूस की अपेक्षा यहाँ का पका मांस हिन्दुस्तान से ज़्यादा मिलता है। प्याज़ की छौंक लगाकर, यहाँ भी घी में मांस को ख़ूब भूनते हैं और

कुछ लाल काली मिर्च भी डाल देते हैं। पाँचों आदमियों के लिए एक ही बड़ी थाली में चावल आया था। हाथी के कान की जैसी तंदूरी मोटी रोटियों का थोक भी सामने रखा गया। पहले रोटी और शोरबे से भोजन आरंभ हुआ, फिर मांस; पीछे चावल और उसमें छिपे मांस की बारी आई। यह कहने की कोई ज़रूरत नहीं कि पाँचों आदमी एक ही थाली में से नेवाला भर भर कर खा रहे थे। ईंजानिब भी किसी से पीछे न थे। फ़र्क़ इतना ही था कि चावल में अपनी ओर की एक खास सीमा मन में निर्धारित कर ली गई थी; और हाथ उतने में ही डूबता था। ठंडे पानी की इच्छा नहीं है—कह कर छोड़ दिया और इस प्रकार एक ही ग्लास से पानी पीने की नौबत नहीं आई। खाने के बाद चाय पीनी ही थी, इसलिए प्यासे रहने का डर न था।

खाना खा लेने के बाद साथी लोग हुक्का पीने लगे। इसके लिए मिट्टी का गड़गड़ा और चिलम ही साथ नहीं चल रही थी, बल्कि दो सेर पक्की तम्बाकू की चूर की हुई सूखी पत्तियों की झोली भी साथ में थी। मुट्ठी भर तम्बाकू हथेली पर रक्खा गया, नैचे से गुड़गुड़ी का पानी तम्बाकू में दो बूंद डाला गया; फिर मसलकर उसे मिट्टी की चिलम पर रखा गया। चिलम पर दहकते हुए दो तीन कोयले रक्खे और फिर गुड़गुड़ी खींची जाने लगी। काबुली गुड़गुड़ी में निगाली और डंडा दोनों जुड़े हुए तथा समानान्तर होते हैं। इसीलिए पीने वालों को उकड़ूं या निहुर कर पीना पड़ता है। हमें तम्बाकू से सरोकार नहीं, इसलिए हम तो चुपचाप अपने चुक्टू (तिब्बती ग़लीचानुमा ओढ़ना) के झोले के भीतर घुस कर सो गये। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कह दिया, इस एक ही लिबास में ओढ़ने-बिछौने दोनों का काम निकल आता है, इसीलिए मैंने इसे साथ रखा है। रात को नींद खूब आई। दूसरे दिन (३० जनवरी) कुछ दिन चढ़े उठे। बाहर देखने से मालूम हुआ कि रात भर बूँदा बूँदी हुई है। आँगन में कीचड़ ज़्यादा हो गया था। सराय में पेशाव-पाखाने का कोई इन्तज़ाम न था। कोने की एक कोठरी, जिस पर छत नहीं पड़ी थी, इन दोनों का काम दे

रही थी। सर्द जगह और सर्दी का मौसम था, यही ख़ैरियत थी नहीं तो न जाने कितनी दुर्गन्ध आती। मैं तो किसी जाति के सभ्य होने की कसौटी पेशाबख़ाने और पाख़ाने को समझता हूँ। जिस जाति या व्यक्ति का पेशा-बख़ाना या पाख़ाना जितना ही अधिक स्वच्छ है, वह उतनी ही अधिक सभ्य है; और जिसका जितना अधिक गन्दा, वह उतनी ही असभ्य है। मज़ारशरीफ़ से कुछ मुसाफ़िर यहीं तक आये थे। इसलिए आधी मोटर ख़ाली हो गई। यहीं हमने देखा कि जहाँ आदमी के कुर्ते पर कन्धे के ऊपर चमड़े में मढ़ी तावीज़ सिली हुई है, वहाँ एक गधे के सिर पर भी तावीज़ पड़ी है। उस वक़्त मुझे कोल्खोज़्-नमूना के तवारिश महम्मदोफ़् की बात याद आई। आगे उसी दिन शाम को यह देखकर हमें और आश्चर्य हुआ, कि हमारे दोस्त जरीफ़ ख़ान ने ख़तरे से बचाने के लिए अपनी मोटर के सामने दो तावीज़ें लगा रखी हैं। आख़िर ख़तरा जैसे जानदार को हो सकता है, वैसे ही बेजान को भी। बल्कि मोटर के हाथ में तो पन्द्रह आदमियों की जान थी।

मैंने चाहा था, रात को खाने का दाम—जो पाँच अफ़ग़ानी (१।) से अधिक न था—दे दूँ; लेकिन ज़रीफ़ ख़ाँ ने बड़ा ज़ोर देकर कहा—आप हमारे मेहमान हैं। १० बजे हम रवाना हुए। कुछ दूर तक चढ़ाई साधारण थी, फिर कोतल-रोवा (रोवा तक के डाँड) तक के जितने ही नज़दीक चलते जाते थे, ऊँचाई भी उतनी ही बढ़ती जाती थी। डांड़े के ऊपर कुछ सफ़ेद वर्फ़ मिली। यह कल ही रात को पड़ी थी। कोतल पार होने पर पहाड़ों पर ज़हाँतहाँ कुछ झाड़ियाँ दिखाई पड़ीं। हमने समझा, शायद तिब्बत से हिमालय के डाँड़ों को पार कर इस पार आने पर जैसे वृक्ष-वनस्पति दिखाई देने लगते हैं, उसी तरह शायद अब हरे भरे पहाड़ आनेवाले हैं। लेकिन आगे चलकर यह बात ग़लत साबित हुई। हिन्दूकुश और काबुल ही तक नहीं, बल्कि जलालाबाद और आगे तक के पहाड़ नंगे और सूखे हैं। बहुत सी उतराई उतर जाने पर एक क़िलानुमा फौजी चौकी मिली। लोगों ने

चाय पी और फिर हम आगे बढ़े। आगे एक लम्बी चौड़ी उपत्यका मिली; जिसमें जहाँ तहाँ कितने ही गाँव हैं। खेत अधिकतर चावल के हैं और गोरी (यही इस प्रदेश का नाम है) के बारीक चावल अपने स्वाद के लिए बहुत मशहूर हैं। सड़क के किनारे कुछ दुकानें मिलीं। यहीं गाड़ी ठहर गई। दुकान-दार को हुक्म हुआ, मांस-चावल (मांसोदन), और रोग़नदार (मुर्ग़ी के मांस) तैयार करने का। धान को यहाँ शाली कहते हैं। यही शब्द हिन्दूकुश, दर्रा ख़ैबर और पीर पंजाल को पार करता, कुल्लू और काँगड़े तक आया है।

सूर्यास्त के समय गोरी उपत्यका के एक छोटे से टोले में हम गुज़र रहे थे। एक आदमी आकर मोटर के सामने खड़ा हो गया। उसने जरीफ़ ख़ान से कहा कि कुछ शाली की बोरियाँ पड़ी हुई हैं, जो कि मेरे मालिक किसी अफ़सर की हैं, उन्हें गाड़ी पर रख लो। मोटर में कुछ जगह थी, जरीफ़ ने सोचा, कुछ माल ले लें और इस प्रकार कुछ भाड़ा निकल आयेगा। लॉरी के भीतर आधी जगह में फ़र्श से छत तक बोरियाँ भर दी गईं। फिर बाक़ी जगह में भी दो दो तह बोरे रखे गये। आदमी अब भी बोरियों पर बोरियाँ लाये चला जा रहा था। मुसाफ़िर अधीर हो गये। ड्राइवर भी अपनी मोटर तोड़ना नहीं चाहता था। दोनों ने बोरियों को लेने से इन्कार कर दिया। इसपर १० मिनट तक वाग्-युद्ध होने लगा। एक मुसाफ़िर बोल उठा—अरे मुसलमान! तुझे ख़याल नहीं हो रहा है कि इसमें मुसाफ़िरों के लिए भी इसमें जगह होनी चाहिए। उसने कहा—चार बोरे बाक़ी हैं, उन्हें कहाँ ले जाऊँ? छोड़ जाऊँ तो लोग चुरा खायेंगे। इसपर मुसाफ़िर ने कुछ और जवाब दिया। बात बढ़ते बढ़ते काफ़िर और बेईमान तक गई। फिर दोनों गुत्थमगुत्था के लिए तैयार हो गये। उस आदमी से मुसाफ़िरों की संख्या अधिक थी, इसलिए मुसाफ़िर कुछ ज्यादा तने जा रहे थे। लेकिन पास में गाँव था, इसका भी उन्हें ख़याल था। दो-एक आदमी बीच में पड़े और दोनों को रोका-थामा। अन्त में ४ बोरियाँ और लेकर मोटर की छत पर रखी गईं। लेकिन आदमी अभी भी बोरियाँ
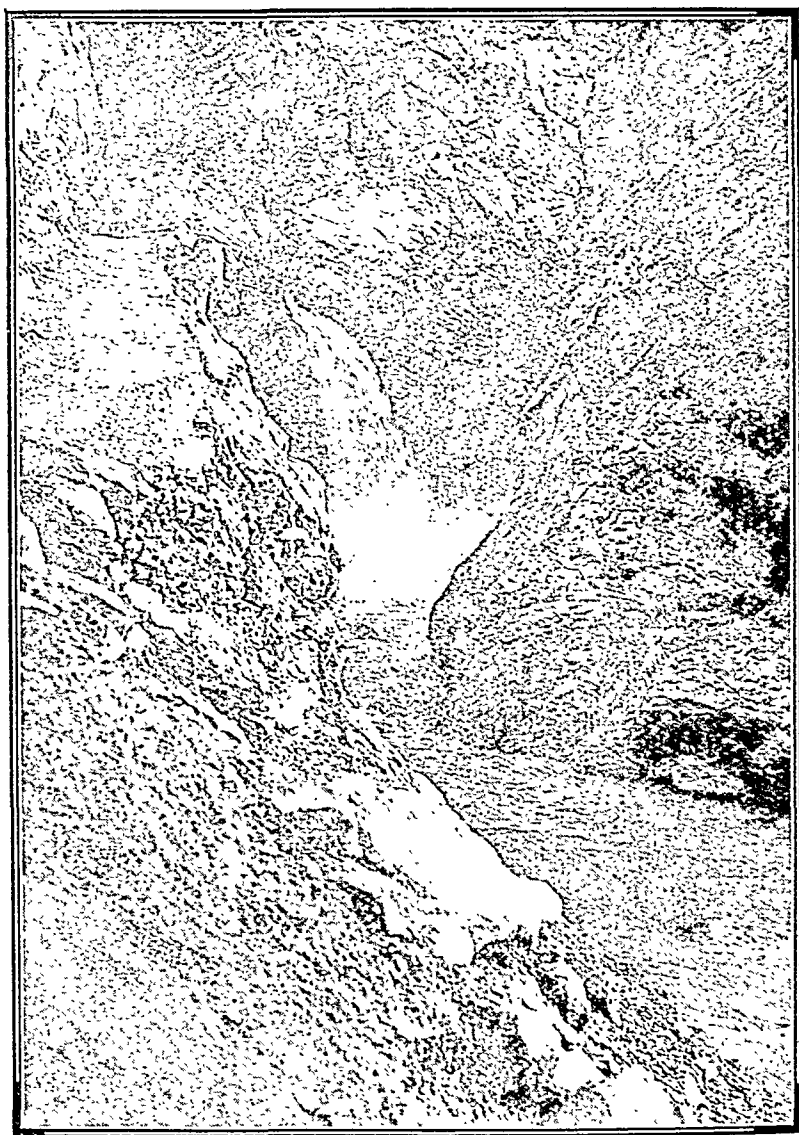
तंग-ग़ार (काबुल)

भेजता ही जा रहा था और कह रहा था, बस दो और हैं। लोगों ने जाकर देखा तो वहाँ १०–१२ बोरियाँ और पड़ी हुई थीं। आख़िर और कोई बोरी ऊपर चढ़ने नहीं पाई और हम लोग ख़ुदा ख़ुदा करके रवाना हुए। विस्तृत उपत्यका को छोड़ फिर तंग वादी में चलना पड़ा। रात के १० बज गये थे जब हम दोशी पहुँचे। यहाँ भी कई दुकानें हैं। सामने एक सुन्दर पानी की नहर और नीचे एक कलकल-नादिनी नदी वह रही है। यहाँ लारी के रखने के लिए सराय नहीं है। सड़क पर गाड़ी छोड़ दी गई। हम पाँचों आदमियों के लिए एक कोठरी मिली, जिसके आधे भाग में ईंधन भरा हुआ था, तो भी सोने की तकलीफ़ नहीं हुई।

दूसरे दिन (३१ जनवरी) चाय पी कर हम ८ वजे रवाना हुए। अब सारा रास्ता एक तंग पहाड़ी वादी से होकर था। इस प्रदेश में बसनेवाले लोगों को 'हज़ारा' कहते हैं। शकल-सूरत में ये उजबेक और तुर्कमान से मिलते जुलते हैं। वैसा ही मूँछ-दाढ़ी-रहित मुख और वैसी ही गोल गोल आँखें। लेकिन इनकी भाषा फ़ारसी है। लोग कहते हैं कि ये चंगेज़ के अनुयायी मंगोलों की सन्तान हैं। यह अपनी भाषा भूल गये हैं लेकिन तब भी इनकी फ़ारसी में कुछ मंगोल भाषा के शब्द बचे रह गये हैं। विशेष कर सम्बन्धियों के नाम। अफ़ग़ानिस्तान के मज़हब के बारे में पूछने पर एक पठान ने कहा—हमारे यहाँ सभी लोग मुसलमान धर्म को माननेवाले हैं, सिर्फ़ एक थोड़ी सी जगह में शिया हैं, जिनकी जाति को हज़ारा कहते हैं। मानो वक्ता के ख़याल में शिया इसलाम में दाख़िल नहीं हैं। हिन्दूकुश के पास की इस घाटी में यह मंगोल क्यों आकर बस गये? और क्यों उन्होंने सुन्नी धर्म छोड़, शिया धर्म को अपनाया और कैसे वे अपनी भाषा भुलवा देनें में समर्थ हुए? हज़ारा लोग बड़े हट्टे कट्टे होते हैं, और कितनों के चेहरे मंगोलों जैसे लाल होते हैं। दुआब, मेखज़रीन में चावल की ही खेती ज़्यादा होती है। आगे चढ़ाई शुरू हुई। सर्दी बढ़ती जा रही थी। खेत और बाग़ अभी और बहुत आगे तक मिले। जितने ही हम ऊपर चढ़

रहे थे, उतने ही बाग़ कम होते जा रहे थे। इस वक़्त पहाड़ नंगे थे, कहीं बर्फ़ दिखाई नहीं पड़ती थी। आगे एक विचित्र लाल रंग का पहाड़ मिला जिस तरफ़ से हमारा रास्ता जा रहा था, उधर से वह गोलाकार मालूम होता था। उसपर कहीं कहीं आलीशान लाल रंग के खंभे-से काट कर बनाये मालूम होते थे। मालूम होता था, किसी ने पहाड़ों को गढ़कर लाल रंग का एक विचित्र स्तूप बना दिया है। इसी पहाड़ के पीछे की ओर कहा जाता है, बामियान के पहाड़ में कटे विशाल स्तूप हैं। अंधेरा होने से पहले ही हम बलबला पहुँच गये थे। यहाँ सर्दी बहुत ज़्यादा थी, और वह बतला रही थी कि हम काफ़ी ऊँचे उठ आये हैं। आस पास की बहुत सी ज़मीन बर्फ़ से ढँकी हुई थी। हवा काफ़ी तेज़ चल रही थी। दीवारों में मिट्टी की कच्ची ईंटों को इस तरह जुड़वाया गया था कि उनके छिद्रों से सनसन करके हवा भीतर आ रही थी। मेरे पास ओढ़ने का सामान काफ़ी था, इसलिए मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई।

दूसरे दिन सवेरे ही रवाना हुए; क्योंकि आज (१ फ़रवरी) हमें हिन्दूकुश के बड़े ख़तरनाक़ दर्रे को पार कर जाना था। आगे एक फ़ौजी क़िला मिला, जहाँ कुछ सिपाही भी रहते हैं। इसके करीब से ही बामियाँ जाने का रास्ता अलग हुआ है। आने-जाने वाली मोटरों से पूछा, लेकिन कोई बामियाँ जानेवाली मोटर न मिली। लाचार बामियाँ जाने का ख़याल छोड़ देना पड़ा। क़िले के तीन अफ़सर हमारी ही मोटर से आगे जाना चाहते थे; और मोटर के भीतर नये मुसाफ़िरों के लिए जगह न थी। ड्राइवर ने बहुतेरा कहा कि पीछे ख़ाली मोटर आ रही है लेकिन कौन सुनता है लाचार समय बचाने के ख्याल से मोटर में उन्हें जगह देनी पड़ी। क़िले से थोड़ा आगे बढ़ने पर सभी मुसाफ़िरों को मोटर से उतार दिया गया। आगे सचमुच ज़मीन बर्फ़ के कारण बहुत फिसलाऊ थी। उस चढ़ाई में इञ्जन काम नहीं कर सकता था। मुसाफ़िरों को कई जगह मोटर को ठेलना पड़ा। तिकोने लकड़ी के ओंट बरा-

बर पहिए के पीछे रक्खे जाते थे, जिसमें गाड़ी पीछे न भाग सके।

पहला कोतल (डांड़ा) पार किया। अब इधर चारों तरफ़ वर्फ़ ही बर्फ़ थी। अगले गाँव की आधी दीवारें भी बर्फ़ से ढकी हुई थीं। एक और ज़बर्दस्त कोतल आया जिसको कोतल-शिकार कहते हैं। यहाँ चढ़ाई बहुत कठिन मिली और वर्फ़ की तह भी बहुत मोटी थी। सरकार ने सड़क की मरम्मत की ओर भी काफ़ी ध्यान दिया है। एक जगह वर्फ़ से घिरा एक छोटा सा गाँव मिला। लोगों ने कहा, यहीं ठहर जाने के लिए, क्योंकि आगे कुछ मोटरें आ रहीं थीं। पहले रास्ते के कारण बग़ल से उनका निकलना मुश्किल था। ड्राइवर ने रुकना पसन्द नहीं किया। वह आगे चलता ही गया। एक जगह आगे आनेवाली मोटर को किसी तरह रास्ता दे दिया गया। लेकिन हम जब कोतल के सर्वोच्च स्थान पर पहुँचे, तो देखा, दो-तीन मोटरें हमारी ओर आ रही हैं। रास्ता पतला था, इसलिए बर्फ़ काट-कर रास्ता बनाने की ज़रूरत पड़ी। अब भी हमारे पैर में थोड़ा दर्द था, लेकिन रास्ता उतराई का था और साथियों की तरह हमने भी सोचा, कि यहाँ बैठकर इन्तज़ार करने की जगह आगे के गाँव में ठहरें तो अच्छा है। इस प्रकार हम वहाँ से पैदल ही चल दिये। रास्ता कड़ी उतराई का था। जिधर नज़र जाती थी, उधर ही श्वेत हिमराशि दिखाई देती थी। पर्वत-पृष्ठ पर मिलते क्षितिज से ऊपर ही आकाश की नीलिमा नेत्रों को रंग बदलने में मदद देती थी। रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा था, जैसा कि मोटर के लिए होना चाहिए। बीच बीच में घुमावों को छोड़ने के लिए सीधी पगडंडी भी थी, लेकिन दाहने पैर का दर्द अभी भी नहीं गया था; इस लिए मोटर की सड़क छोड़ने में मैं असमर्थ था। जम कर पत्थर हो गई वर्फ़ में लारियों का भी चलना मुश्किल था। ऊपर की चढ़ाई में यदि इंजन कहीं फेल कर गया, तो लारी के पीछे की ओर फिसल कर पहाड़ की जड़ में गिरने का डर लगा रहता था। इस अन्तिम कोतल (डाँड़ा या जोत) का नाम था कोतल-शिविर और पहले जिस कोतल को हमने पार किया था, उसे कोतल-

शिकार कहते हैं। बहुत देर की उतराई के बाद सड़क के किनारे के चाय-ख़ाने में पहुँचे। अब भी चारों तरफ़ बर्फ़ ही बर्फ़ थी, जिसमें से सिर बाहर निकाल कर कोई कोई चट्टानें झांक रही थीं। पानी की धार भी बर्फ़ में अन्तर्हित थी। चायख़ाना के अगल-बगल और पीछे की जगह पायख़ानों का ढेर बन गया था। अभी लारी आने में देर थी, इसलिए हम चायख़ानें में बैठ गये। मोटर के साथियों में से भी कुछ आ गये थे। उन्होंने सूखा तूत और **चिलगोज़ा** सामने रखा। चायख़ानेवाले ने तीन टिकियाँ चीनी के साथ एक चायदानी चाय की दी, और साथियों के साथ गप करते हम चाय पीने लगे। पता लगा ह़िरात से बलख़ तक तुर्कमान लोग बसते हैं। बलख़ से दोशी तक उज़बेक। दोशी से शिबिर तक हज़ारा। और अब हम हिन्दू-कुश (शिकार और शिबिर के कोतल) पार कर ताजिकों की आबादी में घुस रहे थे। यहाँ से कोह दामन (कपिशा) तक बराबर ताजिकों की ही बस्तियाँ हैं। मोटर के आने पर हम फिर रवाना हुए। बर्फ़ बराबर चली गई थी। हाँ, हम जितना नीचे जा रहे थे, उतनी ही सड़क पिघलती बर्फ़ से ख़ाली होती गई; और बग़ल में बहने वाली ग़ुर्बन नदी की धार भी सफ़ेद चादर फाड़ कर बाहर निकलती आती थी। शाम को ४ बजे हम 'चारदि-ग़ुर्बन' में पहुचे।

चार-दि-ग़ुर्बन एक बड़ा गाँव है। सड़क के किनारे पचीसों दुकानें हैं। हमें एक होटल में जगह मिली। एक लम्बा चौड़ा कमरा था; जिसमें मकान गर्म करने के लिए मुँह-बन्द अंगीठी जल रही थी। अंगीठी के ऊपरी भाग में रक्खा पानी चाय के लिए खौल रहा था। हमारे पहुँचते ही किटसन-लैम्प जला दिया गया। क़ालीन बिछा दिया गया। ज़रीफ़ ख़ान ने पूछा—अंगूर खायेंगे ? मेरे हाँ कहने पर एक मिट्टी की गोल छोटी डेहरी (कोठिली) सामने लाकर रक्खी गई। कोठिली के मुंह का पिहान मिट्टी से ही चिपकाया हुआ था। मिट्टी तोड़ कर पिहान को अलग कर दिया गया; और भीतर दो सेर पक्के सफ़ेद मीठे अंगूर रक्खे हुए थे। ज़रीफ़ ख़ान ने एक गुच्छा ऊपर

उठा हमारी ओर बढ़ाते हुए कहा—अंगूर अच्छे हैं, सड़े और सूखे नहीं हैं। पूछने से मालूम हुआ कि अंगूरों को वैसे तो रखने पर सूख जाते हैं, रुई डाल कर पिटारी में रखने पर ख़र्च ज्यादा पड़ जाता है, इसलिए यहाँ के लोगों ने इन सूखी मिट्टी की कोठिलियों में रखने का ढंग निकाला है। कोठिलियों के अलावा जब आधा सेर ही अंगूर रखना होता है, तो गोल मिट्टी के पनबट्टों में रखते हैं। पिहान और पनबट्टों को बन्द करने की तारीफ़ है। उनको इस तरह बन्द किया जाता है कि बाहर से हवा बिलकुल ही भीतर न जा सके। कभी कभी जब हवा अन्दर चली जाती है, अथवा भीतर रखे अंगूरों में कोई दाना ख़राब होता है, तो पिटारी ख़राब हो जाती है या अंगूर सूख जाते हैं, बदज़ायका हो जाते हैं। सारी कोठिली के लिए डेढ़ अफ़गानी (।=)) देना पड़ा। आज सहभोज का अन्तिम दिन था। अंगूर के अतिरिक्त पुलाव, दो तीन तरह का सुन्दर मांस भी बना था। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, जब मेरे दाम चुका देने पर ज़रीफ़ ख़ान ने आग्रह नहीं किया। पठानों की मेहमाननेवाजी (अतिथि-सत्कार) को मैंने अब तक सुना ही था, लेकिन इस यात्रा में मुझे उसका सुन्दर अनुभव हुआ। भारत में जानेवाले कुछ सूदख़ोर पठानों को देखकर हम समझ लेते हैं, कि वे बहुत उजड्ड और रूखे होते हैं; लेकिन मेरा तजर्बा उससे बिलकुल उलटा रहा। यह तजर्बा सिर्फ़ ज़रीफ़ ख़ान और उनके साथियों तक ही परिमिति नहीं था, बल्कि वक्षुतट, मज़ारशरीफ़, रास्ता और काबुल सभी जगह यही मीठा तजर्बा दोहराया गया।

होटल का मालिक लाल गोरे रंग का एक अधेड़ पुरुष था। आँखें उसकी मंगोल जैसी मालूम हो रही थीं; और मैं समझ रहा था कि वह ज़रूर हज़ारा होगा; लेकिन पूछने पर मालूम हुआ कि वह ताजिक है। माँ उसकी हज़ारा थी। इसलाम के अनुसार ऐसी मिश्रित शादियों में यद्यपि कोई रुकावट नहीं है, तो भी आकार-प्रकार, वेशभूषा, बोली-बानी ऐसी शादियों के रास्ते में बाधक होती हैं। यही वजह है, जो इसलाम का एक-

छत्र राज्य होने पर भी मंगोल (तुर्कमान, उजवेक, हज़ारा) और आर्य (ताजिक, पठान) मुख-मुद्राएँ अलग अलग दीख पड़ती हैं। होटल के मालिक के दो छोटे लड़के वहुत ही सुन्दर और देखने में रूसियों जैसे मालूम होते थे। उनकी लम्बी नुकीली नाक और भूरे वाल रूसियों जैसे ही थे। रात को वात चलते वक़्त ज़रीफ़ ख़ान ने तारीफ़ करते हुए कहा—दो साल पहले हिरात से हमारी लारी पर एक अंग्रेज़ आया था। वह हमसे अलग खाना खाता था। आप तो हमारे साथ खाना खाते हैं। मैंने कहा—पठान और हम हिन्दुस्तानी तो एक जाति के हैं। हमारा, गाना, हमारा नाच, हमारा भोजन, खाने के पहले और पीछे हाथ मुँह धोना, तथा हाथ से खाना आदि सभी एक हैं; इसलिए मैं अलग कैसे रहता।

२ तारीख़ को हमारी गाड़ी सवेरे ही रवाना हुई। तमाम रात वर्फ़ पड़ती रही। ख़ैरियत यही हुई कि हम कोतल-शिकार और कोतल-शिविर को पार कर आये थे। अगर यह हिम-वर्षा हमारे उस पार रहते हुए होती, तो आना मुश्किल हो जाता। अव भी वर्फ़ पड़ ही रही थी। सारे पहाड़ों और नदी के तट पर ताज़ी पड़ी सफ़ेद वर्फ़ की चादर बिछी हुई थी। सूरज का कहीं पता न था। नदी की धार उन्मुक्त वह रही थी। जिससे पता लग रहा था, कि सर्दी उतनी अधिक नहीं है। रास्ते में आते-जाते गधे और ऊँट मिलते थे। एक जगह एक गधेवाला लारी और उतराई के बिलकुल पास में खड़ा था। ड्राइवर ने 'हटो हटो' कहा। गधेवाला, लारी के पहिए से छूता हुआ, खड़ा होकर कह रहा था—'बरो, ख़ुदा ख़ैर कुनी'! (जाओ, ख़ुदा भला करेगा।) उसके ख़याल में गधे को लेकर लारी के पहिए के नीचे खड़ा होना उसका काम था और ख़ैर करना ख़ुदा का काम था। एक जगह एक लारी सड़क से हटकर नर्म वर्फ़ में फँस गई थी। रास्ता काफ़ी छूटा हुआ था; लेकिन लारीवाले ने वोरों और माल को उतार कर सड़क पर रख दिया था। समझता होगा, अगर हम आगे नहीं जा सकते तो दूसरी लारी आगे क्यों कर जाये! उसका यह भी ख़याल होगा कि यदि रास्ता

रुका रहेगा, तो दूसरे लारी वाले भी उसकी लारी को वाहर करने में मदद करेंगे। हमारे ड्राइवर और उसके साथियों ने कुछ देर तक लारी निकालने की कोशिश की, लेकिन वह बुरी तरह से फँसी हुई थी। फिर उन्होंने सामान उठाकर सड़क के किनारे एक तरफ़ रखा; और हम आगे बढ़े। आगे शागिर्द की बड़ी आवादी मिली। यहाँ भी एक क़िला और कुछ फ़ौज रहती है। छोटी-वड़ी क़िला-वन्दी तो सारे अफ़ग़ानिस्तान में देखने में आती है, जो वतला रही है कि अफ़ग़ानी सरकार को भिन्न भिन्न कवीलों से कितना ख़तरा रहता है। गुर्वन नदी अव एक चौड़े पहाड़ी मैदान में प्रवेश करने जा रही थी। उसी वक़्त हमें नदी के वाम तट से दाहने तट पर आकर पूर्व की ओर रुख़ वदलना पड़ा। सामने मंतक का क़स्वा है। अटक (सिंधु तट पर) से मंतक तक पठानों (पख़्तों या पश्तो) का देश है। जिस वादी में अव हम प्रविष्ट हुए थे, इसे आजकल कोहदामन कहते हैं। पाणिनि के समय (ईसा पूर्व चौथी शताब्दी) इसे ही कपिशा कहा जाता था। कपिशा अपने अंगूरों और अंगूरी शरावों के लिए उस वक़्त सारे भारतीय जगत् में मशहूर थी। जिस तरह आज कावुली अंगूर तारीफ़ की चीज़ समझी जाती है, उसी तरह उस समय कापिशायनी द्राक्षा (कपिशा के अंगूर) का नाम विकता था। मंतक कपिशा उपत्यका के छोर पर है। यहाँ भी लाल पगड़ी वांधे दो-एक हिन्दुओं को देखा। पूछने पर मालूम हुआ कि सरकार की ओर से हिन्दुओं को अलग रंग की पगड़ी रखने का कोई निर्वन्ध नहीं है। ये वूढ़े अव भी पुरानी लकीर को ढो रहे हैं। कपिशा की उपत्यका वहुत विशाल है। कावुल की उपत्यका को इससे एक छोटी पहाड़ी अलग करती है। लेकिन कावुल की उपत्यका इतनी गुंजान और रमणीय नहीं है। यहाँ तो जिधर भी नज़र दौड़ाइए, वाग़ ही वाग़ और गाँव ही गाँव दिखाई पड़ते हैं। इस वक़्त सारी ही भूमि दो दो तीन तीन फ़ीट मोटी वर्फ़ से ढकी हुई थी; और जाड़े के आरंभ से ही सभी वृक्ष और लताएँ अपने पत्ते छोड़ चुकी थीं। लेकिन हर जगह मिलनेवाली वाग़ों की पाँती, तराशे अंगूरों की

खुत्थियाँ और जहाँ तहाँ सफ़ेदे और चिनार के लंबे लंबे वृक्ष बतला रहे थे; कि वसन्त और ग्रीष्म में यह हरी-भरी उपत्यका कितनी सुन्दर मालूम होती होगी; जब कि सभी वृक्षों में हरे पत्ते होंगे; गुच्छों के बोझ से अंगूरी टह-नियाँ झुक जाती होंगी; पत्तों से भी अधिक लाल सेब-फल डालों से लटकते होंगे, और हर गली कूचे, हर बाग़ बगीची और हर खेत-क्यारी में निर्मल शीतल जल लेकर छोटी मोटी नहरें दौड़ती होंगी, जब धरती का एक अंगुल भाग भी हरी चादर से वंचित न होगा।

गाँवों के मकानों में हर जगह छत से ऊपर उठी एक ऊँची दीवार में सैकड़ों छेद बने हुए थे। पहले मैंने समझा कि दुश्मन से मुक़ाबला करने के लिए बन्दूक की नली के ये दराज़ हैं; लेकिन जब उनको हमेशा एक खास दिशा में देखा, और छेदों को भी बहुत नज़दीक़ नज़दीक़ सैकड़ों की तादाद में, तो सन्देह होने लगा। साथियों से पूछने पर मालूम हुआ कि इन पर अंगूरों के गुच्छे सुखाये जाते हैं। ये ही सूखे हुए फल किशमिश और मुनक्का बनते हैं। आगे चहारेकार का बड़ा क़स्बा मिला। यहाँ सड़कों को सुन्दर और सीधी बनाने का बहुत प्रयत्न किया गया है। चौरस्ते पर रास्ता दिखलाने के लिए पुलीस का सिपाही भी खड़ा रहता है। **गुम्रग्**वाले माल की देख-भाल करते हैं। पुलीसवाले देखते हैं कि कोई मोटर ख़राब तो नहीं है कि आगे जाकर मुसाफ़िरों को जंगल में ही छोड़ दे। लेकिन इस सारी जाँच-पड़ताल से जनता और सरकार को तो कोई फ़ायदा नहीं होता। हाँ, जाँच करनेवालों को कुछ पूजा-भेंट मिल जाती है। हमारे पास खड़ी हुई एक मोटर लारी पर पुलीसवाले ने ब्रेक का दोष लगाया; और बदले में उसे कुछ पैसे और रोग़नदार गोश्त के साथ पुलाव की ज़ियाफ़्त मिली। नए बाज़ार में पचासों दुकानें सोनारों की थीं; और गहनों का यह शौक़ बतला रहा था कि हम हिन्दुस्तान की पवित्र भूमि में पहुँच गये। आख़िर हिन्दुस्तान हिन्दुकुश से शुरू भी तो होता था। आज भी भाषा और संस्कृति की दृष्टि से हिन्दूकुश ही उसकी सीमा है; और भविष्य में भी भारतीय

साम्यवादी प्रजातंत्र-संघ की वही सीमा होगा।

हमारी बाईं ओर एक गाँव मिला। सड़क से कुछ हट कर एक जला हुआ मकान दिखलाई पड़ा। साथियों ने बतलाया—यही किलाकन गाँव है; और वही जला हुआ मकान बच्चा-सक्का का घर है। मकान की दीवारें अव भी खड़ी हैं; लेकिन उनमें रहनेवाला कोई आदमी नहीं है जो कि मकान को फिर से मरम्मत करने की कोशिश कर सके।

२ बजे हम कपिशा (कोह-दामन) के अन्तिम छोर पर पहुँचे। एक छोटा सा कोतल (डाँडा) था। डाँडे पर पहुँच कर हमने दूसरी ओर काबुल (कुभा) की उपत्यका देखी। कपिशा की भाँति ही यह भी बर्फ़ से ढकी हुई थी। दूर कावुल शहर दिखाई पड़ रहा था। चढ़ाई की तरह कोतल की उतराई भी बहुत थोड़ी थी। बीच में एक जगह पुलीस के दो सिपाहियों ने लारी को देखा और आगे बढ़ने की इजाज़त दी। हम बस्ती में दाख़िल हुए। फिर दाहनी तरफ़ कुछ ऊँची पहाड़ी पर बालाबाग़ मिला। यह शाही बाग़ है। आजकल जाड़ों में तो कोई सौंदर्य नहीं, लेकिन गर्मियों में ज़रूर सुन्दर मालूम होता होगा। बाग़ के भीतर शाही महल है। आगे हम काबुल शहर में घुसे। सड़कों की मरम्मत की ओर ध्यान दिया गया है; और सरकार की ओर से कितनी ही नई इमारतें बन रही हैं। ४ वजे हम होटल-काबुल के दरवाज़े पर पहुँच गये और होटल-प्रवन्धक ने ९ नंबर का कमरा हमें रहने के लिए दिया।

३—काबुल में एक सप्ताह

होटल-काबुल नगर की एक प्रमुख सड़क पर अवस्थित है। सिनेमा-काबुल, बैंक-मिल्ली, अफ़ग़ान्-एकेडेमी और कितने ही सरकारी विभाग इसके नज़दीक हैं। मकान दोतल्ला है। टीन की छत है। हर कमरे के भीतर गर्म करने के लिए अँगीठी रखी है। हाँ, मालूम होता है, मकान बनाने के वक़्त अँगीठी की ओर ध्यान नहीं गया था, इसीलिए मकान की दीवारों में धुएँ की चिमनी का प्रबन्ध नहीं है; और खिड़कियों में से चिमनी बाहर निकाली जाती है। बाज़ वक़्त चिमनी के जोड़ में सूराख़ रह जाने से धुआँ घर में भर जाता है; और भीतर रहना मुश्किल होता है। दो-दो कमरों के बीच में एक-एक बाथ रूम है। पाख़ाना साफ़ है। बड़े और छोटे दो तरह के कमरे हैं। छोटे कमरों में भी दो चारपाइयाँ, दो मेज़ें और एक आलमारी है। रोशनी बिजली की लगी है। छोटे कमरों का किराया प्रतिदिन १५ अफ़ग़ानी (५॥=)) है। १० बजे हम बक्सों को लेकर गुम्रग में गये। २ घंटे की बड़ी परेशानी के बाद बक्सों को दिखा-दुखू कर छुट्टी मिली।

अब अफ़ग़ानिस्तान के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त करने का ख़याल हुआ। गुम्रग जाते वक़्त हमने एकादमी-अफ़ग़ान का साइनबोर्ड देख लिया था। इसलिए सोच लिया था कि इससे बढ़कर अधिक सहायक हमारे लिए कोई नहीं हो सकता। एकेडेमी में गये। वहाँ एकेडेमी के कुछ मेम्बरों से मुलाक़ात हुई। जिनमें श्री याक़ूब हसन ख़ाँ से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उनसे अफ़ग़ान की संस्कृति, इतिहास और भाषातत्त्व पर कुछ सरसरी तौर पर वातचीत हुई; जिससे पता लग गया कि काबुल भी घर सा बननेवाला है। जब एकेडेमी के डाइरेक्टर शाहज़ादा अहमद अली ख़ां दुर्रानी को पता लगा, तो उन्होंने बड़े आग्रह के साथ बुलाया। घंटों बात होती रही; और

उस वक़्त तक हमें यह नहीं मालूम हो सका कि जिस व्यक्ति से हम बात कर रहे हैं, वह राजवंश से ताल्लुक रखता है। शाहज़ादा अहमद अली को अपने देश और जाति का बहुत अभिमान है। वह चाहते हैं कि मज़हब के कारण अफ़ग़ानी संस्कृति, उसके इतिहास, उसकी भाषा को जो पीछे ढकेल दिया गया था, उसका प्रतीकार किया जाय; और हर एक पठान के दिल में **बामियान,** हड्डा, बेगराम से प्राप्त अपने पूर्वजों की उत्कृष्ट कला का अभिमान हो। उसको मालूम होना चाहिए कि आर्यों की सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद का बहुत सा प्राचीन और महत्त्वपूर्ण भाग पठानों की भूमि में पठान-दिमाग़ द्वारा बनाया गया है। पठा। क़ौम ने ही पाणिनि जैसे सर्वोच्च व्याकरणकार को पैदा किया। पठान-माताओं ने असंग और वसुबन्धु जैसे महान् दार्शनिक पैदा किये, जिनके गंभीर विचारों की छाप भारत के ही सभी दर्शनों में ही नहीं मिलती और जिनका अनुयायी बनने के लिए चीन और जापान के विचारक ही प्रतियोगिता नहीं करते; बल्कि असंग के योगाचार दर्शन से उत्प्राणित होकर इसलाम का सूफ़ी मत और ब्राह्मणों का वेदान्त बना। अफ़ग़ान एकादमी का डाइरेक्टर होने के लिए जैसे दिल और दिमाग़ की ज़रूरत है, शाहज़ादा अहमद अली उसके योग्य हैं। उसके बाद भी मुझे उनसे दो तीन बार मिलने का मौक़ा मिला; और सांस्कृतिक जिज्ञासा तथा तत्सम्बन्धी खोज के विषय में उनके प्रश्नोत्तर का ख़ात्मा ही न होता था। एकदमी के दूसरे मेम्बर सैयद क़ासिम रस्तिया, जनाब अहमद अली कुहज़ाद आदि भी वैसे ही उत्साही स्कालर हैं। एकेडेमी पश्तो-साहित्य के निर्माण और प्रचार की कोशिश कर रही है। पश्तो भाषा की पाठावली बन रही है; और पश्तो व्याकरण को पूरा करने के लिए ज़बर्दस्त कोशिश हो रही है। इसी संबंध में एकेडेमी 'ज़ेरी' नामक एक पर्चा अपनी ओर से निकालती है। एकेडेमी की कोशिश है कि जहाँ तक हो सके, फ़ारसी-अरबी शब्दों की जगह पर पश्तो शब्दों को ही इस्तेमाल किया जाय। हमको यह मालूम है कि पश्तो जाति और भाषा का संस्कृत से मादरी

ताल्लुक़ है। यद्यपि एकेडेमी में संस्कृत जाननेवाला कोई विद्वान् नहीं है, इसलिए वहाँ के पंडितों को अंगरेज़ी और फ्रांसीसी किताबों से ही मदद ले कर कुछ करना पड़ता है; लेकिन उनकी बड़ी इच्छा है कि उनके कार्य-कर्ताओं में कोई संस्कृतज्ञ भी हो। मैंने कहा कि आप किसी होनहार नौ जवान को संस्कृत पढ़ने के लिए बनारस भेजें।

श्री याक़ूब हसन ख़ाँ अफ़ग़ानिस्तान की हिन्दू-आर्य-भाषाओं की खोज के संबंध में बड़ा काम कर रहे हैं। उन्होंने काबुल से निकलनेवाले 'साल नामा काबुल' (१९३४–३५) में 'तारीख़ ज़बानहा दर अफ़ग़ानिस्तान' (पृष्ठ ११९ से १५२ तक) नाम से एक विद्वत्तापूर्ण लेख लिखा है। महायुद्ध के समय लाहौर के कालेजों के कुछ लड़के छिपकर हिन्दुस्तान से भाग निकले थे। उस वक़्त अख़बारों में उनकी बहुत चर्चा हुई थी। याक़ूब हसन उन्हीं नौजवान विद्यार्थियों में से एक थे। काबुल में रहते उनको २२ साल हो गये। वह अफ़ग़ान प्रजा हैं; लेकिन अपने देश के साथ उनका अत्यन्त प्रेम है। भाषा-सम्बन्धी खोजों से उनको पता लगा कि अफ़ग़ानिस्तान की भाषाओं और जातियों का इतिहास भारत के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। तबसे उनका उत्साह और भी बढ़ गया है। वैज्ञानिक खोजों में भी उनमें मातृभूमि की सेवा का भाव आ जाने से अपने काम में बड़ी सरसता मालूम होती है। वह मुसलमान हैं; और अपने धर्म को मानते हैं; लेकिन साथ ही वह यह भी अच्छी तरह समझ गये हैं कि जातीयता, संस्कृति, भाषा इनपर मज़हब को दख़ल देने का क़ोई अख़्ति-यार न होना चाहिए। मज़हब बदलने से जाति नहीं बदल सकती। उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान की पश्तो, नूरिस्तानी (लाल काफ़िरी,) पशंई, शग़नी, उर-मुड़ी, प्राची, बिलोची आदि भाषाओं की बहुत खोज की है; और उनकी खोज अबतक जारी है। वैसे मैं दो तीन दिन बाद ही काबुल से चला आता, लेकिन याक़ूब हसन ख़ाँ के आग्रह और दिलचस्पी को देखकर मुझे कुछ दिन और वहाँ ठहर जाना पड़ा। मैंने उन्हें अफ़ग़ानिस्तान की हिन्दू-आर्य भाषाओं,

विशेष कर पश्तो, नूरिस्तानी, पशई और प्राची के प्रधान और स्थानीय बोलियों पर उच्चारण और सुब्-तिङ् प्रत्यय के अनुसार नक्शों के साथ सुविस्तृत खोज करने का परामर्श दिया; और साथ ही हिंदू-आर्यों के विस्तार के बारे में एक नक्शा* बना दिया, जिससे मालूम हो, कि किस काल में किस स्थान पर वह रहते थे और क्या व्यवसाय करते थे।

शुक्र (५ फ़रवरी) को तातील थी, इसलिए काबुल म्यूज़ियम् देख नहीं सकते थे। एकेडेमी के इतिहास-विभाग के स्कालर अहमद अली ख़ाँ ने कहा—फ़्रेंच दूतावास के मोशिए मोनिए को लेकर म्युज़ियम् देखना अच्छा होगा। वह कई जगह की खुदाइयों में रहे हैं। मोशिए मोनिए बड़ी खुशी से

---

*	काल (ई० पूर्व)	वासस्थान	व्यवसाय
हिन्दू-यूरोपीय			
केंटम्, शतम्	३०००	बाल्तिक-वोल्गा	पशुपालन
लिथुअन-स्लाव, हिन्दू-ईरानी	२५००	कालासागर-उराल	पशुपालन
ईरानी, हिन्दू आर्य	२०००	हिरात्-पामीर	कृषि
,,	१५००	वक्षु-स्वात	कृषि
,,	१३००	हिंदूकुश-ऊपरी सिन्धु,	कृषि
,,	११००	हिंदूकुश-ऊपरी गंगा,	उद्यान
,,	९००	हिंदूकुश-नर्मदा-गंडक	
,,	७००	हिंदूकुश-कोंकण-गंगाद्वार	
,,	५००	हिंदूकुश लंका-आसाम	
,,	३००	हिंदूकुश बर्मा सुमात्रा	

हमारे साथ चलने के लिए तैयार हो गये; और उन्हींकी मोटरकार पर हम लोग दोपहर को 'मूज़ीं काबुल' पहुँचे। म्यूज़ियम् शहर से बाहर दारुल्-अमान में है। शाह अमानुल्ला यहाँ पर एक नया नगर बसाना चाहते थे। म्यूज़ियम् के सामने उनका बनवाया महल अब भी मौजूद है, लेकिन खाली पड़ा है। कितनी ही और इमारतें उस वक़्त बनवाई गई थीं, जिनको दफ़्तर तथा दूसरे कामों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। विश्वविद्यालय भी इधर ही क़ायम होने जा रहा है। नई सरकार ने अमानुल्ला के इस नये नगर की योजना को छोड़ नहीं दिया है, वस्तुतः शाह नादिर और उनके पुत्र शाह जाहिर की हुकूमतों ने अमानुल्ला के किसी भी राजनीतिक, सामाजिक योजना को अग्राह्य नहीं बनाया। फ़र्क़ इतना ही है कि जिन बातों से पठानों के धार्मिक विश्वासों पर सीधी ठोकर लगती थी, उनको स्थगित या धीरे से करना शुरू किया है। अफ़ग़ानी फ़ौज और सेनापतियों की पोशाक बिलकुल यूरोपीय ढंग की है। दूसरे अफ़सर भी प्रायः सारे ही टाई, कोट, पतलून पहनते हैं। और पगड़ी की जगह अफ़ग़ानी टोपी लगाते हैं। ऊँची दीवार की बाल निकली यह टोपी तो रूस में भी बहुत अधिक पहनी जाती है। हाँ, हैट लगाने में कुछ हिचकिचाहट आ गई है, लेकिन स्कूल के लड़कों की पोशाक में छज्जेदार टोपी अनिवार्य है। दूसरे लोग भी शाम के वक़्त अकसर फ़्रेंच ढंग की गोल टोपी पहनते हैं। वज़ीर और सेनापति तक कभी कभी हैट पहनकर निकलते हैं। स्त्रियाँ आमतौर से सड़कों पर नहीं दिखाई पड़तीं; और जो दिखाई पड़ती भी हैं, वह बुरक़े में; लेकिन मुझे मालूम हुआ कि औरतें घरों के भीतर अपरिचित से भी परदा नहीं करतीं। अपनी ईरानी बहनों की तरह इन्होंने भी यूरोपी पोशाक धारण कर ली है; और बहुतों ने बाल भी कटा लिये हैं। लोग बतला रहे थे कि शाह अमानुल्ला के शासन के अन्तिम बरसों मे पर्दा काबुल में बिलकुल टूट गया था; औरतें खुलेआम सड़कों पर पश्चिमी पोशाक पहने बेनक़ाब घूमती थीं।

म्यूज़ियम (जादू घर) एक दो तल्ला खुबसूरत इमारत में है, जो दो

ही साल पहले बनकर तैयार हुई है। अमानुल्ला के समय में फ़्रेंच मिशन ने हड्डा में खुदाई की थी, और वहाँ बहुत सुन्दर सुन्दर चूने आदि की बनी मूर्तियाँ मिली थीं। मैंने उन मूर्त्तियों के कुछ हिस्सों को पेरिस के मूज़ी-ग्यूमे में देखा था। उनके काफ़ी भाग काबुल में उस समय की म्यूज़ियम् की इमारत में रखे हुए थे। जब काबुल पर बच्चा-सक्का का अधिकार हो गया, तो मज़हब के दीवानों ने कला के उन उत्कृष्ट नमूनों पर भी हाथ साफ़ किया। हम लोग पहले उस कमरे में गये, जिसमें हड्डा की मूर्तियाँ हैं। सैकड़ों चेहरे मौजूद हैं। इन चेहरों के बनानेवालों ने भावचित्रण और जातीय विशेषता के साथ रेखांकन में कमाल कर दिया है। कोई दो चेहरा एक तरह का नहीं है। मैंने अपने दोस्त से इन चेहरों की तारीफ़ की, और यह भी कहा कि यह इतनी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। अहमद अली साहब ने कहा—हड्डा के चित्रों की तो एक बड़ी भारी राशि थी। अगर आप सबको देख पाते तो और भी आश्चर्य करते। अधिक संख्या को तो कला के दुश्मनों और राष्ट्र के शत्रुओं ने नष्ट कर दिया है। मैंने पूछा—ये कैसे बच गये? जवाब मिला—इतना भारी संग्रह था, कि एक एक को तोड़ने में वे असमर्थ थे। बीसवीं सदी की इस बर्बरता को सुनकर रोंगटे खड़े हो गए। हड्डा के संग्रह में एक पत्थर पर बीच में मैत्रेय और आसपास कुछ और मूर्तियाँ उत्कीर्ण थीं। मैंने देखा, मैत्रेय के दाहने-बायें जो स्त्री-पुरुषों के आकार बने हैं, उनमें फ़र्क़ है। गौर से देखने पर मालूम हुआ कि एक ओर शक स्त्री-पुरुष टोपी, जामा और पाजामे में हैं, दूसरी ओर के स्त्री-पुरुष और बच्चे की वेशभूषा उनसे बिलकुल भिन्न है। सीधे सादे पाजामे की जगह गोल फूला-सा सुन्दर सलवार उन्होंने पहन रक्खा है। यही सलवार जिसे पठान स्त्री-पुरुष आज भी पहनते हैं। उनके कानों और कंठ में भारतीय ढंग के आभूषण हैं। मैंने अपने साथियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए कहा—यह देखिए १७०० वर्ष पूर्व के पठान दम्पती खड़े हैं। अहमद अली साहब बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें आश्चर्य हो

रहा था कि इतने दिनों से ये मूर्तियाँ यहाँ थीं, और उन्होंने उन्हें नहीं पह-
चाना। ईसा की दूसरी तीसरी शताब्दी में भी पठान स्त्री-पुरुष सलवार
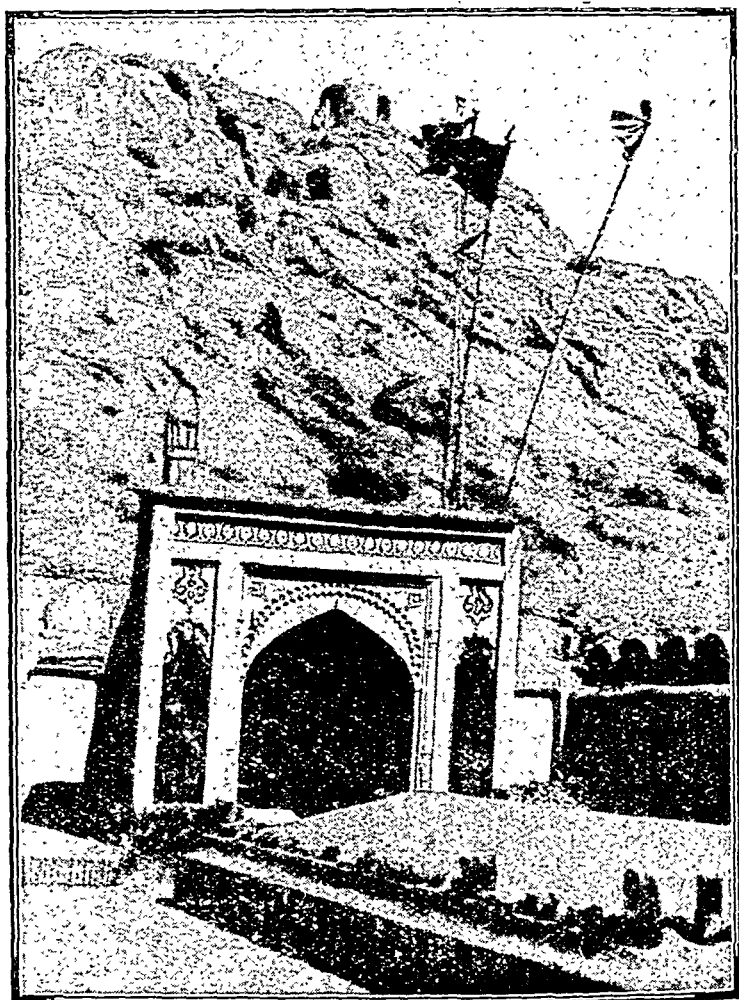
कन्दहार की जियारत

पहनते थे। यह इस गान्धार प्रस्तर-शिल्प के नमूने ने सिद्ध कर दिया।

दूसरी जगह बामियाँ की दीवारों पर उत्कीर्ण चित्रों की कुछ नक़लें देखीं। बामियाँ के पर्वत-गात्र में उत्कीर्ण सैकड़ों फ़ीट ऊँची बुद्ध-मूर्तियाँ अपनी विशालता के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं। दूर दूर से लोग बामियाँ को देखने आते हैं और निर्माताओं के श्रम, कला-नैपुण्य और हिम्मत की दाद देते हैं। आज के अफ़ग़ान भी अपने पूर्वजों की इस कृति पर अभिमान करते हैं। बामियाँ की मूर्तियों के गवाक्षों और भीतों में सुन्दर रंगीन चित्र थे; वैसे ही जैसे कि अजन्ता में पाये जाते हैं। लेकिन इनका अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है। कहीं कहीं ऊँचे गोखों में कुछ चित्र बच गये हैं, और उनकी नक़ल करवाई गई है। काबुल आर्ट्स-स्कूल के विद्यार्थियों को यह चित्र वैसे ही इंसपीरेशन (मानसिक प्रेरणा) देते हैं, जैसे भारतीय कला के विद्यार्थियों को अजन्ता के चित्र। मैंने देखा, कितने ही खंडित चित्रों का विद्यार्थी प्रतिचित्रण कर रहे थे, और कितनों के खंडित अंश को अपने मन से पूरा कर दिखलाने की कोशिश कर रहे थे। बामियाँ के विशाल बुद्ध-रूपों का निर्माण ईसा की पहली शताब्दी में सम्राट् कनिष्क और उनके उत्तराधिकारियों ने कराया था। कपिशा-उपत्यका के स्याह-गिर्द (शाह गिर्द) स्थान से मिली कुछ मिट्टी की रंगीन मूर्तियाँ रखी थीं। रेखांकन, आभूषण आदि में यह मध्यकालीन भारतीय मूर्तियों जैसी हैं। एक जगह पचासों स्त्री-मूर्तियों के सिर रखे थे। इनमें पचासों प्रकार से केशों को सजाया गया था; और कुछ सजाने के ढंग तो इतने आकर्षक और बारीक थे कि मोशिए मोनिए कह रहे थे—इनके चरण में बैठ कर पेरिस की सुंदरियाँ भी बाल का फ़ैशन सीखने के लिए बड़े उल्लास से तैयार होंगी। उस वक़्त यंत्र से बालों में लहर डालने का ढंग मालूम नहीं था, फिर न मालूम कैसे उस वक़्त की स्त्रियाँ ऐसी विचित्र और बारीक लहरें बनाने में समर्थ होती थीं।

एक कमरे में बेग्राम-बुलन्द शहर की खुदाई में प्राप्त चीज़ें रखी हुई थीं। बेग्राम कपिशा (कोह-दामन) उपत्यका के प्राचीन नगर का खँडहर है। पुरातत्त्वज्ञों का अनुमान है कि यहीं पर कनिष्क की दूसरी राजधानी

शिकारगाह (पग्मान)

थी। खँडहर मीलों तक चला गया है। खुदाई अभी थोड़ी सी जगह में पहली ही बार शुरू हुई है; और उसमें प्राप्त चीज़ों को देखकर दंग रह जाना पड़ता है। खुदाई अफ़ग़ान सरकार की आज्ञा से फ़्रेंच-मिशन करवा रहा है; और जो चीज़ें प्राप्त होती हैं उनको दोनों बाँट लेते हैं। इस प्रकार जितनी चीज़ें हमने म्युज़ियम् में देखीं, वह अफ़ग़ान सरकार के भाग की हैं, फ़्रेंच-मिशन ने अपने हिस्से को मूज़ी-ग्यूमे (पेरिस) में रक्खा है। शीशे के अन्दर हाथीदाँत पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ देख कर मैं तो चकित हो गया। ये मूर्तियाँ ठीक वैसी ही हैं, जैसी साँची की। वही मौर्य-शुंग कालीन चेहरे मोहरे, वही वस्त्राभूषण और वही शरीर के अंकन का ढंग इसमें पाया जाता है। हाथी के दाँत की चीज़ों का आधा भाग ही हमारे सामने था। पेरिस में गये दूसरे भाग को हमने नहीं देखा, लेकिन हम निस्संकोच कह सकते हैं कि यह साँची, भरहुत या इसी तरह के किसी दूसरे मौर्य-कालीन स्तूप और उसके प्रस्तरशिल्प की नक़ल है। बहुत सम्भव है कि साँची, भरहुत और बुद्ध गया के दृश्यों से यदि बारीक़ी के साथ मिलान किया जाय, तो मूल का पता लग जाय। यह भी सम्भव है कि उस तरह का कोई स्तूप अफ़ग़ानिस्तान ही में रहा हो, क्योंकि अफ़ग़ानिस्तान भी तो मौर्य-साम्राज्य के अन्तर्गत था। हाँ, वैसे वस्त्र गर्म जगहों में पहने जा सकते हैं। अफ़ग़ानिस्तान जैसी सर्द जगह में इतने कम वस्त्रों में काम नहीं चल सकता। हाथी-दाँत पर क्यों किसी पुराने स्तूप की नक़ल की गई? पवित्र देवालयों और स्तूपों की नक़ल करने की प्रथा हम तिब्बत में प्राप्त कूछ नमूनों से जानते हैं। वहाँ नर्थङ् मठ में मैंने खुद बुद्ध-गया के मन्दिर को, उसके प्राकार, तीनों फाटक और भीतर के बहुत से स्तूपों और अशोक-कालीन कठघरे के साथ पत्थर और लकड़ी के दो नमूनों के रूप में पाया। यह नमूना बारहवीं सदी में बना था। बेग्राम में प्राप्त नमूना चौथी सदी के पीछे का तो हो नहीं सकता। बहुत मुमकिन है कि वह उससे दो-तीन सदी और पहले बना हो। ये चीज़ें बेग्राम के जिस खँडहर में मिलीं, वह किसी सम्पन्न बौद्ध गृहस्थ का घर

था। हाथी के दाँत के चित्र तीन बक्सों में मिले थे। इनमें हथेली से कुछ कम बड़े हाथी के दाँत के फलक पर दो स्त्री-चित्र अंकित हैं। ये उत्कीर्ण नहीं हैं। इनमें सिर्फ़ बारीक रेखाएँ ही खोदी गई हैं। संभव है, शुरू में इन पर रंग भी रहा हो; और १५ सदियों तक ज़मीन के अन्दर दफ़न रहने के कारण वह उड़ गया हो। इन चित्रों में अजन्ता के उत्कृष्ट स्त्री चित्रों का पूर्वाभास मिलता है। मैंने कहा—ऐसी अनमोल निधि का परिचय तो बाहर के विद्वत्समाज को तुरन्त मिलना चाहिए था। यह तो अद्भुत चीज़ अफ़ग़ानिस्तान में मिली है। ऐसी चीज़ है जिसकी श्रेणी की वस्तुएँ हिन्दुस्तान में भी बहुत कम मिली हैं और हाथीदाँत की इतनी सुंदर कला तो कहीं अब तक नहीं मिली थी। मुझे याद आया कि साँची के एक तोरण-द्वार पर दाताओं का नाम 'विदिशा के दन्तकार' लिखा गया है। उस लेख से मालूम होता है कि हाथी के दाँत पर काम करनेवाले उस समय काफ़ी संख्या में रहते थे; और उनका पेशा इतना चला हुआ था कि वह काफ़ी धन-सम्पन्न थे। तभी तो वे साँची के उस पाषाण-तोरण जैसी एक इमारत बनाने में समर्थ हुए। मुमकिन है, आगे या पीछे इन दन्तकारों ने साँची के नयनाभिराम स्तूप को हाथीदाँत पर उतारा हो।

बेग्राम की खुदाई में १॥ हाथ लम्बी लकड़ी की गंगा-जमुना की मूर्तियाँ मिली हैं। इनकी बनावट गुप्त-कालीन या कुछ पीछे की सी मालूम होती हैं। लकड़ी यद्यपि बहुत जगह सड़ गल गई है, लेकिन तो भी स्त्री-आकार और मगर (गंगा-वाहन) और कछुए (यमुना वाहन) का ढाँचा साफ दिखलाई पड़ता है। बेग्राम के उसी धनिक के घर से बहुत से काँच के मद्यपात्र और पानचषक मिले हैं। इन काँच के बर्तनों में से कितने ही रूम और यूनान तक से आये होंगे। उनकी सुन्दर बनावट ही चित्ताकर्षक नहीं है, बल्कि उनके देखने से यह भी मालूम होता है कि कापिशायनी सुरा अपने स्वाद और रंग ही के लिए प्रसिद्ध नहीं थी, बल्कि उसके रखने और पीने के पात्र भी बड़े नफ़ीस होते थे। कपिशा को पाणिनि ने एक नगर के नाम के तौर पर लिखा

है; और वह कपिशा नगर यही होगा जहाँ पर कि आज बेग्राम का खँडहर मौजूद है। कपिशा कब नष्ट हुई? मुसलमानों के अफ़ग़ानिस्तान पर आरंभिक आक्रमण के समय (नवीं-दसवीं शताब्दी) तो यहाँ कोई इतना बड़ा शहर सुनने में नहीं आता। ह्वेन्-च्वाँग और फाह्यान के समय में शहर ज़रूर था, लेकिन उन्नतावस्था में था या अवनतावस्था में, इसका पता नहीं लगता। बहुत संभव है कि कपिशा का संहार पाँचवीं सदी में हूणों ने किया हो; जिनके ही हाथ से तक्षशिला का अंतिम संहार हुआ। हूणों का आक्रमण अचानक हुआ था, और उन्होंने नगरों को भस्म ही नहीं किया था, बल्कि इतना भीषण नर-संहार किया था, कि शहर के शहर ख़ाली हो गये थे। ऐसी अवस्था में लोग घर की सारी चीज़ों को लेकर न भाग सकते थे, और न पीछे से आकर उन्हें सँभाल सकते थे। इसीलिए कपिशा के खँडहरों से उस समय के रहन-सहन, पूजा-अर्चा आदि के सम्बन्ध की बहुत सी चीज़ें मिलने की आशा है। बेग्राम काबुल से ४० मील पर है।

*** ***

शाम के वक़्त श्री याक़ूब हसन ख़ाँ के साथ हम आशामाई का मंदिर देखने गये। शहर के पास एक पहाड़ी है, जिसे आशामाई कहते हैं। हमने समझा था कि आशामाई होने से किसी देवी का मन्दिर होगा, लेकिन वहाँ देखा, एक वैष्णव मन्दिर को। मन्दिर वैरागी साधुओं का है। लेकिन आजकल तथा कुछ वर्ष पहले से यहाँ कोई साधु नहीं रहता। लोग कह रहे थे, कि खानपान में छूतछात् का विचार न होने के कारण ऐसे भी साधु कम आया करते थे, लेकिन जब से पासपोर्ट का झगड़ा हुआ है, तब से एक तरह से उनका आना ही बन्द हो गया। काबुल में २२ मन्दिर हैं। उदासियों, संन्यासियों, नाथों और वैरागियों के अपने अपने मठ भी हैं। लेकिन साधु सिर्फ़ नाथों के मठ में है और वह भी काबुल का पैदा हुआ। उनके कहने से तो मालूम हो रहा था कि शायद अब भारतीय साधु इधर आयेंगे

ही नहीं। पेशावर के बाबा राघवदास के अधीन ही आशामाई का मंदिर भी है। आज वसन्त-पंचमी का दिन था, हल्वे और पूरियों की कड़ाहियाँ चढ़ी हुई थीं; और चारों ओर आटे और घी की सोंधी सोंधी सुगन्ध फैल रही थी। एक कमरे में कुछ आदमी बैठे धर्मचर्चा कर रहे थे। हम सीधे मन्दिर की तरफ़ गये। जूता उतारकर मन्दिर की दलीची में पहुँचे। पुजारी और दूसरे लोगों ने आ कर झट नया क़ालीन बिछा दिया। सलाम और नमस्कार के बाद हमें बैठाया गया। कुछ मेवे और मिठाइयाँ लाकर सामने रखी गईं। चाय का बहुत आग्रह हुआ; लेकिन हम लोग अभी चाय पी कर आये थे
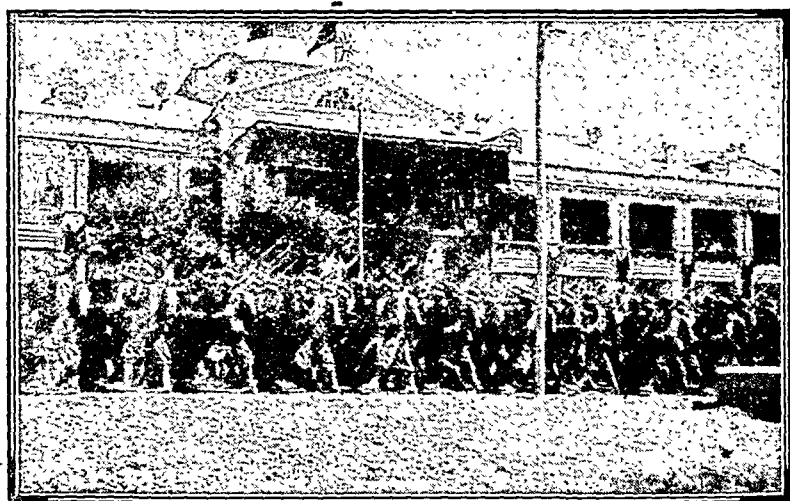
सैनिक प्रदर्शन (काबुल)

इसलिए उसे स्वीकार न कर सके। फिर हमने मन्दिर, महन्त, देवता और दूसरी बातों के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर करने शुरू किये। लोगों का बहुत आग्रह हुआ कि आज वसंत-पंचमी है, प्रसाद यहीं ग्रहण किया जाय।

चन्द मिनटों में हारमोनियम, सितार और तबला भी आ गया और भक्तों ने तुलसीदास के पद गाने शुरू किये। पूछने पर उन्होंने बतलाया कि काबुल में ढाई सौ घर (एक दूसरे सज्जन के कहने के मुताबिक़ ४०० घर)

हिन्दू हैं। जिनमें कहा गया, कि 'चारों वर्ण हैं'। वर्णों के बारे में पूछने पर मालूम हुआ कि सारस्वत और मोहियाल ब्राह्मण हैं, खत्री और अरोड़ा क्षत्रिय, उत्तरार्द्धी और दक्खिनी बनियाँ वैश्यों में और सुनार आदि शूद्रों में गिने जाते हैं। हिंदुओं का सत्यानाश जिस वर्ण-व्यवस्था के कारण हुआ उसे यह काबुली हिन्दू अब तक उसी तरह पकड़े हुए हैं। खाने पीने में जाति-पाँति का खयाल नहीं। लेकिन शादी-ब्याह में उसका बहुत ज़ोर है। अफ़ग़ानिस्तान में काबुल के अतिरिक्त चारिकार, बेग्राम-बुलन्दशहर, सराय-खोजा, (ये तीन कपिशा उपत्यका में हैं); कन्दहार, ग़ज़नी और जलालाबाद में हिन्दू बसते हैं। अधिकतर हिन्दू दुकानदार हैं और कुछ सरकारी नौकरियों में पाये जाते हैं। अफ़ग़ानी हिन्दुओं के साथ सरकार कोई भेदभाव का बर्ताव नहीं करती। बल्कि एक व्यापारी हिन्दू के कथना-नुसार तो हिन्दू मुसलमानों की अपेक्षा भी अधिक सरकार के कृपापात्र हैं। लाल-पगड़ी और पीले बुरक़े का जो क़ानून हिन्दू पुरुष-स्त्री के लिए पहले था, वह अब उठा दिया गया है। पुराने खयाल के बूढ़े स्त्री-पुरुष अब भी लाल पीले रंग का व्यवहार करते हैं; लेकिन सरकार की ओर से कोई निर्बन्ध नहीं है। हिन्दू अपने को मुल्तान और लाहौर से आया कहते हैं। घरों में वह पंजाबी भाषा बोलते हैं। सुल्तान महमूद उन्हें अपने अनेक हमलों में हिन्दुस्तान से लाया था। सुल्तान महमूद के समय भी काबुल और कपिशा की उपत्यका पूर्णतया हिन्दू थी। इसलाम के प्रचार का सूत्रपात दसवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। अगली दो शताब्दियों में राज्य-शासन के साथ हिन्दुओं का धर्म भी काबुल से उठ गया।

मैंने पूछा—अफ़ग़ानिस्तान में हिन्दुओं के तीर्थ कौन कौन हैं? जवाब मिला—मानसरोवर (दर्रा शक्कर या शंकर में), जटाशंकर (सराय खोजा के पास **कलाय-गग्गर** में), वाणगंगा (लोगर के पास), शिवजी का चश्मा (ताशकुर्गान और ऐबक के बीच कौलानी गाँव में जिसे 'चक्-आब' कहते हैं।) और बाबानानक का चश्मा (जलालाबाद के पास सुलतानपुर में)।

इन नामों से ही पता लगता है कि आजकल के हिन्दू अफ़ग़ानिस्तान के पुराने हिन्दुओं के वंशज नहीं हैं। अगर ऐसा होता, तो अपने पूर्वजों की कहानियों और तीर्थ-संबंधी परंपरा को ज़रूर याद रखते। ऐतिहासिक खँडहरों में हिन्दू-तीर्थ न मान कर कुछ साधारण चश्मों और तालाबों तक--जिनके पास भी वैसे पुराने बड़े ध्वंसावशेष नहीं हैं--अपने तीर्थों को परिमित मानना उपर्युक्त परिणाम को दृढ़ करता है। यह भी संभव है कि महमूद-गज़नवी के समय में न आकर यह और भी पीछे मुग़लों के शासन-काल में आये हों।

आशामाई के मन्दिर में शालिग्राम ठाकुर जी की स्थापना है। पुजारी और प्रबन्धक काबुल के ही एक गृहस्थ हैं।

६ फ़रवरी को हम अपने लिए सरहद से पार होने का वीज़ा बनवा लाये। इसी वीज़ा पर हम १० तारीख़ तक रह सकते थे, लेकिन हम जाने के लिए उत्सुक थे। इधर बर्फ़ ज़ोर की पड़ गई थी। सारे शहर की सड़कों पर एक एक फ़ुट मोटी उसकी तह जमी हुई थी। जलालाबाद जानेवाली डाक की लारी भी दो दिन के लिए बन्द हो गई। इसलिए यही मना रहे थे कि बर्फ़ बरसना बन्द हो; सूर्य ख़ूब प्रचण्ड हो कर उगें, जिसमें रास्ते की बर्फ़ पिघल जाय। हमारी प्रार्थना को मानकर सूर्य प्रचण्ड होकर उगे, लेकिन जब हम सड़क पर निकले, तो देखा चारों ओर पानी और कीचड़ पिच पिच कर रही है। अब मन कह रहा था, क्या ही अच्छा होता कि जब तक हम काबुल में हैं, तब तक बर्फ़ पिघलती ही नहीं; और पत्थर जैसे सख्त कर्पूर श्वेत हिमाच्छादित राज-पथों पर हम निर्द्वन्द्वता से घूमते। यदि कहीं इस प्रार्थना को सूर्य देवता स्वीकार कर लेते, तो काबुल शहर ही में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के रास्तेवाले पहाड़ों पर भी बर्फ़ जम जाती; और हमें काबुल में बैठ कर माला फेरनी पड़ती।

हिन्दुस्तानी सौदागर अफ़ग़ान-सरकार की व्यापारिक नीति की बड़ी निन्दा करते थे। जब किसी के स्वार्थ पर हमला किया जाय, तो निन्दा छोड़ तारीफ़ कैसे करेगा। हिन्दुस्तानी (हिन्दू और मुसलमान दोनों)

अफ़ग़ानिस्तान के बड़े बड़े शहरों के बड़े बड़े सौदागर थे। आयात और निर्यात का अधिकांश व्यापार उनके हाथ में था। सरकार ने यह काम अब अर्द्ध-सरकारी कम्पनियों को दे दिया है; जिन कम्पनियों के हिस्से को अफ़ग़ान प्रजा ही ख़रीद सकती है। कुछ व्यापारों के लिए हिन्दुस्तानी सौदागरों को भी स्वतंत्रता दी गई है। लेकिन इस शर्त के साथ कि वह अपने रोज़गार में अफ़ग़ानों को भी साझीदार बनायें। इस नीति से अफ़ग़ानी प्रजा (जिनमें वह अफ़ग़ानी हिन्दू भी शामिल हैं, जिनका गुज़र-बसर सिर्फ़ व्यापार पर है) को बहुत फ़ायदा हुआ और कितने हिन्दुस्तानी व्यापारियों को अपना कारबार बन्द कर हिन्दुस्तान लौट आना पड़ा है। एक पंजाबी मुसलमान व्यापारी सरकार को बड़ी कड़वी-मीठी सुना रहे थे। कह रहे थे, हमारी दुकानें काबुल के अतिरिक्त ३–४ और बड़े शहरों में थीं। सरकार की व्यापारी पालिसी के कारण और जगह के कारबार को हमें अर्द्ध-सरकारी कम्पनियों के हाथों बेच देना पड़ा। काबुल में हमें ५ साल के लिए काम करने की इजाज़त मिली है, जिसमें दो साल बीत चुके हैं। कहा जा रहा है कि तुम अफ़ग़ान सौदागर को भी अपना साझीदार बनाओ, तो तीन वर्ष के बाद भी तुम्हें कारबार करने की इजाज़त मिल जायगी। मैंने कहा—आपके साथ तो सरकार बड़ी रियायत कर रही है। जवाब मिला—रियायत क्या ख़ाक है, हमारा जिस चीज़ का व्यापार है, उसकी खपत मुल्क में बहुत कम है; और चीज़ें भिन्न भिन्न मुल्कों से मँगानी पड़ती हैं। जिसके लिए विशेष जानकारी की आवश्यकता है। नफ़ा कम और दिक़्क़त ज़्यादा! इसीलिए यह रियायत दी गई है। उन्होंने कहा—उनकी ही तरह और बहुत से हिन्दुस्तानी व्यापारी हैं, जिनको व्यापार में लगी हुई पूँजी कलदार (हिन्दुस्तानी रुपये) के रूप में मिल जाय, तो ख़ुशी ख़ुशी अपने घर लौट जाने के लिए तैयार हैं।

*** ***
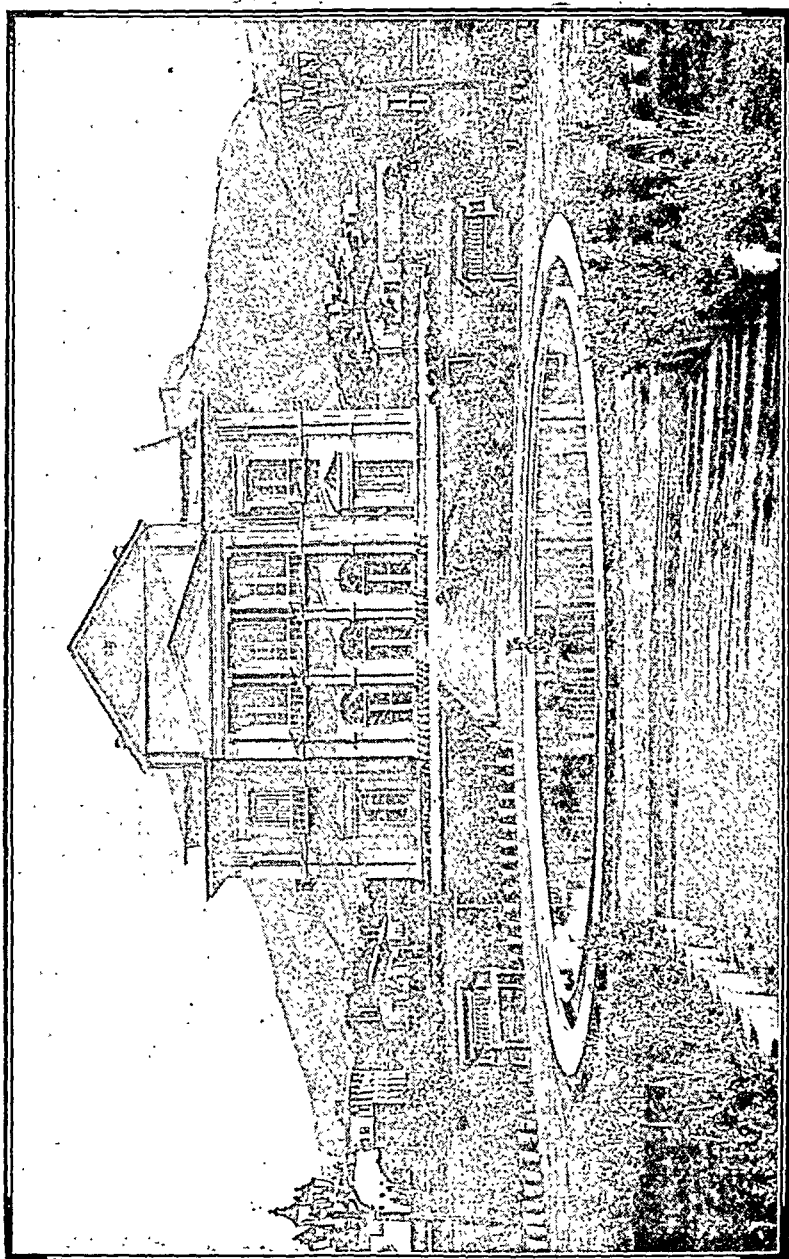
जैनुल-इमारत (काबुल)

हम काबुल शहर के पुराने भाग को भी देखने गये। चौक और बाज़ार में बहुत चहल-पहल थी। यद्यपि उस चहल-पहल के देखने में आनन्द नहीं आता था, जब हम अपने बूट की तरफ़ नज़र डालते थे, और उसे तीन तीन चार चार अंगुल मोटे कीचड़ में डूबा पाते थे। टेढ़ी-मेढ़ी पतली गलियों को देखकर लाहौर और अमृतसर की याद आती थी।

काबुल के गोरखनाथी मठ की बात हम १२ साल पहले सुन चुके थे। यहाँ आने पर उसको देखने की बड़ी इच्छा थी। मालूम हुआ, बागवान, कूचे में वह मठ है। और उसे योगियाँ-दा-थाँव (योगियों का स्थान) या वड्डा-थाँव कहते हैं। स्थान शहर के भीतर सड़क पर है। एक लम्बा आँगन है, जिसके किनारे कई कोठरियाँ काफ़ी साफ़-सुथरी बनी हैं। भीतर जाकर देखा, एक दालान में लम्बी चौकी पर मोटी रज़ाई पड़ी हुई है; और नीचे चौकी के किनारे रज़ाई का किनारा अपने ऊपर ले ले कर लोग बैठे हुए हैं। हमें भी जगह दी गई और जूता उतार कर हम भी छाती तक के हिस्से को रज़ाई के भीतर डाल कर बैठ गये। यह इन्तज़ाम हमें अच्छा मालूम हुआ। वैसे सर्दी से बचने के लिए अंगीठी जलानी पड़ती। मकान को कालिख से बचाने के लिए यदि चिमनी रखी जाती तो भी लकड़ी का ख़र्च बहुत पड़ता; और रज़ाई में बहुत किफ़ायत है। काबुल में नई रोशनी के साथ साथ घर को गर्म रखने की अंगीठी का रिवाज़ बहुत हो गया है। आस पास के पहाड़ नंगे हैं, उन पर जंगल हैं नहीं; नतीजा यह हो रहा है कि लोग तूत के वृक्षों को काट काट कर मकान गर्म कर रहे हैं। जिन हज़ारों तूत के वृक्षों का संहार हो रहा है, उनके पत्तों से कीड़े पाल कर रेशम से प्रति वर्ष न जाने कितने लाख रुपयों की आमदनी होती। हम थोड़ी देर बैठे। महन्त जी शहर में गये हुए थे; और उनसे मिलने के लिए घंटों की प्रतीक्षा करनी पड़ती; जिसके लिए हमारे पास समय न था। गोरखनाथ के शिष्य पीर रतननाथ काबुल में आये थे। कौन से गोरखनाथ? नवीं शताब्दी के सिद्ध गोरखनाथ तो वे हो नहीं सकते! पीर रतननाथ ने एक सूखे
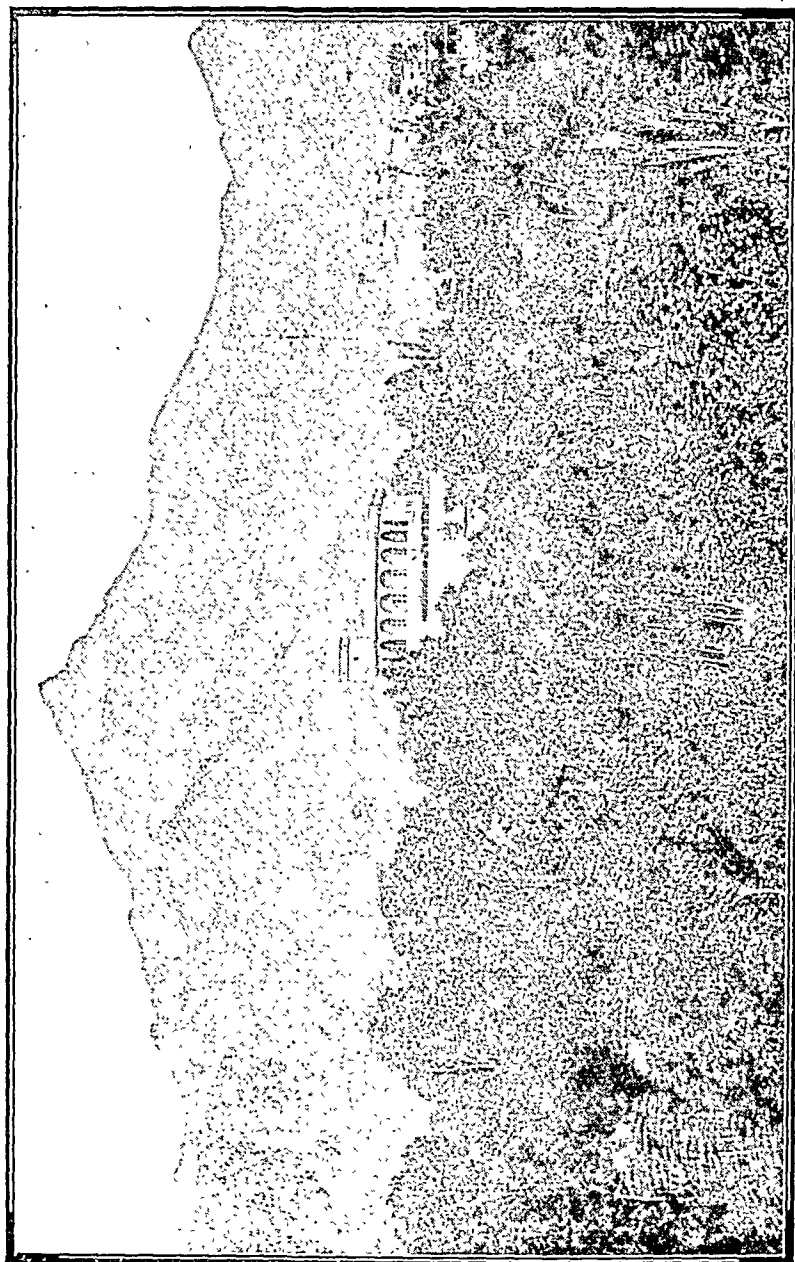
चह्ल-सुतून (काबुल)

वृक्ष को हरा कर दिया, जिससे काबुल के अमीर उनका लोहा मान गये। वह सूखे से हरा हुआ वृक्ष आज भी सूख कर आँगन में पड़ा हुआ है। हमने सोचा, शायद, नाथपंथ की कोई पोथी या बानी यहाँ देखने को मिलेगी, लेकिन यहाँ वैसा कुछ न था। मठ की कोठरियाँ अच्छी हैं। बिजली की रोशनी है। आने-जानेवाले मुसाफ़िरों के लिए ठहरने का यह अच्छा स्थान है। इस मठ के बड़े महन्त दवँड़ाकी पत्तीवाले महन्त मनमोहन स्वामी पेशावर में रहते हैं।

*** ***

श्री याक़ूब हसन ख़ाँ ने यद्यपि नियम से भाषा-तत्व का अध्ययन नहीं किया है, और उन्होंने संस्कृत भी नहीं पढ़ी है, लेकिन उनमें प्रतिभा है। पंजाबी, हिन्दुस्तानी, पश्तो और फ़ारसी का अच्छा ज्ञान होने से भाषाओं की समानता और असमानता पर उनका काफ़ी ध्यान आकर्षित हुआ है। इसी से वह भाषा-तत्व सम्बन्धी खोज में लगे। मेरे वहाँ रहने के समय का उन्होंने अच्छा उपयोग किया। उन्होंने हजारों पश्तो शब्दों के संस्कृत प्रतिशब्द मुझसे पूछे। पश्तो को कुछ लोग खींच तान कर फ़ारसी से मिलाना चाहते थे; लेकिन याक़ूब हसन खां ने पंजाबी, हिन्दुस्तानी तथा कुछ यूरोपीय विद्वानों के संगृहीत शब्दों का सादृश्य दिखला कर पश्तो का संस्कृत से संबंध साबित किया। हम दोनों ने जो इधर संस्कृत से पश्तो को मिलाना शुरू किया, तो यह स्पष्ट हो गया कि पश्तो संस्कृत-वंश की भाषा है। उसके उच्चारण में और कुछ शब्द-कोष में भी फ़ारसी की छाप पड़ी है, लेकिन संस्कृत की अपेक्षा वह नगण्य है। आप् का फ़ारसी में आब् हो जाता है; और पश्तो में उसी का ओबा; लेकिन पश्तो में ऐसे शब्दों की अधिकता पाई जाती है, जिनका सादृश्य फ़ारसी में न मिलकर संस्कृत में ही मिलता है। जैसे संस्कृत में पानी के लिए आने वाला शब्द 'वारि' पश्तो में 'बाल' है और संस्कृत 'तोय' तो 'तोय' ही रह जाता है। कितने ही वैदिक शब्दों का

प्रयोग भी पश्तो में मिलता है। जैसे 'गिरिश' का 'ग़रसै' (गिरि में रहने वाला) 'अप्‌शा' का 'ओसै' (पानी में रहने वाला)। एक दिन याक़ूब हसन साहब ने काबुल के पास की एक पहाड़ी 'जम्-ग़र्' के नाम के बारे में कहा—यह शब्द अरबी-फ़ारसी का नहीं है। गिरि का ग़र् हो जाता है और जम् का भी कोई संस्कृत प्रतिशब्द होना चाहिए। मैंने जोतिसियों और सयानों की भाषा में कहना शुरू किया—'यह पहाड़ काबुल शहर के दक्खिन ओर है?' जवाब मिला—'हाँ'।

"उसके पास क़ब्रिस्तान है?'

"हाँ!"

हमारे दोस्त को आश्चर्य होने लगा कि मुझे यहाँ तक कैसे मालुम हो गया। मैंने कहा—आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है। जोतिस और भूत-प्रेत में हमारा विश्वास नहीं है। हम देखना चाहते थे, कि क्या हम जम् शब्द को संस्कृत 'यम' से बदल सकते हैं? यम मृत्यु का देवता है। उसकी दिशा दक्षिण है; और हिन्दुओं के शहरों और गाँवों में मरने के बाद मुर्दों को जिस मरघट में जलाया जाता है, वह शहर से दक्षिण ओर ही रहता है। यह देखा गया है, कि जातियों ने अपना धर्म छोड़कर ऐसे धर्म को अपनाया, जो उनके इतिहास, संस्कृति—सभी चीजों से उल्टा है; लेकिन तब भी दो बातों को वे नहीं छोड़ सकीं। एक तो अपने पुनीत स्थान (देवालय, मठादि के स्थान) की पवित्रता और सन्मान। मन्दिरमठ अपने पूर्व रूप में नहीं रहे; लेकिन वही स्थान मसजिद, रौज़ा या ज़ियारत के रूप में पूजा जाने लगा। दूसरी बात जो वह नहीं छोड़ सकीं, वह यही मरघट है। उन्हीं पुराने मरघटों को इसलाम स्वीकार करने पर क़ब्रिस्तान के रूप में बदल दिया गया। इस प्रकार आपका जम्ग़र् यमगिरि है।

पठानों के एक क़बीले को 'सड़वन' कहते हैं। प्रश्न था, इसका क्या अर्थ हो सकता है? पूछने पर मालूम हुआ, सड़ शर या सरकंडे को कहते हैं और 'वन'=वाला को। मैंने कहा—यह शरवत् हो सकता है। अम्बाला

ज़िले में बहने वाली घग्घर नदी पुराने समय में शरावती कही जाती थी; और वही प्राची (पूर्व के मुल्क युक्तप्रान्त और बिहार) और उदीची (पंजाब)को अलग करती थी। इसी का दूसरा नाम सरस्वती भी मिलता है। गोत्रों की सूची ढूँढ़ने से शरद्वत और सारस्वत दो नाम हमें इसी अर्थ के द्योतक मिलते हैं। इस प्रकार जान पड़ता है कि सड़वन् ग़र्‌गश्त (गिरिगत) पठान वंश की भ्रातृ-शाखा सारस्वत या शरद्वत हो सकती है। सुलेमान-पर्वत पर बसने के कारण शायद एक शाखा को 'ग़र्गश्त' कहा गया। भाषा-तत्त्व, वैदिक-इतिहास और मानवतत्त्व की गवेषणा के लिए अफ़ग़ानिस्तान एक बड़ी खान है, और यह एक बड़े सन्तोष की बात है कि आज शिक्षित पठान-समाज इस तरह की खोजों में बड़ी दिलचस्पी ले रहा है; और मज़हब तथा संस्कृति को एक दूसरे के क्षेत्र में नाजायज़ दखल देने को गवारा नहीं करता।

*** ***

काबुल में एक सिनेमा भी है। उसे पहले कोई व्यापारी चला रहा था, लेकिन बच्चा-सक्का के समय में मकान जला दिया गया। नई हुकूमत ने मकान की मरम्मत कर फिर से काम शुरू किया है, और सिनेमा का प्रबन्ध शिक्षा-विभाग करता है। मैंने वहाँ दो बोलते फ़िल्म देखे। दोनों अमेरिकन फ़िल्म थे। उनमें स्त्री-पुरुषों के स्वच्छन्द प्रेम, नित्य नये नये फ़ैशन, तरुण-तरुणियों की जीवन-संबंधी सुव्यवस्था और फुर्तीलापन दिखलाया गया था। मैंने देखा कि सिनेमा में दर्शकों की संख्या बहुत कम है। मेरे एक दोस्त ने कहा कि जब जब यहाँ हिन्दुस्तानी फ़िल्म आते हैं, तब तब इसका सारा हाल दर्शकों से भरा रहता है। अफ़ग़ानी और हिन्दुस्तानी संगीत में इतना सादृश्य है; इसी लिये पठान उसे बहुत पसन्द करते हैं। उसके अभिनयों को भी वह अच्छी तरह समझ लेते हैं। यूरोपीय फ़िल्म और उसके संगीत उनके लिए विचित्र से मालूम होते हैं; लेकिन न मालूम क्यों अधि-

कारी लोग यूरोपीय फ़िल्मों को ही अधिक पसन्द करते हैं। हिन्दुस्तानी फ़िल्म कभी ही कभी आने पाते हैं। मैंने कहा—हिन्दुस्तानी फ़िल्म रुचिकर हो सकते हैं, लेकिन अफ़ग़ानिस्तान के भाग्य-विधाता यदि अप्रत्यक्ष रूप से अपने मुल्क में सामाजिक क्रान्ति करना चाहते हैं; तो उसके लिए यूरोपीय फ़िल्म ही अधिक उपयोगी हैं। उनसे उन्हें पर्दा के विरुद्ध शिक्षा मिलेगी। स्त्रियों को स्वतंत्रता का पाठ प्राप्त होगा और उनका धार्मिक कट्टरपन दूर होगा। लोगों को मालूम होगा कि बहिश्त मरने के बाद ही की चीज़ नहीं है, वह इस जीवन में भी मिल सकता है।

ग्यारह संघ-प्रजातंत्रों के लांछन

४—भारत की सीमा पर

८ फ़रवरी को जलालाबाद से कुछ मोटर-लारियाँ आईं और मालूम हुआ कि रास्ता खुल गया है। २० अफ़ग़ानी (५) में एक लारी में ड्राइवर की बग़ल में जगह मिली। नये प्राप्त मित्रों और विशेष कर श्री याक़ूब हसन ख़ाँ से विदाई ली। ११ बजे हमने शहर छोड़ा। शहर के बाहर पुलीस ने ड्राइवर का नाम आदि लिखा। आगे पेट्रौल ख़रीदा गया और हम आगे बढ़े। सड़क और आसपास चारों तरफ़ बर्फ़ ही बर्फ़ थी। ऊँटों के झुंड जहाँ-तहाँ मिलते थे। लारी से डर कर भागते वक़्त उनकी दशा बड़ी दयनीय हो जाती थी। कभी कभी तो बर्फ़ में उनका पैर फिसल जाता था; और बोझा लिए दिये वह ज़मीन पर गिर पड़ते थे। दर्रा काबुल-ख़ुर्द (७,५०० फ़ीट) एक बहुत ही छोटा पहाड़ी डाँड़ा है। आगे हम खाने के लिए एक जगह ठहरे। हमारे साथ एक और मोटर-बस चल रही थी; जिसमें आधे दर्जन पठान विद्यार्थी सिर से पैर तक यूरोपी पोशाक में थे। वह यूरोप में पढ़ने के लिए भेजे जा रहे थे। काबुल-उपत्यका छोड़ कर हम एक दूसरी उपत्यका में आये; और अब उसको भी छोड़कर आगे बढ़ रहे थे। दर्रा-तेज़ीन (८,२०० फ़ीट) भी चला गया। चढ़ाई बढ़ती जा रही थी, लेकिन वह काबुल की तरफ़ से आने में उतनी सख़्त न थी। दर्रा जग्दलक् सबसे ज़बरदस्त डाँड़ा है। यहीं पर, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेज़ों की सारी सेना नष्ट हुई थी। जग्दलक् के डाँड़े से उतराई शुरू होती है। पहले कुछ मीलों तक तो बहुत सख़्त है; फिर कत्ती काटकर सड़क एक डाँड़े से दूसरे डाँड़े को फांदती आगे बढ़ती है। रात के ८ बजे के बाद बर्फ़ से जान छूटी। एक जगह खाने के लिए मोटर कुछ देर के लिए रुकी। होटल अच्छा था। किट्सन-लैम्प और मेज़-कुर्सी का बाक़ायदा

इन्तज़ाम था। भोजन में पुलाव, रोटी, दो तरह के मांस और तरकारियाँ थीं।

आगे उपत्यका कुछ अधिक चौड़ी मालूम हो रही थी। ड्राइवर काफ़ी तेज़ी के साथ मोटर चला रहा था। रात अँधेरी थी। आसमान में बादल भी छाया हुआ था। हम आसपास की चीज़ों को सिर्फ़ उतना ही देख सकते थे, जितना कि मोटर की रोशनी में पड़ रहा था। जहाँ वाकू छोड़ने के बाद ही से हम वृक्षों पर हरी पत्तियों को देखने के लिए तरस रहे थे, वहाँ अब सड़क के किनारे के वृक्षों पर हरी पत्तियाँ थीं। जान पड़ता था, हम पंजाब में पहुँच गये। जलालाबाद के २० मील पहले ही से सड़क बहुत अच्छी बनी है। सड़क बनने का काम लगा हुआ है, लेकिन अभी सड़क का अधिक हिस्सा पक्का नहीं हुआ है। ११ बजे रात को हम जलालाबाद (२९४२ फ़ीट) पहुँचे। ड्राइवर का काग़ज़ देखा गया और वह फिर चला। सोच रहे थे, आज रात को यहीं ठहरना पड़ेगा, लेकिन वह सीधे दक्का पहुँचा।

जलालाबाद काबुल से १०० मील पर एक अच्छा खासा शहर है। आबादी ५००० है। बस्ती के चारों तरफ़ शहर-पनाह (प्राकार) बनी हुई है। कितनी ही सरकारी इमारतें और शाही महल तथा बाग़ यहाँ की दर्शनीय चीज़ों में हैं। दक्का जलालाबाद से ४२ मील पर है। २ बजे रात को वहाँ पहुँचे। एक चायख़ाने में चारपाई मिल गई और हम सो गये।

*** ***

९ फ़रवरी को सवेरे देखा, तो वहाँ १०–१२ लॉरियों की भीड़ लगी है। ड्राइवर ने लॉरी को ले जाकर एक हाते में खड़ा कर दिया और हमारा पासपोर्ट सरकारी दफ़्तर में ले गया। धीरे धीरे हर एक लॉरी का मुआयना होने लगा और जिसमें रोकने लायक़ कोई चीज़ नहीं पाई गई, उसे जाने की इजाज़त मिली। हमारी लॉरी को इन्तज़ार करते करते यहीं ९ बज गया।

फिर पासपोर्ट लेने के लिए हमें ख़ुद अफ़सर के सामने जाना पड़ा। अफ़सर का दफ़्तर और मकान अच्छा पक्का और साफ़ सुथरा है। सिपाही अधिक तर छोलदारियों में रहते हैं। दक्का बहुत छोटा सा गाँव है; जिसमें ३–४ चायख़ाने और कुछ छोटी छोटी दुकानें हैं। अफ़ग़ान-अफ़सर ने यह जान कर कि मैं ईरान और रूस से आ रहा हूँ; विशेष तौर से मेरे काम के बारे में पूछा। जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं इतिहास और भाषा-तत्त्व का प्रेमी एक यात्री हूँ; तो उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान के सम्बन्ध में कई बातें पूछीं। अफ़सर काफ़ी संस्कृत थे। हमारे उत्तर के साथ उनकी जिज्ञासा बढ़ती ही जाती थी; और इधर ड्राइवर चलने के लिए उकता कर इशारा कर रहा था। हमें भी किसी तरह छुट्टी लेनी पड़ी।

रात को तो हमने आस पास की भूमि को अच्छी तरह देख नहीं पाया था, अब हम देख रहे थे कि हमारा रास्ता एक सूखी चौड़ी वादी में से हो कर ऊपर की ओर जा रहा है। पहाड़ सभी नंगे हैं। बर्फ़ या पानी कहीं दिखलाई नहीं पड़ रहा है। रास्ते में एक-दो छोटे क़िले मिले; जिनमें कुछ फ़ौजी सिपाही मौजूद थे। अन्त में ९ मील के क़रीब चलकर हम तोरख़म पहुँचे। यहीं अफ़ग़ान-अफ़सर ने अन्तिम बार पासपोर्ट देखा और उसे अपने रजिस्टर में दर्ज किया। पासपोर्ट पर मुहर और दस्तख़त हुई। तोरख़म दर्रा-ख़ैबर के मुँह पर है। पासपोर्ट से छुट्टी पाकर हमारी मोटर चली। कुछ ही फ़ीट पर एक फ़ाटक मिला। लॉरी के आते ही खोल दिया गया और अब हम अनगढ़ स्वनिर्मित रास्ते की जगह पर पक्की तारकोल बिछी हुई चिकनी सड़क पर थे। कुछ क़दम और बढ़ कर लारी एक फाटक के सामने रुक गई। यही अंग्रेज़ी तोरख़म है। एक बंगले के बराण्डे में पासपोर्ट दर्ज किया जा रहा था। कुछ ही मिनट पहले हम ऐसे पासपोर्टख़ाने में थे जहाँ पचीसों आदमी मुंशी को घेरे "हमारे पासपोर्ट को जल्दी कर दीजिए, हमारे पासपोर्ट को जल्दी कर दीजिए" कहकर हल्ला मचा रहे थे; और दर्ज करने में कोई ख़याल न रखा जाता था कि कौन पहले आया और

कौन पीछे, वहाँ अब पूरी व्यवस्था थी। बैठने के लिए कुर्सियाँ और वेंचें पड़ी हुई थीं। क्रम के अनुसार पासपोर्ट लेकर दर्ज किया जाता था। हमारा भी पासपोर्ट दर्ज किया गया। फिर पासपोर्ट अफ़सर के पास पहुँचाया गया। श्री सादुल्ला ख़ाँ एक नौजवान पठान अफ़सर हैं। उन्होंने बड़े आदर के साथ बैठाया। पहले मेरी यात्रा के बारे में पूछा और जब उन्हें मालूम हुआ कि बौद्ध संस्कृति और उसका इतिहास मेरे अध्ययन का ख़ास विषय है, तो वह और भी विशेष जानने के लिए उत्सुक हुए। उन्होंने कहा——मैं मर्दा का रहनेवाला हूँ और वहाँ पर बौद्ध-कला की बहुत सी चीज़ें (मूर्तियाँ आदि) मिली हैं। आख़िर ये सब चीज़ें हमारे पूर्वजों की कृतियाँ हैं। और वतलाती हैं कि किसी समय पठानों का तमद्दुन (संस्कृति) भी वहुत उन्नत अवस्था को प्राप्त था। उन्होंने ख़ास तौर से मर्दा आने के लिए निमंत्रण दिया। स्थल-मार्ग पर भारतीय सरकार का कस्टम् विभाग नहीं है, इस-लिए वक्स खोलने आदि की ज़हमत से हम बच गये।

डेढ़ घंटे के बाद हम तोरख़म से रवाना हुए। दक्का से पेशावर ४९ मील है। आगे प्रायः २५ मील का रास्ता ख़ैवर के दोनों पहाड़ों के बीच में है। तोरख़म से हलकी चढ़ाई शुरू होती है। चार मील बाद लन्डीख़ाना आता है। यहीं से रेल शुरू होती है। लेकिन हमें तो मोटर से ही पेशावर जाना था। रेल से क्या मतलब। कुछ और चढ़ाई चढ़ने के बाद हम लंडी-कोतल (लंडी के डाँड़े) पहुँचे। सड़क के दोनों तरफ़ कितनी ही जगह पहाड़ दीवार की तरह सीधे खड़े हैं; जगह जगह रास्ते की हिफ़ाज़त के लिए मोर्चावन्द फ़ौज़ी छावनियाँ हैं। सड़क बहुत अच्छी है। ख़ैवर के दर्रे में कितने ही छोटे छोटे गाँव हैं; जिनके आस पास कुछ हरे खेत भी दिखाई पड़े; लेकिन फ़सल उतनी ज़ोरदार नहीं है। पानी के लिए दूर से नल लगाये गये हैं; और गाँव वालों के उपयोग के लिए ईंट-चूने की टंकियाँ बना दी गई हैं। यह रास्ता स्वतंत्र पठानों के मुल्क में है। रास्ता और मोर्चावन्दी की ज़मीन पर अंग्रेज़ सरकार का अधिकार है; और बाक़ी पठानों की

अपनी चीज़ है। बन्दूक और कारतूस को सोंटे-डंडे की तरह हर एक पठान इस्तेमाल करता है। वहाँ हथियारों का कोई कानून नहीं। पठानों के लिए यह आज़ादी जमरूद से भी आगे तक है। लंडीकोतल से उतराई शुरू होती है, और जमरूद से ४ मील पहले ख़तम हो जाती है।

जमरूद में ड्राइवर का काग़ज़ देखा गया; और आधा घंटा बाद हम पेशावर पहुँच गये।

भावी वैज्ञानिक
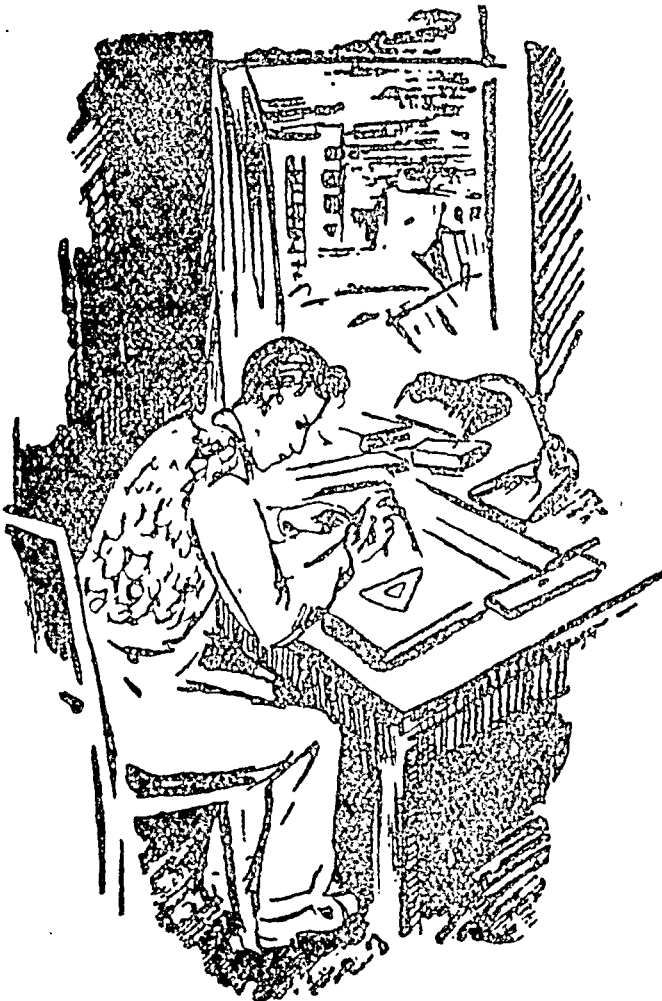
परिशिष्ट

पहिली बार सोवियत्-भूमि में

अपनी भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक साधन, नाना जाति के जन-समूह और नाना प्रकार की संस्कृतियों के कारण सोवियत्-साम्यवादी-प्रजातंत्र राजनीति में अपना एक प्रमुख, प्रमुख ही नहीं, अतुलनीय स्थान रखता है। सोवियत्-सरकार संसार के छठवें हिस्से पर फैली हुई है। सिर्फ़ मध्य-एशिया के कुछ स्थानों को छोड़कर उसकी सभी ज़मीन उपजाऊ है। वह जितने आदमियों को भोजन दे रही है, उससे कहीं अधिक को दे सकती है। उस ज़मीन के भीतर प्राकृतिक उपज भी प्रचुर परिमाण में प्राप्त हैं, जैसे ताजिकिस्तान और उत्तर-पूर्वीय काकेशस् में कास्पियन सागर के किनारे की वृक्ष-रहित पहाड़ी भूमि पैट्रोल के बड़े से बड़े भंडारों में से है। सिबेरिया की अत्यधिक सर्दी की बात पढ़ कर हम सोचते हैं; कि वह मनुष्य के निवास के योग्य नहीं होगा; लेकिन बात ऐसी नहीं है। समूचा सिबेरिया हमेशा हरे रहने वाले सुन्दर तथा उपयोगी देवदार-जातीय वृक्षों का बाग़ है। सिबेरिया में सोने तथा कोयले की बड़ी बड़ी खानें हैं।

सोवियत् दुनियाँ में खनिज सम्पत्ति में प्रथम स्थान रखता है। जहाँ तक उपज का सम्बन्ध है, रूस योरप का अन्न-भण्डार समझा जाता था और अभी तक वह अपने उस गौरवपूर्ण स्थान को कायम रखे हुए है। किन्तु, निकट भविष्य में जब सोवियत् में उद्योग-धन्धों का पूर्ण विकास हो जायगा और वह अपनी ज़रूरत से ज़्यादा माल बनाने लगेगा; तो तैयार माल उसके कच्चे माल के निर्यात पर प्रधानता प्राप्त कर लेगा। संसार के व्यापार की

प्रगति को जापान के सस्ते माल ने चौपट कर दिया है—यद्यपि उसे रोकने के लिए तरह तरह की चुंगी की ऊँची दीवारें, गृह-उद्योग को बचाने के नाम पर, खड़ी की गई हैं। लेकिन जापान की यह प्रतियोगिता फीकी पड़ जायगी, जब कि बाज़ारों में कुछ साल के बाद रूस का माल आने लगेगा। जापान के सभी माल तैयार करनेवाले पूँजीवादी हैं; और उन्हें माल की क़ीमत रखने के समय अपने नफ़े, कर्मचारियों के वेतन, बाहर से ख़रीदे गये कच्चे माल की क़ीमत आदि पर ख़याल रखना पड़ता है। किन्तु, भविष्य में सोवियत् के कारख़ाने—जिनकी संख्या दिन दिन बढ़ती जा रही है—रूस के १८ करोड़ निवासियों की आवश्यकताओं को ही पूरा नहीं करेंगे, बल्कि अपने माल को प्रचुर परिमाण में बाहर भी भेज सकेंगे। और वह जापानी माल से कहीं अधिक सस्ता होगा।

सोवियत्-भूमि में एशिया और यूरोप का बहुत बड़ा भाग शामिल है; और उसकी सीमा जापान के एशियाई राज्य, अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस, तुर्की और पूर्वी तथा उत्तरी यूरोप के छोटे छोटे राज्यों को छूती है। जिस प्रकार वह अपने यहाँ के निवासियों की ज़रूरतों की पूर्ति के लिए तेज़ी से अपना उद्योग-धंधा बढ़ा रहा है; उसी प्रकार अपने पड़ोसी जर्मनी, ब्रिटेन, जापान आदि शक्तियों के डर से अपनी सैन्य-शक्ति को भी तेज़ी से बढ़ा रहा है। हवाई शक्ति में वह संसार में पहला दर्जा रखता है। उसे अपने राज्य के अन्दर बहुत बड़े पैमाने में हवाई उन्नति करने के लायक़ आदर्श भूमि प्राप्त हैं। उसके कारख़ानों में हवाई जहाज़ भी बहुत बड़े पैमाने पर तैयार हो रहे हैं, क्योंकि वहाँ तो नफे का कोई सवाल है ही नहीं। प्राकृतिक साधन और मनुष्य-शक्ति भी असीमित है, साथ ही हर एक विषयों के विशेषज्ञ लोग निकलते आ रहे हैं। पूर्वी सिबेरिया में क़िलेबन्दियों का ताँता लगा हुआ है; और वहाँ सब से बड़ा हवाई अड्डा है, जो ब्लादिवोस्तोक् के नज़दीक है।

सोवियत् अपनी १८ करोड़ जन-संख्या के कारण स्वाधीन देशों में जन-

संख्या के ख़याल से भी प्रथम स्थान रखता है। यद्यपि हिन्दुस्तान और चीन की जन-संख्या अधिक है, पर ये तो उपनिवेश या अर्द्ध-उपनिवेश देश हैं। रूस की सैन्य-शक्ति के डर के कारण ही गिलगित को अंग्रेज़ी सरकार ने काश्मीर राज्य से ले लिया है; और वह उत्तर-पश्चिम भारत का सिंगापुर बनने जा रहा है,—निस्सन्देह एक नये ढंग का। संक्षेप में—रूस का संसार की राजनीति में ऐसा स्थान है कि हर विचारवान् पुरुष को उसके कार्यक्रम और उसकी सफलता में दिलचस्पी रखनी ही पड़ेगी।

एक बात और है। जिन देशों से इस साम्यवादी प्रजातंत्र-संघ का गठन हुआ है; उनमें कितने ही एशियाई देश हैं, जिनका एशिया के कितने ही अन्य भागों की सभ्यता से घनिष्ट सम्बन्ध है। इसलिए उन देशों के लिए किये गये किसी भी उत्थान-कार्य का प्रभाव एशिया की दूसरी जातियों पर पड़ेगा ही, चाहे रूसी प्रभाव को अपनी अपनी सीमा के अन्दर नहीं आने देने के लिए सभी सीमान्त राज्यों ने बहुत ही कड़ा प्रबन्ध कर रखा है। उदाहरण-स्वरूप वहाँ ताजकिस्तान के प्रजातंत्र में १२ लाख फ़ारसी बोलनेवाले लोग रहते हैं, जिनका ईरान से भाषा, जाति और संस्कृति का बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध है। जहाँ ईरान में बोलते फ़िल्म नहीं बनते हैं, उसका आधुनिक साहित्य भी अभी बचपन में ही है, वहाँ ताजकिस्तान का रंगमंच, साहित्य तथा बोलता फ़िल्म बहुत उन्नत है, तो भी वह ईरान में नहीं आने पाते।

मेरे सफ़र की मंशा वहाँ की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति अथवा उनका दूसरे देशों से क्या सम्बन्ध है, यह जानने की नहीं थी। वहाँ की आर्थिक योजना के काम तथा उसका जनता पर क्या प्रभाव है, इसे देखने की मेरी इच्छा थी; और मैं वहाँ के कुछ महान् भारत-तत्त्व-विशारदों से भेंट करना चाहता था। मैंने सोवियत्-रूस में मंचूरिया की तरफ़ से प्रवेश किया। मंचूकुओ की ओर का सीमान्त-स्टेशन मंचुली है, जहाँ से रूस जाने के लिये गाड़ी बदलनी पड़ती है। मैं वहाँ २८ अगस्त (१६३५) को पहुँचा। उस समय भी वहाँ काफ़ी जाड़ा पड़ रहा था। स्थान पहाड़ी है।

ये पहाड़ बहुत ज़्यादा ऊँचे नहीं हैं और वे घास तथा मिट्टी से ढँके हुए हैं। पेड़ तो नहीं देख पड़ते, लेकिन सारी ज़मीन हरी घासों से ढँकी थी। मुझ से कहा गया था कि सोवियत् में खाने की चीज़ों की कमी रहती है, इसलिये मैंने मास्को तक के सफ़र के लिए खाने का पूरा सामान ख़रीद लिया था। पीछे वह बात ग़लत निकली। सोवियत् के अन्दर कहीं भी खाने की चीज़ों की कमी नहीं है—सिर्फ़ आपको इसके लिए अमेरिका के भाव से दाम देना पड़ेगा। मैं तीसरे दर्जे का मुसाफ़िर था। वहाँ तीसरे दर्जे के दो भेद हैं—"कड़ा" तीसरा दर्जा और "मुलायम" तीसरा दर्जा। मुलायम तीसरे दर्जे में गद्दीदार बेंच होती है। यद्यपि कड़े तीसरे दर्जे में मैंने आर्थिक कारणों से सफ़र करना पसंद किया था, तथापि वही दर्जा सफ़र करने के लिए सब से अच्छा भी है। रूस के साधारण लोग उसी दर्जे में सफ़र करते हैं, जिससे उनके सम्बन्ध में अध्ययन करने के लिए, काफ़ी मौक़ा मिलता है। जो पहले या दूसरे दर्जे में सफ़र करते हैं, रूस की साधारण-जनता से उनका सम्बन्ध बिलकुल ही नहीं हो पाता।

सोवियत्-सीमा मंचुली से बहुत दूर नहीं है; और मंचूकुओ तथा सोवियत् के बीच कोई प्राकृतिक सीमा-चिह्न भी नहीं है। सोवियत् में पहला स्टेशन माचेप्स्काया है। पहला परिवर्तन जो मैंने देखा वह यह था कि रेलवे कर्मचारियों के मकान सीमा के उस पार के मकानों से कहीं अच्छे थे। माचेप्स्काया रूस के और स्टेशनों के जैसा ही है, किन्तु मंचुली स्टेशन से एकदम भिन्न दीखता है। दीवार पर प्लैटफ़ार्म की ओर लेनिन्, स्तालिन् आदि नेताओं के चित्र थे। स्टेशन के कमरे रेलवे आफ़िसों की बनिस्बत होटलों से ज़्यादा मिलते थे। रेलवे कर्मचारियों में कितनी स्त्रियाँ भी थीं। मैंने रूसी स्त्रियों को हार्बिन् में भी देखा था। वे स्त्रियाँ सोवियत्-विरोधी दल की थीं, जिन्हें "सफ़ेद रूसी" के नाम से पुकारा जाता है। वे अपने होठों को रँगती और मुँह पर खूब पाउडर लगाती हैं। लेकिन सोवियत् रूस में आप शायद ही किसी स्त्री को ऊँची एड़ी का जूता पहने देखिएगा,

होंठ रंगने की बात भी बहुत कम।

मेरी गाड़ी माचेप्स्काया में क़रीब ३ वजे दिन को पहुँची। यहाँ हर-एक मुसाफ़िर के सामान की जाँच होती है। मेरे पास बहुत कम सामान था, इस लिए जाँच में कोई ज़्यादा दिक़्क़त नहीं हुई। फिर उन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा, फिर, पासपोर्ट अफ़सर ने कहा—आप आगे नहीं जा सकते, क्योंकि आप सीमा के भीतर ७ रोज़ देर से पहुँचे हैं। मैंने रूस के लोगों को सदा ही सहृदय तथा विचारवान् पाया। जब मैंने अपनी दिक़्क़तों को उनसे कहा तो उन्होंने मुझे आगे बढ़ने की आज्ञा दे दी।

मैंने सिर्फ़ १६ दिन सोवियत्-राष्ट्र में विताये। ट्रान्स-साइबेरियन रेलवे पर मंचुली से मास्को जाने में ७ दिन लगे। मास्को में मैं २४ घंटे ही ठहरा और फिर रेल से मास्को से बाकू पहुँचा और तीन रोज़ रहा। एक दिन कैस्पियन सागर में भी विताया। मैंने अपनी सारी यात्रा सोवियत् की साधारण जनता के साथ की। सोवियत्-निवासियों की दो बातों ने मुझे सबसे अधिक आकृष्ट किया। पहली यह कि रूसी लोग बड़े साफ़दिल और मिलनसार होते हैं। अगर कोई स्वयं मुहर्रमी सूरतवाला न हो तो उन से दोस्ती करने में दो तीन मिनट से अधिक नहीं लगता। वे बहुत ही अतिथि-सेवी होते हैं; और अपरिचित लोगों को सहायता करने में सदा तत्पर रहते हैं। इस बात में वे जापान के लोगों से एकदम मिलते जुलते हैं। वे अपने और मित्रमंडली के लिए ख़र्च करने में बहुत उदार होते हैं। अतिथि-सत्कार के विषय में मुझे पता चला कि यह रूस-निवासियों की पहले से भी ख़ास सिफ़त है। किंतु दूसरा गुण रूस की नवीन पद्धति के निर्माण के बाद विकसित हुआ है; क्योंकि अब उन्हें बेकारी का कुछ भी भय नहीं रहा। जब तक वे काम करने योग्य हैं, उन्हें काम तथा निश्चित वेतन अवश्य मिलेगा, जब बीमार या किसी कारण-वश काम करने के लायक़ नहीं रह जायेंगे, तो राष्ट्र उनके निर्वाह का प्रवन्ध करेगा। उन्हें अपनी सन्तान की शिक्षा तथा शादी के लिए चिन्ता नहीं करनी है। ऐसी स्थिति में उनके लिए

कंजूसी से दूर रहना एकदम स्वाभाविक है।

पूर्वी सिबेरिया की आबादी में मंगोल तथा रूसी दोनों जातियाँ सम्मिलित हैं। क्रान्ति के पहले मंगोल रूसियों से नीच समझे जाते थे। रंग-भेद का बाज़ार खूब गर्म था। मंगोलों को ग़ुलामों सा माना जाता था; जैसा कि अभी भी यूरोप के अधीनस्थ पूर्वी देशों में देखा जाता है। लेकिन अब वह अतीत की बात हो गई। रंग-भेद की गंध तक नहीं रही। समान कार्य के लिए वेतन में भिन्नता नहीं। नौकरियों में किसी के लिए ख़ास रियायत नहीं। वास्तव में नई संतति तो उन पुरानी बातों के सम्बन्ध में कुछ जानती भी नहीं। स्टेशनों पर रूसी और मंगोल पुरुष या स्त्री, हाथ में हाथ मिलाये घूमते हुए दीख पड़ते हैं। मिश्रित विवाह रूस में इस प्रकार फैल रहा है कि मालूम होता है इस शताब्दी के अन्त तक विशुद्ध जातीय रूप-रंग वहाँ देखने को नहीं मिलेगा। बात यों है कि जब एशियाई तथा रूसी नागरिक आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक सतह पर हैं, तो इस तरह के मिश्रित शादी-विवाह में रुकावट क्या?

सोवियत्-रूस में मैं इतने कम दिनों तक रहा कि रूसी जीवन के हर पहलू को देख न सका। लेकिन कोई भी आदमी वहाँ के आर्थिक पुर्नार्निर्माण-की तीव्र प्रगति की एक झ.की देख कर भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। मैंने मंचुली से मास्को तक प्राय: ४००० मील और मास्को से बाकू तक प्राय: २००० मील की यात्रा की; और हर एक स्टेशन तथा रेलवे लाइन के निकटवर्ती गाँव में नये मकानों तथा कारख़ानों का निर्माण होते पाया। समूचा राष्ट्र इमारतें बनाने की धुन में पागल सा जान पड़ता है। इससे यह भी जान पड़ता है कि पंचवर्षीय योजना का प्रभाव समूचे प्रजातंत्र-संघ पर पड़ रहा है। वह सिर्फ़ मास्को और लेनिन्ग्राद् तक ही सीमित नहीं है। अपनी गाड़ी की खिड़कियों से मैंने गेहूँ के बहुत बड़े बड़े खेतों को देखा। वहाँ यंत्र से अन्न अलग किया जा रहा था; और फिर लारियों में भर कर गाँवों में पहुँचाया जाता था। इर्कुत्स्क के निकट एक दिन बड़े तड़के मैंने एक रूसी

स्त्री को अपने कंधे पर बहंगी लिये जाते हुए देखा, जिसमें पानी के दो घड़े लटक रहे थे। आकृति और पोशाक से वह बहुत सुन्दर और संस्कृत मालूम पड़ती थी। उसे देख मुझे 'रानी भरें पानी' वाली कहावत याद आ गई।

सिबेरिया में मैंने ट्रैक्टर (कल के हल) चलते नहीं देखे; क्योंकि वह जुताई का मौसम नहीं था। हाँ, बहुत से ट्रैक्टर रखे हुए ज़रूर देखे। लेकिन मास्को से बाकू आते समय मैंने चालीस पचास ट्रैक्टरों को एक पंक्ति में खेत की जुताई करते हुए देखा। यह भाग सिवेरिया से गर्म है, उसकी फ़सल कुछ दिन पहले ही तैयार हो गई थी और इस समय जुताई शुरू थी।

रूस में वैज्ञानिक तरीक़ों से खेती बहुत बड़े पैमाने में शुरू की गई है। सभी सामूहिक तथा सरकारी खेती मशीन से होती है। खेत जोतने तथा खलियान के लिए कलों का ही व्यवहार किया जाता है। बहुत जगहों में हवाई जहाज़ से खेत बोने का काम लिया जाता है। अब पंचमांश या चौथाई से भी कम ही खेती पुराने ढंग से की जाती है। ये छोटे छोटे किसान भी अपनी ज़मीन को सामूहिक बनाने को तैयार हैं, लेकिन जैसे ही उनके खेत सामूहिक बना लिये जायेंगे वैसे ही खेत-खलियान में मशीनों की माँग होने लगेगी, जिसको पूरा करने के लिए अभी काफ़ी कारख़ाने नहीं हैं। किन्तु सोवियत् सरकार प्रत्येक साल अपने कारख़ानों की वृद्धि कर रही है; और अब उसे समूचे देश के खेतों को सामूहिक करने के लिए मशीनें देने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा।

रहन-सहन में दिन-दिन तरक़्क़ी हो रही है। अब भी वेतनों में फ़र्क़ है, कोई २०० रूवल पाते हैं तो कोई ५०० रूबल, लेकिन यह वर्तमान परिस्थिति में अनिवार्य है। पहली बात तो यह है कि दक्ष कार्यकर्ताओं को अधिक वेतन देना पड़ता है, जिसमें वे दूसरे पूँजीवादी देशों की तुलना में अपने वेतन को इतना कम नहीं समझें, कि देश छोड़ने को ललचायें। आख़िर सभी कार्यकर्त्ता तो पूरे साम्यवादी हैं नहीं। दूसरी बात यह है कि वेतन में जितनी वृद्धि होगी, उतना ही लोग अधिक माल ख़रीदना चाहेंगे, जिसे पूरे

परिमाण में तैयार करने में अभी कुछ समय लगेगा। वर्तमान राज्य-व्यवस्था के पहले रूस के निवासी बड़े निर्धन थे; और बहुत सी चीज़ें, जो इस समय ज़रूरी समझी जा रही हैं, उस समय विलास की सामग्री में गिनी जाती थीं। उदाहरणार्थ उन दिनों एशियाई-सोवियत् में साबुन की भी ज़रूरत महसूस नहीं की जाती थी, फिर दाँत साफ़ करने के लिए ब्रुश और पेस्ट की कौन सी बात ? लेकिन अब वह उज़बक् और तुर्क लोगों के लिए भी नित्य के व्यवहार की चीज़ें हो रही हैं। अपर्याप्त उपज के कारण इन सब चीज़ों की बिक्री पर नियंत्रण रखने के लिए दाम बढ़ाना पड़ा है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में यह निश्चित किया गया है, कि समूचे देश में अधिकाधिक संख्या में कारखाने क़ायम किये जायँ; जिसमें इन चीज़ों की कमी दूर की जाय। किन्तु मालूम होता है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में ही इन सब माँगों को पूरा किया जा सकेगा। उस समय रूस के निवासियों की रहन-सहन का मान संयुक्त-राज्य अमेरिका के काम में लगे मज़दूरों से भी कहीं ऊँचा हो जायगा।

जब मैं ट्रान्स-सिबेरियन रेलवे में सफ़र कर रहा था तो एक गाँव में एक बहुत ही साफ़-सुथरा गिरजाघर देखा। मैंने अपने एक रूसी दोस्त से पूछा--इस गाँव का गिरजाघर इतना अधिक साफ़-सुथरा क्यों है ? जवाब मिला--इस गाँव में अभी भी कुछ आदमी हैं, जो ईश्वर में विश्वास रखते हैं। बात-चीत से यह स्पष्ट पता चला कि यद्यपि साम्यवादी दल का मेम्बर होने के लिये नास्तिक होना ज़रूरी है, तथापि जन साधारण पर इसके लिये दबाव नहीं दिया जाता; क्योंकि वहाँ के साम्यवादी इसकी प्रतिक्रिया से भलीभाँति वाक़िफ़ हैं। उन्हें कोई जल्दी भी नहीं है। उनका तो विश्वास है, कि अगली पीढ़ी में ईश्वर का नाम-निशान भी नहीं रहेगा, क्योंकि जो बच्चे पलने से ही नये वायुमण्डल में शिक्षा पा रहे हैं; वे भला इन बातों में क्यों फँसने लगे ?

बाकू शहर

मास्को से तीन दिन की रेल-यात्रा के बाद दो बजे रात को हमारी गाड़ी बाक़ू पहुँची। सारे शहर में लाखों विद्युत्प्रदीपों की दीपावली-सी मनाई जा रही थी। वह समय शहर में घुसने का था ही नहीं, 'इंतूरिस्त' (सोवियत् सरकार की यात्रा-प्रबन्धक-समिति) का कोई आदमी भी स्टेशन पर नहीं मिला। रूसी सोवियत् नागरिकों का सौजन्य अद्वितीय है। मास्को के सहयात्री हमारे अज्ञातनामा मित्र, जो अमेरिका में रहने के कारण अँगरेज़ी जानते थे, हमारा सूट-केस उठाकर अनुकूल स्थान ढूँढने चले। दो-एक जगह पूछने के बाद स्टेशन के क्लब के कमरे में पहुँचे। प्रबन्धकर्त्री चालीस वर्ष की एक अधेड़ महिला थीं। बाल कटे, पोशाक रूसी श्रमिक स्त्रियों-जैसी, बूट की एड़ ज़रा-सी उठी हुई; किन्तु चेहरे का रंग और काले बाल बतला रहे थे कि वह एशियाई हैं। मेरे साथी ने मेरे बारे में कुछ बतलाया और यह भी कह दिया कि मैं रूसी भाषा नहीं जानता। महिला ने कहा—'यहाँ इस कोने की कुर्सी पर बैठ जायँ, सवेरे मैं टेलीफ़ोन करके इंतूरिस्त के पास इन्हें भिजवा दूँगी।' साथी से कृतज्ञता प्रदर्शन-पूर्वक विदाई ली।

रात को स्टेशन के कुछ भागों को देखा। बग़ल में भोजनशाला थी, जिसमें पचीसों मेज़ें खाने के लिये सजी हुई थीं। नीचे के मुसाफ़िर-ख़ाने को देखकर आप उसे मुसाफ़िरख़ाना कहने की हिम्मत ही न करेंगे। अच्छी स्वच्छशाला में कितनी ही कुर्सियाँ हैं, जिनपर कितने ही स्त्री-पुरुष बैठे हैं। बग़ल में हजामतख़ाना है। यूरोप की भाँति सारे सोवियत् में भी स्त्रियाँ बाल कटाने लगी हैं, इसलिये हज्जामों की बन आई है। हाँ, सोवियत् देश में और कामों की भाँति यह पेशा भी अब प्रायः समाज के

स्वामित्व में होता है। पुरुषों की भाँति कितनी ही स्त्रियाँ भी हज्जाम का काम करती हैं। दो-चार और स्थानों को देखा—कहीं किसी वैंक की शाखा है; कहीं अख़वारों और कितावों की दूकान है; कहीं विस्कुट और मिठाई सजी है। घूम कर फिर कुर्सी पर आ वैठा। देखा, टिकट वावू लोगों में से भी, जो कि सभी स्त्रियाँ थीं, कोई-कोई आकर कुर्सी पर ऊँघ रही हैं।

पाँच वजने के वाद (६ सितम्वर) उजाला हुआ। महिला ने हजामत-ख़ाने में ले जाकर मुँह-हाथ धोने का इशारा किया। मुँह-हाथ धो कर फिर उसी कमरे में आया। ६ वजे कितने ही स्त्री-पुरुष आने लगे। कमरे में मेज़ों पर जहाँ कितने ही दैनिक, मासिक, साप्ताहिक पत्र पड़े थे, वहाँ एक कोने में एक वड़ा सा पियानो भी था। दीवारों पर लेनिन्, स्तालिन्, मोलोतोफ़् आदि के वड़े वड़े चित्र टँगे थे। एक काली ओढ़नी ओढ़े महिला को आती देख मेरा ध्यान उधर आर्कषित हुआ। उसके पीछे एक मूँछ-दाढ़ी सफ़ा-चट तरुण छज्जेवाली टोपी लगाये आया, और फिर एक केशच्छिन्ना सुंदरी यूरोपीय वेष में एक चार वर्ष के वालक के साथ पधारीं। वैठ जाने पर विना पूछे ही यह जानने में कोई दिक़्क़त नहीं हुई; कि ओढ़नीवाली महिला के ही वाक़ी पुत्र, पुत्रवधू और पौत्र हैं। चेहरे के रंग और काले केशों से उन के एशियाई होने में कोई सन्देह ही न था। यह भी मालूम हुआ कि यह 'मुसलमान' परिवार है। 'है' नहीं 'था' कहना चाहिए। मज़हव तो यहाँ विशेष कर तरुणों में 'था' की वस्तु हो रहा है। वह दृश्य देखकर मेरे दिल में तरह-तरह के विचार पैदा हो रहे थे, पर वाद में वाकू के तीन दिन के निवास से उसे साधारण वला देखकर कम-से-कम उतना अचम्भा नहीं रह गया। वहाँ तो वाल कटाये, नंगी वाँहोंवाला अंगरखा पहने, वूट-धारिणी मुसलमान तरुणियों की संख्या गिनी ही नहीं जा सकती। उक्त वेश के अतिरिक्त एक लम्वा-चौड़ा तौलिया-जैसा कपड़ा भी किसी-किसी के कंधे पर पड़ा देखा। ओढ़नी तो सिर्फ़ वुढ़ियों के लिए है। यदि भूला-

भटका पाजामा-कुर्ता देखने को मिला भी, तो वह साठ वर्ष से ऊपर वालियों के बदन पर।

नौ बजे महिला ने एक आदमी साथ कर दिया और इंतूरिस्त कार्यालय की ओर रवाना हुए। बाकू में रूसियों की तादाद बहुत अधिक है—यदि आधी नहीं, तो तिहाई ज़रूर होगी। साम्यवादी शासन में पुराना रंग-भेद तो है नहीं, सभी लोग सभी तरह के काम करते हैं। अब बोझा ढोने का काम सिर्फ़ एशियाइयों के लिए नहीं रहा। मालूम होता है, अभी स्वतंत्र काम करनेवाले श्रमिक भी यहाँ मौजूद हैं। वह आदमी कई बार कहने पर भी इंतूरिस्त कार्यालय न जा कर जहाज़ के घाट पर पहुँचा। मैंने दो-चार रूसी शब्दों को जोड़ कर कहा—'बिलेत् नेत् इंतूरिस्त' (टिकट नहीं है, इंतूरिस्त), और चलने का इशारा किया। आदमी को ख़याल था कि विदेशी है, चलो जहाज़ पर बैठाकर मनमाना दाम वसूल करें; इंतूरिस्त के पास जाने पर तो नपा-तुला ही मिलेगा।

आख़िर इंतूरिस्त पहुँचे। सतमहला विशाल नये ढंग का मकान है। उसीमें होटल भी है। कार्यालय में दो-तीन स्त्रियाँ ही थीं, फ़रासीसी और जर्मन जाननेवाली वहाँ मौजूद थीं; किन्तु अपने राम को इन भाषाओं का ज्ञान—विशेष कर बोलने का अभ्यास—तो नहीं सा ही था। पीछे अंगरेज़ी जाननेवाली महिला के आने पर मैंने कहा—"मैं पहलवी (ईरान) जा रहा हूँ, और अभी मुझे ईरान-कौन्सल से 'वीज़ा' लेना है।" उन्होंने बतलाया—"जहाज़ आप को परसों चार बजे शाम को मिलेगा, तबतक आप यहीं विश्राम करें।" मैंने सब से सस्ते दो डालर (५॥) रुपये) रोज़-वाले कमरे में अपना सामान रखा। डेढ़ रुपये प्रतिबार वाले स्नान-गृह में जाकर स्नान किया; और फिर तीन रुपये का जलपान। मैंने हिसाब अमेरिकन डालर में चुकाया था, उसे ही रुपये के हिसाब में यहाँ दे रहा हूँ। तीन-तीन रुपये का जलपान सुन कर पाठक यह न समझ लें कि मैं कुम्भकर्ण बन गया था, अथवा भोजन वाजिदअली शाह के ख़ास बावर्ची-

खाने का था। भोजन वही था, जो हिन्दुस्तान के किसी शहर में आठ-दस आने में मिल सकता है; किन्तु सोवियत्-अधिकारियों के दिमाग़ में दाम रखते समय खयाल तो अमेरिकन यात्रियों का रहता है। भोजनोपरान्त १० वजे नगर-दर्शन के लिए निकले। मोटर पर रूसी दुभाषिया तवारिश (कामरेड्) अना और एक दूसरी अंगरेज़ यात्री महिला थीं।

वाकू संसार की तेल की खानों में सर्वप्रथम है। शहर की आवादी छै लाख से ऊपर है, जिसमें तुर्क अधिक हैं। कुछ वर्ष पूर्व यह तुर्क पक्के मुसल्मान थे; किन्तु अव मत पूछिए। मैंने अपनी आँखों एक दर्गाह या मस्जिद को गिराये जाते देखा, और गिरानेवाले श्रमिकों के चेहरे देखने से अधिकांश उनमें तुर्क जान पड़े। कम्यूनिज़्म का वोलवाला है, और उसके सामने किसी की सुनवाई नहीं। यदि वेचारी कोई दर्गाह या मस्जिद फरियाद लेकर पहुँचती है, तो पूछा जाता है—'किस विना पर तुम्हें क़ायम रखा जाय? क्या तुममें कोई अद्भुत कला है? क्या तुम्हारा सम्बन्ध अतिप्राचीन काल या ऐतिहासिक व्यक्ति से रहा है? यदि नहीं, तो काम लायक़ नई वड़ी इमारत, वाग़ या सड़क के लिये जगह ख़ाली करो।' यदि वहुत रियायत की गई, तो कहा गया—'अच्छा, अव से तुम्हें क्लव-घर, नाच-घर या किताव-घर वनना होगा।' मस्जिद ही नहीं, यही वात गिरजा और यहूदियों के सेनागॉग् पर भी लागू है। वाकू का एक विशाल पत्थर का सेनागॉग् अव एक आफ़िस के रूप में परिणत हो गया है। समुद्र-तट के मकानों को गिरा कर एक लम्वा उद्यान वनाया गया है, जिसमें वृक्षों के नीचे जगह-जगह विश्रामार्थ कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं। कहीं-कहीं क्लव-घर भी हैं, और सोडावाटर लेमनेड की दूकानें तो हर वीस क़दम पर सन्दूक़ जैसी कोठरियों में देख पड़ती हैं। नगर की अधिकांश सड़कें कोलतार की हुई हैं, वाक़ी में नदी के गोल गोल पत्थर विछे हुए हैं। मोटर, लारी और ट्राम की आँधी सी चल रही है, फिर भी अभी घोड़ागाड़ी एकदम विदा नहीं हुई हैं, वल्कि शहर के छोरों पर आपको लदे हुए गधे और ऊँट

भी दिखाई पड़ेंगे। और मकान? चौमहले से कम नहीं, और कोई-कोई आठ-आठ नौ-नौ तल्लों के। इनमें अधिकांश नये शासन के बाद बने हैं। नगर के प्रधान भाग से पुराने मकान विदा हो चुके हैं। और बाक़ी जगहों में भी बीसियों प्रासाद खड़े होते तथा पचासों पुराने घर गिराये जाते देख पड़ते हैं।

अब हम शहर से बाहर निकल रहे थे। बाईं तरफ़ पुराने एकतल्ले मकानों की पाँति अपने अन्तिम दिन गिन रही थी। दाहनी ओर अलग-अलग कितने ही दोतल्ले घर थे, जिन पर १६२४ लिखा हुआ था, अर्थात् वे ग्यारह वर्ष पूर्व बने थे। आजकल इस ढंग को भी पसन्द नहीं किया जाता। नये मकान अमेरिकन ढंग के पँचमहले, छमहले, सतमहले ही बनाये जा रहे हैं। इन मकानों में सौ डेढ़-सौ परिवार रह सकते हैं। हर एक परिवार की आवश्यकता के अनुसार तीन या चार कमरे दिये जाते हैं। साथिन अँगरेज़ महिला ने पूछा—'और किराया?' तवारिश अना ने उत्तर दिया—'तन्ख्वाह का दस प्रतिशत। पाँच सौ रूबल तनख़्वाह पानेवाले से ५० रूबल, और २०० रूबल वाले से २० रूबल'। अँगरेज़ महिला के ख़याल में नहीं आ रहा था कि उसी चीज़ के लिए दो व्यक्तियों से दो तरह का किराया क्यों?

अब हम सड़क से काफ़ी दूर चले आये थे। हमारे दाएँ-बाएँ बहुत से तेल के कुएँ थे। कुओं का मतलब पानी का कुआँ मत समझिए। पहले किसी समय वे पानी के कुएँ जैसे ही रहे होंगे; किन्तु अब ट्यूबवेल की भाँति नल को धरती के भीतर धँसाया जाता है। हर एक स्तर पर तेल है कि नहीं, कैसा तेल है, आदि की परीक्षा की जाती है; और फिर अन्तिम स्थान पर पहुँच कर रोक दिया जाता है। इस नल-कूप पर बीस से पचास फ़ीट ऊँचा एक लोहे का ढाँचा खड़ा किया जाता है, जिसके सहारे पंप की मशीन लगा दी जाती है। यह मशीन बिजली के ज़ोर से रात दिन चला करती है; तेल पम्प द्वारा मीलों दूर रिफ़ाइनरी (सफ़ाई करने के कारख़ाने) में

पहुँचाया जाता है। मशीन फ़िट कर देने पर काम आदमी के बिना स्वयं होता रहता है। हाँ, कुआँ खोदने में एक और बात है। तेल तक पहुँचने के लिए कितनी ही चट्टानें पार करनी पड़ती हैं, और कहीं-कहीं तो तीन-तीन हज़ार फ़ीट तक उसे नीचे ले जाना पड़ता है, इसलिए सभी काम बिजली द्वारा संचालित यंत्रों से होता है। तेल-कूपों के पास भी कितने ही श्रमिक-प्रासाद बने हैं। बाकू की सारी भूमि जल-शून्य है, और ये तेल-क्षेत्र तो और भी रूखे हैं। पीने का पानी दूर से नलों द्वारा लाया जाता है, और उसके सहारे वहाँ उद्यान-नगर बनाये जाने की कोशिश हो रही है। बाकू से तेल-क्षेत्रों तक कितनी ही बिजली की रेलवे लाइनें हैं। हम एक ऐसी ही लाइन के छोर पर पहुँचे। यहाँ किसी समय एक अच्छा ख़ासा गाँव बसता था। अब उसके बहुत से मकान गिर चुके हैं। एक आध में कुछ बूढ़े तुर्क स्त्री-पुरुष रहते हैं; किन्तु हम इस उजड़े गाँव को देखने नहीं आये थे। हमें तो देखना था—'अग्नि-पूजकों का मन्दिर'।

मन्दिर का द्वार बन्द था। तवारिश् अना चाबीवाली बुढ़िया को बुलाने गईं, और हम दोनों मन्दिर के द्वार पर पहुँचे। फाटक दोतल्ला है, जिसके निचले और उपरले दोनों तल्लों पर एक-एक शिलालेख हैं। लेख साफ़ नागरी अक्षरों में हैं। वैसे होता तो इतनी दूर नागरी अक्षर वाले शिलालेख और हिंदू-मंदिर को देखकर बड़ा आश्चर्य होता; किन्तु मुझे इस मन्दिर की खबर पहले-पहल अप्रैल, १९२० में मिली थी। उस समय पंजाब से रमता हुआ मैं बीरगंज (नेपाल) पहुँचा था। इरादा काठमाँडो जाने का था; पर राहदारी मिल न रही थी। वहीं रक्सौल वाली नदी के पुल के पास नदी-तट पर एक साधु की कुटिया में आसन जमा था। एक नौजवान साधु भी कुछ दिन पहले से आकर वहीं पड़ा था। पूछा-पेखी होने पर उसने बतलाया—"मैं बड़ी ज्वालामाई से आ रहा हूँ"।

"बड़ी ज्वालामाई! काँगड़े वाली तो नहीं?"—मैंने पूछा।

"नहीं, वह बहुत दूर है। हिन्दुस्तान से वहाँ पहुँचने में महीनों लगते

हैं, वह रूस के मुल्क में है।"

दिल तो उत्तेजित हो रहा था कि कह दूँ—'क्यों बक रहे हो;' पर बैठे-ठाले झगड़ा कौन मोल ले! मैंने पूछा—"वहाँ जाने का रास्ता कहाँ-से है?"

"काश्मीर के पहाड़ों को पार कर चीन का मुल्क है और फिर वहाँ से महीनों चलने पर ज्वालामाई हैं। कराची से जहाज़ पर भी जाने का रास्ता है।"

मुझे इस सरासर झूठ पर सख्त गुस्सा आ रहा था। मैंने फिर कहा—"क्या हिंगलाज भवानी के पास।"

"नहीं-नहीं, वह बहुत दूर, रूस के मुल्क में है। वहाँ आपरूपी ज्वाला-माई विराजती हैं। धरती से एक ज्योति निकलती है। नैवेद्य तैयार कर सामने रखा जाता है, और माई स्वयं उसे अपनी जिह्वा से ग्रहण करती हैं। मैं वहाँ छै सात वर्ष रहा हूँ। उधर कोई और साथी न होने से मन नहीं लगा और चला आया। मैं काश्मीर के पहाड़ी रास्ते से लौटा हूँ।"

साधु अनपढ़-सा था। भूगोल का उसे ज्ञान न था। यदि वह कास्पियन समुद्र और बाकू का नाम ले देता, और साथ ही मिट्टी के तेल के कुओं का ज़िक्र कर देता, तो मैं उसकी बात में कुछ अधिक दिलचस्पी लेता; मगर मैं अपने भूगोल ज्ञान के अभिमान से उसकी सच्ची बात बड़े तिरस्कार के साथ सुन रहा था।

सात वर्ष बाद एक बार मैं ग्रेट-ब्रिटेन की 'रायल-एशियाटिक-सोसा-इटी' के जर्नल (पत्र) की पुरानी फ़ाइलों का पारायण कर रहा था। सन् १९०० से पूर्व के एक अंक में एक अंगरेज़ लेखक का लेख 'बाकू में हिन्दू मन्दिर' देखा। लेखक ने मन्दिर और उसमें खुदे लेखों का ज़िक्र किया था। यह भी लिखा था कि वहाँ एक भारतीय साधु रहता है। यद्यपि बाकू के सिंधी हिन्दू व्यापारी उसकी सहायता करते हैं; किन्तु उसका मन नहीं लग रहा है। उसने उक्त लेखक से भारत भिजवाने का कोई

प्रबन्ध करने का आग्रह भी किया था। यह पढ़कर उस तरुण साधु के प्रति किये अपने मानसिक अत्याचार पर मुझे अफ़सोस हुआ। मैं पछताने लगा कि उस समय यदि मैं कुछ अधिक विश्वास से काम लेता, तो बाकू की ज्वालामाई के बारे में कितनी ही और बातें मालूम कर सकता था।

और अब आठ वर्ष और बीतने पर मैं उसी ज्वालामाई के मन्दिर के द्वार पर हूँ! मन्दिर के फाटक पर नीचे का लेख (पाँच पंक्तियों) में इस प्रकार है—

"॥६०॥ ओं श्रीगणेशाय नमः॥श्लो[1]
क ॥ स्वस्ति श्री नरपति विक्रमादित रा[2]
ज साके ॥ श्री ज्वालाजी निमत दरवा[3]
जा वणाया: अतीकेचन गिर संन्यासी[4]
रामदहा वासी कोटेश्वर महादेव का॥......
आसोज वदि ८। संवत् १८६६॥"[5]

चान्द्र तिथि, 'निमत' और 'वणाया' पर ख़्याल करने से मालूम होता है, अतीकेचन गिर हरियाना या कुरुक्षेत्र के समीप के रहनेवाले थे। संस्कृत न जानने पर भी वे साक्षर थे, क्योंकि संयुक्त अक्षरों में उन्होंने ग़लती नहीं की है। दरवाज़ा खोलते वक़्त तवारिश अना ने कहा—"यह न-जाने कब के और कहाँ के अक्षर हैं। बड़े बड़े प्रोफ़ेसर देखने आये; किन्तु कोई नहीं पढ़ सका।"

मैंने कहा—"यह उत्तरी भारत में सर्वत्र प्रचलित हिन्दी-भाषा तथा नागरी लिपि का लेख है। सन् १८०९ में—सवा सौ वर्ष पूर्व—दरवाज़ा बनवाने वाले साधु ने इसे लगवाया है।"

अना ने बहुत आश्चर्य प्रकट किया मेरे अगाध लिपि-ज्ञान पर।

"आश्चर्य की कोई बात नहीं। यह अक्षर भारत में उतने ही सुपरिचित हैं, जितने रूसी अक्षर रूस में! आपके साथ आनेवाले प्रोफ़ेसर लोगों का विषय भारतीय लिपि न रहा होगा।"

बुढ़िया ने दरवाज़ा खोला। भीतर बड़ा आँगन है, जिसके बीच में एक चौकोर पक्का मंडप है। भारत के सभी मठों की भाँति आँगन चारों ओर से साधुओं के रहने की कोठरियों से घिरा है। शायद लकड़ी की महँगाई से अथवा मज़बूती के ख़याल से सभी कोठरियों की छतें चूने-पत्थर के पटाव या लदाव की मेहराबदार बनी हैं। कितनी ही कोठरियों पर बनवानेवाले दाताओं के नाम के शिलालेख लगे हैं। इनकी संख्या दस-ग्यारह होगी, जिनमें दो गुरुमुखी के भी हैं। इनके लेखक पंजाब के उदासी साधु थे। समय इतना नहीं था कि मैं और लेखों को पढ़ता और नक़ल करता। मंडप में जाकर खड़ा हुआ। वहाँ चौकोर हवनकुण्ड सा अब भी मौजूद है; पर अब ज्वालामाई नहीं हैं। तवारिश् अना ने बतलाया—"दस वर्ष पूर्व तक यहाँ अग्निज्वाला निकलती थी।"

मैंने पूछा—"ज्वाला बन्द कैसे हुई?"

"स्वाभाविक गैस यहाँ से धरती फोड़ कर निकलती रही होगी, जैसा कि अकसर तेल-क्षेत्रों में देखा जाता है। धरती के नीचे रगड़ खाकर या बाहर से किसी के आग लगाने से गैस जल उठी होगी। एक बार जल जाने पर ऐसी गैस का रोकना है तो जलती बारूद के ढाकने-जैसा ही खतरनाक़; पर अब कुछ उपाय मालूम हो गये हैं, जिनसे इस ज्वाला को शान्त किया गया होगा।"

मुझे ज्वालामाई के अन्त पर बड़ा अफ़सोस हुआ—विशेष कर यह ख्याल करके कि बड़ी ज्वालामाई यही थीं, काँगड़ेवाली तो छोटी ज्वालामाई हैं।

कितनी ही कोठरियों को भीतर से जाकर देखा। किन्हीं किन्हीं की दीवारों पर अब भी प्लास्तर है; जिस पर कुछ भद्दी मूर्तियाँ अंकित हैं। किन्हीं किन्हीं में साधुओं के आसन लगाने के चबूतरे भी हैं। कहीं कहीं धूनी की आग की राख भी मौजूद है। यहीं जलती धूनी के किनारे विशाल जटाधारी साधु दिग्-दिगन्त से घूमते आकर बैठते होंगे। यहीं सुल्फ़े और

गाँजे की चिलम पर चिलम चढ़ती होगी, और सन्तजन पल्थी मारे अपनी अपनी यात्रा के अतिरंजित वर्णन सुनाते रहे होंगे। इसमें तो शक ही नहीं कि अहिन्दू देशों में से होकर भारत से बाकू आना, उस समय बड़ी हिम्मत का काम था।

हमने ज्वालामाई के मंदिर से बिदाई ली। मन्दिर तेल-क्षेत्र के मध्य में है, इसलिए चारों ओर तेलों के कूप ही कूप हैं। कुआँ कैसे खोदा जाता है, इसे देखने गये। खुदाई बिजली और मशीन से होती थी। एक कुआँ १४०० मीटर ($\frac{1}{4}$ मीटर=३९ $\frac{1}{4}$ इंच) खुद गया है; किन्तु अभी इसे २० सौ मीटर तक ले जाना है। खुदाई मिट्टी में नहीं, चट्टान में हो रही है। पास में एक दूसरा कुआँ था, जिससे जल-मिश्रित तेल की एक मोटी धार निकल रही थी। ऐसे तेल-कूप को 'गशर' कहते हैं। ऐसे कुओं में आग लगने का डर रहता है। इनका मुँह बन्द करना तो असम्भव-सा है ही।

तीन चार मील चलने पर सड़क की दाहनी ओर ज़िख़ गाँव आया। पुराने तुर्क गाँव का नमूना दिखाने के लिए हमें वहाँ ले जाया गया। यद्यपि इस गाँव को पुराने गाँवों के नमूने के तौर पर रख छोड़ा गया है, तो भी जब निवासी पुराने ढंग के हों, तब तो वह वैसा रहेगा। गाँव के स्त्री-पुरुष तो तेल-क्षेत्र में काम करते हैं, और दो सौ रूबल मासिक तनख्वाह लेते हैं। फिर यह लोग क्यों पुराने ढंग से रहने के लिए तैयार होने लगे? फलतः मकान अधिक साफ़-सुथरे हैं। दरवाज़ों और खिड़कियों में काँच ख़ूब इस्तेमाल किया गया है। बिजली की रोशनी और पानी का नल भी घर-घर में है। यही वजह है कि इस गाँव को पुराने रूप में रखने में बहुत कोशिश करने पर भी, सफलता नहीं मिली।

हमारी मोटर कुछ और आगे बढ़ी। बाईं तरफ़ से पहाड़ के नीचे की ओर जाती एक सड़क दिखलाई पड़ी। मालूम हुआ कि यहाँ समुद्र-तट पर स्नान-घाट बना है। बोलशेविकों के स्नान-घाट में भी कोई नई बात ज़रूर होगी, यह देखने के लिए हम उधर चल पड़े। जगह बहुत दूर नहीं

थी। घाट के कुछ पहले ही से हमें छोटे छोटे वृक्ष दिखाई पड़े। वृक्ष ही नहीं, बल्कि सड़क के दोनों तरफ़ बाग़ तैयार करने की कोशिश हो रही है। इस जलशून्य सूखी पहाड़ी भूमि में बाग़ लगाना कोई हँसी खेल नहीं। यद्यपि समुद्र नज़दीक है; लेकिन खारे पानी से यह वृक्ष जी नहीं सकते, इसीलिए दूर से मीठे पानी का नल लाया गया है।

कुछ दूर चल कर हमारी मोटर एक गोल घुमाव पर आकर खड़ी हो गई। एक फाटक से दाख़िल होकर देखा, एक ओर गोल मेहराब के नीचे रंगमंच है। बाकू के क्या सोवियत् के सभी सिनेमा थियेटरों में दर्शक खुली जगह में बैठते हैं। सिर्फ़ रंगमंच के ऊपर छत होती है।

इस नहाने की जगह पर भला थियेटर या सिनेमा-घर की क्या ज़रूरत, जब कि बाकू शहर में उनकी संख्या काफ़ी है, और लोग बाकू से यहाँ सिर्फ़ स्नान या जल-क्रीड़ा के लिए आते हैं?

लेकिन बोलशेविकों की दुनिया ही न्यारी है। उनका ख़्याल है कि मनुष्य को किसी जगह भी मनोरंजन करने की इच्छा हो सकती है। फिर उसका प्रबन्ध क्यों न किया जाय? अगर पूँजीवादी देशों की भाँति जगह ख़रीदने, कुर्सियाँ और फ़र्नीचर तैयार करने एवं फ़िल्म या ऐक्टरों पर रुपये ख़र्च करने की बात होती, तो शायद इतनी दरियादिली न दीख पड़ती। हम लोग दोपहर के क़रीब पहुँचे थे। उस वक़्त कोई फ़िल्म या नाटक नहीं हो रहा था। दोपहर होने तथा छुट्टी का दिन न होने से बहुत कम स्त्री-पुरुष आये थे। बग़ल में हज़ारों खंभों वाला हाल या छत के नीचे खुली जगह थी, जिसमें बहुत सी कुर्सियाँ और खाने की गोल गोल छोटी छोटी मेज़ें पड़ी थीं। शाम को और छुट्टी के दिनों में यहाँ बैठने की जगह न मिलती होगी; लेकिन इस वक़्त सभी कुछ ख़ाली पड़ा था। हाँ, रेस्तोराँ (भोजनशाला) के परिचारक दर्जनों स्त्री-पुरुष वहाँ ज़रूर दिखलाई पड़ते थे। यद्यपि यह जगह बाकू से कई मील पर है, तो भी मोटर-बसें बराबर दौड़ा करती हैं। किराया नाम मात्र का है, इस लिए लोगों को आने-

जाने में कोई कठिनाई नहीं होती। रेस्तोराँ के आगे दरख़्तों का एक छाया-दार बाग़ है। यहाँ दरख़्त कुछ घने हैं। शायद यह वृक्ष कुछ पहले लगाये गये थे, इसलिए कुछ बड़े बड़े हैं। अभी तो ये बाग़ उतने अच्छे नहीं मालूम होते; लेकिन कुछ वर्षों के बाद ये सारे वृक्ष बड़े ही सुन्दर और छायादार हो जायेंगे, और तब मरुभूमि में यह बाग़ स्वर्गोद्यान-सा प्रतीत होने लगेगा; और वृक्षों के नीचे पचीसों हज़ार आदमी अच्छी तरह विहार कर सकेंगे।

बाग़ के आगे कुछ रेत है, और फिर समुद्र आ जाता है। बाईं ओर कुछ हटकर लकड़ी के तख़्तों का पुल-जैसा समुद्र के भीतर तक चला गया है, जहाँ उस वक़्त भी कुछ युवक और युवतियाँ नहाने का काला लिबास पहने पानी में छलाँग मार रही थीं। सोवियत्-राष्ट्र में, चाहे वह एशियाई भाग हो या यूरोपीय, कई बातें बाहर के देखनेवालों को बहुत ही आश्चर्य-जनक मालूम होंगी—ख़ास कर हमारे भारतीय दर्शकों में से कितनों के मुँह से 'राम-राम' निकले बिना न रहेगा। आप बीस-बीस पचीस-पचीस वर्ष के युवकों और युवतियों को वहीं थोड़ा सा कपड़ा पहने साथ-साथ बालू में लेटे या पानी में तैरते देखकर कह उठेंगे कि भ्रष्टाचार की हद हो गई। इन लोगों में अधिकांश तुर्क हैं, जो कुछ ही वर्ष पहले कट्टर मुसलमान थे। उस समय छै वर्ष की लड़की भी बिना बुर्क़ा पहने घर से बाहर नहीं हो सकती थी। आजकल की इस बेशर्मी पर बहिश्त के फ़रिश्ते कितनी लानत भेजते होंगे!

अब हम शहर की ओर चले। रास्ते के एक ओर समुद्र-तट था और दूसरी ओर पहाड़ी। कहीं कहीं पुराने गाँवों की दीवारें खड़ी थीं। कुछ ही वर्ष पूर्व यहाँ लोग रहा करते थे; लेकिन अब तो अच्छे अच्छे पक्के मकान बन गये हैं, जिनमें बिजली, पानी, नये ढंग के पाख़ाने आदि का इन्तज़ाम है, इसीलिए गाँव उजड़ गये हैं। बाकू में वर्षा कम होती है, इसीलिए दीवारें अभी बहुत दिनों तक खड़ी रहेंगी।

हमारी गाड़ी चारों ओर शीशे से बन्द थी, इसलिए हवा भीतर नहीं

आती थी, अन्यथा सितम्बर के दिनों में भी वहाँ सर्दी काफ़ी पड़ रही थी। होटल में लौटते वक़्त शहर से बाहर हमें बहुत से बड़े बड़े कारख़ाने मिले। इन्हीं कारख़ानों में मिट्टी का कच्चा तेल साफ़ किया जाता है, और उससे पेट्रोल, किरासिन, मोमबत्ती, वैस्लिन आदि चीज़ें तैयार की जाती हैं। भोजन के बाद मैंने सोचा, शहर में यदि कोई पुराना मुहल्ला बचा हो, तो उसे भी देखना चाहिए। पूछने पर मालूम हुआ कि पुराने क़िले की तरफ़, पहाड़ी के ऊपर की ओर भीतर घुसने पर, पुराना मुहल्ला है। मैंने अपने होटल के स्थान को समुद्र तट से ख़ूब ठीक से देख लिया और फिर उधर का रास्ता पकड़ा। किसी समय बाकू का यह समुद्र-तट छोटे घरों, मसज़िदों और क़ब्रों से भरा होगा। मालूम होना चाहिए कि बाकू ही नहीं, सारा काकेशस पहले ईरान के आधीन था, और रूस ने इसे ५० वर्ष से कुछ ही पहले लिया था। आबादी के लिहाज़ से भी यह पूर्वीय भाग तो बिलकुल मुसलमान था।

आज़ुर्बाइजान प्रजातंत्र, बाकू जिसकी राजधानी है, तुर्कों का मुल्क़ है, और यहाँ की राष्ट्र-भाषा तुर्की है। हर एक मुसलमानी शहर की तरह यहाँ भी मस्जिदों और क़ब्रों की भरमार ज़रूर ही होनी थी; लेकिन आज समुद्र-तट को पत्थर से बाँध दिया गया है, और उसके ऊपर की जगह को साफ़ कर के बग़ीचा लगाया गया है। यह बग़ीचा मीलों लम्बा चला गया है, और बाकू निवासियों के मनोरंजन की जगह है। बग़ीचे की बग़ल से ट्राम की लाइन है। कितनी ही दूर आगे जाने पर क़िले का मीनार दिखलाई पड़ा, और मैं उधर की ओर चलने लगा। थोड़ी दूर पर पतली गलियाँ और पुराने ढंग के मकान आ गये। गलियों को देखकर बनारस याद आ रहा था। हाँ, फ़र्क़ इतना ज़रूर था कि तंग होने पर भी यहाँ सफ़ाई ज़्यादा थी। मकानों के भीतर कैसा था, यह तो नहीं कह सकता; किन्तु रहनेवालों में कितनों को साफ़-सुथरा नहीं पाया। देखने में भी वे ग़रीब से जान पड़ते थे। इन गलियों और वहाँ के निवासियों को देखकर कोई भी

विदेशी, जिसे सोवियत् और उसकी शासन-प्रणाली से सहानुभूति नहीं है, सोवियत्-निवासियों की दीनता और दरिद्रता के वारे में पन्ने के पन्ने काले कर सकता है। लेकिन याद रखना चाहिए कि सोवियत् में अभी भी वीस फ़ी सदी के क़रीव खेती स्वतन्त्र किसान करते हैं, और कितने ही मज़दूरी-पेशा लोग भी स्वतन्त्र मेहनत-मज़दूरी करते हैं। सोवियत् की अठारह करोड़ निवासियों के काम करने के लिए दस-पाँच वर्षों में फ़ैक्टरियाँ और मशीनें तैयार नहीं हो सकतीं, इसलिए कितने ही लोग अव भी स्वतन्त्र मेहनत, मज़दूरी या खेती करते हैं। लेकिन जिस तेज़ी और दृढ़ता के साथ सोवियत् के कल-कारख़ाने वढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए यह हालत चन्द सालों के वाद न रहेगी। इन गलियों के घरों और उनके निवासियों जैसे आपको लंदन के ईस्ट-एण्ड तथा दूसरे यूरोपीय शहरों में भी मिल सकते हैं। दरअसल रूस के वारे में दरिद्रता की झूठी-झूठी ख़वरें तो उस वक़्त भी जारी रहेंगी, जव आज से दस-पन्द्रह वर्ष वाद सोवियत्-राष्ट्र दुनिया का सवसे अधिक धनी देश हो जायगा, और उसके निवासियों की आमदनी दुनिया के सभी देशों के मनुष्यों की औसत आमदनी से वहुत अधिक होगी। वात यह है कि वाहर के सभी लोग अपनी आँखों से सोवियत् की भीतरी अवस्था देख न सकेंगे, और जो वहाँ जायेंगे, वे या तो पक्ष में सम्मति रखने वाले होंगे या विपक्ष में। सोवियत् शासन-प्रणाली और उसके आर्थिक सिद्धान्त ऐसे हैं, जिनकी वजह से दुनिया का कोई आदमी उसके वारे में निष्पक्ष हो ही नहीं सकता। अनजान या नावाक़िफ़ भले ही हो सकता है। फिर आप किसी भी यात्री के लेख में उसका मनोभाव विना व्यक्त हुए न पायेंगे। पहले से सोवियत्-राष्ट्र कितना उन्नत और समृद्ध हो गया है, उस की शक्ति कितनी वढ़ गई है, यह तो अन्धे को भी मालूम हो सकता है, जव वह देखता है कि फ़्रांस और इंग्लैंड वड़े आदर के साथ उसे राष्ट्रसंघ में आने के लिए निमन्त्रण देते हैं; और उसके प्रतिनिधि को वहाँ एक स्थायी जगह अर्पण की जाती है। अमेरिका, जो वोलशेविकों के नाम से भी नाक-

भौं सिकोड़ता था, आज उससे मैत्री करता है; और उसकी पंचवार्षिक योजना की नक़ल करने की कोशिश कितने ही देशों में की जा रही है।

पुराने मुहल्ले में हमें एक अच्छे कटे पत्थरों की मस्जिद भी दिखाई दी। वह अपने नाम को रो रही थी। मालूम होता है, वर्षों से उसपर सफ़ेदी या मरम्मत नहीं हुई। आख़िर जब लोगों को मज़हब से कोई अनुराग ही न रहा, तो मरम्मत कैसे हो? मुहल्ले में दस-बीस बूढ़े बूढ़ियाँ अब भी इस्लाम को माननेवाले हैं; मगर उनमें बहुतेरे नई उम्रवालों के मज़ाक़ के डर से चुपचाप घर के कोने में ही नमाज़ पढ़ लिया करते हैं। अगर इच्छा भी हो, तो मरम्मत करने में सबसे बड़ा सवाल तो है पैसे का। अब धनी तो कोई है नहीं कि उसके पास काफ़ी स्थावर-जंगम सम्पत्ति हो। इसी मुहल्ले में मुझे दो चार पाजामा पहनने वाली बुढ़ियाँ भी दिखलाई पड़ीं। कुछ ही साल पहले पाजामा इन तुर्क स्त्रियों की जातीय पोशाक थी।

लौटते समय मैं और भी कितने ही मुहल्लों में गया। बाकू में एक और बात दीख पड़ती है, जिससे बोल्शेविकों की मनोवृत्ति का पता लगता है। बाकू शहर में एक तिहाई आबादी रूसी लोगों की है। रूसी लोग यूरोपियन हैं। यद्यपि तुर्क लोग काले नहीं होते, तो भी अधिकांश रूसियों की नीली आँखों और भूरे बालों में उनके छिपने की कहाँ गुंजाइश? रूसी क्रान्ति के पहले यहाँ आनेवाला हर एक रूसी 'साहब' था, और हर एक एशियाई कुली और ग़ुलाम। रूसियों के अलग मुहल्ले थे। रूसी मुहल्ले में तुर्कों का रहना सम्भव न था; लेकिन आज? आज उस भेद-भाव का कहीं नामोनिशान नहीं। सभी मुहल्लों और सभी घरों में रूसी और तुर्क साथ साथ रहते हैं। एक ही तरह का जाँघिया और कोट पहने गलियों में खेलते हुए तुर्क और रूसी लड़के यह ख़याल भी नहीं कर सकते कि उनमें कोई सामाजिक या जातीय भेद है। दो-एक नहीं, हज़ारों तुर्क ऐसे मिलेंगे, जिन्होंने रूसी औरतों से शादी की है, और वही बात रूसी मर्दों के बारे में भी है।

बात यह है कि सभी श्रमिकों का वेतन, चाहे वह रूसी हो या तुर्क, एक सा है। रूसी और तुर्क बच्चे छै वर्ष तक एक ही शिशुशालाओं में साथ साथ पलते हैं, और स्कूल में दोनों जाति की लड़के लड़कियाँ साथ ही पढ़ती लिखती और रहती हैं, इसीलिए उस भाव की गुंजाइश नहीं है।

सिबेरिया और बाकू में जिस प्रकार यह सह-विवाह और रक्त-सम्मिश्रण हो रहा है, उससे तो मुझे ख्याल होता है; कि पचास वर्ष बाद शकल-सूरत में भी सोवियत् के एसियाई और यूरोपीय वासियों में कोई भेद न रह जायगा। अगर भेद रहेगा भी तो इतना कि यूरोपीय सोवियत् के पश्चिम वाले लोग शायद कुछ ज्यादा गोरे रहेंगे, क्योंकि एसिया-इयों से यूरोपीय सोवियत् नागरिकों की संख्या तिगुनी के क़रीब है।

शाम के वक़्त हम एक फ़िल्म देखने गये। रूसी फ़िल्मों की बड़ी तारीफ़ सुन चुका था, इसलिए उसे भी देख लेना ज़रूरी था। इन्तूरिस्त से पूछने पर मालूम हुआ कि एक आर्मेनियन टाकी-फ़िल्म में जगह ख़ाली है। सोवियत् नाट्यशालाओं और सिनेमा घरों में जगह पाना आसान नहीं है। लोग पहले ही से टिकट ले रखते हैं। लेकिन इन्तूरिस्त-एजेन्सी सब जगह फोन कर के तुरन्त बता सकती है, कि कहाँ जगह ख़ाली है। कितनी ही जगहों का तो वह आपको टिकट भी दे सकती है। तवारिश् अना की मदद की ज़रूरत थी, क्योंकि मुझे न रूसी भाषा मालूम थी, न आर्मेनियन। बाकू में एक दूसरा सोवियत् फ़िल्म भी देखा। सोवियत् फ़िल्मों में मुझे कई विशेषताएँ मालूम हुईं। सबसे पहली बात यह देखी कि स्वाभाविक दृश्य और बाज़ार, सेना, कारवाँ, आदि के दिखलाने में बिलकुल असल की नक़ल की जाती है। यदि ऊँटों के कारवाँ को दिखलाना है, तो सौ-पचास ऊँटों पर ही बस नहीं कर दिया जाता, बल्कि हज़ारों होते हैं। बाज़ार और सेना आदि के दृश्य में भी वही बात है। जब सरकार अपने धन-जन-बल के साथ फ़िल्म तैयार करवाने पर कटिबद्ध है, तो फिर वहाँ ख़र्च और तरद्दुद का प्रश्न ही नहीं उठ सकता। दूसरी बात यह है कि अमेरिकन,

या भारतीय—सभी फ़िल्मों में फ़िल्म तैयार करनेवाले अधिक दर्शकों को आकर्षित करने के लिए स्त्री-पुरुषों के प्रेम की, चाहे वह उचित हो या अनुचित, अत्यधिक मात्रा रखते हैं। इस विलासिता के नशे का ज़ोरदार प्रचार मानो उनका प्रधान उद्देश्य है। रूसी फ़िल्मों में यह बात नहीं कि उनमें स्त्री-पुरुषों-सम्बन्धी प्रेम आता ही न हो; हाँ, उसकी मात्रा स्वाभाविक और उचित सीमा के अन्दर ही होती है।

फोटो-चित्रण और आवाज़ में भी बहुत पूर्णता देखी जाती है। ऐक्टर तो ख़ास तौर से चुने और तैयार किये जाते हैं। उक्त फ़िल्म में कथानक ज़ार के शासन की आर्मेनिया से लिया गया था। दो तरुण-तरुणियों में प्रेम हो जाता है। तरुण एक मछुए का लड़का है। नदी में मछली का जाल फेंकते हुए उस तरुण ने मछुओं के गीत गाने में तो कमाल किया था। पीछे लड़की पर शहर के एक धनी सेठ के लड़के की नज़र पड़ती है। उस वक़्त की आर्मेनियन रीति के मुताबिक़ लड़की का बाप बिना रुपया पाये उसे दे नहीं सकता। मछुए तरुण ने किसी तरह कुछ रुपये जमा कर उस धनी सेठ के पास धरोहर रखे। सेठ रुपया माँगने पर इन्कार कर देता है। अदालत में मुक़दमा जाने पर अपने काग़ज़ पर किये दस्तख़त से भी वह इन्कार कर देता है। बड़े बड़े वकील उसकी तरफ़ से बहस करते हैं, उधर न्यायाधीश भी सेठ के दोस्तों में है। सेठ के दस्तख़त से इन्कार करने पर नौजवान कुछ बक उठता है, और उसे कई सालों की सज़ा हो जाती है। उसका दावा भी झूठा बता कर ख़ारिज कर दिया जाता है। ज़ार के जन्म-दिन पर सेठ को ख़िताब मिलता है, और प्रदेश के शासक एक बड़े दरबार में उसे तमग़ा पहनाते हैं। सेठ के लड़के की शादी में, जो लड़की की इच्छा के बिना की जाती है, बड़े बड़े रूसी अफ़सर शामिल होते हैं; और मुबारकबादी देते हैं। संक्षेप में फ़िल्म द्वारा रुपये के बल पर न्याय का अन्याय दिखलाया गया था। फ़िल्म खुली जगह में एक दीवार पर दिखलाया जाता था, और लोग एक चहारदीवारी से घिरे मैदान में कुर्सियों पर बैठे थे।

१० सितम्बर को हवा तेज़ हो गई थी, और सर्दी मुँह पर काँटों-जैसी चुभती थी। इस वक़्त जब यह हालत थी, तो जाड़े में हवा चलने पर कितनी सर्दी होती होगी? ११ वजे के क़रीब हम स्तालिन्-श्रमिक-संस्कृति-प्रासाद (Stalin Palace of Culture) देखने गये। यह मज़दूरों का क्लब-घर है। ऐसे क्लब बाकू में अनेक हैं। पाँच तल्ले का विशाल भवन है। भीतर अनेक तरह के मनोरंजन का इन्तज़ाम किया गया है। एक बड़ा हाल है। जिसमें एक हज़ार कुर्सियाँ हैं। दूसरे हाल में ४०० कुर्सियाँ हैं। कुर्सियों को बिना गद्दों के देखकर पूछने पर मालूम हुआ कि स्वास्थ्य के ख्याल से उन्हें नंगा रखा गया है। गद्दा होने पर उन्हें स्वच्छ और कीटाणुरहित (Disinfect) नहीं किया जा सकता। इन हालों में श्रमिकों के नाटक होते हैं; शिक्षा-सम्बन्धी सिनेमा दिखलाये जाते हैं। व्याख्याताओं के व्याख्यान होते हैं, तथा वोट और चुनाव के लिए भी इनका इस्तेमाल होता है। यहीं एक छोटा सा मिट्टी के तेल का म्यूज़ियम है। कमरे के वाहर दीवार पर संसार का नक्शा है, जिसमें दुनिया के सभी तेल-क्षेत्रों को दिखलाया गया है। कहाँ कितना अधिक तेल है, इसे छोटे-बड़े विद्युत् प्रकाश से चमकते लाल वृत्तों द्वारा दिखलाया गया है। देखने से ही मालूम हो जाता है कि बाक़ू दुनिया का सबसे बड़ा तेल-क्षेत्र है। दूसरे नम्वर वाला तेल-क्षेत्र भी रूस ही में है। संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका का तेल-क्षेत्र तीसरे नम्बर पर आता है। सोवियत् राष्ट्र में बाकू के अतिरिक्त मध्य-एशिया और सखालिन आदि जगहों में भी तेल निकल आया है। तेल के धन में सोवियत् का संसार में प्रथम स्थान है।

कमरे के भीतर दीवारों पर चार्ट द्वारा दिखलाया गया है कि ट्यूब को कैसे धसाना चाहिए। टेढ़ा-मेढ़ा हो जाने पर क्या दोष आ जाता है और उसको कैसे सुधारना चाहिए आदि। एक जगह कच्चे तेल के कई नमूने रखे हुए हैं, और यह भी दिखाया गया है कि उससे क्या क्या चीज़ें निकलती हैं। विशेषज्ञ लोग समय-समय पर आ कर यहाँ श्रमिकों को तेल-सम्बन्धी

वातें वतलाते हैं। इतना ही नहीं, एक जगह यह भी दिखलाया गया है कि श्रमिक तेल पैदा कर के उससे किन-किन अन्य उद्योग-धंधों को मदद पहुँचाता है, और उसके वदले में, खाना, कपड़ा, घर, नाटक, हवाई जहाज़ में उड़ना आदि कितनी चीजें उसे मिलती हैं।

कुछ कमरों में पाँच हज़ार पुस्तकें रखी हैं तथा वाचनालय है। एक कमरे में हवाई जहाज़ की ठठरी रखी है। वहाँ सभी पुरज़े खुले हुए हैं, और हवाई-जहाज़ के यन्त्र-सम्वन्धी ज्ञान के शौकीनों को उसका गठन सिखलाया जाता है। सोवियत् नागरिकों को हवाई जहाज़ का बड़ा शौक है। उनके हज़ारों उड़ने के क्लब हैं, जिनमें कितने ही हवाई जहाज़ रखे हैं, और सदस्यों को हवाई जहाज़ चलाना सिखलाया जाता है। गाँव-गाँव तक में लकड़ी के ऊँचे-ऊँचे मीनार हैं, जिन पर से युवक-युवतियाँ पैराशूट (छतरी, जिसके खुल जाने से आदमी धीरे से धरती पर आ पहुँचता है) लेकर धरती पर कूदती हैं। मैंने एक फ़ोटो देखा था, जिसमें एक ही साथ हवाई-जहाजों से सात सौ लड़कियों के कूदने का दृश्य था!

वहाँ से हम फ़ैक्टरी के भोजनालय में गये। यह भी पाँच तल्ले का विशाल महल है। भीतर घुसते ही हमें अपने कपड़ों को ढँकने के लिए सफ़ेद लम्वा कोट दिया गया। हमने एक ओर से देखना शुरू किया। पहले रसायनशाला आई। इसमें डाक्टर लोग खाने के कच्चे सामान की परीक्षा करते हैं—किस आलू में कितना और कौन-सा विटामिन है? कितना प्रोटीन है? कितने और पदार्थ हैं? हर एक चीज़ की परीक्षा होने के वाद फिर वह धोने और काटने की जगह पहुँचता है। धुलाई-कटाई सभी कुछ मैशीन से होती है। पकाने के स्थान में भाप का प्रयोग होता है। वहाँ तापमान के लिए थर्मामीटर लगे हैं, और घड़ी देखकर चीज़ों को चढ़ाया और निकाला जाता है। जूठी तश्तरियों और प्यालों को भी मशीन ही गरम भाप और पानी से धोती है। इस भोजनालय की विशालता इसीसे समझ

सकते हैं कि यहाँ तीस हज़ार आदमियों का भोजन वनता है! भोजन तैयार हो जाने पर फिर रसायनशाला में उसकी परीक्षा होती है, तव वह वितरण-स्थान पर जाता है। खाने के लिए कितने ही बड़े बड़े कमरे हैं। जो वहीं खाना चाहे, खा सकता है, और जो घर ले जाना चाहे, व इधर ले जा सकता है। जिन्हें भोजन न पचने आदि की शिकायत है, उन्हें सम्मति देने के लिए वहीं डाक्टर मौजद हैं, और उनके लिए विशेष भोजन का प्रवन्ध है। भोजन दस-वीस तरह का नहीं, सैकड़ों तरह का तैयार होता है। सवेरे छै वजे ही नाश्ता तैयार हो जाता है। काम करनेवालों में स्त्री-पुरुष तुर्क, रूसी, आर्मेनियन, यहूदी आदि सभी हैं। हमने चखने के लिए एक प्लेट दही लेकर खाया। स्वाद अच्छा था। इस भोजनालय को देखकर हमारे साथ की अंगरेज़ी महिला ने भी कहा कि यह चीज़ विलकुल नई है।

वहाँ से हम स्तालिन् विद्यालय गये। यह वाकू के दर्जनों स्कूलों में से एक है। यहाँ ७ से १७ वर्ष के उम्र के लड़के-लड़कियाँ पढ़ती हैं। विद्यार्थियों की संख्या १८०० है, जिनमें तुर्क १९० तातार २५० आर्मेनियन ३२० और रूसी १०४० हैं। लड़कों से लड़कियों की संख्या अधिक है। हर छठें दिन स्कूल में छुट्टी होती है। ७ से १२ वर्ष वाले विद्यार्थी प्रतिदिन ४ घंटा पढ़ते हैं, और १३ से १७ वर्ष वाले ६ घंटा। दोदो साल की पढ़ाई एक साल में नहीं कराई जाती। ख्याल है कि अधिक पढ़ाई करने से लड़कों के स्वास्थ्य पर वुरा असर पड़ता है। अत्यन्त प्रतिभाशाली वालकों के लिए सरकार ख़ास प्रवन्ध करती है। ऐसे लड़कों के लिए मास्को और कुछ अन्य स्थानों में ख़ास विद्यालय हैं, जहाँ उन्हें विशेष सावधानी के साथ शिक्षा दी जाती है। इस स्कूल में भी डाक्टरी-परीक्षा-घर, भोजनशाला, व्यायामशाला आदि हैं। स्कूल के वक़्त लड़के वहीं भोजन करते हैं। उनके खाने की मेज़ें छोटे छोटे फूल के गमलों से ख़ूब सजी हुई थीं। छुट्टियों के वाद स्कूल खुलनेवाला था, इसलिए उस दिन सफ़ाई हो रही थी। ऊपर-नीचे सभी तल्लों का फ़र्श लकड़ी का है।

एक कमरे में दो रूसी श्रमिक आधी बाँह की कमीज़ और जाँघिया पहने पैरों द्वारा कपड़े से फ़र्श को रगड़ रहे थे। जिस स्कूल में काले लड़के पढ़ें, वहाँ भला गोरे इस तरह काम करें! हमें वह कमरा भी दिखलाया गया, जहाँ डाक्टर विद्यार्थियों की परीक्षा करते हैं और स्वास्थ्य का लेखा रखते हैं। उस साधारण स्कूल की इमारत का मुक़ाबला हमारे यहाँ की यूनिवर्सिटियों की इमारतें भी नहीं कर सकतीं।

हमारे पथ-प्रदर्शक अध्यापक तातार जाति के थे। उनके मंगोल चेहरे को देखकर तथा उनका जन्म-स्थान अस्तराखान सुनकर मुझे सन्देह हुआ कि वह कल्मुक् मंगोल तो नहीं हैं; लेकिन पूछने पर मालूम हुआ कि वे तातार हैं, जिनका जातीय धर्म पहिले इस्लाम था। उनके सिर और दाढ़ी के बाल मुड़े हुए थे। बदन पर हमारे यहाँ की पुलिस की तरह का बटनदार कोटनुमा कुरता था, नीचे ढीली-सी पतलून और कमर में चमड़े का तस्मा कोट के ऊपर पेटी की तरह बँधा था। नेकटाई और कालर का नाम नहीं था। देखने से यही मालूम होता था कि किसी कारख़ाने के मज़दूर हैं; लेकिन थे वे विद्वान् अध्यापक। सब देख सुनकर हमारे साथ की अंगरेज़ महिला ने पूछा—"आप लड़कों को धार्मिक शिक्षा तो देते न होंगे, क्योंकि सोवियत् सरकार धर्म के विरुद्ध है; किन्तु क्या धर्म के ख़िलाफ़ पाठ्य-पुस्तकों में विशेष पाठ रखे गये हैं, या ज़बानी ही वैसी शिक्षा दी जाती है?" अध्यापक ने कहा—"पहले से खंडन करने का मतलब होगा लड़कों में प्रति-क्रिया द्वारा धर्म का भाव लाना। हम लोग ऐसा नहीं करते। कितने ही लड़कों के माता-पिता अब भी धर्म को मानते हैं, और उनका प्रभाव उनके लड़कों पर भी पड़ता है। जो प्रभाव बालक के दिल पर पड़ा है, उसके बारे में युक्ति से हम उसी के द्वारा प्रश्न करवाते हैं और फिर उसका समाधान कर देते हैं।" सारांश यह कि बालकों के दिल में धर्म के ऊपर श्रद्धा न होने पावे, इसके लिए सूक्ष्म मार्ग का अनुसरण किया जाता है, सीधे लट्ठ नहीं मारा जाता।

हमें शिशुशाला (बच्चाख़ाना) भी देखनी थी। बाकू में शिशुशालाएँ बहुत सी हैं। हम बागिरोवा-शिशुशाला में गये। यहाँ चार-पाँच-छै वर्ष की उम्र के १५० लड़के रहते हैं। मकान सुन्दर स्वच्छ है। पीछे की ओर आँगन में एक छोटा-सा बाग़ है। सेवा का काम बहुत सी सुशिक्षित स्त्रियाँ करती हैं, जो तुर्क, रूसी आदि सभी जातियों की हैं, और लड़के भी सभी जातियों के हैं। पहले हमने दरवाज़े के पास डाक्टर का कमरा देखा। फिर बरामदे में छोटी छोटी कितनी ही अलमारियाँ देखीं। उन अलमारियों पर कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा, बन्दर आदि कितने ही जानवरों की तसवीरें थीं। पूछने पर मालूम हुआ, कि यह उन लड़कों की अलमारियाँ हैं, जिनको अभी अक्षर-ज्ञान नहीं है। दूसरी तरफ़ की अलमारियों पर नाम के साथ लड़कों के फ़ोटो थे। शिशुशाला की प्रबन्धकर्त्री ने मुँह धोने, खाने, खेलने, सोने आदि के बहुत से कमरे दिखलाये। यहाँ इस बात पर बहुत ध्यान दिया जाता है कि हर एक बालक अपना काम अपने हाथ से करे। धोने के कमरे में पानी के नलके और तौलिया टाँगने की खूँटी इतनी नीचे रखी गई है कि छोटे लड़के आसानी से उन्हें पा सकें। खाने के कमरे में कुर्सी, मेज़, चम्मच, प्याला सभी चीज़ें खिलौने जैसी छोटी छोटी हैं। लड़के अपने ही हाथ से खाते हैं। वे ही अपनी जमात का नेता चुनते हैं, जो उनसे सफ़ाई आदि का काम कराता है। एक बड़े घर में सैकड़ों तरह के खिलौने रखे हुए थे। उनमें कुत्ता बिल्ली से लेकर रेल, मोटर, हवाई जहाज़ तक सभी थे। प्रबन्धकर्त्री ने हमें बंडल-के-बंडल काग़ज़ों की फ़ाइलें दिखलाईं। उनमें रंग या पेंसिल से लड़कों के खींचे चित्र और रेखाएँ थीं। किसी-किसी लड़के के चित्र में स्वाभाविकता अधिक देख पड़ती थी। इस खिलवाड़ के कराने से यह जानना अभिप्रेत है कि किस बालक का झुकाव चित्रकला की ओर है। सोवियत् शिक्षा-प्रणाली में गाँवों से लेकर शहरों तक और शिशु-शालाओं से लेकर स्कूलों तक में प्रतिभाशाली लड़कों के चुनने की ओर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। यह प्रबन्ध सर्वत्र इतना पक्का है कि कोई

भी प्रतिभा अंधेरे में पड़ी नहीं रह सकती। मुझे बतलाया गया कि इसी शिशुशाला में दो वर्ष पहले एक पाँच छै वर्ष का बालक था, जिसने गाने-बजाने में बड़ा कौशल प्रकट किया था। आजकल वह मास्को की संगीतशाला (Music Conservatory) में है।

जिस वक़्त हम लोग वहाँ पहुँचे थे, उस वक़्त लड़कों के सोने का समय था। छोटी-छोटी चारपाइयों पर सफ़ेद चादर ओढ़े सब लेटे हुए थे। हम लोगों से दबे पाँव चलने को कहा गया। अधिकांश लड़के नींद नहीं ले रहे थे। कोई-कोई हमारी तरफ़ देख रहे थे, और कोई कोई आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। लड़के कई कमरों में सो रहे थे; किन्तु इस विभाजन में सिर्फ़ अवस्था का ख़याल किया गया था, रंग और जाति का नहीं। शिशुशाला में लड़के ८ बजे लाये जाते हैं, और ४ बजे तक यहीं रखे जाते हैं। इस बीच में दो बार उन्हें खाना मिलता है। बाकू में ऐसी शिशुशालाएँ सैकड़ों हैं।

११ सितम्बर को जहाज़ ४ बजे के क़रीब छूटनेवाला था। १२ बजे तक मैंने फिर पैदल घूमकर बाकू देखा। एक जगह बहुत भीड़ थी। मालूम हुआ कि भीतर प्रदर्शनी करके बहुत सी चीज़ें बेची जा रही हैं। वहाँ खिलौने, कपड़े, सुगन्धित द्रव्य आदि हज़ारों तरह की चीज़ें थीं। सभी सोवियत् की बनी हुई थीं। मैंने स्मृति के तौर पर कोई चीज़ लेनी चाही। मेरे पास नौ रूबल (चार रुपये) बचे हुए थे। उनका भी उपयोग कर डालना था। सब देखकर एक मनीबैग लेना पसंद किया। मनीबैग दिखलाने पर वहाँ खड़े आदमी ने उसको उठाकर अलग रख दिया और एक काग़ज़ पर दाम अपने हस्ताक्षर के साथ लिख दिया। दूसरी जगह कुछ ख़जानची लोग बैठे हुए थे। उन्हें रुपये के साथ पुर्जी दे दी और पुर्जी पर मुहर करके लौटा दी गई। पुर्जी को फिर वहाँ ले जाने पर मनीबैग मिल गया। बेचने का यही तरीक़ा मास्को में भी देखा था। सोवियत् के किसी भी शहर में स्टेशन के पास वैसे ही भाड़ेवाली टैक्सी और घोड़ागाड़ी

मिलेगी, जैसे हिन्दुस्तान या यूरोप के किसी शहर में, फ़रक इतना ही होगा कि वहाँ मोल-भाव का नाम नहीं। लेकिन यदि आप पूछें नहीं, तो आप यह नहीं समझ सकेंगे कि ये टैक्सियाँ या गाड़ियाँ किसकी हैं। पूछने पर मालूम होगा कि टैक्सी-गाड़ी तो क्या, छोटी छोटी सोडावाटर और अखबारों की दूकानें तक सरकार या किसी श्रमिक-संघ की हैं। यहाँ बैठने वाले दूकानदार सभी वेतन भोगी नौकर हैं।

होटल में हिसाब करने पर मालूम हुआ कि दो दिन मोटर पर सैर करने का चौदह डालर देना होगा और तीन दिन के खाने और रहने के लिए नौ डालर। बाकू से पहलवी तक जहाज़ का सेकण्ड क्लास का भाड़ा उन्नीस डालर है। आजकल अमेरिकन डालर पौने तीन रुपये के क़रीब है। देखने से यह यात्रा मँहगी ज़रूर मालूम होगी; लेकिन जैसा हम पहले कह चुके हैं, दाम रखते वक़्त यहाँ के अधिकारियों को अमेरिकन यात्रियों का ख़्याल रहता है, हिन्दुस्तानी या एशियाई जातियों का नहीं। पहली और दूसरी श्रेणी में चलनेवाले तो धनी लोग हैं। उनके लिए चाहे जितना ही दाम रखा जाय, कोई हर्ज नहीं; किन्तु तीसरी श्रेणी के यात्रियों के साथ ख़ास रियायत होनी चाहिए। इस श्रेणी के यात्री अधिकतर ग़रीब होते हैं और वे रूस के साम्यवादी निर्माण के देखने की लालसा से प्रेरित हो कर आते हैं।

१।। बजे मैं बन्दरगाह पर पहुँचा। कस्टम आफ़िसर तुर्क थे, और वे फ़ारसी भी बोलते थे। उन्होंने बड़ी शिष्टता के साथ बक्स खोलकर चीज़ें देखीं। मेरे पास के रुपये भी गिन लिये और छुट्टी मिली। हमारा जहाज़ छोटा-सा था। नाम था फ़ोमिन्। कास्पियन समुद्र में चलनेवाले सभी जहाज सोवियत् के ही हैं। केबिन खूब साफ़ था। मेरी कोठरी में तीन सीटें थीं; किन्तु यात्री मैं अकेला ही था। ४ बजे के क़रीब जहाज़ चला। बाकू समुद्र के किनारे धनुषाकार बसा हुआ है। उसके एक छोर पर तेल साफ़ करने के कारखाने हैं और दूसरी तरफ़ तेल के कुओं का जंगल। हवा तेज़ होने से जहाज़ हिल रहा था, इसलिए हम अपने बिस्तरे

पर जाकर लेट रहे। रात के वक़्त रेडियो पर तुर्की गाना सुना। सवे
८ वजे दूर ईरान की तटभूमि दिखलाई पड़ी, और १० वजे हम ईरान
दाखिल हो गये।

उपन्यास में चित्र